ग़ालिब काव्यम्

दीवाने ग़ालिब

सस्नेहं 'प्रणनाथ'

13/6/05

ग़ालिब - काव्यम्

‘दीवाने ग़ालिब’ - इत्यस्य संस्कृतपद्यानुवादः

मूलकृत्

मिर्ज़ा असदुल्लाह ख़ाँ ‘ग़ालिबः’

अनुवादकः

जगन्नाथ पाठकः

© डॉ० जगन्नाथ पाठकः

प्रकाशकः/ वितरकः
दास पब्लिशर्स
20, डी बेली रोड, इलाहाबाद - 211002
दूरभाष : 0532-2640782 फैक्स : 2640113

प्रथमं संस्करणम् : (1,000 प्रतयः) ईस्वी सन् : 2003
मूल्यम् : रु० 650.00
: US $ 50.00

मुद्रकः
अरविन्द प्रिंटर्स
20, डी बेली रोड, इलाहाबाद - 211002

मुख पृष्ठ एवं आन्तरिक साज-सज्जा : इम्पैक्ट

GHĀLIBA-KĀVYAM

Translation in Sanskrit verses

of

DĪWĀN-E-GHĀLIB

by

Mirzā Asadullāh Khān 'Ghālib'

Translation

by

Jagannāth Pāthak

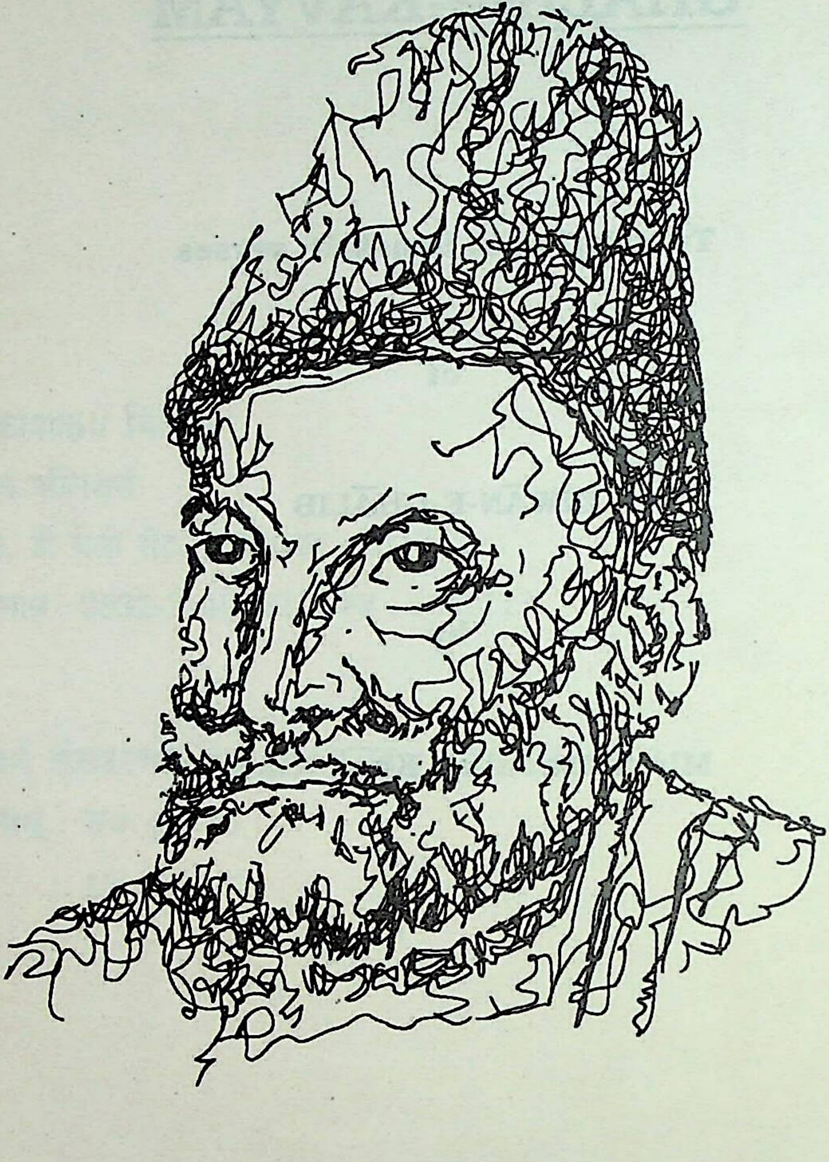

पूछते हैं वह, कि ग़ालिब कौन है
कोई बतलाओ, कि हम बतलायें क्या

ग़ालिब-नामा कोऽसाविति पृच्छन्नस्ति हन्त सैष जनः।
अभिदध्यादिह कोऽपि स्वयमभिदध्याम किन्नु वयम्।।

समर्पणम्

अयं ‘दीवाने ग़ालिब’-इत्यस्य

संस्कृतपद्यानुवादः

महाकवेः

मिर्ज़ा असदुल्लाह ख़ाँ ‘ग़ालिबस्य’

स्मृतये सविनयं समर्पितः

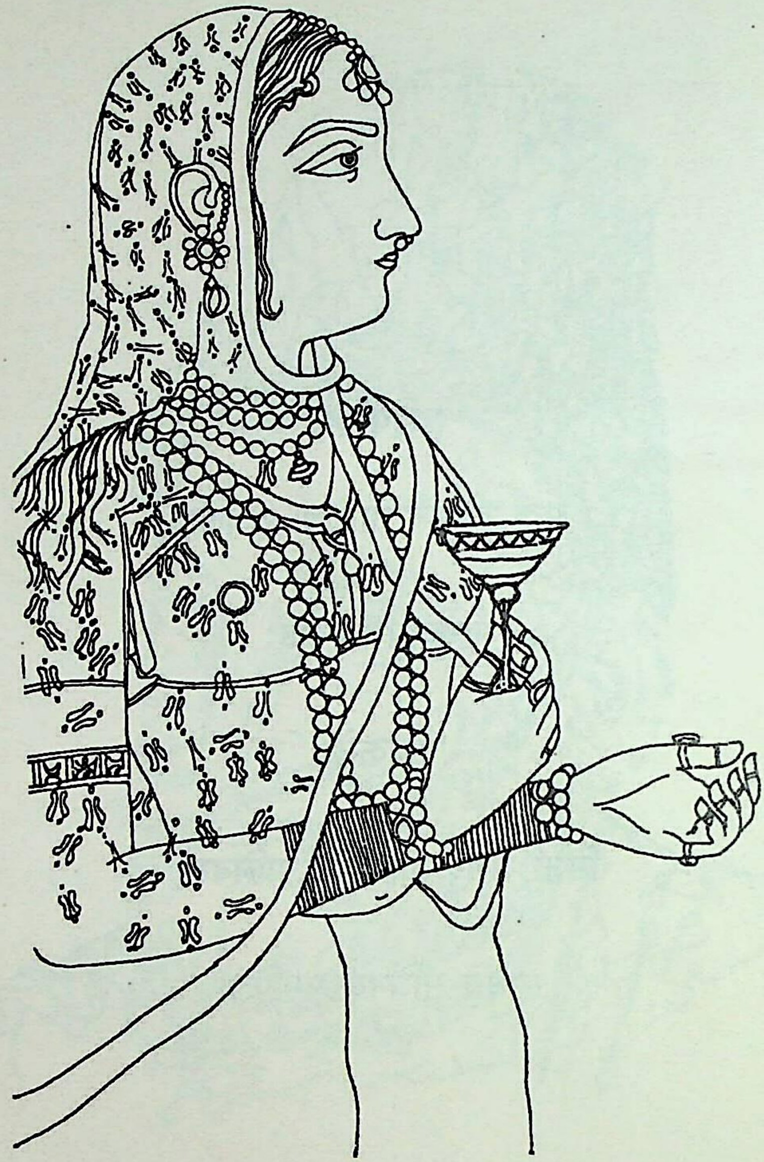

आह को चाहिए इक ’अुम्र असर होने तक
कौन जीता है तेरी ज़ुल्फ़ के सर होने तक

आर्तस्वरः प्रभवितुं पुरुषायुषमेकमलमपेक्षेत।
जीवति तवालकानां कः खलु विस्रंसनं यावत्।।

आमुखम्

ईरान-काव्यकलितं भारत-दर्शन-सुधारसोद्वलितम्।
ग़ालिब-चषकोच्छलितं ललितं मधु किञ्चिदुल्लसति।।

उर्दू-साहित्यस्य महाकविः, 'दीवाने ग़ालिब' इत्याख्यस्य विश्वप्रसिद्धस्य काव्यस्य रचयिता 'मिर्ज़ा नौशा' इत्युपनामा मिर्ज़ा असदुल्लाह ख़ाँ 'ग़ालिब': ('असद'इति वा) आगरा-नगरे, 27 दिसम्बर 1797 दिनाङ्के समुत्पन्नः। तस्य पितुर्नाम अब्दुल्लाबेग ख़ाँ इत्यासीत्। तस्य एक अनुजः मिर्ज़ा यूसुफ़ः, ख़ानमनाम्नी एकाऽनुजाऽप्यास्ताम्। पितरि पितृव्ये च दिवङ्गते ग़ालिबः मातृकुले संवर्धितः। त्रयोदशवर्षदेशीयस्य तस्य विवाहः लोहारूवंशस्य कन्यया 'उमराव बेगम' इत्याख्यया समं सम्पन्नः। विवाहानन्तरं कानिचिद् वर्षाणि आगरा-नगरे यापयित्वा ग़ालिबो दिल्लीं प्राप्तः। परं, दिल्ल्यां ग़ालिबो नानाबाधाभिराक्रान्तः। 15 फरवरी 1869 दिनाङ्के स दिवङ्गतः। तस्य समाधि-स्थलं दिल्ल्यां निजामुद्दीने लोहारूवंशस्य समाधिस्थाने वर्तते। स्वस्या जीवनपद्धतेः वैलक्षण्यात् आपत्स्वपि हसता तेन यापितम्। तदीये काव्ये आदर्श इव तस्य स्वभावः, तदीया जीवन-पद्धतिः, तस्य सुचारु कवित्वञ्चाकलयितुं शक्यन्ते सहृदयैः।

ग़ालिब-काव्यमिदं 'दीवानेग़ालिब' इत्यस्य आर्याछन्दसि संस्कृतानुवादः। प्रतिपदं गम्भीरस्य काव्यस्यास्य कस्याञ्चिदप्यन्यस्यां भाषायामनुवादः, सोऽपि पद्यानुवादः कश्चन दुष्करः प्रयासः। यदि पद्यानुवादेऽस्मिन् ग़ालिबस्य सुरभि कवित्वं सहृदयानां यत्किञ्चिदपि अनुभवगोचरीभवेत् तदैवानुवादस्य प्रयासोऽयं सफल इति मन्येत। यदि कोऽपि समर्थः काव्यमर्मज्ञः उपयुक्ततराणां सुन्दरतराणाञ्च पदानां विन्यासेन पद्यानुवादमिमं समधिकतया ग्राह्यत्वमानयेत् तदाऽस्य विनीतस्यानुवादकस्य कृते तदीयः प्रयासः प्रमोदाय सिध्येत्। वस्तुतः, कस्यचिन्महनीयस्य काव्यस्य भाषान्तरानुवादोऽप्येका गतिशीला प्रक्रियेति मन्यामहे।

ग़ालिबस्य कविताऽत्र स्वयमात्मानं सहृदयानां समक्षं प्रकटीकुर्वाणेव सेत्स्यतीत्यस्माकं विश्वासः। यत्किञ्चिदप्रकटाऽपि सा निजया स्फुरत्तयैव तानावर्जयेत् इत्यपि विश्वसिमः। अनुवादरूपेऽस्मिन् प्रयासे 'दीवाने-ग़ालिब' इत्यस्य येभ्योऽनुवादेकभ्यः व्याख्याकृद्भ्यश्च साहाय्यमस्माभिरधिगतं तान् प्रति हार्दिकं कृतज्ञत्वमधमर्णत्वञ्चानुभवामः।

प्रसङ्गेऽस्मिन् कविवरान् पं० बच्चूलाल-अवस्थीवर्यान्, आचार्यान् गोविन्दचन्द्र पाण्डेय महाशयान्, आचार्यान् राममूर्ति त्रिपाठिनः, उर्दू-साहित्यस्य समालोचकान् डॉ० शम्सुर्रहमान फ़ारूक़ी महोदयान् प्रति च कैः शब्दैर्धन्यवादं व्याहरामः, यैरस्मिन्नध्यवसाये वयमुत्साहिताः !

आर्थिकस्यानुदानस्य स्वीकृत्यर्थं नवदिल्लीस्थ-राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानस्य निदेशकान् प्रति कार्तज्ञ्यमावहामः।

अन्ते, ग्रन्थस्यास्य मुद्रणार्थं, अरविन्द प्रिंटर्स मुद्रणालयस्य श्रीमतेअरविन्द-शरणदासाय श्रीमनस्वीदासाय च शुभाशंसां वितरामः।

वसन्तपञ्चमी **जगन्नाथ पाठकः**

6 फरवरी, 2003
3/14, MIG, झूँसी
इलाहाबाद – 211019

अकारादिक्रमेण मूल - ग़ज़ल - सूची

क्र०सं०/पृ०सं०

‘अजब नशात से , जल्लाद के, चले हैं हम आगे 177/456

अज़ मेह्र ता ब ज़र्रः दिल-ओ-दिल है आईनः 129/340

अफ़सोस कि दन्दां का किया रिज़्क़ फ़लक ने 51/130

अर्ज़े नियाज़े इश्क़ के क़ाबिल नहीं रहा 42/108

‘असद’, हम वह जुनूं-जौलां गदा-ए-बेसर-ओ-पा हैं 24/62

आईनः क्यों न दूँ, कि तमाशा कहें जिसे 230/578

आईनः देख, अपना सा मुँह ले के रह गये 41/106

आ, कि मेरी जान को क़रार नहीं है 171/452

आबरू क्या ख़ाक उस गुल की जो गुलशन में नहीं 88/224

आमदे ख़त से हुआ है सर्द जो बाज़ारे दोस्त 54/136

आह को चाहिये इक उम्र असर होने तक 79/202

’अिश्रते क़तरः है दरिया में फ़ना हो जाना 49/122

’अिश्क़ तासीर से नौमीद नहीं 96/244

’अिश्क़ मुझको नहीं वहशत ही सही 149/386

इब्ने मरियम हुआ करे कोई 216/548

उग रहा है दर-ओ-दीवार से सब्ज़ः, ग़ालिब 157/408

उस बज़्म में, मुझे नहीं बनती हया किये 152/394

एक-एक क़तरे का मुझे देना पड़ा हिसाब 17/40

एक जा हर्फ़े वफ़ा लिक्खा था, सो भी मिट गया 144/376

	क्र०सं०/पृ०सं०
ओह्दे से मदहे नाज़ के बाहर न आ सका	89/228
क़तरः-ए-मै, बसकि हैरत से नफ़स-परवर हुआ	29/78
कफ़स में हूँ, गर अच्छा भी न जाने मेरे शेवन को	121/318
कब वह सुनता है कहानी मेरी	184/472
कभी नेकी भी उसके जी में गर आ जाये है मुझसे	206/522
क़यामत है कि सुन लैला के दश्ते क़ैस में आना	105/272
कल के लिये कर आज न ख़िस्सत शराब में	99/252
कहते तो हो तुम सब, कि बुते गालियः मू आये	164/428
कहते हो न देंगे हम, दिल अगर पड़ा पाया	4/8
कहूँ जो हाल, तो कहते हो मुद्द'आ कहिये	210/532
का'बे में जा रहा तो न दो ता'नः, क्या कहीं	119/312
कारगाहे हस्ती में लालः दाग़ सामाँ है	156/406
किसी को दे के दिल कोई नवासंजे फ़ुग़ाँ क्यों हो	127/334
की वफ़ा हमसे तो ग़ैर उसको जफ़ा कहते हैं	87/220
कोई उम्मीद बर नहीं आती	162/420
कोई दिन, ज़िन्दगानी और है	161/418
क्या तंग हम सितमज़दगाँ का जहान है	139/362
क्यों कर उस बुत से रखूँ जान 'अज़ीज़	71/184
क्यों जल गया न तावे रुखे यार देख कर	61/156
क्यों न हो चश्मे बुताँ महवे तग़ाफ़ुल, क्यों न हो	201/508
ख़तर है रिश्तः-ए-उल्फ़त रगे गर्दन न हो जावे	196/498

	क्र०सं०/पृ०सं०
गई वह बात, कि हो गुफ़्तगू तो क्योंकर हो	126/332
ग़म खाने में बोदा, दिले नाकाम बहुत है	233/588
ग़म नहीं होता है आज़ादों को बेश अज़ यक् नफ़स	82/210
ग़मे दुनिया से गर पाई भी फ़ुर्सत सर उठाने की	137/358
गर ख़ामुशी से फ़ायदा इख़फा-ए-हाल है	142/370
गर तुझको है यक़ीने इजाबत, दुआ न माँग	80/204
गर न अन्दोहे शबे फ़ुर्क़त बयाँ हो जायगा	26/68
गर्मे फ़रियाद रखा शक्ले निहाली ने मुझे	155/404
ग़ाफ़िल ब वहमे नाज़ ख़ुद आरा है, वर्नः याँ	46/116
गिला है शौक को, दिल में भी तंगि-ए-जा का	28/76
गुंचः-ए-नाशिगुफ़्तः को दूर से मत दिखा, कि यूँ	117/306
गुलशन को तेरी सोहवत, अज़ बस कि खुश आई है	186/406
गुलशन में वन्दोवस्त बरंगे दिगर है आज	55/140
ग़ैर लें महफ़िल में, बोसे जाम के	181/466
घर जव वना लिया तेरे दर पर कहे बग़ैर	60/154
घर में था क्या कि तेरा ग़म उसे ग़ारत करता	136/356
घर हमारा जो न रोते भी तो वीराँ होता	32/84
चश्मे ख़ूबाँ ख़ामुशी में भी नवा पर्दाज़ है	148/384
चाक की ख़्वाहिश, अगर वहशत ब'उरियानी करे	193/492
चाहिये अच्छों को जितना चाहिये	190/484

क्र०सं०/पृ०सं०
ज़ख़्म पर छिड़कें कहाँ, तिफ़्लाने बेपरवा, नमक 78/200
जब तक दहाने ज़ख़्म न पैदा करे कोई 215/544
जब, ब तक़रीबे सफ़र, यार ने महमिल बाँधा 30/80
ज़मानः सख़्त कम आज़ार है बजाने असद 110/282
जहाँ तेरा नक़्शे क़दम देखते हैं 97/246
जादः-ए-रह ख़ुर को वक़्ते शाम है तारे शु'आ'अ 75/194
ज़िक्र उस परीवश का और फिर बयाँ अपना 44/112
ज़िन्दगी अपनी जब इस शक़्ल से गुज़री, ग़ालिब 151/392
जिस ज़ख़्म की हो सकती हो तद्बीर रफ़ू की 187/478
जिस बज़्म में तू नाज़ से गुफ़्तार में आवे 174/458
जुज़ क़ैस और कोई न आया ब रू-ए-कार 3/6
जुनूँ की दस्तगीरी किससे हो, गर हो न 'उरियानी 65/370
जुनूँ तोहमतकशे तस्कीं न हो, गर शाद्मानी की 166/436
ज़ुल्मत कदे में मेरे, शबे ग़म का जोश है 170/446
जो न नक़्दे दाग़े दिल की, करे शोलः पासबानी 169/444
जौर से बाज़ आये पर बाज़ आयें क्या 47/118
तग़ाफ़ुल दोस्त हूँ, मेरा दिमाग़े 'अज्ज़ 'आली है 183/470
तस्कीं को हम न रोयें जो ज़ौक़े नज़र मिले 160/416
ता, हमको शिकायत की भी बाक़ी न रहे जा 135/354
तुम अपने शिकवे की बातें, न खोद खोद के पूछो 143/374

क्र०सं०/पृ०सं०

तुम जानो तुम को ग़ैर से जो रस्म-ओ-राह हो 125/330

तू दोस्त किसी का भी सितमगर न हुआ था 39/102

तेरे तौसन को सबा बाँधते हैं 109/280

दरखुरे क़ेहर-ओ-ग़ज़ब जब कोई हमसा न हुआ 23/58

दर्द, मिन्नत कशे दवा न हुआ 27/72

दर्द से मेरे, है तुम को बेक़रारी हाय, हाय 140/364

दह्र में, नक़्शे वफ़ा वजहे तसल्ली न हुआ 9/18

दाइम पड़ा हुआ तेरे दर पर नहीं हूँ मैं 111/284

दिया है दिल अगर उसको, बशर है क्या कहिये 202/510

दिल मेरा, सोज़े निहाँ से, बमहाबा जल गया 5/10

दिल लगा कर लग गया उनको भी तनहा बैठना 106/274

दिल से तेरी निगाह जिगर तक उतर गई 159/412

दिल ही तो है न संग-ओ-ख़िश्त दर्द से भर न आये क्यों 116/302

दिले नादाँ तुझे हुआ क्या है 163/424

दीवानगी से दोश प' ज़ुन्नार भी नहीं 113/292

देखना क़िस्मत, कि आप अपने प' रश्क आ जाये है 154/400

दोनों जहान दे के वह समझे, कि खुश रहा 103/268

दोस्त, ग़मख़्वारी में मेरी, स'अि फ़रमायेंगे क्या 20/48

धमकी में मर गया जो न बाबे नबर्द था 7/14

धोता हूँ जब मैं पीने को, उस सीमतन के पाँव 122/322

नक़्श फ़रियादी है किसकी शोख़ि-ए-तहरीर का 1/2

	क्र०सं०/पृ०सं०
नक़्शे नाज़े बुते तन्नांज़, ब आग़ोशे रक़ीब	185/474
न गुले नग़मः हूँ, न पर्दः-ए-साज़	72/186
न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो ख़ुदा होता	33/86
नफ़स न अंजुमने आरज़ू के बाहर खैंच	57/144
न लेवे गर ख़से जौहर तरावत सब्ज़ः-ए-ख़त से	74/192
नवेदे अम्न है बेदादे दोस्त, जाँ के लिये	235/598
नहीं, कि मुझको क़यामत का एतिक़ाद नहीं	108/278
नहीं है ज़ख़्म कोई बखिये के दरखुर, मेरे तन में	114/296
न हुई गर मेरे मरने से तसल्ली, न सही	176/454
न होगा यक बयाबाँ मान्दगी से ज़ौक़ कम मेरा	11/24
नालः-ए-दिल से शब, अन्दाज़े असर नायाब था	16/38
नालः जुज़ हुस्ने तलब, अय सितम ईजाद, नहीं	102/264
निकोहिश है सज़ा फरियादि-ए-बेदादे दिलबर की	167/438
नुक्तःचीं है, ग़मे दिल उसको सुनाये न बने	192/490
पा ब-दामन हो रहा हूँ, बसकि मैं सहरां नबर्द	173/456
पीनस में गुज़रते हैं जो कूचे से वह मेरे	145/378
पै-ए-नज़रे करम तोहफ़ः, है शर्मे नारसाई का	25/64
फ़रियाद की कोई लै नहीं है	197/500
फ़ारिग़ मुझे न जान, कि मानिन्दे सुब्ह-ओ-मेह्र	68/178
फिर इस अन्दाज़ से बहार आई	182/468

	क्र०सं०/पृ०सं०
फिर कुछ इक दिल को बेक़रारी है	165/432
फिर मुझे दीदः-ए-तर याद आया	36/92
फिर हुआ वक़्त, कि हो बालकुशा मौजे शराब	50/126
वज़्मे शाहंशाह में अश'आर का दफ़्तर खुला	14/30
ब नालः हासिले दिल बस्तगी फ़राहम कर	83/212
वर्शकाले गिरियः-ए-'आशिक़ है देखा चाहिये	95/242
बला से है, जो यह पेशे नज़र दर-ओ-दीवार	59/150
बस, कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना	18/42
बाज़ीचः-ए-अत्फ़ाल है दुनिया, मेरे आगे	209/528
बिसाते 'अिज्ज़ में था एक दिल, यक क़तरः ख़ूँ वह भी	133/350
बीमे रक़ीब से नहीं करते विदा'-ए-होश	77/198
वे-ए'तदालियों से, सुबुक सब में हम हुए	168/440
मंज़ूर थी यह शक़्ल, तजल्ली को नूर की	232/584
मज़े जहान के अपनी नज़र में खाक नहीं	115/300
मत मर्दुमके दीदः में समझो यह निगाहें	94/240
मसजिद के ज़ेरे सायः ख़राबात चाहिये	132/346
महरम नहीं है तू ही नवाहा-ए-राज़ का	13/28
माने'-ए-दश्त नवर्दी कोई तदबीर नहीं	93/238
मिलती है ख़ू-ए-यार से नार, इल्तिहाब में	98/248
मुशदः अय ज़ौक़े असीरी, कि नज़र आता है	73/190
मुझको दयारे ग़ैर में मारा वतन से दूर	84/214

	क्र०सं०/पृ०सं०
नक़्शे नाज़े बुते तन्नांज़, ब आग़ोशे रक़ीब	185/474
न गुले नग़मः हूँ, न पर्दः-ए-साज़	72/186
न था कुछ तो ख़ुदा था, कुछ न होता तो ख़ुदा होता	33/86
नफ़स न अंजुमने आरज़ू के बाहर खेंच	57/144
न लेवे गर ख़से जौहर तरावत सब्ज़ः-ए-ख़त से	74/192
नवेदे अम्न है बेदादे दोस्त, जाँ के लिये	235/598
नहीं, कि मुझको क़यामत का एतिक़ाद नहीं	108/278
नहीं है ज़ख़्म कोई बखिये के दरखुर, मेरे तन में	114/296
न हुई गर मेरे मरने से तसल्ली, न सही	176/454
न होगा यक बयाबाँ मान्दगी से ज़ौक़ कम मेरा	11/24
नालः-ए-दिल से शब, अन्दाज़े असर नायाब था	16/38
नालः जुज़ हुस्ने तलब, अय सितम ईजाद, नहीं	102/264
निकोहिश है सज़ा फरियादि-ए-बेदादे दिलबर की	167/438
नुक्तःचीं है, ग़मे दिल उसको सुनाये न बने	192/490
पा ब-दामन हो रहा हूँ, बसकि मैं सहरां नबर्द	173/456
पीनस में गुज़रते हैं जो कूचे से वह मेरे	145/378
पै-ए-नज़रे करम तोहफ़ः, है शर्मे नारसाई का	25/64
फ़रियाद की कोई लै नहीं है	197/500
फ़ारिग़ मुझे न जान, कि मानिन्दे सुब्ह-ओ-मेह्र	68/178
फिर इस अन्दाज़ से बहार आई	182/468

	क्र०सं०/पृ०सं०
फिर कुछ इक दिल को बेक़रारी है	165/432
फिर मुझे दीदः-ए-तर याद आया	36/92
फिर हुआ वक़्त, कि हो बालकुशा मौजे शराब	50/126
वज़्मे शाहंशाह में अश'आर का दफ़्तर खुला	14/30
व नालः हासिले दिल बस्तगी फ़राहम कर	83/212
वर्शकाले गिरियः-ए-'आशिक़ है देखा चाहिये	95/242
वला से है, जो यह पेशे नज़र दर-ओ-दीवार	59/150
बस, कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना	18/42
बाज़ीचः-ए-अत्फ़ाल है दुनिया, मेरे आगे	209/528
बिसाते 'अज्ज़ में था एक दिल, यक क़तरः खूँ वह भी	133/350
बीमे रक़ीब से नहीं करते विदा'-ए-होश	77/198
वे-ए'तदालियों से, सुबुक सब में हम हुए	168/440
मंज़ूर थी यह शक़्ल, तजल्ली को नूर की	232/584
मज़े जहान के अपनी नज़र में खाक नहीं	115/300
मत मर्दुमके दीदः में समझो यह निगाहें	94/240
मसजिद के ज़ेरे सायः ख़राबात चाहिये	132/346
महरम नहीं है तू ही नवाहा-ए-राज़ का	13/28
माने'-ए-दश्त नवर्दी कोई तदबीर नहीं	93/238
मिलती है ख़ू-ए-यार से नार, इल्तिहाब में	98/248
मुशदः अय ज़ौक़े असीरी, कि नज़र आता है	73/190
मुझको दयारे ग़ैर में मारा वतन से दूर	84/214

क्र०सं०/पृ०सं०

मुँद गईं खोलते ही खोलते आँखें, ग़ालिब 53/134

मुद्दत हुई है यार को मेह्माँ किये हुए 234/592

मेरी हस्ती फ़ज़ा-ए-हैरत आबादे तमन्ना है 146/380

मेहरबाँ हो के बुला लो मुझे चाहो जिस वक़्त 90/230

मैं उन्हें छेड़ूँ और कुछ न कहें 180/464

मैं, और बज़्मे मै से, यूँ तश्नः काम जाऊँ 31/82

यक ज़र्रः-ए-ज़मीं नहीं बेकार, बाग़ का 34/88

यह न थी हमारी क़िस्मत, कि विसाले यार होता 21/50

यह हम जो हिज्र में दीवार-ओ-दर को देखते हैं 107/276

रश्क कहता है, कि उसका ग़ैर से इख़्लास हैफ़ 43/110

रहा गर कोई ता क़यामत सलामत 52/132

रहिये अब ऐसी जगह चलकर, जहाँ कोई न हो 128/300

रह्म कर ज़ालिम, कि क्या बूदे चिराग़े कुश्ता है 147/382

रुखे निगार से हैं, सोज़े जाविदानि-ए-शम'अ 76/196

लताफ़त बेकसाफ़त जल्वः पैदा कर नहीं सकती 48/120

लबे ख़ुश्क दर तश्नगी मुर्दगाँ का 38/100

लरज़ता है मेरा दिल ज़ह्मते मेह्रे दरख़्शाँ पर 62/160

लाज़िम था कि देखो मेरा रस्ता कोई दिन और 67/174

लूँ वाम वख़्ते ख़ुफ़्तः से यक ख़्वाबे ख़ुश वले 85/216

लो, हम मरीज़े 'अश्क़ के तीमारदार हैं 56/142

	क्र०सं०/पृ०सं०
वह आ के ख़्वाब में तस्कीने इज़्तिराब तो दे	194/494
वाँ उसको हौले दिल है तो याँ मैं हूँ शर्मसार	123/324
वाँ पहुँचकर जो गश आता है पै ए हम हमको	124/326
वारस्तः इससे हैं, कि मुहब्बत ही क्यों न हो	120/314
वुस'अते स'अ-ए-करम देख, कि सर ता-सरे ख़ाक	70/182
शब, कि बर्क़े सोज़े दिल से ज़हरः-ए-अब्र आब था	15/34
शब, कि वह मजलिस फ़रोज़े खलवते नामूस था	40/104
शब ख़ुमारे शौक़े साक़ी रुस्तखेज़ अन्दाज़ः था	19/46
शिकवे के नाम से बेमेह्र ख़फ़ा होता है	178/458
शुमारे सुब्हः, मर्ग़ूबे बुते मुश्किल पसन्द आया	8/16
शौक़ हर रंग रक़ीबे सर-ओ-सामाँ निकला	6/12
सताइशगर है ज़ाहिद इस क़दर जिस बाग़े रिज़्वाँ का	10/20
सद जल्वः रू-ब-रू है जो मिशगाँ उठाइये	131/344
सफ़ा-ए-हैरते आईनः है सामाने जंग आख़िर	64/168
सब कहाँ, कुछ लालः-ओ-गुल में नुमायाँ हो गयीं	112/286
सरगश्तगी में 'आलमे हस्ती से यास है	141/368
सरापा रेह्ने-'अश्क़-ओ-नागुज़ीरे उल्फ़ते हस्ती	12/26
सादगी पर उसकी, मर जाने की हसरत, दिल में है	158/410
सितमकश मस्लिहत से हूँ, कि ख़ूबाँ तुझ प'आशिक़ है	66/172
सीमाब पुश्त गर्मि-ए-आईनः दे, कि हम	188/480

	क्र०सं०/पृ०सं०
सुर्मः-ए-मुफ्ते नज़र हूँ, मेरी क़ीमत यह है	45/114
हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी, कि हर ख़्वाहिश प' दम निकले	220/556
हम पर, जफ़ा से तर्के वफ़ा का गुमाँ नहीं	92/234
हम रश्क को अपने भी गवारा नहीं करते	199/504
हमसे खुल जाओ बवक़्ते मै परस्ती एक दिन	91/232
हर एक बात प' कहते हो तुम कि तू क्या है	179/462
हर क़दम दूरि-ए-मंज़िल है नुमायाँ मुझसे	191/486
हवस को है नशाते कार क्या, क्या	22/54
हरीफ़े मतलबे मुश्किल नहीं, फ़ुसूने नियाज़	69/180
हसद से दिल अगर अफ़सुर्दः है गर्मे तमाशा हो	118/310
हासिल से हाथ धो बैठ, अय आरज़ू खिरामी	138/360
हुई ताख़ीर तो कुछ बाइसे ताख़ीर भी था	37/96
हुजूमे ग़म से, याँ तक सरनिगूनी मुझको हासिल है	172/454
हुस्न, ग़मज़े की कशकश से छुटा मेरे बाद	58/146
हुस्ने मह गरचेः ब हंगामे कमाल, अच्छा है	175/452
है आरमीदगी में निकोहिश बजा मुझे	150/390
है किस क़दर हलाके फ़रेबे वफ़ा-ए-गुल	81/206
है बज़्मे बुताँ में सुख़न आजुर्दः लबों से	134/352
है बस कि हरेक उनके इशारे में निशाँ और	63/164
हैराँ हूँ दिल को रोऊँ कि पीटूँ जिगर को मैं	100/256
है वस्ल हिज्र, आलमे तमकीन-ओ-ज़ब्त में	189/482
है सब्ज़ः ज़ार हर दर-ओ-दीवार ग़मकदः	130/342
हो गई है ग़ैर की शीरीं बयानी, कारगर	104/270

ग़ालिब-काव्यम्

[नामग्राहमनाम्नस्तस्य शुभारम्भमेष विदधेऽहम् ।
सुविदित इह विश्वस्मिन् यो 'रहमानो' 'रहीमश्च' ॥ 1 ॥

काव्यं क्व 'ग़ालिबस्य' क्व मन्दधीर्हन्त कोऽपि जन्तुरहम् ।
गिरिलङ्घनप्रवृत्तो ह्युपहसनीयोऽस्मि पङ्गुरिव ॥ 2 ॥

आशीर्भिः स्वगुरूणामाशंसाभिः शुभाभिरपि सुहृदाम् ।
'ग़ालिब-दीवानस्य' प्रयतेऽत्र विधातुमनुवादम् ॥ 3 ॥

'उर्दूः' 'सुपारसीक्या' सम्मिश्रा सम्बिभर्ति लावण्यम् ।
अतिशयमाधुर्यभरा गीर्वाणानाञ्च गीर्नूनम् ॥ 4 ॥

लावण्यं माधुर्यं द्वयमप्येकत्वमेवमापन्नम् ।
कामपि मुदं लभेरन् सचेतसो यत् समास्वाद्य ॥ 5 ॥

एकस्या भाषाया अनुवादो नाम कश्चिदन्यस्याम् ।
सामग्र्येण न शक्यः कर्तुं केनापि शक्तिमता ॥ 6 ॥

अर्थानां प्रत्येकं शब्दो यस्येह शेवधिः कश्चित् ।
तस्मिन् प्रवर्तमानाऽस्मत्कठिनी लज्जमानेव ॥ 7 ॥

अल्पीयानप्यस्मिन्ननुवादे 'ग़ालिबस्य' कवितायाः ।
कोऽपि सुगन्धोऽवतरेदित्यस्माभिः कृतो यत्नः ॥ 8 ॥

यत्नेऽस्मिन्नस्माभिः साफल्यं किञ्चिदेव यदवाप्तम् ।
परितोषो यदि विदुषां समीहितं तेन नः सिद्धम् ॥ 9 ॥]

दीवाने ग़ालिब

1

नक़्श[1] फ़रियादी[2] है किसकी शोख़ि-ए-तहरीर[3] का
काग़ज़ी है पैरहन[4] हर पैकरे तस्वीर[5] का

कावे-कावे[6] सख़्त जानी हा-ए-तन्हाई[7] न पूछ
सुबूह करना शाम का, लाना है जू-ए-शीर[8] का

जज़्ब़ः-ए-बेइख़्तियारे शौक़[9] देखा चाहिए
सीनः-ए-शमशीर[10] से बाहर है, दम[11] शमशीर का

आगही[12], दामे शुनीदन[13] जिस क़दर चाहे, · बिछाए
मुद्द'आ[14] अन्क़ा[15] है, अपने आलमे तक़रीर का[16]

बसकि हूँ, ग़ालिब, असीरी[17] में भी आतश ज़ेरे पा[18]
मू-ए-आतश दीदः[19], है हल्क़ः मेरी ज़ंजीर[20] का

---

1. चिह्नम्,´ चित्रम्, रूपम्; 2. कार्यार्थी, यः कश्चिन्न्यायार्थं न्यायाधिकरणमुपगच्छति स कार्यार्थीत्युच्यते; 3. चित्ररेखानां चापलम्, रचनायाः सौन्दर्यमिति यावत्; 4. परिधानम्; 5. चित्रस्याकृतिः, शरीरं वा; ईरानदेशस्य प्राचीनप्रथानुसारेण कार्यार्थिनः कार्गदं परिधानं दधति स्म। 6. पौनःपुन्येन; 7. रहसि कष्टेन सह्यां विरहवेदनाम्; 8. दुग्धस्य कृत्रिमनदी, स्त्रोतो वा। अत्र शीरीं-फ़र्हादयोः कथाऽनुसन्धेया। प्रणयिन्याः प्रास्यर्थं फ़र्हादेन दुग्धस्य कृत्रिमां नदीं प्रवाहयितुं प्रयासः कृतः, किन्तु तत्र शिरःप्रस्फोटेन मृतः; दुष्करं कार्यमित्यर्थः 9. यत्र न कश्चिदधिकारः, ईदृक् अभिलाषजन्यो हृदयस्यावेगः; 10. खड्गस्य वक्षः; 11. धारा; 12. प्रतिभानम्, चेतना; 13. श्रवणरूपं जालम्; 14. अभिप्रायः; 15. एकः काल्पनिकः पक्षी; 16. कथनस्थितेः, वक्तव्यजगतः; 17. कारावासः; 18. पदतलगतवह्निः, व्याकुलः; 19. पदतलगतेनाग्निना ज्वलितः केशः; 20. बन्धनशृङ्खला।

ग़ालिब-काव्यम्

1

कार्यार्थि कस्य तावद् रचनासौन्दर्यचिह्नमेतदहो।
कार्गदपरिधानधरा सर्वा चित्राकृतिर्भाति ।।1।।

मा पृच्छ कष्टमस्मानेकान्ते यापनस्य कठिनस्य।
सन्ध्याप्रभातकरणं दुग्धस्रोतःसमानयनम् ।।2।।

प्रबलतमस्याकलनं हृदयावेगस्य कार्यमेतर्हि।
खड्गस्य वक्षसो ननु बहिर्गता खड्गधारा हि ।।3।।

प्रतिभानं श्रवणाख्यं विधिना केनापि जालमातनुयात्।
तात्पर्यं काल्पनिको रचनाजगतः खगः स्वस्य ।।4।।

कारागतस्य वह्निर्ज्वलति ममाङ्घ्रिद्वयस्य तलदेशे।
'ग़ालिब' केशो ज्वलितो मम बन्धनशृङ्खला तावत् ।।5।।

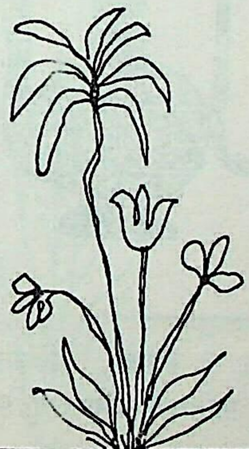

2

जराहत[1] तोह्फ़ः[2], अल्मास[3] अर्मुग़ाँ[4], दाग़े जिगर[5] हदियः[6]
मुबारकबाद[7] असद[8], ग़मख़्वारे जाने दर्दमन्द[9] आया

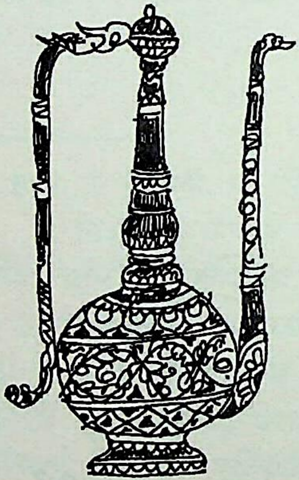

---

1. व्रणः, 2. उपहारः; 3. हीरकम्; 4. उपहारः; 5. यकृतः कालिमा; 6. उपहारः; 7. वर्धापनाः; 8. ग़ालिबस्य नामान्तरम्; 9. विपन्नेभ्यः सहानुभूतिकृत्।

2

व्रण उपहारो हीरकमुपहारोऽङ्कश्च यकृत उपहारः।
वर्धापना 'असद' यद् विपन्नधैर्यप्रदः प्राप्तः ।।1।।

3

जुज़[1] क़ैस[2] और कोई न आया, ब रू--ए-कार[3]
सह्रा[4], मगर, ब तंगि-ए-चश्मे हुसूद[5] था

आशुफ़्तगी[6] ने नक़्शे सुवैदा[7] किया दुरुस्त
ज़ाहिर[8] हुआ, कि दाग़ का सरमायः[9] दूद[10] था

था ख़्वाब[11] में, ख़याल[12] को तुझसे मु'आमलः[13]
जब आँख खुल गई, न ज़ियाँ[14] था न सूद[15] था

लेता हूँ मक्तबे ग़मे दिल में[16] सबक़[17] हनोज़[18]
लेकिन यही कि 'रफ्त'[19] गया, और 'बूद'[20] था

ढाँपा क़फ़न[21] ने दाग़े 'अुयूबे बरह्नगी[22]
मैं, वर्नः[23] हर लिबास[24] में नंगे वुजूद[25] था

तेशे[26] बिग़ैर मर न सका कोहकन[27], 'असद'
सर्गश्तः-ए-ख़ुमारे रुसूम-ओ-क़ुयूद[28] था

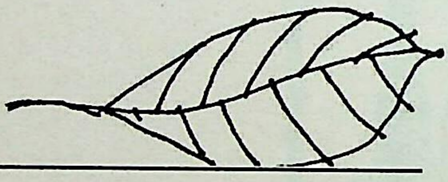

---

1. अतिरिच्यः; 2. 'मजनू' इत्याख्यस्य प्रणयिनः पर्यायः; 3. उपयुक्तः, उत्पन्नो वा; 4. अरण्यम्, मरुभूः; 5. ईर्ष्यालोर्दृष्टिरिव सङ्कीर्णा; 6. वैकल्यम्; 7. हृदयस्योपरिगतः कालिमा; 8. स्फुटतां गतम्; 9. सम्पत् ; 10. धूमः; 11. स्वप्नः; 12. कल्पना; 13. व्यवहारः, सम्बन्धः; 14. हानिः; 15. लाभः; 16. हृदयदुःख-पाठशालायाम्; 17. शिक्षा; 18. अद्यत्वेऽपि; 19. गतः; 20. आसीत्; 21. शवाच्छादनवस्त्रम्; 22. नग्नत्वदोष-चिह्नम्; 23. अन्यथा; 24. परिधानम्; 25. अस्तित्वस्य कृते त्रपाकरः; 26. कुदालम्; 27. पर्वतभेदकः, फ़र्हादः; 28. रीतिबन्धग्रस्तो मदिरालसो भ्रान्तः।

3

अतिरिच्य 'क़ैस'मन्यो जगति जनो नेह कश्चिदुत्पन्नः ।
ईर्ष्यालोरिव दृष्टिर्मरुभूरभवन्नु सङ्कीर्णा ।।1।।

वैकल्येन स निर्मित आसीदथ हृद्गतः कलङ्को यः ।
धूमः कलङ्कसम्पत् स्फुटतामेतद् गतं सम्यक् ।।2।।

काल्पनिको व्यवहारः सङ्घटितो मामकस्त्वया स्वप्ने ।
उन्मीलिते तु चक्षुषि न हानिरासीन्न लाभश्च ।।3।।

अद्यत्वेऽप्यभ्यस्यत इह पाठो दुःखपाठशालायाम् ।
अयमेव, किन्तु मन्ये 'रफ्त' 'गतो' 'बूद' 'इत्यासीत्' ।।4।।

नग्नत्वदोषचिह्नं छादितमभवच्छवार्थवसनेन ।
प्रत्येकं परिधानेऽस्तित्वायाऽऽसं त्रपाजनकः ।।5 ।।

'कोहकनेन' त्यक्ता नैव प्राणा विना कुदालमिह ।
मदिरालसः स मत्तो रीतीनां बन्धनेषु हतः ।।6।।

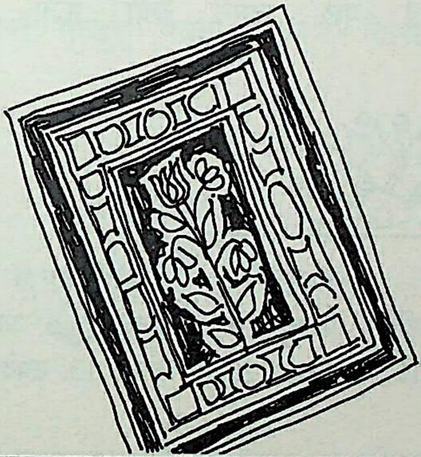

4

कहते हो, न देंगे हम, दिल अगर पड़ा पाया
दिल कहाँ, कि गुम कीजे, हमने मुद्द'आ[1] पाया

'अिश्क़ से तबी'अत ने, ज़ीस्त[2] का मज़ा पाया
दर्द की दवा पाई, दर्दे बेदवा पाया

दोस्तदारे दुश्मन[3] है, ए'तिमादे दिल[4] मा'लूम
आह बेअसर देखी, नालः[5] नारसा[6] पाया

सादगी-ओ-पुरकारी,[7] बेख़ुदी[8]-ओ-हुशियारी
हुस्न को तग़ाफ़ुल[9] में, जुरअत-आज़मा[10] पाया

ग़ुचः[11] फिर लगा खिलने, आज हमने अपना दिल
ख़ूँ किया हुआ देखा, गुम किया हुआ पाया

हाले दिल नहीं मा'लूम, लेकिन इस क़दर या'नी
हमने बारहा[12] ढूंढा, तुमने बारहा पाया

शोरे पन्दे नासेह[13] ने ज़ख़्म[14] पर नमक छिड़का
आपसे कोई पूछे, तुमने क्या मज़ा पाया ?

---

[1] उद्देश्यम्; [2] जीवनम्; [3] शत्रोर्मित्रम्; [4] हृदयस्योपरि विश्वासः; [5] आर्तनादः; [6] अगतिकः, प्रभावरहितः; [7] चातुर्यम्; [8] आत्मविस्मृतिः; [9] उपेक्षा; [10] साहससंवर्धनम्; [11] कलिका; [12] पुनः पुनः; [13] उपदेशकस्योपदेशरणरणकम्; [14] व्रणः।

4

हृदयं यदि चेल्लब्धं क्वचन न दास्यामि तदिति यद्‌वदसि।
यदपह्रियेत हृत् क्व त्वदभिमतं तन्मयाऽवगतम् ।।1।।

प्राणैराप्तः कोऽपि प्रणयादिह हन्त जीवनानन्दः।
पीडौषधमुपलब्धं पीडा लब्धा त्वसाध्यैषा ।।2।।

हृदयं शत्रोर्मित्रं कथमिव कुर्यां नु तत्र विश्वासम्।
प्राप्तुमसक्तो रहितः प्रभावतश्चार्तनादो मे ।।3।।

आर्जवमथ चातुर्यं तथाऽऽत्मविस्मृतिरथाप्रमादश्च।
सौन्दर्यमध्युपेक्षं साहससंवर्धकं लब्धम् ।।4।।

कलिका पुनः स्फुटन्ती वर्तत एषा, मया निजं हृदयम्।
आहतमासीद् यदितो दृष्टं भ्रष्टञ्च तत्प्राप्तम् ।।5।।

नाहं हृदयस्थितिमिह जाने बत किञ्चिदेतदिव जाने।
भूयो मया गवेषितमवाप्तमेतत् त्वया भूयः ।।6।।

उपदेशरणरणकतो व्रणे विकीर्णं ममेह लवणमिव।
कोऽपि भवन्तं पृच्छेद् भवता लब्धः किमानन्दः ।।7।।

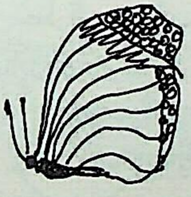

5

दिल मेरा, सोज़े निहाँ[1] से बेमुहाबा[2] जल गया
आतशे ख़ामोश[3] की मानिन्द गोया जल गया

दिल में, ज़ौक़े वस्ल[4]-ओ-यादे यार तक, बाक़ी नहीं
आग इस घर में लगी ऐसी कि जो था, जल गया

मैं 'अदम[5] से भी परे हूँ, वर्नः ग़ाफ़िल[6], बारहा
मेरी आहे आतशीं[7] से, बाले 'अन्क़ा[8] जल गया

अर्ज़ कीजे, जौहरे अन्देशः[9] की गर्मी कहाँ
कुछ ख़याल आया था वहशत[10] का, कि सहरा[11] जल गया

दिल नहीं, तुझको दिखाता वर्नः दाग़ों की बहार
इस चराग़ाँ[12] का, करूँ क्या, कारफ़रमा[13] जल गया

मैं हूँ और अफ़सुर्दगी[14] की आरज़ू[15], ग़ालिब, कि दिल
देख कर तर्ज़े तपाके अहले दुनिया[16] जल गया

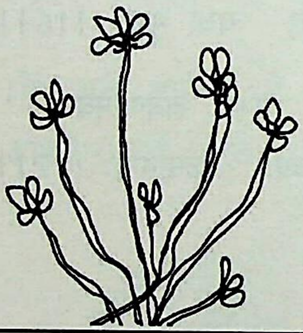

---

1. अन्तर्दाहः; 2. निःसङ्कोचम्; 3. अन्तर्हितोऽग्निः; 4. मिलनार्थमाकाङ्क्षा; 5. शून्य-लोकः; 6. असावधान !; 7. उच्छ्वास-वह्निः; 8. काल्पनिकस्य 'अन्क़ा'-पक्षिणः केशः; 9. शङ्काया रत्नम्, चिन्तनज्वालः; 10. वैकल्यम्; 11. अरण्यम्; 12. दीपावली; 13. प्रबन्धकः; 14. हर्षक्षयः; 15. अभिलाषः; 16. जनसामान्यस्य स्वागत-पद्धतिः।

5

हृदयं मामकमेतत् स्वान्तर्दाहेन सर्वथा दग्धम् ।
अप्रकटो वह्निरिवान्तरन्तः परं दग्धम् ।।1।।

हृदये मिलनाकाङ्क्षा प्रियस्मृतिश्चेह नावशिष्येते ।
दग्धं यथा नु सकलं तथाऽग्निरस्मिन् गृहे दीप्तः ।।2।।

शून्यादपि परतोऽहं प्रमत्त ! वर्तेऽन्यथा ततो बहुधा ।
'अन्क़ा'-पक्षौ दग्धौ परं मदुच्छ्वासदहनेन ।।3।।

स्वान्तर्द्वन्द्वज्वालः कथमिव विनिवेदनीय एष मया ।
दग्धं तावदरण्यं वैकल्यं चिन्तितं यावत् ।।4।।

नास्ते हृदन्यथाऽहं प्रदर्शयेयं कलङ्कमधुमासम् ।
दीपोत्सवस्य दग्धः प्रबन्धको हन्त किं क्रियताम् ।।5।।

'ग़ालिब' एषोऽहञ्च ग्लानेरभिलाष आत्मनश्चैषः ।
हृदयं जगतः प्रीतेः पद्धतिमिह दग्धमुद्वीक्ष्य ।।6।।

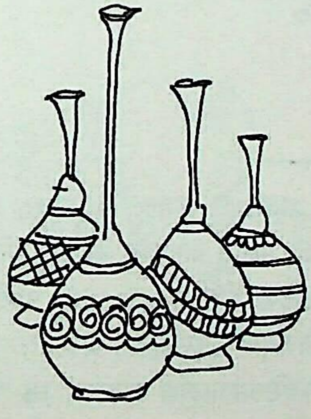

6

शौक़[1] हर रंग, रक़ीबे सर-ओ-सामाँ[2] निकला
क़ैस[3] तस्वीर के पर्दे में भी 'उरियाँ[4] निकला

ज़ख़्म ने दाद न दी तंगि-ए-दिल[5] की यारब[6] !
तीर भी सीनः-ए-बिस्मिल[7] से परअफ़शाँ[8] निकला

बू-ए-गुल,[9] नालः-ए-दिल[10], दूदे चराग़े महफ़िल[11]
जो तेरी बज़्म[12] से निकला, सो परीशाँ निकला

दिले हसरतज़दः[13] था मायदः-ए-लज़्ज़ते दर्द[14]
काम यारों का, बक़द्रे लब-ओ-दन्दाँ[15] निकला

थी नौआमोज़े फ़ना[16], हिम्मते दुश्वार पसन्द[17]
सख़्त मुश्किल है, कि यह काम भी आसाँ निकला

दिल में फिर गिरिये[18] ने इक शोर उठाया, ग़ालिब !
आह जो क़तरः[19] न निकला था, सो तूफ़ाँ[20] निकला

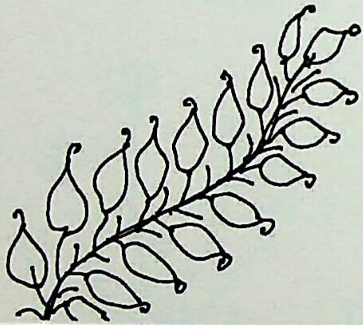

---

1. प्रेम; 2. बाह्यरूपसज्जायाः शत्रुः; 3. मजनूः; 4. नग्नः; 5. हृदयस्य लघुत्वम्; 6. हे ईश्वर !; 7. आहतस्य वक्षः; 8. पक्षतिं कम्पयन्, विकल इति यावत्; 9. पुष्पस्य गन्धः; 10. हृदयस्यार्तस्वरः; 11. गोष्ठ्या दीपस्य धूमः; 12. गोष्ठी; 13. अभिलाषहतं हृदयम्; 14. सुस्वादुपीडायाः कृते भोजनार्थं (प्रसारितः) प्रच्छदः; 15. दन्तोष्ठानुकूलम्; 16. मृत्योर्विषये नवशिक्षितम्; 17. काठिन्याकाङ्क्षि साहसम्; 18. रुदितम्; 19. बिन्दुः; 20. प्लावनम् ।

6

प्रेमाऽजनि विपरीतं प्रत्येकं बाह्यरूपसञ्ज्ञायाः।
'मजनूः' स्वचित्रवसनादपि नग्नो निर्गतस्तावत् ।।1।।

सङ्कीर्णत्वं शंसितमीश्वर! नेह व्रणेन हृदयस्य।
बाणोऽपि हन्त निर्गत आहतवक्षःस्थलाद् विकलः ।।2।।

सुमनोगन्धो हृदयार्तनाद आस्थानदीपधूमश्च।
निर्गत आस्थानात्तव यो विकलो निर्गतः स ततः ।।3।।

हृत् काङ्क्षाहतमेतत् पीडासुस्वादुभोजनस्थानम्।
कार्यं सुहृदां दन्ताधरानुसारेण सम्पन्नम् ।।4।।

साहसमासीन्मृत्यौ काठिन्याकाङ्क्षि नाम नवशिक्षम्।
सुमहत् कठिनं कार्यं यदेतदपि जातमिह सरलम् ।।5।।

पुनरारब्धो हृदये 'ग़ालिब' कोलाहलो नु रुदितेन।
यन्निर्गतं न पृषदिह विनिर्गतं प्लावनं सत् तत् ।।6।।

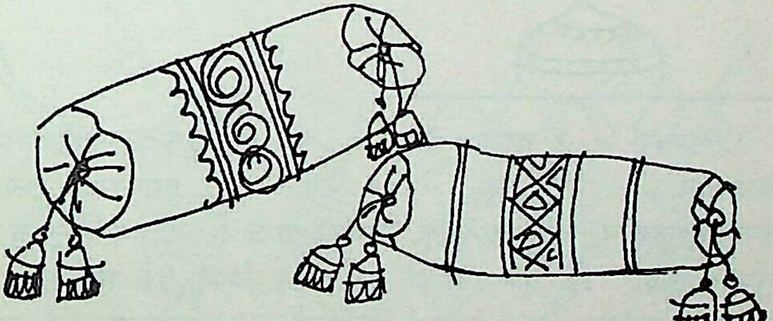

7

धमकी[1] में मर गया, जो न बाबे नबर्द[2] था
’अिश्क़े नबर्द पेशः[3], तलबगारे मर्द[4] था

था ज़िन्दगी में मर्ग[5] का खटका लगा हुआ
उड़ने से पेशतर भी मेरा रंग ज़र्द[6] था

तालीफ़े नुस्ख़हा-ए-वफ़ा[7] कर रहा था मैं
मजमू’अः-ए-ख़याल[8] अभी फ़र्द-फ़र्द[9] था

दिल ता जिगर कि साहिले दरिया-ए-ख़ूँ[10] है अब
इस रहगुज़र में जल्वः-ए-गुल[11], आगे गर्द[12] था

जाती है कोई कशमकश[13] अन्दोहे ’अिश्क़[14] की
दिल भी अगर गया तो वही दिल का दर्द था

अहबाब[15] चारःसाज़ि-ए-वहशत[16] न कर सके
ज़िन्दाँ[17] में भी ख़याल, बयाबाँ नबर्द[18] था

यह लाशे बेकफ़न[19], असदे ख़स्तः जाँ[20] की है
हक़[21] मग़फ़िरत[22] करे, ’अजब आज़ाद मर्द था

---

1. तर्जनम्; 2. युद्धस्य योग्यः; 3. युद्धे आनन्दानुभवशीलः प्रणयः; 4. वीरजनापेक्षः; 5. मृत्युः; 6. पीतः; 7. प्रणयग्रन्थस्य सम्पादनम्; 8. चिन्तन-सङ्कलनम्; 9. पृथक् पृथक्, खण्डशो व्याकीर्णः; 10. रक्त-समुद्रस्य तटम्; 11. पुष्पस्य छविः; 12. धूलिः, व्यर्थः; 13. द्वन्द्वम्, विपत्; 14. प्रणयजन्या व्यथा; 15. सुहृदः, आत्मीयाः; 16. उन्मादस्य चिकित्सा; 17. कारागारः; 18. अरण्येषु भ्रमणशीलम्; 19. वसनविरहितं शवम्; 20. श्रान्तात्मा; 21. ईश्वरः; 22. मुक्तिः।

7

योग्यो युद्धस्य न यो पञ्चत्वं तर्जने स सम्प्राप्तः।
युद्धाजीवः प्रणयो वीरजनापेक्ष एवासीत् ।।1।।

मृत्योराशङ्काऽऽसीत् प्रवर्तमानेव जीवने सततम्।
उड्डयनादपि पूर्वं मम वर्णः पीत एवासीत् ।।2।।

निर्वाह-ग्रन्थमहं सम्प्रति सम्पादयन्नितोऽभूवम्।
चिन्तनसङ्कलनञ्च व्याकीर्णं खण्डशो ह्यासीत् ।।3।।

हृदयं यावद् यकृदिदमधुना रक्तार्णवस्य तटमस्ति।
अस्मिन्नध्वनि पूर्वं पौष्पमभूद् वैभवं धूलिः ।।4।।

अपि निर्गच्छति हृदयात्प्रणयव्यथितस्य किञ्चन द्वन्द्वम्।
हृदयं निर्गतमपि चेत् पीडा तन्निर्गमस्यासीत् ।।5।।

न प्राभवंश्चिकित्सितुमुन्मादं मामकीनमात्मीयाः।
कारागारेऽपि सतो ध्यानमरण्येषु मे व्यहरत् ।।6।।

वसनविहीनं शवमिदमस्ति श्रान्तात्मनो'ऽसदस्ये'ह।
ईशो मुक्तं कुर्यात्, स्वतन्त्र आसीत् स इहकोऽपि ।।7।।

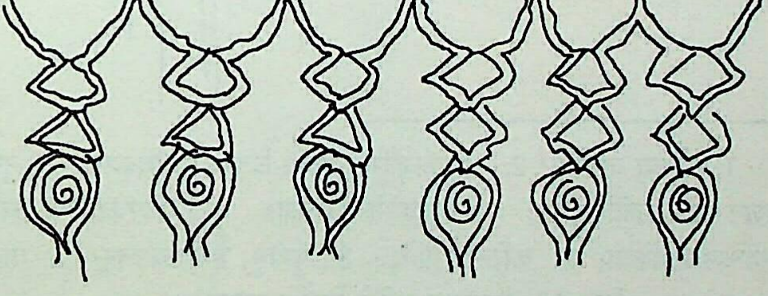

8

शुमारे सुब्हः[1] मर्ग़ूबे बुते मुश्किल पसन्द[2] आया
तमाशा-ए-बयक कफ़ बुर्दने सद् दिल[3] पसन्द आया

ब फ़ैज़े बेदिली[4], नौमीदि-ए-जावेद[5] आसाँ है
कशाइश[6] को हमारा 'अुक़दः-ए-मुश्किल[7] पसन्द आया

हवा-ए-सैरे गुल[8], आईनः-ए-बेमेहरि-ए-क़ातिल[9]
कि अन्दाज़े बख़ूँ गलतीदने बिस्मिल[10] पसन्द आया

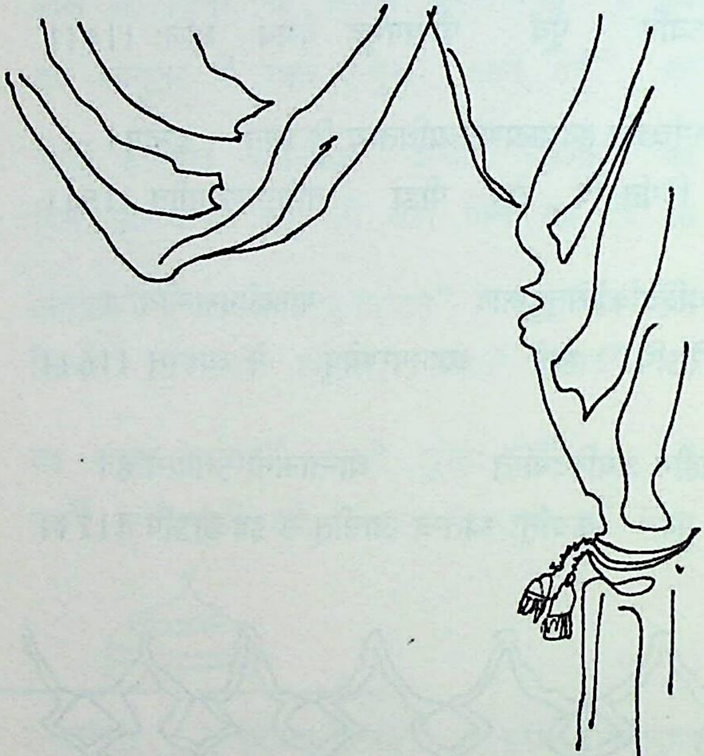

---

1. मालया जपकर्म; 2. कष्टकार्याभिलाषिणः प्रियस्य रुचिकरम्; 3. मुष्टिगत-हृदयशत-स्वीकारक्रीडितकम्; 4. औदासीन्यौदार्येण; 5. चिरकालिकं नैराश्यम्; 6. ग्रन्थिमोक्षप्रक्रिया; 7. कठिना ग्रन्थिः; 8. पुष्पेषु भ्रमणव्यसनम्; 9. घातुकस्य यन्निर्दयत्वं तस्य दर्पणः; 10. आहतानां रुधिरे विलोटनप्रकारः।

8

काठिन्यसम्मतस्य प्रियस्य जपकर्म सम्मतं मन्ये।
हृदयशतस्वीकरणक्रीडितकं यन्मतं तेन ।।1।।

औदासीन्यौदार्यात् सरलं चिरकालिकं नु नैराश्यम्।
ग्रन्थिः कठिनाभिमता विस्तारस्येयमस्माकम् ।।2।।

पुष्पावलोकनेहा वधकस्यास्ति प्रमाणमकृपायाः।
आहतरुधिरोद्वर्तप्रकार इव रोचते तस्मै ।।3।।

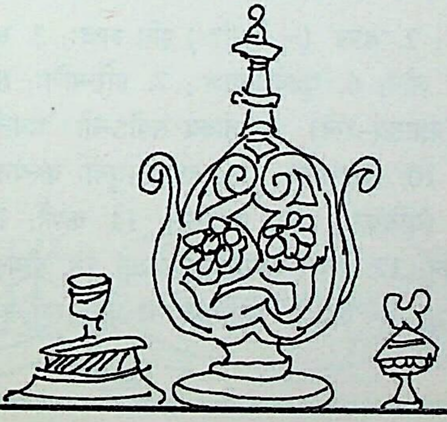

9

दह्र[1] में, नक़्शे वफ़ा[2], वजूहे तसल्ली[3] न हुआ
है यह वह लफ़्ज़, कि शर्मिन्दः-ए-मअनी[4] न हुआ

सब्ज़ः-ए-ख़त[5] से तेरा, काकुले सरकश[6] न दबा
यह ज़मर्रुद[7] भी हरीफ़े दमे अफ़’ई[8] न हुआ

मैंने चाहा था कि अन्दोहे वफ़ा[9] से छूटूँ
वह सितमगर[10] मेरे मरने प भी राज़ी न हुआ

दिल गुज़रगाहे ख़याले मै-ओ-साग़र[11] ही सही
गर नफ़स जादः-ए-सरमंज़िले तक़वा[12] न हुआ

हूँ तेरे व’अदः[13] न करने में भी राज़ी, कि कभी
गोश[14] मिन्नतकशे गुलबाँगे तसल्ली[15] न हुआ

किससे महरूमि-ए-क़िस्मत[16] की शिकायत कीजे
हमने चाहा था कि मर जायें, सो वह भी न हुआ

मर गया सदमः-ए-यक जुंबिशे लब[17] से ग़ालिब
नातवानी[18] से हरीफ़े दमे ’ईसा[19] न हुआ

---

1. संसारः, कालः; 2. ‘वफ़ा’ (= निर्वाहः) इति शब्दः; 3. सन्तोषस्य कारणम्; 4. सार्थकः; 5. मुखगतं लोम; 6. धृष्टकेशपाशः; 7. हरिन्मणिः; 8. सर्पस्य फूत्कृतेः प्रतिद्वन्द्वी; हरिन्मणिं (पन्नाख्यं रत्नं) अवलोक्य सर्पोऽन्धो भवतीति कविसमयः 9. ‘वफ़ा’ख्यं दुःखम्; 10. आततायी; 11. चषकमधुनोः कल्पनया भरितो मार्गः; 12. प्राणाः संयममार्गस्य (पथिकाः); 13. वाग्दानम्; 14. कर्णौ; 15. शुभसमाचारेण कृतज्ञौ; 16. भाग्यहीनत्वम्; 17. अधर-कम्पनाघातमात्रम्; 18. दौर्बल्यम्; 19. प्रियस्य श्वसितं सोढुं समर्थः, ‘ईशू’ (= प्रियः), ‘ईसामसीहस्य फूत्कारेण मृता जीवन्ति स्मेति प्रसिद्धिः।’

9

सन्तोषस्य न हेतु'र्निवाहो'ऽभूत् कथञ्चिदपि लोके।
शब्दः सैष हि यस्मिन् न लक्ष्यते कश्चिदर्थोऽपि ।।1।।

कर्णस्थकेशकलया न परास्तो धृष्टकेशपाशस्ते।
न हरिन्मणिरयमभवद् व्यालश्वसितप्रतिद्वन्द्वी ।।2।।

'निर्वाह'-दुःखजालाद् विमुक्तिरासीदितो ममाभीष्टा।
मृत्यावपि मे नाभूत् सहमत इत आततायी सः ।।3।।

मधुचषककल्पनाया हृदयं मार्गः कुतोऽपि मन्तव्यः।
न प्राणा यदि संयमपथस्य पथिकत्वमर्हन्ति ।।4।।

मिलितुं वचनमदातर्यपि प्रसन्नस्त्वयीह वर्तेऽहम्।
यत्सान्त्वमधुरवार्तार्थिनौ कदाचिन्न मत्कर्णौ ।।5।।

कम्प्रति दौर्भाग्यस्य क्रियतां परिभाषणं मयेदानीम्।
मरणमभीप्सितमासीत् तदपि च नाद्यापि सङ्घटितम् ।।6।।

मृत्युं 'ग़ालिब' आप्तोऽधरैकविस्फुरणघातमात्रेण।
दौर्बल्येन न सोऽभूद् 'यीशू'-श्वसितप्रतिद्वन्द्वी ।।7।।

10

सताइशगर[1] है ज़ाहिद[2] इस क़दर, जिस बाग़े रिज़्वाँ[3] का
वह इक गुलदस्तः[4] है हम बेखुदों[5] के ताक़े निसियाँ[6] का

बयाँ क्या कीजिये बेदादे काविशहा-ए-मिश़गाँ[7] का
कि हर इक क़तरः-ए-ख़ूँ[8] दानः[9] है तस्बीहे मरजाँ[10] का

न आई सतवते क़ातिल[11] भी माने'अ, मेरे नालों को[12]
लिया दाँतों में जो तिनका, हुआ रेशः नयस्ताँ[13] का

दिखाऊंगा तमाशा, दी अगर फ़ुर्सत ज़माने ने
मेरा हर दाग़े दिल, इक तुख़्म[14] है सर्वे चराग़ाँ[15] का

किया आईनः ख़ाने[16] का वह नक़्शः, तेरे जल्वे[17] ने
करे, जो परतवे ख़ुर्शीद[18], आलम[19] शबनमिस्ताँ[20] का

मेरी ता'मीर[21] में मुज़्मर[22] है इक सूरत ख़राबी[23] की
हयूला[24] बर्क़े ख़रमन[25] का है, ख़ूँने गर्म देहक़ाँ[26] का

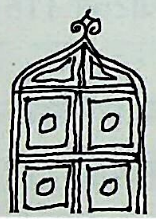

---

1. प्रशंसकः; 2. संयमी, धार्मिकः; 3. स्वर्गः, 'रिज़्वाँ' स्वर्गस्य रक्षको देवः; 4. पुष्प-करण्डिका; 5. आत्मारामाः; 6. गवाक्षः, यत्र किमपि स्थापयित्वा जनो विस्मरेत्; 7. दृगञ्चलप्रयत्नानामन्यायः; 8. रक्तबिन्दुः; 9. मणिका; 10. प्रवालस्रक्; 11. घातुकस्य प्रभावः; 12. मदार्तनादान् रोदधुं न प्राभवदित्यर्थः; 13. वेणुरित्यर्थः; 14. बीजम्; 15. दीपवृक्षः; 16. दर्पणजटितभवनम्; 17. छविः; 18. सूर्यस्य प्रकाशः; 19. दशा; 20. तुषारभरिता भूः; 21. निर्माणम्; 22. अन्तर्हितम्; 23. विनाशः; 24. तत्त्वम्; 25. खलधान्यस्य विद्युत्; 26. कृषकः;

10

धार्मिक एवमितोऽस्ति स्वर्गोद्यानस्य यस्य शस्तिपरः।
तत् स्वात्मारामाणां गवाक्षगत-पुष्पपात्रं नः ।।1।।

दृक्पक्ष्मचापलानामन्यायो हन्त किं मयाऽऽख्येयः।
प्रत्येकं मम लोहितपृषत् प्रवालस्रजो मणिका ।।2।।

वधकस्य न प्रभावो मदार्तनादान् क्षमो वशीकर्तुम्।
यद् दशनेषु गृहीतं तत् तृणमपि वेणुतामभजत् ।।3।।

दीयेतावसरो मे यदि जगता कौतुकं प्रदर्श्येत।
प्रत्येकं हृदयाङ्को मम दीपस्रक्तरोर्बीजम् ।।4।।

त्वत्सौन्दर्येण कृता दर्पणभवनस्य सा दशा तावत्।
यां कुरुते रविरश्मिस्तुषारभरित-प्रदेशस्य ।।5।।

मम निर्माणे लीनं किमपि रहस्यं परं विनाशस्य।
कृषकस्य तप्तरुधिरे तत्त्वं खलधान्यवज्रस्य ।।6।।

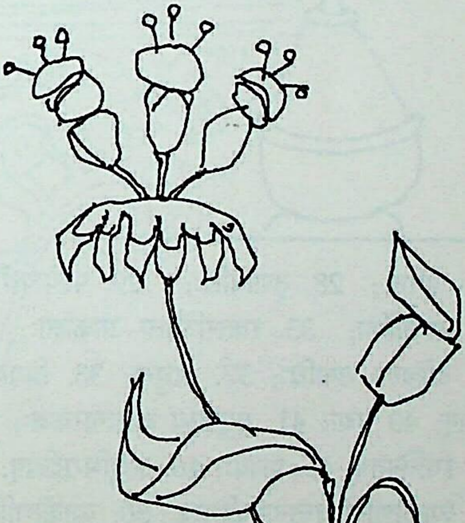

उगा है घर में हर सू[27] सब्ज़ः[28], वीरानी तमाशा कर[29]
मदार[30], अब खोदने पर घास के, है मेरे दरबाँ[31] का

ख़मोशी में निहाँ[32], ख़ूँगश्तः लाखों आरज़ूयें[33] हैं
चराग़े मुर्दः[34] हूँ, मैं बेज़बाँ[35], गोरे ग़रीबाँ[36] का

हनोज़,[37] इक परतवे नक़्शे ख़याले यार[38] बाक़ी है
दिले अफ़सुर्दः[39], गोया[40] हुजरः है यूसुफ़[41] के ज़िन्दाँ[42] का

बग़ल में ग़ैर[43] की, आज आप सोते हैं कहीं, वर्नः
सबब क्या, ख़्वाब में आकर तबस्सुमहा-ए-पिन्हाँ[44] का

नहीं मा’लूम, किस किस का लहू पानी हुआ होगा
क़यामत[45] है, सरश्क आलूदः[46] होना तेरी मिश़गाँ[47] का

नज़र में है हमारी ज़ादः-ए-राहे फ़ना[48], ग़ालिब
कि यह शीराज़ः[49] है आलम के अज्ज़ा-ए-परीशाँ[50] का

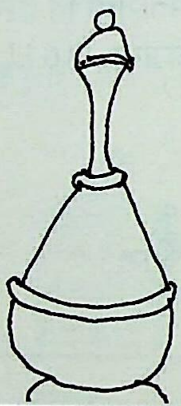

---

27. परितः; 28. तृणावलिः; 29. पश्येत्यर्थः; 30. आश्रयः; 31. द्वारपालः; 32. अन्तर्हिता; 33. रक्तरञ्जिता आकांक्षाः; 34. निर्वाणो दीपः; 35. मूकः; 36. दरिद्रस्य समाधिः; 37. अधुना; 38. प्रियकल्पनाचित्रस्य प्रकाशः; 39. निर्वाणं हृदयम्; 40 यथा; 41. यूसुफ़स्य कारागारकक्षः; 42. कारागारः; 43. परः, शत्रुः; 44. ईषत्स्मितम्; 45. प्रलयः; 46. अश्रुभिरार्द्रत्वम्; 47. दृगञ्चलम्; 48. मृत्योः सरणिः; 49. व्याकीर्णानां वस्तूनामेकीभावः; 50. व्याकीर्णानि खण्डानि।

ध्वंसस्य पश्य दृश्यं तृणावलिः प्रोद्गता गृहं परितः।
तृणनिष्कुषणाजीवः सञ्जातो मामको द्वाःस्थः ।।7।।

मौने निहिता लक्षश आकाङ्क्षा रक्तरञ्जिता मम रे।
निःस्वस्येह समाधेर्निर्वाणो दीप एषोऽहम् ।।8।।

किरणोऽवशिष्यते हृदि केवलमेष प्रियस्मृतिप्रख्यः।
मन्ये निर्वाणं हृद् ‘यूसुफ़’ - काराप्रकोष्ठ इति ।।9।।

शेषे यदेष पार्श्वे क्वचित् परस्य त्वमद्य विनिगूढम्।
ईषत्स्मितस्य कः स्यात् स्वप्नावसरेऽन्यथा हेतुः ।।10।।

हन्त न जाने रक्तं सलिलीभूतं नु कस्य कस्येह।
अश्रुक्लिन्नत्वमिदं, प्रलयोऽस्ति, त्वद्दृगञ्चलयोः ।।11।।

‘ग़ालिब’ मम दृशि वर्तत इह सरणिर्हन्त केवला मृत्योः।
यद्ग्रन्थिसूत्रमेतज्जगतो व्याकीर्णखण्डानाम् ।।12।।

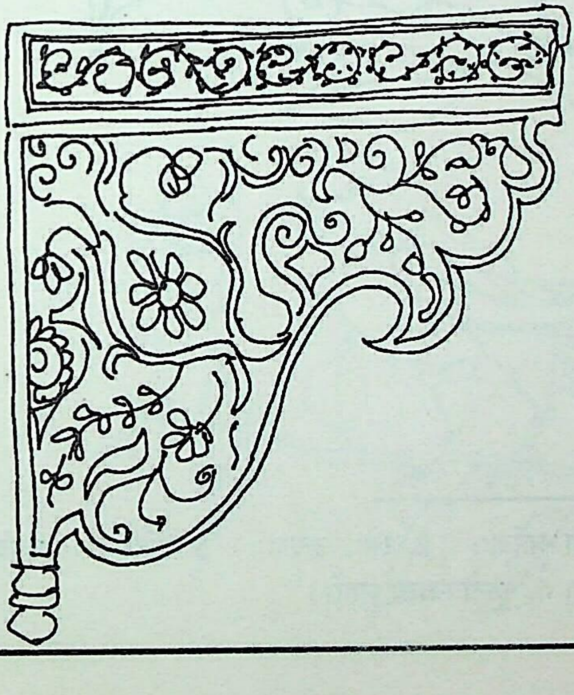

11

न होगा यक बयाबाँ मान्दगी[1] से ज़ौक़[2] कम मेरा
हबाबे मौजः-ए-रफ्तार[3] है नक़्शे क़दम[4] मेरा

महब्बत थी चमन से, लेकिन अब यह बेदिमाग़ी[5] है
कि मौजे बू-ए-गुल[6] से नाक में आता है दम मेरा

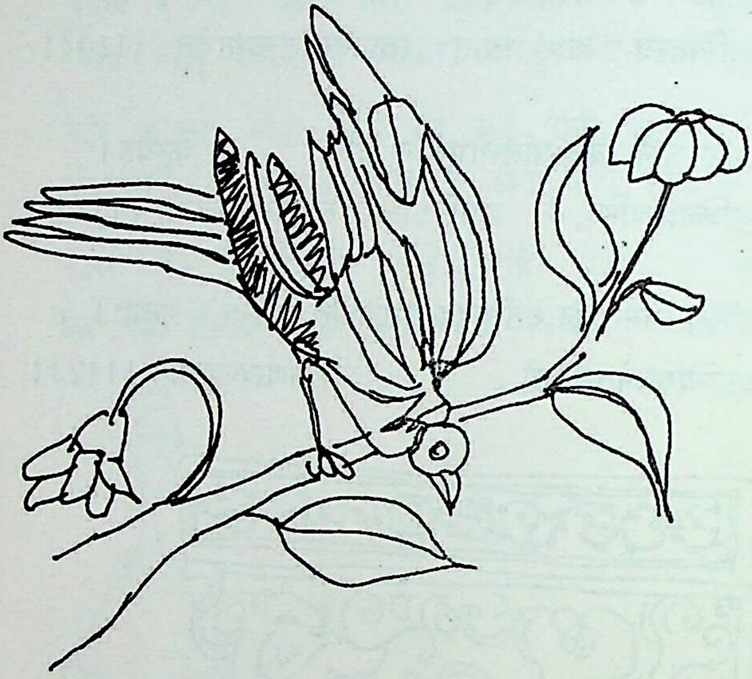

---

1. मरुभूपरिमिता श्रान्तिः; 2. रसः, उत्साहः; 3. गतिलहर्या बुद्बुदोपमम्; 4. पदचिह्नम्; 5. घृणा; 6. सुमनोगन्धस्य लहरी।

11

श्रान्त्या मरु-भू-मितया भविता नोत्साह एष मे शिथिलः।
गतिलहरीषु ममोद्यद्बुदबुदसदृशं नु पदचिह्नम् ।।1।।

प्रत्युपवनं मदीयं प्रेम पुराऽऽसीत् परं घृणेदानीम्।
सुमनोगन्धलहर्या नासामायान्ति मत्प्राणाः ।।2।।

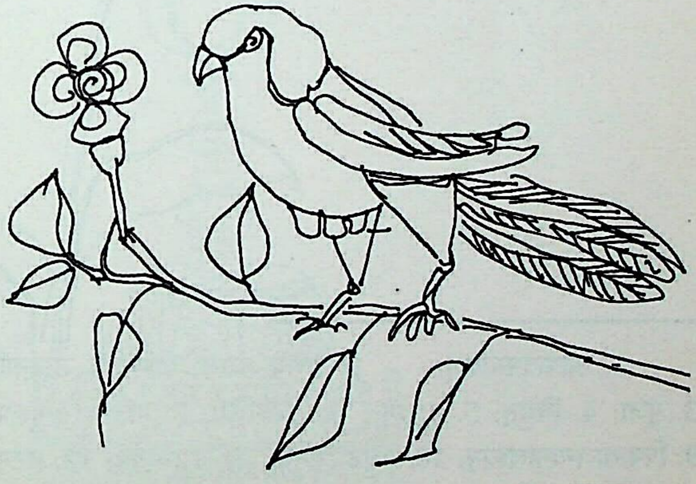

12

सरापा[1] रेह्ने 'अिश्क़-ओ-नागुज़ीरे उल्फ़ते हस्ती[2]
'अिबादत[3] बर्क़[4] की करता हूँ और अफ़सोस[5] हासिल[6] का

बक़द्रे ज़र्फ़[7] है, साक़ी[8] ! ख़ुमारे तश्नः कामी[9] भी
जो तू दरिया-ए-मै[10] है, तो मैं ख़मियाज़ः[11] हूँ साहिल[12] का

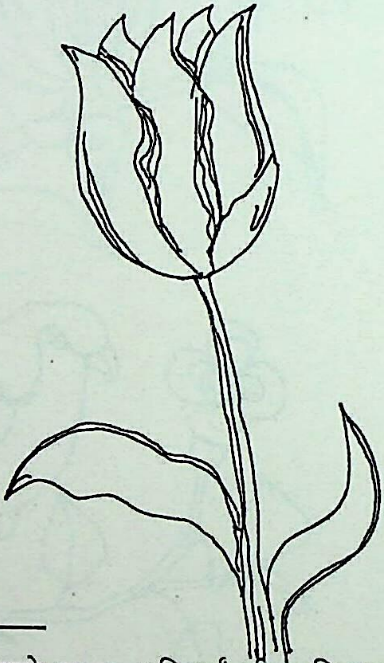

---

1. आपादमस्तकम्; 2. प्रणये न्यस्तः अनिवार्य जीवनाभिलाषञ्च श्रितः; 3. पूजा; 4. विद्युत्; 5. दुःखम्; 6. उपलब्धिः; 7. पात्रस्य अनुरूपः; 8. मधुदात्री; 9. पिपासाजन्यमालस्यम्; 10. मधुनः समुद्रः; 11. जृम्भितम्; 12. तटम्।

12

आमूलचूलमस्मि न्यस्तः प्रणये श्रितस्तथाऽस्तित्वम्।
विद्युतमर्चामितमां शोचामितमां समुपलब्धिम् ।।1।।

मदतृष्णाया ह्रासो मधुदात्र्यनुरूप एव पात्रस्य।
त्वमसि यदब्धिर्मधुनो वर्ते तटजृम्भितं तदहम् ।।2।।

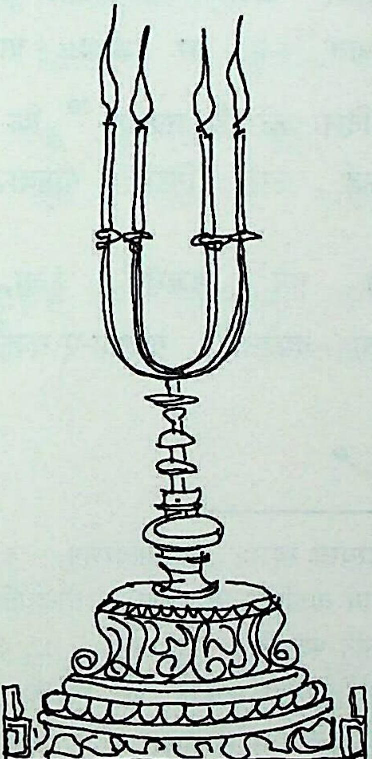

13

महरम[1] नहीं है तू ही नवाहा-ए-राज़[2] का
याँ वर्नः जो हिजाब[3] है, पर्दः[4] है साज़[5] का

रंगे शिकस्तः,[6] सुब्हे बहारे नज़ारः[7] है
यह वक़्त है शिगुफ़्तने गुलहा-ए-नाज़[8] का

तू और सू-ए-ग़ैर[9] नज़रहा-ए-तेज़ तेज़
मैं और दुख तेरी मिज़्शः हा-ए-दराज़[10] का

सर्फ़ः[11] है ज़ब्ते आह[12] में मेरा, वगर्नः[13] मैं
तो'मः[14] हूँ, एक ही नफ़से जाँ गुदाज़[15] का

हैं, बसकि जोशे बादः[16] से, शीशे उछल रहे
हर गोशः-ए-बिसात,[17] है सर शीशः बाज़[18] का

काविश[19] का दिल करे है तक़ाज़ा,[20] कि है हनोज़
नाखुन प क़र्ज़ उस गिरहे नीमबाज़[21] का

ताराजे काविशे ग़मे हिजराँ[22] हुआ, असद
सीनः, कि था दफ़ीनः[23] गुहरहा-ए-राज़[24] का

---

1. मर्मज्ञः; 2. रहस्यस्य स्वराः; 3. आवरणम्; 4, 5. वाद्यस्योपरिभागः; 6. विकृतो वर्णः; 7. दर्शनीयं वासन्तिकं सुप्रभातम्; 8. सौन्दर्याभिमानसुमनसां विकासः; 9. शत्रुं प्रति; 10. विततानि पक्ष्माणि; 11. लाभः; 12. आर्तस्वरस्य नियन्त्रणम्; 13. अन्यथा; 14. ग्रासः; 15. प्राणहरश्वसितम्; 16. मदिराया आवेगः; 17. सभायाः प्रत्येकं कोणः; 18. काचपात्रमुत्तोल्य क्रीडाकर्ता; 19. प्रयासः; 20. अपेक्षा; 21. अर्धभिन्ना ग्रन्थिः; 22. विरहदुःखलुण्ठितः; 23. निधानम्; 24. रहस्यमुक्ताः।

13

न रहस्यस्वरमर्म त्वयैव विदितं नु हन्त जगतीह।
वाद्यस्योपरिभागोऽन्यथाऽत्र यैषाऽऽवृतिर्नूनम् ॥ 1 ॥

वैवर्ण्यं तावदिदं दृश्यं मधुमाससुप्रभातस्य।
अवसर एष सुमनसां सविभ्रमाणां विकासस्य ॥ 2 ॥

त्वं प्रतिपक्षं प्रति च त्वद्दृश एताः खराः खरा नूनम्।
दुःखञ्च पक्ष्मणां ते विततानां तावदहमेषः ॥ 3 ॥

आर्तस्वरस्य लाभो विनियन्त्रण एष मेऽन्यथाऽहमिह।
श्वसितस्यैवैकस्य प्राणहरस्याल्पको ग्रासः ॥ 4 ॥

मदिरावेगादधुना समुच्छलन्तीव काचपात्राणि।
काचनटस्य शिरोऽस्ति प्रत्येकं कुट्टिमक्षेत्रम् ॥ 5 ॥

हृदयमपेक्षत एकं प्रयासमिह मामकं यदद्यापि।
ग्रन्थेरस्येव ऋणं नखेषु परमर्धभिन्नायाः ॥ 6 ॥

'असद' ! यदासीद् हृदयं निधानमेकं रहस्यमुक्तानाम्।
तल्लुण्ठितमिव जातं वियोगपीडानुसन्धाने ॥ 7 ॥

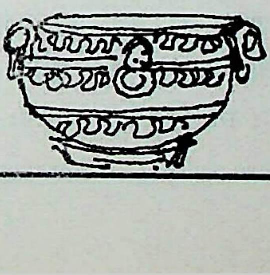

14

बज़्मे शाहनशाह[1] में अश'आर[2] का दफ़्तर[3] खुला
रखियो यारब, यह दरे गंजीनः-ए-गौहर[4] खुला

शब[5] हुई, फिर अंजुमे रख़्शिन्दः[6] का मंज़र[7] खुला
इस तकल्लुफ़[8] से, कि गोया बुतकदे[9] का दर[10] खुला

गरचेः हूँ दीवानः,[11] पर क्यों दोस्त का खाऊँ फ़रेब[12]
आस्तीं[13] में दश्नः[14] पिन्हाँ,[15] हाथ में नश्तर[16] खुला

गो न समझूँ उसकी बातें, गो न पाऊँ उसका भेद
पर यह क्या कम है कि मुझसे वह परी पैकर[17] खुला

है, ख़याले हुस्न[18] में, हुस्ने 'अमल[19] का सा ख़याल
ख़ुल्द[20] का इक दर है, मेरी गोर[21] के अन्दर खुला

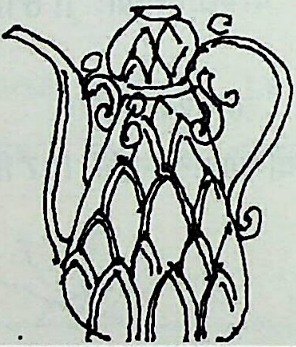

---

1. राज-सभा; 2. कविता; 3. कार्यालयः; 4. मुक्ता-निधानस्य द्वारम्; 5. रात्रिः; 6. प्रकाशवन्ति नक्षत्राणि; 7. दृश्यम्; 8. सुसंस्कृता पद्धतिः; 9. देवालयः; 10. द्वारम्; 11. मत्तः; 12. वञ्चना; 13. अङ्गरक्षकनाम्नःपरिधानस्य स भागः येन बाहू आवृतौ भवतः; 14. छुरिका; 15. गुप्ता; 16. शल्यम्; 17. अप्सरःसदृशः सुन्दरः; 18. सौन्दर्यस्य कल्पना; 19. उपासनायाः सौन्दर्यम्; 20. स्वर्गः; 21. समाधिः;

14

उद्घाटितः सभायां कविताकार्यालयोऽस्ति सम्राजः।
रक्षत्वीश्वर एतद् द्वारं मुक्तानिधानस्य ॥ 1 ॥

रजनी प्राप्ता दृश्यं नक्षत्राणां प्रकाशमानानाम्।
विधिनोद्घाटितमेवं द्वारं देवालयस्य यथा ॥ 2 ॥

मत्तो यदप्यहं कथमाकृत्या वञ्चितोऽत्र सुहृदः स्याम्।
छुरिकोत्तरीयगुप्ता स्फुटञ्च लक्ष्यं करे शल्यम् ॥ 3 ॥

यदपि वचस्तस्याहं न वेद यदपीह तद्रहस्यञ्च।
नूनं तथापि किमिदं व्यक्तः सुभगः स मत्पुरतः ॥ 4 ॥

सौन्दर्यकल्पनायां सौन्दर्योपासनं प्रवृत्तमिव।
अस्तीव मत्समाधौ स्वर्गस्योद्घाटितं द्वारम् ॥ 5 ॥

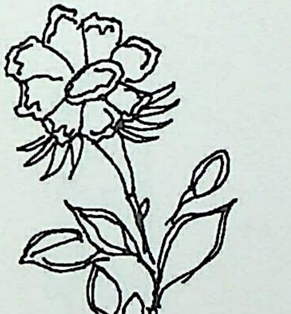

मुँह न खुलने पर, है वह 'आलम[22], कि देखा ही नहीं
ज़ुल्फ़[23] से बढ़कर, नक़ाब[24] उस शोख़[25] के मुँह पर खुला

दर प रहने को कहा और कह के कैसा फिर गया
जितने 'अर्से[26] में मेरा लिपटा हुआ बिस्तर खुला

क्यों अँधेरी है शबे ग़म,[27] है बलाओं[28] का नुज़ूल[29]
आज उधर ही को रहेगा दीदः-ए-अख़्तर[30] खुला

क्या रहूँ ग़ुर्बत[31] में खुश, जब हो हवादिस[32] का यह हाल
नामः[33] लाता है वतन से नामःबर,[34] अक्सर खुला

उसकी उम्मत[35] में हूँ मैं, मेरे रहें क्यों काम बन्द
वासते जिस शह के, ग़ालिब गुंबदे बेदर[36] खुला

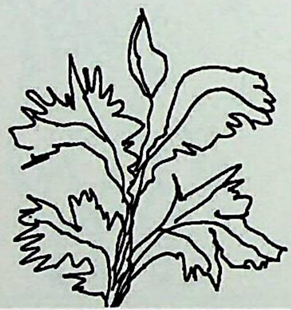

---

22. दशा; 23. अलकाः; 24. अवगुण्ठनम्; 25. चलः, चञ्चलः; 26. कालावधिः; 27. विरह-रात्रिः; 28. विपदः; 29. अवतरणम्; 30. नक्षत्राणां नेत्रम्; 31. प्रवासः; 32. दुर्घटनाः; 33. पत्रम्; 34. पत्रवाहकः; 35. अनुयायिनां समूहः; 36. द्वारविरहितं मण्डपम्, आकाशमित्यर्थः, ईश्वरस्य सन्देशहरो हज़रतमुहम्मद आकाशमुत्पपातेति कथ्यते।

सत्यावृते मुखेऽपि प्रकीर्णमोजस्त्वदृष्टपूर्वमिव।
अवगुण्ठनेन लसितं तस्य चलस्यालकादधिकम् ॥ 6 ॥

स्थातुं द्वार्यनुमतवान् पुनः स्ववचनादतो निवृत्तश्च।
यावति शिथिलीभूतः काले मम संस्तरो बद्धः ॥ 7 ॥

विपदामवतरणमहो विरहनिशेयं कथं तमश्छन्ना।
नक्षत्राणां दृष्टय उत एवोन्मीलितारोऽद्य ॥ 8 ॥

दुर्घटनानामेषा दशा प्रवासे किमु प्रसन्नः स्याम्।
उद्घाटितं स्वदेशात् पत्रहरः पत्रमानयति ॥ 9 ॥

तस्यास्मि सम्प्रदाये स्यादवरुद्धं कथन्नु मत्कार्यम्।
'ग़ालिब' नभ उद्घाटितमिह यस्मै पातसाहाय ॥ 10 ॥

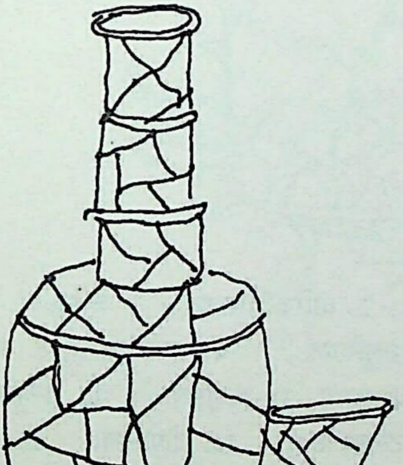

15

शब, कि बर्क़े सोज़े दिल[1] से, ज़हरः-ए-अब्र[2] आब[3] था
शो'लः-ए-जव्वालः[4] हर इक हल्क़ः-ए-गिरदाब[5] था

वाँ करम[6] को, 'उज़्र बारिश,[7] था 'अिनाँगीरे ख़िराम[8]
गिरिये[9] से याँ, पंबः-ए-बालिश[10] कफ़े सैलाब[11] था

वाँ, ख़ुदआराई[12] को, था मोती पिरोने का ख़याल
याँ, हुजूमे अश्क[13] में, तारे निगह नायाब[14] था

जल्वः-ए-गुल[15] ने किया था, वाँ, चराग़ाँ[16] आबे जू[17]
याँ, रवाँ[18] मिश़गाने चश्मे तर[19] से ख़ूने नाब[20] था

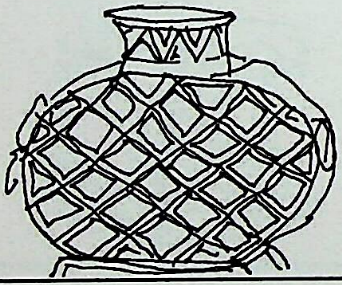

---

1. विद्युदिव कम्पमानो हृद्दाहः; 2. वारिद-पित्ताशयः; 3. जलम्; 4. भ्रमिमान् ज्वालः; 5. भ्रमरचक्रम्; 6. कृपा, कृपालुरित्यर्थः; 7. वर्षारूपो व्याजः; 8. मन्दगतिः; 9. रुदितम्; जलस्य फेनः; 10. उपधानतूलम् 11. स्वशृङ्गारः; 12. अश्रुचक्रवातः; 13. दृग्दोरकः 14. अप्राप्यः; 15. पाटलस्य छटा; 16. दीपोत्सवः; 17. जलस्य धारा; 18. प्रवहत्; 19. आर्द्राक्षिपक्ष्माणि; 20. शुद्धं रक्तम्;

15

हृद्दाहविद्युता निशि वारिदपित्ताशयः सलिलमासीत्।
अग्निज्वालभ्रमरी प्रत्येकं भ्रमरचक्रमभूत् ।। 1 ।।

मन्दगतिस्तत्रासीद् वर्षाव्याजेन सर्वथा सुकृपा।
उपधानतूलमासीद् रुदितेनेतोऽम्बुफेन इव ।। 2 ।।

सूत्रयितुं तत्रासीन्मुक्ताश्चिन्तापरः स्वशृङ्गारः।
अत्राश्रुचक्रवातेऽलभ्यो दृग्दोरकः समभूत् ।। 3 ।।

दीपोत्सवमकरोदधिजलधारं पाटलच्छटा तत्र।
प्रवहत् पवित्रमासीद् रक्तं त्वत्रार्द्रपक्ष्मभ्यः ।। 4 ।।

याँ, सरे पुरशोर[21] बेख़्वाबी[22] से था दीवार जू[23]
वाँ, वह फ़र्क़े नाज़,[24] महवे बालिशे कमख़्वाब[25] था

याँ, नफ़स[26] करता था रौशन शम'अ-ए-बज़्मे बेख़ुदी[27]
जल्वः-ए-गुल[28] वाँ बिसाते सोहबते अहबाब[29] था

फ़र्श[30] से ता 'अर्श,[31] वाँ तूफ़ाँ था मौजे रंग[32] का
याँ ज़मीं से आस्माँ तक़ सोख़्तन का बाब था[33]

नागहाँ,[34] इस रंग से ख़ूनाबः[35] टपकाने लगा
दिल, कि ज़ौक़े काविशे नाखुन[36] से लज़्ज़तयाब[37] था

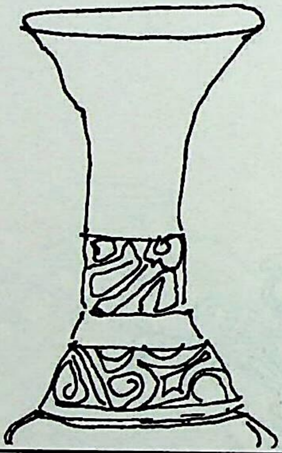

---

21. रणरणकभरितं शिरः; 22. औन्निद्र्यम्; 23. भित्तिगवेषणपरम्; 24. प्रियस्य शिरः; 25. मृदूपधानार्पितम्; 26. श्वासः; 27. विस्मृतिसभाप्रदीपः; 28. पुष्पोत्सवः; 29. मित्राणां समागमभूमिः; 30. भूमिः; 31. नभः; 32. रङ्गलहरी; 33. ज्वलनस्य स्थितिः; 34. अकस्मात्; 35. रक्तम्; 36. नखानां प्रयासः; 37. रसग्राहकः।

औन्निद्र्येणोन्मत्तं शिरोऽत्र भित्तिं गवेषयत् समभूत्।
दुर्ललितस्य शिरोऽभून्मृदूपधानार्पितं तत्र ॥ 5 ॥

विस्मृतिसभाप्रदीपं श्वासः प्रज्वालयन्नभूदत्र।
मित्रसमागमकुट्टिममासीत्सुमनोमहस्तत्र ॥ 6 ॥

वर्णतरङ्गप्लावनमासीत् तत्र क्षितेर्नभो यावत्।
प्रज्वलनस्थितिरासीत् क्षितेर्नभो यावदत्र परम् ॥ 7 ॥

एवमकस्मादासीद् रुधिरस्रावोन्मुखं हृदेतद् यत्।
पूर्वानुभूतकररुहगवेषणानन्दसंवलितम् ॥ 8 ॥

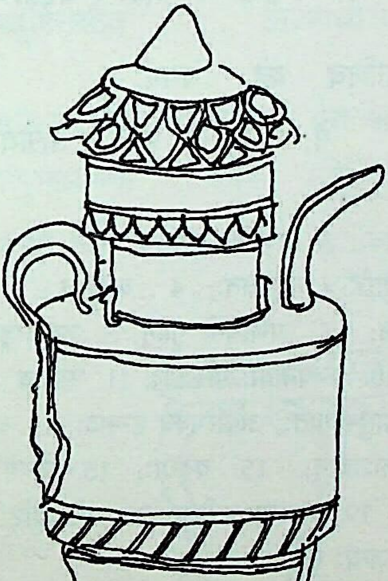

16

नालः-ए-दिल[1] में शब, अन्दाज़े असर[2] नायाब था
था सिपन्दे बज़्मे वस्ले ग़ैर[3], गो बेताब[4] था

मक़दमे सैलाब[5] से, दिल क्या नशात आहंग[6] है,
ख़ानः-ए-'आशिक़[7], मगर साज़े सदा-ए-आब[8] था

नाज़िशे अय्यामे ख़ाकिस्तर नशीनी,[9] क्या कहूँ,
पहलु-ए-अन्देशः[10] वक़्फ़े बिस्तरे संजाब[11] था

कुछ न की, अपने जुनूने नारसा[12] ने, वर्नः याँ
ज़र्रः ज़र्रः,[13] रूकशे ख़ुर्शीदे 'आलम ताब[14] था

आज क्यों परवा नहीं, अपने असीरों[15] की तुझे
कल तलक, तेरा भी दिल मेह्र-ओ-वफ़ा का बाब[16] था

याद कर वह दिन, कि हर इक हल्क़ः[17] तेरे दाम[18] का
इन्तिज़ारे सैद[19] में इक दीदः-ए-बेख़्वाब[20] था

मैंने रोका रात ग़ालिब को, वगर्नः देखते
उसके सैले गिरियः[21] में, गर्दूं[22] कफ़े सैलाब[23] था

---

1. हृदयस्यार्तनादः; 2. प्रभावः; 3. शत्रोर्मिलनगोष्ठ्याः कृते सर्षपः; बालकानां रक्षायै कृष्णसर्षपमग्नौ क्षिपन्तीत्याचारोऽत्र सङ्केतितः; 4. व्याकुलः; 5. जलप्लावनस्यागमनम्; 6. आनन्दरागोल्लसितम्; 7. प्रणयिनो गृहम्; 8. जलतरङ्गाख्यं वाद्यम्; 9. भुवि स्थितिकाले जनितो गर्वः; 10. कल्पनायाः परिवर्तः; 11. 'संजाब' नाम्नः पशोः कोमले चर्मशयनीये समर्पणम्; 12. प्राप्तुमशक्तः, अपरिपक्व उन्मादः; 13. प्रत्येकं कणः; 14. जगत्प्रकाशकः सूर्य इव प्रकाशवान्; 15. बद्धाः; 16. प्रेम्णो निर्वाहस्य चाध्यायः; 17, 18. जालस्य ग्रन्थिः; 19. वध्यस्य प्रतीक्षा; 20. उन्निद्रदृष्टिः; 21. अश्रुप्लावनम्; 22. नभः; 23. जलप्लावनजन्यः फेनः।

16

आसीद्धृदार्तनादे निश्यप्राप्यः स्फुटः प्रभावांशः।
शत्रुमिलनपरिषदि यत् सर्षप आसीत् स विकलोऽपि ॥ 1 ॥

हृत् प्लावनसम्प्राप्तेः कीदृशमेतद् यथा स्वरोल्लसितम्।
अन्तःपुरं प्रणयिनो वाद्यं यञ्जलतरङ्गाख्यम् ॥ 2 ॥

भूमौ स्थितिदिवसानां सम्प्रति किं वर्ण्यतां मया गर्वः।
आसीत् तु कल्पनीयं धूसरपशुचर्मशयनीयम् ॥ 3 ॥

प्राप्तुमशक्तेन कृतं न ममोन्मादेन किञ्चिदप्यत्र।
प्रत्येकमन्यथा कण आसीत् सूर्यप्रतिस्पर्धी ॥ 4 ॥

स्वनिवद्धानां विषये न ध्यानं तावकीनमद्य कथम्।
प्रीतेर्निर्वाहस्य ह्यः समभूत् त्वद्धृदध्यायः ॥ 5 ॥

तव दाम्नः प्रत्येकं ग्रन्थिः, स्मर, तस्य हन्त दिवसस्य।
उन्निद्रदृष्टिरासीत् निजवध्यस्य प्रतीक्षायाम् ॥ 6 ॥

एतन्मयाऽवरुद्धं 'ग़ालिब' यत्तावदन्यथा पश्येः।
तस्याश्रुप्लावनतो गगनं दृश्येत फेन इव ॥ 7 ॥

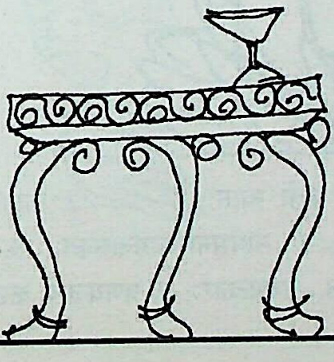

17

एक-एक क़तरे का मुझे देना पड़ा हिसाब
ख़ूने जिगर, वदी'अते मिशगाने यार[1] था

अब मैं हूं और मातमे इक शहरे आरज़ू[2]
तोड़ा जो तू ने आईनः, तिमसालदार[3] था

गलियों में मेरी ना'श[4] को खेंचे फिरो, कि मैं
जाँ दादः-ए-हवा-ए-सरे रहगुज़ार[5] था

मौजे सराबे दश्ते वफ़ा[6] का न पूछ हाल
हर ज़र्रः मिस्ले जौहरे तेग़[7] आबदार[8] था

कम जानते थे हम भी ग़मे 'अिश्क़[9] को, पर अब
देखा, तो कम हुए प' ग़मे रोज़गार[10] था

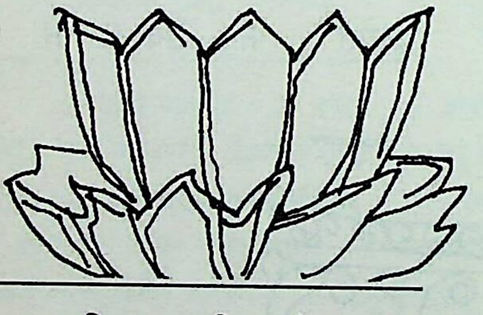

---

1. प्रियस्य पक्ष्मभिः कृतो न्यासः; 2. कामनानगरध्वंसजनितः शोकः; 3. चित्रैर्भरितः; 4. शवम्; 5. मार्गभ्रमणकामनासक्तः; 6. प्रणयनिर्वाहमरुमृगजलस्य लहर्यः; 7. तरवारेर्गुण इव; 8. सचमत्कारः; 9. प्रणयजन्यं कष्टम्; 10. विश्वपीडा।

17

प्रत्येकमेव बिन्दोः प्रस्तोतव्या मयेह गणनाऽऽसीत्।
आसीद् यकृतः क्षतजं मम हि प्रियपक्ष्मणां न्यासः ॥ 1 ॥

साम्प्रतमहमस्मीतः शोकश्च मनोरथैकनगरस्य।
चित्रमयः खल्वासीत् स दर्पणो यस्त्वया भग्नः ॥ 2 ॥

रथ्यासु मामकीनं शवमाकर्षन्त आत्मना भ्रमत।
यन्मार्गभ्रमणेच्छासमर्पितः कश्चिदासमहम् ॥ 3 ॥

निर्वाहमरुमृगाम्भोलहरीणां हन्त पृच्छ मा वार्ताम्।
प्रत्येकं कण आसीत् खर-तरवारेश्चमत्कारः ॥ 4 ॥

विदिताऽस्माभिरपीयं प्रेम्णः पीडा पुरेह सामान्या।
सामान्याऽप्यधुना परमालक्ष्यत विश्वपीडेति ॥ 5 ॥

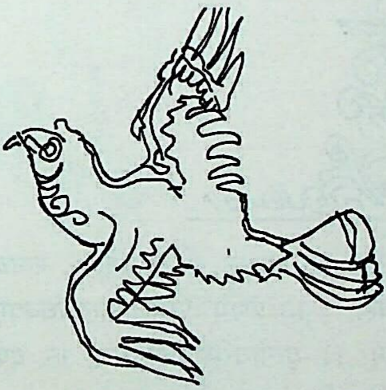

18

बसकि[1] दुश्वार[2] है, हर काम का आसाँ[3] होना
आदमी को भी मुयस्सर[4] नहीं, इन्साँ[5] होना

गिरियः[6] चाहे है ख़राबी मेरे काशाने[7] की
दर-ओ-दीवार से टपके है, बयाबाँ[8] होना

वाय[9] दीवानगि-ए-शौक़,[10] कि हर दम मुझको
आप जाना उधर, और आप ही हैराँ[11] होना

जल्वः[12] अज़बसकि[13] तक़ाज़ा-ए-निगह[14] करता है
जौहरे आईनः[15] भी चाहे है मिश़गाँ[16] होना

’अिश्रते क़त्लगहे अहले तमन्ना[17] मत पूछ
’अीदे नज़्ज़ारः[18] है शमशीर[19] का ’अुरियाँ[20] होना

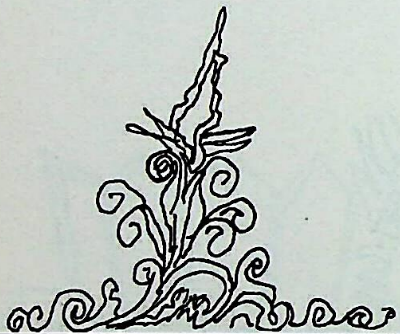

---

1. यतः; 2. कठिनम्; 3. सरलम्; 4. सरलम्; 5. मानवः; 6. रुदितम्; 7. गृहम्; 8. मरुभूमिः; 9. अहो; 10. प्रणये अभिलाषास्याधिक्यम्; 11. आश्चर्यान्वितः; 12. सौन्दर्यम्; 13. बाढम्; 14. दृग्गोचरीभवितुमिच्छा; 15. दर्पण-गता रेखा; 16. पक्ष्म, दृगञ्चलम्; 17. अभिलाषिणां वधस्थाने आनन्दः; 18. द्वितीयाचन्द्रस्य दर्शनम्; 19. तरंवारिः; 20. नग्नः;

18

कार्यस्य प्रत्येकं सरलीकरणं हि दुष्करं तावत्।
मनुजस्यापि न भाग्ये ह्यधिगन्तुं मानवत्वमिह ।। 1 ।।

रुदितं कामयमानं मद्गेहस्याहितं नु तावदिह।
किञ्चिदरण्यत्वमिव द्वार्भित्तिभ्यां स्फुटीभवति ।। 2 ।।

अभिलाषाधिक्यमहो तस्यां दिशि सन्ततं स्वयं गमनम्।
कथमागत इति चित्ते स्वयमेव च विस्मयानुभवः ।। 3 ।।

दृग्गोचरतां गन्तुं कामयते बाढमेव सौन्दर्यम्।
दर्पणगताऽपि रेखा चेष्टत इव पक्ष्मतां गन्तुम् ।। 4 ।।

यत्सुखमभिलाषवतां वधभूमौ पृच्छ मा न तद्विषये।
तरवारेर्नग्नत्वं दर्शनमिन्दोर्द्वितीयायाः ।। 5 ।।

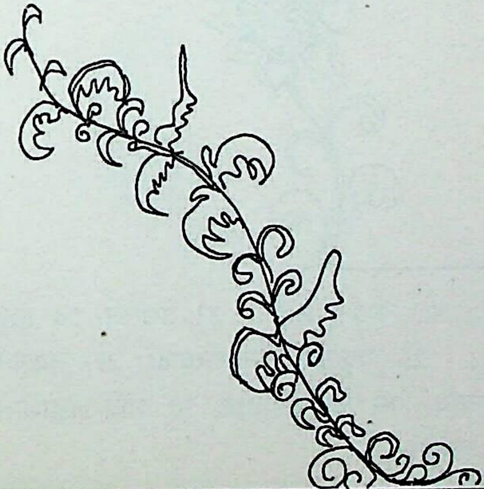

ले गये ख़ाक में हम, दाग़े तमन्ना-ए-नशात[21]
तू हो, और आप बसद रंग[22] गुलिस्ताँ[23] होना

'अिश्रते पारः-ए-दिल,[24] ज़ख़्मे तमन्ना खाना[25]
लज़्ज़ते रीशे जिगर,[26] ग़र्क़े नमकदाँ[27] होना

की मेरे क़त्ल के बाद, उसने जफ़ा[28] से तौबः[29]
हाय, उस ज़ूद पशेमाँ[30] का पशेमाँ होना

हैफ़[31] उस चार गिरह कपड़े की क़िस्मत, ग़ालिब
जिसकी क़िस्मत में हो 'आशिक़[32] का गरीबाँ[33] होना

---

21. सुखेच्छारूपः कलङ्कः; 22. वर्णानां शतैः; 23. उद्यानम्; 24. हृत्खण्डानामानन्दः; 25. हृदयव्रणानामनुभवः; 26. यकृतो व्रणानामास्वादः; 27. लवण-रस (लावण्य)-पात्रमग्नत्वम्; 28. अन्यायः; 29. विरति-प्रतिज्ञा; 30. शीघ्रं लज्जाशीलः; 31. हन्त; 32. प्रणयी; 33. गलस्य वसनम् ।

सुखकामनाकलङ्कं रजोनिलीना वयं निधाय हृदि ।
उद्यानं भव च त्वं वर्णानां सर्वथेह शतैः ।। 6 ।।

हृत्खण्डानां सौख्यं काङ्क्षाव्रणितस्य सन्ततानुभवः ।
यकृद्व्रणस्यास्वादो लावण्यसुपात्रमग्नत्वम् ।। 7 ।।

कृत्वा मद्वधमिह च प्रतिजज्ञे विरतिमीदृशोऽन्यायात् ।
लघुलज्जितस्य तस्य क्षणमेवं लज्जितत्वमहो ।। 8 ।।

चतुरङ्गुलिमात्रस्य ग्रीवावसनस्य तस्य भाग्यमहो ।
यस्य तु भाग्ये घटितं प्रणयिग्रीवास्थवसनत्वम् ।। 9 ।।

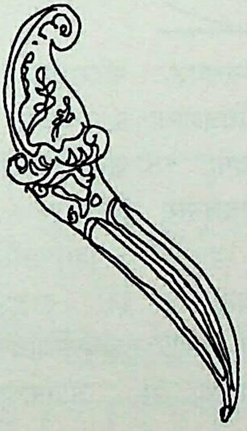

19

शब, ख़ुमारे शौक़े साक़ी[1], रुस्तखेज़ अन्दाज़ः[2] था
ता मुहीते बादः[3], सूरत ख़ानः-ए-ख़मियाज़ः[4] था

यक क़दम वहशत[5] से, दर्से दफ़्तरे इम्काँ[6] खुला
जादः[7], अज्ज़ा-ए-दो 'आलम दश्त[8] का, शीराज़ः[9] था

माने'-ए-वहशत ख़िरामीहा-ए-लैला,[10] कौन है
ख़ानः-ए-मजनूने सहरा गर्द,[11] बे दरवाज़ः[12] था

पूछ मत रुस्वाइ-ए-अन्दाज़े इस्तिग़ना-ए-हुस्न[13]
दस्त[14] मरहूने हिना,[15] रुख़सार[16] रेह्‌ने ग़ाज़ः[17] था

नालः-ए-दिल[18] ने दिये औराक़े लख़्ते दिल[19] बबाद[20]
यादगारे नालः,[21] यक दीवाने बे शीराज़ः[22] था

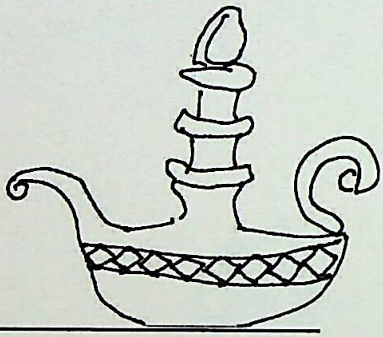

---

1. मधुदात्र्या अप्राप्तावभिलाषजं मदिरालस्यम्:; 2. प्रलयस्योदाहरणम्; 3. मधुपरिधिं यावत्; 4. जृम्भाणां चित्रशाला; 5. उन्मादस्य प्रथमः क्रमः; 6. सम्भावना-जगतः (पुस्तकस्य) पाठः; 7. मार्गः, 8. द्वयोर्लोकयोरंशरूपमरण्यम्; 9. विकीर्णः; 10. मजनू-प्रेयस्या लैलाया मत्तचलनस्य प्रतिबन्धकः; 11. मरुभुवि इत्वरकस्येव परिभ्रमतो मजनोः गृहम्; 12. द्वारविरहितं द्वारपालविरहितं वा; 13. सौन्दर्यस्य (सौन्दर्यतः) निःस्पृहत्वरूपस्तिरस्कारः 14. हस्तः; 15. मदयन्तिकायाः मेंहदी-पदार्थस्याधमर्णः; 16. कपोलः; 17. मुखचूर्णस्याधमर्णः; 18. हृदयस्यार्तनादः; 19. हृदयखण्डपृष्ठानि; 20. पवनाय; 21. आर्तनादस्य स्मृतिः; 22. व्याकीर्ण कवितासङ्कलनम्।

19

मधुदात्री-प्रेममदः प्रलयस्यासीन्निशि प्रकार इव ।
मदिरापरिधिं यावज्जृम्भाणां चित्रगृहमासीत् ।। 1 ।।

उन्मादप्रथमपदात् सम्भावनलोकपाठ उद्घटितः ।
संसारद्वयमरुभूपथबन्धोऽजनि विकीर्णश्च ।। 2 ।।

'लैला'-मन्दगतीनामासीदवरोधकः क एवेह ।
अटवीत्वरस्य 'मजनोर्' द्वारविहीनं हि गृहमासीत् ।। 3 ।।

मा पृच्छत, सौन्दर्यं कियदपयशसः प्रचारतः पात्रम् ।
मदयन्तिकाङ्गरागद्वयाधमर्णौ करौ गण्डौ ।। 4 ।।

आर्तस्वरैः प्रदत्तान्यनिलाय तथा हृदंशपत्राणि ।
व्याकीर्णमार्तनादस्मृतिरासीत् काव्यसङ्कलनम् ।। 5 ।।

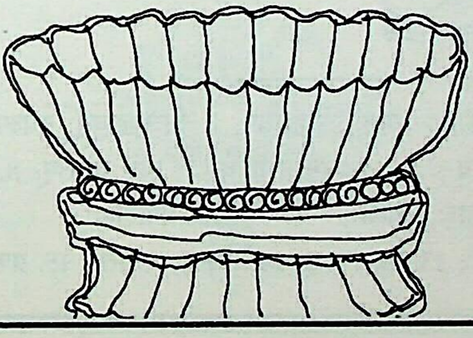

20

दोस्त, ग़मख़्वारी[1] में मेरी, स'अि[2] फ़रमायेंगे क्या
ज़ख़्म के भरने तलक, नाख़ुन न बढ़ जायेंगे क्या ?

बेनियाज़ी[3] हद से गुज़री, बन्दः परवर,[4] कब तलक
हम कहेंगे हाले दिल और आप फ़रमायेंगे क्या ?

हज़रते नासेह[5] गर आयें, दीदः-ओ-दिल[6] फ़र्शे राह[7]
कोई मुझको यह तो समझा दो, कि समझायेंगे क्या ?

आज वाँ तेग़-ओ-कफ़न[8] बाँधे हुए जाता हूँ मैं
'अुज्र[9] मेरे क़त्ल करने में वह अब लायेंगे क्या ?

गर किया नासेह न हमको क़ैद, अच्छा, यूँ सही
यह जुनूने 'अिश्क़[10] के अन्दाज़ छुट जायेंगे क्या ?

खानः ज़ादे ज़ुल्फ़[11] हैं, ज़ंजीर से भागेंगे क्यों
हैं गिरफ्तारे वफ़ा[12], ज़िन्दाँ[13] से घबरायेंगे क्या ?

है अब इस मा'मूरे[14] में क़ेहते ग़मे उल्फ़त,[15] असद
हमने यह माना, कि दिल्ली में रहें, खायेंगे क्या ?

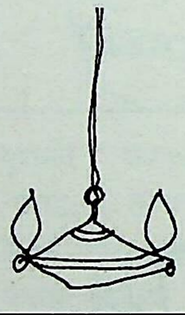

---

1. सहानुभूतिः; 2. यत्नः, साहाय्यम्; 3. निःस्पृहत्वम्, उपेक्षा; 4. दीनोद्धारकः; 5. उपदेशको महाशयः; 6. हृदयमक्षिणी च; 7. मार्गे व्यात्तम्; 8. तरवारि-शववसने; 9. निषेधरूपो व्यवहारः, व्याजः; 10. प्रेमोन्मादः; 11. अलकैर्बद्धाः; 12. प्रणयपाशबद्धाः; 13. कारागृहम्; 14. नगरम्, वसतिः; 15. प्रणयकष्टदुर्भिक्षम् ।

20

सुहृदः सहानुभूतौ मम कर्तारः किमेव साहाय्यम् ।
वर्धन्ते न नखाः किं पूर्यन्ते न व्रणा यावत् ।। 1 ।।

दीनोद्धारक ! काष्ठां परामुपेक्षा गता, स्वहृदवस्थाम् ।
कियदिह निवेदयामो भवांश्च वक्ता 'किमि'त्येव ।। 2 ।।

उपदेशको महाशय आयात् पथि हृदयमक्षिणी च मम ।
कश्चिद् विनिर्दिशेन्मां किमिव नु मां यत्स उपदेष्टा ।। 3 ।।

तरवारिं शववसनं निबध्य तत्राहमद्य गच्छामि ।
व्याजं कमितःप्रभृति प्रविदध्यान्मद्वधे स जनः ।। 4 ।।

मां काराविनिबद्धं कुर्यादुपदेशकोऽस्तु सत्येवम् ।
विनिवृत्ताः स्युः किमिमाः प्रेमोन्मादस्य पद्धतयः ।। 5 ।।

कुन्तलविनिबद्धाः स्मः कथं बिभीमो वयं नु निगडेभ्यः ।
विकलाः कथं भवामः कारातः प्रेमपाशगताः ।। 6 ।।

'असद' निवसतावस्यामापतितं प्रेमदुःखदुर्भिक्षम् ।
अङ्गीक्रियेत वासो दिल्ल्यां चेद् भक्षयामः किम् ।। 7 ।।

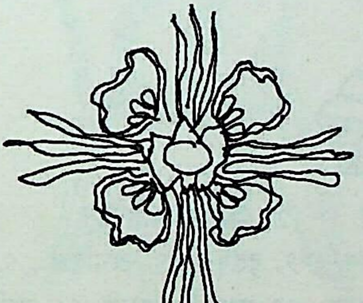

21

यह न थी हमारी क़िस्मत, कि विसाले यार[1] होता
अगर और जीते रहते, यही इन्तिज़ार होता

तेरे वा'दे[2] पर जिये हम, तो यह जान, झूट जाना
कि ख़ुशी से मर न जाते, अगर ए'तिबार[3] होता

तेरी नाज़ुकी[4] से जाना, कि बँधा था 'अेह्द[5] बोदा[6]
कभी तू न तोड़ सकता, अगर उस्तुवार[7] होता

कोई मेरे दिल से पूछे, तेरे तीरे नीमकश[8] को
यह ख़लिश[9] कहाँ से होती, जो जिगर के पार होता

यह कहाँ की दोस्ती है, कि बने हैं दोस्त, नासेह[10]
कोई चारः साज़[11] होता, कोई ग़मगुसार[12] होता

रगे संग[13] से टपकता, वह लहू, कि फिर न थमता
जिसे ग़म समझ रहे हो, यह अगर शरार[14] होता

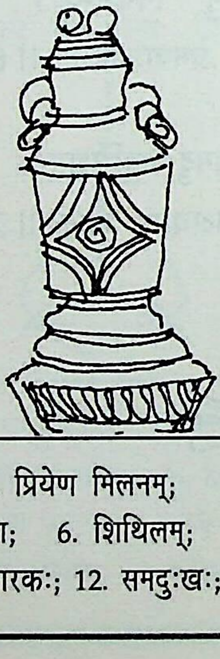

---

1. प्रियेण मिलनम्; 2. वचनम्, प्रतिश्रुतिः; 3. विश्वासः; 4. मार्दवम्; 5. प्रतिज्ञा; 6. शिथिलम्; 7. दृढम्; 8. अर्धाकृष्टः; 9. कष्टम्; 10. उपदेशकः; 11. उपचारकः; 12. समदुःखः; 13. प्रस्तरस्य धमनी; 14. स्फुलिङ्गः;

21

नेदं मम भाग्येऽभूद् यज्ञायेत प्रियस्य मिलनमिति।
जीवित इतोऽपि चेत्स्यां स्यादियमेव प्रतीक्षैका ॥ 1 ॥

ज्ञातं तदसत्यमिति त्वद्वचने जीवितो यदहमेषः।
अभविष्यद् विश्वासस्ततोऽमरिष्यं प्रसन्नतया ॥ 2 ॥

तव मार्दवेन विदितं वचनं ते शिथिलबन्धमलमासीत्।
अभविष्यद् दृढबन्धं त्वमशक्ष्यस्तन्न भेत्तुमिह ॥ 3 ॥

त्वदिषोर्विषये पृच्छेदर्धाकृष्टस्य कोऽपि मम हृदयम्।
कष्टं कुतोऽभविष्यत् पारं यकृतोऽगमिष्यच्चेत् ॥ 4 ॥

सौहार्दं क्वत्यमिदं सुहृदो जाता इहोपदेष्टारः।
उपचारकोऽथवा स्यात् समदुःखः कश्चिदथवा स्यात् ॥ 5 ॥

प्रस्तरधमनीभ्यस्तद् रुधिरं स्यन्देत नावरुद्धं स्यात्।
यद् वेत्सि दुःखमिति तद् दहनस्य स्यात् स्फुलिङ्ग इति ॥ 6 ॥

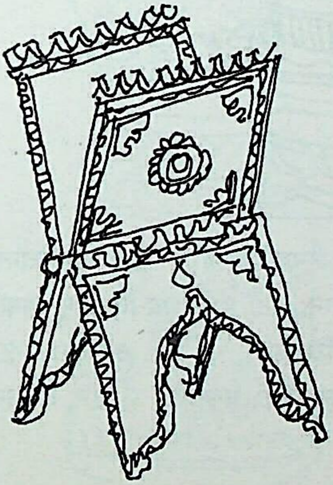

ग़म अगर्चेः जाँगुसिल[15] है, प कहाँ बचें, कि दिल है
ग़मे ’अिश्क[16] गर न होता, ग़मे रोज़गार[17] होता

कहूँ किससे मैं कि क्या है, शबे ग़म[18] बुरी बला है
मुझे क्या बुरा था मरना, अगर एक बार होता

हुए मरके हम जो रुस्वा,[19] हुए क्यों न ग़र्क़े दरिया[20]
न कभी जनाज़ः[20] उठता, न कहीं मज़ार[21] होता

उसे कौन देख सकता, कि यगानः[22] है वह यकता[23]
जो दुई[24] की बू भी होती, तो कहीं दुचार[25] होता

यह मसाइले तसव्वुफ़,[26] यह तेरा बयान,[27] ग़ालिब
तुझे हम वली[28] समझते, जो न बादःख़्वार[29] होता

---

15. प्राणहरः; 16. प्रणःजन्या चिन्ता; 17. जगच्चिन्ता; 18. शोकस्य रात्रिः; 19. निन्दितः; 20. समुद्रे मग्नः; 20, 21. शव-विमानम्, समाधिः, ‘‘उत्तिष्ठेन्न विमानं शवस्य न स्यात् समाधिरपि’’; 22. अनुपमः; 23. अद्वितीयः; 24. द्वैतम्; 25. दृग्गोचरः; 26. वेदान्तगताः समस्याः; 27. वर्णनम्, प्रवचनम्; 28. ऋषिः; 29. मद्यपः।

शोकः प्राणहरोऽयं परं भवेम क्व रक्षिता हृदिदम्।
न स्याद् दुःखं प्रेम्णः स्याज्जगतो हन्त दुःखमिह ॥ 7 ॥

कम्प्रति किमिति वदेयं शोकनिशाऽत्यन्तमेव कष्टकरी।
मरणमनीप्सितमासीन्न मे भवेद् वार एकश्चेत् ॥ 8 ॥

वयमभवाम मृता इह पात्रमयशसः कथन्न जलमग्नाः।
शवयात्रा न कदाचित् स्यान्न समाधिः कुतोऽपि स्यात् ॥ 9 ॥

सोऽस्त्यनुपमोऽद्वितीयः प्रेक्षितुमीष्टे क एव तं ल्लोके।
दृश्येत क्वचिदपि चेत् स्याद् द्वैतत्वस्य गन्धोऽपि ॥ 10 ॥

विषया वेदान्तगता एते तव 'ग़ालिब' प्रवचनञ्च।
त्वामृषिरिति चामंस्ये न मद्यपश्चेत् त्वमभविष्यः ॥ 11 ॥

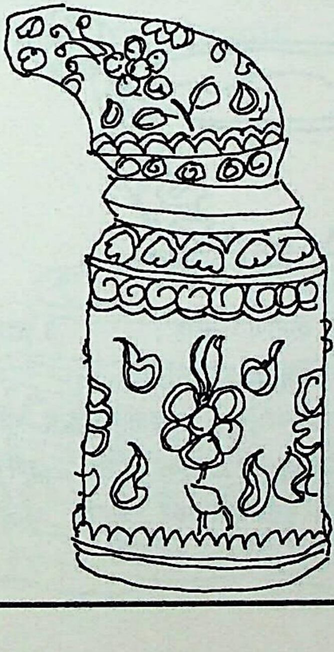

22

हवस[1] को है नशाते कार[2] क्या क्या
न हो मरना तो जीने का मज़ा क्या

तजाहुल पेशगी[3] से मुद्‌द'आ[4] क्या
कहाँ तक, अय सरापा नाज़,[5] क्या, क्या

नवाज़िशहा-ए-बेजा[6], देखता हूँ
शिकायतहा-ए-रंगीं[7] का गिला[8] क्या

निगाहे बेमहाबा[9] चाहता हूँ
तग़ाफ़ुलहा-ए-तमकीं आज़मा[10] क्या

फ़रोग़े शो'ल़ः-ए-ख़स[11] यक नफ़स[12] है
हवस को पासे नामूसे वफ़ा[13] क्या

नफ़स, मौजे मुहीते बेख़ुदी[14] है
तग़ाफ़ुलहा-ए-साक़ी का गिला[15] क्या

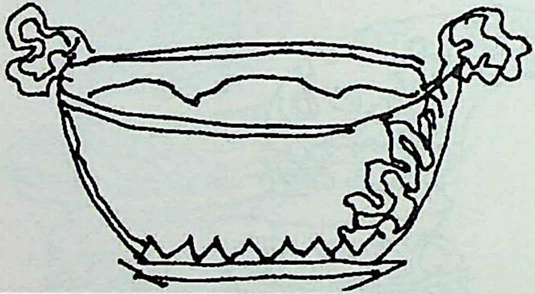

---

1. तृष्णा, तर्षः; 2. कर्मणि उत्साहः; 3. ज्ञात्वाऽप्यज्ञानस्य प्रकाशनम्; 4. उद्‌देश्यम्; 5. आमूलचूलं हावभावान्वितः; 6. अनुचिता अनुग्रहाः; 7. प्रणयोपालम्भाः; 8. उपालम्भः; 9. सङ्कोचरहिता दृष्टिः; 10. सोपेक्षं धैर्यस्य परीक्षणम्; 11. तृणसमवाय-ज्वालः; 12. एकः श्वासः, क्षण इत्यर्थः; 13. प्रतिष्ठाजन्य आदरः; 14. आत्मविस्मृतिः व्यापकत्वस्य लहरी; 15. मधुदात्र्या कृतानामुपेक्षाणामुपालम्भः;

22

तर्षः कार्योत्साहं लक्ष्यत इह कं कमेष आतन्वन्।
मरणं न स्यादिह चेत् कः स्यादिह जीवनानन्दः ।। 1 ।।

सकलमपि ज्ञातवतोऽज्ञानं रे तावकं किमुद्देश्यम्।
आनखशिखमिह हावान्वितस्य कियदेव ‘किं’ ‘किं’ ते ।। 2 ।।

अनुकम्पाः समनुचिता आकलयन्नेष हन्त वर्तेऽहम्।
प्रणयोपालम्भानां कृते ह्युपालम्भ एष कथम् ।। 3 ।।

अनिवारितां त्वदीयामपेक्षमाणो दृशन्नु वर्तेऽहम्।
धैर्यस्य तावदेतत् परीक्षणं किमिव सोपेक्षम् ।। 4 ।।

तृणनिचयज्वाल इव श्वसितस्यैकस्य किञ्चिदस्तित्वम्।
तर्षः किं जानीयान्निर्वाहास्थां दृढे प्रेम्णि ।। 5 ।।

श्वसितं लहरीमात्रं स्वविस्मृतिव्यापकत्वपाथोधेः।
मधुदात्र्या विहितानां क उपालम्भो ह्युपेक्षाणाम् ।। 6 ।।

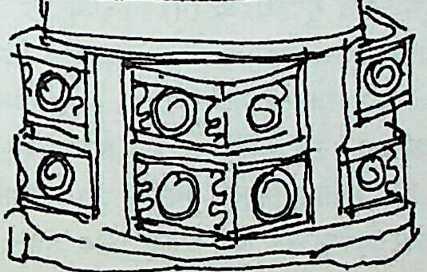

दिमाग़े 'अित्रे पैराहन नहीं है[16]
ग़मे आवारगीहा-ए-सबा[17] क्या

दिले हर क़तरः है साज़े अनल बह्र[18]
हम उसके हैं, हमारा पूछना क्या

महाबा[19] क्या है, मैं ज़ामिन,[20] इधर देख
शहीदाने निगह[21] का ख़ूँ-बहा[22] क्या

सुन, अय ग़ारतगरे जिन्से वफ़ा[23], सुन
शिकस्ते शीशः-ए-दिल[24] की सदा[25] क्या

किया किसने जिगरदारी[26] का दा'वा ?
शिकेबे ख़ातिरे 'आशिक़,[27] भला क्या

यह क़ातिल,[28] वा'दः-ए-सब्र आज़मा[29] क्यों
यह काफ़िर,[30] फ़ित्नः-ए-ताक़त रुबा[31] क्या

बला-ए-जाँ[32] है, ग़ालिब, उसकी हर बात
'अिबारत[33] क्या, इशारत[34] क्या, अदा[35] क्या

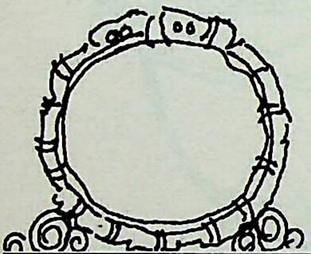

---

16. प्रियस्य वस्त्रे रिपुणाऽर्पितं सुगन्धिद्रव्यं (न) चिन्त्यम्; 17. प्रभातवायोः परिभ्रमितैः खेदः; 18. अहं समुद्रोऽस्मीत्यस्य सङ्गीतम्; 19. सङ्कोचः, चिन्ता वा; 20. प्रतिभूः; 21. दृष्टिपातहताः; 22. रक्तस्य मूल्यम्; 23. प्रणयनिर्वाहस्य लुण्टाकः, 24. भग्नहृदयरूपस्य काचस्य; 25. ध्वनिः; 26. सहिष्णुत्वम्; 27. प्रणयिनां हृदये धैर्यम्; 28. घातुकः; 29. सन्तोषपरीक्षकं वचनम्; 30. अधार्मिकः; 31. शक्तिहर उत्पातः; 32. प्राणानां कृते विपत्; 33. लेखनप्रकारः; 34. सङ्केतः; 35. हावः।

वसनसुगन्धि द्रव्यं विषयो ध्यानस्य हन्त मे नैव।
खेदो न कश्चिदेव प्रभातवायोः परिभ्रमितैः ॥ 7 ॥

सागर एषोऽस्मीति प्रत्येकं बिन्दुहृन्नु सङ्गीतम्।
अहमेष तस्य वर्ते प्रष्टव्यं किन्नु मद्विषये ॥ 8 ॥

कः सङ्कोचः प्रतिभूरेष नु वर्ते विलोकय त्वमितः।
लोचनबाणहतानां मूल्यं रक्तस्य किन्तावत् ॥ 9 ॥

निर्वाहस्य प्रेम्णः शृणु रे लुण्टाक ! सावधानतया।
भग्नहृदयकाचस्य ध्वनितं किन्तावदेतावत् ॥ 10 ॥

केन जगत्यां तावत् सहिष्णुतायां कृतोऽधिकार इह।
प्रणयिजनानां हृदये क्वचिदपि धैर्यं किमुल्लसति ॥ 11 ॥

घातुक ! कथं परीक्षा सन्तोषस्यास्य हन्त वचनेन।
किमधार्मिक ! शक्तिहरं तवाततायित्वमेतद् रे ॥ 12 ॥

प्राणविपत् प्रत्येकं 'ग़ालिब' तस्येह हन्त वलितत्वम्।
किम्वा लेखनशैली किं सङ्केतोऽथवा हावः ॥ 13 ॥

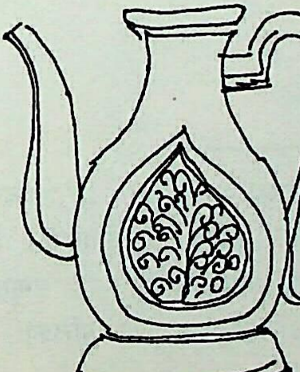

23

दरख़ुरे क़ेह्र-ओ-ग़ज़ब,[1] जब कोई हम सा न हुआ
फिर ग़लत क्या है, कि हम सा कोई पैदा न हुआ

बन्दगी[2] में भी, वह आज़ादः-ओ-ख़ुदबीं[3] हैं, कि हम
उलटे फिर आये, दरे का'बः[4] अगर वा[5] न हुआ

सबको मक़बूल[6] है दा'वा तेरी यकताई[7] का
रू-ब-रू[8] कोई बुते आईनः सीमा[9] न हुआ

कम नहीं, नाज़िशे हमनामि-ए-चश्मे ख़ूबाँ[10]
तेरा बीमार, बुरा क्या है, गर अच्छा न हुआ।

सीने का दाग़ है, वह नालः[11], कि लब तक न गया
ख़ाक[12] का रिज़्क़[13] है, वह क़तरः[14] कि दरिया[15] न हुआ

---

1. प्रकोपस्य विपत्तीनाञ्च भाजनम्; 2. ईश्वरप्रणतिः; 3. स्वतन्त्राः स्वाभिमानसम्पन्नाश्च; 4. का'बा इत्यस्य द्वारकेत्यनेनात्र निर्देशः; 5. उद्‌घटितम्, विघटितम्; 6. स्वीकृतः; 7. अद्वितीयत्वम्; 8. सम्मुखीनः; 9. रूपवानित्यर्थः; 10. प्रियचक्षुःसादृश्यगर्वः; 11. आर्तनादः; 12. मृत्तिकाः; 13. अन्नम्, खाद्यम्; 14. बिन्दुः; 15. समुद्रः;

23

यदि चेत् पात्रं नाभूदहमिव कोपस्य कोऽपि विपदां वा।
को दोषः पुनरिह यन् न कोऽपि लोकेऽहमिव जातः ॥ 1 ॥

प्रणतावपि स्वतन्त्रा धृताभिमानाश्च ते वयं स्मो यत्।
विपरीतं विनिवृत्ता अविघटिते द्वारकाद्वारे ॥ 2 ॥

स्वीकृत इहाधिकारः सर्वैरपि तावकोऽद्वितीयत्वे।
दर्पणवदनः कश्चिन् न मूर्तिमान् सम्मुखीनोऽभूत् ॥ 3 ॥

नाल्पं यत्प्रियचक्षुःसमनामत्वाभिमान एष ततः।
को दोषोऽस्वस्थस्ते स्वस्थो नाभूत् स यद्येषः ॥ 4 ॥

स कलङ्को वक्षस इह य आर्तनादोऽधरं न सम्प्राप्तः।
मृद्भोजनं स बिन्दुर्न लब्धवान् यः समुद्रत्वम् ॥ 5 ॥

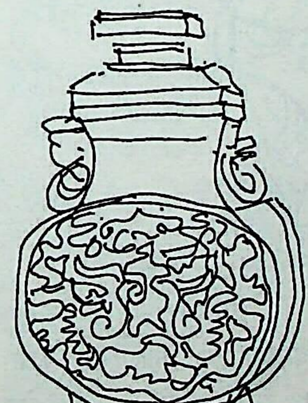

काम का मेरे है, वह दुख कि किसी को न मिला
काम में मेरे है, वह फ़ितनः[16] कि बरपा[17] न हुआ

हर बुने मू[18] से, दमे ज़िक्र, न टपके ख़ूँनाब[19]
हमज़ः का क़िस्सः[20] हुआ, 'अिश्क़ का चर्चा न हुआ

क़तरे में दजूलः[21] दिखाई न दे, और जुज़्व[22] में कुल[23]
खेल लड़कों का हुआ, दीदः-ए-बीना[24] न हुआ

थी ख़बर गर्म, कि ग़ालिब के उड़ेंगे पुर्ज़े
देखने हम भी गये थे, प तमाशा न हुआ।

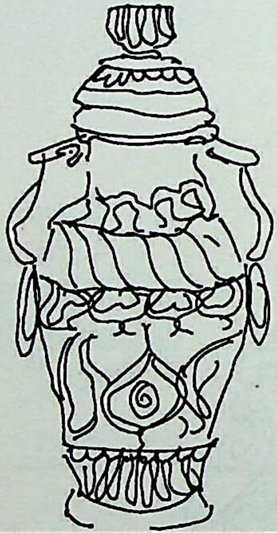

---

16. उपद्रवः ; 17. उपस्थितः; 18. रोममूलम्; 19. विशुद्धं रक्तम्; 20. पारसीकभाषायाः सुविस्तृता एका काल्पनिकी कथा; 21. इराकदेशस्यैका नदी, नदी वा; 22. अंशः, व्यष्टिः; 23. पूर्णः, समष्टि; 24. द्रष्टृ नेत्रम्।

दुःखं तत्तु मदर्थं नाभूदपरस्य यन् नु कस्यापि।
स उपद्रवो मदर्थो नाभूद् य उपस्थितः क्वचन ॥ 6 ॥

स्यन्देत न चर्चायां प्रत्येकं रोममूलतो रक्तम्।
'हमज़ा'-कथा नु सा स्यान् न स्यात् प्रेम्णः कथा काऽपि ॥ 7 ॥

नाब्धिर्बिन्दौ यदि वा व्यष्टौ न समष्टिरेव दृश्येत।
बालानां क्रीडा खलु दृक् सा द्रष्ट्री ततो नाभूत् ॥ 8 ॥

आसीद् वार्ता प्रसृता 'ग़ालिब' इह खण्डशोऽद्य भवतीति।
द्रष्टुं वयमपि याता न परं दृश्यं ततो घटितम् ॥ 9 ॥

24

असद, हम वह जुनूं जौलाँ[1] गदा-ए-बेसर-ओ-पा[2] हैं
कि है सरपंजः-ए-मिश़गाने आहू,[3] पुश्तख़ार[4] अपना

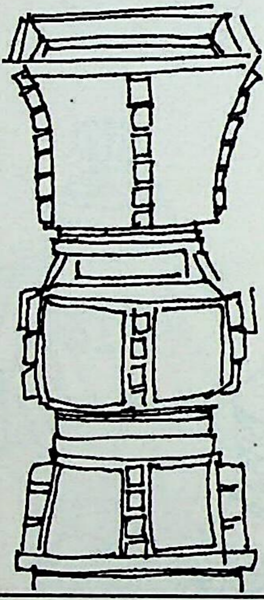

---

1. प्रमत्तः सन् भ्रमणपरायणः; 2. निरालयो भिक्षुकः; 3. हरिणानां पक्ष्मरोम्णां यत् 'पंजा'-रूपं तादृशं पञ्चकम्; 4. पञ्चाङ्गुलिमयी लघुयष्टिका यस्या उपयोगः पृष्ठस्य कण्डूयनार्थं क्रियते स्म; वनेषु निवसतामस्माकं पृष्ठकण्डूतिः हरिणानां पक्ष्मरोम्णां पञ्चयष्ट्या निवार्यते इत्यर्थः।

24

‘असद’ परिव्राजस्ते निरालया वयमपीह भुवि येषाम्।
मृगपक्ष्मपञ्चकं नः कण्डूहरपञ्चयष्टिरिव ।। 1 ।।

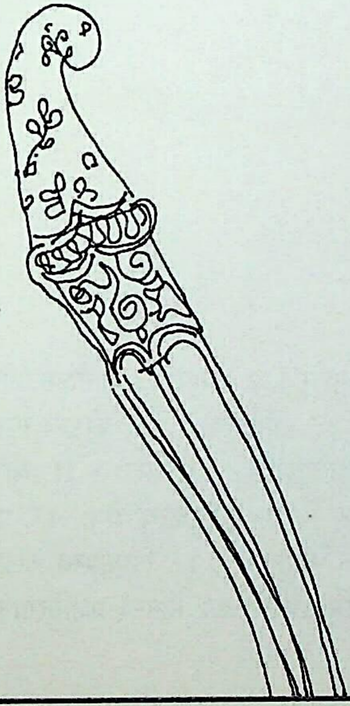

25

पै-ए नज़रे करम[1], तोहफ़ः,[2] है शर्मे नारसाई[3] का
बख़ूँ ग़लतीदः-ए-सद रंग[4] दा'वा पारसाई[5] का

न हो हुस्ने तमाशा दोस्त[6], रुस्वा[7] बेवफ़ाई[8] का
बमुह्रे सद नज़र[9] साबित[10] है दा'वा पारसाई का

ज़काते हुस्न[11] दे, अय जल्वः-ए-बीनिश,[12] कि मेह्र आसा[13]
चराग़े ख़ानः-ए-दरवेश[14] हो, कासः[15] गदाई[16] का

न मारा, जानकर बेजुर्म,[17] क़ातिल[18] तेरी गर्दन पर
रहा मानिन्दे ख़ूने बेगुनह,[19] हक़[20] आशनाई[21] का

तमन्ना-ए-ज़बाँ[22] मह्वे सिपासे बेज़बानी[23] है
मिटा जिससे तक़ाज़ा[24], शिकवः-ए-बेदस्त-ओ पाई[25] का

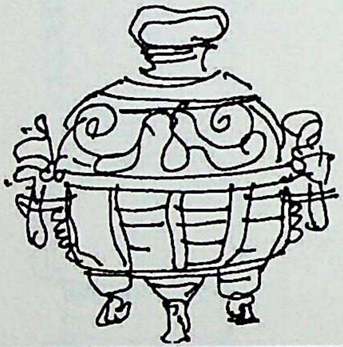

---

1. करुणा, कृपा, अर्थात् प्रभुः (तस्मै उपहारः); 2. उपहारः 3. सामीप्याप्राप्तिजन्या लज्ञा; 4. शतधा (सर्वथा) रक्तेन सिक्ता; 5. पवित्रताः; 6. क्रीडायै स्पृहयालुः 7. अयशसः पात्रम्; 8. अकृतज्ञत्वम्ः 9. दृष्टिशतमुद्राभिः; 10. सिद्धः ; 11. सौन्दर्यस्य दानम्; 12. हे दृग्ज्योतिः; 13. सूर्यसदृशम् 14. भिक्षोः कुटीरकस्य दीपः; 15. पात्रम्ः; 16. भिक्षुत्वम्, भिक्षा; 17. दोषरहितः; 18. घातुकः; 19. निष्पापस्य रुधिरमिव; 20. सत्यम्; 21. प्रेम; 22. वाक्सामर्थ्यस्याभिलाषः; 23. मौनस्य प्रशस्तिगाने रतः; 24. अपेक्षा; 25. वैवश्यजनित उपालम्भः;

25

सामीप्याप्राप्तिह्रीरुपहारः प्रस्तुतोऽस्ति करुणायै।
शतधा रुधिरार्द्रायां पवित्रतायां मदधिकारः ॥ 1 ॥

अकृतज्ञत्वान्न स्यात् स्वरूपलीनः प्रियोऽयशःपात्रम्।
प्रेक्षितशतमुद्राभिः स्थिरोऽधिकारोऽस्य पावित्र्ये ॥ 2 ॥

सौन्दर्यदानमर्पय दृष्टिमरीचे, यदर्कसदृशमिदम्।
भिक्षापात्रं भिक्षोः कुटीरकस्य प्रदीपः स्यात् ॥ 3 ॥

निर्दोष इत्यवेत्य न हतस्त्वया घातुकाहमधिकण्ठम्।
निष्पापरुधिरमिव ते प्रेम्णः सत्यन्नु संलग्नम् ॥ 4 ॥

मौनमहिम्नि विलीनो वाक्सामर्थ्याभिलाष एष मम।
वैवश्योपालम्भः समजायत तावदनपेक्ष्यः ॥ 5 ॥

वही इक बात है, जो याँ नफ़स,[26] वाँ नकहते गुल[27] है
चमन का जल्वः[28] बा'अिस[29] है, मेरी रगीं नवाई[30] का

दहाने हर बुते पैग़ारः जू,[31] ज़ंजीरे रुसवाई[32]
'अदम तक बेवफ़ा,[33] चर्चा है तेरी बेवफ़ाई का[34]

न दे नामे[35] को इतना तूल,[36] 'ग़ालिब, मुख़्तसर[37] लिख दे
कि हसरत संज[38] हूँ, 'अर्ज़े सितमहा-ए जुदाई[39] का

---

26. श्वसितम्; 27. प्रसूनगन्धः; 28. छविः; 29. कारणम्; 30. सङ्गीतम्ः; 31. प्रत्येकं कलहप्रियस्य मूर्तिमतः (सुन्दरस्य) मुखम्; 32. उपालम्भभरितं शङ्खलम्; 33. कृतघ्न; 34. कृतघ्नत्वम्; 35. पत्रम्; 36. विस्तरः; 37. संक्षिप्तम्; 38. अभिलाषुकः; 39. विरहात्याचाराणां निवेदनम्।

अत्र य एव श्वासस्तत्र सुगन्धो मतः प्रसूनानाम्।
छविरुपवनस्य हेतुर्मत्सङ्गीतस्य मुग्धस्य ।। 6 ।।

प्रत्येकं कलहप्रियमूर्त्याननशृङ्खलं ह्युपालम्भि।
लोकान्तरेऽपि विदितं कृतघ्न ! तव रे कृतघ्नत्वम् ।। 7 ।।

विस्तृततरमिव मा कुरु 'ग़ालिब' लिख पत्रमत्र संक्षिप्तम्।
विरहात्याचाराणां निवेदनं कर्तुमिच्छामि ।। 8 ।।

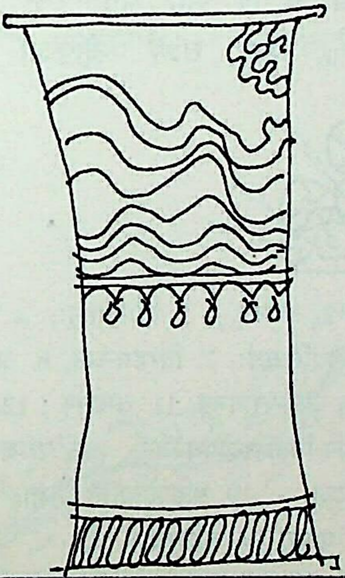

26

गर न अन्दोहे शबे फ़ुर्क़त[1] बयाँ[2] हो जायगा
बेतकल्लुफ़[3] दाग़े मह,[4] मोह्रे दहाँ[5] हो जायगा

ज़हरः[6] गर ऐसा ही, शामे हिज्र[7] में होता है आब[8]
परतवे महताब,[9] सैले ख़ानमाँ[10] हो जायगा

ले तो लूँ, सोते में उसके पाँव का बोसः,[11] मगर
ऐसी बातों से, वह काफ़िर[12] बदगुमाँ[13] हो जायगा

दिल को हम सर्फ़े वफ़ा[14] समझे थे, क्या मा'लूम था
या'नी, यह पहले ही नज़्रे इम्तिहाँ[15] हो जायगा

सब के दिल में है जगह तेरी, जो तू राज़ी[16] हुआ
मुझ प, गोया इक ज़मानः मेहरबाँ[17] हो जायगा

गर निगाहे गर्म[18] फ़रमाती रही, ता'लीमे ज़ब्त[19]
शो'लः[20] ख़स[21] में, जैसे ख़ूँ रग में, निहाँ[22] हो जायगा

बाग़ में मुझको न ले जा, वर्नः मेरे हाल पर
हर गुले तर[23], एक चश्मे ख़ूँफ़िशाँ[24] हो जायगा

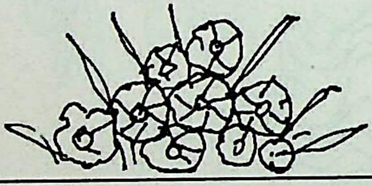

---

1. विरहरात्रेर्व्यथा; 2. वर्णनम् ; 3. निःसंदेहम्ः; 4. चन्द्रस्य (प्रियस्य) कलङ्कः; 5. मुखमुद्रा; 6. पित्तम्, शौर्यमित्यर्थः; 7. विरहसन्ध्या; 8. आपः, सलिलम्; 9. चन्द्रस्य चन्द्रिका; 10. गृहप्रवेशकृत् जल-प्लावनम्; 11. चुम्बनम् ; 12. अधार्मिकः, प्रिय इत्यर्थः; 13. सन्देहशीलः; 14. प्रेम-निर्वाहस्योपयुक्तम्; 15. परीक्षायै अर्पितः; 16. प्रसन्नः; 17. कृपाशीलम्; 18. तप्ता दृक्; 19. सहिष्णुत्वार्था शिक्षा; 20. अर्चिः; 21. तृणम्; 22. निहितम्; 23. तुषारार्द्र पुष्पम्; 24. रुधिरवर्षि चक्षुः;

26

विरहक्षपाव्यथायाः क्रियेत चेद् वर्णनं मया नैवम्।
चन्द्रकलङ्को भविता गम्भीरो मन्मुखे मुद्रा ।। 1 ।।

अधिविरहसन्ध्यमेवं यदि शौर्यं सलिलरूपतां गच्छेत्।
चन्द्रज्योत्स्ना प्रविशेत् सद्म जलप्लावनीभूय ।। 2 ।।

शयितस्य तस्य चरणौ चुम्बेयं हन्त तावदहमेषः।
सन्देहशील एतैरधार्मिकः स्यात् स आचरणैः ।। 3 ।।

विदितं नः पूर्वं हृन्निर्वाहसहायमिति किमथ विदितम्।
अर्थाद् भवेत्परीक्षार्पितं तदेतत् प्रथममेव ।। 4 ।।

स्थानं सर्वेषां हृदि तव प्रसन्नो भवेर्यदि त्वमहो।
स्यादिव ततः समग्रं जगदेतन्मयि कृपाशीलम् ।। 5 ।।

तप्ता दृग् यदि शिक्षां सहिष्णुतार्थं भवेद् ददाना चेत्।
रक्तं शिरास्विवार्चिस्तृणेषु गुप्तं नु भविताग्नेः ।। 6 ।।

नय मां नोद्यानं रे मम स्थितावन्यथा नवोत्पन्नम्।
प्रत्येकमेव पाटलमक्षि क्षतजाश्रुवर्षि स्यात् ।। 7 ।।

वाय,[25] गर मेरा तेरा इन्साफ़, महशर[26] में न हो
अब तलक तो यह तवक्क़ो’अ[27] है, कि वाँ[28] हो जायेगा

फ़ायदः क्या, सोच, आख़िर, तू भी दानः[29] है, असद
दोस्ती नादाँ[30] की है, जी का ज़ियाँ[31] हो जायगा

---

[25] हा हन्तः; [26] प्रलयदिनम्ः; [27] आशा; [28] तत्र; [29] बुद्धिमान्; [30] बुद्धिशून्यः; [31] हानिः, सङ्कटम्।

प्रलयदिनेऽपि न्यायो न स्याद् यदि कश्चिदावयोर्विषये।
तत्र स्यादिति जीवितमद्यावधि किञ्चिदाशायाम् ।। 8 ।।

'असद' त्वमपि सुधीरसि विचारयास्त्यत्र कोऽपि ते लाभः।
धीरहितेन च मैत्री प्राणानां सङ्कटं भवति ।। 9 ।।

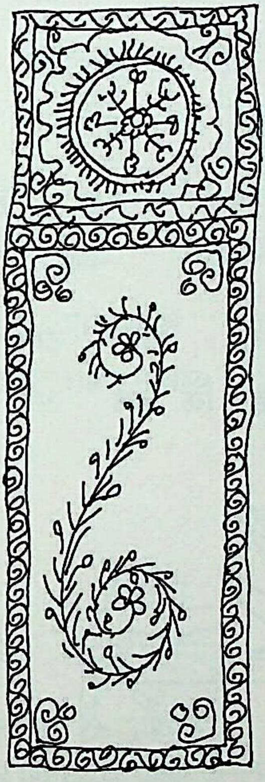

27

दर्द, मिन्नत कशे दवा[1] न हुआ
मैं न अच्छा हुआ, बुरा न हुआ

जम’अ करते हो क्यों रक़ीबों[2] को
इक तमाशा हुआ, गिला[3] न हुआ

हम कहाँ क़िस्मत आज़माने जायें
तू ही जब ख़ंजर आज़मा[4] न हुआ

कितने शीरीं[5] हैं तेरे लब[6], कि रक़ीब
गालियां खा के बेमज़ा[7] न हुआ

है ख़बर[8] गर्म उनके आने की
आज ही, घर में बोरिया न हुआ

क्या वह नमरूद[9] की ख़ुदाई[10] थी
बन्दगी[11] में मेरा भला न हुआ

जान दी, दी हुई उसी की थी
हक़[12] तो यह है, कि हक़[13] अदा न हुआ

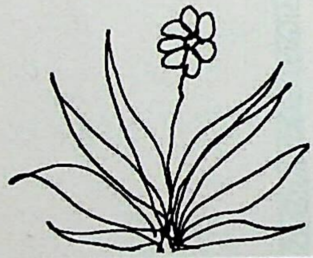

---

1. औषधस्य कृतज्ञा; 2. शत्रवः; 3. उपालम्भः; 4. खड्गस्य परीक्षिता; 5. मधुरः; 6. अधरः; 7. नैरस्यम्; 8. वार्ता; 9. नमरूदः प्राचीनः कश्चिन्नृपः, य आत्मानं ‘ईश्वर’ इति मन्यते स्म; 10. राज्यम्; 11. प्रार्थना; 12. सत्यम्; 13. कर्तव्य-निर्वाहः;

27

समजनि नैव कृतज्ञा भैषज्यस्येह मामकी पीडा।
नीरोगो यन्नाभवमहं तदभवत् समीचीनम् ।। 1 ।।

कथमिव हन्त विधत्से सम्मर्दं सम्प्रतीह शत्रूणाम्।
कौतुकमेतज्ज्ञातं जातो न तु कोऽप्युपालम्भः ।। 2 ।।

स्वं भाग्यं वयमेते परीक्षितुं हन्त कुत्र गच्छेम।
यावत् त्वमेव न भवेः परीक्षिता स्वस्य खड्गस्य ।। 3 ।।

मधुरः कियांस्त्वदधरः [शक्यं किमपीह नैतदनुमातुम्]।
न हि नैरस्यानुभवः पिबतस्त्वद्गालिलपितं मे ।। 4 ।।

जागर्तीयं वार्ता कुटीरकं मामकं स आगन्ता।
अद्यैव मत्कुटीरे जीर्णोऽपि न संस्तरो लभ्यः ।। 5 ।।

राज्यं किन्नु तदासी‘न्नमरूदस्य’ [स्वमीश्वरं वदतः]।
कुशलं नाभूत् किञ्चिद् विहितासु प्रार्थनास्वपि मे ।। 6 ।।

तेनार्पिता य आसन् प्राणास्तस्मै मयाऽर्पितास्ते नु।
सत्यन्तु तावदेतन्नाभूत्सत्यस्य निर्वाहः ।। 7 ।।

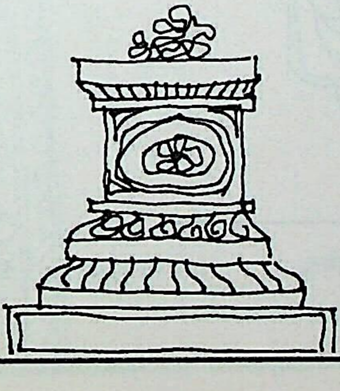

ज़ख़्म[14] गर दब गया, लहू न थमा
काम गर रुक गया, रवा[15] न हुआ

रहज़नी[16] है, कि दिल सितानी[17] है
ले के दिल दिलसिताँ[18] रवा न हुआ

कुछ तो पढ़िये, कि लोग कहते हैं
आज ग़ालिब ग़ज़लसरा[19] न हुआ

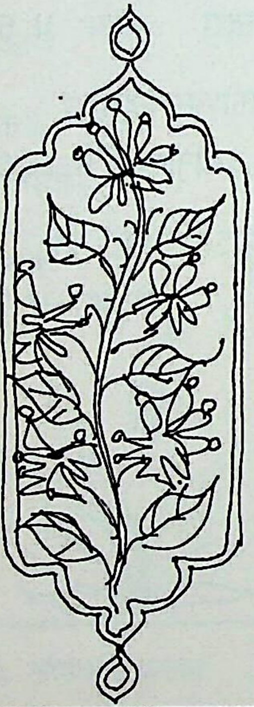

---

[14] व्रणः [15] गतिमत्; [16] दस्युकृत्यम्; [17] हृद्ग्रहोद्यमः, प्रियत्वम् [18] हृदयहरः (प्रियः); [19] ग़जल-गायनः ।

अन्तर्हितो व्रणो यदि नाभूत् किमपीह रुधिरमवरुद्धम्।
कार्ये चेदवरोधः प्रवर्तमानत्वमथ नाभूत् ।। 8।।

अपि कृत्यं दस्यूनामथवा हृदयग्रहोद्यमः कश्चित्।
प्रस्थितमेव त्वरया हृदयहृता हृदयमादाय ।। 9।।

पठनीयं यत्किञ्चित् यदिमे लोकाः समेऽपि भाषन्ते।
अद्य न 'ग़ालिब' आस्ते 'ग़ज़लानां' गायनो गोष्ठ्याम् ।। 10।।

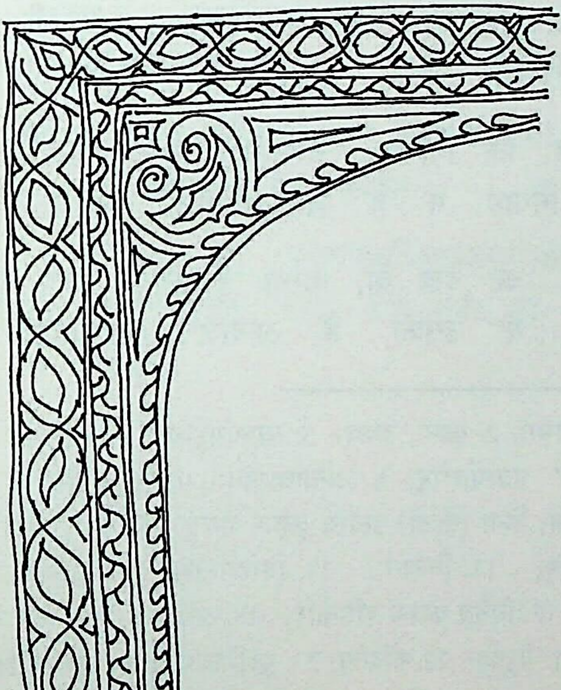

28

गिला[1] है शौक़[2] को, दिल में भी तंगि-ए-जा[3] का
गुहर[4] में महव[5] हुआ इज़्तिराब[6] दरिया का

यह जानता हूँ, कि तू और पासुख़े मक्तूब[7]!
मगर सितमज़दः[8] हूँ, ज़ौक़े ख़ामः फ़रसा[9] का

हिना-ए-पा-ए-ख़ज़ाँ[10] है, बहार अगर है यही
दवाम[11] कुल्फ़ते ख़ातिर[12] है 'ऐश[13] दुनिया का

ग़मे फ़िराक़[14] में, तकलीफ़े सैरे बाग़[15] न दो
मुझे दिमाग़[16] नहीं ख़न्दःहा-ए-वेजा[17] का

हनोज़[18] महरमि-ए-हुस्न[19] को तरसता हूँ
करे है हर बुने मू[20] काम चश्मे बीना[21] का

दिल उसको, पहले ही नाज़-ओ-अदा से दे वैठे
हमें दिमाग़ कहाँ, हुस्न के तक़ाज़ा का

न कह, कि गिरियः[22] बमिक़दारे हसरते दिल[23] है
मेरी निगाह में है जम'-ओ-ख़र्च[24] दरिया का

फ़लक[25] को देख के, करता हूँ उसको याद, असद
जफ़ा[26] में उसकी, है अन्दाज़[27] कारफ़रमा[28] का

---

1. उपालम्भः; 2. कामः, इच्छाः; 3. स्थान-सङ्कोचः, 4. रत्नम्; 5. लीनम्; 6. वैकल्यम्; 7. पत्रस्योत्तरम्; 8. अत्याचारहतः; 9. लेखनव्यसनम्; 10. हेमन्तस्य चरणानां मदयन्ती; हिना (मेंहदी) इत्यस्य कृत्रिमं भारतीयमभिधानम्; 11. नित्यम्, सदैव; 12. मनसो दुःखम्; 13. विलासः; 14. विरहसन्तापः; 15. उद्याने भ्रमणस्य कष्टम्; 16. सहनम्; 17. विनैव कारणं हसितानि; 18. अद्यावधि; 19. सौन्दर्यस्य परिचयः; 20. रोमकूपः; 21. द्रष्टुर्दृक्; 22. रुदितम्; 23. हृदभिलाषस्य परिणामः; 24. आय-व्ययौ; 25. आकाशम्, भाग्यम्; 26. क्रौर्यम्; 27. हाव-भावौ; 28. स्वामी, प्रियः।

28

काम उपालम्भपरः सङ्कुचितं हन्त हृद्यपि स्थानम्।
वैकल्यं यल्लीनं रत्ने रत्नाकरस्येव ।। 1 ।।

अवगच्छामि यदेतत् त्वं पत्रस्योत्तरं तथा चेति।
हा हन्त लेखनस्य व्यसनेन परं हतो वर्ते ।। 2 ।।

यद्येष एव सुरभिर्हैमन्यङ्घ्रेः स नाम मदयन्ती।
नित्यं मनसः क्लेशो योऽयं जगतो विलास इति ।। 3 ।।

देहि विरहसन्तापे नोद्यानभ्रमणकष्टमिह मह्यम्।
सह्यानि हन्त न हि मेऽनवसरघटितानि हसितानि ।। 4 ।।

सौन्दर्यस्याद्यावधि वर्ते जिज्ञासयाऽऽकुलस्तावत्।
विभ्रति रोम्णां कूपाः प्रत्येकं द्रष्टृदृक्त्वं मे ।। 5 ।।

हृत् पूर्वमेव हाऽर्पितमस्माभिर्हाव-भावयोस्तस्य।
सौन्दर्यस्याकर्षणमधिश्रिता धीः कुतोऽस्माकम् ।। 6 ।।

न वह यदेतद् रुदितं परिणामो नाम हृदभिलषितस्य।
आय-व्ययौ महाब्धेरेतन्मत्कल्पनायां तु ।। 7 ।।

'असद' स्मरामि तस्य स्वं भाग्यं किञ्चिदाकलय्येह।
क्रौर्ये तस्य स्वामिन इव मन्ये हाव-भावौ स्तः ।। 8 ।।

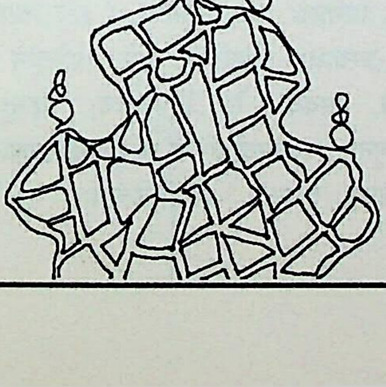

29

क़तरः-ए-मै[1], बसकि हैरत[2] से नफ़स परवर[3] हुआ
ख़त्ते जामे मै[4] सरासर[5], रिश्तः-ए-गौहर[6] हुआ

ए'तिबारे 'अिश्क़[7] की ख़ानः ख़राबी[8] देखना
ग़ैर[9] ने की आह, लेकिन वह ख़फ़ा[10] मुझ पर हुआ

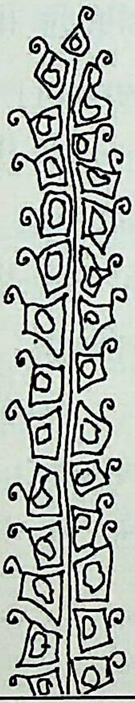

---

1. मदिराया विन्दुः; 2. आश्चर्यम्; 3. प्राणप्रदः, अचलमित्यर्थः; 4. मदिराचषकस्य रेखा; 5. वाढम्; 6. मुक्ताजालम्, अस्यार्थः – एकस्मिन् पत्रे गालिवेन एवं कृतः – ''विन्दुर्विचलितुं विवशः तिष्ठति, सर्वथा स निपतत्येव; किन्तु तं पश्यन्नाश्चर्यचकितेन सता तेन विचलनं विस्मृतम्, चषकस्योपरि स सूत्रितं मुक्ताजालमिव दृष्टः;'' 7. प्रेम्णो विश्वासः; 8. गृहनाशः, दुरापन्ना स्थितिरित्यर्थः; 9. रिपुः; 10. कुपितः।

29

आश्चर्यं तावदिदं मदिराबिन्दुर्यदापदचलत्वम्।
मुक्ताजालं रेखा मदिराचषकस्य बाढमभूत् ॥ 1 ॥

प्रेम्णो विश्वासस्य स्थितिरवलोक्या भृशं दुरापन्ना।
कृतवान् रिपुरार्तस्वरमथ मयि सोऽभूत् परं कुपितः ॥ 2 ॥

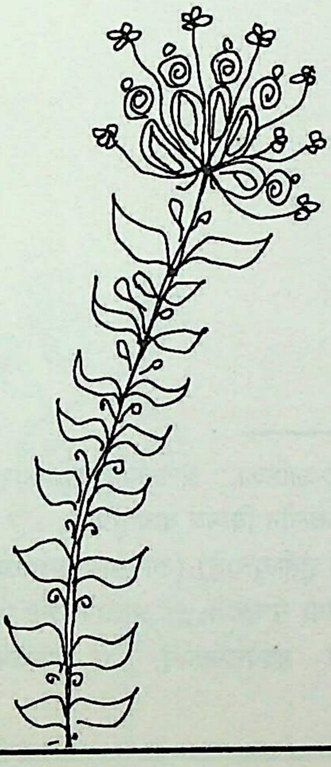

30

जब बतक़रीबे सफ़र[1], यार ने महमिल[2] बाँधा
तपिशे शौक़[3] ने हर ज़र्रे[4] प इक दिल बाँधा

अहले बीनश[5] ने बहैरत कदः-ए-शोख़ि-ए-नाज़[6]
जौहरे आइनः[7] को तूति-ए-बिस्मिल[8] बाँधा

यास-ओ-उम्मीद[9] ने, यक 'अरबदः मैदाँ[10] माँगा
'अिज्ज़े हिम्मत[11] ने तिलिस्मे दिले साइल[12] बाँधा

न बँधे तश्नगि-ए-ज़ौक़[13] के मजमूँ,[14] ग़ालिब
गरचेः दिल खोल के दरिया को भी साहिल[15] बाँधा

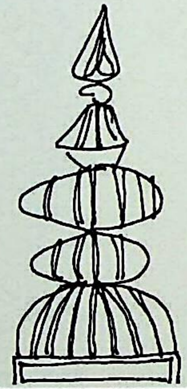

---

1. यात्राप्रसङ्गेन; 2. उष्ट्र-काष्ठिका; 3. अभिलाषाधिक्यम् 4. प्रतिकणम्; 5. आत्मज्ञानी; 6. सौन्दर्यस्य चाञ्चल्येन विस्मयं यावत् प्राप्य; 7. दर्पणस्य हरितिमा; 8. आहतः क्षुद्रः शुकः (क्षुद्रा शुकी तूतीत्युच्यते) (आयसस्य दर्पणस्य सम्मार्जनेन आभा उत्पद्यते, तस्यां काचित् हरितिमा संलक्ष्यते; 9. आशानैराश्ये 10. युद्धार्था भूमिः; 11. साहसविनयः; 12. याचकस्य हृदयेन्द्रजालम्; 13. प्रणयपिपासा 14. विषयाः 15. तटम् ।

30

यात्राप्रसङ्गतः खलु यदा प्रियेणोष्ट्रकाष्ठिका बद्धा।
प्रतिकणमेकं बद्धं हृदयं काङ्क्षोष्मणा नु तदा ॥ 1 ॥

सौन्दर्यचञ्चलत्वजविस्मयतो दृग्वता नु दृष्टं यत्।
दर्पणहरितिम्नीव क्षुद्रः शुक आहतो बद्धः ॥ 2 ॥

आशानैराश्याभ्यां युद्धस्थलमेकमर्थितं तावत्।
याचकहृदिन्द्रजालं साहसविनयेन सन्नद्धम् ॥ 3 ॥

प्रणयपिपासाविषयान् 'ग़ालिब' न प्राभवं निबन्धुमहम्।
यद्यप्युन्मुक्तहृदा तटेन बद्धो मयाऽब्धिरपि ॥ 4 ॥

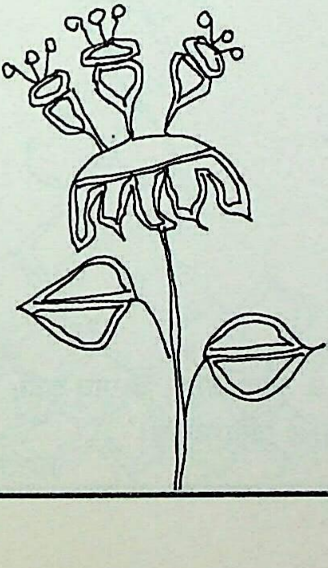

31

मैं, और बज़्मे मै[1] से, यूँ तश्नः काम[2] आऊँ
गर मैंने की थी तौबः[3], साक़ी[4] को क्या हुआ था

है एक तीर, जिसमें दोनों छिदे पड़े, हैं
वह दिन गये, कि अपना दिल से जिगर जुदा था

दरमान्दगी[5] में ग़ालिब, कुछ बन पड़े, तो जानूँ
जब रिश्तः[6] बेगिरह[7] था, नाखुन गिरहकुशा[8] था

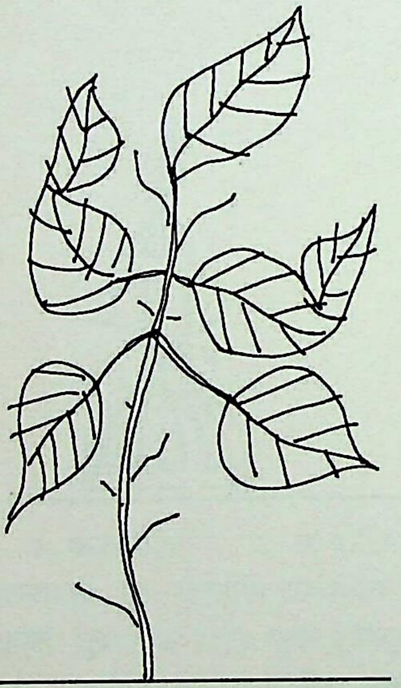

---

1. पानगोष्ठी; 2. पिपासाविकलः; 3. प्रायश्चित्तम्; 4. मधु-दात्री; 5. क्लेशः, आपत्; 6. सम्बन्धः, सूत्रम्; 7. ग्रन्थि-रहितम्; 8. ग्रन्थिभेदकृत्।

31

अहमेष पानगोष्ठ्या आयाञ्चैवं पिपासया विकलः।
प्रायश्चित्तकृदभवं परं किमभवन्नु मधुदात्र्याः ।। 1 ।।

विद्धे उभे अपि स्तो यस्मिन् बाणः स एक एवास्ति।
स्वयकृद् हृदः पृथगभूद् येषु गता हन्त ते दिवसाः ।। 2 ।।

आपदि 'ग़ालिब' सिध्येद् यत्किञ्चिच्चेत् ततो नु जानीयाम्।
अग्रन्थि सूत्रमासीत् तदा नखो ग्रन्थिभेदकरः ।। 3 ।।

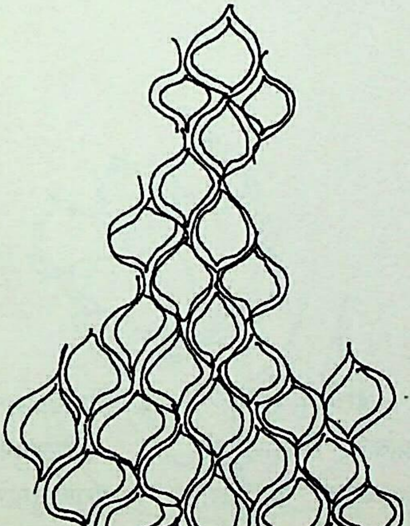

32

घर हमारा, जो न रोते भी तो वीराँ[1] होता
बह्र[2], गर बह्र न होता, तो बयाबाँ[3] होता

तंगि-ए-दिल[4] का गिला[5] क्या, यह वह काफ़िर दिल है
कि अगर तंग न होता, तो परीशाँ होता

बा'दे यक उम्र वर'अ[6], बार तो देता[7], बारे[8]
काश, रिज़वाँ[9] ही दरे यार[10] का दरबाँ[11] होता

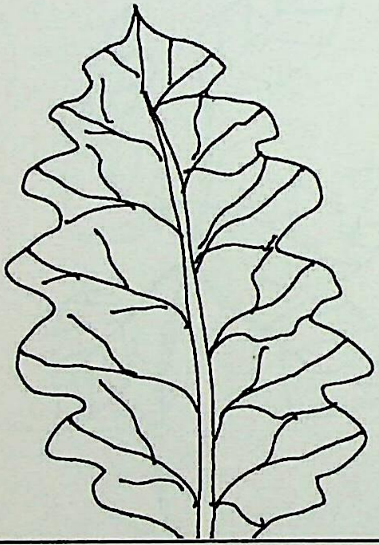

---

1. विजनम्; 2. समुद्रः; 3. अरण्यम्, मरुभूः; 4. हृदो विकलता; 5. उपालम्भः, निन्दा; 6. एकमायुर्यावत् संयमानन्तरम्; 7. प्रवेष्टुमनुमतिं दद्यादित्यर्थः; 8. नूनम्; 9. रिज़वांः=स्वर्गस्य द्वारपालः, पुराणानुसारेण जय-विजयौ; 10. प्रियस्य द्वारम्; 11. द्वारपालः!

32

यदि न रुदन्नभविष्यं विजनमवर्तिष्यतैव मद्गृहकम्।
अब्धिर्नाब्धिर्यदि चेन्मरुरभविष्यत्ततः स इह ॥ 1 ॥

निन्देयं वैकल्यं किं हृदयस्यास्त्यधार्मिकं तदिदम्।
विकलं न स्यादथ चेद् व्याकीर्णं तावदथवा स्यात् ॥ 2 ॥

आयुष एकस्य तपोऽनन्तरमन्तः प्रवेष्टुमथ नूनम्।
अनुमन्येतां स्यातां जय-विजयौ चेत् प्रियद्वाःस्थौ ॥ 3 ॥

33

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता, तो खुदा होता
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता

हुआ जब ग़म से यूँ बेहिस[1], तो ग़म क्या सर के कटने का
न होता गर जुदा[2] तन से, तो ज़ानू[3] पर धरा होता

हुई मुद्दत[4], कि ग़ालिब मर गया, पर याद आता है
वह हर इक बात पर कहना कि यूँ होता, तो क्या होता

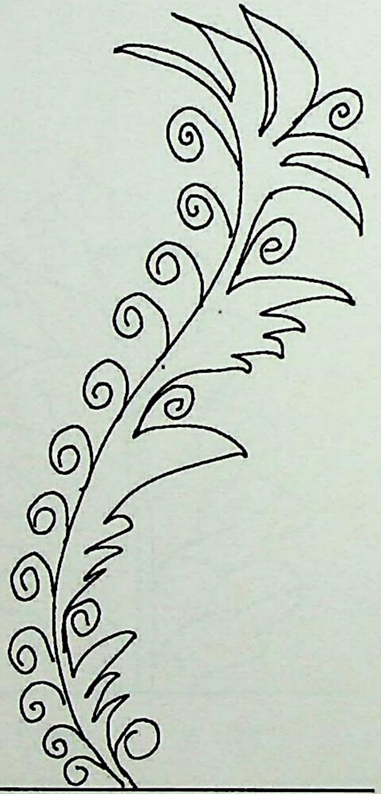

---

[1] स्तब्ध, शून्यः; [2] पृथक्; [3] जानु; [4] कालः।

33

किञ्चिन्नासीदासीदीशः स्यादसति सोऽथ कस्मिंश्चित्।
क्षपितोऽस्तित्वेनाहं न स्यां यदि किन्ततश्छिन्नम् ॥ 1 ॥

अभवं स्तब्धः शोकादेवं शोकः कुतः शिरश्छेदात्।
पृथगभविष्यन्न ततो जानुन्यभविष्यदथ निहितम् ॥ 2 ॥

कालो यातो 'ग़ालिब' इतो मृतः, स्मृतिपथं तु समुपैति।
प्रतिभणितं तद्भणितं स्यादेवञ्चेत् किमेव स्यात् ॥ 3 ॥

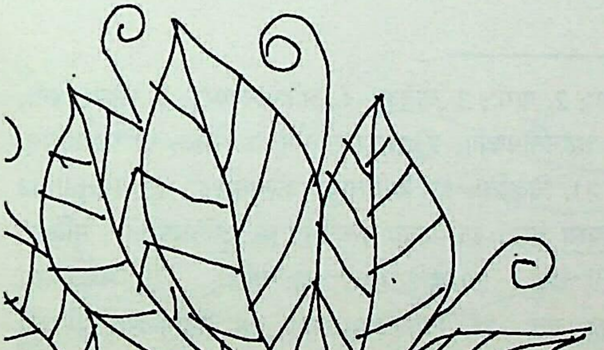

34

यक ज़र्रः-ए-ज़मीं[1] नहीं बेकार, बाग़ का
याँ जादः[2] भी, फ़तीलः[3] है लाले[4] के दाग़ का

बे मै[5] किसे है ताक़ते आशोबे आगही[6]
खेंचा है 'अिज्ज़े हौसलः[7] ने ख़त[8] अयाग़[9] का

बुलबुल के कारोबार प हैं, ख़न्दः-हा-ए-गुल[10]
कहते हैं जिसको 'अिश्क़ ख़लल[11] है दिमाग़ का

ताज़ः नहीं है नश्शः-ए-फ़िक्रे सुख़न[12] मुझे
तिरियाकि-ए-क़दीम[13] हूँ दूदे चराग़[14] का

सौ बार बन्दे 'अिश्क[15] से आज़ाद हम हुए
पर क्या करें, कि दिल ही 'अदू[16] है फ़राग़[17] का

बेख़ूने दिल[18] है चश्म[19] में मौजे निगह[20] ग़ुबार[21]
यह मैकदः[22] ख़राब[23] है, मै के सुराग़ का[24]

बाग़े शिगुफ़्तः[25] तेरा, बिसाते नशाते दिल[26]
अब्रे बहार,[27] ख़ुमकदः[28] किसके दिमाग़ का

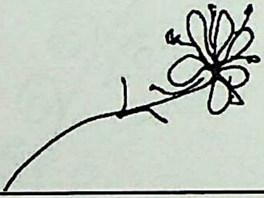

---

1. भुव एकोऽपि कणः; 2. मार्गः; 3. वर्तिका; 4. अहिफेनपुष्पम्; 5. मदिरां विना; 6. चैतन्यजन्याय्म अशान्तेः सहनसामर्थ्यम्; 7. साहसनम्रत्वम्; 8. रेखा; 9. पानपात्रम्, चषकः; 10. पुष्पाणां हासः; 11. विकृतिः; 12. कवितायाः कल्पनामदः; 13. Habitual opium smoker; 14. प्रदीपस्य धूमः; 15. प्रणय-बन्धनम्; 16. अमित्रम्; 17. मुक्तिः; 18. हृदयस्य रक्तं विना; 19. चक्षुः; 20. दृष्टितरङ्गः; 21. धूलिः; 22. मधुशाला; 23. निकृष्टा; 24, मधुनः कारणात्ः; 25. विकसितमुद्यानम्; 26. हृदानन्दस्य प्रस्तरणं (आधारः); 27. वसन्तमासस्य मेघः; 28. मदिराघटस्थली ।

34

कण एकोऽपि व्यर्थो भुव उद्यानस्य हन्त नास्त्येव।
अहिफेनकुसुमलाञ्छनमध्वाऽपि स वर्तिका काऽपि ।। 1 ।।

चैतन्यजामशान्तिं सोढुं शक्तो विना क इह मदिराम्।
खचिताऽल्पसाहसैः खलु रेखा मधुपानपात्रगता ।। 2 ।।

हसितानीह सुमनसां 'बुलबुल'चेष्टाः समाश्रितानीव।
मस्तिष्कस्य विकारः स खलु य इह कथ्यते प्रणयः ।। 3 ।।

न नवो मदो ममायं कविताया हन्त कल्पनाजन्यः ।
प्रतनोऽहिफेनमत्तः प्रदीपधूमस्य वर्तेऽहम् ।। 4 ।।

अभवमहं शतकृत्वः प्रणयाख्यादेष बन्धनान्मुक्तः।
परमिह किमहं कुर्यां हृदयं मुक्तेरमित्रमिति ।। 5 ।।

चक्षुषि हृद्रक्तमृते दृष्टितरङ्गाः सधूलयो वाताः ।
मधुनो हेतोरेषा मधुशाला सङ्कटापन्ना ।। 6 ।।

तव विकसितमुद्यानं मनसो हर्षस्य कश्चिदाधारः।
मधुमासमेघमदिरा घटस्थली केन सन्धेया ।। 7 ।।

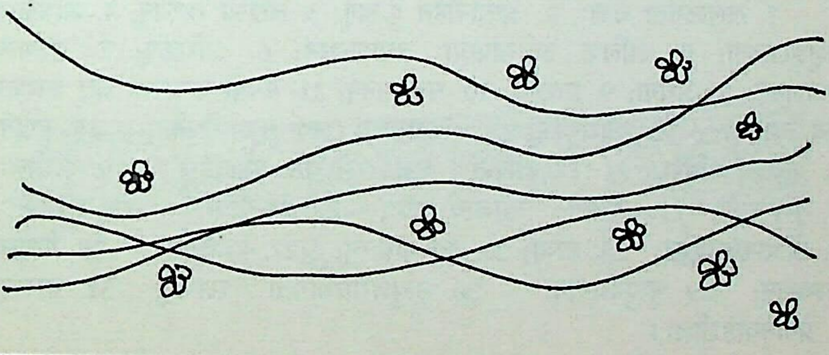

35

वह मेरी चीने जबीं[1] से, ग़मे पिन्हाँ[2] समझा
राज़े मक्तूब[3] व बेरब्ति-ए-’उनवाँ[4] समझा

इक अलिफ़[5] बेश[6] नहीं, सैक़ले आईनः[7] हनोज़[8]
चाक[9] करता हूँ मैं, जबसे कि गरीबाँ[10] समझा

शर्‌हे अस्बाबे गिरफ्तारि-ए-ख़ातिर[11], मत पूछ
इस क़दर तंग हुआ दिल, कि मैं ज़िन्दाँ[12] समझा

बदगुमानी[13] ने न चाहा उसे सरगर्मे ख़िराम[14]
रुख़[15] प हर क़तरः अरक़,[16] दीदः-ए-हैराँ[17] समझा

’अिज्ज़[18] से अपने यह जाना, कि वह बदख़ू[19] होगा
नब्ज़े ख़स[20] से तपिशे शो’लः-ए-सोज़ाँ[21] समझा

सफ़रे ’अिश्क़[22] में की ज़ो’फ़[23] ने राहत तलबी[24]
हर क़दम साये[25] को मैं अपने शबिस्ताँ[26] समझा

था गुरेज़ाँ[27] मिशः-ए-यार[28] से दिल, ता दमे मर्ग[29]
दफ़’अ-ए-पैकाने क़ज़ा[30], इस क़दर आसाँ[31] समझा

दिल दिया जान के क्यों उसको वफ़ादार[32] असद
ग़लती की, कि जो काफ़िर को मुसलमाँ समझा

---

1. ललाटगता वलिः; 2. अन्तर्निहितं दुःखम्; 3. लेखस्य रहस्यम्; 4. शीर्षकस्य विशृङ्खलता; 5. अलिफ उर्दू-भाषायाः प्रथममक्षरम्; 6. अधिकम्; 7. दर्पणस्य सम्मार्जनम्; 8. अधुना; 9. प्रच्छेदः; 10. गलवसनम्; 11. मनसो बन्धनस्य यत् कारणम् तस्य व्याख्या; 12. कारागृहम्; 13. मिथ्यासंशयः; 14. मन्दगतिलीनः; 15. मुखम्; 16. प्रत्येकं बिन्दुः; 17. चकितं चक्षुः; 18. नम्रत्वम्; 19. दुःशीलः; 20. तृण-नाडी; 21. ज्वलतो ज्वालस्य तापः; 22. प्रेम-यात्रा; 23. अशक्तिः; 24. विश्रामाकाङ्क्षा; 25. छाया; 26. शयनागारम्; 27. पलायितम्; 28. प्रियस्य दृगञ्चलम्; 29. मृत्युपर्यन्तम्; 30. मृत्युशराग्रभागतो रक्षणम्; 31. सरलम्; 32. प्रेमनिर्वाहशीलः ।

35

अन्तर्निहितां वेद व्यथां मदीयां स भालरेखाभिः।
शीर्षकवैकल्येन ज्ञातं मर्मेव लेखस्य ॥ 1 ॥

सम्मार्ष्टुं दर्पणमिह खचिता रेखाऽधुनाऽपि न ह्येका।
गलवसनमित्यवेत्य प्रच्छिन्दन्नेव वर्तेऽहम् ॥ 2 ॥

मनसो बन्धनकारणविषयां मा पृच्छ साम्प्रतं व्याख्याम्।
एवं हृद् विकलमभूत् कारागृहमिति मया विदितम् ॥ 3 ॥

मिथ्यासन्देहस्य भ्रमणं कुर्यात् स इति न किमपीष्टम्।
प्रत्येकं पृषदाननगतमवगतमक्षि चकितमिति ॥ 4 ॥

दुःशीलः स भवेदिति विनयेन स्वेन हन्त समवगतम्।
तृणनाड्या ज्वलदर्चिःसन्तापः किञ्च विज्ञातः ॥ 5 ॥

प्रेम्णो यात्रायामिह विश्रामः काङ्क्षितो यदाऽशक्त्या ।
प्रतिपदमेवावगता निशाश्रयः स्वा तदा छाया ॥ 6 ॥

प्रपलायितमामृत्योः पक्ष्मशरेभ्यः प्रियस्य हृदयेन।
सरलाऽवगता मृत्योर्बाणानामात्मनो रक्षा ॥ 7 ॥

तस्मै हृन्निजमर्पितमवेत्य निर्वाहवन्त‘मसद’ कथम्।
अपराद्धं सोऽधार्मिक इह त्वया धार्मिकोऽवगतः ॥ 8 ॥

36

फिर मुझे दीदः-ए-तर[1] याद आया
दिल, जिगरतश्नः-ए-फ़रियाद[2] आया

दम लिया था न क़यामत[3] में हनोज़[4]
फिर तेरा वक़्ते सफ़र[5] याद आया

सादगीहा-ए-तमन्ना[6], या'नी
फिर वह नैरंगे नज़र[7] याद आया

'उुज़्र वामान्दगी[8], अय हसरते दिल[9]
नालः[10] करता था, जिगर याद आया

ज़िन्दगी यों भी गुज़र ही जाती
क्यों तेरा राहगुज़र[10] याद आया

क्या ही रिज़वाँ[11] से लड़ाई होगी
घर तेरा ख़ुल्द[12] में गर याद आया

आह वह जुरअते फ़रियाद[13] कहाँ
दिल से तंग आ के जिगर याद आया

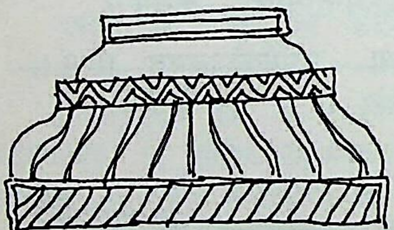

---

1. आर्द्रं चक्षुः; 2. प्रार्थनायाः पिपासुः; 3. प्रलय-दिनम्; 4. अधुना; 5. यात्रा-कालः; 6. मनोरथस्य सारल्यानि; 7. चक्षुष इन्द्रजालम्, मायावी प्रिय इत्यर्थः; 8. श्रान्तेर्व्याजाः; 9. हृदयस्याभिलाषः; 10. आर्तस्वरः; 10. मार्गः; 11. एतन्नामा स्वर्गस्य द्वारपालः; 12. स्वर्गः; 13. प्रार्थनासाहसम्; ।

36

ते स्मृतिपथमायाते पुनरार्द्रे लोचने ममेदानीम्।
यकृदथ हृदयञ्चेति द्वयं पिपास्वार्तनादमिह ॥ 1 ॥

प्रलयोऽधुनाऽपि यावद् विश्रान्तो हन्त नायमभवदिह।
तावत् पुनस्त्वदीयो यात्रासमयः स्मृतिं प्राप्तः ॥ 2 ॥

स्वमनोरथस्य तावत् सारल्यानीह हन्त हा हन्त।
स स्मृतिपथं मदीयं दृगिन्द्रजालं पुनः प्राप्तः ॥ 3 ॥

हृदयाभिलाष! मम नु व्याजः श्रान्तेरयं समापन्नः।
आर्तस्वरं प्रकुर्वन्नासं स्मृतिमाप्तवच्च यकृत् ॥ 4 ॥

अस्तित्वमेतदात्मन एवमपीह व्यतीतमेव स्यात्।
कथमिव तवैष मार्गो मम नु स्मृतिगोचरीभूतः ॥ 5 ॥

जय-विजयाभ्यां सार्धं सङ्घर्षो हन्त कोऽपि मे भविता।
स्वर्गे यदि तव भवनं स्मृतिगोचरतामुपेतं स्यात् ॥ 6 ॥

मयि सामर्थ्यं सम्प्रति हन्त कुतः किञ्चिदार्तनादस्य।
विवशीकरोति हृदयं तदा स्मराम्येष यकृतोऽहम् ॥ 7 ॥

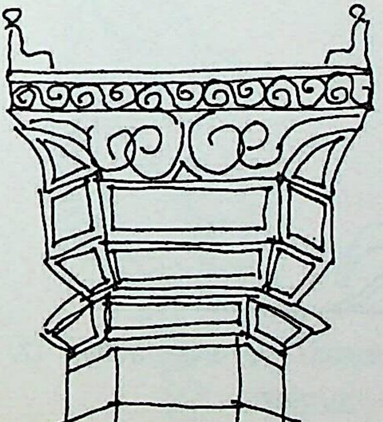

फिर तेरे कूचे[14] को जाता है ख़याल[15]
दिले गुम गश्तः[16] मगर याद आया

कोई वीरानी[17] सी वीरानी है
दश्त[18] को देख के घर याद आया

मैंने मजनूँ[19] प लड़कपन में, असद
संग[20] उठाया था, कि सर याद आया

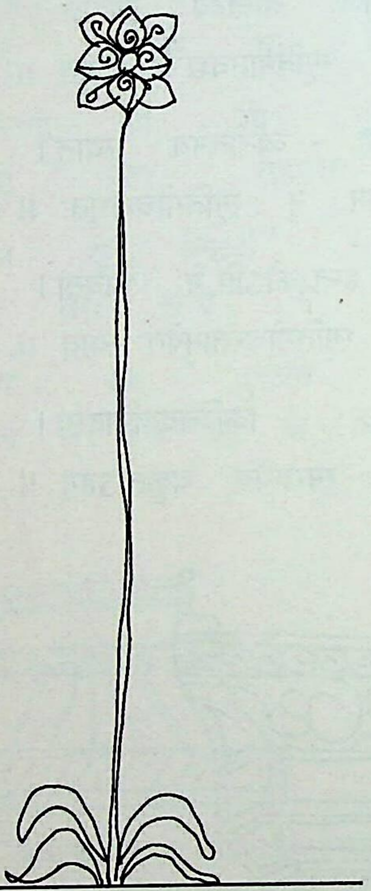

---

14. रथ्या; 15. कल्पना; 16. अपहृतं हृदयम्; 17. नैर्जन्यम्; 18. अरण्यम्; 19. एकः प्रसिद्धः प्रणयीः; 20. प्रस्तरः ।

रथ्यां पुनस्त्वदीयामुपगच्छति कल्पना मदीयेव।
तत्रापहृतं हृदयं स्मृतिपथमायाति मे क्वचन ॥ 8 ॥

नैर्जन्यमिव किमेतन्नैर्जन्यं हन्त तावदिह किमपि।
अवलोकयतोऽरण्यं स्मृतिपथमायाति मे गृहकम् ॥ 9 ॥

उत्थापितः स्वबाल्ये क्षीबे 'मजनौ' मया दृषत्खण्डः।
स्मृतिपथमायातं मे शिरः स्वकीयं ततः किमपि ॥ 10 ॥

37

हुई ताख़ीर[1], तो कुछ बा'अिसे ताख़ीर[2] भी था
आप आते थे, मगर कोई 'अिनाँगीर[3] भी था

तुमसे बेजा[4], है मुझे अपनी तबाही[5] का गिला[6]
उसमें कुछ शाइबः-ए-ख़ूबि-ए-तक़दीर[7] भी था

तू मुझे भूल गया हो, तो पता बतला दूँ
कभी फ़ितराक[8] में तेरे, कोई नख़चीर[9] भी था

क़ैद में, है तेरे वहशी[10] को, वो ही ज़ुल्फ़[11] की याद
हाँ कुछ इक रंजे गिराँबारि-ए-ज़ंजीर[12] भी था

बिजली इक कौंद गई आँखों के आगे, तो क्या
बात करते, कि मैं लब तश्नः-ए-तक़रीर[13] भी था

युसुफ़[14] उसको कहूँ, और कुछ न कहे, ख़ैर हुई
गर बिगड़ बैठे, तो मैं लाइक़े ता'ज़ीर[15] भी था

देख कर ग़ैर[16] को हो, क्यों न कलेजा ठंडा
नालः[17] करता था, वले तालिबे तासीर[18] भी था

पेशे[19] में 'अैब नहीं[20], रखिए न फ़रहाद को नाम[21]
हम ही आशुफ़्तःसरों[22] में; वो जवां मीर[23] भी था

---

1. विलम्बः; 2. विलम्बस्य कारणम्; 3. गत्यवरोधकः; 4. अनुचितः; 5. विपत्; 6. उपालम्भः; 7. सौभाग्यच्छटा; 8. पिटकम्; 9. घातितो जन्तुः; 10. मत्तः; 11. अलकाः; 12. बन्धनशृङ्खलाभारजन्यं कष्टम्; 13. आलापपिपासान्वितः; 14. युसुफ इत्याख्य ईश्वरस्य सन्देशहरः परमसुन्दरः, प्रिय इत्यर्थः; 15. दण्डनीयः; 16. शत्रुः; 17. आर्तस्वरः; 18. प्रभावस्येच्छुः; 19. व्यवसायः; 20. न दोषः; 21. फर्हादो न वचनीय इत्यर्थः; 22. मत्ताः प्रणयिनः; 23. अग्रगण्यो युवा;

37

जातो हन्त विलम्बो हेतुरभूत् कोऽपि वा विलम्बस्य।
आगच्छन्नासीस्त्वं कोऽप्यवरोधोऽपि परमासीत् ।। 1 ।।

स्वविपद्विषयस्त्वां प्रति समुचित इह नैव कोऽप्युपालम्भः।
तत्रासीदपि तत्त्वं मत्सौभाग्यस्य संवलितम् ।। 2 ।।

विस्मृत इतस्त्वयाऽहं सङ्केतं तन्निवेदयाम्येषः।
अपि कोऽपि जन्तुरासीत् कदापि तव मारितः पिटके ।। 3 ।।

त्वत्प्रणयोन्मत्तस्तव कारायां संस्मरन्नभूदलकान्।
बन्धनशृङ्खलभारात् आम् ! किञ्चित्कष्टमप्यासीत् ।। 4 ।।

अक्ष्णोः पुरो यदेका तडिच्चमत्कृत्य निर्गता, तत्किम्।
स समालपेदहं यत् सममालापस्पृहोऽप्यासम् ।। 5 ।।

यूसुफ़ इति तमभिदधे न वदेत् किमपीति तन्नु कुशलं स्यात्।
यदि रुष्टश्चेदासं दण्डार्हः कश्चिदहमेषः ।। 6 ।।

शान्तं कालेयं मे स्यान्न कथं स्वं विपक्षमवलोक्य।
आर्तस्वरं व्यधामथ परं प्रभावेच्छुरप्यासम् ।। 7 ।।

व्यवसाये नहि दोषः 'फ़र्हादो' नाम नेह वचनीयः।
प्रणयवतामस्माकं युवाऽग्रगण्योऽपि स ह्यासीत् ।। 8 ।।

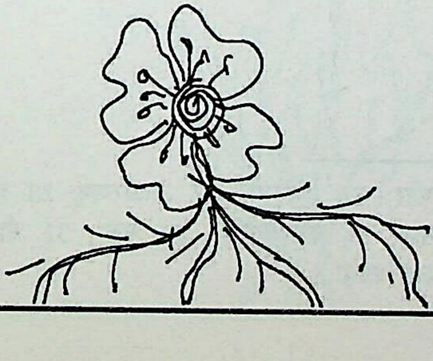

हम थे मरने को खड़े, पास न आया, न सही
आख़िर उस शोख़[24] के तरकश[25] में कोई तीर भी था

पकड़े जाते हैं फ़रिश्तों[26] के लिखे पर, नाहक़[27]
आदमी कोई हमारा दमे तहरीर[28] भी था

रेख़्ते[29] के तुम्हीं उस्ताद[30] नहीं हो, ग़ालिब
कहते हैं, अगले ज़माने में कोई मीर[31] भी था

---

24. दुर्ललितः; 25. तूणीरः; 26. देवदूताः; 27. अकारणम्; 28. लेखस्य काले; 29. 'उर्दू' भाषायाः प्राचीनं नाम, उर्दू कवितेत्यर्थः; 30. गुरुः; 31. मीरतक़ी 'मीर' इत्याख्यः उर्दूभाषाया महान् 'ग़ज़ल'कविः।

मर्तुमतिष्ठाम वयं कामं निकटे स नागतोऽस्माकम्।
अपि दुर्ललितस्य शरस्तूणीरे तस्य कोऽप्यासीत्।।9।।

लेखे विनैव हेतुं निगृहीता आस्म देवदूतानाम्।
अस्माकं स्वजनेन स्थातव्यं लेखकालेऽपि।।10।।

'उर्दू' - कविताया इह 'ग़ालिब' नासि त्वमेव गुरुरेकः।
विगते काले कश्चि'न्मीरो'ऽप्यासीदिति प्राहुः।।11।।

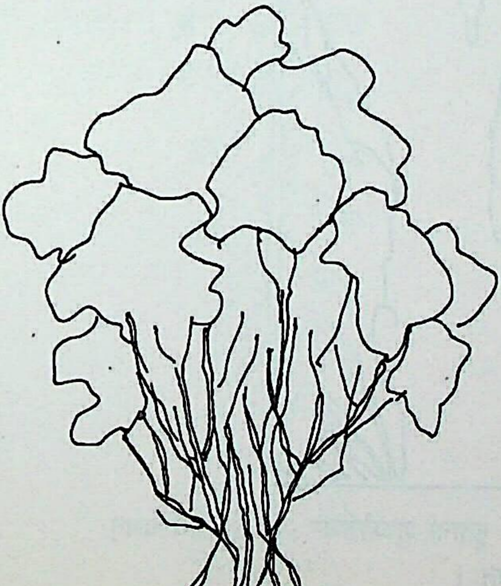

38

लबे ख़ुश्क दर तशनिगी मुर्दगाँ[1] का
ज़ियारत कदः[2] हूँ, दिल आज़ुर्दगाँ[3] का

हमः नाउमीदी,[4] हमः बदगुमानी
मैं दिल हूँ फरेबे वफ़ा ख़ुर्दगाँ का

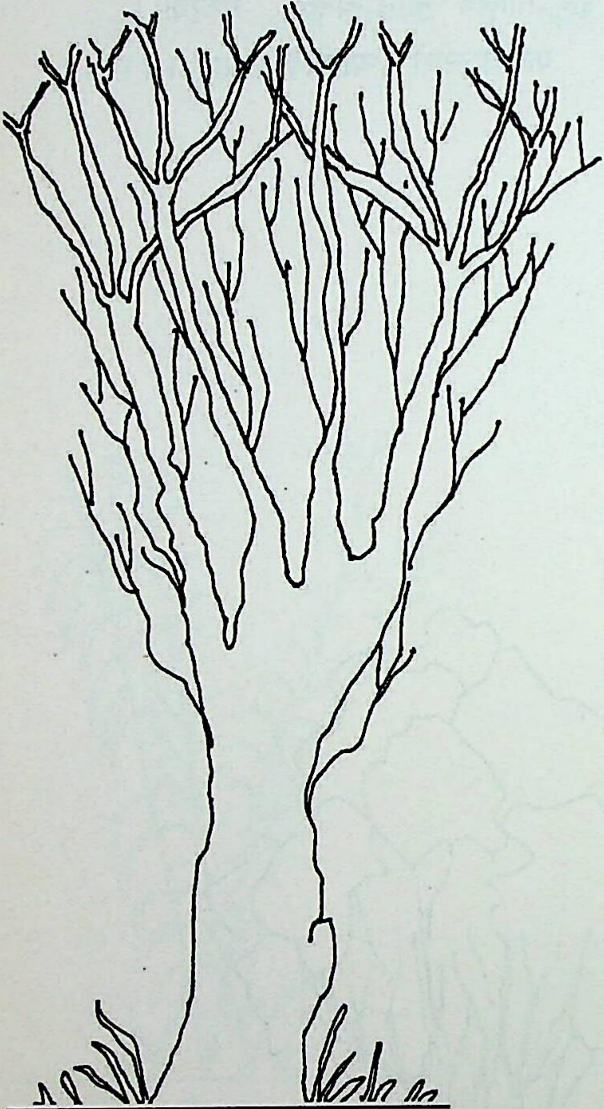

---

[1] पिपासया मृतानां शुष्कोऽधरः; [2] तीर्थस्थलम्; [3] पीडितहृदयः; [4] प्रणयनिर्वाहे छलितः ।

38

शुष्कोऽधरोऽस्मि तेषां मृत्युमवाप्ताः पिपासया य इतः ।
पीडितहृदयजुषामित एकं तीर्थस्थलञ्चाहम् ।। 1 ।।

परिपूर्णं नैराश्यं पूर्णं सन्देहमिह बिभर्म्येषः ।
हृदयमहं जगतीह च्छलितानां प्रेमनिर्वाहे ।। 2 ।।

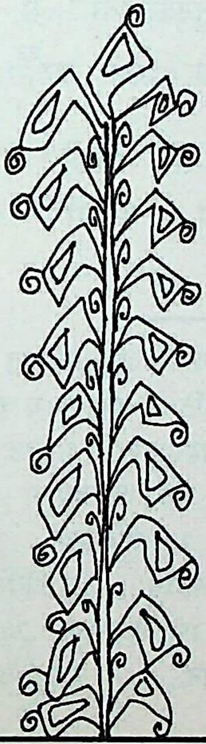

39

तू दोस्त किसी का भी, सितमगर[1], न हुआ था
औरों प है वह ज़ुल्म, कि मुझ पर न हुआ था

छोड़ा महे नख़्शब[2] की तरह दस्ते क़ज़ा[3] ने
ख़ुर्शीद[4] हनोज़[5] उसके बराबर न हुआ था

तौफ़ीक़[6] ब अंदाज़ः-ए-हिम्मत[7] है अज़ल[8] से
आँखों में है वह क़तरः[9], कि गौहर[10] न हुआ था

जब तक कि न देखा था क़दे यार[11] का आलम[12]
मैं मोतक़िदे फ़ितनः-ए-महशर[13] न हुआ था

मै सादः दिल[14] आज़ुर्दगि-ए-यार[15] से ख़ुश हूँ
या'नी सबक़े शौक़[16] मुकर्रर[17] न हुआ था

दरिया-ए-म'आसी[18] तुनुकआबी[19] से, हुआ ख़ुश्क[20]
मेरा सरे दामन[21] भी, अभी तर[22] न हुआ था

जारी[23] थी असद, दाग़े जिगर से मेरे तहसील[24]
आतशकदः[25] जागीरे समन्दर[26] न हुआ था

---

1. निर्दयः; 2. नख्शबस्य चन्द्रः, अनुश्रूयते यत् वैज्ञानिकेनैकेन कृत्रिम एकश्चन्द्रो निर्मितः यः एकस्मात् कूपात् उदयति स्म तस्मिनेव च कूपेऽस्तं याति स्म । तस्य प्रकाशो दूरं यावन्न प्रसरति स्म। मासद्वयानन्तरं स नष्टः समजनीति; निष्कृष्टश्चन्द्र इति तात्पर्यम्; 3. नियतेः करः; 4. सूर्यः; 5. अधुना; 6. सामर्थ्यम्; 7. साहसानुसारि; 8. अनादिकालः; 9. वारिकणः; 10. मौक्तिकम्; 11. प्रियस्य तनुयष्टिः; 12. शोभा; 13. प्रियापदोऽनुगतः; 14. सरलहृदयः; 15. प्रियस्यौदासीन्यम्; 16. प्रेम्णः पाठः; 17. पुनरावृत्तः; 18. पापसागरः; 19. जलाभावः; 20. शुष्कः; 21. अञ्चलाग्रभागः; 22. आर्द्रः; 23. प्रवर्तमानः; 24. आयः; 25. अग्निशाला; 26. अग्निकीटस्याधिकारक्षेत्रम् ।

39

कस्यापि त्वं निर्दय मित्रमभूर्नैव हन्त जगतीह।
अन्येषु निर्दयत्वं यत् तव न स्फुटमभून्मयि तत् ॥ 1 ॥

'नख़्शब'-चन्द्र इवार्धं निर्माय व्यक्त एष नियतिकरैः।
तस्य समत्वं भास्वानद्यावधि लब्धवान्न खलु ॥ 2 ॥

साहसमनुसरतीतः सामर्थ्यं खल्वनादिसिद्धान्तः।
अक्ष्णि स वारिकणोऽस्ति प्राप्तं नहि येन मुक्तात्वम् ॥ 3 ॥

यावन्नाहमपश्यं वैभवमेवं प्रियस्य तनुयष्टेः।
प्रलयावसरोपद्रवविश्वस्तो नाभवं तावत् ॥ 4 ॥

अहमेष सरलहृदयः सुहृदौदासीन्यतः प्रसन्नोऽस्मि।
अर्थात् पाठः सोऽभूत् पुनरावृत्तो नहि प्रेम्णः ॥ 5 ॥

सलिलाभाववशात् खलु सञ्जातः पापसागरः शुष्कः।
न मदञ्चलाग्रभागः प्रापदिवार्द्रत्वमधुनापि ॥ 6 ॥

'असद' प्रवर्तमानो यकृत्कलङ्कात् पुरा ममायोऽभूत्।
अधिकारक्षेत्रमभून्नाग्निभवनमग्निकीटस्य ॥ 7 ॥

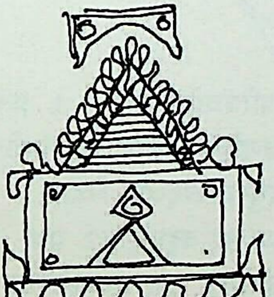

40

शब[1], कि वह मजलिस फ़रोज़े ख़लवते नामूस[2] था
रिश्तः-ए-हर शम’अ[3] ख़ारे किसवते फ़ानूस[4] था

मशहदे ’आशिक़[5] से कोसों तक जो उगती है हिना[6]
किस क़दर यारब[7], हलाके हसरते पाबोस[8] था

हासिले उल्फ़त[9] न देखा, जुज़ शिकस्ते आरज़ू[10]
दिल ब दिल पैवस्तः[11] गोया[12] इक लबे अफ़सोस[13] था

क्या कहूँ बीमारि-ए-ग़म[14] की फ़राग़त[15] का बयाँ[16]
जो कि खाया ख़ूने दिल, बेमिन्नते कैमूस[17] था

* * *

---

1. रात्रिः; 2. शयनागारैकान्ते परिषच्छोभाकरः; 3. प्रत्येकं दीपानां वर्तिः; 4. काचावरणे कर्पटविद्धः कण्टकः; 5. प्रणयिनो बलिवेदी; 6. मेंहदीत्यस्य कृत्रिमं नाम मदयन्तिका; 7. हे ईश्वर !; 8. पदचुम्बनकाङ्क्षया निहतः; 9. प्रेम्णो लाभः; 10. कामनायाः पराजयमतिरिच्य; 11. हृदा हृद् बद्धम्; 12. यथा; 13. शोकात् अधरक्षतिः; 14. दुःखरोगः; 15. विश्रान्तिः; 16. वर्णनम्; 17. पाचनक्रियाया अकृतज्ञः ।

40

निश्येकान्तशयनगः परिषच्छोभाकरो यदाऽऽसीत् सः ।
वर्तिः काचावरणे दीपानां कण्टकत्वमियात् ॥ 1 ॥

यद् बलिभुवः प्रणयिनो व्याप्य क्रोशानुदेति मदयन्ती ।
ईश्वर ! कियान् स आसीत् पदचुम्बनकाङ्क्षया ग्रस्तः ॥ 2 ॥

दृष्टः प्रेम्णो लाभो न क्वचिदतिरिच्य भग्नमभिलाषम् ।
बद्धं हृदा च हृद् यत् स क्षतिरधरे यथा शोकात् ॥ 3 ॥

दुःखरुजो विश्रान्तेर्विषये वाच्यं मयेह किमिदानीम् ।
यदहमपां हृद्रक्तं पाचनशक्तेर्न कार्त्तज्ञ्यम् ॥ 4 ॥

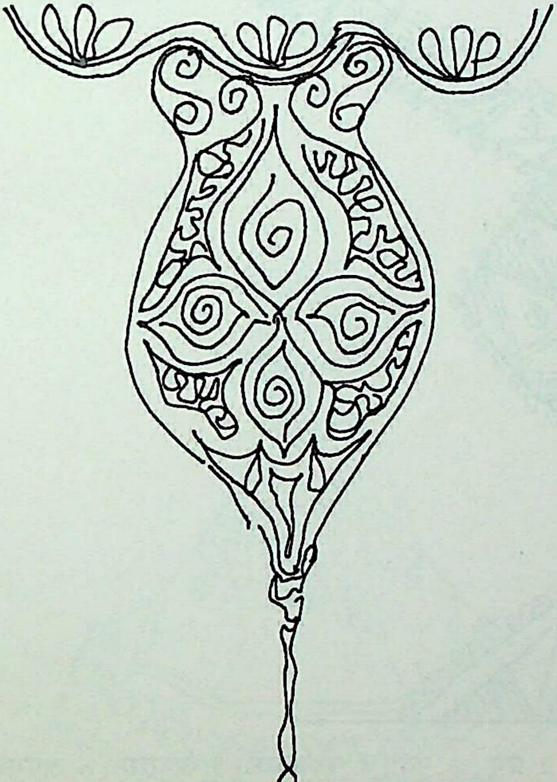

41

आईन:[1] देख, अपना सा मुँह ले के रह गये
साहब[2] को, दिल न देने प कितना ग़ुरूर[3] था

क़ासिद[4] को अपने हाथ से गर्दन न मारिये
उसकी ख़ता[5] नहीं है, यह मेरा क़ुसूर[6] था

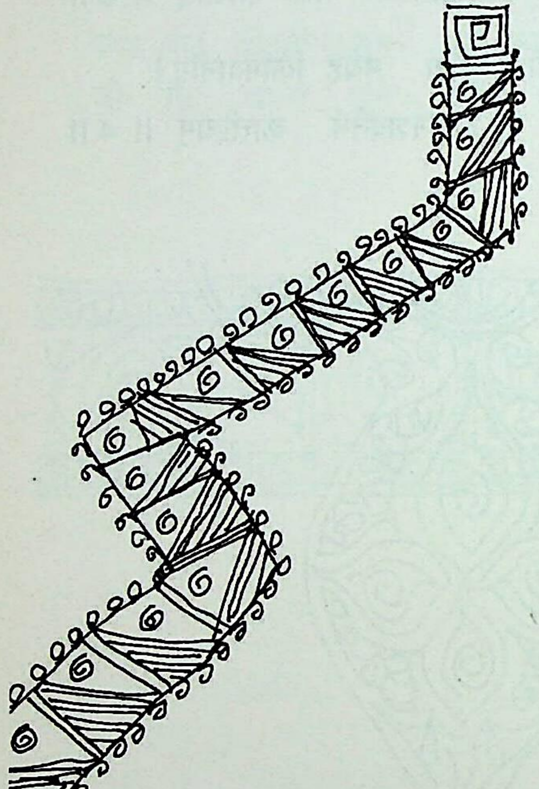

---

1. दर्पण:; 2. प्रभु:; 3. गर्व:; 4. पत्रवाहक:; 5. अपराध:; 6. अपराध: ।

41

दर्पणमवलोक्य तथा सञ्जातः स्वमुख एव सम्मुग्धः ।
हृद्दाने गर्व इयान् महाप्रभोर्मनसि कोऽप्यासीत् ॥ 1 ॥

पत्रस्य वाहकं मा वधीरिमं हन्त रे स्वहस्ताभ्याम्।
तस्य न कोऽप्यपराधो मयैव यत्किञ्चिदपराद्धम् ॥ 2 ॥

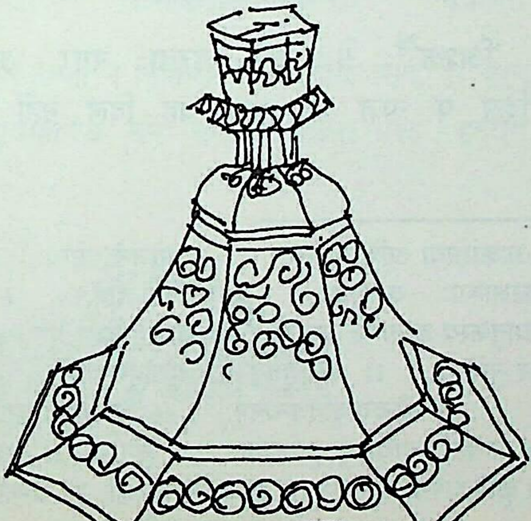

42

अर्ज़े नियाज़े इश्क़[1] के क़ाबिल[2] नहीं रहा
जिस दिल प नाज़[3] था मुझे, वह दिल नहीं रहा

जाता हूँ दाग़े हसरते हस्ती[4] लिए हुए
हूँ शम'-ए-कुश्तः[5] दरख़ुरे महफ़िल[6] नहीं रहा

मरने की, अय दिल ! और ही तदबीर[7] कर, कि मैं
शायाने दस्त-ओ-बाज़ु-ए-क़ातिल[8] नहीं रहा

बर रू-ए-शश जिहत[9] दरे आईनः[10] बाज़[11] है
याँ इम्तियाज़े नाक़िस ओ कामिल[12] नहीं रहा

वा[13] कर दिये हैं शौक़[14] ने, बन्दे निक़ाबे हुस्न[15]
ग़ैर अज़ निगाह[16] अब कोई हाइल[17] नहीं रहा

गो[18] मैं रहा रहीने सितमहा-ए-रोज़गार[19]
लेकिन तेरे ख़याल[20] से ग़ाफ़िल[21] नहीं रहा

दिल से हवा-ए-किश्ते वफ़ा[22] मिट गई, कि वाँ
हासिल[23], सिवाय हसरते हासिल[24] नहीं रहा

बेदादे 'अिश्क़[25] से नहीं डरता मगर 'असद'
जिस दिल प नाज़ था मुझे, वह दिल नहीं रहा

---

1. प्रेम्ण आकांक्षाया अभिव्यक्तिः; 2. भाजनं, योग्यः; 3. गर्वः;
4. अस्तित्वस्याकांक्षारूपः कलङ्कः; 5. निर्वाणो दीपः; 6. गोष्ठ्या योग्यः;
7. उपायः; 8. धातुकस्य हस्ताम्यां वधार्हः; 9. षण्णां दिशां पुरः, सर्वत इति यावत्;
10. दर्पणस्य द्वारं मुखं वा; 11. अनावृतम्; 12. पूर्णापूर्णयोर्भेदः; 13. अनावृतम्;
14. अभिलाषः 15. सौन्दर्यावृतिबन्धनम्; 16. दृष्ट्यतिरिक्तः; 17. बाधकः;
18. यद्यपिः; 19. जगतोऽत्याचारेषु कृतन्यासः; 20. कल्पना; 21. अनवहितः, प्रमत्तः;
22. प्रेमनिर्वाहस्य कृषिकामना; 23. लाभः; 24. लाभाकाङ्क्षा; 25. प्रेम्णोऽत्याचारः।

42

पात्रं प्रेमाकाङ्क्षाभिव्यक्तेर्हन्त मे न हृदयमभूत्।
यस्मिन् गर्वमकरवं मम सम्प्रति नास्ति तद् हृदयम् ।। 1 ।।

अस्तित्वाकाङ्क्षामयकलङ्कमादाय हन्त याम्येषः।
निर्वाणोऽहं दीपो गोष्ठीषु स्थापनानर्हः ।। 2 ।।

आश्रयणीयो मर्तुं कश्चिदुपायस्त्वया हृदय ! तावत्।
नाहं यतो वधार्हो हस्ताभ्यां घातुकस्यास्मि ।। 3 ।।

द्यावा-भूम्योः पुरतोऽनावृतमादर्शमुखमिवास्तीदम्।
पूर्णस्यापूर्णस्य च भेदो नास्त्यत्र कश्चिदपि ।। 4 ।।

सौन्दर्यावृतिबन्धनमभिलाषेणापनीतमेतर्हि ।
मन्येऽतिरिच्य दृष्टिं न हि कश्चिद् बाधकोऽस्त्यत्र ।। 5 ।।

यद्यप्यासं जगतोऽत्याचरितानां निरन्तरं विषयः ।
न तथापि त्वद्विषयकचिन्तनतोऽनवहितोऽभूवम् ।। 6 ।।

प्रेम्णो निर्वाहस्याकाङ्क्षा हृद्देशतो विलीनेव।
लाभस्ततोऽथ लाभाकाङ्क्षामतिरिच्य नैवास्ति ।। 7 ।।

अत्याचारात् प्रेम्णो न बिभेम्यहमेष किञ्चि'दसद' ! परम्।
यस्मिन् गर्वमकरवं मम सम्प्रति नास्ति तद् हृदयम् ।। 8 ।।

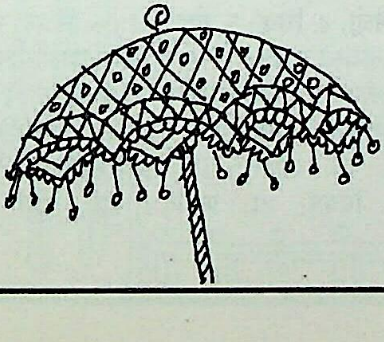

43

रश्क[1] कहता है, कि उसका ग़ैर[2] से इख़लास,[3] हैफ़ ![4]
'अक़्ल कहती है कि वह बेमेह्र[5] किसका आशना[6]

ज़र्रः ज़र्रः[7] साग़रे मैख़ानः-ए-नैरंग[8] है
गर्दिशे मजनू[9] ब चश्मकहा-ए-लैला[10] आशना[11]

शौक़[12] है सामाँ तराज़े नाज़िशे अर्बाबे अिज्ज़[13]
ज़र्रः सहरा दस्तगाह-ओ-क़तरः, दरिया आशना[14]

मैं, और इक आफ़त का टुकड़ा, वह दिले वहशी[15], कि है
'आफ़ियत[16] का दुश्मन और आवारगी[17] का आशना

शिकवः संजे रश्के हमदीगर[18] न रहना चाहिए
मेरा ज़ानू[19] मूनिस[20] और आईनः तेरा आशना

कोहकन[21], नक्क़ाशे यक तिम्साले शीरीं[22] था, असद
संग[23] से सर मार कर होवे न पैदा आशना

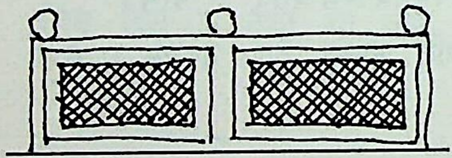

---

1. ईर्ष्या; 2. प्रतिद्वन्द्वी, 3. मैत्री; 4. धिक्; 5. मोहशून्यः; 6. मित्रम्; 9. प्रत्येकं कण; 8. इन्द्रजालेन निर्मितस्य मदिरालयस्य चषकः; 9. मजनोर्भ्रमणशीलत्वम्; 10. 'लैला' क्षिसङ्केतेन; 11.परिचितः; 12. अभिलाषः; 13. विनीतानां गर्वस्य प्रबन्धकः; 14. प्रत्येकं कणः मरुभुवो विस्तारं (प्रत्येकं) बिन्दुश्च सागरस्य वैशाल्यं बिभ्राणः (अस्ति); 15 . आरण्यकं (प्रमत्त) हृदयम्; 16. शान्तिः; 17. इत्वरत्वम्; 18. परस्परमीर्ष्योपालम्भपरत्वम्; 19. जानु; 20. मित्रम्; 21. फर्हाद्ः; 22. 'शीरी' इत्याख्यायाः प्रियायाश्चित्रकरः; 23. प्रस्तरः ।

43

ईर्ष्या वदति स रिपुणा प्रवर्धयन्नस्ति हन्त सौहार्दम्।
धीर्वक्ति मोहरहितः स कस्य भविता सुहृन्नाम ॥ 1 ॥

‘मजनो’र्यथेत्वरत्वं लोचनसङ्केतजं नु ‘लैलायाः’।
प्रत्येकमिन्द्रजालकमदिरालयचषक एव कणः ॥ 2 ॥

अभिलाषो विनयान्वितजनगर्वस्य प्रबन्धको नाम।
कण इह मरुविस्तारं पृषद् बिभर्त्त्यब्धिवैशाल्यम् ॥ 3 ॥

अहमेक आपदंशो वन्यं हृदयन्नु मामकीनञ्च।
अस्ति विपक्षः शान्तेरभ्यस्तञ्चेत्वरत्वस्य ॥ 4 ॥

अन्योन्यमीर्ष्ययोपालम्भपराभ्यां न भाव्यमावाभ्याम्।
मम जानु हि मन्मित्रं सुपरिचितो दर्पणश्च तव ॥ 5 ॥

‘कोहकनः’ खल्वासीच्छीरीं’-रूपस्य कोऽपि चित्रकरः।
उपलेनाहत्य शिरो न कश्चिदुत्पद्यते प्रणयी ॥ 6 ॥

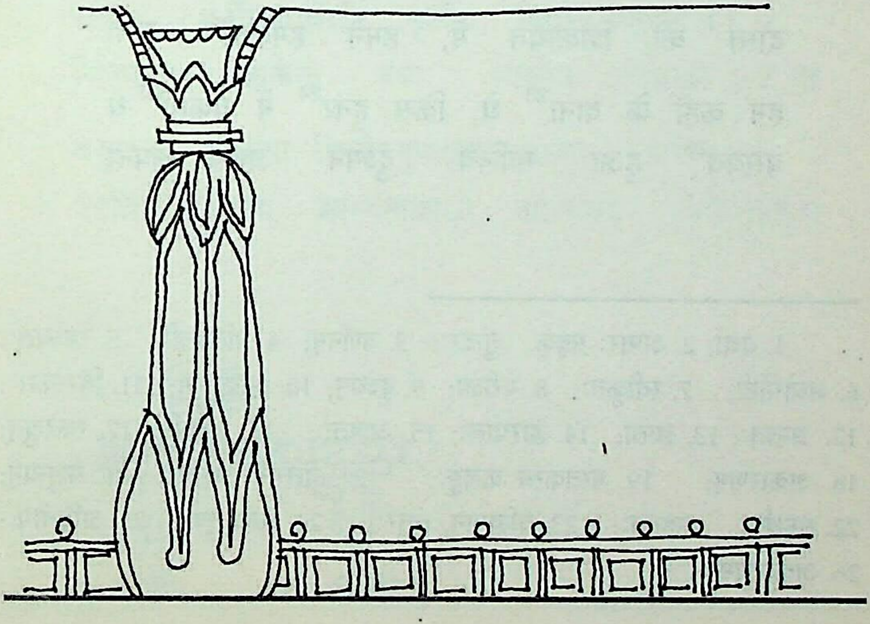

44

ज़िक्र[1] उस परीवश[2] का, और फिर बयाँ[3] अपना
बन गया रक़ीब[4] आख़िर, था जो राज़दाँ[5] अपना

मै वह क्यों बहुत पीते, बज़्मे ग़ैर[6] में, यारब
आज ही हुआ मंज़ूर[7], उनको इम्तिहाँ[8] अपना

मंज़र[9] इक बलन्दी पर, और हम बना सकते
'अर्श[10] से इधर होता काश के मकाँ अपना

दे वह जिस क़दर ज़िल्लत[11], हम हँसी में टालेंगे
बारे[12] आशना[13] निकला उनका पासबाँ[14] अपना

दर्दे दिल लिखूँ कब तक, जाऊँ उनको दिखला दूँ
उँगलियाँ फ़िगार[15] अपनी, खामः[16] ख़ूँ चकाँ[17] अपना

घिसते घिसते मिट जाता, आपने 'अवस[18] बदला
नंगे सिज्दः[19] से मेरे, संगे आस्ताँ[20] अपना

ता करे न ग़म्माज़ी[21], कर लिया है दुश्मन को
दोस्त की शिकायत में, हमने हमज़बाँ[22] अपना

हम कहाँ के दाना[23] थे, किस हुनर[24] में यकता[25] थे
बेसबब[26] हुआ ग़ालिब, दुश्मन आस्माँ अपना

---

1. चर्चा; 2. अप्सरः सदृक् सुन्दरः; 3. वर्णनम्; 4. प्रतिद्वन्द्वी; 5. रहस्यज्ञः; 6. शत्रोर्गोष्ठी; 7. स्वीकृतः; 8. परीक्षा; 9. दृश्यम्; 10. आकाशम्; 11. तिरस्कारः; 12. अन्ततः; 13. ज्ञाता; 14. द्वारपालः; 15. आहताः; 16. लेखनी; 17. रक्तस्रुत्; 18. अकारणम्; 19. मस्तकस्य कलङ्कः; 20. द्वारगतः प्रस्तरः; 21. पैशुन्यम्; 22. समर्थकः, सहमतः; 23. बुद्धिमान्, चतुरः; 24. कला,गुणः; 25. अद्वितीयः; 26. अकारणम् ।

44

तस्याप्सरःसुकान्तेश्चर्चा तद्वर्णनञ्च मम वाचा।
सोऽभूदिह मम शत्रुर्यस्तु ममासीद् रहस्यज्ञः ।। 1 ।।

ईश्वर ! मदिरां स जनः पिबेत् प्रतिद्वन्द्विनः कथं गोष्ठ्याम्।
अद्यैवेह परीक्षा निजाऽभवत् स्वीकृता तस्य ।। 2 ।।

उन्नततरेऽपि शक्यं निर्मातुं दृश्यमन्यदस्माभिः।
अभविष्यद् बत सद्म स्वं वियतः पार्श्ववर्ति यदि ।। 3 ।।

स तिरस्कारं कुर्यान्निवारयामस्तमात्मनो हसितैः।
परिचित एवाधिगतस्तस्य द्वाःस्थस्तथाऽस्माकम् ।।4 ।।

हृत्कष्टं विलिखेयं कियदिह गत्वा प्रदर्शयेयं तम्।
अङ्गुलय आहता मे रुधिरस्रुक् चात्मनः कठिनी ।।5 ।।

गृहदेहलीगता सा व्यर्थं परिवर्तिता शिला भवता।
मम शिरसः प्रणिपातैः संघृष्टा सा स्वयं नश्येत् ।।6 ।।

पैशुन्यं न विदध्यादिति कृत्वैव प्रियस्य निन्दायाम्।
निजपक्षत आनीतो मया स्वकीयः प्रतिद्वन्द्वी ।।7 ।।

चतुरा वयं कुतस्त्याः शिल्पेऽनुपमास्तथाऽऽस्म रे कस्मिन्।
‘ग़ालिब’ विनैव कारणमाकाशो नोऽभवद् वैरी ।।8।।

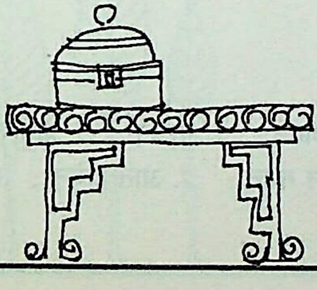

45

सुर्म:-ए-मुफ़्ते नज़र[1] हूँ, मेरी क़ीमत[2] यह है
क़ि रहे चश्मे ख़रीदार[3] प एहसाँ[4] मेरा

रुख़्सते नाल:[5] मुझे दे, कि मबादा[6] ज़ालिम[7]!
तेरे चेहरे से हो ज़ाहिर[8], ग़मे पिन्हाँ[9] मेरा

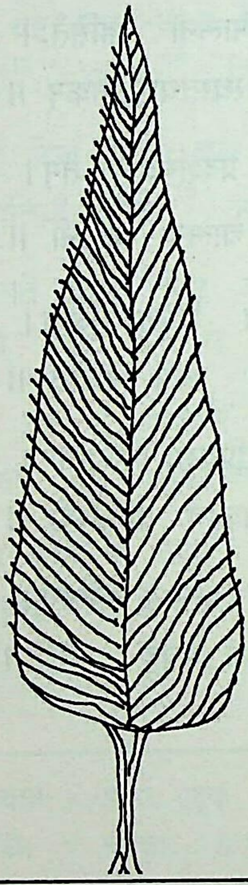

---

1. दृग्भिः मूल्यं विनैव प्राप्यं कज्जलम्; 2. मूल्यम्; 3. क्रेतृणां नेत्राणि; 4. उपकारः; 5. आर्तनादार्थमनुमतिः; 6. न स्यात्; 7. आततायिन् ; 8. प्रकटम्; 9. अन्तर्लीनः शोकः ।

45

मूल्यविरहितं कज्ज्ञलमस्मि दृशो मूल्यमस्ति मे तदिदम्।
स्यादुपकारः कश्चित् क्रेतृणां लोचनेषु मम ।। 1 ।।

अनुमन्यस्व नु मह्यं तदाततायिन् म आर्तनादार्थम्।
न स्याल्लीनः शोकस्त्वदाकृतौ मे व्रजेत् स्फुटताम् ।। 2 ।।

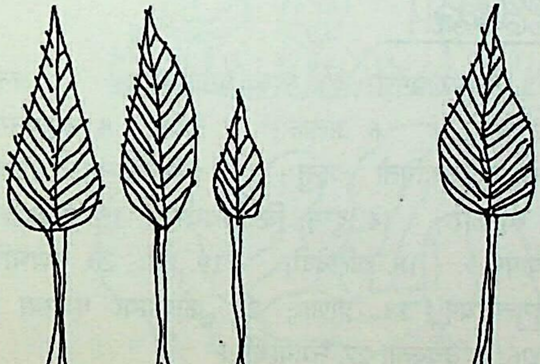

46

ग़ाफिल[1] ब वहमे नाज़[2] खुद आरा[3] है, वर्नः[4] याँ
बेशानः-ए-सबा[5] नहीं तुर्रः[6] गियाह[7] का

बज़्मे क़दह[8] से 'ऐशे तमन्ना[9] न रख, कि रंग
सैदे ज़िदाम जस्तः[10] है, इस दामगाह[11] का

रहमत[12] अगर क़ुबूल[13] करे, क्या ब'अीद[14] है
शर्मिन्दगी[15] से 'अुज़्र[16] न करना गुनाह[17] का

मक़्तल[18] को किस निशात[19] से जाता हूँ मैं, कि है
पुरगुल[20] ख़याले ज़ख़्म[21] से दामन निगाह[22] का

जाँ[23] दर हवा-ए-यक निगहे गर्म[24] है, असद !
परवानः[25] है वकील[26] तेरे दादख़्वाह[27] का

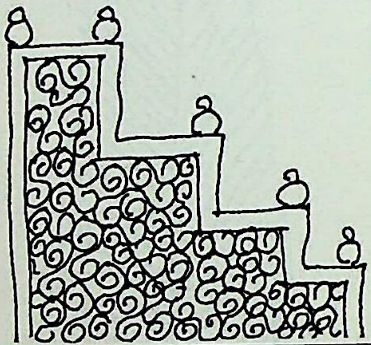

---

1. अनवहितः; 2. गर्वस्य भ्रमेण; 3. स्वस्य प्रसाधनपरः; 4. अन्यथा; 5. प्रभातानिलरूपां कङ्कतिकां विना; 6. अलकः; 7. तृणम्; 8. मधुपानगोष्ठी; 9. कामनाविलासः; 10. जालमुक्तः पलायितो जन्तुः; 11. जालस्थलम्; 12 कृपा, कृपाशील ईश्वरः; 13. स्वीकारः; 14. दूरम्, किमाश्चर्यम्; 15. लज्जाशीलता; 16. क्षमाप्रार्थना; 17. पापम्; 18. बलिवेदी; 19. हर्षः; 20. पुष्पभरितम्; 21. व्रण-कल्पना; 22. दृगुत्तरीयम्; 23. प्राणाः; 24. कोष्णाया एकस्या दृशः आकाङ्क्षायाम्; 25. पतङ्गः; 26. अधिवक्ता; 27. न्यायार्थी ।

46

गर्वभ्रमेण जातोऽनवहित एष प्रसाधकः स्वस्य।
न विनाऽन्यथा प्रभातानिलकङ्कतिकां तृणान्यलकः ।। 1 ।।

सुखभोगान् मधुगोष्ठ्या नापेक्षस्वेह सर्वथा वर्णः ।
जालस्थलतो मुक्तः पलायितो जन्तुरिव कश्चित् ।। 2 ।।

यदि कुर्यात् स्वीकारं कृपा कृपालोस्ततः किमाश्चर्यम्।
त्रपया पापस्य कृते क्षमार्थनायां नु यन्मौनम् ।। 3 ।।

कियता हर्षेणाहं साम्प्रतमेष व्रजामि बलिवेदीम्।
यदिदं दृगुत्तरीयं व्रणभावनपाटलैर्भरितम् ।। 4 ।।

असवः कामयमाना एकामुष्णां दृशं 'ह्यसद' सन्ति।
त्वन्न्यायार्थिन एषोऽस्ति पतङ्गःकश्चि दधिवक्ता ।। 5 ।।

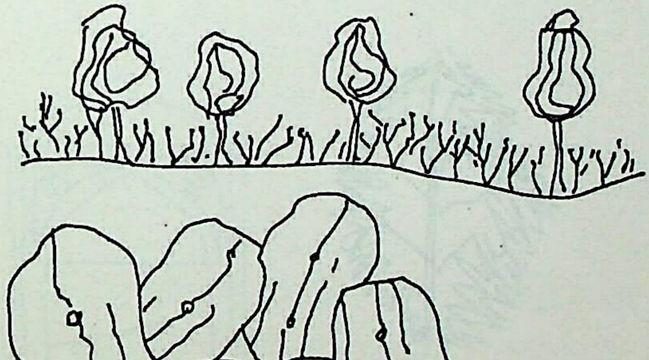

47

जौर[1] से बाज़ आये पर बाज़ आयें क्या
कहते हैं, हम तुझको मुँह दिखलायें क्या

रात दिन, गर्दिश[2] में हैं सात आस्माँ
हो रहेगा कुछ न कुछ, घबरायें क्या

लाग हो, तो उसको हम समझें लगाव
जब न हो कुछ भी तो धोका खायें क्या

हो लिये क्यों नामःबर[3] के साथ साथ
यारब, अपने खत को हम पहुँचायें क्या

मौजे ख़ूँ[4] सर से उतर ही क्यों न जाय
आस्ताने यार[5] से उठ जायें क्या

’अुम्र भर देखा किये, मरने की राह
मर गये पर देखिये, दिखलायें क्या

पूछते हैं वह, कि ग़ालिब कौन है
कोई बतलाओ, कि हम बतलायें क्या

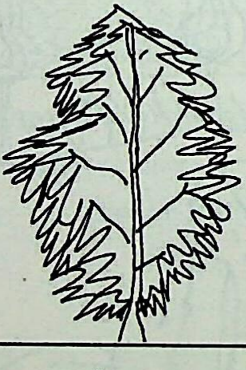

---

1. अत्याचारः; 2. भ्रमिः; 3. पत्रवाहकः; 4. रक्त-लहरी; 5. प्रियस्य गृहदेहली।

47

अत्याचाराद् विरतः परं स किं वस्तुतस्ततो विरतः।
किञ्चाभिदधानोऽस्ति प्रदर्शयेयं मुखं किन्ते ? ॥ 1 ॥

रात्रिन्दिवमाकाशा भ्रमिमन्तः सन्ति हन्त सप्तैते।
यद्वा घटेत तद्वा कथमिव विकला भवेम वयम् ॥ 2 ॥

वैरं यदि तेन स्यादाकर्षणमामनाम वयमेतत्।
न स्याद् यदि चेत् किमपि प्रवञ्चनामनुभवेम किमु ॥ 3 ॥

प्रस्थितवन्तः सार्धं वयमेते पत्रवाहकेन कथम्।
ईश्वर! किमेव पत्रं निजं ततः प्रापयेम वयम् ॥ 4 ॥

शिरसोऽवतरेन्न कथं लहरी रक्तस्य तावदस्माकम्।
वयमित उत्तिष्ठेम प्रियस्य किं गेहदेहल्याः ॥ 5 ॥

यावज्जीवं मृत्युं प्रतीक्षमाणा इतो नु वयमास्म।
मृत्योरनन्तरं स प्रदर्शयेत् किन्नु पश्येम ॥ 6 ॥

'ग़ालिब'नामा कोऽसाविति पृच्छन्नस्ति हन्त सैष जनः ।
अभिदध्यादिह कोऽपि स्वयमभिदध्याम किन्नु वयम् ॥ 7 ॥

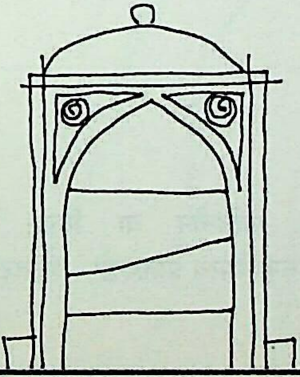

48

लताफ़त[1] बेकसाफ़त[2] जल्वः[3] पैदा कर नहीं सकती
चमन जंगार[4] है आईनः-ए-वादे बहारी[5] का

हरीफ़े जोशिशे दरिया[6] नहीं ख़ुद्दारि-ए साहिल[7]
जहाँ साक़ी हो तू बातिल[8] है दा'वा[9] होशियारी का

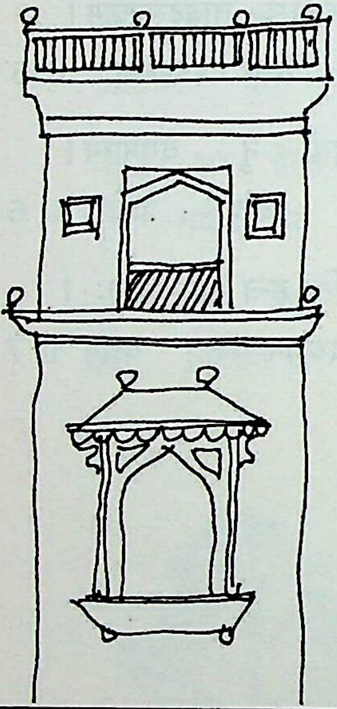

---

1. सूक्ष्मता मृदुत्वं वा; 2. स्थूलतया मालिन्येन वा विना; 3. छविः; 4. विकारः; 5. वासन्तिकवायुदर्पणः; 6. समुद्रवेगस्य प्रतिद्वन्द्वी; 7. तटस्य गर्वः; 8. मिथ्या; 9. ज्ञानित्वाधिकारः।

48

सौक्ष्म्यं स्थौल्येन विना नालं छविमात्मनः प्रदर्शयितुम्।
उद्यानं हि विकारो वासन्तिकपवनमुकुरस्य ।। 1 ।।

गर्वस्तटस्य जलधेर्वेगस्य स्यान्नहि प्रतिद्वन्द्वी।
यत्र त्वं पाययिताऽलं ज्ञानित्वाधिकारेण ।। 2 ।।

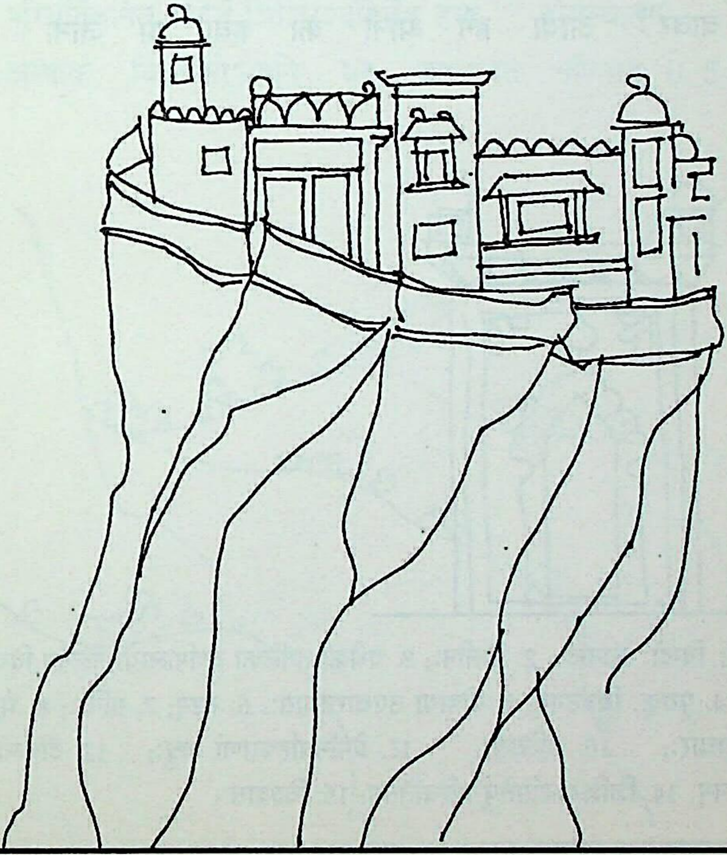

49

’अिश्रते क़तरः[1] है, दरिया में फ़ना[2] हो जाना
दर्द का हद से गुज़रना है दवा हो जाना

तुझसे, क़िस्मत में मेरी, सूरते क़ुफ़्ले अबजद[3]
था लिखा, बात के बनते ही, जुदा[4] हो जाना

दिल हुआ कशमकशे चारः-ए-ज़हमत[5] में तमाम[6]
मिट गया घिसने में इस ’उक़्दे[7] का वा[8] हो जाना

अब जफ़ा[9] से भी हैं महरूम[10] हम, ’अल्लः, अल्लः
इस क़दर दुश्मने अरबाबे वफ़ा[11] हो जाना

ज़ो’फ़[12] से, गिरियः[13] मुबद्दल बदमे सर्द[14] हुआ
बावर[15] आया हमे पानी का हवा हो जाना

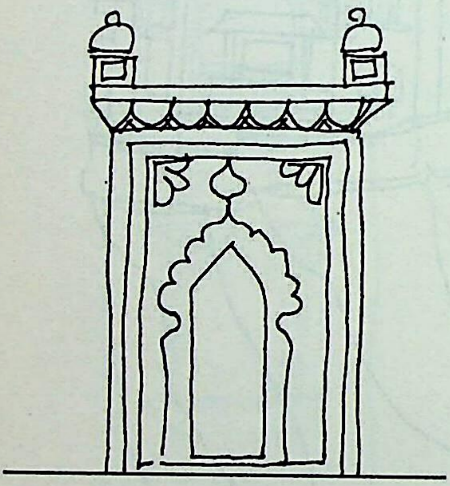

---

1. बिन्दोः आनन्दः; 2. विलीनः; 3. यथैका तालिका वर्णमालाया मेलनेन विघटिता भवति; 4. पृथक्, विघटनम्; 5. पीडाया उपचारप्रयासः; 6. नष्टम्; 7. ग्रन्थिः; 8. भेदनम्; 9. अत्याचारः; 10. वञ्चितः; 11. प्रेमनिर्वाहपराणां शत्रुः; 12. दौर्बल्यम्; 13. रोदनम्; 14. शिशिरश्वसितेषु परिवर्तितम्; 15. विश्वासः;

49

ऐश्वर्यं तद् बिन्दोर्यन्नु महासागरे विलीनत्वम्।
सीमातोऽतिक्रमणं भैषज्यं नाम पीडायाः ॥ 1 ॥

इह तालिकाक्षराणां मेलनवत् त्वत्त एव मे विधिना।
लिखितं हन्त विघटनं सङ्घटनायां नु सिद्धायाम् ॥ 2 ॥

पीडोपचारयत्ने हृदयस्यास्तित्वमेव नष्टमभूत्।
भेदन एव ग्रन्थिः स्वविनाशं प्राप घर्षणतः ॥ 3 ॥

अत्याचारादपि वयमीश्वर ! हा वञ्चिताः स्म एतर्हि।
प्रेम्णो निर्वाहपरैः सममेवं किमपि शत्रुत्वम् ॥ 4 ॥

परिवर्तितमिव रुदितं शिशिरश्वसितेषु हन्त दौर्बल्यात्।
अस्माकं विश्वासोऽजनि यद् बाष्पायते सलिलम् ॥ 5 ॥

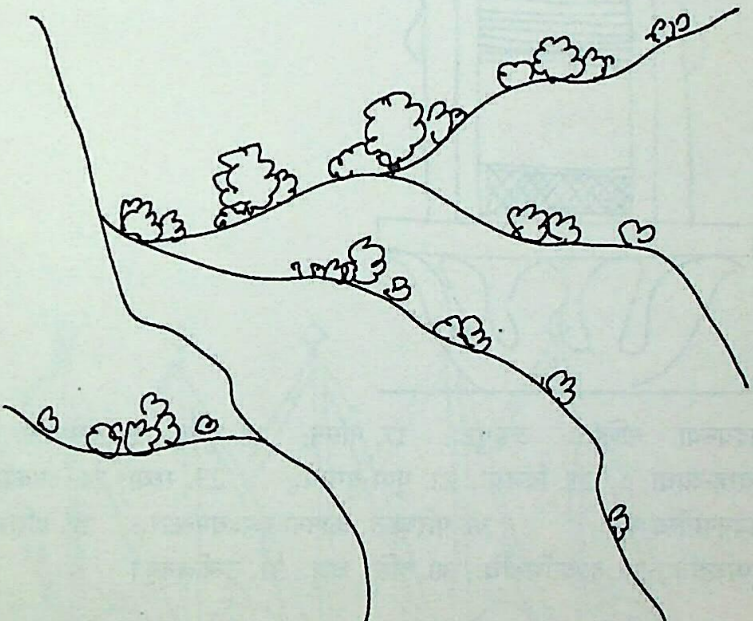

दिल से मिटना तेरी अंगुश्ते हिनाई[16] का ख़याल
हो गया, गोश्त[17] से नाखुन का जुदा[18] हो जाना

है मुझे, अब्रे बहारी[19] का बरस कर खुलना
रोते-रोते ग़मे फ़ुर्क़त[20] में फ़ना[21] हो जाना

गर नहीं नक़्हते गुल[22] को तेरे कूचे[23] की हवस[24]
क्यों है, गर्दे रहे जौलाने सबा[25] हो जाना

ताकि तुझ पर खुले ए'जाज़े हवा-ए-सैक़ल[26]
देख बरसात में सब्ज़[27] आइने का हो जाना

बख़्शे है जल्व:ए-गुल[28] ज़ौक़े तमाशा[29], ग़ालिब
चश्म[30] को चाहिये हर रंग में वा[31] हो जाना

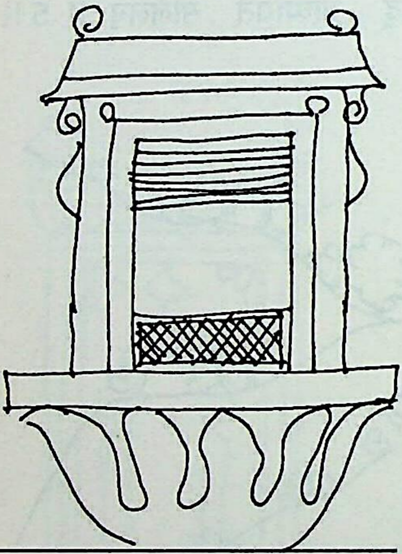

---

[16] मदयन्त्या मण्डितः अङ्गुष्ठः; [17] मांसम्; [18] पृथक्; [19] वसन्तर्तोः मेघः; [20] विरह-व्यथा; [21] विलयः; [22] पुष्प-सुगन्धः; [23] रथ्या; [24] आकाङ्क्षा; [25] पवनमार्गस्य रजः; [26] परिष्कृतेः कामना-रूपश्चमत्कारः; [27] हरितत्वम्; [28] पुष्पच्छविः; [29] दृश्याभिरुचिः; [30] दृष्टिः, चक्षुः; [31] उन्मीलनम्।

तव मदयन्तीमण्डितचरणाङ्गुष्ठस्मृतेर्हृदो विलयः।
मांसादिह सञ्जातं नखस्य पार्थक्यमिव किञ्चित् ॥ 6 ॥

वारिद इह वासन्तो यथाऽऽशु संयाति विलयमभिवृष्य।
रोदनशीलो विरहव्यथिते पश्यामि लयमेति ॥ 7 ॥

त्वद्रथ्याकाङ्क्षां यदि पुष्पसुगन्धो बिभर्ति नैवैषः।
कथमध्वनो रजस्त्वं सञ्चरणाद् याति पवनस्य ॥ 8 ॥

येन त्वयि स्फुटः स्यात् परिष्कृतेः कामनाचमत्कारः।
लौहादर्शस्य त्वं हरितत्वं पश्य वर्षासु ॥ 9 ॥

दृश्याकलनाकाङ्क्षा जनयति सौन्दर्यमत्र पुष्पाणाम्।
उन्मीलितया भाव्यं प्रत्येकं वर्णतो दृष्ट्या ॥ 10 ॥

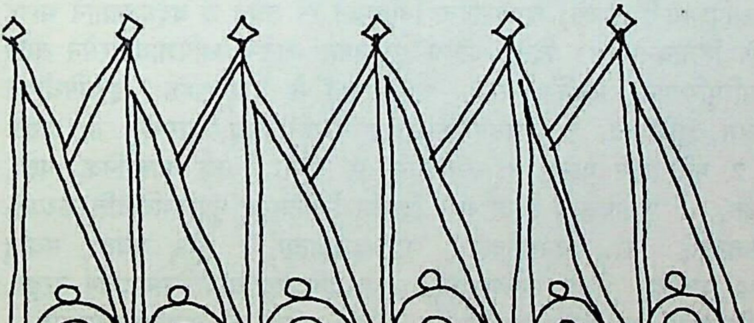

50

फिर हुआ वक़्त, कि हो बाल कुशा[1] मौजे शराब[2]
दे बते मै[3] को दिल-ओ-दस्ते शना[4] मौजे शराब

पूछ मत वज्हे सियह मस्ति-ए-अरबावे चमन[5]
सायः-ए-ताक[6] में होती है हवा, मौजे शराब

जो हुआ ग़र्क़ः-ए-मै[7] बख़्ते रसा[8] रखता है
सर से गुज़रे प भी, है बाले हुमा[9], मौजे शराब

है यह बरसात वह मौसम, कि 'अजब क्या है, अगर
मौजे हस्ती[10] को करे फ़ैज़े हवा[11], मौजे शराब

चार मौज उठती है तूफ़ाने तरब[12] से हर सू[13]
मौजे गुल[14], मौजे शफ़क़[15], मौजे सबा, मौजे शराब[16]

जिस कदर रूहे नबाती[17] है जिगर तश्नः-ए-नाज़[18]
दे है तस्कीं[19] ब दमे आबे बक़ा[20] मौजे शराब

---

1. विततपक्षतिः; 2. मदिरातरङ्गः; 3. मदिरा-हंसः (हंसी) 'वतखपदवाच्यः, प्राचीने ईराने कापिशायनस्य (मधुनः) निर्माणप्रकारः अयमासीद् यत्कस्मिंश्चिद् बृहत्यात्रे (गर्तरूपे) कापिशायनी (द्राक्षा) चरणैमर्दिता निक्षिप्यते स्म तत्रैव च वद्धमुखानि भाण्ड सुराहीपत्राणि निधीयन्ते स्म। दिनेषु यातेषु सूर्यातपतः स्रुतेन कापिशायनीरसेन तानि पात्राणि परिपूरितानि भवन्ति स्म। एवं 'वते मै' (मदिराहंसः) इत्यमिधीयते स्म; 4. साहसं शक्तिश्च; 5. उपवनगतवृक्षाणां मदातिरेकस्य कारणम्; 6. द्राक्षालताछाया; 7. मदिरापाने मग्नः; 8. सौभाग्यम्; 9. 'हुमा' एक काल्पनिकः पक्षी, तस्य पक्षः, "हुमापक्षस्य छाया यस्य शिरसि निपतेत् स नृपतिर्भवेदिति कथ्यते; 10. जीवन-तरङ्गः; 11. पवनस्यौदार्यम्; 12. हर्षवात्या; 13. सर्वतः, सर्वासु दिक्षु; 14. पुष्पस्य; 15. अरुणोदस्य; 16. प्राथमिकस्य वायौदिरायाश्चर्म तरङ्गाः; 17. वनस्पतीनामात्मा; 18. रूपगवस्य पिपासुः; 19. तृप्तिः; 20. अमृतास्वादावसरे;

50

पुनरायातः कालो मदिरोर्मिर्विततपक्षतिः स्याद् यत्।
मदिराहंस्यै तर्तुं शक्त्युत्साहावयं दद्यात् ।। 1 ।।

उपवनवतां द्रुमाणां मदातिरेकस्य पृच्छ मा हेतुम्।
अधिमृद्वीकालतिकाछायं मदिरोर्मिरनिलोऽभूत् ।। 2 ।।

य इतो मदिरामग्नः सौभाग्यं वस्तुतो बिभर्ति नु सः।
शिरसि गता मदिरोर्मिः शुभा 'हुमा' पक्षतिच्छाया ।। 3 ।।

वर्षतुः स हि कालो यदि कुर्याच्चेदितः किमाश्चर्यम्।
पवनौदार्यं जीवनतरङ्गमदिरातरङ्गैक्यम् ।। 4 ।।
मुद्वात्ययोदयन्ते चत्वारः सर्वतस्तरङ्गा नु।
अरुणोदय-प्रसून-प्राभातिकवातमदिराणाम् ।। 5 ।।
सुविकासमदपिपासुर्वनस्पतीनां यथा भवत्यात्मा।
अमृतास्वादे तृप्तिं तथोपहरतीह मदिरोर्मिः ।। 6 ।।

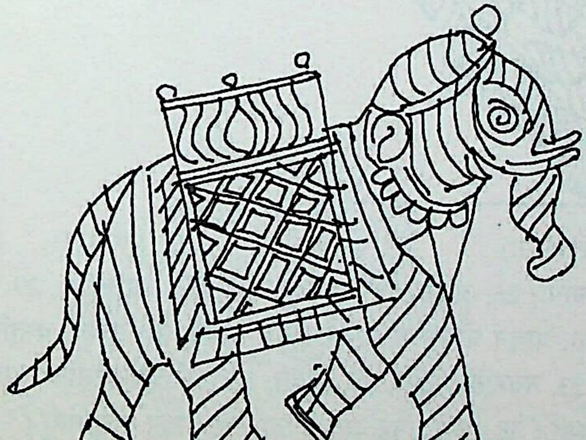

बसकि दौड़े है रगे ताक़[21] मैं ख़ूँ हो हो कर
शह्परे रंग[22] से है बाल कुशा, मौजे शराब

मौजः-ए-गुल[23] से चराग़ाँ[24] है, गुज़रगाहे ख़याल[25]
है तसव्वुर[26] में ज़िबस[27] जल्वःनुमा[28] मौजे शराब

नशे के पर्दे में है, मह्वे तमाशा-ए-दिमाग़[29]
बसकि रखती है सरे नश्व-ओ-नुमा[30] मौजे शराब

एक आलम[31] प है तूफ़ानि-ए-कैफ़ीयते फ़स्ल[32]
मौजः-ए-सब्जः-ए-नौख़ेज़[33] से ता[34] मौजे शराब

शर्हे हंगामः-ए-हस्ती[35] है, ज़िहे[36] मौसमे गुल[37]
रहबरे क़तरः बदरिया[38] है, ख़ुशा[39] मौजे शराब

होश उड़ते हैं मेरे, जल्वः-ए-गुल देख असद !
फिर हुआ वक़्त, कि हो बाल कुशा मौजे शराब

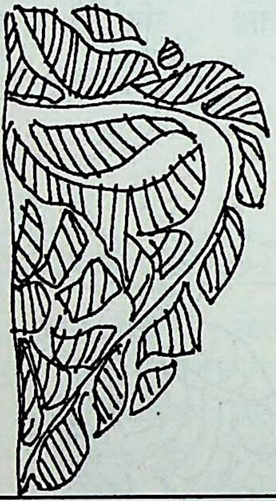

---

[21] द्राक्षालताशिराः; [22] वर्णपक्षतिः; [23] पुष्पतरङ्गः; [24] दीप-दीप्तः; [25] कल्पना-मार्गः; [26] अनुध्यानम्; [27] अत्यर्थम्; [28] प्रकाशमानः; [29] लीलासु निलीनं मस्तिष्कम्; [30] पालनं पोषणञ्च सम्भरणमिति यावत्; [31] प्रत्येकं वस्तुनि; [32] ऋतोर्मत्तोल्लासः; [33] नवहरितिमोर्मिः; [34] यावत्; [35] अस्तित्वोल्लासस्य व्याख्या; [36] बाढ साधु; [37] पुष्पर्तुः; [38] बिन्दुं समुद्रं यावत् नेता; [39] बाढम् साधु साधु।

द्राक्षालताशिरासु प्रवहति भूयोऽधिगत्य रक्तत्वम् ।
पक्षतिरिव वर्णस्य प्रसरति मदिरोर्मिराकीर्णा ॥ 7 ॥

पुष्पतरङ्गेण यथा प्रदीपिता काऽपि कल्पनापदवी ।
साऽनुध्यानेऽत्यर्थं प्रकाशते काऽपि मदिरोर्मिः ॥ 8 ॥

लीलायां मस्तिष्कं निलीनमाभात्यदो मदावरणे ।
मदिरोर्मिः सञ्जायत आतन्वानेव सम्भरणम् ॥ 9 ॥

मधुमासे प्रत्येकं वस्तुन्युल्लास एक आभाति ।
आरभ्य नवहरितिमोर्मिं यावत् किञ्च मदिरोर्मिम् ॥ 10 ॥

अस्तित्वोल्लासस्य व्याख्या वाढं यदस्ति पुष्पर्तुः ।
वाढं महासमुद्रं विन्दुं नेत्रीव मदिरोर्मिः ॥ 11 ॥

पुष्पच्छविमवलोक्या‘सद !’ मे चैतन्यमस्ति लीनमिव ।
पुनरायातः कालो मदिरोर्मिस्तत् स्फुटत्वमियात् ॥ 12 ॥

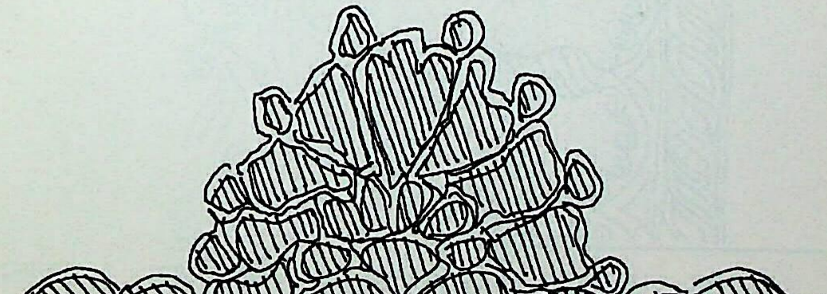

51

अफ़सोस, कि दन्दाँ[1] का किया रिज़्क़[2] फ़लक[3] ने
जिन लोगों की थी, दरख़ुरे 'अिक़्दे गुहर[4], अंगुश्त[5]

काफ़ी है निशानी तेरी, छल्ले का न देना
ख़ाली मुझे दिखला के, ब वक्ते सफर[6], अंगुश्त

लिखता हूँ, असद, सोज़िशे दिल[7] से, सुख़ने गर्म[8]
ता[9] रख न सके कोई मेरे हर्फ़[10] पर अंगुश्त

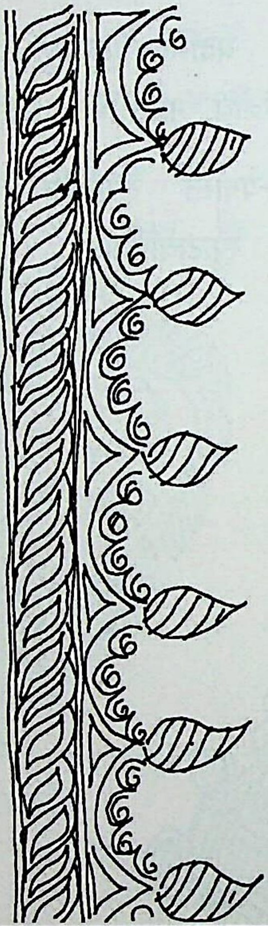

---

1. दन्ताः; 2. भक्ष्यम्; 3. गगनम्, भाग्यम्; 4. मुक्तोर्मिकोचिताः; 5. अङ्गुल्यः; 6. यात्रासमये; 7. हृत्तापः; 8. तप्ता कविता; 9. येन; 10. अक्षरम् ।

51

गगनं तानपि भक्ष्यान् दन्तानां संव्यधादहो कष्टम्।
मुक्तोर्मिकोचिताः खलु येषामभवन्निहाङ्गुल्यः ।। 1 ।।

त्वत्स्मारकमेतावत् पर्याप्तं, नोर्मिका त्वयोपहृता।
यात्रावसरे रिक्तः प्रदर्शितो यन्निजाङ्गुष्ठः ।। 2 ।।

हृत्तापतप्त'मसद' स्वीयं विलिखामि काव्यमहमेषः।
येनाक्षरे मदीये न न्यस्येदङ्गुलीं कश्चित् ।। 3 ।।

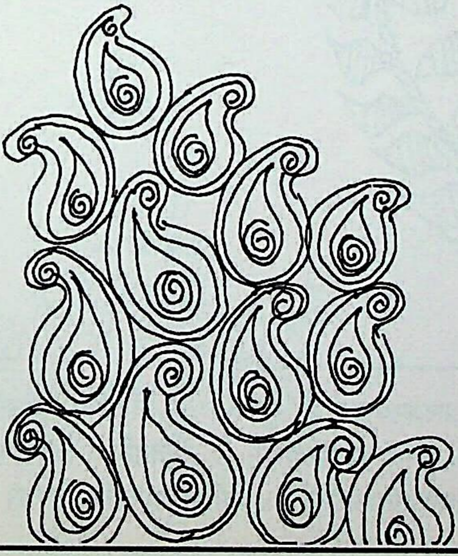

52

रहा गर कोई ता क़यामत,[1] सलामत[2]
फिर इक रोज़ मरना है, हज़रत[3] सलामत

जिगर को मेरे ’अिश्क़े ख़ूँनाबः[4] मशरब[5]
लिखे है ख़ुदावन्दे ने’मत[6] सलामत

’अलर्रग़्मे दुश्मन[7], शहीदे वफ़ा[8] हूँ
मुबारक मुबारक, सलामत सलामत

नहीं गर सर-ओ-बर्गे इदराके मा’नी[9]
तमाशः-ए-नैरंगे सूरत[10], सलामत

---

1. आ प्रलयात्, प्रलयपर्यन्तम्; 2. सुरक्षितः; 3. महाशय, श्रीमन्; 4. रक्तपान-प्रवृत्ति प्रेम; 5. उपायः; 6. ईश्वरस्य वरदानम्; 7. प्रतिद्वद्विनो विरुद्धम्; 8. प्रेमनिर्वाहे हुतात्मतां प्राप्तः; 9. सृष्टितत्त्वज्ञानसामर्थ्यम्; 10. वर्णवैचित्र्यमयमिन्द्रजालम्।

52

यद्यप्याप्रलयादिह तिष्ठेत् कश्चित् सुरक्षितो जगति।
दिन एकस्मिन् भविता तथापि तस्य ध्रुवो मृत्युः ।। 1 ।।

यत्प्रेम रक्तपानप्रवृत्ति सम्बोधयत्यदो यदये।
यकृदीश्वरोऽन्नदाताऽसि त्वं लोके चिरञ्जीव ।। 2 ।।

द्विषदाशाप्रतिकूलो निर्वहिऽहं हुतात्मतां प्राप्तः।
वर्धापनाऽस्ति मह्यं यदेष जातोऽहममरोऽस्मि ।। 3 ।।

सृष्टिरहस्यावगतेरास्तां कामं न हन्त सामर्थ्यम्।
लीलामयस्य ताः खलु सुरूपलीला जयन्तीह ।। 4 ।।

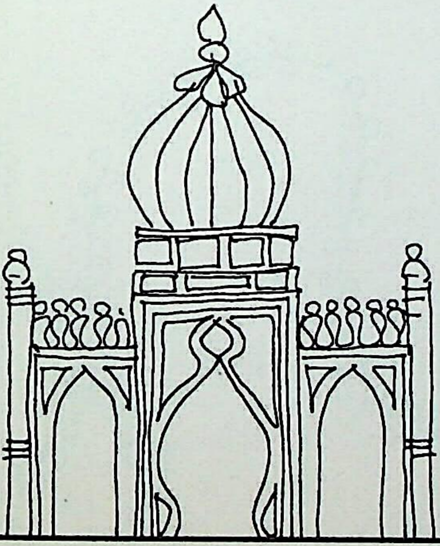

53

मुँद गईं, खोलते ही खोलते आँखें, ग़ालिब
यार लाये मेरी बालीं[1] प उसे, पर किस वक़्त

---

[1] शिरोधानम्।

53

'ग़ालिब' स शिरोधाने मित्रैरानीत आः ! परन्तु कदा।
उन्मीलती सती मे नयने विनिमीलिते जाते ॥ 1 ॥

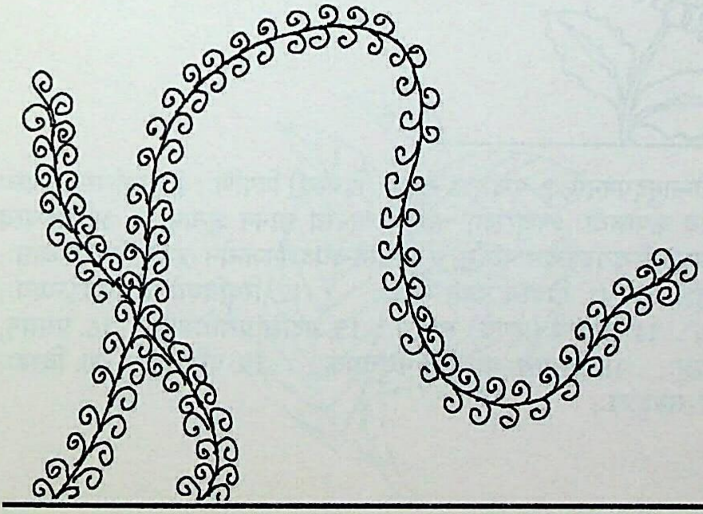

54

आमदे ख़त[1] से हुआ है सर्द[2] जो, बाज़ारे दोस्त[3]
दूदे शम’-ए-कुश्तः[4] था, शायद ख़ते रुख़सारे दोस्त[5]

अय दिले ना’आक़िबत अन्देश[6] ज़ब्ते शौक़[7] कर
कौन ला सकता है ताबे जल्वः-ए-दीदारे दोस्त[8]

ख़ानः वीराँ साज़ि-ए-हैरत[9] तमाशा कीजिये
सूरते नक़्शे क़दम[10], हूँ रफ़्तः-ए-रफ़्तारे दोस्त[11]

’अिश्क़ में, बेदादे रश्के ग़ैर[12] ने मारा मुझे
कुश्तः-ए-दुश्मन[13] हूँ आख़िर, गरचेः था बीमारे दोस्त[14]

चश्मे मा रौशन[15], कि उस बेदर्द का दिल शाद है[16]
दीदः-ए-पुरख़ूँ[17] हमारा, साग़रे सरशारे दोस्त[18]

ग़ैर, यूँ करता है मेरी पुरसिश[19], उसके हिज्र[20] में
बे तकल्लुफ़[21] दोस्त हो जैसे कोई ग़मख़्वारे दोस्त[22]

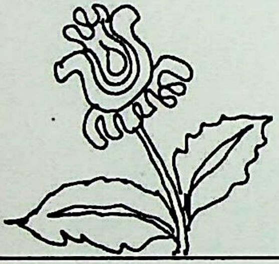

---

1. मुखलोम्नामुद्गमनम्; 2. मन्दः; 3. सुहृदः (प्रियस्य) विपणिः; 4. निर्वाणस्य दीपस्य धूमः; 5. प्रियस्य कपोलयोः श्मश्रुरेखा; 6. परिणामस्य ज्ञानेन शून्यम्; 7. अभिलाषस्य संवरणम्; 8. प्रियस्य सौन्दर्यद्रष्टृत्वसामर्थ्यम्; 9. प्रियसौन्दर्यदर्शनजन्येन आश्चर्येण गृहध्वंसः; 10. पदचिह्नसदृशः; 11. प्रियस्य गत्या मूर्छितः; 12. रिपुविषयेर्ष्याजन्योऽन्यायः; 13. रिपुणा हतः; 14. प्रियस्य (प्रणये) रुग्णः; 15. मदक्षि प्ररोचिष्णु; 16. प्रसन्नम्; 17. रुधिरपूर्णं चक्षुः; 18. प्रियस्यः परिपूर्णो मधुचषकः; 19. परिपृच्छा; 20. विरहः; 21. अन्तरङ्गः;22. समदुःखः;

54

मुखलोम्नामुद्गमनान्मन्दीभूतेव यत्सुहृद्विपणी।
निर्वाणदीपधूमः प्रियगण्डश्मश्रुरेखा स्यात् ॥ 1 ॥

संवृणु निजमभिलाषं परिणामज्ञानशून्यहृदय ! त्वम्।
प्रियसौन्दर्यं कः स्याद् द्रष्टुं सामर्थ्यवानत्र ॥ 2 ॥

प्रियदर्शनसञ्जाताश्चर्यगृहध्वंसदृश्यमाकलय ।
तद्गमने मूर्च्छित इह वर्तेऽहं चरणचिह्नमिव ॥ 3 ॥

प्रणये रिपुविषयेर्ष्याजन्यान्यायेन हा हतो वर्ते।
रिपुणाऽन्ततो हतोऽहं रुग्णः प्रणये यदप्यासम् ॥ 4 ॥

तस्याकरुणस्य मनः प्रसन्नमित्यक्षि नः प्ररोचिष्णु।
अक्षि रुधिरपूर्णं नः प्रियस्य चषकोऽस्ति मधुपूर्णः ॥ 5 ॥

तस्य वियोगे कुरुते परिपृच्छां मे तथा प्रतिद्वन्द्वी।
समदुःखो जगति स्याद् यथाऽन्तरङ्गः सुहृत् कश्चित् ॥ 6 ॥

ताकि मैं जानूँ, कि है इसकी रसाई[23] वाँ तलक
मुझको देता है, पयामे वा'दः-ए-दीदारे दोस्त[24]

जबकि मैं करता हूँ अपना शिकवः-ए-जो'फ़े दिमाग़[25]
सर करे है[26] वह, हदीसे ज़ुल्फ़े अंबर बारे दोस्त[27]

चुपके चुपके मुझको रोते देख पाता है, अगर
हँस के करता है बयाने शोख़ि-ए-गुफ़्तारे दोस्त[28]

मेह्रबानीहा-ए-दुश्मन[29] की शिकायत कीजिये
या बयाँ कीजे, सिपासे लज़्ज़ते आज़ारे दोस्त[30]

यह ग़ज़ल अपनी मुझे जी से पसंद आती है आप
है रदीफ़े शे'र में, ग़ालिब ज़िबस तकरारे दोस्त[32]

◆

---

23. प्रवेशः, गतिः; 24. प्रियेण प्रतिश्रुतस्य दर्शनदानस्य प्रतिश्रुतिसन्देशः; 25. मस्तिष्कदौर्बल्यस्योपालम्भः; 26. आरभते; 27. प्रियस्य सुरभिकचविषयं प्रवचनम्; 28. प्रियस्य चञ्चलवार्तालापवर्णनम्; 29. शत्रोरनुग्रहाः; 30. प्रियेण दत्तानां विपदामानन्दस्य प्रशंसा; 31. अन्त्यानुप्रासः;32. प्रिय इति भूयोभूयः ।

तस्याहं जानीयां ततः प्रवेशोऽस्त्यवारितद्वारम्।
यद्दर्शनं प्रियेण प्रतिश्रुतं तत् स सन्दिशति ॥ 7 ॥

निजमस्तिष्कस्याहं दौर्वल्यं द्रागुपालभे यावत्।
सुहृदः सुगन्ध्यलकगां वार्तां तावत्स आरभते ॥ 8 ॥

प्रच्छन्नं स रुदन्तं द्रष्टुं मां शक्नुयादितो यदि चेत्।
वर्णयति प्रियचञ्चलवार्तालापं विहस्य ततः ॥ 9 ॥

निन्दा क्रियतां शत्रोरनुग्रहाणामितोऽथवा क्रियताम्।
प्रियदत्तानां विपदामानन्दस्य प्रशस्तिमितः ॥ 10 ॥
हृदयाय रोचते मे ग़ालिब सैषा भृशं गज़लगीतिः।।
प्रिय इति भूयो यस्यामन्त्यानुप्रासतो नद्धः ॥ 11 ॥

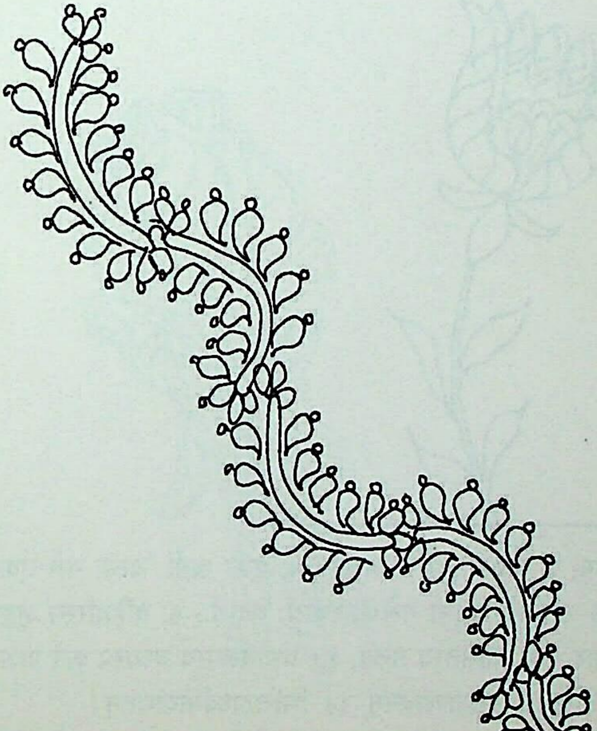

55

गुलशन[1] में बन्द-ओ-बस्त[2] बरंगे दिगर[3], है आज
क़ुमरी[4] का तौक़[5] हल्क़:-ए-बेरूने दर[6], है आज

आता है एक पार:-ए-दिल[7] हर फ़ुग़ाँ[8] के साथ
तारे नफ़स[9], कमन्दे शिकारे असर[10], है आज

अय 'आफ़ियत[11], किनार: कर[12], अय इन्तिज़ाम, चल
सैलाबे गिरिय:[13] दर पै-ए-दीवार-ओ-दर[14], है आज

---

1. उद्यानम्; 2. प्रबन्धः; 3. भिन्नरूपः; 4. एका खगी, यस्या गले एका श्यामवर्णा माला भवति; 5. आयसो वर्तुलो गले धारणीयः पदार्थः; 6. बहिर्द्वारस्य शृङ्खला; 7. हृत्खण्डः; 8. आर्तनादः; 9. श्वसितस्य तन्त्री; 10. प्रभावरूपस्य वध्यस्य कृते पाशः; 11. कुशलत्वम्; 12. दूरे तिष्ठ; 13. रुदितप्लावनम्; 14. भित्तिद्वार्ध्वंसायोद्यतम् ।

55

कश्चन भिन्न इवैष प्रतिभात्यद्य प्रबन्ध उद्याने।
प्राप्ता 'कुमरी'कण्ठस्रगर्गलात्वं बहिर्द्वारः ।। 1 ।।

प्रत्येकं निर्गच्छति सहार्तनादेन हन्त हृत्खण्डः।
तन्त्री श्वसितस्येयं प्रभाववध्यस्य पाशोऽद्य ।। 2 ।।

कुशलत्व ! तिष्ठ दूरे, प्रबन्ध ! कुत्रापि रे प्रतिष्ठस्व।
भित्तिद्वार्ध्वंसार्थं मद्रुदितप्लावनं नद्धम् ।। 3 ।।

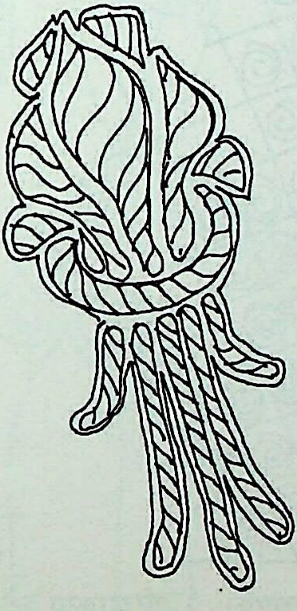

56

लो हम मरीज़े 'अिश्क़[1] के तीमारदार[2] हैं
अच्छा अगर न हो, तो मसीहा का क्या 'अिलाज[3]

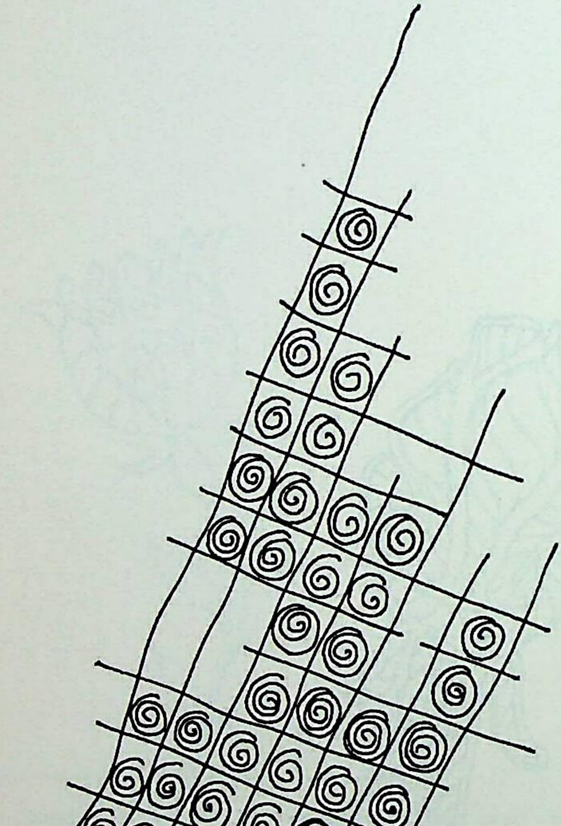

---

1. प्रेमरोगरुग्णः; 2. परिचारकाः; 3. परिचारकस्य कृते को दण्ड इत्यर्थः।

56

परिचारका वयं स्मः कस्यापि प्रेमरोगरुग्णस्य।
यदि न स्यान्नीरोगः किन्नु 'मसीहस्य' भैषज्यम् ॥ 1 ॥

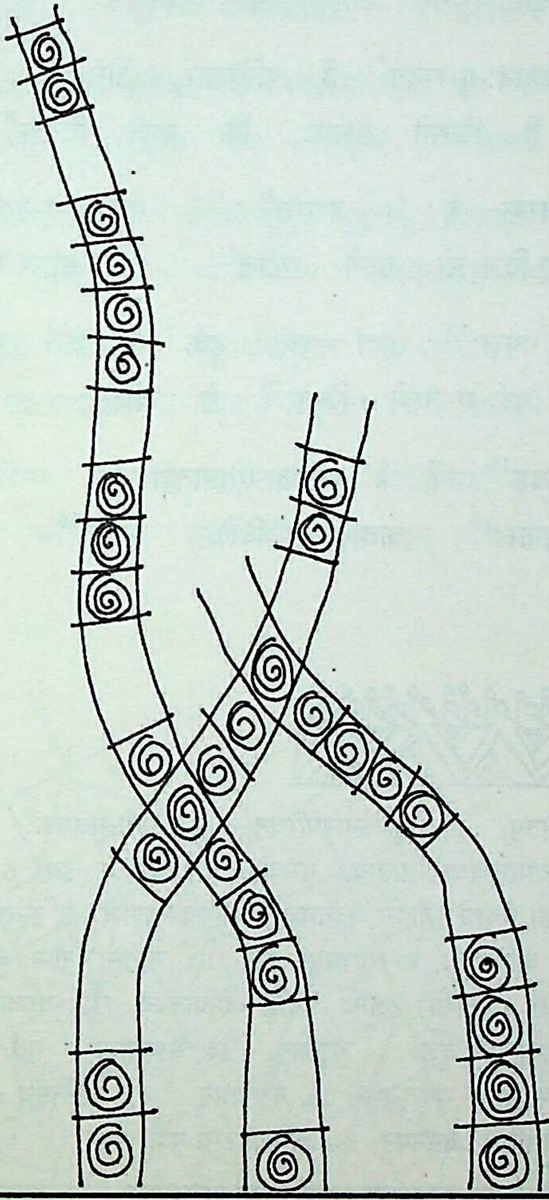

57

नफ़स[1] न अंजुमने आरज़ू[2] से बाहर खेंच
अगर शराब नहीं, इन्तिज़ारे साग़र[3] खेंच

कमाले गर्मि-ए-स’अि-ए-तलाशे दीद[4] न पूछ
बरंगे ख़ार[5] मेरे आइने से जौहर[6] खेंच

तुझे बहानः-ए-राहत[7] है इन्तिज़ार, अय दिल
किया है किसने इशारः, कि नाज़े बिस्तर[8] खेंच

तेरी तरफ़ है ब हसरत[9] नज़ारः-ए-नरगिस[10]
बकोरि-ए-दिल-ओ चश्मे रक़ीब[11], साग़र खेंच[12]

बनीम ग़मज़ः[13] अदा कर, हक़े बदी’अते नाज़[14]
नियामे पर्दः-ए-ज़ख़्मे जिगर[15] से ख़ंजर खेंच

मेरे क़दह[16] में है सहबा-ए-आतशे पिन्हाँ[17]
बरू-ए-सफरः[18] कबाबे दिले समंदर[19] खेंच

---

1. श्वसितम्; 2. अभिलाषपरिषत्; 3. प्रतीक्षाचषकः; 4. प्रियस्य दर्शनार्थमन्वेषणप्रयासविषया उग्रतायाः पराकाष्ठा; 5. कण्टक इव; 6. ताम्रदर्पणस्य सम्मार्जनेन या रेखा सैवात्र 'जौहर' पदवाच्या; 7. विश्रामव्याजः; 8. संस्तरकं समाकर्ष, संस्तरके विश्रामं कुर्वित्यर्थः; 9. लालसया समम्; 10. 'नर्गिसः' नाम्नः कुसुमस्य दृष्टिः; 11. रिपोः ('नर्गिस' कुसुमस्य) अन्धं हृदक्षि चेत्यालक्ष्य; 12. चषकमुत्थापयेत्यर्थः; 13. अर्धोन्मीलिताया दृशः सङ्केतात्; 14. समग्रतया गर्वं कुर्वित्यर्थः; 15. तरवार्यावरणसदृशो यकृद्व्रणः; 16. मधुपात्रम्; 17. अग्निमधु अन्तर्निहितम्; 18. भोजनार्थं प्रसारितं वसनमनु; 19. अग्निकीटस्य पक्वं हृत्।

57

अभिलाषपरिषदो बहिराकर्ष क्षणमपीह न श्वसितम्।
आकर्ष रे प्रतीक्षाचषकं यदि नास्ति मदिरा चेत् ॥ 1 ॥

मा पृच्छ दर्शनान्वेषणप्रयत्नोग्रतापराकाष्ठाम्।
मद्दर्पणतो रेखां कण्टकमिव रे समाकर्ष ॥ 2 ॥

अयि हृदय ! या प्रतीक्षा विश्रामव्याज एव तव सैषा।
केन कृतः सङ्केतो यत् संस्तरकं समाकर्ष ॥ 3 ॥

आतन्वानं त्वाम्प्रति 'नर्गिस'कुसुमं दृशं नु साकाङ्क्षाम्।
अन्धं हृदक्षि च रिपोस्तस्य ततश्चषकमाकर्ष ॥ 4 ॥

प्रकटीकुरु स्वगर्वं दृगर्धसङ्केततः समग्रं रे।
अर्धं स्व-हावखड्गं यकृद्व्रणावृतित आकर्ष ॥ 5 ॥

भरितं मम मधुपात्रेऽन्तर्हितमस्तीह किञ्चिदग्निमधु।
आकर्ष भोजनार्थं तदग्निकीटस्य हृत् पक्वम् ॥ 6 ॥

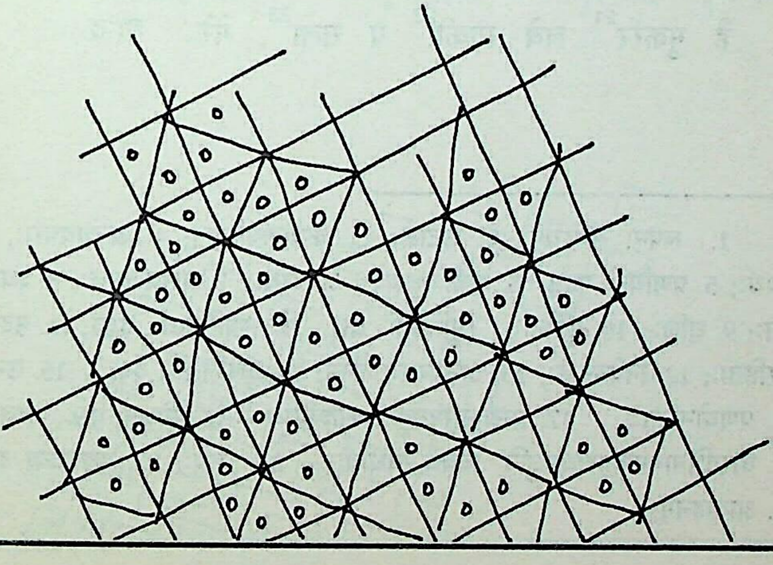

58

हुस्न[1], ग़मज़े[2] की कशाकश[3] से छुटा, मेरे बा'द
बारे, आराम से हैं अहले जफ़ा[4], मेरे बा'द

मन्सबे शेफ़्तगी[5] के कोई क़ाबिल न रहा
हुई मा'ज़ूलि-ए-अंदाज़-ओ-अदा[6] मेरे, बा'द

शम'अ बुझती है, तो उसमें से धुआँ उठता है
शो'लः-ए-'अिश्क़[7] सियह पोश[8] हुआ, मेरे बा'द

ख़ूँ है दिल ख़ाक[9] में, अह्वाले बुताँ[10] पर, या'नी
इनके नाख़ुन हुए मुह्ताजे हिना[11], मेरे बा'द

दरख़ुरे 'अर्ज़[12] नहीं, जौहरे बेदाद[13] को, जा
निगहे नाज़[14] है सुर्मे से ख़फ़ा, मेरे बा'द

है जुनूँ[15], अहले जुनूँ[16] के लिए आग़ोशे विदा'अ[17]
चाक[18] होता है गरीबाँ[19] से जुदा, मेरे बा'द

कौन होता है हरीफ़े मै-ए-मर्द अफ़गने 'अिश्क़[20]
है मुकर्रर[21] लबे साक़ी[22] प सला[23], मेरे बा'द

---

1. रूपम्, सौन्दर्यम्; 2. कटाक्षः; 3. कर्षाकर्षाम्याम्; 4. अन्यायपराः, प्रिया इत्यर्थः; 5. प्रणयिनः पदम्; 6. हावा भावाश्च अपदस्थाः; 7. प्रणयज्वालः; 8. श्यामायमानः; 9. धूलिः; 10. मूर्तीनां (मूर्तिमतां वा) प्रियाणामित्यर्थः, दशा; 11. मदयन्त्या विरहिताः; 12. निवेदनार्हः; 13. अन्यायस्य रत्नम्; 14. दुर्ललितस्य दृक् 15. उन्मादः; 16. प्रणयोन्मक्तः; 17. प्रस्थानसमयकृत आश्लेषः; 18. छिन्नम्; 19. गलवसनम्; 20. वीराभिमानमर्दिप्रणयमधुनि विषये स्पर्धावान्; 21. भूयः; 22. मधुदात्र्या अधरः; 23. आवाहनम्;

58

मदनन्तरं सु-रूपं भ्रूभङ्गाकर्षकर्षतो मुक्तम्।
विश्रान्तेर्मदनन्तरमन्यायपराः निमीलन्ति ॥ 1 ॥

प्रणयि-पदस्य न कश्चिद् वर्तत इह भाजनं जनो जगति।
मदनन्तरमपदस्था हावा भावाश्च सञ्जाताः ॥ 2 ॥

निर्वाणत्वं दीपात् समाप्नुवानादुदेति धूमततिः ।
अजनि प्रेमाग्निशिखा मदनन्तरमेव कृष्णाभा ॥ 3 ॥

मम हृदयं मृदि भिन्नं मूर्तिमतां दुःस्थितीः समालक्ष्य।
मदयन्त्या मदनन्तरमिति यत् तेषां नखा रहिताः ॥ 4 ॥

अन्याये स्वार्पणमिति निवेदनार्हो गुणो न तावदिह।
मदनन्तरं प्रकुपिता दृग् दुर्ललितस्य कज्जलके ॥ 5 ॥

प्रणयोन्मत्तेभ्योऽस्ति प्रस्थानाश्लेष एष उन्मादः।
छिन्नान्मदनन्तरमिह विच्छेदो भवति गलवसनात् ॥ 6 ॥

वीराभिमानमर्दिनि कः प्रणये मधुनि भवति सस्पर्धः।
मदनन्तरमावाहनमधरे भूयोऽस्ति मधुदात्र्याः ॥ 7 ॥

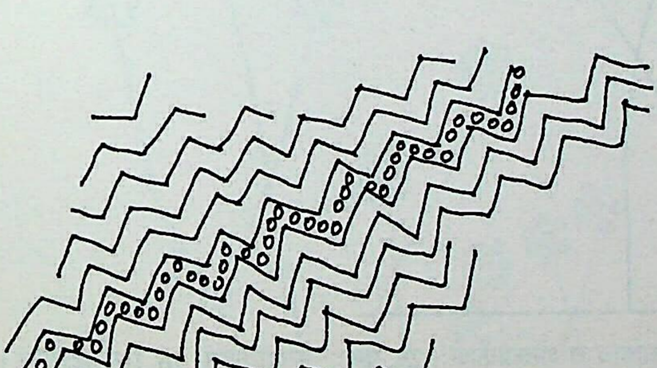

ग़म से मरता हूँ, कि इतना नहीं दुनिया में कोई
कि करे ता'ज़ियते मेहर-ओ-वफ़ा[24] मेरे बा'द

आए है बेकसि-ए-'अिश्क़[25] प रोना, ग़ालिब
किसके घर जाएगा सैलाबे बला[26], मेरे बा'द

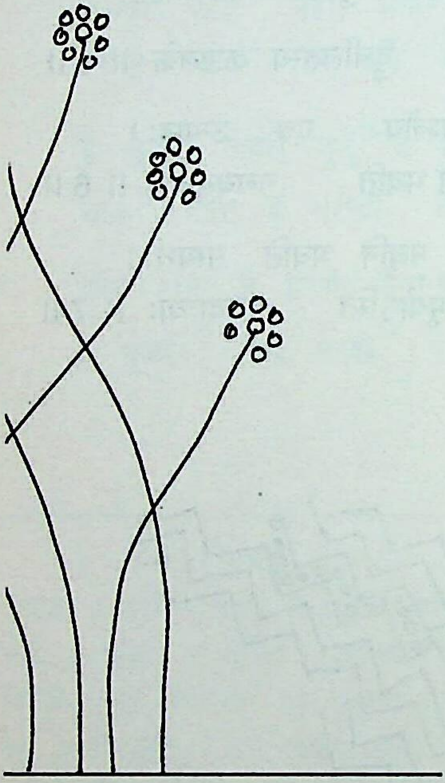

---

[24] प्रेम्णे निर्वाहाय च शोकप्रकाशः; [25] प्रेम्णः असहायत्वम्; [26] विपत्प्लावनम्।

एष प्रिये नु शोकाद् यदिह जगत्यस्ति कोऽपि नैतावान्।
प्रेम्णे निर्वाहाय च मदनन्तरमेत्य शोचेत ॥ 8॥

'गालिब' रोदितुकामो वर्ते प्रेम्णोऽधुनाऽसहायत्वे।
मदनन्तरमुपगच्छेत् कस्य विपत्प्लावनं गेहम् ॥ 9॥

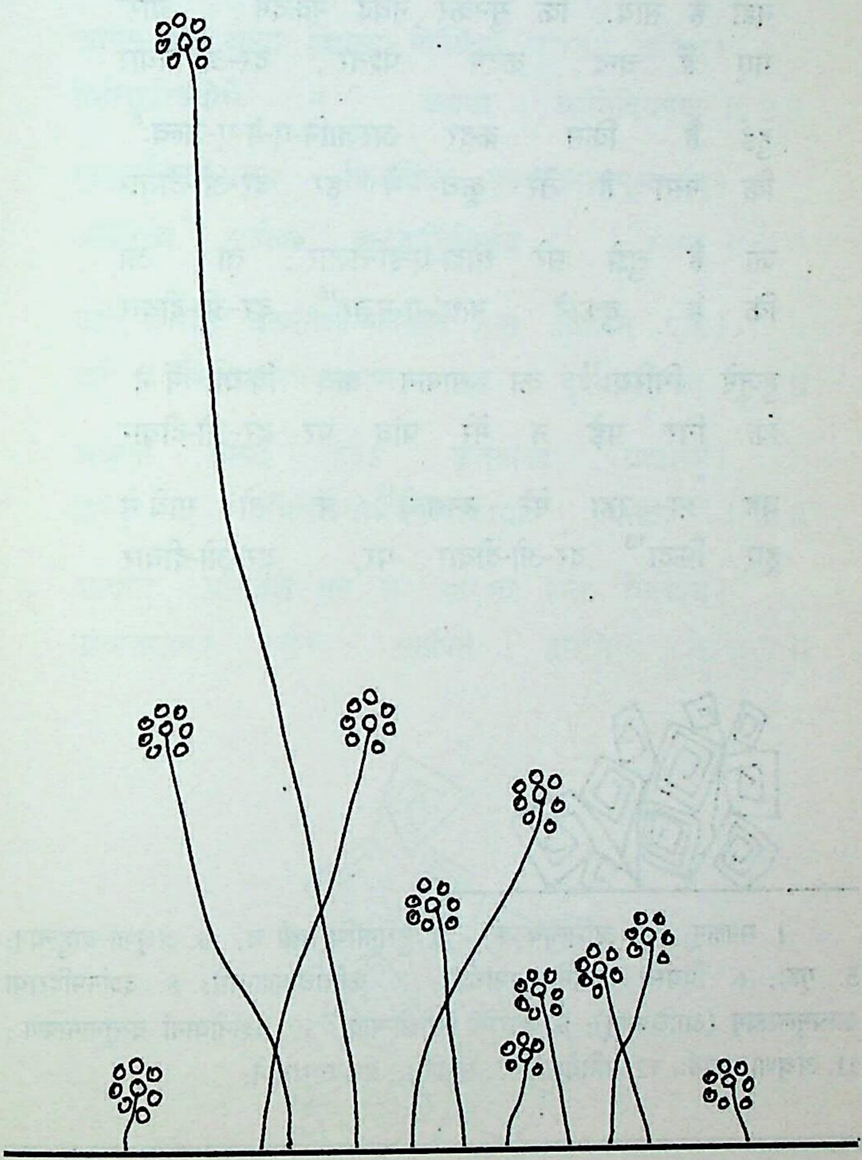

59

बला से है, जो यह पेशे नज़र[1] दर-ओ-दीवार
निगाहे शौक़[2] को हैं, बाल-ओ-पर[3] दर-ओ-दीवार

वुफ़ूरे अश्क[4] ने काशाने[5] का किया यह रंग
कि हो गए मेरे दीवार-ओ-दर, दर-ओ-दीवार

नहीं है सायः, कि सुनकर नवेदे मक़दमे यार[6]
गए हैं चन्द क़दम पेश्तर[7], दर-ओ-दीवार

हुई है किस क़दर अरज़ानि-ए-मै-ए-जल्वः[8]
कि मस्त है तेरे कूचे में हर दर-ओ-दीवार

जो है तुझे सरे सौदा-ए-इन्तिज़ार[9], तो आ
कि है दुकाने मता'-ए-नज़र[10] दर-ओ-दीवार

हुजूमे गिरियः[11] का सामान कब किया मैं ने
कि गिर पड़े न मेरे पांव पर दर-ओ-दीवार

वह आ रहा मेरे हमसाये[12] में, तो साये से
हुए फ़िदा[13] दर-ओ-दीवार पर, दर-ओ-दीवार

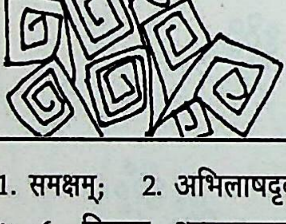

---

1. समक्षम्; 2. अभिलाषदृक्; 3. सुरोमाणि पक्षौ च; 4. अश्रूणां बाहुल्यम्; 5. गृहः; 6. प्रियस्य आगमनसुसमाचारः; 7. कतिचित्पदान्यग्रे; 8. दर्शनमदिराया अल्पमूल्यत्वम् (आधिक्यम्); 9. शिरसि प्रतीक्षोन्मादः; 10. दर्शनीयानां वस्तूनामापणः; 11. अश्रूणां सम्मर्दः; 12. प्रतिवेशः; 13. समर्पितेः, प्रणयपराधीने;

59

द्वारं भित्तिश्चोभयमक्ष्णोरिदमस्तु काममग्रे यत्।
अभिलाषदृश उभयमपि कृते सुरोमाणि पक्षौ च ।। 1 ।।

बाहुल्येनाश्रूणां विहितैषा मद्गृहस्य हन्त दशा।
भित्तिर्द्वारीभूता भित्तीभूतञ्च मे द्वारम् ।। 2 ।।

आगम-वार्तां श्रुत्वा प्रियस्य किञ्चित् पुरस्तथा चलिते।
भित्तिर्द्वारञ्चोभे न च्छाया काचिदियमेषा ।। 3 ।।

त्वद्दर्शनमदिरायाः कियदिव सञ्जातमल्पमूल्यत्वम्।
अधिरथ्यं प्रत्येकं त्वद्द्वार्भित्तिर्द्वयं मत्तम् ।। 4 ।।

यदि शिरसि चेत्प्रतीक्षोन्मादस्तव हन्त तावदित एहि।
द्वारं भित्तिश्चोभयमापण इह दृश्यवस्तूनाम् ।। 5 ।।

अश्रूणां सम्मर्दं कदेह कृतवानहं यदाशङ्के।
द्वारं भित्तिश्चोभयमस्मत्पदयोः पतेन्नेति ।। 6 ।।

आयातः प्रतिवेशे मम स द्वारश्च हन्त भित्तेश्च।
छायातस्तस्य ततः समर्पिते द्वारभित्ती मे ।। 7 ।।

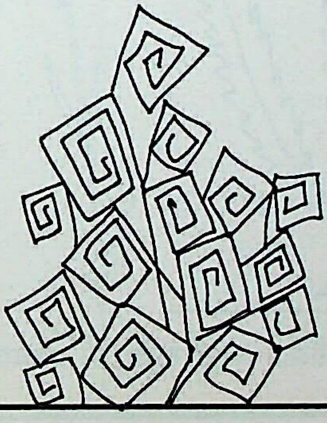

नज़र में खटके है, बिन तेरे, घर की आबादी
हमेशः रोते हैं हम, देख कर दर-ओ-दीवार

न पूछ बे खुदि-ए-'ऐशे मक़दमे सैलाब[14]
कि नाचते हैं पड़े, सर बसर दर-ओ-दीवार

न कह किसी से, कि ग़ालिब नहीं ज़माने में
हरीफ़े राज़े महब्बत[15], मगर दर-ओ-दीवार

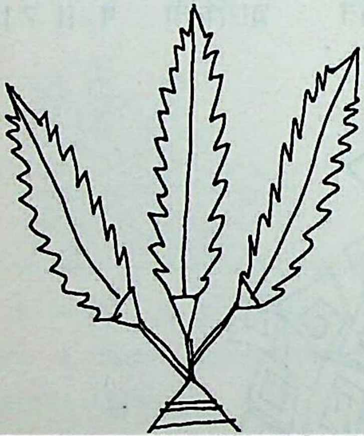

---

[14] अश्रुप्रवाहागमनजन्यहर्षोत्पन्ना आत्मविस्मृतिः; [15] प्रणयरहस्यरक्षकः।

दृग्भ्यां न रोचते नो विनिवासः स्वे गृहे विनेह त्वाम्।
द्वारं भित्तिश्चोभयमवलोक्यानारतं रुदिमः ॥ 8 ॥

अश्रुप्रवाहसङ्गमसम्मदजां विस्मृतिं न पृच्छ त्वम्।
द्वारं भित्तिश्चोभयमामग्नं नृत्यतीह भृशम् ॥ 9 ॥

न त्वं कमपि निवेदय, 'ग़ालिब' न ह्यस्ति हन्त जगतीह।
प्रणयरहस्यसुरक्षाभित्तिं द्वारञ्च सन्त्यज्य ॥ 10 ॥

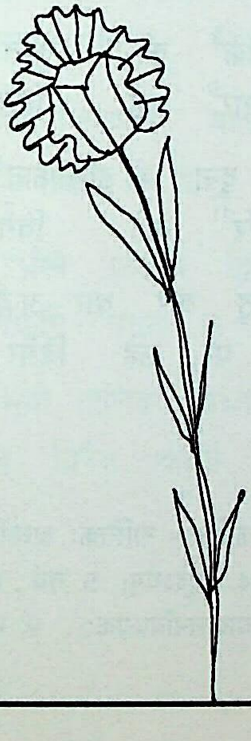

60

घर जब बना लिया तेरे दर पर, कहे बिग़ैर
जानेगा अब भी तू न मेरा घर, कहे बिग़ैर

कहते हैं, जब रही न मुझे ताक़ते सुख़न[1]
जानूँ किसी के दिल की मैं क्योंकर, कहे बिग़ैर

काम उससे आ पड़ा है, कि जिसका जहान में
लेवे न कोई नाम, सितमगर कहे बिग़ैर

जी में ही कुछ नहीं है हमारे, वगरनः हम
सर जाये या रहे, न रहें पर कहे बिग़ैर

छोड़ूँगा मैं न उस बुते काफ़िर[2] का पूजना
छोड़े न ख़ल्क़[3] गो मुझे काफ़िर कहे बिग़ैर

मक़सद[4] है नाज़-ओ-ग़मजः[5], वले गुफ़्तगू[6] में, काम
चलता नहीं है, दश्नः-ओ-ख़ंजर[7] कहे बिग़ैर

हरचन्द, हो मुशाहदः-ए-हक़[8] की गुफ़्तगू
बनती नहीं है, बादः-ओ-साग़र[9] कहे बिग़ैर

बहरा हूँ मैं, तो चाहिए दूना हो इल्तिफ़ात[10]
सुनता नही हूँ बात, मुकर्रर[11] कहे बिग़ैर

ग़ालिब, न कर हुज़ूर में तू बार बार अर्ज़
ज़ाहिर है तेरा हाल सब उन पर, कहे बिग़ैर।

---

1. वार्तालापसामर्थ्यम्; 2. बुत= मूर्तिः, काफ़िर= नास्तिकः अधार्मिको वा अत्र सौन्दर्यगर्वशीलः प्रिय इति तात्पर्यम्; 3. लोकः; 4. उद्देश्यम्; 5. गर्वः, हाव-भावाश्च; 6. वार्तालापः; 7. तरवारिश्छुरिका च; 8. सत्याकलनविषयकः; 9. मधु चषकश्च; 10. प्रणयः; 11. द्विः, भूयः।

60

निर्मितवानस्मि यदाऽनभिधाय त्वां गृहं तव द्वारि।
अयि नानुक्तो ज्ञास्यसि मया गृहं मे त्वमधुनाऽपि ॥ 1 ॥

मयि सम्प्रतीह जाते वार्तालापाक्षमे स भणतीदम्।
वेदानि कथमनुक्तः कस्यचिदन्तर्गतं केन ॥ 2 ॥

व्यवहारस्तेन समं सम्प्राप्तो यस्य नाम जगतीह ।
गृह्णीयान्नहि कश्चिन्निर्दय इत्यनभिधाय जनः ॥ 3 ॥

न मनस्येवास्माकं किञ्चिदपीहान्यथा वयं जगति।
न पतेच्छिरः पतेद् वा तिष्ठेम न तद् विना कथनम् ॥ 4 ॥

त्यक्ष्यामि नैव पूजां मूर्तिमतोऽधार्मिकस्य तस्याहम्।
एषोऽधार्मिक इति मां न विना कथनं त्यजेल्लोकः ॥ 5 ॥

उद्देश्यं वार्तायास्तद्गर्वस्तस्य हावभावाश्च।
छुरिकायास्तरवारेर्न विनोल्लेखं भवेत् कार्यम् ॥ 6 ॥

सत्याकलनविषयको वार्तालापः प्रवर्ततां यदपि।
सिध्यति तथापि न विना मधुनश्चषकस्य वा चर्चाम् ॥ 7 ॥

बधिरोऽस्मि प्रणयेन द्विर्बद्धेनेह किमपि भवितव्यम्।
नाकर्णयामि वचनं न विना द्विर्भाषितं यदहम् ॥ 8 ॥

भूयो भूयो 'ग़ालिब' याच्ञां न महाशये कुरुष्व त्वम्।
तस्मिन् विनैव कथनं परिस्फुटा ते दशा सर्वा ॥ 9 ॥

61

क्यों जल गया न ताबे रुख़े यार[1] देख कर
जलता हूँ, अपनी ताक़ते दीदार[2] देख कर

आतश परस्त[3] कहते हैं अह्ले जहां[4] मुझे
सरगर्मे नालःहा-ए-शररबार[5] देख कर

क्या आबरू-ए-'अिश्क़[6], जहां 'आम हो जफ़ा[7]
रुकता हूँ तुम को बेसबब आज़ार[8] देख कर

आता है मेरे क़त्ल को, पर जोशे रश्क[9] से
मरता हूँ उसके हाथ में तलवार देखकर

साबित हुआ है, गर्दने मीना[10] प ख़ूने ख़ल्क़[11]
लरज़े हैं मौजे मै[12] तेरी रफ़्तार[13] देख कर

वा हसरता, कि यार ने खेंचा सितम से हाथ
हमको हरीसे लज्ज़ते आज़ार[14] देख कर

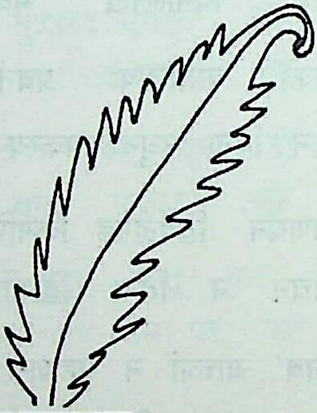

---

1. प्रियस्य यद् रूपं तस्य चाकचिक्यम्; 2. दर्शनस्य सामर्थ्यम्; 3. अग्नेरर्चकः; 4. जनाः; 5. स्फुलिङ्गवर्षिणि आर्तनादे संलग्नः; 6. प्रेम्णः प्रतिष्ठा; 7. अन्यायः, क्रौर्यम्; 8. कारणं विनैव दुःखदः; 9. ईर्ष्याया आधिक्यम्; 10. सुराधान्याः कण्ठः; 11. जगतो वधः; 12. मदिरा-लहरी; 13. गतिः, चलनम्; 14. कष्टास्वादस्य कृते सलालसः;

61

प्रियरूपचाकचिक्यं कथमवलोक्याहमेष न ज्वलितः।
स्वं दर्शनसामर्थ्यं यदिहालोच्य ज्वलन्नस्मि ।। 1 ।।

अग्नेरर्चक इति मां जगज्जनो हन्त साम्प्रतं प्राह।
लग्नं स्फुलिङ्गवर्षिणि विलोक्य भृशमार्तनाद इह ।। 2 ।।

प्रेम्णः कुतः प्रतिष्ठा यत्रान्यायो भवेन्नु सामान्यः।
त्वामवलोक्याकारणदुःखकरं स्तब्ध एषोऽहम् ।। 3 ।।

आगच्छति मां हन्तुं परमीर्ष्याधिक्यतोऽहमेष खलु।
अवलोक्य म्रियमाणो तरवारिं तस्य हस्तगतम् ।। 4 ।।

जगतो हन्त वधोऽस्य प्रमाणितः कण्ठतः सुराधान्याः।
कम्पत इव मदिराया लहरी गतिमाकलय्य तव ।। 5 ।।

हन्ताभिलाष ! विरतः प्रदानतः प्रियतमो नु कष्टस्य।
कष्टास्वादस्य कृते निरीक्ष्य मां लालसावन्तम् ।। 6 ।।

बिक जाते हैं हम आप, मता'-ए-सुख़न[15] के साथ
लेकिन 'अयारे तब'-ए-ख़रीदार[16] देख कर

ज़ुन्नार[17] बांध, सुब्हः-ए-सद् दानः[18] तोड़ डाल
रहरौ[19] चले है राह को, हमवार[20] देख कर

इन आबलों[21] से पाँव के, घबरा गया था मैं
जी ख़ुश हुआ है राह को पुरख़ार[22] देख कर

क्या बदगुमाँ[23] है मुझ से, कि आईने में मेरे
तूती का 'अक्स[24] समझे है, ज़ंगार[25] देख कर

गिरनी थी हम प बर्क़े तजल्ली[26], न तूर[27] पर
देते हैं बादः[28] ज़र्फ़े क़दह ख़्वार[29] देख कर

सर फोड़ना वह, ग़ालिबे शोरीदः हाल[30] का
याद आ गया मुझे, तेरी दीवार देख कर

---

15. कविता-सम्पत्तिः; 16. ग्राहकस्य स्वभावनिकषः; 17. उपवीतम्; 18. मणिकाशतवती स्त्रक्; 19. पथिकः; 20. समतलः; 21. पादस्फोटाः; 22. कण्टकाकीर्णः; 23. मिथ्या-संशयान्वितः; 24. शुक्याश्छाया, शुकी (तूती) दर्पणस्य पुरःस्थापिता भाषितुं शिक्ष्यते; 25. दर्पणगतो हरिदङ्कः; 26. ज्योतिर्विद्युत्; 27. 'तूर' इत्याख्यः पर्वतविशेषः; 28. मदिरा; 29. पानकर्तुः पात्रत्वम् ['तूरा'द्रौ स्थितेन 'मूसा' इत्याख्येन ईश्वरसन्देशहरेण ज्योतिर्दशनं प्रार्थितम्। ततः प्रकटीभूतेन ईश्वरीयेण ज्योतिषा 'मूसा'-महाशयो मूर्च्छितः, 'तूरा'द्रिश्च भस्मसाज्ञातः। कथेयं इंजील-कुरआनयोः लभ्यते]; 30. व्याकुलो ग़ालिबः।

कविता-सम्पत्या सह विक्रीताः स्वयमिमे भवाम इह।
क्रेतुः स्वभाव-निकषं परन्तु कञ्चित् समालोच्य ।। 7।।

प्रबधान तदुपवीतं मणिकाशतकां स्त्रजं विभिन्द्धीमाम्।
चलिता इमे नु पथिकाः समतलमवलोक्य पन्थानम् ।। 8।।

विकलोऽहमेषआसंपादस्फोटेभ्य एभ्य इह नितराम्।
दृष्ट्वा मनः प्रसन्नं पन्थानं कण्टकाकीर्णम् ।। 9।।

मिथ्यासन्देहयुतः कियानसौ मां प्रतीह सञ्जातः।
शुक्याश्छायां मनुते दर्पणहरिदङ्गमवलोक्य ।। 10।।

भाव्यंज्योतिस्तडिता निपतन्त्याऽस्मासु, नैव 'तूरा'द्रौ।
मदिराऽर्प्यत इह नूनं पात्रत्वं पातुरालोच्य ।। 11।।

विकलेन 'ग़ालिबेन' स्वशिरःस्फोटस्ततो यथा विहितः।
अवलोक्य त्वद्भित्तिं स्मृतिं गतं मे नु तद् दृश्यम् ।। 12।।

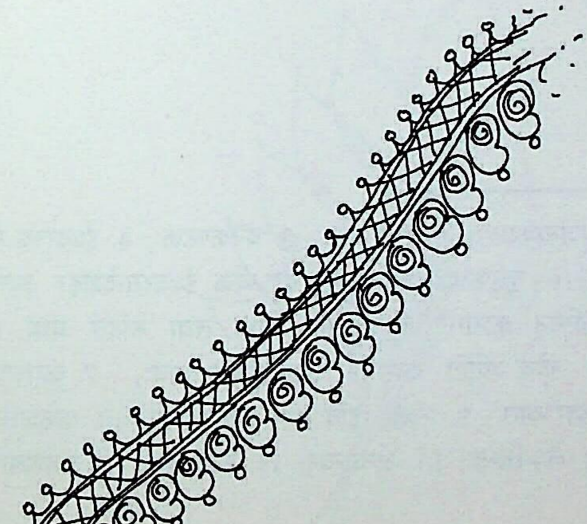

62

लरज़ता है मेरा दिल ज़ह्मते मेह्रे दरख़्शाँ[1] पर
मैं हूँ वह क़तरः-ए-शबनम[2], कि हो ख़ारे बयाबाँ[3] पर

न छोड़ी हज़रते यूसुफ़[4] ने याँ भी ख़ानः आराई[5]
सफ़ेदी दीदः-ए-या'क़ूब[6] की, फिरती है ज़िन्दाँ[7] पर

फ़ना ता'लीमे दर्से बेख़ुदी[8] हूँ, उस ज़माने से
कि मजनूँ लाम अलिफ़[9] लिखता था दीवारे दबिस्ताँ[10] पर

फ़राग़त[11] किस क़दर रहती मुझे, तशवीशे मरहम[12] से
बहम[13] गर सुल्ह् करते पारःहा-ए-दिल[14] नमकदाँ[15] पर

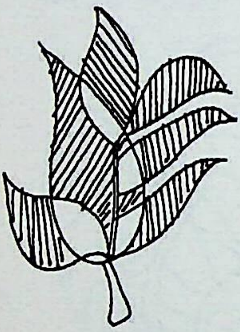

---

1. प्रकाशमानसूर्यजन्यकष्टतः; 2. तुषार-कणः; 3. वनकण्टकः; 4. ईश्वरस्य एकः सन्देशहरः; 5. गृहसज्जा; 6. यूसुफ़स्य पिता 'या'क़ूब' बोऽप्येक ईश्वरसन्देशहर आसीत्, यूसफ़े मिस्त्रदेशस्य एकस्मिन् कारागरे बद्धे सति पित्रा तथा रुदितं यथा तस्य नेत्रज्योतिः समाप्तम्, तदेव ज्योतिः कारागृहं प्राप्तमिवेति भावः; 7. कारागृहम्; 8. आत्मविस्मृतिपाठान्मृत्योरभ्यासः; 9. 'लैला' इति नाम्न आद्याक्षरम्; 10. पाठशालाया भित्तिः; 11. मुक्तिः; 12. लेप-चिन्ता; 13. अन्योन्यम्; 14. हृत्खण्डाः; 15. लवणपात्रम्, चिबुकगर्त इति यावत्;

62

कम्पत इह मम हृदयं प्रकाशमानस्य भास्वतः कष्टात्।
वनकण्टकाग्रवर्ती यः खलु सोऽहं तुषारकणः ॥ 1 ॥

अत्रापि 'यूसुफ़ेन' त्यक्ता न महाशयेन गृहसज्जा।
सितिमा 'याक़ूब'-दृशोः कारागारे परिभ्रमति ॥ 2 ॥

अभ्यस्यन्नस्मि ततः पाठादहमात्मविस्मृतेर्मृत्युम्।
'मजनू'रधिविद्यालयमारभताद्याक्षरं नु यतः ॥ 3 ॥

अभविष्यन्मम मुक्तिः सम्प्रति कियतीह लेपचिन्तायाः।
हृत्खण्डा अभविष्यन् सममतयो लवणपात्रे चेत् ॥ 4 ॥

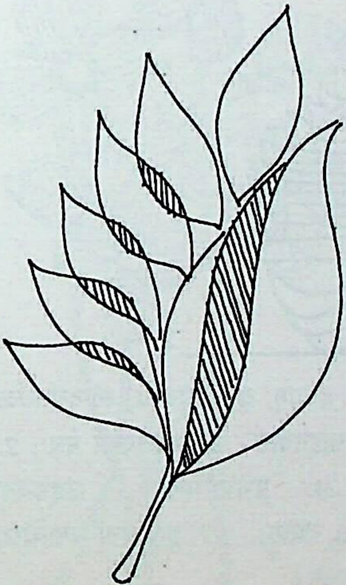

नहीं इक़्लीमे उल्फ़त[16] में, कोई तूमारे नाज़[17] ऐसा
कि पुश्ते चश्म[18] से जिसके न होवे मुह्र, 'उन्वाँ[19] पर

मुझे अब देखकर अब्रे शफ़क़ आलूदः[20], याद आया
कि फ़ुर्क़त[21] में तेरी, आतश[22] बरसती थी गुलिस्ताँ[23] पर

बजुज़ परवाज़े शौक़े नाज़[24], क्या बाक़ी रहा होगा
क़यामत[25] इक हवा-ए-तुन्द[26] है, ख़ाके शहीदाँ[27] पर

न लड़ नासेह[28] से, ग़ालिब, क्या हुआ, गर उसने शिद्दत[29] की
हमारा भी तो आख़िर ज़ोर चलता है गरीबाँ[30] पर

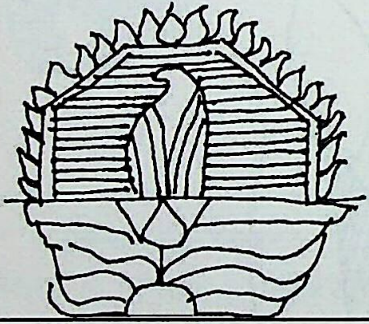

---

16. प्रेम्णः साम्राज्यम्; 17. हृदयम्, यत्र (प्रियस्य) सौन्दर्यगर्वकथोल्लेखः; 18. परिवर्तितं चक्षुः, अकृतज्ञत्वम्; 19. 'साइनबोर्ड'; 20. रक्तवर्णो मेघः; 21. वियोगः; 22. अग्निः; 23. पुष्पोद्यानम्; 24. प्रणयाभिलाषे उड्डयनम् (इत्वरत्वमित्यर्थः) अतिरिच्य; 25. प्रलयः; 26. वात्या; 27. हुतात्मनां समाधिस्थलानि; 28. उपदेशकः; 29. अत्याचारः; 30. गलवसनम्।

सौन्दर्यगर्वकार्यालय ईदृक् प्रेमराज्य इह नास्ति।
अकृतज्ञत्वस्य न यच्छिरसि भृशं भासते मुद्रा ।। 5।।

अधुना स्मरामि पश्यन् लोहितवर्णानहं पयोवाहान्।
त्वद्विरहे वर्षिष्यति पुष्पोद्याने कृशानुरिति ।। 6।।

सौन्दर्यगर्वकाङ्क्षोड्डयनं प्रविहाय किन्तु शेषं स्यात्।
प्रलयो हि काऽपि वात्या हुतात्मनां मृत्सु खल्वेकः ।। 7।।

उपदेशकेन 'ग़ालिब' युध्यस्व न, विप्रियेऽपि किं जातम्।
गलवसनेऽप्यस्माकं बलप्रयोगोऽन्ततो भवति ।। 8।।

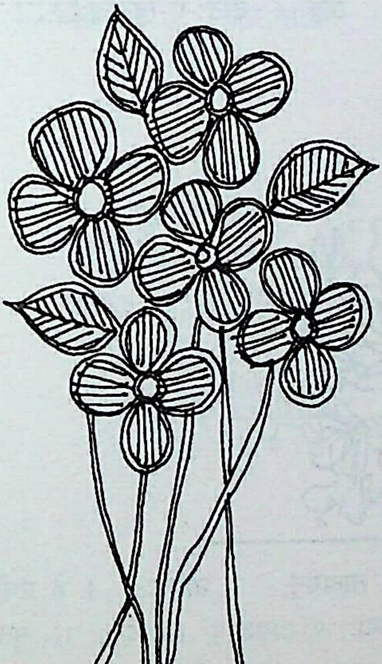

63

है बसकि, हर इक उनके इशारे[1] में निशाँ[2] और
करते हैं महब्बत, तो गुज़रता है गुमाँ[3] और

यारब[4], न वह समझे हैं, न समझेंगे, मेरी बात
दे और दिल उनको, जो न दे मुझको ज़बाँ[5] और

अबरू[6] से है क्या, उस निगहे नाज़[7] को, पैवन्द[8]
है तीर मुक़र्रर[9], मगर इसकी है कमाँ[10] और

तुम शह्र में हो, तो हमें क्या ग़म, जब उठेंगे
ले आयेंगे बाज़ार से, जाकर दिल-ओ-जाँ और

हरचन्द[11] सुबुक दस्त[12] हुए, बुत शिकनी[13] में,
हम हैं, तो अभी राह में है संगे गिराँ[14] और

है ख़ूने जिगर जोश में, दिल खोल के रोता
होते जो कई दीदः-ए-ख़ूँनाबःफ़िशाँ[15] और

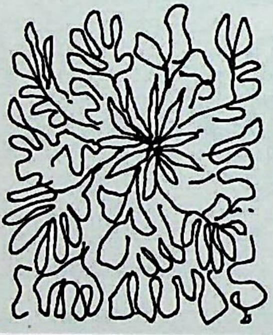

---

1. सङ्केतः; 2. तात्पर्यम्; 3. भ्रान्तिः; 4. हे प्रभो !; 5. भाषा; 6. भ्रूः; 7. सगर्वा दृष्टिः; 8. सम्बन्धः; 9. अवश्यम्; 10. धनुः; 11. सुतराम्; 12. सिद्धहस्ताः, अभ्यस्ताः; 13. मूर्तीनां भङ्गः; 14. गण्डशैलाः; 15. रक्तस्रावशीलानि;

63

प्रत्येकं सङ्केते तस्य भवत्यन्यदेव तात्पर्यम्।
कुरुते प्रेम स चेदिह भिन्नैव भ्रान्तिरुद्भवति ।। 1 ।।

नासौ वेद मदुक्तं वेदिष्यति न प्रभो ! कदाचिदपि।
तस्मै देहि हृदन्यद् भाषामन्यां न मे दद्याः ।। 2 ।।

कः सम्बन्धस्तस्या भ्रुवा दृशः स्यादितः सगर्वायाः।
बाणोऽवश्यं वर्तत इह धनुरस्यान्यदस्ति परम् ।। 3 ।।

अस्माकं का चिन्ता नगरे त्वं वर्तसे यदा निवसन्।
उत्तिष्ठामो गत्वा हृत्प्राणाद्यानयामश्च ।। 4 ।।

सुतरां मूर्तीनां वयमभ्यस्ता भङ्गकर्मणि स्म इमे।
स्याम वयञ्चेदिह यदि पथ्यन्ये गण्डशैलाः स्युः ।। 5 ।।

यकृतः शोणितमुच्छलदधुना रुद्यां हृदा विमुक्तेन।
रक्तस्त्रावप्रकृतीनन्यान्यपि लोचनानि स्युः ।। 6 ।।

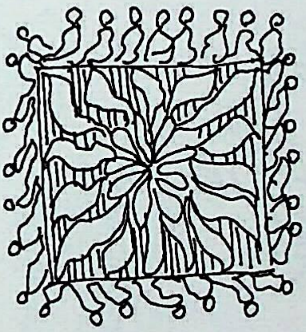

मरता हूँ इस आवाज़ प, हरचन्द सर उड़ जाय
जल्लाद को, लेकिन वह कहे जायें, कि हाँ और

लोगों को है ख़ुर्शीदे जहाँ ताब[16] का धोका
हर रोज़ दिखाता हूँ मैं इक दाग़े निहाँ[17] और

लेता, न अगर दिल तुम्हें देता, कोई दम चैन
करता, जो न मरता कोई दिन, आह-ओ-फ़ुग़ाँ[18] और

पाते नहीं जब राह, तो चढ़ जाते हैं नाले[19]
रुकती है मेरी तब'अ[20], तो होती है रवाँ[21] और

हैं और भी दुनिया में सुख़नवर[22] बहुत अच्छे
कहते हैं, कि ग़ालिब का है अन्दाज़े बयाँ[23] और

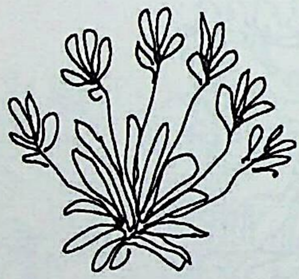

---

16. जगदालोककरः सूर्यः; 17. अन्तर्निहितः कलङ्कः; 18. निःश्वसितं रुदितञ्च; 19. आर्तनादाः; 20. प्रकृतिः, स्वभावः; 21. गतिमती; 22. कवयः; 23. वर्णन-शैली।

अर्पित उक्तावस्यां स्यां विच्छिद्येत यदपि मन्मूर्धा।
आं पुनरिति कथयन् स्यात् स घातुकं किन्नु निजयोक्त्या ॥ 7 ॥

तं जगदालोककरं सूर्यं भ्रमतो जना नु मन्यन्ते।
अनुदिनमेको गुप्तः प्रदश्यर्ते यः कलङ्क इह ॥ 8 ॥

हृत् तुभ्यं नादास्यं क्षणमासिष्येऽन्यमप्यहं शान्त्या।
श्वसित-रुदितमकरिष्यं दिनमन्यन्नामरिष्यञ्चेत् ॥ 9 ॥

न प्राप्नुवन्ति मार्गं यदार्तनादास्तदाऽधिरोहन्ति।
अवरुद्धा प्रकृतिर्मे गतिमत्त्वं निर्भरं लभते ॥ 10 ॥

सन्त्यन्येऽपि जगत्यामेतस्यां केचिदुत्तमाः कवयः।
अन्यैव 'ग़ालिबस्या'भिधानशैलीति कथयन्ति ॥ 11 ॥

64

सफ़ा-ए-हैरते आईनः[1] है, सामाने जंग[2] आख़िर
तग़य्युर[3] आबे बर जा माँदः[4] का, पाता है रंग आख़िर

न की सामाने'ऐश-ओ-जाह[5] ने तद्बीर[6] वह्शत[7] की
हुआ जामे ज़मर्रुद[8] भी मुझे, दाग़े पलँग[9] आख़िर

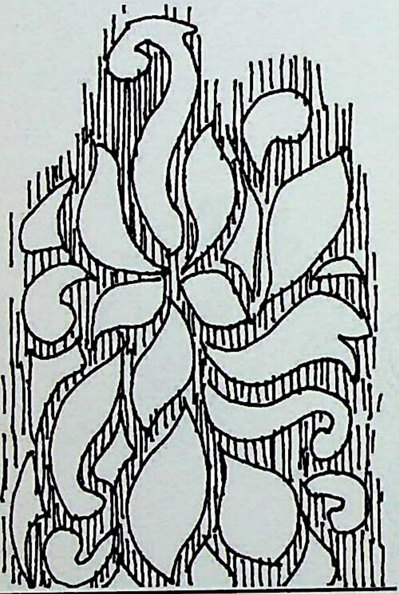

---

[1] दर्पणस्य विस्मयरूपा परिष्कृतिः, दर्पणस्य स्थिरत्वमित्यर्थः; [2] मलस्य हेतुः; [3] विकारः; [4] स्थिरा आपः; [5] वैभवसामग्री; [6] उपायः; [7] उद्भ्रान्तिः; [8] मरकतचषकः; [9] तरक्षोश्चर्माङ्कः।

64

विस्मयरूपा दर्पणपरिष्कृतिस्त्वन्ततोऽस्ति मलहेतुः।
वर्णमवाप्नोत्यन्ते ह्यपां स्थिराणामहो विकृतिः ।। 1 ।।

विहित उपायो वैभवसामग्र्या। हन्त कोऽपि नोद्भ्रान्तेः।
मम हि तरक्षुकलङ्को मरकतचषकोऽन्ततो जातः ।। 2 ।।

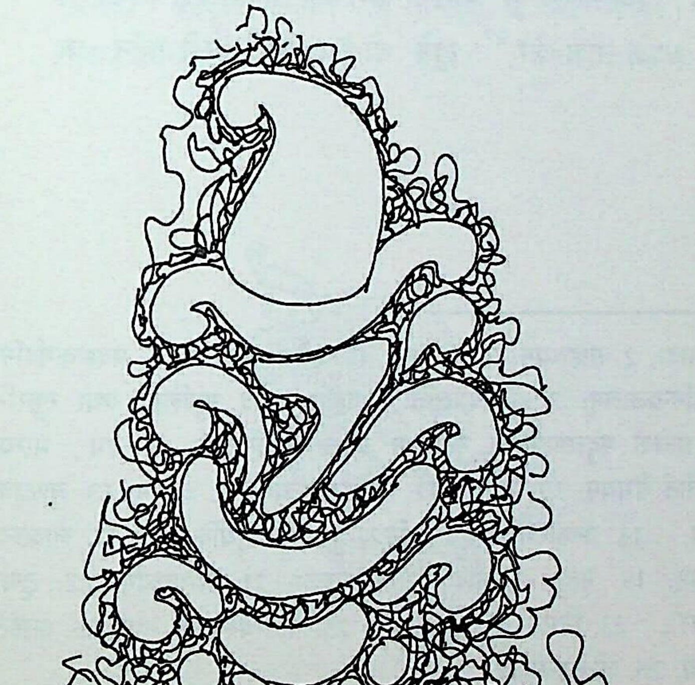

65

जुनूँ[1] की दस्तगीरी[2] किससे हो, गर हो न 'उरियानी[3]
गरीबाँ चाक[4] का हक़ हो गया है, मेरी गर्दन पर

बरंगे काग़ज़े आतश ज़द:[5] नैरंगे बेताबी[6]
हज़ार आईनः दिल बाँधे है बाले यक तपीदन[7] पर

फ़लक[8] से, हमको 'ऐशे रफ़्त:[9] का, क्या क्या तक़ाज़ा[10] है
मता'-ए-बुर्द:[11] को, समझे हुए हैं क़र्ज़[12], रहज़न[13] पर

हम और वह बेसबव रंज[14], आशना दुश्मन,[15] कि रखता है
शु'आ'-ए-मेह्र[16] से, तुहमत[17] निगह की, चश्मे रौज़न[18] पर

फ़ना[19] को सौंप, गर मुश्ताक़[20] है अपनी हक़ीक़त[21] का
फ़रोग़े ताले'-ए-ख़ाशाक[22] है मौक़ूफ़[23] गिलख़न[24] पर

असद[25] बिस्मिल[26] है किस अन्दाज़ का, क़ातिल से कहता है
कि, मश्क़े नाज़ कर,[27] ख़ूने दो 'आलम[28] मेरी गर्दन पर

---

1. उन्मादः; 2. साहाय्यम्; 3. नग्नत्वम्; 4. विदीर्णं गलवासः; 5. प्रदहत्कर्गदमिव; 6. वैकल्यरूपमिन्द्रजालम्; 7. उत्तापपक्षतिः, प्रदहति कर्गदे स्फुलिङ्गा यथा स्फुरन्ति, हृदयेन मन्ये प्रत्येकं मदुत्तापपक्षतौ मुकुराणां सहस्त्रं बद्धमित्यर्थः; 8. नभः, भाग्यम्, कालः; 9. अतीतं वैभवम्; 10. अपेक्षा; 11. लुण्ठितं द्रव्यम्; 12. ऋणम्; 13. लुण्ठाकः, लुण्टाको वा; 14. अकारणरुष्टः; 15. मित्रशत्रुः; 16. सूर्यकिरणाः; 17. लाञ्छनम्; 18. गवाक्षनेत्रम्; 19. मृत्युः, विनाशः; 20. इच्छुकः; 21. याथार्थ्यम्; 22. तृणस्य सौभाग्यचमत्कारः; 23. निर्भरम्; 24. भ्राष्ट्रम्; 25. ग़ालिबस्य परं नाम; 26. आहतः; 27. हावमभ्यस्य; 28. लोकद्वयवधः ।

65

साहाय्यं केन स्यादुन्मादस्येह चेन्न नग्नत्वम्।
गलवाससो गले मेऽभवदधिकारो विदीर्णस्य ॥ 1 ॥

वैकल्यमिन्द्रजालं प्रदहत्कर्गदमिवैतदाभाति।
मुकुरसहस्त्रं बद्ध्ं हृदा ममोत्तापपक्षतितः ॥ 2 ॥

कालात् किं किमपेक्षितमस्माकं वैभवं नु यदतीतम्।
ऋणमिति विद्मो वयमिह लुण्ठाके लुण्ठितं द्रव्यम् ॥ 3 ॥

वयमथ विनैव हेतुं रुष्टः सोऽस्मासु मित्रपरिपन्थी।
आगच्छतो गवाक्षात् सूर्यकरान् दृष्टिरित्याह ॥ 4 ॥

याथार्थ्यं स्वीयं चेदाकाङ्क्षसि मृत्यवेऽर्पयात्मानम्।
भाग्योदयस्तृणस्य भ्राष्ट्रं श्रित एव भवतीह ॥ 5 ॥

'असदः' कीदृश आहत इह हन्तारं य एतदभिधत्ते।
लोकद्वयवधपापं स्यान्मयि हावं त्वमभ्यस्य ॥ 6 ॥

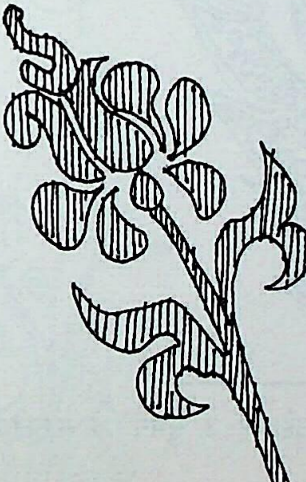

66

सितमकश[1] मस्लिहत[2] से हूँ, कि ख़ूबाँ[3] तुझ प 'आशिक़ है
तकल्लुफ़ बर तरफ़[4], मिल जायगा तुझ सा रक़ीब[5] आख़िर

---

1. अन्यायसहनः; 2. उद्देश्यम्; 3. सुभगः; 4. सङ्कोचोऽन्यत आस्ताम्; 5. रिपुः।

66

त्वय्यासक्तः सुभगोऽन्यायं सह एष किञ्चिदुद्दिश्य।
सङ्कोचः पृथगास्तां त्वमिव रिपुहृर्यन्ततो मिलिता ।। 1 ।।

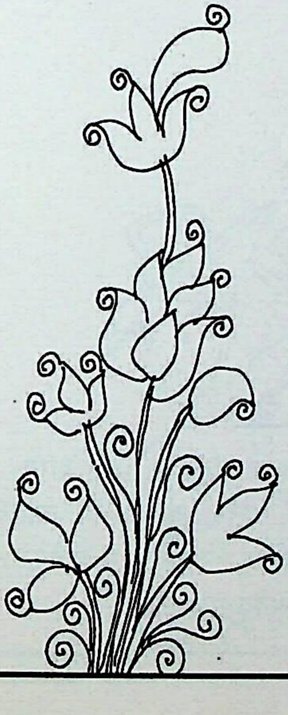

67

लाज़िम[1] था कि देखो मेरा रस्ता कोई दिन और
तनहा[2] गये क्यों, अब रहो तनहा कोई दिन और

मिट जायेगा सर, गर तेरा पत्थर न घिसेगा
हूँ दर[3] प तेरे नासियः फ़रसा[4] कोई दिन और

आये हो कल और आज ही कहते हो, कि जाऊँ
माना, कि हमेशः नहीं अच्छा, कोई दिन और

जाते हुए कहते हो, क़यामत[5] को मिलेंगे
क्या ख़ूब, क़यामत का है गोया कोई दिन और

हाँ अय फ़लके पीर[6] ! जवाँ[7] था अभी 'आरिफ़
क्या तेरा बिगड़ता, जो न मरता कोई दिन और

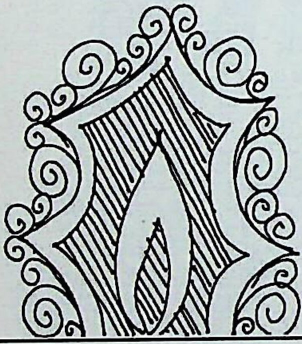

---

1. आवश्यकम्, समुचितम्; 2. एकाकी; 3. द्वारम्; 4. घर्षणपरायणः; 5. प्रलयदिनम्; 6. वृद्ध आकाशः; प्रतनः कालः; 7. ग़ालिबस्य स्वस्रेयः जैनुल आबदीनः, ''आरिफ़' इति तस्योपनामेदम्, ग़ालिबेन स पुत्रीकृतः। स च 1852 वर्षे षट्त्रिंशद्वर्षीयः सन् दिवङ्गतः। तमाश्रितेयं ग़ज़लगीतिः;

67

समुचितमासीत् पश्येर्दिनानि कतिचित् त्वमस्मदध्वानम्।
कतिचिदहान्येकाकी तिष्ठ कथं यात एकाकी ॥ 1 ॥

भविता शिरः प्रणष्टं भविता त्वत्प्रस्तरो न चेद् घृष्टः।
दिवसानि कानिचिदहं घर्षणनिरतस्तव द्वारि ॥ 2 ॥

आयातोऽस्यद्यैव च गच्छामीति त्वमेवमभिधत्से।
शुभमेतदेव नान्यत् सदैव दिनमित्यहं मन्ये ॥ 3 ॥

प्रलयदिने मिलितास्मीत्यमिधत्से सम्प्रयानितस्त्वमहो।
सुष्ठूक्तं किमपि यथा भविता प्रलयस्य दिनमन्यत् ॥ 4 ॥

‘आरिफ़’ आसीद् यौवन-सम्पन्नः साम्प्रतं प्रतन काल।
कतिचिद् दिनानि यदि न म्रियेत किं स्यात् तव च्छिन्नम् ॥ 5 ॥

तुम माहे शबे चार दहुम[8] थे, मेरे घर के
फिर क्यों न रहा घर का वह नक़्शा कोई दिन और

तुम कौन से थे ऐसे खरे, दाद-ओ-सितद[9] के
करता मलक-उल-मौत[10] तक़ाज़ा, कोई दिन और

मुझसे तुम्हें नफ़रत सही, 'नय्यर' से लड़ाई
बच्चों का भी देखा न तमाशा कोई दिन और

गुज़री न बहरहाल[11] यह मुद्दत[12] ख़ुश-ओ-नाख़ुश
करना था, जवाँमर्ग,[13] गुज़ारा कोई दिन और

नादाँ[14] हो, जो कहते हो, कि क्यों जीते हो ग़ालिब
क़िस्मत में है, मरने की तमन्ना कोई दिन और

---

8. चतुर्दश्याश्चन्द्रः; 9. दानादाने; 10. यमः; 11. प्रत्येकं दशायाम्; 12. समयः; 13. यौवन एव मृतः; 14. अज्ञः ।

त्वं मद्गृहकस्यासीश्चन्द्रो द्युतिमांस्तिथेश्चतुर्दश्याः।
दिवसानि कानिचित् तद् गृहस्य नासीत् कथं चित्रम् ।। 6।।

आदान-दानयोः खलु शुचिरासीरीदृशः कथं त्वमितः।
दिवसानि कानिचिद् यदि यमराडभ्यर्थनां कुर्यात् ।। 7।।

मां प्रति घृणाऽस्तु कामं त्वय्यासी'न्नय्यरेण' च द्वेषः।
दिवसानि कानिचिदितो न शिशूनां क्रीडितं दृष्टम् ।। 8।।

रोषेऽथवा प्रसादे समयोऽयं हन्त यापितो नेह।
केचिद् दिवसा आसंन् यौवनमृत ! यत् त्वया नेयाः ।। 9।।

अज्ञोऽसि यदमिधत्से ग़ालिब! कथमेव जीवसीहेति।
मरणस्पृहाऽस्ति भाग्ये यावद् दिवसानि कानिचन ।। 10।।

68

फ़ारिग़[1] मुझे न जान, किं मानिन्दे सुब्ह-ओ-मेह्र[2]
है दाग़े 'अिश्क़[3], ज़ीनते जैबे कफ़न[4] हनोज़[5]

है नाज़े मुफ़्लिसाँ[6] ज़रे अज़दस्त रफ्तः[7] पर
हूँ गुल फ़रोशे शोख़ि-ए-दाग़े कुहन[8] हनोज़

मैख़ानः-ए-जिगर[9] में यहाँ ख़ाक भी नहीं
ख़मियाज़ा खेंचे है[10] बुते बेदाद फ़न[11] हनोज़

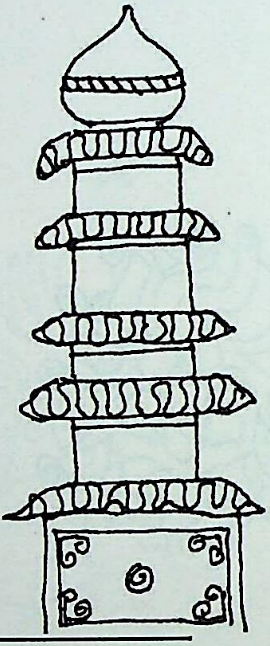

---

1. निवृत्तः; 2. दिनारम्भस्य सूर्य इव; 3. प्रेमकलङ्कः; 4. शववसनशोभा; 5. अधुनाऽपि; 6. दरिद्राणां गर्वः 7. हस्ततो निर्गतं हेम; 8. पुराण-व्रणचाञ्चल्यप्रसूनविक्रयिकोऽस्मि नाद्यापि, अस्म्येवेत्यर्थः; 9. यकृन्मदिरालयः; 10. जृम्भां प्रकुर्वाणः; 11. अत्याचार-कलाकारः।

68

नावेहि मां निवृत्तं दिवसारम्भस्य सूर्य इव सोऽयम्।
प्रेमाङ्कः शववासोमध्ये शोभां बिभर्त्यधुना ॥ 1 ॥

हस्तविनिर्गतहेम्नि क्वचिदास्ते गर्व एष निःस्वानाम्।
प्रत्नव्रणचापल्यप्रसूनवणिगस्मि नाद्यापि ॥ 2 ॥

हन्त यकृन्मदिरालय इह पेयं नावशिष्यते किमपि।
अधुनाऽपि जृम्भमाणः क्रौर्यकलायां स निष्णातः ॥ 3 ॥

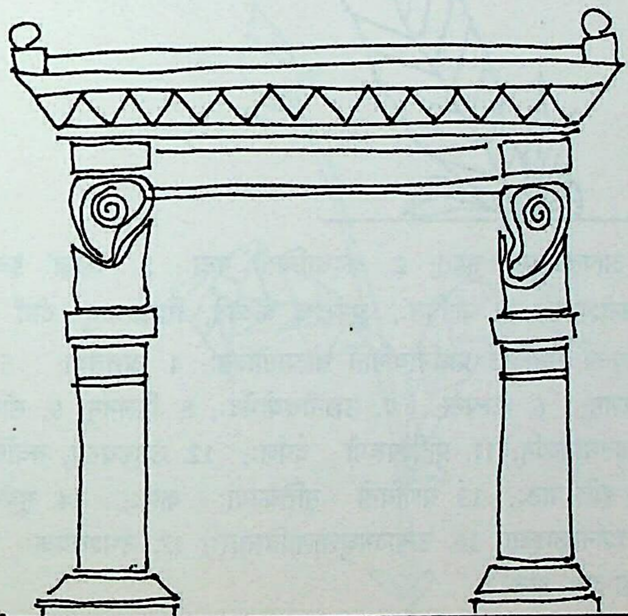

69

हरीफ़े मतलबे मुश्किल[1] नहीं, फ़ुसूने नियाज़[2]
दु'आ क़ुबूल हो यारब, कि 'उम्रे' खिज़्र दराज़[3]

न हो बहरज़ः[4], बयाबाँ नवर्दे वह्मे वुजूद[5]
हनोज़ तेरे तसव्वुर[6] में है नशेब-ओ-फ़राज़[7]

विसाल[8] जल्वः तमाशा[9] है, पर दिमाग़ कहाँ[10]
कि दीजे आईनः-ए-इन्तिज़ार[11] को परवाज़[12]

हर एक ज़र्रः-ए-'आशिक़[13] है आफ़्ताब परस्त[14]
गई न ख़ाक हुए पर, हवा-ए-जल्वः-ए-नाज़[15]

न पूछ वुस'अते मैख़ानः-ए-जुनूँ[16], ग़ालिब
जहाँ, यह कासः-ए-गर्दूं[17], है एक ख़ाक अन्दाज़[18]

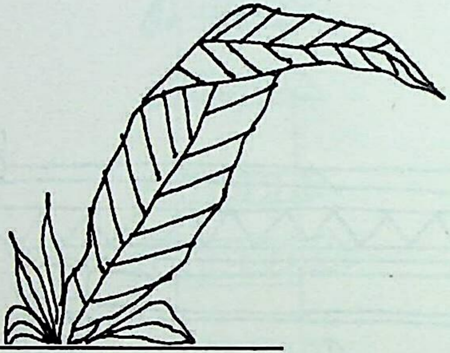

---

1. आपत्कालस्य सुहृत्; 2. श्रद्धान्वितो मन्त्रः; 3. 'ख़िज़्र' इत्याख्य एक ईश्वरस्य सन्देशहरः, यो जीवितः, अमरश्च कथ्यते, खिज़्रस्यायुः दीर्घं स्यात् इति प्रार्थना स्वीकृता स्यादिति प्रार्थनीयमिति सोत्प्रासोक्तिः; 4. अज्ञतया; 5. अस्तित्वभ्रममरुभूभ्रमणम्; 6. कल्पना; 7. उच्चनीचयोर्भेदः; 8. मिलनम्; 9. सौन्दर्यदर्शनम्; 10. क्व सहनसामर्थ्यम्; 11. प्रतीक्षारूपो दर्पणः; 12. उड्डयनम्, क्वचित् परदाज़ (परिष्कारः) इति पाठः; 13. प्रणयिनो मृत्तिकायाः कणः; 14. सूर्यस्य पूजकः; 15. सौन्दर्यदर्शनाकाङ्क्षा; 16. उन्मादमधुशालाविस्तारः; 17. नभश्चषकः; 18. कच्चरपात्रम् ('कूड़ा-दान' इति)।

69

आपत्कालसुहृत्त्वं न विभर्ति श्रद्‌धयाऽन्वितो मन्त्रः ।
दीर्घायुः स्यादीश्वर ! 'खिज्ऱ' इति प्रार्थनीयमिह ॥ 1 ॥

अज्ञतयाऽस्तित्वभ्रममरुस्थलस्येत्वरस्त्वमिह मा भूः ।
अधुनाऽपि कल्पनायां तव भेदोऽस्त्युच्चनीचगतः ॥ 2 ॥

सौन्दर्यदर्शनं खलु मिलनं कुत एव किन्तु तद्‌धैर्यम् ।
येन परिष्कारः स्यादिह प्रतीक्षाख्यमुकुरस्य ॥ 3 ॥
[उड्डयनं दीयेत क्षणं प्रतीक्षाख्यमुकुराय]

प्रणयवतः प्रत्येकं रजःकणः पूजको रवेरस्ति ।
सौन्दर्यदर्शनेहा न गता प्राप्ते रजस्त्वेऽपि ॥ 4 ॥

उन्मादमधुनिकेतनविस्तारं पृच्छ 'ग़ालिब' त्वं मा ।
यत्र नभश्चषकोऽयं कच्चरपात्रत्वमाचरति ॥ 5 ॥

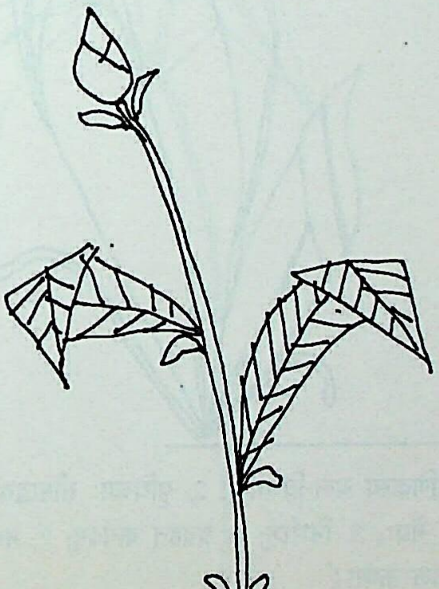

70

वुस'अते स'अि-ए-करम[1] देख, कि सर ता सरे ख़ाक[2]
गुज़रे है आबलः पा[3] अब्रे गुहर बार[4] हनोज
यक क़लम[5] काग़जे आतुश ज़दः[6], है सफ़हः-ए-दश्त[7]
नक़्शे पा[8] में, है तपे गर्मि-ए-रफ़्तार[9] हनोज़

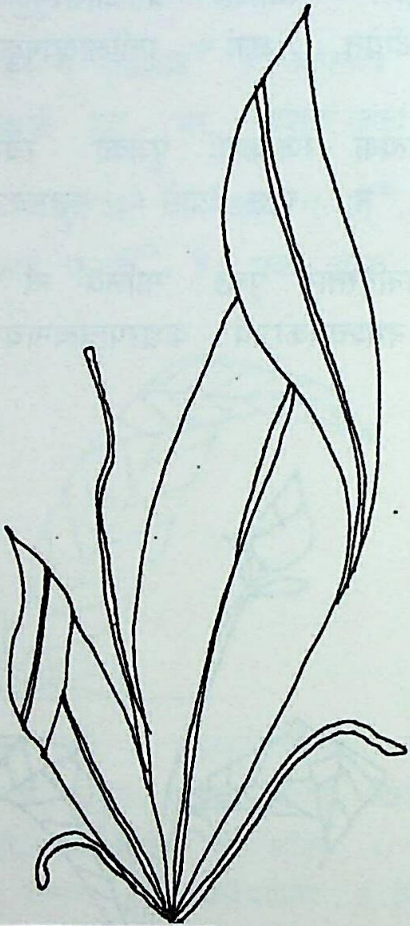

---

1. कारुणिकस्य यत्न-विस्तारः; 2. पृथिव्याः सीमाद्वयं यावत्; 3. स्फोटवच्चरणः; 4. मुक्तावर्षी मेघः; 5. निर्भरम्; 6. प्रदहत् कर्गदम्; 7. मरु-पृष्ठभागः; 8. पदचिह्नम्; 9. गतिसङ्घर्षणज ऊष्मा।

70

करुणाया यत्नस्य व्यासं पश्येह यावदवनिमसौ।
मुक्तावर्षी जलदोऽधुनाऽपि सविपादिको भ्रमति ॥ 1 ॥

मरुपृष्ठभाग एकं कर्गदमिव भाति निर्भरं प्रदहत्।
पदचिह्नेऽस्त्यधुनोष्मा गतिसङ्घर्षेण जनितो हि ॥ 2 ॥

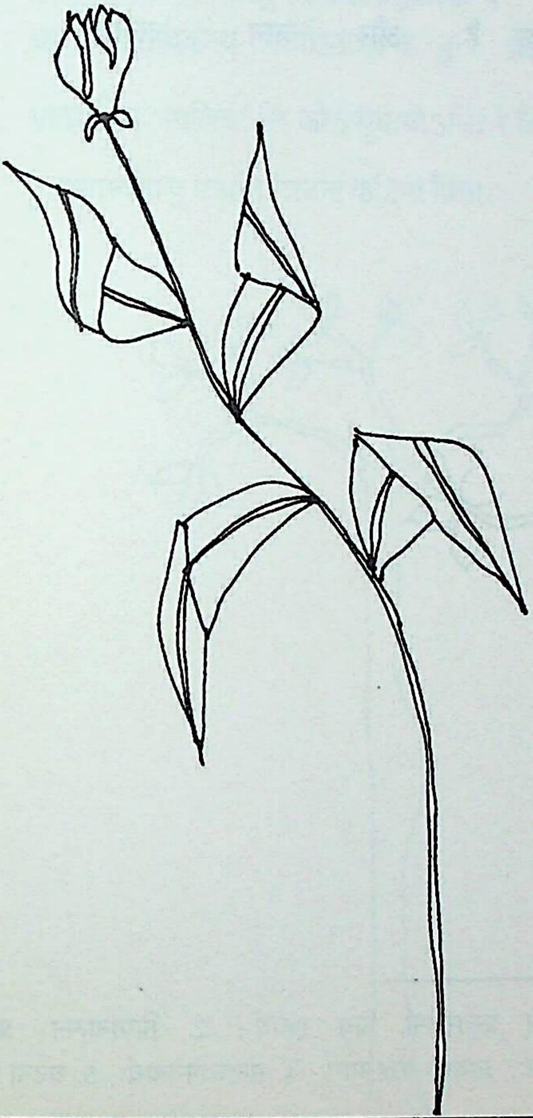

71

क्योंकर उस बुत[1] से रखूँ जान ’अज़ीज़[2]
क्या नहीं है मुझे ईमान ’अज़ीज़

दिल से निकला, प न निकला दिल से
है तेरे तीर का पैकान[3] ’अज़ीज़

ताब लाये[4] ही बनेगी, ग़ालिब
वाक़ि’अः[5] सख़्त है और जान ‘अज़ीज़

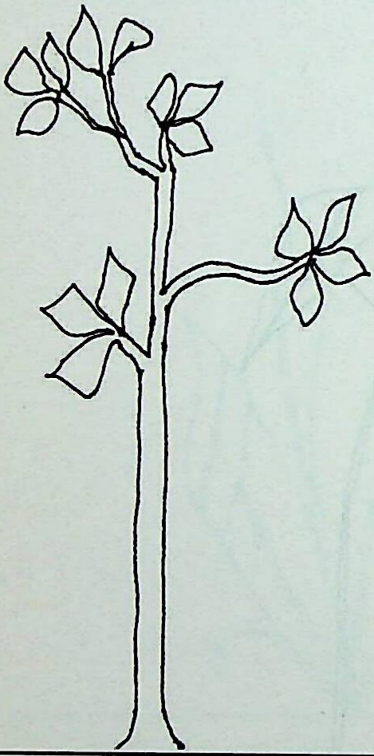

---

1. मूर्तिः, मूर्तिमान् प्रस्तरधर्मा प्रिय इत्यर्थः; 2. प्रियानात्मनः प्राणान् रक्षेयमित्यर्थः; 3. बाणाग्रभागः, आयसः फल-भागः; 4. सोढव्यमेवेत्यर्थः; 5. घटना।

71

मूर्तिमतस्तस्मादहमसून् कथं प्रियतरान्नु मन्येय।
'ईमाना'ख्यो धर्मः सम्मान्यः किन्न मे सुतराम् ॥ 1॥

[प्राणेभ्योऽपि प्रिय इति कथन्नु मन्येय मूर्तिमन्तं तम्।
'ईमाना'ख्यो धर्मः किन्नहि मे प्रेम्ण इह पात्रम् ॥ 1॥]

हृदयाद् विनिर्गतः खलु विनिर्गतो हृदयतो न परमेषः।
बाणस्य तावकस्य प्रियोऽग्रभागो नु कश्चिदयम् ॥ 2॥

सोढव्यमेव 'ग़ालिब' [न कोऽप्युपायोऽस्ति रे विना सहनम्।]
[अवगम्यतां नु सम्प्रति] घटना कठिना प्रियाः प्राणाः ॥ 3॥

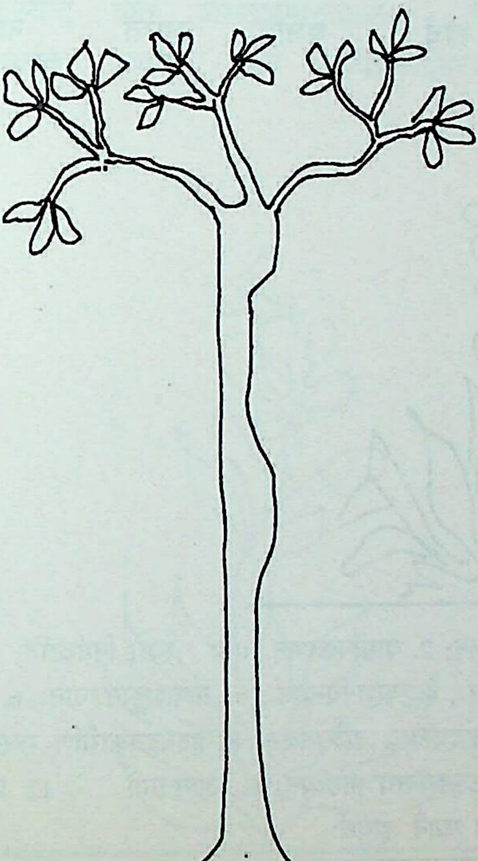

72

न गुले नग़मः[1] हूँ, न पर्दः-ए-साज़[2]
मैं हूँ अपनी शिकस्त[3] की आवाज़

तू, और आराइशे ख़मे काकुल[4]
मैं, और अन्देशः हा-ए-दूर-ओ-दराज़[5]

लाफ़े तमकीं,[6] फ़रेबे सादः दिली[7]
हम हैं, और राज़हा-ए-सीनः गुदाज़[8]

हूँ गिरफ़्तारे उल्फ़ते सय्याद[9]
वर्नः बाक़ी है ताक़ते परवाज़[10]

वह भी दिन हो, कि उस सितमगर[11] से
नाज़ खेंचूँ,[12] बजाय हसरते नाज़[13]

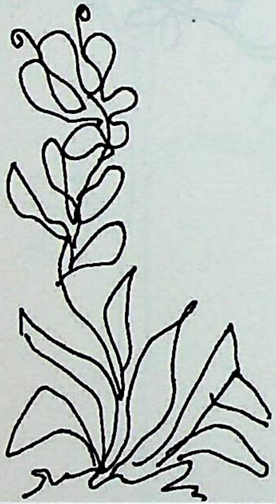

---

1. गीत-प्रसूनम्; 2. वाद्योपक़रणम्, यतः स्वरो निर्गच्छति; 3. भङ्गः, पराजयः; 4. कुटिलालकशृङ्गारः, केशपाश-विन्यासः; 5. नानाशङ्कासङ्घातः; 6. सहिष्णुत्वमूलाऽऽत्मश्लाघा; 7. सरलहृदयत्वस्य वञ्चितकम्; 8. हृदयद्रवकारीणि रहस्यानि; 9. व्याधस्य प्रेमपाशबद्धः; 10. उड्डयनस्य सामर्थ्यम्; 11. आततायी 12. प्रणयं कुर्यामित्यर्थः; 13. प्रणयाभिलाषस्य स्थाने, इत्यर्थः;

72

नाहं गीत-सुमनसो नाहं वाद्यस्य किञ्चिदुपकरणम्।
आत्मन एव किलाहं भङ्गस्यैकः स्वरः कश्चित् ।। 1 ।।

कुटिलानामलकानां शङ्गारोऽसि त्वमेकतः कोऽपि।
अहमन्यतश्च नानाशङ्कासङ्घात इह कश्चित् ।। 2 ।।

सहनत्वात्मश्लाघा सरलहृदयतागतन्नु वञ्चितकम्।
एते स्मो वयमथ नः, हृदयद्रुतिकारिणो भेदाः ।। 3 ।।

विनिबद्घोऽहं हन्त व्याधस्य प्रेमपाशबन्धेऽस्मि।
अवशिष्यतेऽन्यथा मयि साम्प्रतमुड्डयनसामर्थ्यम् ।। 4 ।।

तदपि दिनं स्यात् प्राप्तं यस्मिन्नहमाततायिना तेन।
कुर्यां साक्षात् प्रणयं स्थाने प्रणयाभिलाषस्य ।। 5 ।।

नहीं दिल में मेरे, वह क़तरः-ए-ख़ूँ[14]
जिससे मिश्गाँ[15] हुई न हो गुलबाज़[16]

अय तेरा ग़मज़ः[17], यक क़लम[18] अंगेज़[19]
अय तेरा ज़ुल्म, सर बसर अन्दाज़[20]

तू हुआ जल्वःगर[21] मुबारक हो
रेज़िशे सिज्दः-ए-जबीने नियाज़[22]

मुझको पूछा, तो कुछ ग़ज़ब न हुआ
मैं ग़रीब और तू ग़रीबनवाज़

असदुल्लाह ख़ाँ तमाम हुआ[23]
अय दरेग़ा,[24] वह रिन्दे शाहिद बाज़[25]

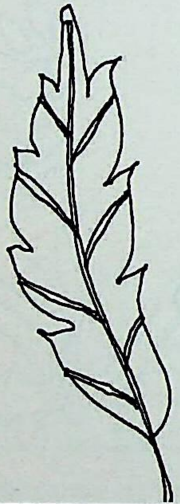

---

14. रुधिर-कणः; 15. पक्ष्म; 16. पुष्पैः क्रीडाकरः; 17. नयनसङ्केतः; 18. सुतराम्; 19. उद्दीपकम्; 20. 21. प्रकटः, दृग्गोचरः; 22. श्रद्धावनतेन शिरसा प्रणतीनां वर्षाः; 23. नावशिष्यत इत्यर्थः; 24. हा हन्त; 25. सौन्दर्योपासको मद्यपः।

रक्तस्य स मम हृदये न विद्यते हन्त बिन्दुरेकोऽपि।
येन न पक्ष्माकृत मे पुष्पक्रीडाविनोदमिह ।। 6 ।।

अयि तव नयननिरीक्षितमुद्दीपकतां बिभर्त्यदः सुतराम्।
अत्याचारस्तव रे हावः कश्चित् समग्रतया ।। 7 ।।

दृग्गोचरस्त्वमभवो नूनं वर्धापना इमास्तुभ्यम्।
प्रणतीनां त्वयि वर्षाः श्रद्धावनतस्य शिरसो मे ।। 8 ।।

पृच्छा त्वयेह विहिता मद्विषया नात्र किञ्चिदाश्चर्यम्।
यदहं दीनः सुतरां दीनदयालुस्त्वमतिमात्रम् ।। 9 ।।

‘असदुल्लाहः ख़ानो’ हा हन्त स नावशिष्यतेलोके।

हा हन्त स कश्चिदहो सौन्दर्योपासको मधुपः ।। 10 ।।

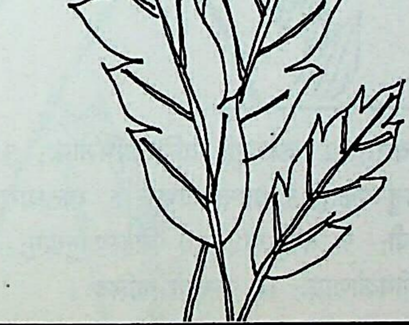

73

मुश़दः[1] अय ज़ौक़े असीरी[2], कि नज़र आता है
दाम ख़ाली, क़फ़से मुर्ग़े गिरफ्तार[3] के पास

जिगरे तश्नः-ए-आज़ार[4], तसल्ली न हुआ[5]
जू-ए-ख़ूँ हम ने बहाई[6] बुने हर ख़ार[7] के पास

मुँद गईं खोलते ही खोलते आँखें, हय, हय
ख़ूब वक्त आये तुम, इस 'आशिक़े बीमार[8] के पास

मैं भी रुक रुक के न मरता, जो ज़बाँ के बदले
दश्नः इक तेज़ सा होता, मेरे ग़मख्वार[9] के पास

दहने शेर[10] में जा बैठिये, लेकिन अय दिल
न खड़े हूजिये ख़ूबाने दिल आज़ार[11] के पास

देख कर तुझको, चमन बसकि नमू[12] करता है
ख़ुद बख़ुद पहुँचे है गुल, गोशः-ए-दस्तार[13] के पास

मर गया फोड़ के सर, ग़ालिबे बह्शी[14], हय हय
बैठना उसका वह आकर तेरी दीवार के पास

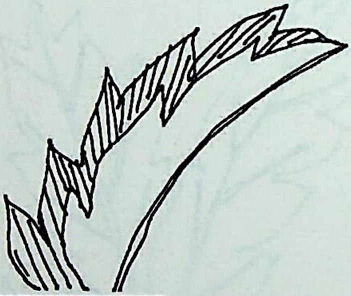

---

1. शुभः समाचारः; 2. कारागृहे बन्दित्वाभिलाषः; 3. निबद्धस्य विहगस्य पिञ्जरम्; 4. दुःखपिपासु यकृत्; 5. शान्तं नाभूत्; 6. रक्तधारा; 7. प्रत्येकं कण्टकस्य मूलम्; 8. रुग्णः प्रणयी; 9. समदुःखः; 10. सिंहस्य मुखम्; 11. हृत्पीडकः सुन्दरः; 12. विकासः; 13. उष्णीषकोणाग्रः; 14. उन्मत्तो ग़ालिबः।

73

सुसमाचारः, कारागृहाभिलाष ! न्ववेक्ष्यते पुरतः ।
पिञ्जर-निकटे रिक्तं दाम निबद्धस्य विहगस्य ।। 1 ।।

दुःखपिपासाक्लान्तं यकृदथ शान्तं न तावदिह समभूत् ।
कण्टकमूलेऽस्माभिर्नीता प्रत्येकमस्त्रझरी ।। 2 ।।

उन्मीलती पुनः पुनरस्याभूतां निमीलिते नयने ।
सुसमय एष प्राप्तो निकटे त्वं प्रेमरुग्णस्य ।। 3 ।।

रुद्धः पुनः पुनः सन् स्यां न मृतोऽहमपि चेद् गिरः स्थाने ।
निशितेव च्छुरिकैका मत्समदुःखस्य हस्ते स्यात् ।। 4 ।।

अयि हृद् ! वरमिह गत्वा स्थेयं सिंहस्य कस्यचिद् वदने ।
हृत्पीडकस्य न पुनः स्थेयं सुभगस्य सन्निकटे ।। 5 ।।

त्वद्दर्शनमुपलभ्य प्रविकसदुद्यानमेतदाभाति ।
उपयाति स्वयमेव प्रसूतमुष्णीषकोणाग्रम् ।। 6 ।।

'ग़ालिब' उन्मत्तो हा स्वशिरः प्रस्फोट्य पञ्चतां प्राप्तः ।
तस्यावस्थानमहो त्वद्भित्तेः पार्श्वमुपगत्य ।। 7 ।।

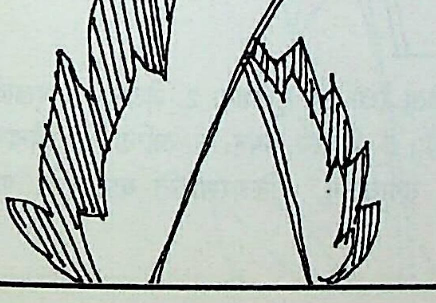

74

न लेवे गर ख़से जौहर[1], तरावत[2] सब्ज़ः-ए-ख़त[3] से
लगावे ख़ानः-ए-आईनः[4] में रू-ए-निगार[5] आतश[6]

फ़रोग़े हुस्न[7] से होती है हल्ले मुश्किले 'आशिक़[8]
न निकले शम'अ के पा[9] से, निकाले गर न ख़ार[10] आतश

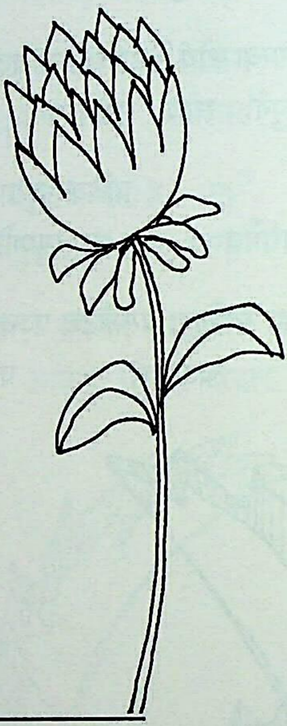

---

1. आयसस्य दर्पणस्य मार्जनेनोदिता रेखा सैव तृणकम्; 2. शैत्यम्; 3. मुखलोम; 4. दर्पण-शाला, काचगृहम्, हृदयमित्यर्थः; 5. प्रियस्य रूपम्; 6. अग्निः; 7. सौन्दर्यस्य कान्तिः; 8. प्रणयिजनस्य आपदः समाधानम्, निवारणमिति यावत्; 9. पदम्; 10. शूकम्।

74

रेखातृणकं शैत्यं मुखलोम्नो हन्त चेन्न गृह्णीयात् ।
काचगृहे प्रियरूपं नूनं प्रज्चालयेदग्निम् ।। 1 ।।

कान्त्या सौन्दर्यस्य प्रणयिन आपत् समाहिता भवति ।
निःसारयेन्न वह्निः शूकमपेयान्न दीपपदात् ।। 2 ।।

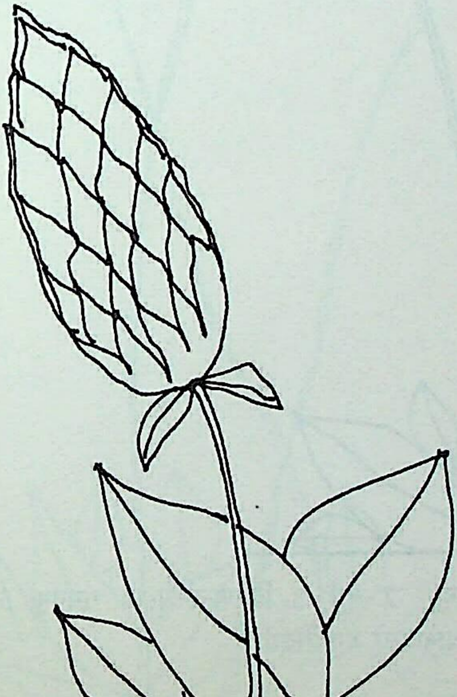

75

जादः-ए-रह[1] ख़ुर[2] को वक़्ते शाम है तारे शु'आ'अ[3]
चर्ख़[4] वा करता है[5] माहे नौ[6] से आग़ोशे विदा'अ[7]

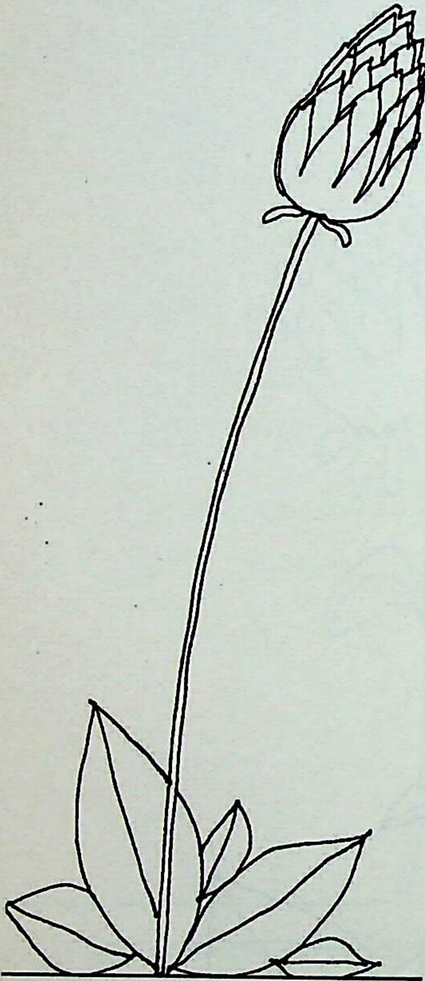

---

1. पथश्चिह्नम्; 2. सूर्यः 3. किरण-तन्त्री; 4. गगनम्; 5. अनावृतं करोति; 6. नवश्चन्द्रः; 7. प्रस्थानावसरे बाहुरित्यर्थः।

75

सायं सूर्यस्य कृते कर-तन्त्री जायते पथश्चिह्नम्।
उद्घाटयति व्योम प्रस्थान-भुजं नवं चन्द्रम् ॥ 1 ॥

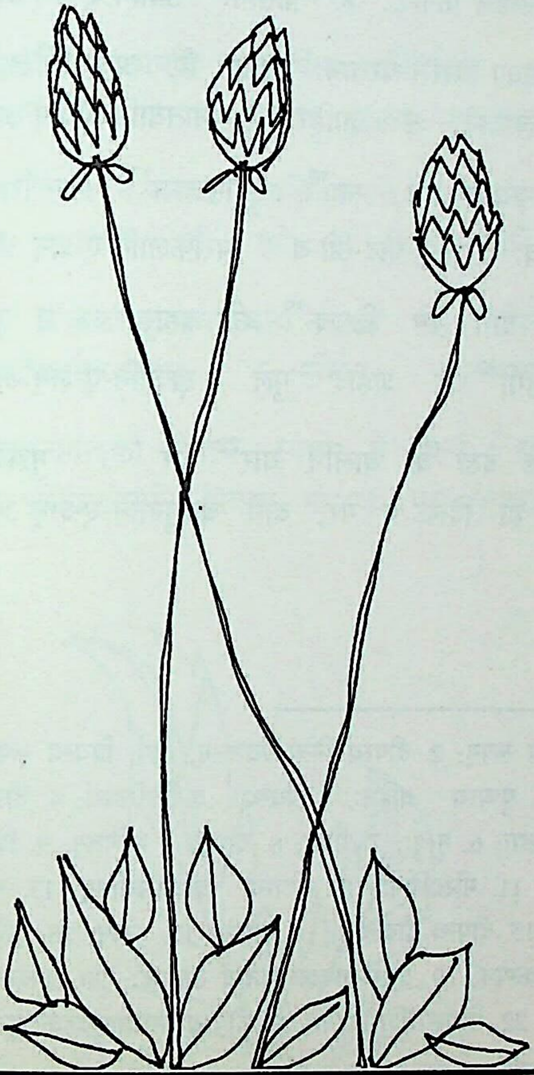

76

रुख़े निगार[1] से, है सोज़े जाविदानि-ए-शम्'अ[2]
हुई है आतशे गुल[3], आबे ज़िन्दगानि-ए-शम्'अ[4]

ज़बाने अहले ज़बाँ[5] में, है मर्ग[6] ख़ामोशी
यह बात बज़्म[7] में, रौशन हुई ज़बानि-ए-शम्'अ[8]

करे है सिर्फ़ ब ईमा-ए-शो'लः[9] क़िस्सः तमाम[10]
बतर्ज़े अह्ले फ़ना[11], है फ़सानः ख्व़ानि-ए-शम्'अ[12]

ग़म उसको हसरते परवानः[13] का है, अय शो'लः[14]
तेरे लरज़ने से ज़ाहिर है नातवानि-ए-शम्'अ[15]

तेरे ख़याल से रुह[16] एह्तिज़ाज़[17] करती है
ब जल्वः रेज़ि-ए-बाद-ओ-ब परफ़िशानि-ए-शम्'अ[18]

नशाते दाग़े ग़मे 'अिश्क़[19] की बहार, न पूछ
शिगुफ़्तगी[20] है शहीदे गुले ख़ज़ानि-ए-शम्'अ[21]

जले है देख के बालीने यार[22] पर मुझको
न क्यों हो दिल प मेरे, दाग़े बदगुमानि-ए-शम्'अ[23]

---

1. प्रियस्य रूपम्; 2. दीपस्य नित्यं ज्वलनम्, दीपः प्रियस्य रूपेण ईर्ष्यया नित्यं ज्वलतीत्यर्थः; 3. पुष्पस्य वह्निः, प्रियस्य कान्तिरित्यर्थ; 4. दीपस्य कृतेऽमृतम्; 5. भाषाविदां भाषा; 6. मृत्युः; 7. गोष्ठी; 8. दीपस्य भणितम्; 9. शिखायाः सङ्केतेन; 10 कथावशेषः; 11. मोक्षार्थिनः; 12. दीपस्य कथाभिधानम्; 13. पतङ्गस्याभिलाषः; 14. दीपशिखा; 15. दीपस्य दौर्बल्यम्; 16. आत्मा; 17. नृत्यम्; 18. शपे पवनस्य गत्या, शपे च दीपस्य कम्पेन; 19. प्रेमसन्तापकलङ्कजन्य आनन्दः; 20. प्रफुल्लत्वम्; 21. दीपहेमन्तपुष्पमुग्धम्; 22. प्रियस्य शिरोधानी; 23. दीपस्य मिथ्यासन्देहकलङ्कः ।

76

ज्वलनं दीपस्य सदा भवतीह प्रियतमस्य रूपेण।
अमृतं दीपस्य कृतेऽभूदिव वह्निः प्रसूनस्य ।। 1 ।।

भाषाविद्भाषायां मौनं किं नाम, मृत्युरिति, नान्यत्।
स्फुटतामेतज्ज्ञातं गोष्ठ्यां दीपस्य भणितेन ।। 2 ।।

स्वकथाशेषं कुरुते स्वशिखासङ्केतमात्रतो दीपः।
मोक्षार्थिनामिवैतत् कथाभिधानं नु दीपस्य ।। 3 ।।

शोकस्तस्मिन् प्रभवति पतङ्गतर्षस्य कश्चिदिति मन्ये।
दीपशिखे तव कम्पाद् व्यक्ता दीपस्य यदशक्तिः ।। 4 ।।

आत्मा तव कल्पनया नृत्यन्निव भाति हन्त हर्षभरः।
गत्या पवनस्य शपे शपे च दीपस्य कम्पेन ।। 5 ।।

प्रेम्णः शोककलङ्कप्रभवानन्दस्य पृच्छ मा विषये।
दीपकहैमनसुमनोमुग्धं मन्ये प्रफुल्लत्वम् ।। 6 ।।

मिथ्यासन्देहाङ्को दीपस्य स्यान्न मे कथं हृदये।
दृष्ट्वाऽधिशिरोधानि प्रियस्य मां यः पुरो ज्वलति ।। 7 ।।

77

बीमे रक़ीब[1] से नहीं करते विदा'-ए-होश[2]
मजबूर याँ तलक हुए, अय इख़्तियार[3], हैफ़[4]

जलता है दिल, कि क्यों न हम इक बार जल गये
अय नातमामि-ए-नफ़से शो'लः बार[5], हैफ़

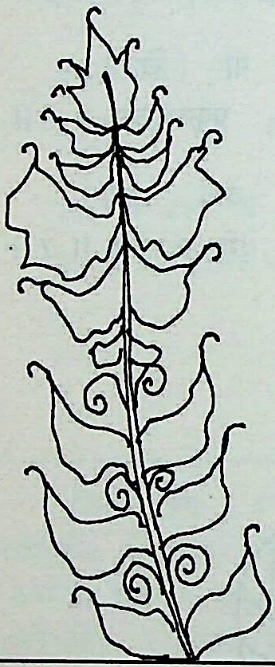

---

[1] प्रतिद्वन्द्वितो भयम्; [2] चैतन्यस्य त्यागः; [3] सामर्थ्यम्; [4] धिक्; [5] ज्वाल-प्रवर्षिणः श्वसितकस्य पूर्णत्वम्।

77

प्रस्थातुं चैतन्यं विवशीकुर्मो न वैरिणो भीताः।
एतावदवधि विवशा हा धिक् सामर्थ्य ! कथमेते ॥ 1 ॥

न कथं दग्धं सकृदहमभवमितिज्वलति हन्त हृदयमिदम्।
धिगपूर्णत्वं ज्वालप्रवर्षिणः श्वसितकस्य तव ॥ 2 ॥

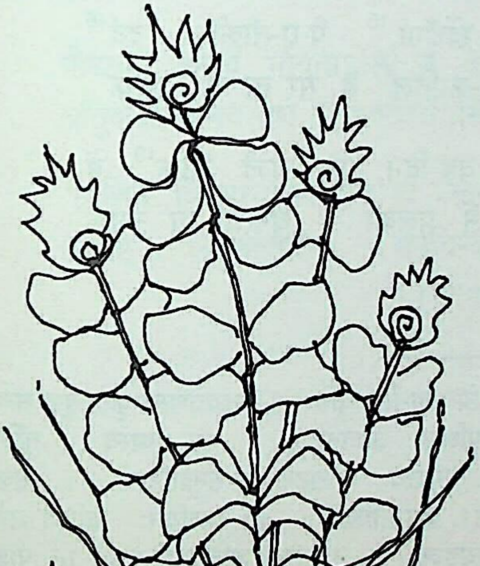

78

ज़ख़्म पर छिड़कें कहाँ, तिफ़्लाने बेपरवा[1], नमक
क्या मज़ा होता, अगर पत्थर में भी होता, नमक

गर्दे राहे यार[2] है सामाने नाज़े ज़ख़्मे दिल[3]
वर्नः होता है जहाँ में किस क़दर पैदा, नमक

मुझको अरज़ानी[4] रहे, तुझको मुबारक हूजियो
नालः-ए-बुलबुल[5] का दर्द, और ख़न्दः-ए-गुल[6] का नमक

शोरे जौलाँ[7] था किनारे बह्र[8] पर किसका, कि आज
गर्दे साहिल[9] है, बज़ख़्मे मौज़ः-ए-दरिया[10], नमक

दाद देता है[11] मेरे ज़ख़्मे जिगर की, वाह, वाह
याद करता है मुझे, देखे है वह जिस् जा, नमक

छोड़कर कर जाना तने मजरूहे 'आशिक़[12], हैफ़ है
दिल तलब करता है[13] ज़ख़्म, और माँगे है आ'ज़ा[14], नमक

ग़ैर की मिन्नत न खेंचूँगा,[15] पै-ए-तौक़ीरे दर्द[16]
ज़ख़्म मिस्ले ख़न्दः-ए-क़ातिल[17] है, सर ता पा[18] नमक

याद है, ग़ालिब, तुझे वह दिन, कि वज्दे ज़ौक़[19] में
ज़ख़्म से गिरता, तो मैं पलकों से चुनता था नमक

---

1. विचारमूढा बालाः; 2. प्रिय-मार्गस्य धूलिः; 3. हृदयव्रणस्य कृते सुख-सम्भारः; 4. सुलभम्; 5. 'बुलबुला'ख्यस्य पक्षिण आर्तनादः; 6. पुष्पस्य सुस्मितम्; 7. आगमनजन्य उत्सवः; 8. समुद्रस्य तटम्; 9. समुद्रतटस्य सैकतम्; 10. समुद्रतरङ्गव्रणानां कृते; 11. प्रशंसतीत्यर्थः; 12. प्रणयिनः व्रणितं शरीरम्; 13. अपेक्षत इत्यर्थः; 14. अङ्ग प्रत्यङ्गञ्च; 15. न कृतज्ञो भविष्यामीत्यर्थः; 16. पीडायाः सम्मानार्थम्, क्वचित् 'तौफ़ीर' इतिपाठः, तदनुसारेण पीडाया आधिक्यार्थमित्यर्थः; 17. घातुकस्य हसितमिव; 18. आपादमस्तकम्ः; 19. रस-मदः ।

78

बाला विचारमूढाः कुतो व्रणे लवणमत्र विकिरेयुः।
अजनिष्यत शर्म कियद् यद्यश्मनि लवणमभविष्यत् ॥ 1 ॥

हृदयव्रणस्य भूतेः सम्भारो नाम यत् प्रियाध्वरजः।
उत्पद्यते जगत्यां कियदधिकं त्वन्यथा लवणम् ॥ 2 ॥

इह 'बुल्बुला'र्तनादव्यथितं स्याज्ञगति मत्कृते सुलभम्।
वर्धापना, कृते तव लवणं सुमनःसुहसिताख्यम् ॥ 3 ॥

कस्यागमनादुत्सव आसीदद्येह सागरस्य तटे।
लवणं स्यात् तटसैकतमब्धेर्भङ्गव्रणस्य कृते ॥ 4 ॥

यकृतो व्रणं प्रशंसति मदीयमिति हन्त धन्यधन्योऽहम्।
मम स स्मरति ततः खलु लवणं यत एव पश्यति सः ॥ 5 ॥

खेदो महान् प्रणयिनो व्रणितां त्यक्त्वा तनुं क्वचिद्‌गमनम्।
हृदयं व्रणार्थि तस्याङ्गं प्रत्यङ्गञ्च लवणार्थि ॥ 6 ॥

पीडाया मानार्थं भविताऽस्मि न वैरिणः कृतज्ञोऽहम्।
घातुकहसितमिव व्रण आपादशिरोऽस्ति मे लवणम् ॥ 7 ॥

'ग़ालिब', दिनस्य तस्य स्मरसि त्वं रसमदान्वितो यस्मिन्।
व्रणतो निपतल्लवणं समचिन्वं पक्ष्मभिर्यदहम् ॥ 8 ॥
(यदहं चेष्यामि पक्ष्माग्रैः)

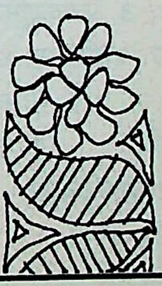

79

आह को चाहिये इक 'उम्र[1], असर होने तक
कौन जीता है तेरी ज़ुल्फ़ के सर होने तक[2]

दामे हर मौज[3] में है, हल्क़ः-ए-सद कामे निहंग[4]
देखें क्या गुज़रे है क़तरे[5] प, गुहर[6] होने तक

'आशिक़ी[7] सब्र तलब[8] और तमन्ना[9] बेताब[10]
दिल का क्या रंग करूँ, ख़ूने जिगर[11] होने तक

हमने माना कि तग़ाफ़ुल[12] न करोगे, लेकिन
ख़ाक हो जायेंगे हम, तुमको ख़बर होने तक

परतवे ख़ुर[13] से है शबनम[14] को, फ़ना की ता'लीम[15]
मैं भी हूँ, एक 'अिनायत की नज़र[16] होने तक

यक नज़र बेश नहीं[17], फ़ुर्सते हस्ती[18] ग़ाफ़िल[19]
गर्मि-ए-बज़्म[20] है, इक रक़्से शरर[21] होने तक

ग़मे हस्ती[22] का, असद किससे हो जुज़ मर्ग[23] 'अिलाज
शम'अ हर रंग में जलती है सहर[24] होने तक

---

1. पुरुषायुषं यावदित्यर्थः; 2. अलकानां विस्रंसनं यावत्, प्रेम्णः सफलत्वं यावदित्यर्थः; 3. प्रत्येकमूर्मिजाले; 4. मकरशतस्यायतानि मुखानि; 5. पृषत्कणः; 6. मुक्ता; 7. प्रणयित्वम्; 8. सन्तोषापेक्षि; 9. कामना; 10. अधीरा; 11. यकृतो वधः; 12. उपेक्षा; 13. सूर्यस्य प्रकाशः; 14. हिमम्, तुषारः; 15. नश्वरत्वपाठः; 16. कृपा-दृष्टिः; 17. क्षणादधिक; 18. अस्तित्वस्य अवकाशः; 19. प्रमत्तः; 20 गोष्ठ्याश्चाकचिक्यम्; 21. स्फुलिङ्गनृत्यम्; 22. अस्तित्व-शोकः; 23. मृत्युमतिरिच्य; 24. उषः।

79

आर्तस्वरः प्रभवितुं पुरुषायुषमेकमलमपेक्षेत।
जीवति तवालकानां कः खलु विस्रंसनं यावत् ॥ 1 ॥

प्रत्येकमूर्मिजाले मकरशतस्यायतानि वदनानि।
पश्येम, किमिव बिन्दुर्मुक्तात्वं यावदनुभवति ॥ 2 ॥

प्रणयित्वस्यापेक्ष्यं धैर्यं परमस्ति कामनाऽधीरा।
यकृतो घातं यावत् क उपायः स्यान्नु हृदयस्य ॥ 3 ॥

कर्तासि त्वमुपेक्षां नेति वयं कल्पयाम एव परम्।
भवितास्मो मृदि लीनास्तुभ्यमितः सूचनां यावत् ॥ 4 ॥

तरणेः प्रकाशतो हिममभ्यस्यति नश्वरत्वपाठमिह।
अहमप्यस्मि तवैकामनुग्रहाख्यां दृशं यावत् ॥ 5 ॥

अधिकः क्षणाज्जगत्यां जीवनकालः प्रमत्त! नैकस्मात्।
एकं स्फुलिङ्गनृत्यं यावद् गोष्ठ्याश्चमत्कारः ॥ 6 ॥

मृत्युमृते'ऽसद' केनास्तित्वशुचः स्यादितो नु भैषज्यम्।
कल्यं यावद् दीपः प्रत्येकं वर्णतो ज्वलति ॥ 7 ॥

80

गर तुझको है यक़ीने इजाबत[1], दु'आ न माँग
या'नी बिग़ैरे यक दिले बेमुद्द'आ[2], न माँग

आता है दाग़े हसरते दिल[3] का शुमार[4] याद
मुझसे मेरे गुनह[5] का हिसाब, अय ख़ुदा न माँग

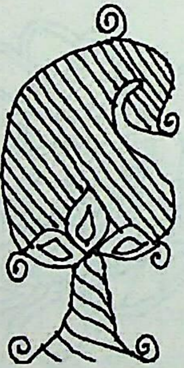

---

1. स्वीकृतिविषये विश्वासः; 2. निष्कामं हृदयमतिरिच्य; 3. हृदयाभिलाषकलङ्कः; 4. संख्या; 5. पापानि।

80

स्वीकृतिविश्वासश्चेत् त्वयि, नैव प्रार्थयस्व किमपीह।
अर्थान्निष्कामममृते न हृदेकं प्रार्थयस्व ततः ।। 1।।

स्वहृदभिलाषाङ्कानां संख्या स्मृतिवर्त्म मे नु समुपैति।
ईश्वर ! मत्पापानां संख्यां मां हन्त मा पृच्छ ।। 2।।

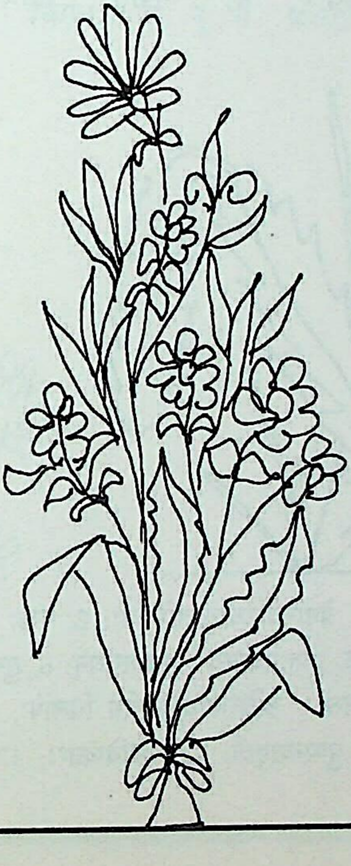

81

है किस क़दर. हलाके फ़रेबे वफ़ा-ए-गुल[1]
बुलबुल[2] के कार-ओ-बार[3] प हैं खन्दःहा-ए-गुल[4]

आज़ादि-ए-नसीम[5] मुबारक, कि हर तरफ़
टूटे पड़े हैं हल्क़ः-ए-दामे हवा-ए-गुल[6]

जो था, सो मौजे रँग[7] के धोके में रह गया
अय वाये, नालः-ए-लबे-खूनीं नवा-ए-गुल[8]

ख़ुश हाल उस हरीफ़े सियह मस्त[9] का, कि जो
रखता हो मिस्ले सायः-ए-गुल[10], सर ब पा-ए-गुल[11]

ईजाद[12] करती है उसे तेरे लिये, बहार
मेरा रक़ीब[13] है, नफ़से 'अित्र सा-ए-गुल[14]

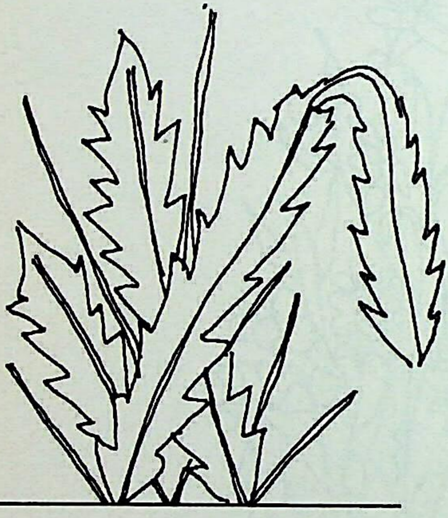

---

1. सुमनसां प्रेमनिर्वाहच्छलनाभिर्हतः; 2. एकः पक्षी; 3. रुदितादिव्यवहारः; 4. सुमनसां हासाः; 5. प्रातःपवनस्य स्वातन्त्र्यम्; 6. सुमनसां गन्धस्य बन्धशृङ्खला; 7. वर्णतरङ्गः; 8. सुमनसां रुधिरार्द्राधरनिर्गतो विलापः; 9. मधुमत्तस्य प्रतिद्वन्द्वी; 10. पुष्पच्छायेव; 11. पुष्पस्याङ्घ्रौ; 12. आविष्कारः; 13. प्रतिद्वन्द्वी; 14. फुष्पसार-सुरभि श्वसितम्;

81

विधिना केन सुमनसां छलनाभिर्हन्त बुल्बुलः स हतः।
तद्रुदितादावेताः सुमनस आतन्वते हासम् ॥ 1 ॥

वर्धापना अहर्मुखपवनस्वातन्त्र्य सर्वतो दिक्षु।
सम्प्रति पुष्प-सुगन्धः प्रवहति यद् बन्धनिर्मुक्तः ॥ 2 ॥

वर्णतरङ्गच्छलितोऽतिष्ठत् सुतरामितो य एवासीत्।
हन्त सुमनसामधरे विलाप आसीत् स रुधिरार्द्रे ॥ 3 ॥

मत्तस्य तस्य मधुना प्रतिपक्षस्येह किमपि सौभाग्यम्।
शिर उपनयेत् स्वकीयं पुष्पच्छायेव पुष्पाङ्घ्रौ ॥ 4 ॥

आविष्करोति मन्ये त्वदर्थमेनं वसन्त इह जगति।
सुमनःसारसुरभितः श्वसनः स नु मे प्रतिद्वन्द्वी ॥ 5 ॥

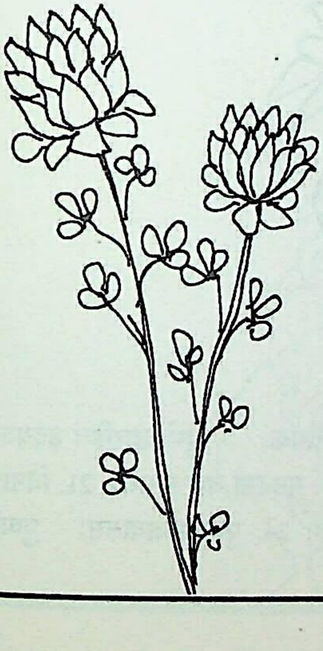

शर्मिन्दः[15] रखते हैं मुझे बादे बहार[16] से
मीना-ए-बे शराब-ओ-दिले बे हवाए-गुल[17]

सतवत[18] से तेरे जल्वः-ए-हुस्ने-ग़यूर[19] की
ख़ूँ है मेरी निगाह में रंगे अदा-ए-गुल[20]

तेरे ही जल्वे का है यह धोका, कि आज तक
बे इख़्तियार[21] दौड़े है गुल दर क़फ़ा-ए-गुल[22]

ग़ालिब, मुझे है उससे हम आग़ोशी आरज़ू[23]
जिसका ख़याल है गुले जैबे क़बा-ए-गुल[24]

---

[15] लज्जितः; [16] वासन्तिकः पवनः; [17] मधुरहितश्चषकः पुष्पेच्छारहितं हृदयञ्च; [18] प्रभावः, प्रतापः; [19] अपत्रपिष्णुः रूपच्छविः; [20] सुमनसां वर्ण इत्यर्थः; [21] विनाऽवरोधम्; [22] पुष्पं पुष्पमनु; [23] परिरम्भस्याभिलाषः; [24] पुष्पाङ्गरक्षवाससः पुष्पम्; 'अङ्गरक्षम्ः' (= अँगरखा)।

मां द्वयमेतत् कुरुते लज्जितमनिलादहो सुवासन्तात्।
मदिरारहितश्चषको हृच्च विरहितं प्रसून-तृषा ॥ 6॥

त्वदपत्रपिष्णुरूपच्छवेः प्रतापोऽयमीदृशो येन।
प्रतिभाति मे सुमनसां वर्णो रक्तस्य वर्ण इव ॥ 7॥

कान्तेस्तवैव नूनं तदिन्द्रजालं यदेतदद्यापि।
धावति विनाऽवरोधं पुष्पं किञ्चिन्नु पुष्पमनु ॥ 8॥

तस्य दृढः परिरम्भो 'ग़ालिब' मे तावदीप्सितो जगति।
पुष्पाङ्गरक्षवासःपुष्पं खलु चिन्तनं यस्य ॥ 9॥

82

ग़म नहीं होता है आज़ादों को, बेश अज़ यक नफ़स[1]
बर्क़[2] से करते हैं रौशन, शम्'-ए-मातम ख़ानः[3] हम

महफ़िलें बरहम करे हैं[4], गंजफ़ः बाज़े ख़याल[5]
हैं वरक़ गर्दानि-ए-नैरंगे यक बुतख़ानः[6] हम

बावजूदे यक जहाँ, हंगामः पैदाई[7] नहीं
हैं चराग़ाने शबिस्ताने दिले परवानः[8] हम

ज़ो'फ़[9] से है, ने क़ना'अत[10] से, यह तर्के जुस्तजू[11]
हैं वबाले तकयः गाहे हिम्मते मर्दानः[12] हम

दाइमुल हब्स[13] इसमें हैं लाखों तमन्नायें, असद
जानते हैं सीनः-ए-पुरख़ूँ[14] को ज़िन्दाँ ख़ानः[15] हम

---

1. क्षणादधिकम्; 2. तडित्; 3. शोकगृहस्य दीपः; 4. विकीर्णतां नयति; 5. 'वर्तुल' 'ताश'क्रीडाकुतुकी; 6. चित्रपुस्तकस्य परिवर्तमानानि पृष्ठानि, यत्र स्वयमेका मूर्तिशालाऽङ्किता; 7. उत्पत्तिः; 8. पतङ्गहृदय-विश्रामगृहस्य दीपावली; 9. दौर्बल्यम्; 10. सन्तोषः; 11. जिज्ञासात्यागः; 12. पुरुषोचितसाहसविरहिताः; 13. आजीवनकारावासगताः; 14. रक्तरञ्जितं व्रणितं वक्षः; 15. कारागृहम्।

82

शोकं नानुभवन्ति स्वतन्त्रमनसः किल क्षणादधिकम्।
शोकनिकेतनदीपस्तडिता प्रज्वाल्यतेऽस्माभिः ॥ 1 ॥

गोष्ठीश्चिन्तन‘ताश’क्रीडाकुतुकी विकीर्णतां नयति।
वयमिह मूर्तिगृहाङ्कितचित्रग्रन्थस्य पृष्ठानि ॥ 2 ॥

कोलाहलो न, यद्यपि तिष्ठत्यस्मासु किमपि जगदेकम्।
वयमिह हृद्विश्रामागारकदीपाः पतङ्गस्य ॥ 3 ॥

अनुसन्धानत्यागो दौर्बल्यादस्ति, नैव सन्तोषात्।
वयमापत्तिस्थानं पुरुषोचितसाहसस्य कृते ॥ 4 ॥

इत आजीवनकारावासगता लक्षशो न आकाङ्क्षाः।
बन्दीगृहमिति विद्मो व्रणसङ्गत‘मसद’ वक्षः स्वम् ॥ 5 ॥

83

ब नालः[1] हासिले दिल बस्तगी[2] फ़राहम कर[3]
मता'-ए-ख़ानः-ए-ज़ंजीर[4], जुज़ सदा[5], मा'लूम[6]

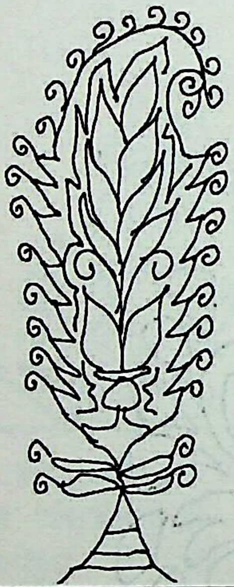

---

1. आर्तनादेन; 2. मनोरञ्जनार्थः सम्भारः; 3. एकीकुरु; 4. शृङ्खलगृहस्य सम्पत्; 5. झङ्कारमतिरिच्य; 6. किमपि नेत्यर्थः।

83

आर्तस्वरेण मनसो रञ्जनसम्भारमाप्नुहि त्वमिह ।
शृङ्खलगृहस्य किं स्यात् सम्पज् झङ्कारमतिरिच्य ।। 1 ।।

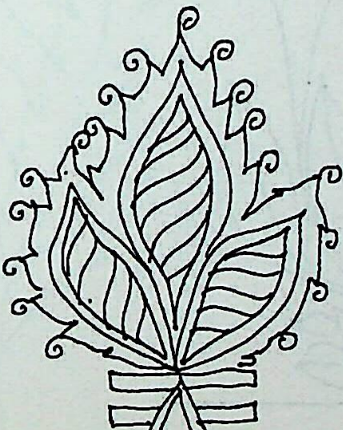

84

मुझको दयारे ग़ैर[1] में मारा, वतन से दूर
रख ली मेरे ख़ुदा ने, मेरी बेकसी की शर्म

वह हल्क़ःहा-ए-जुल्फ़[2], कमीं[3] में है, अय ख़ुदा
रख लीजो मेरे दा'वः-ए-वारस्तगी[4] की शर्म

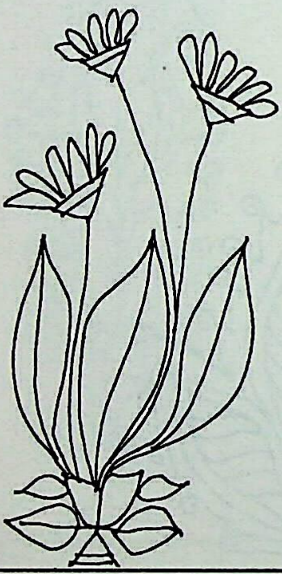

---

1. परदेशः; 2. अलकानां लहर्यः; 3. अवसरस्य प्रतीक्षा; 4. स्वातन्त्र्याधिकारः।

84

दूरे स्वदेशतो मां परदेशं प्राप्तमेवमवधीद् यत्।
मत्प्रभुणा भृशमविता मद्वैवश्यस्य मर्यादा ॥ 1 ॥

कचकुञ्चितानि तानि प्रतीक्षमाणानि हे प्रभो ! सन्ति।
रक्षाभरस्त्वयीतो मत्स्वातन्त्र्याधिकारस्य ॥ 2 ॥

85

लूँ वाम[1] बख़्ते ख़ुफ्तः[2] से, यक ख़्वाबे ख़ुश[3], वले[4]
ग़ालिब, यह ख़ौफ़[5] है, कि कहाँ से अदा करूँ

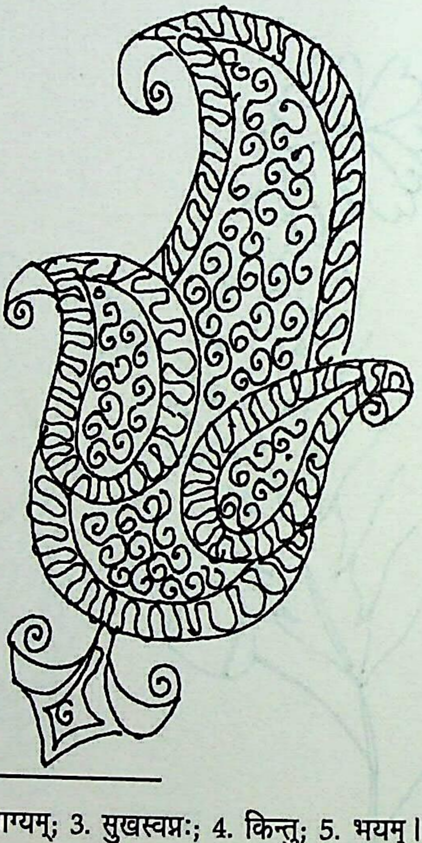

---

1. ऋणम्; 2. सुप्तं भाग्यम्; 3. सुखस्वप्नः; 4. किन्तु; 5. भयम्।

85

भाग्यात् सुप्तादेकं गृह्णीयामृणमहं सुखस्वप्नम्।
'ग़ालिब' किन्तु भयं मे कुतोऽनृणः स्यां प्रदायेति ॥ 1 ॥

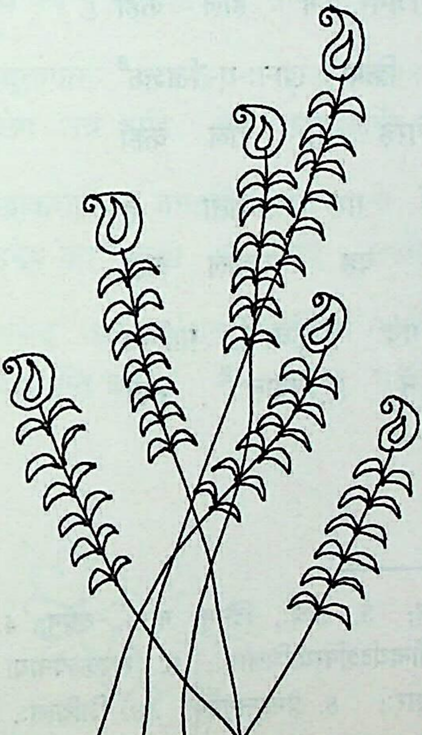

86

वह फ़िराक़[1] और वह विसाल[2] कहाँ
वह शब-ओ-रोज़-ओ-माह-ओ-साल[3] कहाँ

फ़ुर्सते कार-ओ-बारे शौक़[4] किसे
ज़ौक़े नज़्ज़ारः-ए-जमाल[5] कहाँ

दिल तो दिल, वह दिमाग़ भी न रहा
शोरे सौदा-ए-ख़त्त-ओ-ख़ाल[6] कहाँ

थी वह इक शख़्स के तसव्वुर से
अब वह र’अनाइ-ए-ख़याल[7] कहाँ

ऐसा आसाँ नहीं, लहू रोना
दिल में ताक़त, जिगर में हाल कहाँ

हमसे छूटा क़िमार ख़ानः-ए-’अिश्क़[8]
वाँ जो जावें, गिरह में माल कहाँ

फ़िक्रे दुनिया में सर खपाता हूँ
मैं कहाँ और यह वबाल कहाँ

मुज़महिल[9] हो गये क़ुवा[10], ग़ालिब
वह ’अनासिर[11] में ए’तिदाल[12] कहाँ

---

1. वियोगः; 2. मिलनम्; 3. रात्रिः, दिनम्, मासः, वर्षम्; 4. जगतो व्यापारस्य कृतेऽवकाशः; 5. सौन्दर्यदर्शनस्याभिलाषः; 6. रूपकल्पनाया उन्माद उल्लासश्च; 7. कल्पनायाः शृङ्गारः; 8. प्रेमद्यूतगृहम्; 9. शिथिलाः, श्रान्ताः; 10. शक्तयः; 11. पञ्च भूतानि; 12. सन्तुलनम्।

86

हन्त कुतः स वियोगो हन्त कुतस्तादृशञ्च तन्मिलितम्।
सा रात्रिस्तच्च दिनं स च मासस्तत् कुतो वर्षम् ॥ 1 ॥

जगतो व्यापारार्थं कस्य समीपेऽवकाश एतर्हि।
सौन्दर्यदर्शनस्य क्व चाभिलाषस्तथैतर्हि ॥ 2 ॥

दूरे हृदयस्य कथा, मस्तिष्कं नावशिष्यते तन्नु।
स च रूपकल्पनायाः कुत उन्मादः स चोल्लासः ॥ 3 ॥

योऽनुध्यानेनासीज्जनस्य निजकस्य कश्चिदेकस्य।
सम्प्रति स कल्पनाया आकलनीयः क्व शृङ्गारः ॥ 4 ॥

यस्मिन्नश्रुस्थाने रुधिरं स्यात् तन्न रोदनं सुकरम्।
हृदये क्व नु सा शक्तिः सामर्थ्यं वा कुतो यकृति ॥ 5 ॥

प्रेमद्यूतागारं हन्त परित्यक्तमात्मनाऽस्माभिः।
गच्छेम तत्र यदि चेद् ग्रन्थावस्ति क्व दीनारः ॥ 6 ॥

दुःखाकरोमि जगतश्चिन्तायामात्मनो नु मस्तिष्कम्।
अहमेष क्व तथा च क्वेदं ह्यस्तीह रणरणकम् ॥ 7 ॥

'ग़ालिब' शक्तय एताः शैथिल्यं सम्प्रतीह सम्प्राप्ताः।
तादृशमस्ति क्व च मे पञ्चसु भूतेषु सन्तुलनम् ॥ 8 ॥

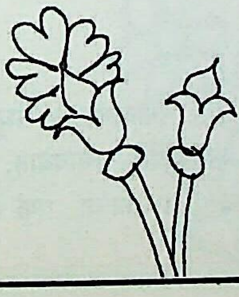

87

की वफ़ा[1] हम से, तो ग़ैर उसको जफ़ा[2] कहते हैं
होती आई है, कि अच्छों को बुरा कहते हैं

आज हम अपनी परीशानि-ए-ख़ातिर[3] उनसे
कहने जाते तो हैं, पर देखिये, क्या कहते हैं

अगले वक़्तों के हैं यह लोग, इन्हें कुछ न कहो
जो मै-ओ-नग़्मः[4] को, अन्दोह रुबा[5] कहते हैं

दिल में आ जाये है, होती है जो फ़ुर्सत ग़श[6] से
और फिर कौन से नाले[7] को रसा[8] कहते हैं

है परे सरहदे इदराक[9] से, अपना मस्जूद[10]
क़िबले[11] को अहले नज़र क़िबलः नुमा[12] कहते हैं

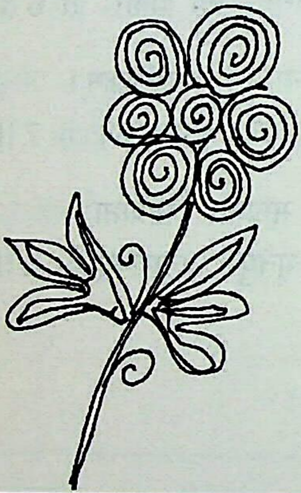

---

1. सद्भावस्नेहव्यवहारः; 2. निर्दयत्वम्; 3. मनोव्यथा; 4. मधु सङ्गीतञ्च; 5. शोकापहारि वस्तु; 6. मूर्च्छा; 7. आर्तनादः; 8. कृतप्रवेशः, प्रभाववान्; 9. ज्ञानस्य सीमा, बुद्धेः परत इत्यर्थः; 10. आराध्यः, प्रणम्यः; 11. का'बा, एकं तीर्थस्थलम्; 12. का'बा इत्यस्य दिग्दर्शकं साधनम्;

87

सद्भावोऽस्मासु कृतस्तेन परे निर्दयत्वमित्याहुः।
लोकप्रवृत्तिरेषा सतोऽभिदधते ह्यसन्त इति ॥ 1॥

गच्छामः स्वव्यथितं विनिवेदयितुं तमद्य हन्त वयम्।
विनिवेदयाम एते किमिति द्रष्टव्यमेतर्हि ॥ 2॥

एतान् कथय न किञ्चिद् विगतस्यैते जना नु कालस्य।
शोकापहारि वस्त्विति मधु सङ्गीतञ्च ये प्राहुः ॥ 3॥

मूर्च्छायां विरतायां प्रविशति हृदयं यदेष सरलतया।
आर्तस्वरश्च कः पुनरुच्यत आप्तप्रवेश इति ॥ 4॥

आराध्यः सोऽस्माकं तिष्ठति बुद्धेः सदैव यः परतः।
'का'बा'माहुः का'बा' - दिग्दर्शकयन्त्रमाप्तदृशः ॥ 5॥

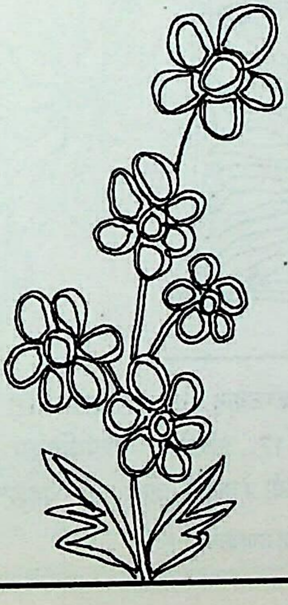

पा-ए-अफ़गार[13] प, जब से तुझे रह्म आया है
खारे रह[14] को तेरे हम, मेह्र गिया[15] कहते हैं

इक शरर[16] दिल में है, उससे कोई घबरायेगा क्या
आग मतलूब[17] है हमको, जो हवा कहते हैं

देखिए लाती है उस शोख़[18] की नख़्वत[19], क्या रंग
उसकी हर बात प हम, नामे ख़ुदा, कहते हैं

वह्शत-ओ-शेफ़्तः[20] अब मरसियः[21] कहवें, शायद
मर गया ग़ालिबे आशुफ़्तः नवा[22], कहते हैं

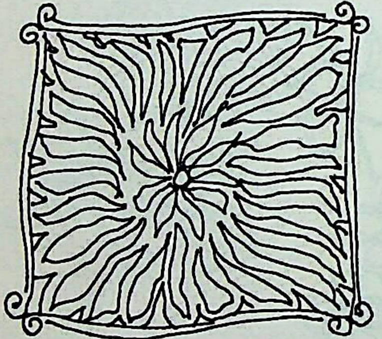

---

[13] आहतौ चरणौ; [14] मार्ग-कण्टकम्; [15] तृणविशेषः (स यस्य सविधे भवति तं जना अनुगृह्णन्ति); [16] स्फुलिङ्गः; [17] अभिप्रेतः, तात्पर्यविषयः; [18] दुर्ललितः; [19] दर्पः; [20] ग़ालिबस्य समकालिकौ कवी (ग़ुलाम अली ख़ाँ 'वह्शत' तथा नवाब मुस्तफ़ा ख़ाँ शेफ़्तः); [21] शोकगीतम्; [22] करुणकण्ठः।

आहतयोः पदयोर्मे यतो नु जातोऽसि हन्त करुणार्द्रः।
'मेह्र गिये'ति वदामस्तदध्वनः कण्टकानि ततः ॥ 6॥

हृदये स्फुलिङ्ग एकस्ततो नु किं हन्त कोऽपि भीतः स्यात्।
अग्निरभिप्रेतो नः पवनस्त्वभिधीयते योऽयम् ॥ 7॥

दर्पो दुर्ललितस्य द्रष्टव्यं तस्य दर्शयेत् किन्नु।
प्रत्येकं तद्वचसि प्रभोर्वयं नाम गृह्णीमः ॥ 8॥

अधुनेह शोकगीतं गायेतां 'वहशतश्च' 'शेफ्ता' च।
करुण-स्वरः स 'ग़ालिब' आप्तः पञ्चत्वमित्याहुः ॥ 9॥

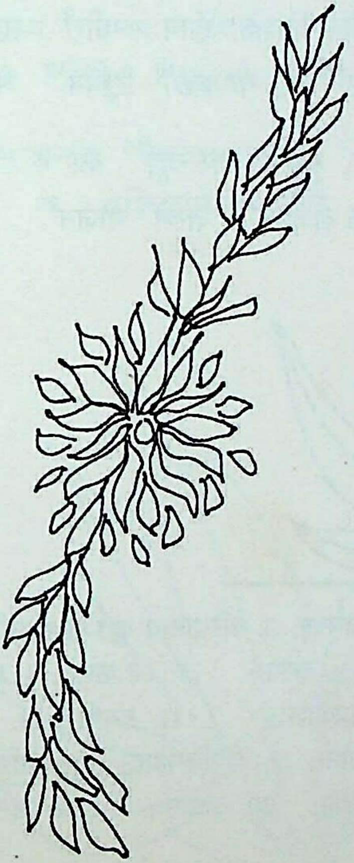

88

आबरू[1] क्या ख़ाक उस गुल की, कि गुलशन में नहीं
है गरीबाँ[2] नंगे पैराहन[3], जो दामन में नहीं

ज़ो’फ़[4] से, अय गिरियः[5], कुछ बाक़ी मेरे तन में नहीं
रंग होकर उड़ गया, जो ख़ूँ, कि दामन में नहीं

हो गये हैं जम’अ, अज्ज़ा-ए-निगाहे आफ़ताब[6]
ज़र्रे[7], उसके घर की दीवारों के रौज़न में नहीं

क्या कहूँ तारीकि-ए-ज़िन्दाने ग़म[8], अंधेर है
पंबः[9] नूरे सुब्ह[10] से कम, जिसके रौज़न[11] में नहीं

रौनक़े हस्ती[12] है ’अिश्क़े ख़ानः वीराँ साज़[13] से
अंजुमन[14] बे शम्’अ[15] है, गर बर्क़[16] ख़िर्मन[17] में नहीं

ज़ख़्म[18] सिलवाने से, मुझ पर चारः जूई[19] का है ता’न[20]
ग़ैर समझा है, कि लज़्ज़त[21] ज़ख़्मे सोज़न[22] में नहीं

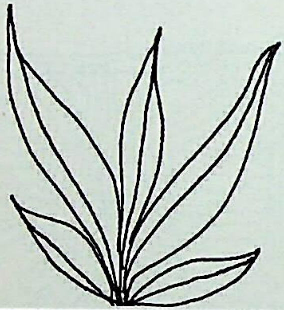

---

1. सम्मानः; 2. गलवसनम्; 3. परिधानस्य कृते लज्जाकरमित्यर्थः; 4. दौर्बल्यम्; 5. रुदितम्; 6. सूर्यस्य दृशः कणाः; 7. रजःकणाः; 8. दुःखकारागृहान्धकारः; 9. कार्पासम्; 10. प्रभातप्रकाशः; 11. गवाक्षः; 12. अस्तित्वस्य प्रकाशः; 13. नैर्जन्यकारकं प्रेम; 14. गोष्ठी; 15. दीपविरहिता; 16. तडित्; 17. खलधान्यम्; 18. व्रणः; 19. भैषज्याश्रयणम्; 20. उत्प्रासः; 21. आस्वादः, सुखानुभवः; 22. सीवनजन्यः व्रणः;

88

उद्याने न सुमनसो यास्तासां हन्त को नु सम्मानः।
गलवसनं लज्ञायै यत् परिधानाद् भवेद् दूरे ॥ 1 ॥

अयि रुदित ! मम शरीरे दौर्बल्यान्नावशिष्यते किमपि।
वर्णीभूय विलीनं तदञ्चले नास्ति यद् रक्तम् ॥ 2 ॥

सूर्यस्य दृक्कणा इत एकीभूता निलीय तिष्ठन्ति।
तद्गृहभित्तिगवाक्षे रजःकणाः सन्ति न ह्येते ॥ 3 ॥

निजदुःखबन्धनालयतमसो विषये वदानि किमिवेह।
यस्य प्रभातकिरणान्न्यूनं न गवाक्षकार्पासम् ॥ 4 ॥

गृहनैर्जन्यकरेण प्रेम्णा रोचिष्णु कल्पतेऽस्तित्वम्।
खलधान्ये न तडिच्चेद् दीपविरहिताऽस्ति सङ्गोष्ठी ॥ 5 ॥

व्रणसीवनाश्रयान्मयि भैषज्याश्रयणजं कटाक्षितकम्।
व्रणसीवने न कश्चिदास्वाद इति द्विषन् वेत्ति ॥6॥

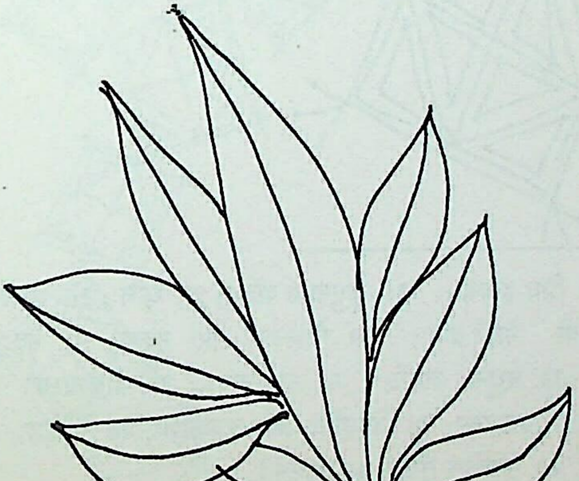

बसकि हैं हम इक बहारे नाज़[23] के मारे हुए
जल्वः-ए-गुल[24] के सिवा, गर्द[25] अपने मदफ़न[26] में नहीं

क़तरः क़तरः, इक हयूला[27] है, नये नासूर[28] का
ख़ूँ भी, ज़ौक़े दर्द[29] से, फ़ारिग़[30] मेरे तन में नहीं

ले गई साक़ी की नख़्वत[31], कुल्ज़ुम आशामी[32] मेरी
मौजे मै[33] की आज रग मीना[34] की गर्दन में नहीं

हो फ़िशारे ज़ो'फ़[35] में क्या नातवानी[36] की नुमूद[37]
क़द[38] के झुकने की भी गुंजाइश[39] मेरे तन में नहीं

थी वतन में शान क्या ग़ालिब, कि हो ग़ुर्बत[40] में क़द्र[41]
बे तकल्लुफ़[42], हूँ वह मुश्ते ख़स,[43] कि गुलख़न[44] में नहीं

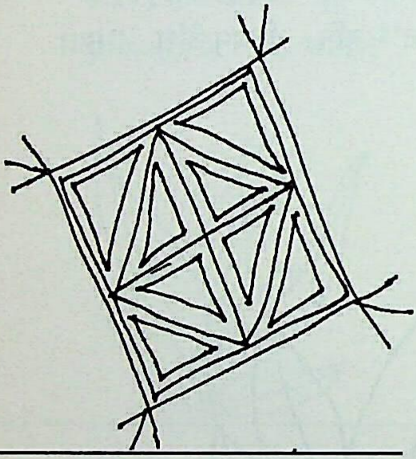

---

23. रूपवान्, प्रिय इत्यर्थः; 24. कुसुमानां शोभा; 25. धूलिः; 26. समाधिः; 27. मूलं तत्त्वम्; 28. नवो नाडी-व्रणः; 29. पीडानन्दः; 30. मुक्तम्; 31. मदः; 32. समुद्र-शोषक्षमत्वम्; 33. मधुनो लहरी; 34. मधुपात्रम्; 35. दौर्बल्यस्य चतुरस्त्रभारः; 36. दौर्बल्यम्; 37. प्रकटनम्; 38. तनुयष्टिः; 39. अवकाशः; 40. परदेशः; 41. आदरः; 42. निःसङ्कोचम्; 43. मुष्टिमितं तृणम्; 44. भ्राष्ट्रम्।

यत एकेन हताः स्मः सु-रूपशीलेन हन्त वयमेते।
न रजोऽस्ति नः समाधौ शोभामतिरिच्य कुसुमानाम् ॥ 7॥

प्रत्येकं पृषदेकं मूलं नाडीव्रणस्य नव्यस्य।
पीडानन्देनास्ते न रक्तमपि मत्तनौ मुक्तम् ॥ 8॥

मदमहरन्मधुदात्र्या मदब्धिपानक्षमत्वमेतर्हि।
मधुपात्रस्याद्य गले शिरा न मधुनस्तरङ्गस्य ॥ 9॥

दौर्बल्यभारतो मे प्रकाशितं स्यात्कथन्नु दौर्बल्यम्।
नावनतेरप्यास्ते त्ववकाशो मत्तनावधुना ॥ 10॥

वैभवमासीद् 'ग़ालिब' देशे किं, स्याद् यदादरोऽन्यत्र।
निःसङ्कोचं, तृणमहमस्मि भ्राष्ट्रे न, मुष्टिमितम् ॥ 11॥

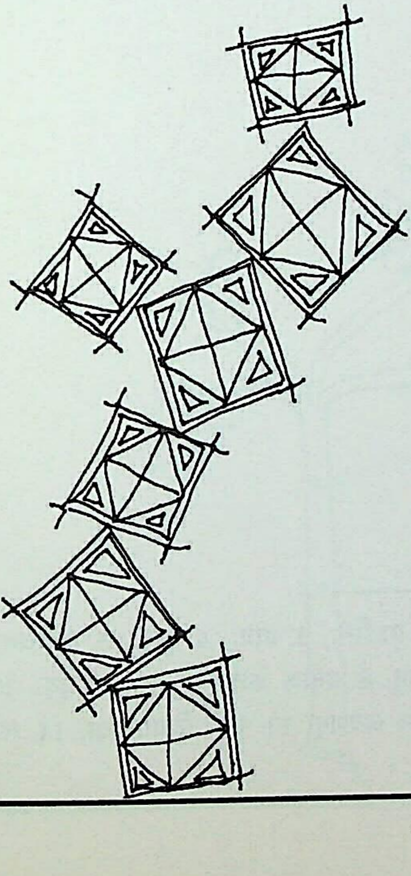

89

‘ओह्दे[1] से मद्हे नाज़[2] के, बाहर न आ सका
गर इक अदा[3] हो, तो उसे अपनी क़ज़ा[4] कहूँ

हल्क़े[5] हैं चश्महा-ए-कुशादः[6] ब सू-ए-दिल[7]
हर तारे ज़ुल्फ़[8] को निगहे सुर्मः[9] सा कहूँ

मैं और सद हज़ार[10] नवा-ए-जिगर ख़राश[11]
तू, और एक वह न शुनीदन[12] कि, क्या कहूँ

ज़ालिम, मेरे गुमाँ[13] से मुझे मुनफ़’अिल[14] न चाह
हय, हय, ख़ुदा न करदः,[15] तुझे बेवफ़ा[16] कहूँ

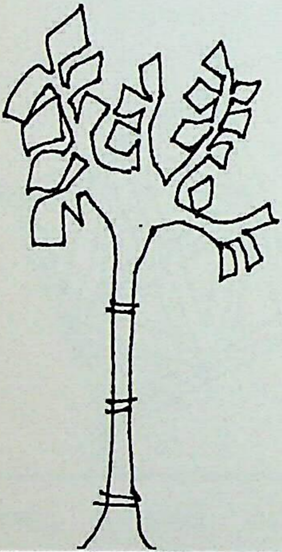

---

1. पदम्; 2. सौन्दर्यस्य प्रशस्तिः; 3. हावः; 4. मृत्युः; 5. कुञ्चिताः केशाः; 6. उन्मीलितानि नयनानि; 7. हृदयमनु; 8. प्रत्येकं केशः; 9. सकज्जला दृक्; 10. लक्षम्; 11. यकृदाहतिकरो ध्वनिः; 12. न श्रवणम्; 13. भ्रमः विचारो वा; 14. लज्जास्पदम्; 15. ईश्वरो न कुर्यात्; 16. अकृतज्ञः ।

89

रूपप्रशस्तिविषये निर्वोढुं प्राभवं न कर्तव्यम्।
हावश्चेदेकः स्यात् कथयेयं मृत्युरिति तमहम् ॥ 1 ॥

आकुञ्चिताः कचाः खलु हृदयमनून्मीलितानि नयनानि।
प्रत्येकं कचतन्तुं सकज्जला दृगिति कथयेयम् ॥ 2 ॥

अहमथ लक्षं ध्वनयो यकृतः सन्तक्षणे भृशं निपुणाः।
त्वञ्चैका श्रुतिविरतिर्मयेह किन्नाम वक्तव्यम् ॥ 3 ॥

लज्जास्पदं न कुरु मां ममाततायिन् भ्रमेण जातेन।
हन्त वदान्यकृतज्ञं त्वां, न विदध्यात् प्रभुर्यदहम् ॥ 4 ॥

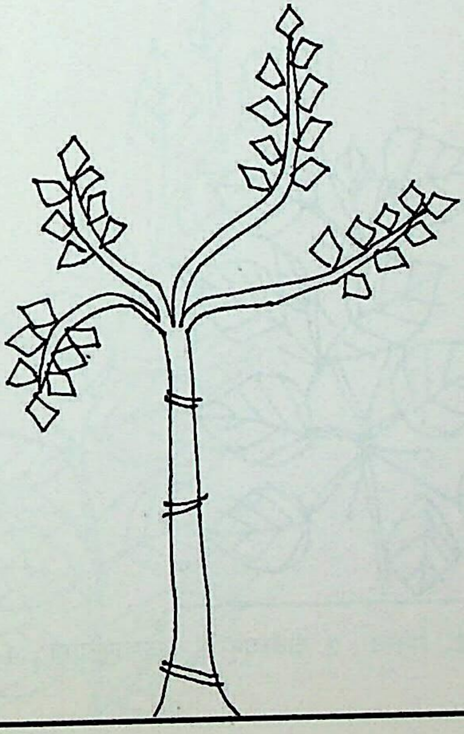

90

मेह्‌रबाँ[1] होके बुला लो मुझे, चाहो जिस वक़्त
मैं गया वक़्त नहीं हूँ, कि फिर आ भी न सकूँ

ज़ो'फ़[2] में, ता'नः-ए-अग़यार[3] का शिकवा क्या है
बात कुछ सर तो नहीं है, कि उठा भी न सकूँ

ज़ह्‌र मिलता ही नहीं मुझको, सितमगर[4] वर्नः
क्या क़सम[5] है तेरे मिलने की, कि खा भी न सकूँ

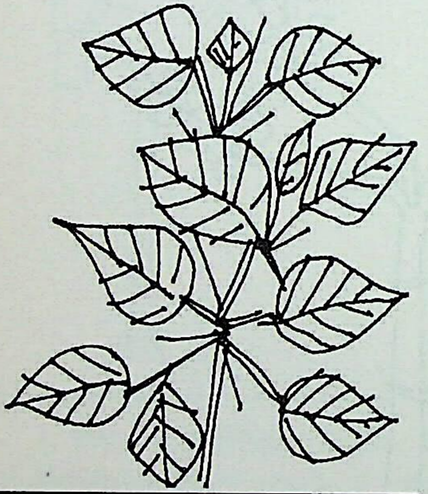

---

1. आर्द्रः, स्निग्धः; 2. दौर्बल्यम्; 3. शत्रूणामुत्प्रासाः; 4. आततायी; 5. शपथः।

90

आर्द्रीभूयागन्तुं निर्दिश मे समयमात्मनोऽभीष्टम्।
नाहं विगतः समयः पुनरागन्तुं न योऽर्हेयम् ॥ 1॥

[समयो यस्त्वदभीष्टो निर्दिश तं मह्यमार्द्र आगन्तुम्।
विगतो नाहं समयः प्रभवेयं यो न चागन्तुम् ॥ 1॥]

उत्रासस्य द्विषतां क उपालम्भः कृतेऽस्तु दौर्बल्ये।
वचनं शिरो न किञ्चिन्नोत्थापयितुं यदर्हेयम् ॥ 2॥

अत्याचारिन् न विषं लब्धुं शक्यं मयाऽन्यथा तदहम्।
त्वन्मिलनार्थं शपथः किं यन्नार्हो ग्रहीतुमपि ॥ 3॥

91

हमसे खुल जाओ, बवक़्ते मै परस्ती[1], एक दिन
वर्नः हम छेड़ेंगे, रख कर 'उज़्रे मस्ती[2] एक दिन

ग़र्रः-ए-औजे बिना-ए-'आलमे इम्काँ[3] न हो
इस बलन्दी[4] के नसीबों[5] में है पस्ती,[6] एक दिन

क़र्ज़ की पीते थे मै, लेकिन समझते थे, कि हाँ
रंग लायेगी हमारी फ़ाक़ःमस्ती,[7] एक दिन

नग़्मः हा-ए-ग़म[8] को भी, अय दिल ग़नीमत[9] जानिये
बेसदा[10] हो जायेगा, यह साज़े हस्ती,[11] एक दिन

धौल धप्पा[12] उस सरापा नाज़[13] का शेवः[14] नहीं
हम ही कर बैठे थे, ग़ालिब पेशदस्ती[15] एक दिन

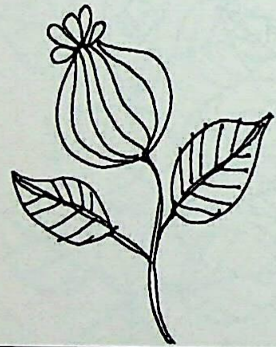

---

1. मधुपानसमये; 2. उन्मादस्य व्याजः; 3. संसारे महानिति गर्वः; 4. औन्नत्यम्; 5. भाग्यानि; 6. पतनम्; 7. क्षुधि मत्तत्वम्; 8. वेदनागीतानि; 9. वरदानम्; 10. निःस्वरम्; 11. अस्तित्व-वाद्यम्; 12. हस्ताहस्ति; 13. आपादमस्तकं मूर्तिमतो रूपाभिमानस्य; 14. व्यवहारः; 15. प्रथमारम्भ इत्यर्थः ।

91

मधुनः पानावसरे निःसङ्कोचो भव त्वमस्माभिः।
उद्वेजयिता स्मस्त्वां मदस्य मिषतोऽन्यथैकदिने ॥ 1॥

सुमहानिति संसारे गर्वः स्यान्नाम कस्यचिन्नेह।
भाग्येष्वौन्नत्यस्य प्रपतनमस्यास्ति दिनमेकम् ॥ 2॥

ऋणमिह कृत्वा मदिरामपिबं बत किन्त्ववेदिषं पूर्वम्।
क्षुधि मत्तत्वं कुर्याद् दिनमेकं नश्चमत्कारम् ॥ 3॥

अयि हृदय ! वेदनाया गीतानीमानि विद्धि वरदानम्।
अस्तित्ववाद्यमेतद् दिनमेकं निःस्वरं भविता ॥ 4॥

हस्ताहस्ति न रूपाभिमानमूर्तेः प्रवृत्तिरिह तस्य।
अस्माभिरेव, 'ग़ालिब' दिन एकस्मिन् 'करो न्यस्तः' ॥ 5॥
[प्रथमारभो 'ग़ालिब' दिन एकस्मिन् मयैव कृतः।]

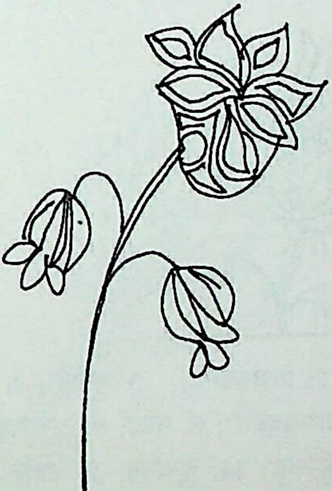

92

हम पर, जफ़ा[1] से, तर्के वफ़ा[2] का गुमाँ[3] नहीं
इक छेड़ है, वगरनः मुराद[4] इम्तिहाँ नहीं

किस मुँह से शुक्र कीजिये, इस लुत्फ़े खास[5] का
पुरसिश[6] है और पा-ए-सुख़न[7] दरमियाँ[8] नहीं

हमको सितम[9] ’अज़ीज़,[10] सितमगर[11] को हम ’अज़ीज़
ना मेह्रबाँ[12] नहीं है, अगर मेह्रबाँ[13] नहीं

बोसः[14] नहीं, न दीजिये, दुश्नाम[15] ही सही
आख़िर ज़बाँ[16] तो रखते हो तुम, गर दहाँ[17] नहीं

हरचन्द[18] जाँ गुदाज़ि-ए-क़ह्र-ओ-’अिताब[19] है
हरचन्द पुश्त गर्मि-ए-ताब-ओ-तवाँ[20] नहीं

जाँ[21] मुतरिबे तरानः-ए-हल मिन मज़ीद[22] है
लब[23] पर्दः संजे ज़मज़मः-ए-अलअमाँ[24] नहीं

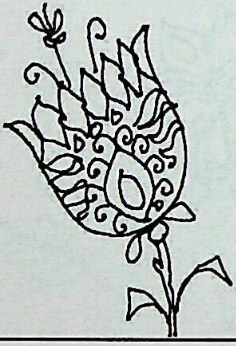

---

1. निर्दयत्वम्; 2. प्रेम्णस्त्यागः; 3. सन्देहः; 4. अभिप्रायः; 5. कृपाविशेषः; 6. कुशलसम्प्रश्नः; 7. वाग्व्यवहारः; 8. मध्ये; 9. अत्याचारः; 10. प्रियः; 11. निर्दयः; 12. अकृपालुः; 13. कृपालुः; 14. चुम्बनम्; 15. गालिः; 16. जिह्वा; 17. आननम्; 18. यद्यपि; 19. प्राणद्रुतिकारणं क्रोधः; 20. सन्तोषस्याधारः; 21. प्राणाः; 22. अपि किमप्यधिकमिति गीतस्य गायनाः; 23. अधरः; 24. ‘त्राहि माम्’ इति गीतस्य गायनः;

92

सन्दिग्धे नास्मासु प्रेम्णस्त्यागं स्वनिर्दयत्वेन।
उद्वेजकत्वमेकं न परीक्षाऽत्रान्यथाऽभिमता ॥ 1 ॥

विनिवेद्यं कार्तज्ञ्यं कृपाविशेषस्य केन शब्देन।
अस्ति कुशलसम्प्रश्नो वाग्व्यवहारो न मध्येऽस्ति ॥ 2 ॥

निर्दयताऽभिमता नः समभिमता निर्दयस्य किञ्च वयम्।
नासावस्त्यकृपालुः कृपालुरस्तीह यदि नासौ ॥ 3 ॥

अर्प्येत नैव चुम्बनमास्तां गालिप्रदानमपि मान्यम्।
रसनाऽन्ततस्तवास्ति त्वदीयमस्त्याननं नहि चेत् ॥ 4 ॥

यद्यपि तस्य क्रोधः प्राणानां कारणं द्रुतेरस्ति।
आधारश्च न यद्यपि सामर्थ्यं नापि सहनस्य ॥ 5 ॥

‘अपि किं मदर्थमधिकं’ गीतस्यास्येह गायनाः प्राणाः।
मां त्राहीति न कश्चिद् गानपरोऽस्माकमधर इह ॥ 6 ॥

ख़ंजर से चीर सीनः, अगर दिल न हो दुनीम[25]
दिल में छुरी चुभो, मिश़ः[26] गर ख़ूँचकाँ[27] नहीं

है नंगे सीनः[28], दिल अगर आतश कदः[29] न हो
है 'आरे दिल,[30] नफ़स[31] अगर आज़र फ़िशाँ[32] नहीं

नुक़साँ[33] नहीं जुनूँ[34] में, बला से हो घर ख़राब
सौ गज़ ज़मीं के बदले, बयाबाँ[35] गिराँ[36] नहीं

कहते हो, क्या लिखा है तेरी सरनविश्त[37] में
गोया जबीं[38] प सिज्दः-ए-बुत[39] का निशाँ[40] नहीं

पाता हूँ उससे दाद[41] कुछ अपने कलाम[42] की
रूहुलक़ुदुस[43] अगरचेः, मेरा हमज़बाँ[44] नहीं

जाँ है बहा-ए-बोसः,[45] वले क्यों कहे, अभी
ग़ालिब को जानता है, कि वह नीमजाँ[46] नहीं

---

25. द्विधा विभक्तम्; 26. पक्ष्म; 27. रक्तस्रुत्; 28. वक्षसः कृते त्रपाकरम्; 29. हसन्ती, यत्राग्निः स्थाप्यते; 30. हृदयस्य कृते त्रपाकरम्; 31. श्वसितम्; 32. अग्नेर्वर्षाकरम्; 33. हानिः; 34. उन्मादः; 35. अरण्यम्; 36. महार्हम्; 37. भाग्यम्; 38. भालम्; 39. मूर्तिप्रणतिः; 40. चिह्नम्; 41. प्रशस्तिः; 42. भणितिः, कविता; 43. 'जिब्रील' नामा देवविशेषः; 44. समभाषः; 45. चुम्बनमूल्यम्; 46. अर्धप्राणः, आहत इत्यर्थः।

यदि न द्विधा विभक्तं हृदयं वक्षोऽसिना ततश्छिन्धि।
छुरिकां हृदि प्रवेशय न पक्ष्मणश्चेत् स्त्रवेद् रुधिरम् ।। 7।।

हृद् यदि न हसन्ती स्यात् त्रपाकरं वक्षसः कृते तदिह।
श्वसितं नाग्नेर्वर्षाकरं त्रपायै तु हृदयस्य ।। 8।।

उन्मादे यदि गृहकं ध्वस्तं स्यान्नैव तावता हानिः।
हस्तैकशतमिताया न भुवोऽरण्यं महार्हमिह ।। 9।।

सम्प्रति पृच्छसि मां यत् तव भाग्ये किमिव वर्तते लिखितम्।
मन्ये मूर्तिप्रणतेर्न हि चिह्नं किमपि मद्भाले ।। 10।।

तस्य मुखान्नहि किञ्चिन्निजभणितीनां शृणोमि शस्तिमहम्।
'रूहुलक़ुदुसो' यद्यपि समभाषो मामको नास्ति ।। 11।।

प्राणाश्चुम्बनमूल्यं किन्त्वभिदध्यात् कथं नु स इदानीम्।
जानाति 'ग़ालिबं' यन्नार्धप्राणोऽयमस्तीति ।। 12।।

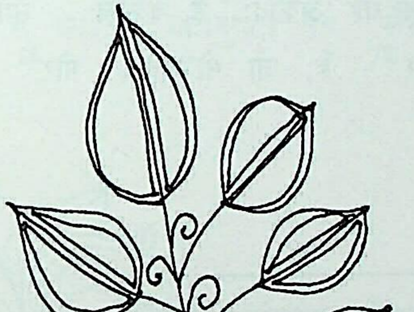

93

माने’-ए-दश्त नवर्दी[1] कोई तदबीर[2] नहीं
एक चक्कर है, मेरे पाँव में ज़ंजीर नहीं

शौक़ उस दश्त[3] में दौड़ाये है मुझको, कि जहाँ
जाद:[4] ग़ैर अज़ निगहे दीद:-ए-तस्वीर[5] नहीं

हसरते लज़्ज़ते आज़ार[6] रही जाती है
जाद:-ए-राहे वफ़ा,[7] जुज़ दमे शमशीर[8] नहीं

रंजे नौमीदि-ए-जावेद,[9] गवारा[10] रहियो
ख़ुश हूँ गर नाल:[11] ज़ुबूनी कशे तासीर[12] नहीं

सर खुजाता है, जहाँ ज़ख़्मे सर अच्छा हो जाय
लज़्ज़ते संग[13] ब अन्दाज:-ए-तक़रीर[14] नहीं

जब करम[15] रुख़सते बेबाकि-ओ-गुस्ताख़ी[16] दे
कोई तक़सीर[17] बजुज़ ख़जलते तक़सीर[18] नहीं

ग़ालिब, अपना यह ‘अक़ीद:[19] है, बक़ौले नासिख़[20]
आप बेबहर:[21] है, जो मो’तक़िदे मीर[22] नहीं

---

1. अरण्ये (मरुभुवि) भ्रमणतोऽवरोधकः; 2. उपायः; 3. मरुभूमिः, 4. मार्गः; 5. दृष्टेराश्चर्यं (मरुमरीचिकां) अतिरिच्य; 6. पीडास्वादस्येप्सितम्; 7. प्रेममार्गः; 8. खड्गधारामतिरिच्य; 9. शाश्वतनैराश्यजन्यः शोकः; 10. स्वीकार्यः; 11. आर्तनादः; 12. प्रभावविषये विनम्रः; 13. प्रस्तरप्रहारजन्य आस्वादः; 14. वर्णनविषयः; 15. कृपा, प्रिय इत्यर्थः; 16. निःसङ्कोचत्वस्य धाष्ट्र्यस्य चानुमतिः; 17. अपराधः, 18. अपराधमनु लज्जामतिरिच्य; 19. विश्वासः; 20. ‘नासिख’नाम्नः कवेः कथनानुसारेण; 21. मूढः; 22. ‘मीरस्य’ अनुगतः।

93

न हि कश्चित् स उपायो यो मरुभूभ्रमणतोऽवरुन्ध्यान्माम्।
एकं चक्रं पदयोर्ममास्ति निगडो न तावदिदम् ॥ 1॥

व्यवसाययति क्षेत्रे तस्मिन् मोहः प्रधावनार्थं माम्।
यत्र न मार्गः कश्चन दृष्टेराश्चर्यमतिरिच्य ॥ 2॥

पीडास्वादस्येप्सितमतृप्तमवतिष्ठते समग्रतया।
अतिरिच्य खड्गधारां प्रेम्णः पन्था न यद् भिन्नः ॥ 3॥

स्वीकार्यः खलु शाश्वतनैराश्योद्भूत एष नः शोकः।
न नतोऽयमार्तनादः प्रभावमनु चेत् प्रसन्नोऽस्मि ॥ 4॥

शिरसो व्रणे प्रशान्ते शिरोऽनुभवतीव हन्त कण्डूतिम्।
स्वादस्त्ववर्णनीयः प्रस्तरखण्डप्रहारभवः ॥ 5॥

अनुमन्येत कृपा चेन्निःसङ्कोचत्वमथ च धार्ष्ट्यमिह।
अपराधजन्यलज्जामतिरिच्य न कश्चिदपराधः ॥ 6॥

विश्वासो मे 'ग़ालिब', 'नासिख'-सुकवेर्वचोऽनुसारेण।
मूढः स्वयं स कश्चिद् योऽनुगतो नेह 'मीरस्य' ॥ 7॥

94

मत मर्दुमके दीदः[1] में समझो यह निगाहें
हैं जम'अ सुवैदा-ए-दिले चश्म[2] में आहें

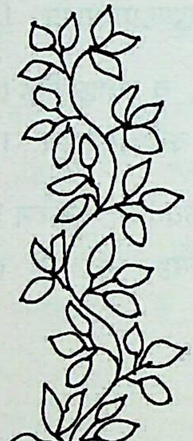

---

[1] चक्षुषः पुत्तलिका; [2] चक्षुर्हृद्गतः कलङ्कः।

94

अक्ष्णः पुत्तलिकायां दृष्टिरितीमं न हन्त जानीहि।
आर्तस्वरोऽक्षिहृद्गतकलङ्क एकत्र सम्मिलितः ॥ 1 ॥

95

बर्शकाले गिरियः-ए-'आशिक़[1] है, देखा चाहिये
खिल गई मानिन्दे गुल,[2] सौ जा से दीवारे चमन[3]

उल्फ़ते गुल[4] से ग़लत है दा'वः-ए-वारस्तगी[5]
सर्व[6] है बावस्फ़े आज़ादी[7] गिरफ़्तारे चमन[8]

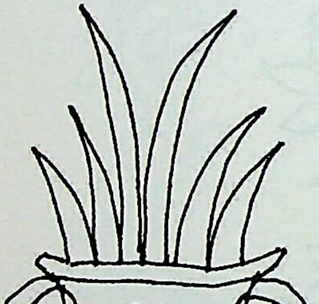

---

1. प्रणयिरुदितवर्षाकालः, 2. पुष्पाणीव; 3. उद्यानस्य भित्तिः; 4. पुष्पस्य प्रेम; 5. मुक्तेर्दम्भः; 6. 'सर्व' 'मोरपंखी' मयूरशिखा (तरुः), यस्य हरितिमा सार्वकालिको भवति, स च हेमन्ततः अप्रभावितस्तिष्ठति, अतएव स्वाधीन इत्युच्यते। 7. बद्धोद्याने (उद्याने बद्धा)।

95

प्रणयिरुदितवर्षाणां कालः प्राप्तोऽवलोकनीयमितः।
स्फुटिता स्थानशतेभ्यः पुष्पवदुद्यानभित्तिरियम् ॥ 1 ॥

पुष्पप्रेम्णो मुक्तेर्दम्भः प्रतिभाति सर्वथा मिथ्या।
स्वाधीनाऽपि सतीयं बद्धोद्याने मयूरशिखा ॥ 2 ॥

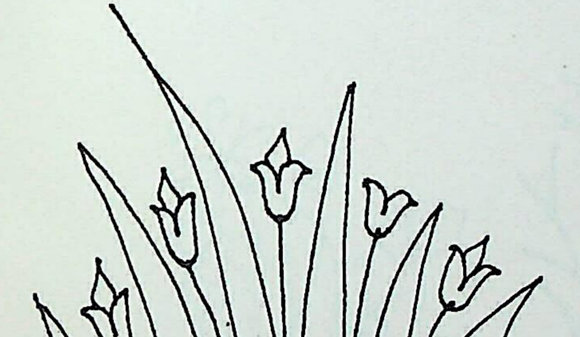

96

'अिश्क़ तासीर[1] से नौमीद[2] नहीं
जाँ सुपारी[3] शजरे बेद[4] नहीं

सल्तनत दस्त बदस्त[5] आई है
जामे मै,[6] ख़ातमे जमशेद[7] नहीं

है तजल्ली[8] तेरी सामाने वुजूद[9]
ज़र्रः[10] बे परतवे ख़ुरशीद[11] नहीं

राज़े मा'शूक़[12] न रुस्वा[13] हो जाये
वर्नः मर जाने में कुछ भेद[14] नहीं

गर्दिशे रंगे तरब[15] से डर है
ग़मे महरूमि-ए-जावेद[16] नहीं

कहते हैं, जीते हैं उम्मीद प लोग
हमको जीने की भी उम्मीद नहीं

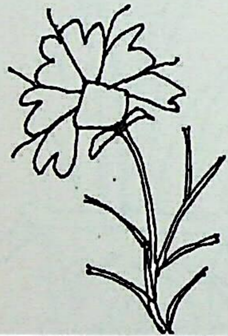

---

1. प्रभावः; 2. निराशः; 3. प्राणानामर्पणम्; 4. वेतसवृक्षः, यो निष्फलो भवति; 5. हस्तात् हस्तम्; 6. मधुनः पात्रम्; 7. 'जमशेद' नाम्नो राज्ञः ऊर्मिका, यां स एव धारयितुमर्हो भवति; 8. प्रकाशः; 9. अस्तित्वस्य कारणम्; 10. कणः; 11. सूर्यस्यालोकं विना; 12. प्रियस्य रहस्यम्; 13. अकीर्तिपात्रम्; 14. रहस्यम्, अन्तरं वा; 15. गोष्ठ्याः परिवर्तनम्; 16. शाश्वतस्य वञ्चितत्वस्य चिन्ता।

96

प्रणयः प्रभावरहितो भवति कदाचिन्न हन्त जगतीह।
नोपैति प्राणानामर्पणमिह वेतसद्दुत्वम् ।। 1 ।।

जगति प्रशासनं किल हस्तं हस्तादुपैति राज्यस्य।
मधुनः पात्रं काचिज् 'जमशेदस्यो'र्मिका नास्ति ।। 2 ।।

कारणमस्तित्वस्य प्रकाश एष त्वदीय आभाति।
न विनाऽऽलोकं तरणेः प्रकाशमानः कणो भवति ।। 3 ।।

न भवेदकीर्तिपात्रं क्वचन रहस्यं प्रियस्य जगतीह।
मरणेऽन्यथा रहस्यं वर्तत इह नैव किञ्चिदपि ।। 4 ।।
[अन्तरमस्ति न किञ्चिद् यदन्यथा मरण-जीवनयोः]

गोष्ठ्याः परिवर्तनज़ा भीतिर्मेऽनुभवगोचरीभवति।
न तु शाश्वतस्य चिन्ता काचन भुवि वञ्चितत्वस्य ।। 5 ।।

सन्धार्यत इह जीवितमाशायां सर्व एवमित्याहुः।
अस्माकमस्ति काचन नेहाशा जीवितस्यापि ।। 6 ।।

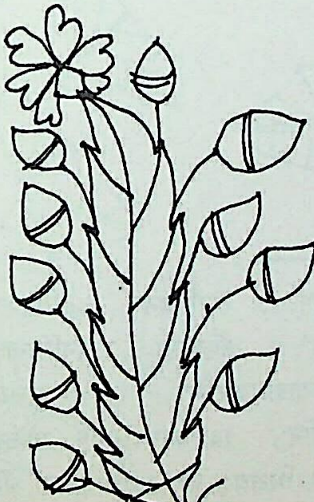

97

जहाँ तेरा नक़्शे क़दम[1] देखतें हैं
ख़ियाबाँ ख़ियाबाँ[2] इरम[3] देखते हैं

दिल आशुफ़्तगाँ[4] ख़ाले कुंजे दहन[5] के
सुवैदा[6] में सैरे 'अदम[7] देखते हैं

तेरे सर्व क़ामत[8] से, इक क़द्दे आदम[9]
क़यामत[10] के फ़ितने[11] को, कम देखते हैं

तमाशा कर[12] अय मह्वे आईनादारी[13]
तुझे किस तमन्ना[14] से हम देखते हैं

सुराग़े तुफ़े नालः[15] ले, दाग़े दिल[16] से
कि शब रौ[17] का नक़्शे क़दम देखते हैं

बना कर फ़क़ीरों[18] का हम भेस, ग़ालिब
तमाशा-ए-अहले करम[19] देखते हैं

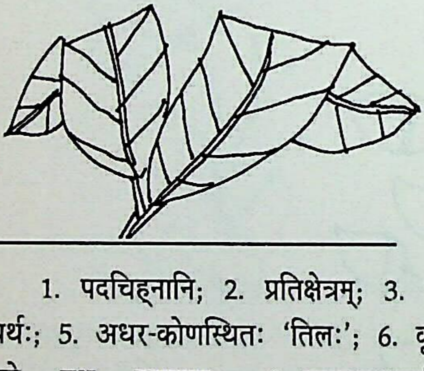

---

1. पदचिह्नानि; 2. प्रतिक्षेत्रम्; 3. स्वर्गोद्यानम्; 4. विकलहृदयाः, प्रणयिन इत्यर्थः; 5. अधर-कोणस्थितः 'तिलः'; 6. कृष्णोऽङ्कः; 7.अनस्तित्वदृश्यम्; 8. 'सर्व' नाम्नो वृक्ष इवाकारः; 9. मनुष्याकारपरिमिताः; 10. प्रलयः; 11. उपद्रवाः; 12. क्रीडां पश्य; 13. आत्मशृङ्गारलीनः; 14. कामना; 15. आर्तनादोष्मणः सङ्केतः; 16. हृदयस्याङ्कः; 17. रात्रिपथिकः; 18. भिक्षवः; 19. अनुकम्पावतां लीला।

97

उत्पश्यामस्तव रे पदयोश्चिह्नानि यत्र लीनानि।
आकलयामस्तत्र स्वर्गोद्यानं प्रतिक्षेत्रम् ॥ 1 ॥

वदनाधरकोणगते तिले प्रणयिनो विहस्तमनसोऽमी।
दृश्यमनस्तित्वस्य प्रेक्षन्ते किमपि कृष्णेऽङ्के ॥ 2 ॥

'सर्व'वदाकारात् ते मनुजाकारेण परिमितानेतान्।
न्यूनानाकलयामः प्रलयस्योपद्रवांस्तावत् ॥ 3 ॥

पश्यास्माकं खेलामये स्वशृङ्गारलीन एतर्हि।
केन त्वां कामेन प्रेक्षामह एव वयमेते ॥ 4 ॥

रजनीपथिकः पदयोश्चिह्नैरनुमीयते यथा लोके।
हृदयाङ्केन तथोष्मा परिभाव्यत आर्तनादस्य ॥ 5 ॥

भिक्षूणां परिधानं 'ग़ालिब' परिधाय हन्त वयमेते।
आकलयामः सन्ततमनुकम्पाशालिनां लीलाम् ॥ 6 ॥

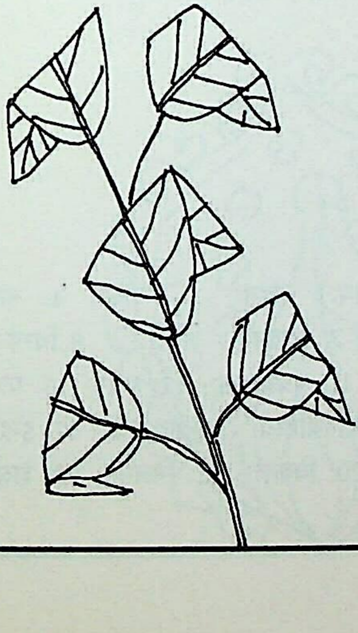

98

मिलती है ख़ू-ए-यार[1] से नार,[2] इल्तिहाब[3] में
काफ़िर[4] हूँ, गर न मिलती हो राहत[5] 'अज़ाब[6] में

कब से हूँ, क्या बताऊँ, जहाने ख़राब[7] में
शबहा-ए-हिज्र[8] को भी रखूँ गर हिसाब में

ता फिर न इन्तिज़ार में नींद आये 'उम्र भर
आने का अह्द कर गये,[9] आये जो ख़्वाब[10] में

क़ासिद[11] के आते आते, ख़त[12] इक और लिख रखूँ
मैं जानता हूँ, जो वह लिखेंगे जवाब[13] में

मुझ तक कब, उनकी बज़्म[14] में, आता था दौरे जाम[15]
साक़ी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में

जो मुन्किरे वफ़ा[16] हो, फ़रेब[17] उस प क्या चले
क्यों बदगुमाँ[18] हूँ दोस्त से, दुश्मन के बाब में[19]

मैं मुज़्तरिब[20] हूँ वस्ल[21] में, ख़ौफ़े रक़ीब[22] से
डाला है तुमको वह्म[23] ने, किस पेच-ओ-ताब[24] में

---

1. प्रियस्य स्वभावः; 2. (नारकीयः) वह्निः; 3. ज्वाला; 4. नास्तिकः, धर्मविमुखः; 5. सुखम्; 6. यमयातना; 7. दुःखमयं जगत्ः; 8. विरह-रात्रयः; 9. प्रतिज्ञातम्, प्रतिश्रुतम्; 10. स्वप्नः; 11. पत्रवाहकः; 12. पत्रम्; 13. पत्रोत्तरम्; 14. गोष्ठी; 15. भ्रमणपरं मधुपात्रम्ः; 16. प्रेमनिर्वाहस्य अस्वीकारकः; 17. इन्द्रजालम्; 18. सन्देहाक्रान्तः; 19. शत्रुवद्व्यवहर्तरि; 20. विकलः; 21. मिलनम्; 22. शत्रोर्भयम्; 23. आशङ्का; 24. ऊहापोहः;

98

वह्निर्बिभर्ति साम्यं ज्वालायां प्रेयसः स्वभावेन।
यमयातनासु न लभे शर्म ततो नास्तिकोऽहं स्याम् ।। 1 ।।

कियतः कालाद् वर्ते दुःखमये जगति हन्त किं वच्मि।
विरहस्य तामसीरपि गणनायां निर्दिशेयञ्चेत् ।। 2 ।।

आमरणान्निद्रा पुनरधिगच्छेदेनमित्यभिप्रेत्य।
तेनागतेन सुप्तौ यदिहागन्तुं प्रतिज्ञातम् ।। 3 ।।

अन्यल्लिखेयमेकं समुपेयात् पत्रवाहको यावत्।
विलिखेदुत्तरतोऽसौ यत् तत् सुतरामहं जाने ।। 4 ।।

तद्गोष्ठ्यां मां यावत् कदा भ्रमत् पात्रमागतं मधुनः।
मधुदात्र्या मदिरायां भवेन्न सम्मिश्रितं किमपि ।। 5 ।।

प्रभवेत् किमिन्द्रजालं तस्मिन् यः प्रेम नेह निर्वहति।
सन्देहाक्रान्तः स्यां कथं सुहृदि शत्रुसमवृत्तौ ।। 6 ।।

मिलनावसरे विकलो वर्ते प्रतिपक्षिणो भयादेषः।
कस्मिन्नूहापोहे त्वामाशङ्का गृहीतवती ।। 7 ।।

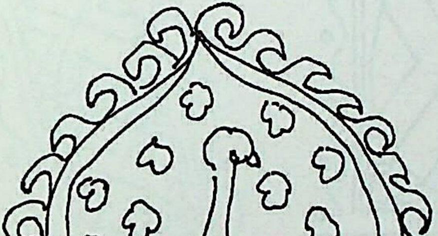

मैं और हज़्ज़े वस्ल,[25] ख़ुदासाज़ बात[26] है
जाँ[27] नज़्र[28] देनी भूल गया, इज़्तिराब[29] में

है तेवरी[30] चढ़ी हुई, अन्दर निक़ाब के
है इक शिकन पड़ी हुई, तर्फ़े निक़ाब[31] में

लाखों लगाव, एक चुराना निगाह का
लाखों बनाव, एक बिगड़ना 'अिताब[32] में

वह नालः,[33] दिल में ख़स[34] के बराबर जगह न पाये
जिस नाले से शिगाफ़[35] पड़े आफ़्ताब[36] में

वह सेह्र,[37] मुद्द'आ तलबी[38] में न काम आये
जिस सेह्र से सफ़ीनः[39] रवाँ हो[40] सराब[41] में

ग़ालिब छुटी शराब, पर अब भी कभी कभी
पीता हूँ रोज़े अब्र-ओ-शबे माहताब[42] में

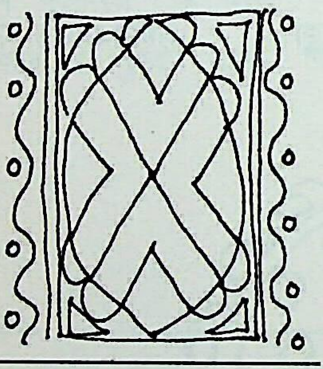

---

25. प्रियमिलनजन्य आनन्दः; 26. ईश्वरीयमवदानम्; 27. प्राणाः; 28. उपहारः; 29. वैकल्यम्; 30. भ्रूभङ्गी; 31. अवगुण्ठनस्य कोणः; 32. क्रोधः; 33. आर्तनादः; 34. तृणम्; 35. द्विधा-भेदः; 36. सूर्यः; 37. इन्द्रजालम्; 38. उद्देश्यपूर्तिः; 39. नौः; 40. प्रचलेत्; 41. मृगमरीचिकाजलम्; 42. दुर्दिनम्, मेघाच्छन्नकालः, ज्यौत्स्नी रात्रिश्च।

अहमेष प्रियमिलनानन्दश्चेतीश्वरीयमवदानम् ।
विस्मृतमसूपहारप्रदानमतिमात्रवैकल्ये ।। 8 ।।

अवगुण्ठनान्तरेषा भ्रूमङ्गी दृश्यते समाकृष्टा ।
अवगुण्ठनस्य कोणे कश्चन सँल्लक्ष्यते भङ्गः ।। 9 ।

सम्बन्धप्रख्यापनलक्षं सङ्गोपनं दृशोरेकम् ।
लक्षं प्रसाधनानि क्रोधसमुद्वलनमेकञ्च ।। 10 ।।

आर्तस्वरः स यो हृदि तृणपरिमाणां स्थितिं न गृह्णीयात् ।
आर्तस्वरः स जनयेद् यो रविबिम्बे द्विधा-भेदम् ।। 11 ।।

उद्देश्यपूर्तिविषये तदिन्द्रजालं न किञ्चिदुपयोगि ।
मृगवारिणि नौः प्रचलेद् येन क्वचिदिन्द्रजालेन ।। 12 ।।

‘ग़ालिब’ मद्यं त्यक्तं यदा कदाचित् परं तदधुनाऽपि ।
सति दुर्दिने पिबामि ज्यौत्स्नीषु पिबामि च निशासु ।। 13 ।।

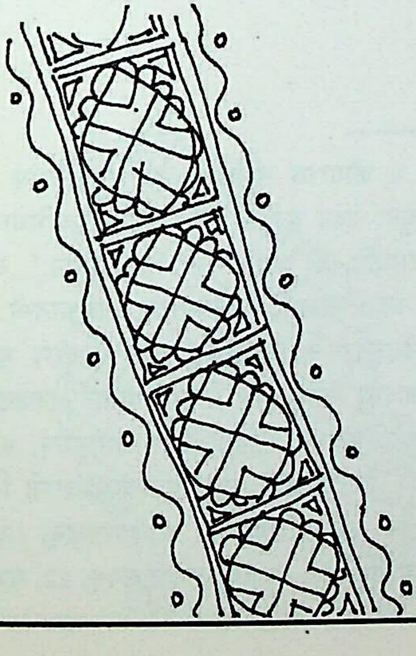

99

कल के लिये कर आज न ख़िस्सत[1] शराब में
यह सू-ए-ज़न[2] है साक़ि-ए-कौसर के बाब में[3]

हैं आज क्यों ज़लील,[4] कि कल तक न थी पसंद
गुस्ताख़ि-ए-फ़रिश्तः[5] हमारी जनाब में

जाँ क्यों निकलने लगती है तन से, दमे समा'अ[6]
गर वह सदा[7] समाई है चंग-ओ-रबाब[8] में

रौ[9] में है रख़्शे'अुम्र,[10] कहाँ, देखिये, थमे
ने हाथ बाग[11] पर है, न पा है रिकाब[12] में

उतना ही मुझको अपनी हक़ीक़त[13] से वो'द[14] है
जितना कि वह्मे ग़ैर[15] से हूँ पेच-ओ-ताब में[16]

अस्ले[17] शुहूद[18]-ओ-शाहिद[19]-ओ-मशहूद[20] एक है
हैराँ हूँ, फिर मुशाहिदः[21] है किस हिसाब[22] में

---

1. कार्पण्यम्; 2. परिभवः; 3. कौसरस्य मधुदातुः, अली-महाशयस्य अवसरे, विश्वासानुसारेण, स्वर्गे पवित्रस्य मधुनः एका कृत्रिमा नदी 'कौसर'इत्यभिधानाऽस्ति, अलीमहाशयः स्वर्गमागन्तृभ्यो मधु दास्यति; 4. अवमानिताः, 5. 'शैतानः', यथोच्यते पूर्वमेको देवदूत आसीत्, ईश्वरेण यदा 'आदमो निर्मितस्तदा देवदूतास्तस्मै प्रणतये आज्ञप्ताः, किन्तु' अिज़ाईल'नाम्ना देवदूतेन न स्वीकृतम्। तदा ईश्वरेण स शप्तः, आकाशेभ्यश्च बाहिष्कृतः। तत आरभ्य 'अिज़ाईलो' जगति 'शैतान' इत्याख्यायते। 6. श्रवणसमये; 7. नादः; 8. चंग-रबाब इत्याख्यं 'ईरान'देशस्य वाद्यद्वयम्; 9. गतिः; 10. 'आयुरश्वः'; 11. वल्गा; 12. 'रिकाब' यत्र अश्ववाराश्चरणौ निदधतिः 13. याथार्थ्यम्; 14. दवीयस्त्वम्; 15. अन्यतो भ्रमः; 16. जालग्रस्तत्वम्; 17. मूलम्; 18. उपस्थितम्, 19. दर्शकम्: 20. दृश्यम्; 21. दर्शनम्, अवलोकनम्; 22. गणना;

99

आगामिने दिनाय त्वं कार्पण्यं कुरुष्व मा मधुनि।
इदमवसरे परिभवो मधुदातुः 'कौसरस्य' भवेत् ॥ 1॥

नारोचत भवते ह्योऽस्मत्पुरतो देवदूतधार्ष्ट्यं यत्।
अवमानिता वयं स्मो हन्त कथं हन्त कथमद्य ॥ 2॥

सोऽन्तस्तिष्ठति नादश् 'चंग-रबाबा'ख्यवाद्ययोर्यदि चेत्।
श्रवणावसरे प्राणाः कथं तनोर्भान्ति यान्त इव ॥ 3॥

गतिमानायुस्तुरगः पश्येम क्वावतिष्ठते रुद्धः।
हस्तौ न हि वल्गायां न च पादौ स्तो 'रिक़ाब'गतौ ॥ 4॥

यावानस्म्यतिरिक्तभ्रमजालग्रस्त एष जगतीह।
तावानहं दवीयान् स्वीयाद् वर्ते नु याथार्थ्यात् ॥ 5॥

मूलमुपस्थित-दर्शक-दृश्यानामेव हन्त यत्किञ्चित्।
तद् दर्शनस्य गणना कुतोऽस्ति पुनरित्यहं चकितः ॥ 6॥

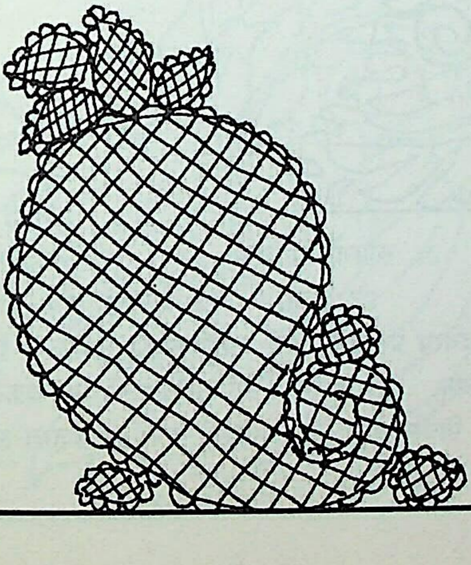

है मुश्तमिल[23] नुमूदे सुवर[24] पर वुजूदे बह्र[25]
याँ क्या धरा है क़तरः-ओ-मौज-ओ-हबाब[26] में

शर्म[27] इक अदा-ए-नाज़[28] है, अपने ही से सही
हैं कितने बेहिजाब,[29] कि हैं यों हिजाब[30] में

आराइशे जमाल[31] से फ़ारिग़[32] नहीं हनोज़[33]
पेशे नज़र[34] है आइनः दाइम[35] निक़ाब[36] में

है ग़ैबे ग़ैब,[37] जिसको समझते हैं हम शुहूद[38]
हैं ख़्वाब[39] में हनोज़, तो जागे हैं ख़्वाब में

ग़ालिब, नदीमे दोस्त[40] से, आती है बू-ए-दोस्त[41]
मशग़ूले हक़[42] हूँ, बन्दगि-ए-बू तुराब[43] में

---

23. सम्मिलितम्; 24. रूपाणां प्रकटनम्; 25. समुद्रस्यास्तित्वम्; 26. बिन्दु-तरङ्ग-बुदबुदाः; 27. लज्जा; 28. प्रणयस्य हावः; 29. निरावरणाः; 30. आवरणम्; 31. सौन्दर्यस्य प्रसाधनम्; 32. प्राप्तावकाशः, मुक्तः; 33. अधुनाऽपि; 34. दृशोऽग्रे; 35. नित्यम्; 36. आवृतिः; 37. अप्रकटः; 38. प्रकटः; 39. स्वप्नः; 40. मित्रस्य सहचरः; 41. मित्रस्य गन्धः; 42. परमेश्वरे मग्नः 43. हज़्रत-अली महाशयस्य वन्दना।

रूपस्य प्रकटन इह सिन्धोरस्तित्वमस्ति सम्मिलितम् ।
किमधिश्रितमिह बिन्दून् भङ्गानथ बुद्बुदानथवा ॥ 7 ॥

लज्ञा, स्वतोऽपि चेत् स्यात्, सा प्रणयस्यास्ति कोऽपि हाव इति ।

कति न निरावरणा इह ते यद्यप्यावृतौ सन्ति ॥ 8 ॥

अधुनाऽपि नावकाशं सौन्दर्यस्य प्रसाधनाल्लभते ।
अग्रे दृशो निधत्ते स आवृतौ दर्पणं नित्यम् ॥ 9 ॥

वस्तुत इह सोऽप्रकटस्तं हन्त प्रकटमेव जानीमः ।
अधुनाऽपि स्वप्ने वयमथ जागृम एव च स्वप्ने ॥ 10 ॥

मित्रस्य सहचरादिह 'ग़ालिब' मित्रस्य गन्ध आयाति ।
'हज़्रत-अली'नमनतो मग्नः परमेश्वरे वर्ते ॥ 11 ॥

100

हैराँ हूँ, दिल को रोऊँ, कि पीटूँ जिगर को मैं
मक़दूर[1] हो, तो साथ रखूँ नौहःगर[2] को मैं

छोड़ा न रश्क[3] ने, कि तेरे घर का नाम लूँ
हर इक से पूछता हूँ, कि जाऊँ किधर को मैं

जाना पड़ा रक़ीब[4] के दर पर, हज़ार बार
अय काश, जानता न तेरी रहगुज़र[5] को मैं

है क्या, जो कस के बाँधिये, मेरी बला डरे
क्या जानता नहीं हूँ, तुम्हारी कमर को मैं

लो, वह भी कहते हैं कि यह बेनंग-ओ-नाम[6] है
यह जानता अगर, तो लुटाता न घर को मैं

चलता हूँ थोड़ी दूर, हर इक तेज़ रौ[7] के साथ
पहचानता नहीं हूँ अभी, राहबर[8] को मैं

---

1. सामर्थ्यम्; 2. स जनो यः शोकगीतानि गायति; 3. ईर्ष्या; 4. शत्रुः; 5. गमनागमनयोर्मार्गः; 6. निर्लज्जः, चरित्रहीनः; 7. गतिशीलः; 8. मार्गदर्शकः;

100

विकलो हृदेऽथ रुद्यां यकृते वा ताडयेयमात्मानम् ।
विनियोजयानि शक्तिः स्याद् यदि चेच्छोकगायनकम् ।। 1 ।।

त्यक्तोऽस्मि नेर्ष्ययाऽहं यन्नाम त्वद्गृहस्य गृह्णीयाम् ।
प्रत्येकं केन पथा गच्छानीत्येव पृच्छामि ।। 2 ।।

विवशः सहस्रकृत्वः शत्रोर्गतवानहं गृहद्वारम् ।
स्याद् वरमवगच्छेयं न गतागतयोस्तवाध्वानम् ।। 3 ।।

अपि वर्तते दृढं यद् बध्नीयास्त्वं कथन्नु भीतः स्याम् ।
तव नाम हन्त कट्याः किमहं जानामि नास्तित्वम् ।। 4 ।।

सोऽप्यमिधत्ते यदयं निर्लज्जो जगति सर्वथाऽस्तीति ।
यद्यज्ञास्यमिदञ्चेत् स्वीयं न गृहं व्यसर्जिष्यम् ।। 5 ।।

प्रचलामि प्रत्येकं गतिशीलेनेह किमपि सह दूरम् ।
मार्गप्रदर्शकस्य स्वस्य न जानामि विषयेऽहम् ।। 6 ।।

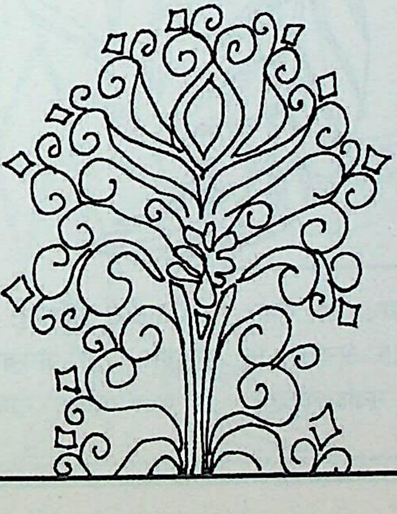

ख़्वाहिश[9] को, अहमक़ों[10] ने, परस्तिश[11] दिया क़रार
क्या पूजता हूँ उस बुते बेदादगर[12] को मैं

फिर बेख़ुदी[13] में भूल गया, राहे कू-ए-यार[14]
जाता वगरनः[15] एक दिन अपनी ख़बर को मैं

अपने प कर रहा हूँ क़ियास,[16] अह्ले दह्र[17] का
समझा हूँ दिल पिज़ीर,[18] मता'-ए-हुनर[19] को मैं

ग़ालिब, ख़ुदा करे कि सवारे समन्दे नाज़[20]
देखूँ 'अली बहादुरे'आली[21] गुहर को मैं

---

9. अभिलाषः; 10. मूढाः; 11. पूजा; 12. कठोरो मूर्तिमान्; 13. आत्मविस्मृतिः; 14. प्रियरथ्याया मार्गः; 15. अन्यथा; 16. अनुमानम्; 17. जगज्ज्ञनः; 18. बहुमूल्यम्; 19. कलाख्या सम्पत् 20. गर्वाश्वमधिरूढः; 21. 'अलीबहादुर' नामा ग़ालिबस्य 'रयीशः' सुहृत्।

मूढैरभिलाषो बत निर्णीतं कैश्चिदत्र पूजेति।
अपि पूजयामि निष्कृपमेष जनं मूर्तिमन्तं तम् ।। 7।।

प्रियरथ्याया मार्गं व्यस्मरमहमात्मविस्मृतौ भूयः।
गच्छेयमन्यथाऽहं स्वस्य समाचारमधिगन्तुम् ।। 8।।

अहमिव सर्वोऽपि जनो विदधद् वर्तेऽहमेवमनुमानम्।
अवगच्छामि कलाख्यां सम्पदमेनां सुबहुमूल्याम् ।। 9।।

गर्वान्वितगतिशीलं 'ग़ालिब' पश्येयमश्वमधिरूढम्।
त'मली-बहादुरं' सत्कुलजमहं सत्प्रभोः कृपया ।। 10।।

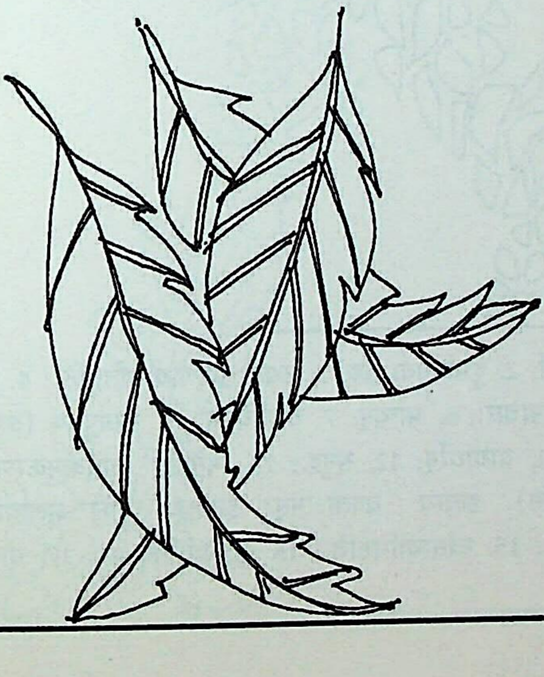

101

ज़िक्र[1] मेरा, ब बदी[2] भी, उसे मंज़ूर नहीं
ग़ैर की बात बिगड़ जाय, तो कुछ दूर नहीं

वा'दः-ए-सैरे गुलिस्ताँ[3] है, ख़ुशा ताले'-ए-शौक़[4]
मुश़दः-ए-क़त्ल[5] मुक़द्दर[6] है, जो मज़कूर[7] नहीं

शाहिदे हस्ति-ए-मुत्लक़[8] की कमर है 'आलम[9]
लोग कहते हैं कि है, पर हमें मंज़ूर नहीं

क़तरः[10] अपना भी हक़ीक़त[11] में है दरिया,[12] लेकिन
हमको तक़लीदे तुनुक ज़रफ़ि-ए-मंसूर[13] नहीं

हसरत,[14] अय ज़ौक़े ख़राबी[15], कि वह ताक़त न रही
'अिश्क़े पुर 'अर्बदः[16] की गौं[17] तने रंजूर[18] नहीं

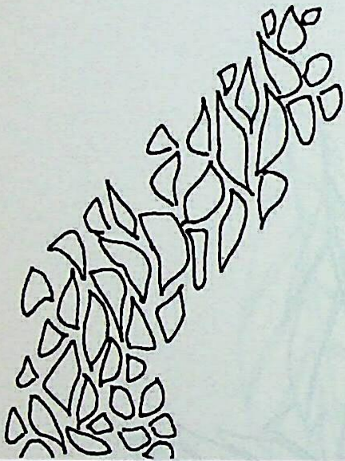

---

1. चर्चा; 2. दुर्भावनया सह; 3. उद्याने भ्रमणार्थं प्रतिश्रुतिः; 4. अभिरुचेर्भाग्यम्; 5. वधस्य सुसमाचारः; 6. भाग्यम्; 7. चर्चाविषयः; 8. परमपुरुषं (ब्रह्म); 9. विश्वम्; 10. बिन्दुः; 11. याथार्थ्यम्; 12. समुद्रः; 13. 'मंसूरस्य' लाघवानुकरणम्, 'अनलहक' (अहं ब्रह्मास्मि) इत्यस्य वक्ता 'मंसूर' इत्याख्यः 'सूफ़ी' शूलायामारोप्य मारितः; 14. अभिलाषः; 15. ध्वंसस्याभिरुचिः; 16. सङ्घर्षशीलं प्रेम; 17. योग्यम्; 18. रुग्णं शरीरम्;

101

क्षतिमुद्दिश्यापि कृता मच्चर्चा नेह रोचते तस्मै।
नासम्भवं यदरिणा व्यवहारस्तस्य विकृतः स्यात् ।। 1।।

उद्यानभ्रमणं यत् प्रतिश्रुतं तत्सुखं रुचेर्भाग्यम्।
वधसुखवार्ता भाग्यं परं न या चर्चिता तत्र ।। 2।।

विश्वमिदं कटिरस्ति ब्रह्मेत्याख्यस्य परमपुरुषस्य।
अस्तीत्यमिदधति जनाः परमस्माकं न तदभिमतम् ।। 3।।

दृष्ट्या यथार्थया खलु सागर एवास्ति बिन्दुरात्मीयः।
‘मंसूर’लाघवं परमनुकरणीयं तु नास्माकम् ।। 4।।

ध्वंसाभिलाष ! हा धिक् कष्टं मयि नास्ति तन्नु सामर्थ्यम्।
रुग्णं वपुर्न योग्यं प्रेम्णः सङ्घर्षशीलस्य ।। 5।।

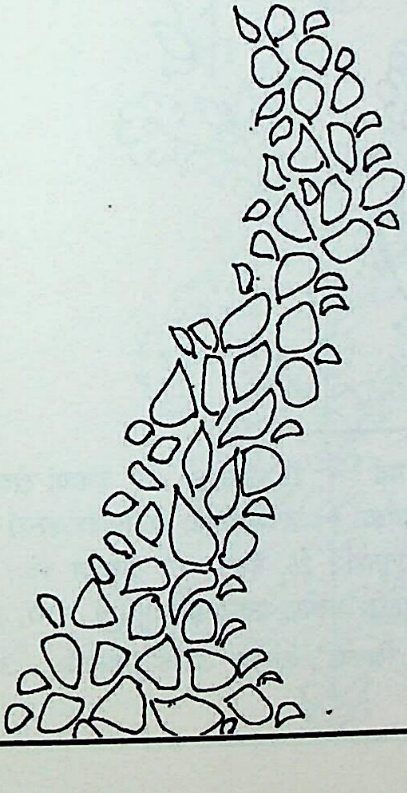

मैं जो कहता हूँ, कि हम लेंगे क़यामत[19] में तुम्हें
किस र'ऊनत[20] से वह कहते हैं कि हम हूर[21] नहीं

ज़ुल्म कर, ज़ुल्म, अगर लुत्फ़ दरेग़ आता हो[22]
तू तग़ाफ़ुल[23] में किसी रंग से मा'ज़ूर[24] नहीं

साफ़ दुर्दी कशे पैमानः-ए-जम[25] हैं, हम लोग
वाय, वह बादः,[26] कि अफ़शुरदः-ए-अंगूर[27] नहीं

हूँ ज़ुहूरी[28] के मुक़ाबिल में[29] ख़िफ़ाई[30] ग़ालिब
मेरे दा'वे प यह हुज्जत[31] है, कि मशहूर[32] नहीं

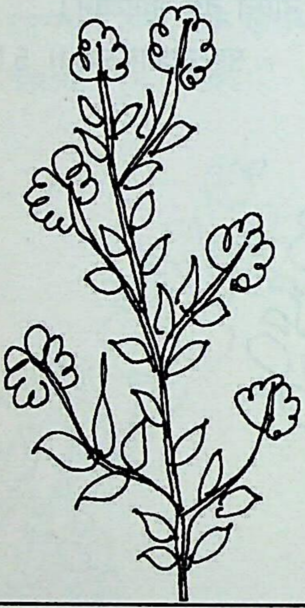

---

19. प्रलयः, प्रलयावसरः; 20. गर्वः 21. अप्सरसः; 22. दयायां खेदानुभवश्चेत्; 23. उपेक्षा; 24. अयोग्या; 25. 'जमस्य, (= जमशेदनाम्नः ईरानपादशाहस्य) यद् विशालं मधुपात्रम्, तस्य तलं यावत् पातुमर्हाः; 26. मद्यम्; 27. द्राक्षाया द्रवः; 28. एकः, प्रसिद्धः पारसीकः कविः, ज़ुहूरीः श्लेषेण प्रकट इत्यर्थः, 29. साम्ये; 30. ख़िफाई इत्याख्यः, अन्य एकः कविः, 'ख़िफ़ाई', श्लेषेण 'अप्रकट' इत्यर्थः; 31. प्रमाणम्; 32. ख्यातः।

यदहं वच्मि प्रलये त्वां याचित्वैव हन्त लब्धास्मि।
अहमप्सरःसु नास्मीति वक्ति कियता स गर्वेण. ।। 6।।

क्रौर्यं कुरु रे क्रौर्यं दयमानो यन्नु खेदमनुभवसि।
यदुपेक्षायां विधिना त्वमयोग्यो नासि केनापि ।। 7।।

निम्नं भागं यावत् पातुं 'जमशेद'पात्रमर्हाः स्मः।
तन्मद्यं धिग् यस्मिन् द्राक्षाया द्रवलवो नास्ति ।। 8।।

'ग़ालिब' नास्मि 'ख़िफ़ाई' कोऽपि 'ज़ुहूरी' कवेरहं साम्ये।
मत्स्वत्वे तर्कोऽयं यदेष नास्ति प्रसिद्‌ध इति ।। 9।।

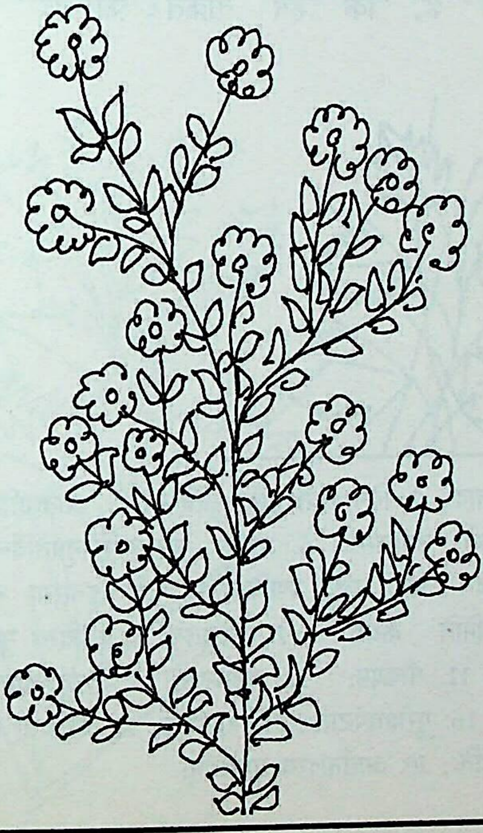

102

नालः[1] जुज़ हुस्ने तलब,[2] अय सितम ईजाद,[3] नहीं
है तक़ाज़ा-ए-जफ़ा,[4] शिकवः-ए-बेदाद[5] नहीं

’अिश्क़-ओ-मज़दूरि-ए-’अिश्रत गहे ख़ुसरू[6] क्या ख़ूब
हम को तसलीम[7] निकुनामि-ए-फ़र्हाद[8] नहीं

कम नहीं वह भी ख़राबी में, प वुस’अत[9] मा’लूम
दश्त[10] में, है मुझे वह ’अैश,[11] कि घर याद नहीं

अहले बीनिश[12] को, है तूफ़ाने हवादिस,[13] मकतब[14]
लतमः-ए-मौज,[15] कम अज़ सेलि-ए-उस्ताद,[16] नहीं

वाये[17] महरूमि-ए-तसलीम[18]-ओ-बदा हाले वफ़ा[19]
जानता है, कि हमें ताक़ते फ़रियाद[20] नहीं

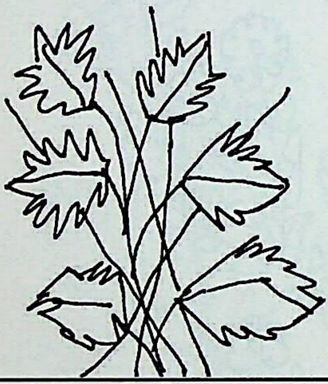

---

1. आर्तनादः; 2. विनयमयीं याच्ञामतिरिच्य; 3. आततायिन्; 4. क्रौर्यस्यापेक्षा; 5. क्रौर्यस्य (कृते) उपालम्भः; 6. प्रणयः, खुसरूनाम्नोनृपतेर्विलासालये श्रमिकत्वम्, ‘प्रणयिना फ़र्हादेन तस्य राज्ञः प्रणयिन्याः ‘शीरी’ इत्यस्या लाभार्थं विलासभवने श्रमिकत्वं कृतमिति कथा; 7. स्वीकृतम्; 8. फ़र्हादस्य सुकीर्तिः; 9. विस्तारः; 10. अरण्यम्; 11. सौख्यम्; 12. चक्षुष्मान्; 13. विपदाप्लावनम्; 14. पाठशाला; 15. तरङ्गाघातः; 16. गुरोश्चपेटातः; 17. हा धिक्; 18. वञ्चिता (अस्माकं) स्वीकृतिः; 19. प्रेम्णः दुःस्थितिः; 20. आर्तनादस्य सामर्थ्यम्;

102

हे क्रूर ! नार्तनादो याच्ञामतिरिच्य किमपि विनयमयीम् ।
क्रौर्यमपेक्षितमेकं क्रौर्यस्य न कोऽप्युपालम्भः ॥ 1 ॥

क्व प्रणयः, श्रमिकत्वं 'खुसरु'विलासालयस्य च क्वेह ।
'फ़र्हादस्य' सुकीर्तिर्नाभिमता काचिदस्माकम् ॥ 2 ॥

विध्वंसे तन्नासीन्न्यूनं विदितः परन्तु विस्तारः ।
तदरण्ये सौख्यं यद् गृहस्य मे विस्मृतिर्जाता ॥ 3 ॥

चक्षुष्मन्तो विपदाप्लावनमाहुर्नु पाठशालेति ।
यत्राहतिरूर्मीणां न चपेटातो गुरोर्न्यूना ॥ 4 ॥

हा धिक् छलिता स्वीकृतिरथ खेदार्हा तथा स्थितिः प्रेम्णः ।
वेत्ति स यन्नास्मासु क्षमत्वमस्त्यार्तनादस्य ॥ 5 ॥

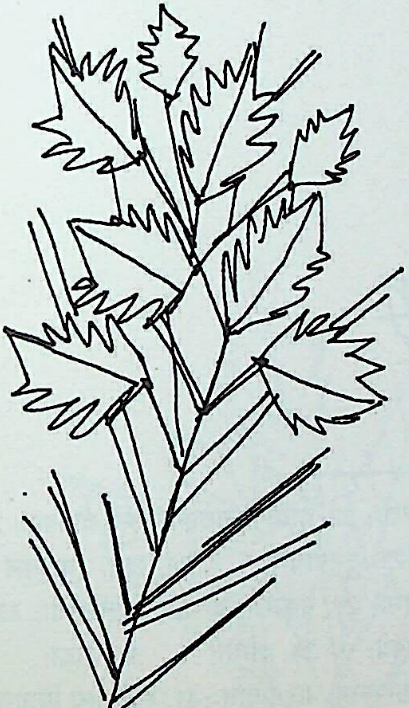

रंगे तमकीने गुल-ओ-लालः[21] परीशाँ क्यों है
गर चराग़ाने सरे रह गुज़रे बाद[22] नहीं

सबदे[23] गुल के तले बन्द करे है गुलचीं[24]
मुश़दः,[25] अय मुर्ग़,[26] कि गुलज़ार[27] में सय्याद[28] नहीं

नफ़ि[29] से करती है इस्बात[30] तराविश[31] गोया
दी ही जा-ए-दहन[32] उसको दमे ईजाद,[33] नहीं

कम नहीं, जल्वः गरी[34] में, तेरे कूचे[35] से बिहिश्त[36]
यही नक़्शः[37] है, वले[38] इस क़दर आबाद[39] नहीं

करते किस मुँह से हो ग़ुर्बत[40] की शिकायत, ग़ालिब
तुम को बेमेह्रि-ए-याराने वतन[41] याद नहीं

---

21. पुष्पाणामभिमानसंवलिता वर्णाः; 22. वायोर्गमनागमनमार्गस्य दीपकाः; 23. पुष्पाणां करण्डिका; 24. मालाकारः; 25. सुसमाचारः; 26. खगः (बुल्बुल इत्याख्यः); 26. उद्यानम्; 27. व्यांधः; 28. शोभा; 29. नकारः; 30. प्रमाणयतीत्यर्थः; 31. प्रकटनम्; 32. मुखस्य स्थाने; 33. सृष्टेः समये; 34. शोभा; 35. रथ्या; 36. स्वर्गः; 37. मानचित्रम्; 38. परन्तु; 39. सम्पन्नम्; 40. प्रवासः; 41. स्वदेशस्य मित्राणां नैष्ठुर्यम्।

यदि चेदमी समीरोद्गमाध्वनो दीपका न वर्तन्ते।
दर्पान्विताः सुमनसां वर्णाः कथमाकुलाः सन्ति ।। 6।।

मालाकारो मामिह करण्डिकायास्तले निवेशयति।
सुसमाचारो हे खग ! नास्ति व्याधो यदुद्याने।। 7।।

अस्वीकारस्तस्य स्वीकारस्य प्रकाशनं मन्ये।
तस्मै दत्तः सृष्टेः क्षणे नकारो मुखस्थाने ।। 8।।

स्वर्गस्त्वद्रथ्यातः शोभायां नास्ति रे क्वचिन्न्यूनः।
इदमेव मानचित्रं, न स परमेवं जनाकार्णः ।। 9।।

केनाननेन निन्दसि 'ग़ालिब' परदेशवासमद्य स्वम्।
निजदेशाभिजनानां स्मरसि न रे निष्कृपत्वस्य ।। 10।।

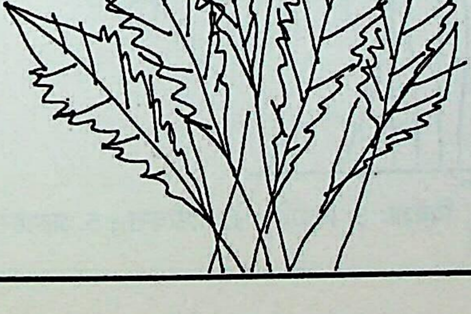

103

दोनों जहान दे के, वह समझे, यह ख़ुश रहा
यां आ पड़ी यह शर्म, कि तकरार[1] क्या करें

थक थक के, हर मक़ाम प दो चार रह गये
तेरा पता न पायें, तो नाचार[2] क्या करें

क्या शम्'अ के नहीं है हवा ख़्वाह[3] अहले बज़्म[4]
हो ग़म ही जाँ गुदाज़,[5] तो ग़मख़्वार[6] क्या करें

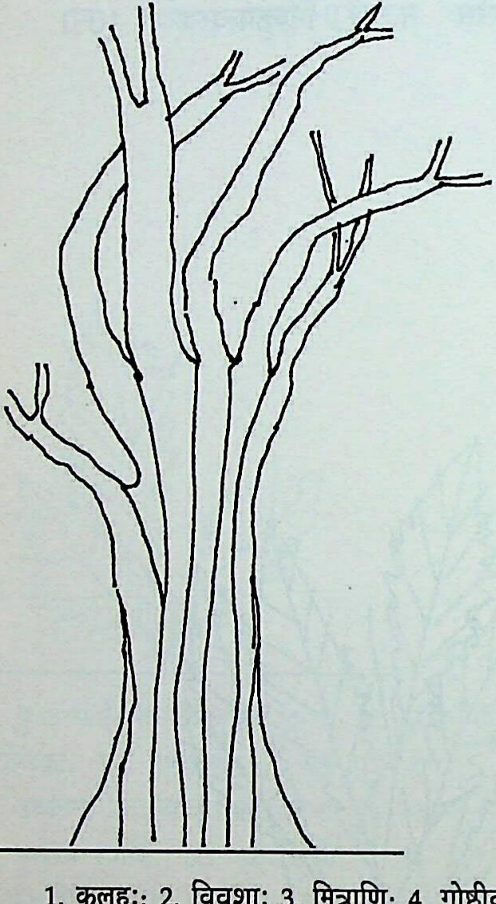

---

1. कलहः; 2. विवशाः 3. मित्राणि; 4. गोष्ठीवन्तः; 5. प्राणहरः; 6. समशोकः।

103

दत्वा जगद्द्वयं मे तेनावगतं गतः प्रसादमिति।
कलहं किमेष कुर्यामित्यापतिता त्रपेयमिति ।। 1 ।।

प्रत्येकं विश्रामागारे द्वित्रा अवस्थिताः श्रान्ताः।
सङ्केतं न लभेमहि तव चेद् विवशा नु किं कुर्मः ।। 2 ।।

एते गोष्ठीवन्तो मित्राणि न सन्ति किं प्रदीपस्य।
शोकः प्राणहरो यदि किं कुर्यात् तत्र समशोकः ।। 3 ।।

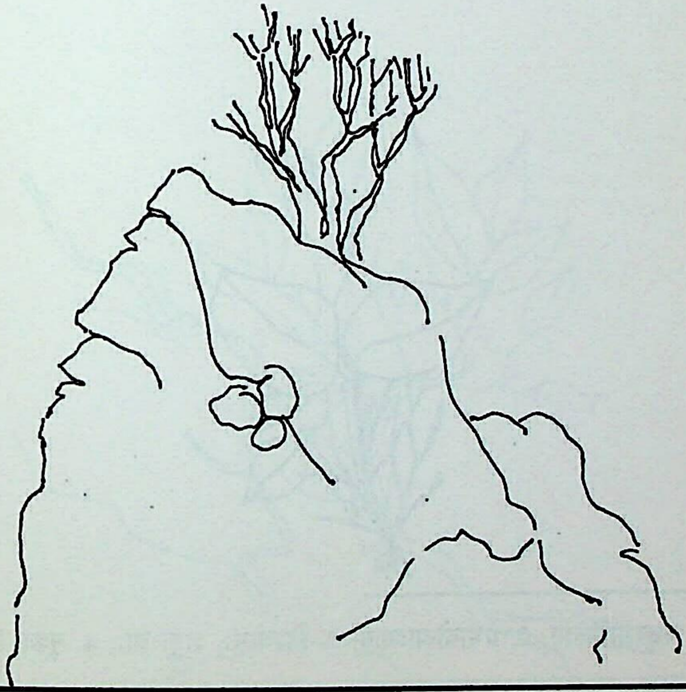

104

हो गई है ग़ैर की शीरीं बयानी,[1] कारगर[2]
'अिश्क़ का उसको गुमाँ[3] हम बेज़बानों[4] पर नहीं

---

1. मधुरभाषित्वम्; 2. प्रभावोत्पादकम्; 3. विश्वासः, शङ्का वाः; 4. मूकाः ।

104

मधुभाषित्वमरातेः समजनि तस्मिन्नु हन्त संसिद्धम्।
अस्मासु स विश्वासं बिभर्ति मूकेषु न प्रेम्णः ॥ 1 ॥

105

क़यामत है, कि सुन लैला का दश्ते क़ैस[1] में आना
त'अज्जुब[2] से वह बोला, यों भी होता है ज़माने में

दिले नाज़ुक[3] प उसके रह्म आता है मुझे, ग़ालिब
न कर सरगर्म[4] उस काफ़िर को उल्फ़त[5] आज़माने में

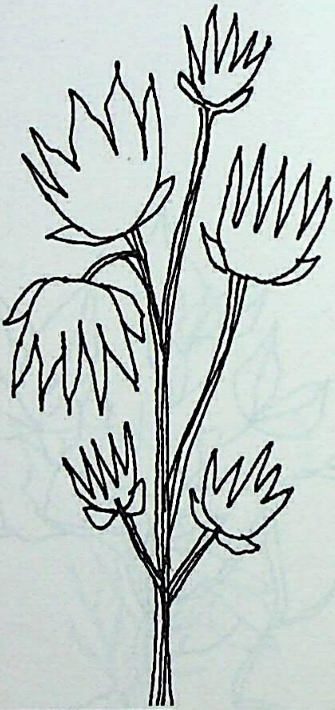

---

[1] 'मजनू' इत्यस्य प्रणयिनः मरुभूः, अरण्यम्; [2] आश्चर्यम्; [3] कोमलं हृदयम्; [4] संलग्नः; [5] प्रेम।

105

‘लैला’’ऽऽगमनं ‘मजनो’र्मरुभुवि विनिशम्यतेन साश्चर्यम्।
जायत एवमपीतो जगतीत्युक्तं ननु प्रलयः ॥ 1 ॥

हृदि मृदुनि तस्य ‘ग़ालिब’ कारुण्यं जायते म इति कृत्वा।
प्रेमपरीक्षायां तं संलग्नं नास्तिकं न कुरु ॥ 2 ॥

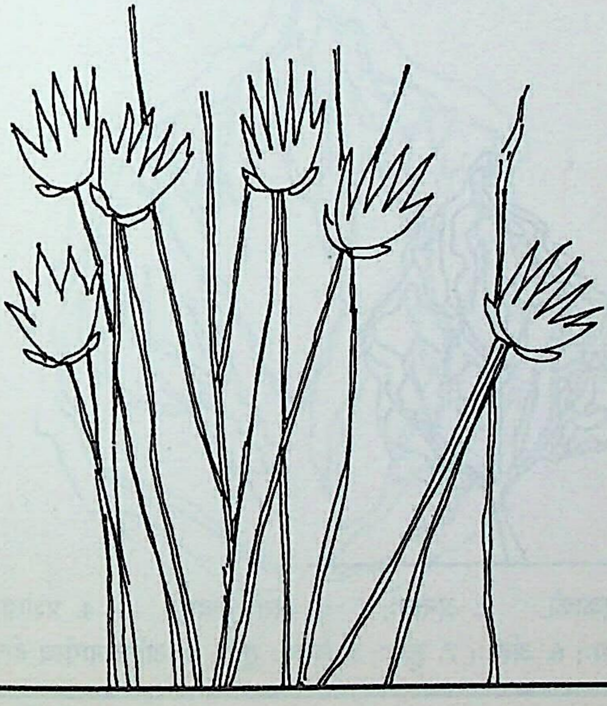

106

दिल लगा कर लग गया उनको भी तन्हा[1] बैठना
बारे,[2] अपनी बेकसी[3] की हमने पाई दाद,[4] याँ

हैं ज़वाल आमादः[5] अज्ज़ा[6] आफ़रीनिश[7] के तमाम
मेह्रे गर्दू[8] है चराग़े रह गुज़ारे बाद,[9] याँ

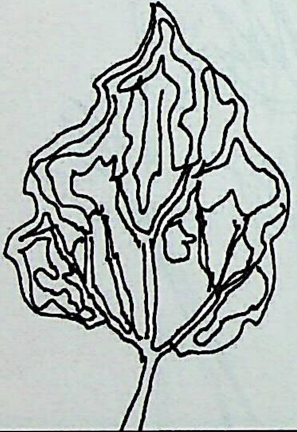

---

1. एकाकी; 2. अन्ततः; 3. असहायत्वम्; 4. प्रशंसा, न्यायो वा; 5. ह्रासोन्मुखाः; 6. अंशाः; 7. सृष्टिः; 8. नभसः सूर्यः; 9. अनिलमार्गस्य दीपः।

106

हृदि लग्ने, निर्जनके वासं मनुते परं प्रियं सोऽपि।
वैवश्यस्य निजस्य प्राप्ताऽत्र मयाऽन्ततः शस्तिः ।। 1 ।।

सृष्टेरंशाः सर्वे ह्रासोन्मुखतां भजन्त आभान्ति।
गगनगतो हि विवस्वान् वायोर्मार्गप्रदीपोऽत्र ।। 2 ।।

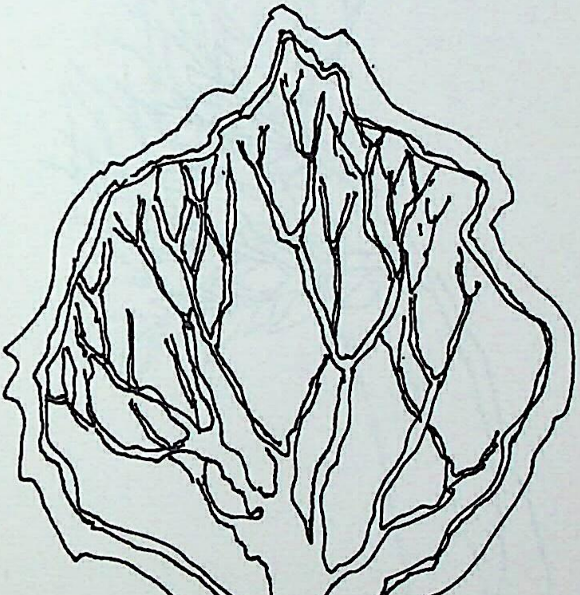

107

यह हम जो हिज्र[1] में, दीवार-ओ-दर को देखते हैं
कभी सबा[2] को, कभी नामःबर[3] को देखते हैं

वह आयें घर में हमारे, ख़ुदा की क़ुदरत है
कभी हम उनको, कभी अपने घर को देखते हैं

नज़र लगे न कहीं, उसके दस्त-ओ-बाज़ू[4] को
ये लोग क्यों मेरे ज़ख़्मे जिगर[5] को देखते हैं

तेरे जवाहिरे तर्फ़े कुलह[6] को क्या देखें
हम औजे ताले'-ए-लाल-ओ-गुहर[7] को देखते हैं

---

1. विरहः; 2. पवनः; 3. पत्रवाहकः, लेखहारकः; 4. पाणी भुजौ च; 5. यकृद्व्रणः; 6. शिरोवेष्टनगता मणयः; 7. हीरकमुक्तानां भाग्यस्य औन्नत्यम्।

107

विरहे वयं यदेतद् भित्तिं द्वारञ्च हन्त पश्यामः।
पश्यामश्च कदाचिद् गन्धवहं पत्रवहमथवा ॥ 1 ॥

काचित् कृपेश्वरस्य, प्राप्तोऽस्माकं गृहेऽभवत् स इति।
तं, क्षणमुत्पश्यामः क्षणमुत्पश्याम आत्मगृहम् ॥ 2 ॥

पाणी भुजौ च तस्य स्पृशेत् कदाचित् न काऽपि दृग् दुष्टा।
लोकाः पश्यन्ति कथं यकृद्व्रणं मामकं केचित् ॥ 3 ॥

तव कथमाकलयामो रत्नाङ्कितवेष्टनाग्रमिह शिरसः।
सौभाग्यमामनामो मुक्तानां हीरकाणाञ्च ॥ 4 ॥

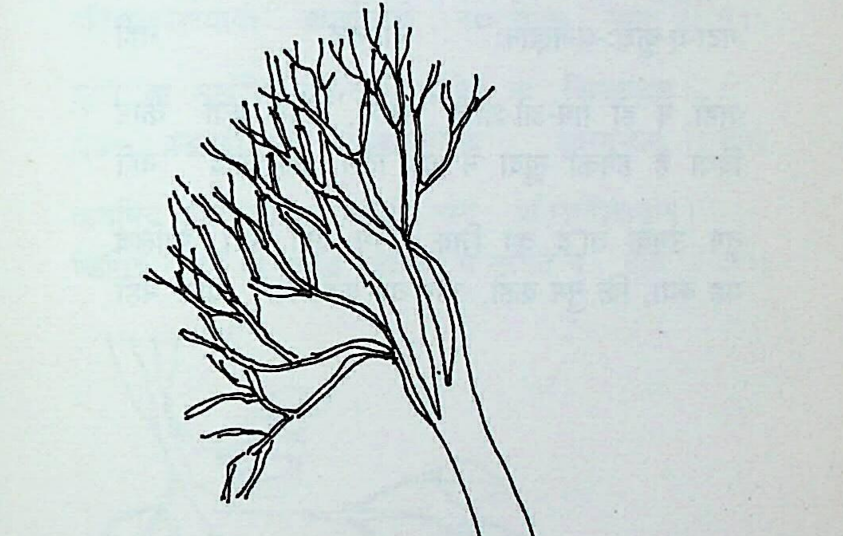

108

नहीं, कि मुझको क़यामत[1] का ए'तिक़ाद[2] नहीं
शबे फ़िराक़[3] से, रोज़े जज़ा,[4] ज़ियाद[5] नहीं

कोई कहे, कि शबे मह[6] में क्या बुराई है
बला से, आज अगर दिन को अब्र-ओ-बाद[7] नहीं

जो आऊँ सामने उनके, तो मरहबा[8] न कहें
जो जाऊँ वाँ से कहीं को, तो ख़ैरबाद[9] नहीं

कभी जो याद भी आता हूँ मैं, तो कहते हैं
कि आज बज़्म[10] में कुछ फ़ितनः-ओ-फ़साद[11] नहीं

'अलावः 'ईद के मिलती है, और दिन भी, शराब
गदा-ए-कूचः-ए-मैख़ानः[12] नामुराद[13] नहीं

जहाँ में हो ग़म-ओ-शादी[14] बहम,[15] हमें क्या काम
दिया है हमको ख़ुदा ने वह दिल, कि शाद[16] नहीं

तुम उनके वा'दे का ज़िक्र उनसे क्यों करो, ग़ालिब
यह क्या, कि तुम कहो, और वह कहें, कि याद नहीं

---

1. प्रलयः; 2. विश्वासः; 3. विरहनिशा; 4. अन्त्यन्यायस्य दिनम्; 5. अधिकम्; 6. चन्द्रिकान्विता रात्रिः; 7. मेघा वायुश्च; 8. स्वागतम्; 9. शिवास्ते पन्थान इत्यादि कथनम्; 10. गोष्ठी; 11. उपद्रवः कलहश्च; 12. मदिरालयरथ्याया भिक्षुकः; 13. अपूर्णकामः; 14. शोकः प्रसन्नता च; 15. सममेव; 16. प्रसन्नम्।

108

न ह्येतद् यन्नहि मे विषये प्रलयस्य कोऽपि विश्वासः।
अधिकं विरहनिशाया नान्त्यन्यायस्य दिनमस्ति ।। 1।।

कामं न स्तां दिवसे मेघाच्छन्नं नभश्च पवनश्च।
निशि चन्द्रिकान्वितायां विनिर्दिशेत् कोऽपि को दोषः ।। 2।।

आगच्छानि पुरो यत् तस्य, न स स्वागतं तवेति वदेत्।
यद् गच्छानि, ततः स न वदेच्छिवं तेऽस्तु वर्त्मेति ।। 3।।

स्मृतिपथमपि तस्याहं कदाचिदुपयामि भाषते स ततः।
अद्य न कश्चिद् गोष्ठ्यामुपद्रवो वाऽथवा कलहः ।। 4।।

'ईदो'त्सवातिरिक्तेष्वपि दिवसेष्वत्र लभ्यते मदिरा।
मदिरालयरथ्याया अपूर्णकामो न भिक्षुः स्यात् ।। 5।।

दुःखं वा सुखमिह वा कामं सममेव नः किमेष्टव्यम्।
यन्न प्रसन्नमीश्वर उपहृतवांस्तद् हृदस्मभ्यम् ।। 6।।

कथमिव कुर्या 'ग़ालिब' तम्प्रति तस्य प्रतिश्रुतेश्चर्चाम्।
किमिदं यत् त्वं कथयेः कथयेत् स स्मर्यते न मया ।। 7।।

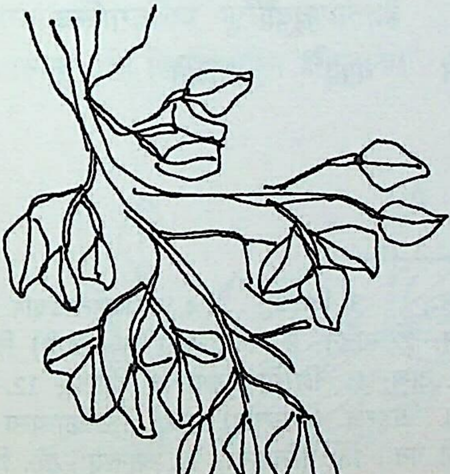

109

तेरे तौसन[1] को सबा[2] बाँधते हैं
हम भी मज़मूँ[3] की हवा बाँधते हैं[4]

आह का किसने असर देखा है
हम भी इक अपनी हवा बाँधते हैं[4]

तेरी फ़ुर्सत[5] के मुक़ाबिल,[6] अय 'उम्र
बर्क़[7] को पा ब हिना[8] बाँधते हैं

क़ैदे हस्ती[9] से रिहाई, मा'लूम
अश्क[10] को बे सर-ओ-पा[11] बाँधते हैं

नश्शः-ए-रंग[12] से, है वाशुदे गुल[13]
मस्त कब बन्दे क़बा[14] बाँधते हैं

ग़लतीहा-ए-मज़ामीं[15] मत पूछ
लोग, नाले[16] को रसा[17] बाँधते हैं

अह्ले तद्बीर[18] की वामान्दगियाँ[19]
आबलों[20] पर भी हिना बाँधते हैं

सादः पुरकार[21] हैं ख़ूबाँ[22], ग़ालिब
हम से पैमाने वफ़ा[23] बाँधते हैं

---

1. अश्वः; 2. पवनः; 3. विषयः; 4. प्रभावमुत्पादयाम इत्यर्थः; 5. अवधिरित्यर्थः; 6. तुलनायाम्; 7. तडित्; 8. मदयन्तिका (= मेंहदी) विलेपितौ चरणौ; 9. जीवनकारागृहम्; 10. अश्रु; 11. शिरसा चरणेन च रहितम्; 12. वर्णानां मदः; 13. पुष्णाणां विकासः; 14. 'अङ्गरक्ष' (अंगरखा) बन्धः; 15. काव्यस्य दोषाः; 16. आर्तस्वरः; 17. 'प्राप्तः', ततो गतः; 18. बुद्धिमन्तः; 19. श्रान्तयः; 20. पिटकाः; 21. मुग्धाः; 22. रमणीया जनाः; 23. प्रेमनिर्वाहप्रतिज्ञा।

109

अश्वं त्वदीयमेते वेगवता मारुतेन तुलयामः।
वयमपि वर्ण्यं विषयं कल्पनया योजयाम इह ॥ 1॥

आर्तस्वरस्य दृष्टो जगतीषदपि प्रभाव इह केन।
वयमपि यथाकथञ्चित् प्रभावमुत्पादयामः स्वम् ॥ 2॥

अवधेस्तव तुलनायां वयमेते सर्वदैवमायुरयि।
मदयन्तिकाविलेपितचरणां मन्यामहे तडितम् ॥ 3॥

जीवनकारागारान्मुक्तिर्विदितैव तावदस्माकम्।
अश्रु वयं बध्नीमः शिरसा चरणेन हीनमपि ॥ 4॥

अवगच्छामो वयमिह पुष्पविकासो मदेन वर्णानाम्।
निजमङ्गरक्षबन्धं कदेह मत्ता निबध्नन्ति ॥ 5॥

काव्यगतानां विषये दोषाणां किमपि हन्त मा पृच्छ।
आर्तस्वरमपि कवयः, 'प्राप्त' इति प्रस्तुवन्त्येते ॥ 6॥

श्रान्तय आकलनीया बुद्धिमतां हन्त काश्चिदप्येताः।
मदयन्तिकाविलेपं पिटकास्वपि कुर्वते य इमे ॥ 7॥

रम्या एते 'ग़ालिब' मुग्धा आपाततः प्रतीयन्ते।
अस्मान् प्रति निर्वाहं प्रेम्णि प्रतिजानते ह्येते ॥ 8॥

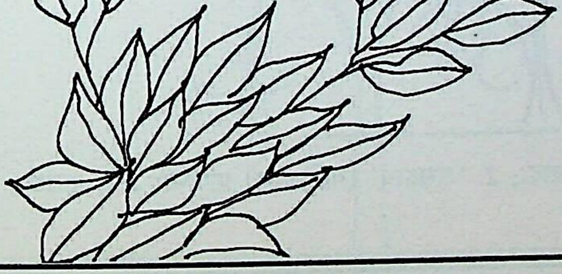

110

ज़मानः सख़्त कम आज़ार[1] है बजाने असद[2]
वगरनः हम तो तवक्को’[3] ज़ियादः[4] रखते हैं

---

1. अल्पकष्टप्रदः; 2. ‘असदस्य’ (ग़ालिबस्य) प्राणेभ्यः शपे, इत्यर्थः; 3. आशा; 4. अधिकम् ।

110

‘असदस्य’ प्राणेभ्यः शपेऽल्पकष्टप्रदः समय एषः।
वयमन्यथा तु तस्मात् समधिकमाशास्महे कष्टम् ॥ 1 ॥

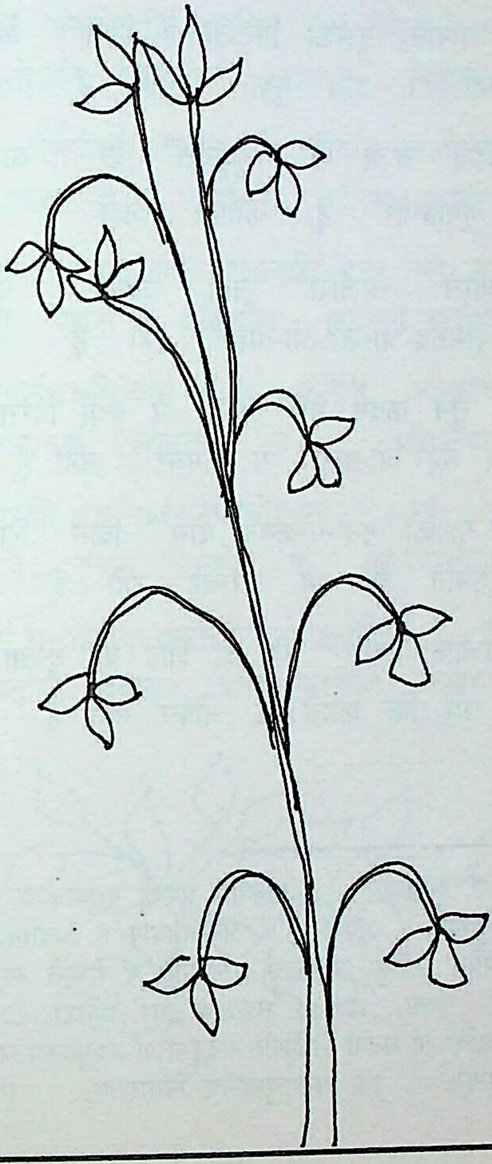

111

दाइम[1] पड़ा हुआ तेरे दर पर नहीं हूँ मैं
ख़ाक ऐसी ज़िन्दगी प, कि पत्थर नहीं हूँ मैं

क्यों गर्दिशे मुदाम[2] से घबरा न जाये दिल
इन्सान हूँ, पियालः-ओ-साग़र[3] नहीं हूँ मैं

या रब, ज़मानः मुझको मिटाता है किस लिये
लौहे जहाँ प हर्फ़े मुकर्रर[4] नहीं हूँ मैं

हद चाहिये सज़ा में ’अुक़ूबत[5] के वास्ते
आख़िर गुनाहगार[6] हूँ, काफ़िर[7] नहीं हूँ मैं

किस वास्ते ‘अज़ीज़[8] नहीं जानते मुझे
ला’ल-ओ-ज़मर्रुद-ओ-ज़र-ओ-गौहर[9] नहीं हूँ मैं

रखते हो तुम क़दम मेरी आँखों से क्यों दिरेग़[10]
रुतबे[11] में मेह्र-ओ-माह[12] से कमतर[13] नहीं हूँ मैं

करते हो मुझको मन’-ए-क़दम बोस[14] किस लिये
क्या आसमान के भी बराबर नहीं हूँ मैं

ग़ालिब, वज़ीफ़ः ख़्वार[15] हो, दो शाह को दु’आ[16]
वह दिन गये कि कहते थे, नौकर नहीं हूँ मैं

---

1. निरन्तरम्; 2. दुःखावृत्तिः; 3. पानपात्रं चषको मधुपात्रञ्च; 4. संसारपृष्ठतो द्विर्लिखितमक्षरम्; 5. दुःखम्; 6. अपराद्धः; 7. अनास्थावान्; 8. प्रियतमः, अनेन हज़रत मुहम्मदो ग़ालिबस्याभिप्रेत इत्याहुः, यतस्तस्मै रत्नादीनि न रोचन्ते स्म; 9. पद्मरागो हरिन्मणिः काञ्चनं मुक्ता च; 10. सङ्कोचः; 11. प्रतिष्ठा; 12. सूर्यश्चन्द्रश्च; 13. न्यूनतरः; (अत्र कविः तां घटनां निर्दिशति यदनुसारेण ह०मुहम्मदस्य चरणौ चुम्बितुं सूर्यश्चन्द्रश्चागतावास्ताम्); 14. चरणचुम्बनतो निवारणम्; 15. वृत्तिभोक्ता; 16. आशीः ।

111

न तव द्वारि निरन्तरमवस्थितो हा धिगेष वर्तेऽहम्।
जीवितमीदृशमास्तां मृद्गतमश्मा न जातोऽस्मि ।। 1 ।।

दुःखावृत्तिभिरात्मा न सन्तताभिः कथं विकीर्येत।
'आदम'कुलजो वर्ते चषको नाहं न मधुपात्रम् ।। 2 ।।

ईश्वर मां संसारो विनिवारयितुं कथं प्रवृत्त इतः।
संसारपृष्ठतोऽहं द्विर्लिखितं नाक्षरं किञ्चित् ।। 3 ।।

दुःखार्थं दण्डविधौ भवितव्यं सीमया कयाचिदिह।
वर्तेऽन्ततोऽपराद्धो न चाहमिति कोऽप्यनास्थावान् ।। 4 ।।

हेतोः कस्मात् प्रेयान् मां न विजानाति, हन्त नहि जाने।
न ह्येष पद्मरागो हरिन्मणिः काञ्चनं वाऽहम् ।। 5 ।।

स्वचरणयोर्मच्चक्षुषि कथं निधानात् करोषि सङ्कोचम्।
तरणेरिन्दोश्चाहं न्यूनतरो न प्रतिष्ठायाम् ।। 6 ।।

विनिवारयसि कथं मां निजपदयोश्चुम्बनादिह त्वं भोः।
गगनेनापि समानं मनुषे मां नेह किन्तावत् ।। 7 ।।

'ग़ालिब' वृत्त्याजीवस्त्वमसि नृपतये शुभाशिषं देहि।
हन्त गतास्ते दिवसा दासो नास्मीति येष्ववदः ।। 8 ।।

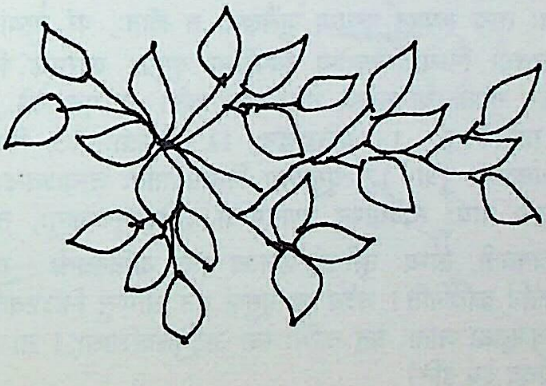

112

सब कहाँ ? कुछ लालः-ओ-गुल[1] में नुमायाँ[2] हो गईं
ख़ाक में क्या सूरतें होंगी, कि पिन्हाँ[3] हो गईं

याद थीं, हमको भी, रंगारंग[4] बज़्म आराइयाँ[5]
लेकिन अब नक़्श-ओ-निगारे ताक़े निसियाँ[6] हो गईं

थीं बनातुन्ना'शे गर्दूं,[7] दिन को पर्दे में निहाँ[8]
शब[9] को उनके जी में क्या आई, कि 'उरियाँ[10] हो गईं

क़ैद में या'क़ूब[10] ने ली, गो, न यूसुफ़[11] की ख़बर
लेकिन आखें रौज़ने दीवारे ज़िन्दाँ[12] हो गईं

सब रक़ीबों[13] से हों नाख़ुश,[14] पर ज़नाने मिस्र[15] से
है ज़ुलेख़ा[16] ख़ुश, कि मह्वे माहे कन्'आँ[17] हो गईं

---

1. पाटलादीनि पुष्पाणि; 2. प्रकटीभूतानि; 3. अन्तर्हिताः; 4. विविधाः; 5. गोष्ठीशृङ्गारा; 6. विस्मृतिगवाक्षप्रसाधनानि; 7. सप्तर्षिमण्डली; 8. गुप्ता; 9. रात्रिः; 10. नग्नाः; 10-12 या'क़ूबनाम्न ईश्वरसन्देशहरस्य यूसुफ़नामा (सन्देशहरः) द्वादशतमः पुत्रः सर्वेष्वपि निजभ्रातृषु सुन्दरतम आसीत्। ईर्ष्यालुभिर्भ्रातृभिः स एकस्मिन् कूपे निक्षिप्तः। तस्मात् कूपाद् वणिजां वर्गेणैकेन स निःसारितः, मिस्रदेशे च दास-रूपेण विक्रीतः। ततः तस्य रूपमनु मुग्धया ज़ुलेख़या स क्रीतः, परं तस्यां यूसुफ़स्याकर्षणं नाजनि। अतस्तया मिथ्यादोषमारोप्य स्वपतिना यूसुफ़ः कारागृहे निक्षेपितः। इतो यूसुफ़ार्थं शोकेन रुदतो या'क़ूबस्य नेत्रेऽन्धतां गते। ते एव नेत्रे कारागारभित्तीनां छिद्राणीत्युक्तं ग़ालिबेन। 13. प्रतिद्वन्द्विनः; 14. अप्रसन्नाः; 15. मिस्रदेशस्य स्त्रियः; 16. मिस्रदेशशासकस्य पुत्री; 17. यूसुफ़स्य निवासवसतिः तस्याश्चन्द्रः यूसुफ इत्यर्थः, (यदा मिस्रदेशस्य नार्यः स्वदासमनु प्रणयमुग्धां ज़ुलेख़ामुपजहसुः, तदा ज़ुलेख़ा ता भोजनार्थमामन्त्रितवती, ताभ्यः छुरिकां फलञ्च दत्वा कथितवती - यदाऽहमाज्ञापयेयं तदा फलस्य कर्तनं कार्यमिति। तदैव सा यूसुफ़ं तत आगन्तुं निर्दिष्टवती, यूसुफ़ं दृष्ट्वा सर्वाः स्त्रिय एवं मुग्धा जाताः यत् ताभिः स्वा अङ्गुलयश्छिन्नाः। ता जगदुः - यूसुफ़ः मनुष्यरूपः कश्चिद् देव इति)

112

सर्वाः कुतो नु ! कतिचित् स्फुटतां सुमनःसु हन्त सम्प्राप्ताः।
कीदृश आकृतयः स्युर्बभूवुरन्तर्हिता मृदि याः ॥ 1॥

ते गोष्ठीशृङ्गारा अस्माकमपि स्मृतिं गता विविधाः।
विस्मृतिगवाक्षमध्येऽधुना तु विच्छित्तयो जाताः ॥ 2॥

सप्तर्षिमण्डलीयं दिवसमतिष्ठद् क्वचित् स्वमावृत्य।
निशि तस्याः किं हृद्गतमभूद् यदाऽऽसीन्निरावरणा ॥ 3॥

'या'क़ूबः' कारायां नाज्ञासीद् यदपि 'यूसुफ़स्य' गतिम्।
नयने तथापि कारागृहभित्तिच्छिद्रतां प्राप्ते ॥ 4॥

सामान्यतः सपत्न्यो विषया रोषस्य 'मिस्र'-ललनासु।
हृष्टा परं ज़ुलेख़ा' लीना 'कन्'आं'-विधौ या हि ॥ 5॥

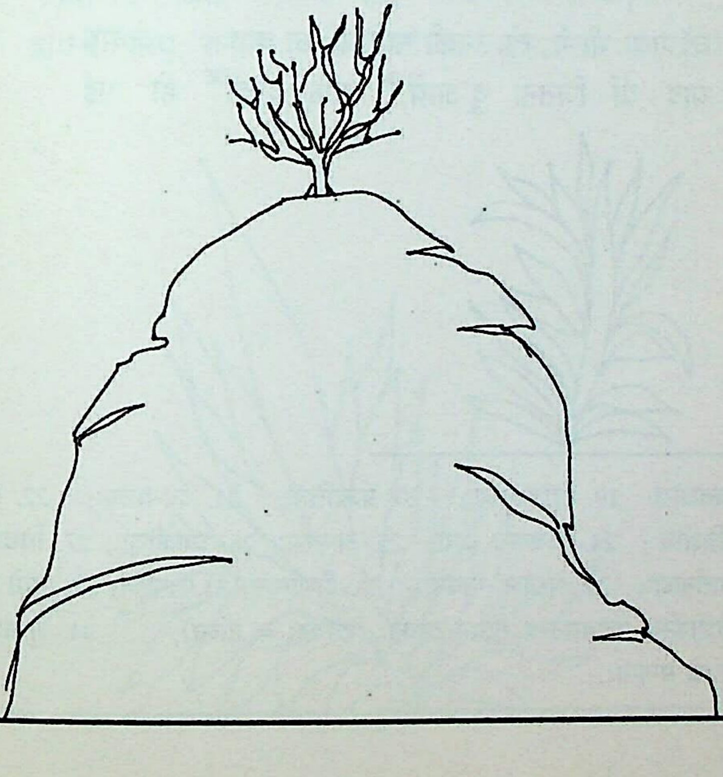

जू-ए-ख़ूँ[18] आखों से बहने दो, कि है शामे फ़िराक़[19]
मैं यह समझूँगा, कि शम’अें दो फ़ुरोज़ाँ[20] हो गईं

इन परीज़ादों[21] से लेंगे ख़ुल्द[22] में हम इन्तिक़ाम[23]
क़ुदरते हक़[24] से, यही हूरें[25] अगर वाँ हो गईं

नीन्द उसकी है, दिमाग़ उसका है, रातें उसकी हैं
तेरी ज़ुल्फ़ें, जिसके बाज़ू पर, परीशाँ[26] हो गईं

मैं चमन में क्या गया, गोया दबिस्ताँ[27] खुल गया
बुलबुलें सुनकर मेरे नाले,[28] ग़ज़लख़्वाँ[29] हो गईं

वह निगाहें क्यों हुई जाती हैं, यारब, दिल के पार
जो मेरी कोताहि-ए-क़िस्मत[30] से मिश़गाँ[31] हो गईं

बसकि रोका मैं ने, और सीने में उभरीं पै ब पै[32]
मेरी आहें बख़ियः-ए-चाके-गरीबाँ[33] हो गईं

वाँ गया भी मैं, तो उनकी गालियों का क्या जवाब
याद थीं जितनी दु’आयें,[34] सर्फ़े दरबाँ[35] हो गईं

---

[18] रक्तधारा; [19] विरहसन्ध्या; [20] प्रज्वलितौ; [21] देव-बालाः; [22] स्वर्गः; [23] प्रतिशोधः; [24] ईश्वरस्य कृपा; [25] अप्सरसः; [26] व्याकीर्णाः; [27] विद्यालयः; [28] आर्तनादाः; [29] ‘ग़ज़ल’-गायनाः; [30] दौर्भाग्यम्; [31] पक्ष्माणि; [32] भूयो भूयः; [33] विशीर्णस्य गलवसनस्य सीवन-टङ्काः (टङ्काः = टांका); [34] शुभाशंसाः; [35] द्वाःस्थे समाप्ताः;
]

अस्त्रस्त्रोतः प्रवहतु दृग्भ्यां सन्ध्येयमस्ति विरहस्य।
प्रज्वलितौ द्वौ दीपावित्यहमधुनाऽवगच्छेयम् ॥ 6 ॥

सममाभिर्ललनाभिर्दिवि भविता वैरशुद्धिरस्माकम्।
यद्यप्सरसां मध्ये स्युरिमाः कृपयेश्वरस्य ततः ॥ 7 ॥

निद्रा तस्य, मतिर्वा तस्य, तथा तस्य सन्ति यामिन्यः।
व्याकीर्णाः समभूवंस्तवालक़ा यस्य रे भुजयोः ॥ 8 ॥

गत उद्यानमहं यन्मन्ये विद्यालयः प्रवृत्तोऽभूत्।
श्रुत्वा मदार्तनादं बुल्बुलकै'ग़ज़ल'मारब्धम् ॥ 9 ॥

कथमीश्वर ! ताः पारे हृदयं यान्त्यो दृशः प्रतीयन्ते।
मम दौर्भाग्यादिव याः पक्ष्मत्वं प्राप्तवन्त्य इतः ॥ 10 ॥

अवरुद्धा अपि वक्षसि भूयो भूयः समाप्नुवन्त्युदयम्।
आर्तस्वरा मदीया विशीर्णगलवस्त्रटङ्कसमाः ॥ 11 ॥

गतवानपि तत्राहं गालीनां हन्त तस्य किं वाच्यम्।
द्वाःस्थे तस्य समाप्ताः स्मृता मदीयाः शुभाशंसाः ॥ 12 ॥

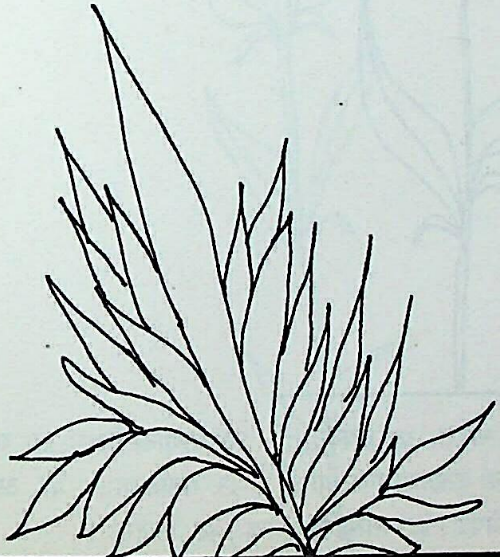

जाँ फ़िज़ा[36] है बादः,[37] जिसके हाथ में जाम[38] आ गया
सब लकीरें हाथ की, गोया रगे जाँ[39] हो गईं

हम मुवहिह्द[40] हैं, हमारा केश[41] है, तर्के रुसूम[42]
मिल्लतें[43] जब मिट गईं, अज्ज़ा-ए-ईमाँ[44] हो गईं

रंज से ख़ूगर[45] हुआ इन्साँ, तो मिट जाता है रंज
मुश्किलें[46] मुझ पर पड़ीं इतनी, कि आसाँ हो गईं

यों ही गर रोता रहा ग़ालिब़, तो अय अह्ले जहाँ[47]
देखना इन बस्तियों को तुम, कि वीराँ[48] हो गईं

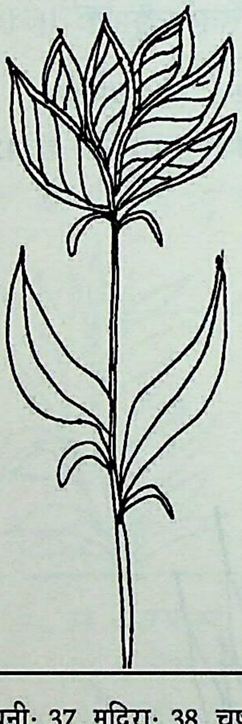

---

[36] सञ्जीवनी; [37] मदिरा; [38] चषकः; [39] प्राणानां शिराः; [40] एकेश्वरवादिनः; [41] धर्मः; [42] रीतीनां बाह्याचाराणां त्यागः; [43] सम्प्रदायाः; [44] आस्थाया अंशाः; [45] अभ्यस्तः; [46] विपदः; [47] सांसारिका जनाः; [48] निर्जनाः ।

सञ्जीवनी हि मदिरा प्राप्तश्चषको नु यस्य हस्तमहो।
प्राणशिरात्वमिवाप्ताः सर्वा रेखा नु हस्तगताः ॥ 13 ॥

वयमेकेश्वरनिरता रीतीनां त्याग एव नः पक्षः।
लुप्ता हि सम्प्रदाया आस्थाया अंशतां प्राप्ताः ॥ 14 ॥

विपदभ्यस्तस्य विपत् स्वयमेव क्षीणतामुपैतीह।
विपदोऽस्मासु न्यपतन् याः सरलत्वं गतास्ता हि ॥ 15 ॥

सांसारिकाः ! स 'ग़ालिब' एवं यदि सन्ततं रुदंस्तिष्ठेत्।
जनसंबाधा वसतीरेता द्रष्टास्थ जनशून्याः ॥ 16 ॥

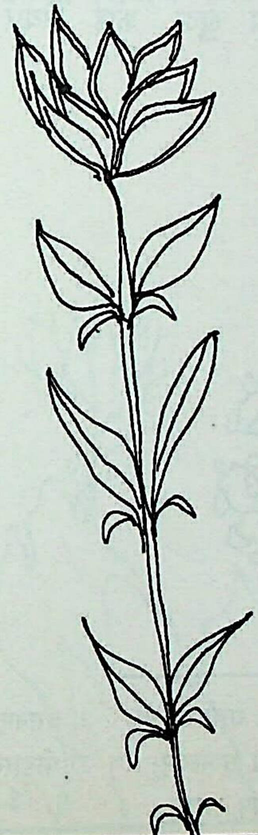

113

दीवानगी[1] से, दोश प ज़ुन्नार[2] भी नहीं
या'नी हमारे जैब[3] में इक तार[4] भी नहीं

दिल को नियाज़े हसरते दीदार[5] कर चुके
देखा तो हम में ताक़ते दीदार[6] भी नहीं

मिलना तेरा अगर नहीं आसाँ, तो सह्ल है
दुश्वार तो यही है, कि दुश्वार भी नहीं

बे 'अिश्क़ 'अुम्र कट नहीं सकती है, और याँ
ताक़त ब क़द्रे लज़्ज़ते आज़ार[7] भी नहीं

शोरीदगी[8] के हाथ से, है सर वबाले दोश[9]
सहरा[10] में, अय ख़ुदा, कोई दीवार भी नहीं

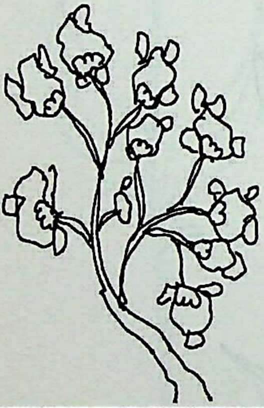

---

1. प्रेमोन्मादः; 2. यज्ञोपवीतम्; 3. वसनम्; 4. सूत्रम्; 5. दर्शनाभिलाषस्य कृतेऽर्पितम्; 6. दर्शनस्य सामर्थ्यम्; 7. पीडास्वादानुसारि; 8. उन्मादः; 9. स्कन्धयोर्भारः; 10. अरण्यम्, मरुभूः;

113

प्रेमोन्मादवशान्न स्कन्धे यज्ञोपवीतमप्यस्ति।
तात्पर्यं यद् वसने सूत्रं नास्माकमेकमपि ।। 1 ।।

अस्माभिः स्वं हृदयं समर्पितं दर्शनाभिलाषाय।
अस्मास्वाकलितं यन्न दर्शनस्यापि सामर्थ्यम् ।। 2 ।।

त्वन्मिलनं यदि सरलं न, ततः सौविध्यलभ्यमस्तीह।
कठिनं तु तावदेतद् यन्नहि तत्‌कठिनमस्तीति ।। 3 ।।

प्रेम विना यापयितुं न शक्यमायुः परं त्वहो ह्यत्र।
दुःखरसानुभवार्थं नात्मनि सामर्थ्यमप्यस्ति ।। 4 ।।

उन्मादेन शिरो नः प्रतीयते स्कन्धयोर्भृशं भारः।
ईश्वर ! न काचिदस्यां मरुभूमौ हन्त भित्तिरपि ।। 5 ।।

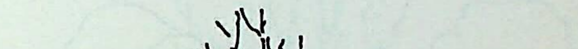

गुंजाइशे 'अदावते अग़यार[10] इक तरफ
याँ दिल में, ज़ो'फ़[11] से, हवसे यार[12] भी नहीं

डर नालःहा-ए-ज़ार[13] से मेरे, खुदा को मान
आख़िर नवा-ए-मुर्ग़े गिरफ़्तार[14] भी नहीं

दिल में है यार की सफ़े मिश़गाँ[15] हो रूकशी[16]
हालाँकि ताक़ते खलिशे ख़ार[17] भी नहीं

इस सादगी[18] प कौन न मर जाये, अय ख़ुदा
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं

देखा असद को ख़ल्वत-ओ-जल्वत[19] में बारहा[20]
दीवानः गर नहीं है, तो हुशियार भी नहीं

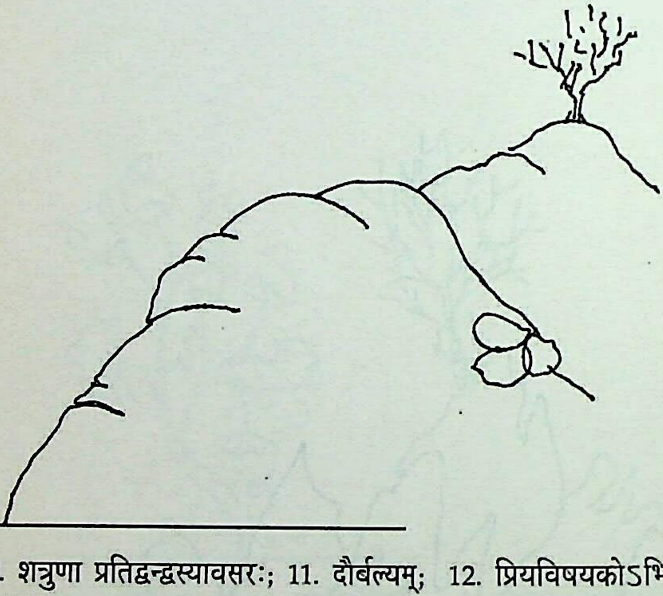

---

10. शत्रुणा प्रतिद्वन्द्वस्यावसरः; 11. दौर्बल्यम्; 12. प्रियविषयकोऽभिलाषः; 13. निर्बल आर्तनादः; 14. पञ्जरबद्ध स्य खगस्य स्वरः; 15. पक्ष्मणां दलम्; 16. द्वन्द्वस्यावसरः; 17. शूकस्य व्यथायाः सहनसामर्थ्यम्; 18. सारल्यम्; 19. एकान्ते प्रकाशे च; 20. भूयः।

आस्तां दूरेऽवसरः सार्धं रिपुणा निजस्य वैरस्य।
हृद्यस्मिन् दौर्बल्यात् प्रियविषयो नाभिलाषोऽपि ।। 6 ।।

मम दुर्बलार्तनादाद् बिभिहि स्वीकुर्वथेश्वरास्तित्वम्।
पञ्जरबद्धस्य यतः स्वरोऽन्ततः पक्षिणो नायम् ।। 7 ।।

प्रियपक्ष्मणां दलेन द्वन्द्वस्योपस्थितोऽवसर एषः।
सोढुं हि शूकजालव्यथामपीतो न सामर्थ्यम् ।। 8 ।।

सारल्येऽस्मिन्नीश्वर ! समर्पयेत् को नु तूर्णमात्मानम्।
युद्धे प्रवर्तते परमस्ति न तरवारिरपि हस्ते ।। 9 ।।

भूयः क्वचिदेकान्ते गोष्ठ्यामपि 'चासदः' क्वचिद् दृष्टः।
उन्मत्तो यदि नासौ न कश्चिदप्यस्ति चतुरोऽपि ।। 10 ।।

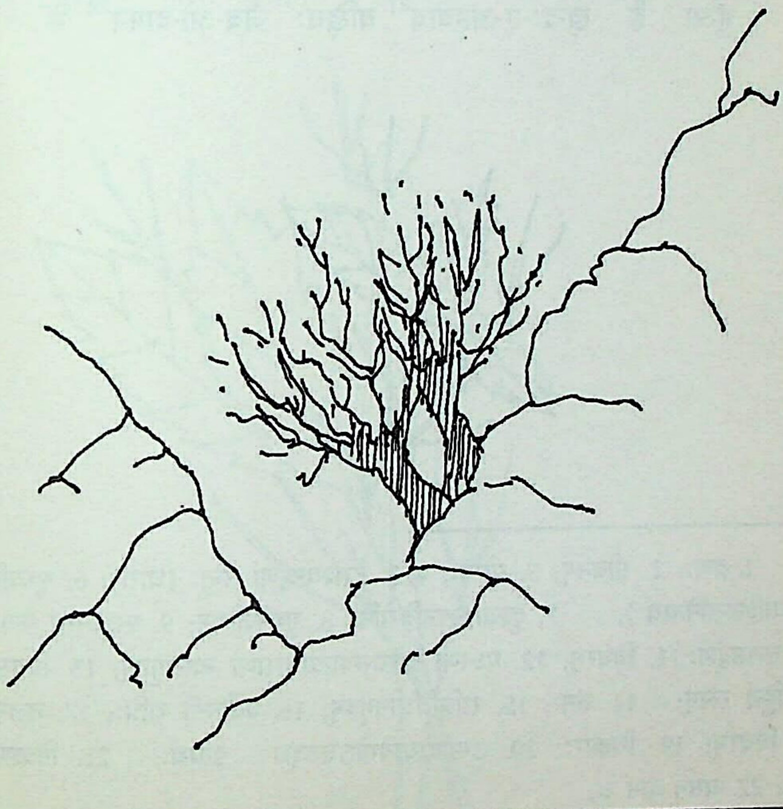

114

नहीं है ज़ख़्म[1] कोई बख़ियेे[2] के दरख़ुर,[3] मेरे तन में
हुआ है तारे अश्के यास[4] रिश्तः[5] चश्मे सोज़न[6] में

हुई है माने'-ए-ज़ौक़े तमाशा,[7] ख़ानः वीरानी[8]
कफ़े सैलाब[9] बाक़ी है, बरंगे पंबः[10] रौज़न[11] में

वदी'अत ख़ानः-ए-बेदादे काविशहा-ए-मिश़गाँ[12] हूँ
नगीने नामे शाहिद[13] है मेरे, हर क़तरः ख़ूँ तन में

बयाँ किससे हो, ज़ुल्मत गुस्तरी[14] मेरे शबिस्ताँ[15] की
शबे मह[16] हो, जो रख दें पंबः[17] दीवारों के रौज़न[18] में

निकोहिश[19] माने'-ए-बेरब्ति-ए-शोरे जुनूँ आई[20]
हुआ है ख़न्दः-ए-अहबाब[21] बख़ियः जैब-ओ-दामन[22] में

---

[1] व्रणः; [2] सीवनम्; [3] योग्यः; [4, 5] नैराश्याश्रूणां तन्तुः (धारा); [6] सूच्यक्षि (सूच्याश्छिन्द्रमित्यर्थः); [7] दृश्याकलनविरोधि; [8] गृहनैर्जन्यम्; [9] प्लावनस्य फेनः; [10] तूलसदृशः [11] विवरम्; [12] पक्ष्मणां प्रवेधरूपात्याचाराणां न्यासगृहम्; [13] प्रियस्य नामाङ्कितं रत्नम्; [14] तमः; [15] रात्रिविश्रामगृहम्; [16] ज्यौत्स्नी रात्रिः; [17] तूलम्; [18] विवरम्; [19] धिक्कारः; [20] उन्मादस्यावेगोऽवरुद्ध इत्यर्थः; [21] मित्राणां हासः; [22] वसनं दाम च;

114

वपुषि व्रणो मदीये न सीवनार्होऽस्ति हन्त कश्चिदपि।
नैराश्याश्रूणां यो तन्तुस्तन्तुः स सूच्यक्ष्णि ॥ 1 ॥

गृहनैर्जन्यं दृश्याकलनविरोधीव हन्त सञ्जातम्।
प्लावनफेनस्तूलवदवशिष्टो भित्तिविवरेषु ॥ 2 ॥

पक्ष्मप्रवेधरूपात्याचारन्यास - गेहमेषोऽहम्।
प्रियनामाङ्कितरत्नं प्रत्येकं वपुषि रक्तकणः ॥ 3 ॥

को नु तमो वर्णयितुं मद्विश्रामालयस्य शक्तः स्यात्।
ज्यौत्स्नी स्याद् यदि तूलं न्यस्येयं भित्तिविवरेषु ॥ 4 ॥

अवरुद्धो धिक्कारैरुन्मादावेग आत्मनः सुहृदाम्।
तेषां हासः प्राप्तः सीवनतां कण्ठवसनादौ ॥ 5 ॥

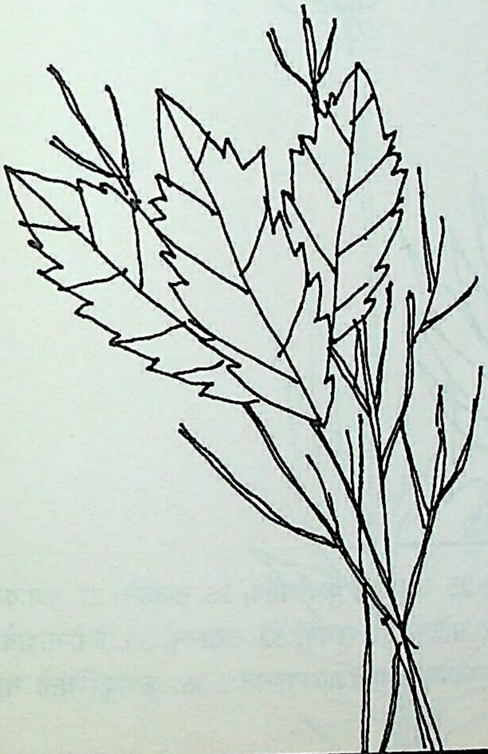

हुए उस मेह्र वश[23] के जल्वः-ए-तिम्साल[24] के आगे
पर अफ़शाँ[25] जौहर[26] आईने में, मिस्ले ज़र्रः[27] रौज़न में

न जानूँ नेक हूँ या बद हूँ, पर सोहबत[28] मुख़ालिफ़[29] है
जो गुल हूँ तो हूँ गुलख़न[30] में, जो ख़स[31] हूँ तो हूँ गुलशन[32] में

हज़ारों दिल दिये, जोशे जुनूने'अिश्क़[33] ने मुझको
सियह होकर सुवैदा[34] हो गया हर क़तरः ख़ूँ तन में

असद, ज़िन्दानि-ए-तासीरे उल्फ़त हा-ए-ख़ूबाँ[35] हूँ
ख़मे दस्ते नवाज़िश[36] हो गया है तौक़[37] गर्दन में

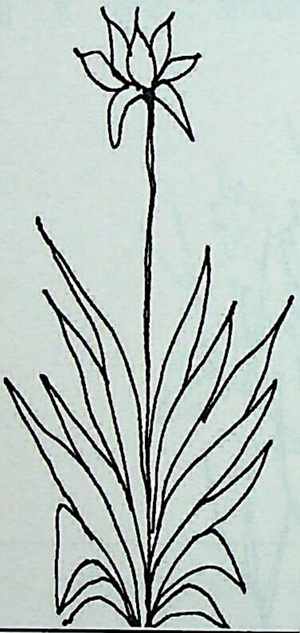

---

23. सूर्यसदृशमुखः; 24. रूपच्छविः; 25. उड्डयनं कुर्वाणानि; 26. तेजांसि; 27. रजःकणा इव; 28. सङ्गतिः; 29. विरुद्धा; 30. भ्राष्ट्रम्; 31. तृणम्; 32. उद्यानम्; 33. प्रेमोन्मादावेशः 34. कृष्णः कलङ्कः; 35. सुन्दरजनप्रणयप्रभावकारागृहगतः; 36. कृपाकुञ्चितो बाहु; 37. लौहवलयः।

रूपच्छवेः समक्षं सूर्यप्रतिमस्य तस्य धावन्ति।
भित्तिगवाक्षे रजसः कणा इवादर्शतेजांसि ॥ 6॥

कः सदसतोरिहास्मीति न जाने सङ्गतिर्विरुद्धाऽस्ति।
भ्राष्ट्रे यदि पुष्पमहं तृणमथ यदि कश्चिदुद्याने ॥ 7॥

प्रेमावेशोन्मादो हृदां सहस्रं नु मह्यमुपहृतवान्।
प्रत्येकं रक्तकणस्तनौ कलङ्कोऽभवत् कृष्णः ॥ 8॥

सुन्दरजनसद्भावप्रभावकारागृहे निबद्धधोऽहम्।
आयसगलवलयोऽभव'दसद' कृपाकुञ्चितो बाहुः ॥ 9॥

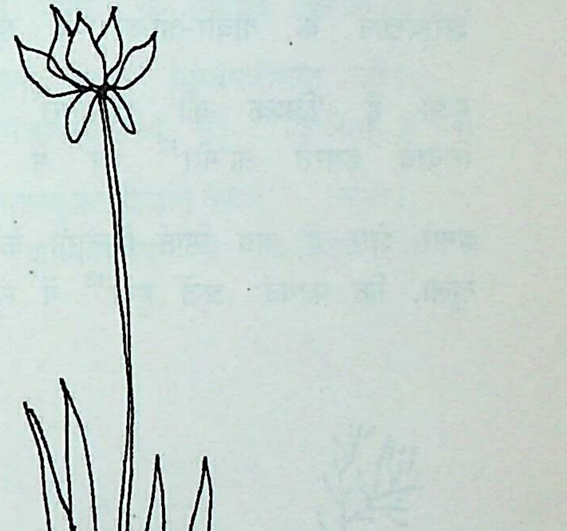

115

मज़े जहान के अपनी नज़र में ख़ाक नहीं
सिवाये ख़ूने जिगर, सो जिगर में ख़ाक नहीं

मगर ग़ुबार[1] हुए पर, हवा उड़ा ले जाये
वगरनः ताब-ओ-तवाँ[2] बाल-ओ-पर[3] में ख़ाक नहीं

यह किस बिहिश्त शमाइल[4] की आमद आमद है
कि ग़ैरे जल्वः-ए-गुल[5] रहगुज़र[6] में ख़ाक नहीं

भला उसे न सही, कुछ मुझी को रह्म[7] आता
असर मेरे नफ़से बेअसर[8] में ख़ाक नहीं

ख़याले जल्वः-ए-गुल[9] से ख़राब हैं मैकश[10]
शराबख़ाने के दीवार-ओ-दर में ख़ाक नहीं

हुआ हूँ 'अिश्क़ की ग़ारतगरी[11] से शर्मिन्दः
सिवाये हसरते ता'मीर[12] घर में ख़ाक नहीं

हमारे शे'र हैं अब सिर्फ़ दिल्लगी के, असद
खुला, कि फ़ायदः अर्ज़े हुनर[13] में ख़ाक नहीं

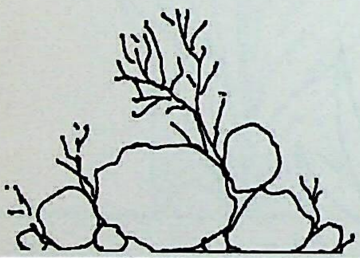

---

1. धूलिः; 2. सामर्थ्यम्; 3. पक्षती; 4. दिव्यगुणसम्पन्नः; 5. पुष्पशोभामतिरिच्य; 6. मार्गः; 7. दया; 8. प्रभावरहितं श्वसितम्; 9. मधुमासागमकल्पना; 10. मद्यपाः; 11. विध्वंस- लीला; 12. निर्माणाभिलाषः; 13. काव्यकला।

115

सांसारिका न विभ्रति मम दृश्यस्तित्वमेत आनन्दाः।
आनन्दो यकृदसृजि त्वसृजोऽभावः परं यकृति ॥ 1॥

मां परिणतमिह धूलौ कश्चित्पवनो नयेत् समुत्थाप्य।
सामर्थ्यमन्यथा नहि मत्पक्षत्योः समुड्डयितुम् ॥ 2॥

दिव्यैर्गुणैर्विभूषित इहादधानः पदं नु कः श्रीमान्।
अतिरिच्य पुष्पशोभामध्वनि यत् किञ्चिदपि नास्ति ॥ 3॥

स दयेत न मयि कामं स्वस्मिन्नेवेषदेष सदयः स्याम्।
कोऽपि न यदि प्रभावः प्रभावहीने मम श्वसिते ॥ 4॥

नूनं मधुमासागमकल्पनया सन्ति मद्यपा मत्ताः।
मधुशालाया भित्तौ द्वारि च जागर्ति दारिद्र्यम् ॥ 5॥

लज्जित एष इदानीं प्रेम्णो विध्वंसलीलया वर्ते।
स्वगृहे गृहनिर्माणाभिलाषमतिरिच्य नहि किञ्चित् ॥ 6॥

अस्माक'मसद' भणितान्युपहसनीयानि केवलं सन्ति।
सुस्पष्टं यल्लाभः काव्यकलायां न कश्चिदपि ॥ 7॥

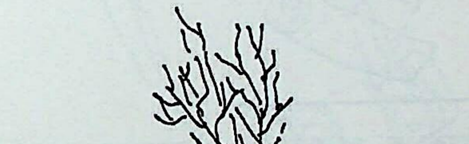

116

दिल ही तो है, न संग-ओ-ख़िश्त,[1] दर्द से भर न आये क्यों
रोयेंगे हम हज़ार बार, कोई हमें सतायें क्यों

दैर[2] नहीं, हरम[3] नहीं, दर[4] नहीं, आस्ताँ[5] नहीं
बैठे हैं रहगुज़र[6] प हम, कोई हमें उठाये क्यों

जब वह जमाले दिल फ़रोज़,[7] सूरते मेह्रे नीम रोज़[8]
आप ही हो नज़ारः सोज़,[9] पर्दे में मुँह छुपाये क्यों

दश्नः-ए-ग़मज़ः[10] जाँ सिताँ,[11] नावके नाज़े बे पनाह[12]
तेरा ही 'अक्स़ रुख़[13] सही, सामने तेरे आये क्यों

क़ैदे हयात-ओ-बन्दे ग़म[14], अस्ल में दोनों एक हैं
मौत से पहले, आदमी ग़म से नजात[15] पाये क्यों

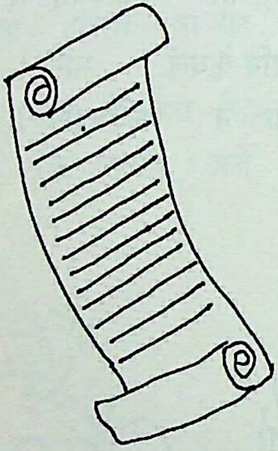

---

1. प्रस्तरः इष्टका च; 2. देवालयः; 3. इस्लामधर्मानुगतानां पवित्रं तीर्थस्थलम्, 'का'बः; 4. द्वारम्; 5. वेदिका; 6. सामान्यो गमनागमनयोर्मार्गः; 7. हृदयस्य प्रकाशकं रूपम्; 8. माध्याह्निकः सूर्य इव; 9. दृग्दाहकः; 10. भ्रूछुरिका; 11. प्राणहरा; 12. अमोघः सौन्दर्याभिमानशरः; 13. रूपस्य प्रतिबिम्बः; 14. जीवन-काराबन्धः, दुःखबन्धश्च; 15. विमुक्तिः;

116

अस्ति हृदेव तु, न दृषन्न चेष्टका, पीडितं कथन्न स्यात्।
रुदिमः सहस्रकृत्वः, कोऽपि कथं पीडयेदस्मान् ॥ 1॥

देवालयो न, नापि च 'का'बा' न च वेदिका न काऽपि द्वाः।
तिष्ठामः पथि कस्मादस्मानुत्थापयेत् कश्चित् ॥ 2॥

हृदयप्रकाशकं तद् रूपं माध्याह्निको दिनेश इव।
स्वयमेवाक्षि प्रदहेन्निजं कथं वदनमावृणुयात् ॥ 3॥

भ्रूच्छुरिका प्राणहरा सुरूपगर्वश्च मार्गणोऽमोघः।
त्वत्पुर आयातु कथं प्रतिबिम्बो वा तवैवास्तु ॥ 4॥

जीवनकाराबन्धो बन्धो दुःखस्य वस्तुतोऽभिन्नौ।
मृत्योः पूर्वं मनुजः कथमिव दुःखाद् विमुक्तः स्यात् ॥ 5॥

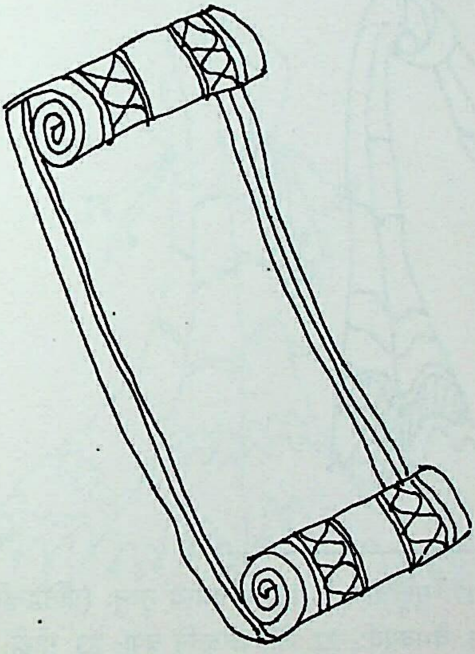

हुस्न[16] और उस प हुस्नेज़न,[17] रह गई बुल्हवस[18] की शर्म
अपने प ए'तिमाद[19] है, ग़ैर[20] को आज़माये क्यों

वाँ वह गुरूरे'अिज्ज़-ओ-नाज़,[21] याँ यह हिजाबे पासे बज़्'अ[22]
राह में हम मिलें कहाँ, बज़्म[23] में वह बुलाये क्यों

हाँ वह नहीं ख़ुदापरस्त,[24] जाओ वह बेवफ़ा[25] सही
जिसको हो दीन-ओ-दिल[26] 'अज़ीज़,[27] उसकी गली में जाये क्यों

ग़ालिबे ख़स्त:[28] के बिग़ैर,[29] कौन से काम बन्द हैं
रोइये ज़ार ज़ार क्या, कीजिये हाय हाय क्यों

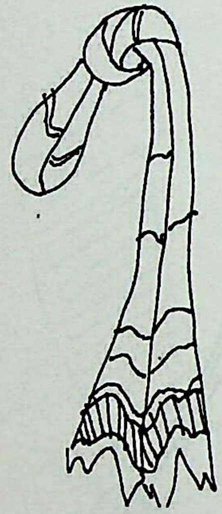

---

16. सौन्दर्यम्; 17. सुविचारः; 18. सौन्दर्यस्य गृध्नुः (प्रतिद्वन्द्वी) 19. विश्वासः; 20. प्रतिद्वन्द्वी; 21. वैभवगर्वः; 22. रीतिपरिवर्तने त्रपा; 23. गोष्ठी; 24. ईश्वरपरायणः, आस्तिकः; 25. अकृतज्ञः; 26. धर्मो हृदयञ्च; 27. प्रियम्; 28. विपन्नः 'गालिबः'; 29. विना।

रूपं तदुपरि तस्मिन् सुविचारो रक्षिता त्रपा गृध्नोः।
विश्वासश्च स्वस्मिन् कथं परीक्षेत शत्रुमसौ ॥ 6 ॥

वैभवगर्वस्तत्र स्वरीतिपरिवर्तने त्रपा त्वत्र।
क्व मिलेवाध्वन्यावां गोष्ठ्यामामन्त्रयेत् स कथम् ॥ 7 ॥

आं स नहीश्वरसक्तः सोऽस्तु तथा हन्त काममकृतज्ञः।
यातु कथं तव रथ्यां धर्मो हृद्य प्रिये यस्य ॥ 8 ॥

इह 'ग़ालिबं' विपन्नं विनाऽवरुद्धानि कानि कार्याणि।
उच्चैः किं रुदितव्यं 'हा हे'त्यथवा कथं कार्यम् ॥ 9 ॥

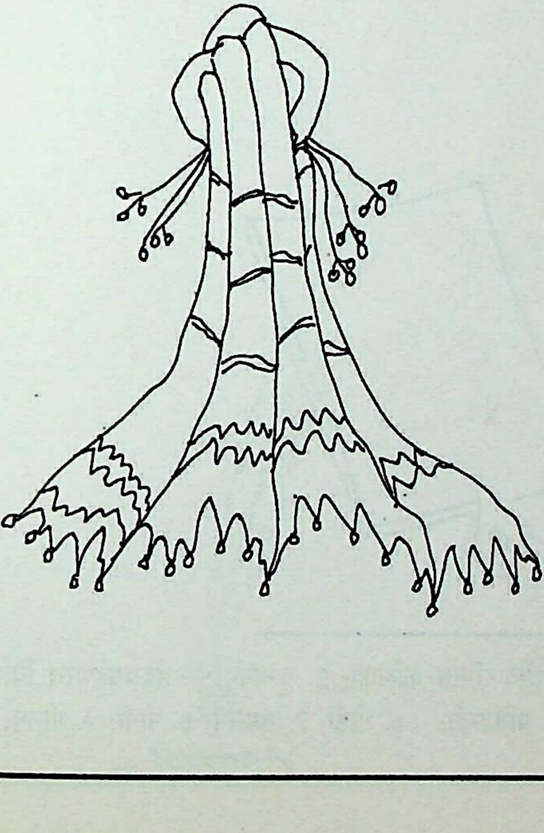

117

गुंचः-ए-नाशिगुफ्तः[1] को दूर से मत दिखा, कि यों
बोसे[2] को पूछता हूँ मैं, मुँह से मुझे बता, कि यों

पुरसिशे तर्ज़े दिलबरी[3], कीजिये क्या, कि बिन कहे
उसके हर इक इशारे से निकले है यह अदा, कि यों

रात के वक़्त मै[4] पिये, साथ रक़ीब[5] को लिये
आये वह याँ खुदा करे, पर न करे खुदा, कि यों

ग़ैर से रात क्या बनी, यह जो कहा, तो देखिये
सामने आन बैठना, और यह देखना कि यों

बज़्म[6] में उसके रूबरू,[7] क्यों न ख़मोश[8] बैठिये
उसकी तो ख़ामुशी[9] में भी, है यही मुद्द’आ[10] कि यों

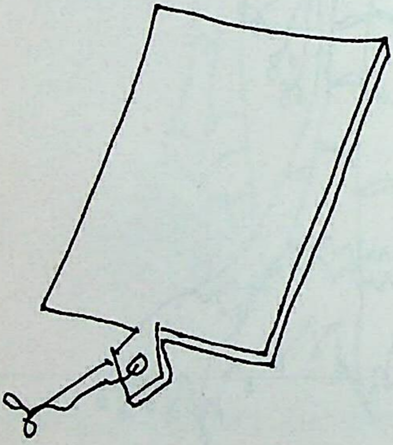

---

1. अर्धविकसिता कलिका; 2. चुम्बनम्; 3. हृदयग्रहणस्य विधिविषये जिज्ञासा; 4. मदिरा; 5. प्रतिद्वन्द्वी; 6. गोष्ठी; 7. समक्षम्; 8. मौनी; 9. मौनम्; 10. उद्देश्यम्;

117

कलिकामर्धविकसितां मा दर्शय दूरतो यदेवमिति।
एवमिति स्फुटतां नय मुखेन पृच्छामि चुम्बनकम् ॥ 1॥

हृदयग्रहणस्य विधिं किं पृच्छेयं विनैव यत्कथनम्।
प्रत्येकं सङ्केतात् एवमिति स्फुरति तद्धावः ॥ 2॥

रात्रौ मधुना मत्तः सह प्रतिद्वन्द्विना मदीयेन।
ईश्वर ! मद्गृहमायात् स परं नायात् स एवमिति ॥ 3॥

निशि वैरिणा समं किं घटितं मत्प्रोक्तमेतदथ पश्य।
पुर उपसृत्य स्थितमथ दृष्टं तेनोक्तमेवमिति ॥ 4॥

गोष्ठ्यां तस्य समक्षं कथं न रे मौनिना सता स्थेयम्।
मौनित्वेऽपि च तस्याभिमतं यत्किञ्चिदेवमिति ॥ 5॥

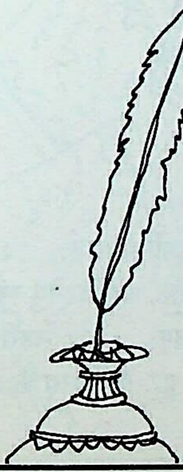

मैंने कहा कि, बज़्मे नाज़[11] चाहिये ग़ैर से, तिही[12]
सुन के सितम ज़रीफ़[13] ने मुझको उठा दिया, कि यों

मुझसे कहा जो यार ने, जाते हैं होश किस तरह
देख के मेरी बेख़ुदी[14], चलने लगी हवा, कि यों

कब मुझे कू-ए-यार[15] में रहने की वज़्'अ[16] याद थी
आइन:दार[17] बन गई, हैरते नक़्शे पा,[18] कि यों

गर तेरे दिल में हो ख़याल, वस्ल[19] में शौक़[20] का ज़वाल[21]
मौज[22] मुहीते आब[23] में, मारे है दस्त-ओ-पा,[24] कि यों

जो यह कहे, कि रेख़्त:[25] क्योंकि हो रश्के फ़ारसी[26]
गुफ़्त:-ए-ग़ालिब[27] एक बार पढ़के उसे सुना, कि यों

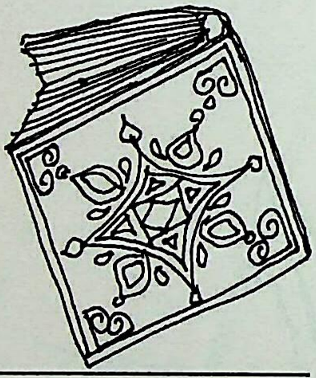

---

11. प्रियस्य गोष्ठी; 12. शून्या; 13. कटुपरिहासकृत्; 14. आत्मविस्मृतिः; 15. प्रियस्य रथ्या; 16. रीतिः; 17. ज्ञापकम्; 18. पद-चिह्नेषु स्फुरितमाश्चर्यम्; 19. मिलनम्, मृत्युरित्यर्थः; 20. अभिलाषः; 21. पतनम्; 22. लहरी; 23. समुद्रः; 24. करपादम्; 25. 'उर्दूः'; 26. पारसीकाया ईर्ष्यापात्रम्; 27. ग़ालिबस्य कथनम्, कवितेत्यर्थः ।

उक्तं मयेति गोष्ठ्याऽनया प्रतिद्वन्द्विशून्यया भाव्यम्।
श्रुत्वोदस्थापयदथ मां कटुपरिहास एवमिति ॥ 6॥

मां पृष्टवान् प्रियो यच्चैतन्यं लीयते कथन्तावत्।
मम विस्मृतिमालोक्य प्रावहदनिलो यथैवमिति ॥ 7॥

हन्त प्रियरथ्यायां निवासरीतिर्मया स्मृतैव कदा।
ज्ञापकमजनि पदानां चिह्नाश्चर्यं यदेवमिति ॥ 8॥

मिलने सत्यभिलाषाः कथं पतन्तीति चेद् विचारयसि।
लहरी जलस्य परिधौ धुनोति करपादमेवमिति ॥ 9॥

ईर्ष्यापात्रं स्यात् कथ'मुर्दू'कवितेह पारसीकायाः।
कथयेत्, सकृन्निशामय 'ग़ालिब'भणितं तमेवमिति ॥ 10॥

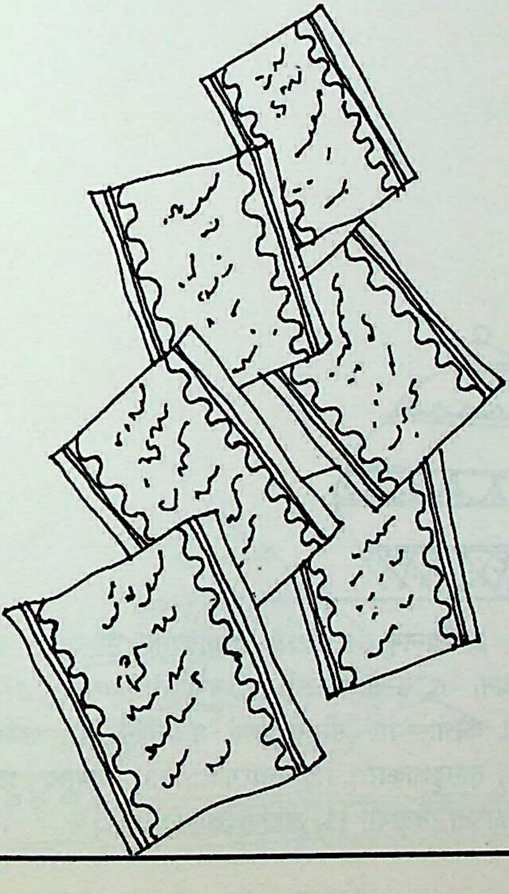

118

हसद[1] से दिल अगर अफ़सुर्दः[2] है, गर्मे तमाशा हो[3]
कि चश्मे तंग[4], शायद, कसरते नज़्ज़ारः[5] से वा हो[6]
बक़द्रे हसरते दिल[7], चाहिये ज़ौक़े म'आसी[8] भी
भरूँ यक गोशः-ए-दामन,[9] गर आबे हफ़्त दरिया[10] हो
अगर वह सर्व क़द,[11] गर्मे ख़िरामे नाज़[12] आ जावे
कफ़े हर ख़ाके गुलशन[13] शक्ले क़ुमरी[14] नालः फ़र्सा[15] हो

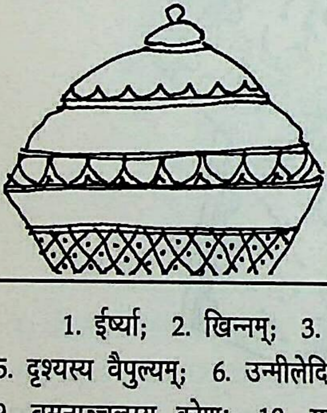

---

1. ईर्ष्या; 2. खिन्नम्; 3. विश्वं दृग्गोचरतां नयेत्यर्थः; 4. सङ्कीर्णा दृक्; 5. दृश्यस्य वैपुल्यम्; 6. उन्मीलेदित्यर्थः; 7. मनोऽभिलाषसमा; 8. अपराधाभिरुचिः; 9. वसनाञ्चलस्य कोणः; 10. सप्त-समुद्राणां सलिलानि; 11. सर्वः मोरपंखीत्याख्यः कृशाङ्ग- यष्टिर्वृक्षः, तत्सदृशाकारः; 12. मन्थरगतिः; 13. उद्यानस्य प्रत्येकं मुष्टिपरिमिता मृत्; 14. क़ुमरी फ़ाख़्ता, तत्समा; 15. आर्तनादरता।

118

खिन्नं यदीष्यर्या हृद् दृग्गोचरतां नयेह विश्वमिदम्।
उन्मीलेत् सङ्कुचिता दृग् यद् दृश्यस्य वैपुल्यात्॥1॥
हृदयाभिलाष - तुल्याऽपराधरुचिरप्यपेक्ष्यते नूनम्।
सप्ताब्धीनामद्भिः सुपूरयेयं स्ववसनाग्रम्॥2॥
'सर्वा'कारो मन्दं स चलन्नायात् स-हावगतिशीलः।
'क़ुमरी'व सार्तनादा मुष्टिमितोद्यानमृत्स्ना स्यात्॥3॥

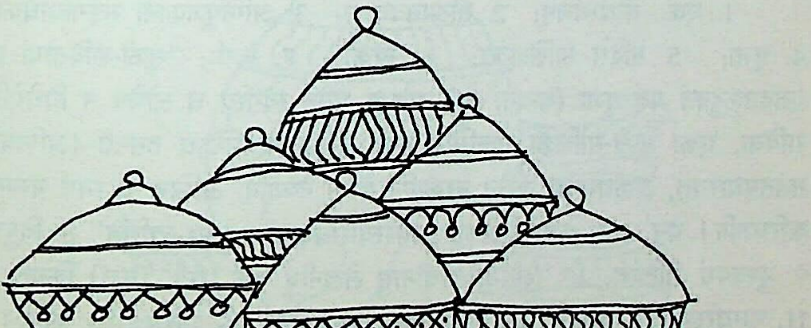

119

का'बे[1] में जा रहा, तो न दो ता'नः,[2] क्या कहीं
भूला हूँ हक़्क़े सोहबते अह्ले कुनिश्त[3] को

ता'अत[4] में ता, रहे न मै-ओ-अंगबीं[5] की लाग
दोज़ख़[6] में डाल दो, कोई लेकर बिहिश्त[7] को

हूँ मुन्हरिफ़[8] न क्यों, रह-ओ-रस्मे सवाब[9] से
टेढ़ा लगा है क़त,[10] क़लमे सरनविश्त[11] को

ग़ालिब, कुछ अपनी स'अि[12] से लहना[13] नहीं मुझे
ख़िरमन[14] जले, अगर न मलख़[15] खाये किश्त[16] को

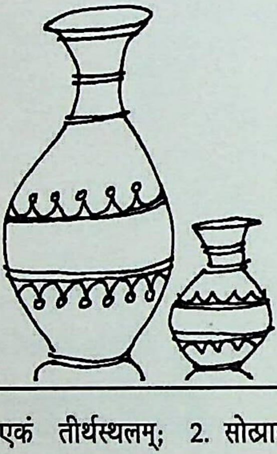

---

1. एकं तीर्थस्थलम्; 2. सोत्प्रासवचनम्; 3. अग्निपूजकानां सङ्गत्यधिकारः; 4. पूजा; 5. मदिरा माक्षिकञ्च; 6. नरकः; 7. स्वर्गः; "सूफ़ी-कवितायां प्राय एतदसकृदुक्तं यत् पूजा (वन्दना वा) नरकाद् भयेन स्वर्गस्य च लोभेन न विधेयेति। राबिया, एका सूफ़ी-साधिका एकस्मिन् हस्ते जलपात्रमन्यस्मिंश्च हसन्तीं (अग्निपात्रं) सततमधारयत्, अकथयमच्च जलेन नरकाग्निं प्रशमं नेष्यामि, अग्निना च स्वर्गं भस्मसात् करिष्यामि। येन जनाः केवलेन प्रेम्णा ईश्वरस्याराधनायां प्रवृत्ताः स्युरिति" 8. विमुखः; 9. पुण्यपथं रीतिश्च; 10. 'क्षतम्, प्राचीनासु लेखनीषु वक्रं 'क्षतं' (क़त) क्रियते स्म; 11. भाग्यरेखा; 12. प्रयासः; 13. लाभः; 14. खलधान्यम्; 15. शलभः; 16. कृषिः।

119

‘का’बां’ यामि ततो मां मा परिहस सम्प्रतीह सोत्प्रासम् ।
अग्न्यर्चकसङ्गत्यधि- कारं क्वचिदस्मि विस्मृतवान् ।। 1 ।।
येन न पूजायां स्यान्मदिराया माक्षिकस्य वा मोहः ।
आदाय स्वर्लोकं कश्चन विनिपातयेन्नरके ।। 2 ।।
कथमेष न विमुखः स्यामिह लोके हन्त पुण्यपथरीत्योः ।
वक्रं ‘क्षतं’ हि लग्नं मम किञ्चिद् भाग्यरेखायाम् ।। 3 ।।
‘ग़ालिब’ निजप्रयासात् कश्चन लाभो मया नहि प्राप्तः ।
प्रदहेत् खलधान्यं यदि न भक्षयेयुः कृषिं शलभाः ।। 4 ।।

120

वारस्तः[1] इससे हैं, कि महब्बत[2] ही क्यों न हो
कीजे हमारे साथ, 'अदावत[3] ही क्यों न हो

छोड़ा न मुझमें ज़ो'फ़[4] ने रंग इख़्तिलात[5] का
है दिल प बार,[6] नक़्शे महब्बत[7] ही क्यों न हो

है मुझको तुझसे तज़किरः-ए-ग़ैर[8] का गिला[9]
हरचन्द बरसबीले शिकायत[10] ही क्यों न हो

पैदा हुई है, कहते हैं, हर दर्द की दवा
यूँ हो, तो चारः-ए-ग़मे उल्फ़त[11] ही क्यों न हो

डाला न बेकसी[12] ने किसी से मु'आमला[13]
अपने से खेंचता हूँ, ख़जालत[14] ही क्यों न हो

---

1. स्वतन्त्राः; 2. प्रेम; 3. द्वेषः; 4. दौर्बल्यम्; 5. अन्योन्यसमन्वयः, प्रणयः; 6. भारः; 7. प्रणयस्य चिह्नम्; 8. शत्रोश्चर्चा; 9. उपालम्भः; 10. उपालम्भस्य क्रमः; 11. प्रेमदुःखस्योपचारः; 12. वैवश्यम्; 13. व्यवहारः; 14. लज्जा;

120

स्वाधीनाः स्मो नः स्यात् सार्धं प्रेमैव न त्वया किञ्चित्।
क्रियतामस्माभिः सह स खलु द्वेषोऽपि किन्न स्यात्॥ 1॥
दौर्बल्यादवशिष्टो मयि न प्रणयस्य हन्त वर्णोऽपि।
प्रतिभाति भार इति मे हृदये प्रणयस्य चिह्नमपि॥ 2॥
अस्ति ममोपालम्भस्त्वाम्प्रति कृतयेह चर्चया शत्रोः।
काममुपालम्भक्रम एव कृता सा त्वया यदपि॥ 3॥
प्रत्येकं पीडाया भैषज्यं जगति जातमित्याहुः।
यद्येवं न कथं स्यादुपचारः प्रेम- पीडायाः॥ 4॥
मम वैवश्येनासीद् व्यवहारो मामको न केनापि।
स्वेनैव हन्त सम्प्रति लज्जामहमनुभवन्नस्मि॥ 5॥

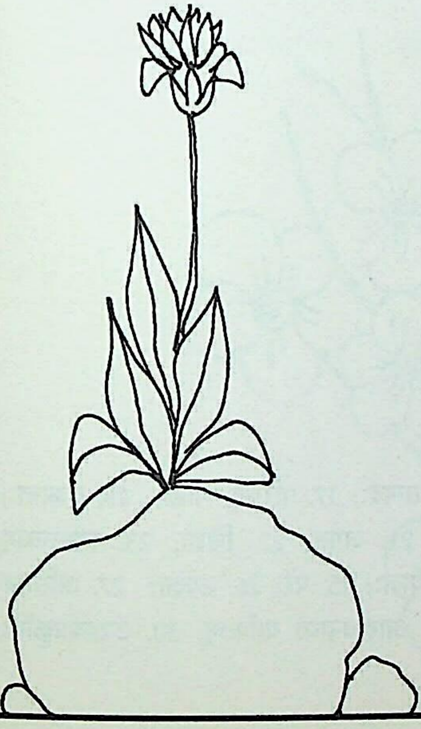

है आदमी बजा-ए-ख़ुद,[15] इक मह्शरे ख़याल[16]
हम अंजुमन[17] समझते हैं, ख़लवत[18] ही क्यों न हो

हंगामः-ए-ज़बूनि-ए-हिम्मत[19] है, इन्फ़ि'आल[20]
हासिल न कीजे दह्र[21] से, 'इब्रत[22] ही क्यों न हो

वारस्तगी[23] बहानः-ए-बेगानगी[24] नहीं
अपने से कर, न ग़ैर[25] से, वहशत[26] ही क्यों न हो

मिटता है फ़ौते फ़ुर्सते हस्ती[27] का ग़म कोई
'उम्रे 'अज़ीज़[28] सर्फ़े' अिबादत[29] ही क्यों न हो

उस फ़ितनः ख़ू[30] के दर[31] से अब उठते नहीं, असद
इसमें हमारे सर प क़यामत[32] ही क्यों न हो

---

15. स्वयं स्वस्थाने; 16. कल्पनानां सम्मर्दः; 17. परिषद्, गोष्ठी; 18. एकान्तः; 19. अल्पसाहसस्याधिक्यम्; 20. लज्जा; 21. जगत्; 22. शिक्षा; 23. स्वातन्त्र्यम्, त्यागः; 24. इमे परे सन्तीति भावनारूपो व्याजः; 25. परे; 26. उपेक्षा; 27. अस्तित्वस्यावधेर्नाशः; 28. प्रियमायुः; 29. आराधनायां यापितम्; 30. उपद्रवप्रकृतिः; 31. द्वारम्; 32. प्रलयः।

अस्ति स्वयं मनुष्यः सम्मर्दः कोऽप्यसौ विचाराणाम्।
मन्यामहे परिषदिति स स्यादेकान्त एव न किम्।।6।।
आधिक्यमल्पसाहसविषयं जगतीह काऽपि लज्जेति।
न गृहाण किमपि जगतः सा खलु शिक्षाऽपि किन्न स्यात्।।7।।
स्वातन्त्र्यं न व्याजः, 'सन्ति परे खल्वमी'त्यभिप्रेत्य।
कर्तव्या न परेषां, किन्तु स्वस्याप्युपेक्षाऽपि।।8।।
अस्तित्वावधिनाशाद् यद् दुःखं तत् कुतोऽपि लयमेति।
प्रियमायुः स्याद् यद्यपि यापितमाराधनासु सदा।।9।।
'असद' न तस्य द्वारादुत्थातव्यं ह्युपद्रवप्रकृतेः।
किन्न स्यादस्माकं शिरःसु तावत् प्रलय एव।।10।।

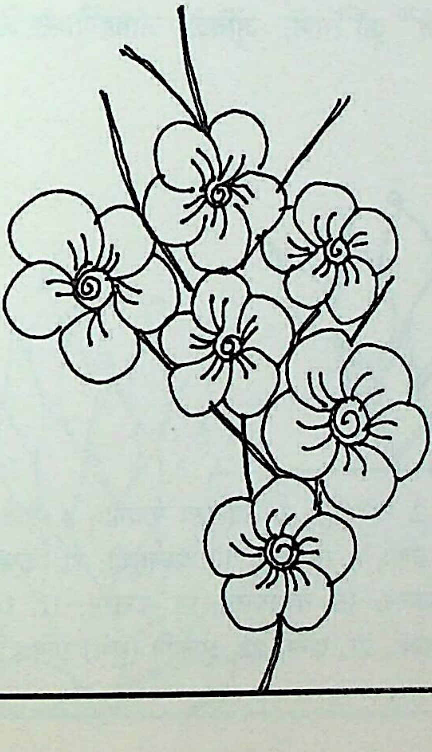

121

क़फ़स[1] में हूँ, गर अच्छा भी न जानें मेरे शेवन[2] को
मेरा होना बुरा क्या है, नवा संजाने गुलशन[3] को
नहीं गर हमदमी[4] आसाँ,[5] न हो, यह रश्क[6] क्या कम है
न दी होती, ख़ुदाया, आरज़ू-ए-दोस्त[7] दुश्मन को
न निकला आँख से तेरी इक आँसू, उस जराहत[8] पर
किया सीने में जिसने ख़ूचकाँ,[9] मिश़गाने सोज़न[10] को
ख़ुदा शरमाये हाथों को, कि रखते हैं कशाकश[11] में
कभी मेरे गरीबाँ[12] को, कभी जानाँ[13] के दामन[14] को
अभी हम क़त्लगह[15] का देखना आसाँ समझते हैं
नहीं देखा शनावर[16] जू-ए-ख़ूँ[17] में तेरे तौसन[18] को
हुआ चर्चा जो मेरे पाँव की ज़ंजीर[19] बनने का
किया बेताब[20] काँ[21] में, जुंबिशे जौहर[22] ने आहन[23] को

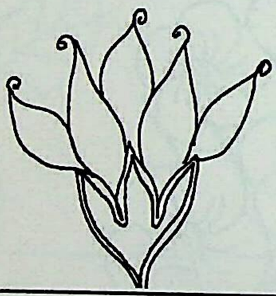

---

1. पञ्जरम्; 2. रुदितम्; 3. उद्यानस्य गायनाः; 4. मैत्री; 5. सरला 6. ईर्ष्या; 7. मित्राकाङ्क्षा; 8. व्रणः; 9. रक्तस्रुत्; 10. पक्ष्मसूची; 11. कर्षाकर्षौ; 12. गलवासः; 13. प्रियः; 14. अञ्चलम्; 15. वधस्थलम्; 16. सन्तरन्; 17. रक्तधारा; 18. अश्वः; 19. निगडः; 20. विकलः; 21. खनी; 22. आत्मनि (गुणे) गतिः; 23. लोहः;

121

पञ्जरगतोऽस्मि रुदितं तेभ्यो रोचेत नास्मदीयं चेत्।
उद्यानगायनानामनिष्टमिह किं मदस्तित्वम्॥1॥
यदि मैत्री नहि सरला, नास्तां न्यूनाऽस्ति किमियमीर्ष्यापि।
ईश्वर! भवेन्न दत्ता प्रियविषया कामना रिपवे॥2॥
तं व्रणमधिकृत्यैकस्त्वन्नेत्रान्निर्गतो न वारिकणः।
विहितेह पक्ष्मसूची रुधिरस्रुक् सीवने येन॥3॥
कर्षाकर्षपरौ मे प्रभुः सलज्जौ करौ नु विदधातु।
गलवाससां कदाचित् प्रियाञ्चलानां कदाचिच्च॥4॥
दर्शनमधुना सरलं वधस्थलस्यात्मनाऽवगच्छामः।
नापश्याम तवाश्वं प्रतरन्तं रक्तधारायाम्॥5॥
चर्चा यतः प्रवृत्ता मत्पदनिगडत्वमात्रमुपलब्धुम्।
खन्यां लोहस्यात्मनि तत उत्पन्नं नु वैकल्यम्॥6॥

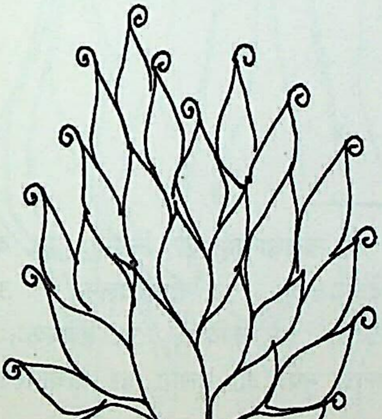

ख़ुशी क्या, खेत पर मेरे, अगर सौ बार अब्र[24] आवे
समझता हूँ, कि ढूण्डे है अभी से बर्क़[25], ख़िरमन[26] को
वफ़ादारी,[27] बशर्ते उस्तुवारी,[28] अस्ले ईमाँ[29] है
मरे बुतख़ाने[30] में, तो का'बे[31] में गाड़ो बरह्मन को
शहादत[32] थी मेरी क़िस्मत में, जो दी थी यह ख़ू[33] मुझको
जहाँ तलवार को देखा, झुका देता था गर्दन को
न लुटता दिन को, तो कब रात को यों बेख़बर सोता
रहा खटका न चोरी का, दु'आ देता हूँ रहज़न[34] को
सुख़न[35] क्या कह नहीं सकते, कि जोया[36] हूँ जवाहिर के
जिगर[37] क्या हम नहीं रखते, कि खोदें जाके मा'दन[38] को
मेरे शाहे सुलैमाँ जाह[39] से निस्बत[40] नहीं, ग़ालिब
फ़रीदून-ओ-जम-ओ-कैख़ुसरु-ओ-दाराब-ओ बहमन[41] को

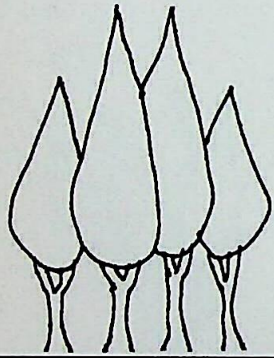

---

24. मेघः; 25. विद्युत्; 26. खलधान्यम्; 27. निर्वाहः; 28. दाढ्र्येन समम्; 29. सत्यधर्मः; 30. मूर्तिगृहम्, देवायतनम्; 31. तीर्थस्थलम्; 32. वीरगतिः; 33. स्वभावः, प्रकृतिः; 34. लुण्टाकः; 35. कविता; 36. गवेषकः; 37. यकृत्; 38. खनी; 39. सुलैमानस्य वैभवसम्पन्नो नृपः; 40. तुलना; 41. प्राचीनस्य ईरान-देशस्य पञ्च महान्तः शासकाः।

मत्क्षेत्रं शतकृत्वो मेघा आयान्तु तेन को मोदः।
अन्विष्यति मन्येऽहं विद्युदितःप्रभृति खलधान्यम्।। 7 ।।
दाढ्र्ये सति निर्वाहो विना विवादं स सत्यधर्म इति।
मूर्त्यागारे विप्रो म्रियेत 'का'बां' स नेतव्यः।। 8 ।।
वीराणां गतिरासीन्नियतौ मे लब्धवानहं प्रकृतिम्।
यत्रापश्यं खड्गं व्यनामयं कन्धरां तत्र।। 9 ।।
अभविष्यं न दिने हृत इतो निशायां सुखं कुतोऽस्वप्स्यम्।
शुभमस्तु लुण्ठकेभ्यो विचिकित्सा नापि चौर्यस्य।। 10 ।।
अपि कविता न हि सिद्धा गवेषयेयं यदेष रत्नानि।
अपि यकृदास्ते नहि मे यदेष खनिमुत्खनेयमहम्।। 11 ।।
न हि मम 'शाहसुलैमा जाहेन' क्वचन सन्ति तुलनीयाः।
जगति 'फ़रीदू'-प्रभृतय इह 'ग़ालिब' पञ्च नरपतयः।। 12 ।।

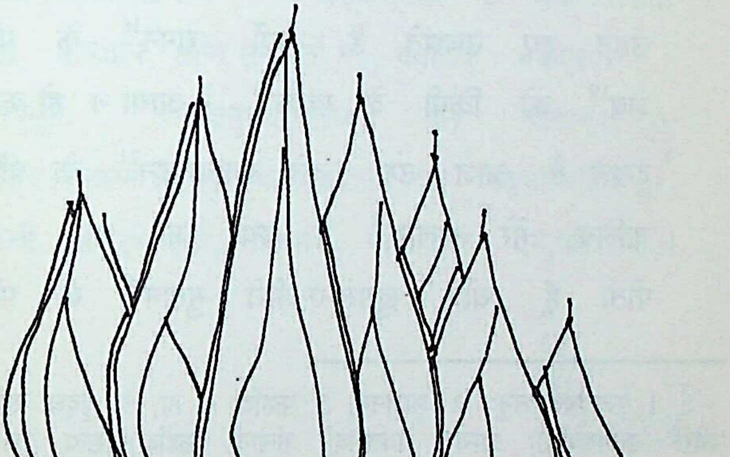

122

धोता हूँ जब मैं पीने को, उस सीमतन[1] के पाँव
रखता है, ज़िद से, खेंच के बाहर लगन[2] के पाँव
दी सादगी से जान, पड़ूँ कोहकन[3] के पाँव
हैहात,[4] क्यों न टूट गये, पीरज़न[5] के पाँव
भागे थे हम बहुत, सो उसी की सज़ा है यह
होकर असीर[6] दाबते हैं, राहज़न[7] के पाँव
मरहम[8] की जुस्तजू[9] में, फिरा हूँ जो दूर दूर
तन से सिवा फ़िगार[10] हैं, इस ख़स्तः तन[11] के पाँव
अल्लह् रे ज़ौक़े दश्त नवर्दी,[12] कि बा'दे मर्ग[13]
हिलते हैं ख़ुद बख़ुद[14] मेरे, अन्दर कफ़न[15] के पाँव
है जोशे गुल[16] बहार[17] में याँ तक, कि हर तरफ़
उड़ते हुए उलझते हैं, मुर्ग़े चमन[18] के पाँव
शब[19] को किसी के ख़्वाब[20] में आया न हो कहीं
दुखते हैं आज उस बुते नाज़ुकबदन[21] के पाँव
ग़ालिब, मेरे कलाम[22] में क्यों कर मज़ा न हो
पीता हूँ धोके ख़ुसरू-ए-शीरीं सुख़न[23] के पाँव

---

1. रजतधवलतनुः; 2. भाजनम्; 3. फ़र्हादः 4. हा; 5. वृद्धा स्त्री (प्रेयस्याः 'शीरीं' इत्याख्यायाः प्राप्त्यर्थं पर्वतभेदने संलग्नं 'फ़र्हाद'मुपसृत्य काचिद् वृद्धा तमुवाच-तव प्रेयसी अन्यस्य पाणिगृहीताऽजनीति। इदमाकर्ण्य फ़र्हाद आत्मनि कुदालं प्रहृत्य मृतः) 6. निगृहीताः; 7. लुण्ठकः; 8. लेपः; 9. गवेषणम्; 10. आहतौ; 11. दरिद्रः, विपन्नः; 12. अरण्ये, मरूभुवि भ्रमणव्यसनम्; 13. मृत्योरनन्तरम्; 14. स्वयमेव; 15. शव-वसनम्; 16. पुष्पोल्लासः; 17. मधुमासः; 18. उद्यानखगः; 19. रात्रिः; 20. स्वप्नः; 21. मृदुतनुमूर्तिः; 22. काव्यम्, भणितिः; 23. मधुरवाक् (अत्र कविः 'बहादुर शाह ज़फ़र' नृपतिं निर्दिष्टवान्, सोऽपि हि कविरासीत्)।

122

रजततनोस्तस्य यदा चरणौ प्रक्षालयामि पातुमहम् ।
पात्रादाकृष्य हठात् कुरुते स पृथक् तदा चरणौ ।। 1 ।।
सारल्येन त्यक्ताः प्राणाः, 'फ़र्हाद'-पादयोः प्रणतिः ।
हा धिक्, हा हन्त कथं पादौ भग्नौ न वृद्धाय़ाः ।। 2 ।।
पूर्वं पलायिता यद् दण्डस्तस्यैव कश्चिदेतर्हि ।
संवाहयाम एते निगृहीता लुण्ठकस्याङ्घ्री ।। 3 ।।
लेपान्वेषणकर्मणि यदभ्रमं दूरदूरमहमुर्व्याम् ।
देहादधिकमभूतां निःस्वस्य म आहतौ चरणौ ।। 4 ।।
अल्लः, भ्रमणव्यसनं मरुभुवि,. मृत्योरनन्तरं यदिमौ ।
शववसनान्तः पादौ स्वयमेव मम प्रकम्पेते ।। 5 ।।
मधुमास एवमास्ते पुष्पोल्लासः पदौ यदभितोऽपि ।
उड्डयमानोद्यानद्विजस्य सङ्घट्टितौ भवतः ।। 6 ।।
निशि कस्यापि स्वप्ने समागतो न क्वचिद् भवेदेषः ।
मृदुतनुमूर्तेः पादावनुभवतस्तस्य यत् पीडाम् ।। 7 ।।
'ग़ालिब' कथन्न हि स्यादानन्दः कोऽपि नाम मद्भणितौ ।
प्रक्षाल्य मधुरभणितेः पिबामि पादौ नु यन्नृपतेः ।। 8 ।।

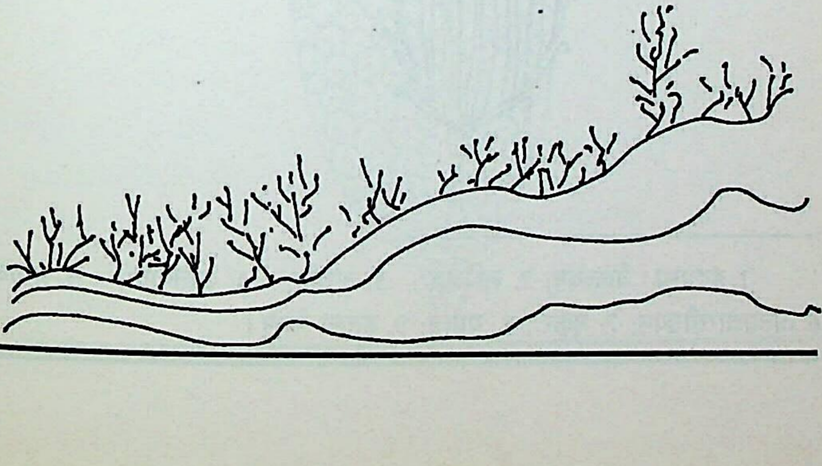

123

वाँ उसको हौले दिल[1] है, तो याँ मैं हूँ शर्मसार[2]
या'नी[3] यह मेरी आह[4] की तासीर[5] से न हो
अपने को देखता नहीं, ज़ौक़े सितम[6] तो देख
आईनः[7] ताकि[8] दीदः-ए-नख़चीर[9] से न हो

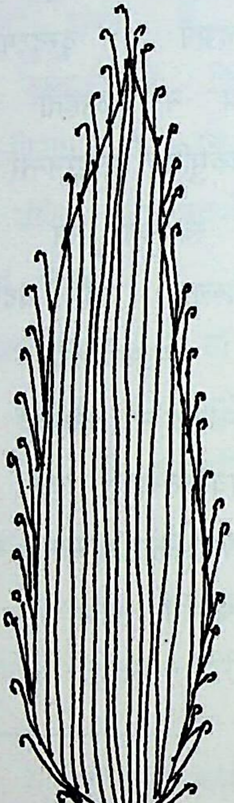

---

1. हृदयस्य वैकल्यम्; 2. लज्जितः; 3. अर्थात्; 4. आर्तनादः; 5. प्रभावः; 6. अत्याचारसौख्यम्; 7. मुकुरः; 8. यावत्; 9. हतस्य नेत्रम्।

123

तस्य हृदो वैकल्यं तत्र, त्वत्रैष लज्जितो वर्ते।
अर्थादितन्न स्यान्मदार्तनादप्रभाववशात्।।1।।
तावत् पश्यति न स्वं, तस्यात्याचारसौख्यमाकलय।
स्वहतस्य नेत्रमुकुरो न तस्य यावत् समक्षं स्यात्।।2।।

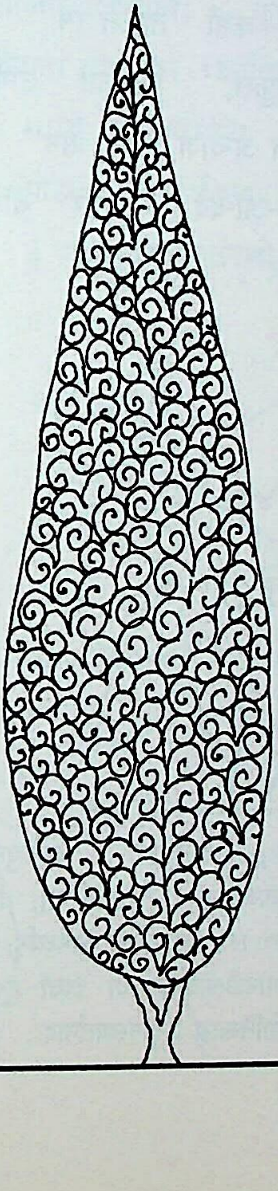

124

वाँ पहुँचकर जो ग़श[1] आता पैहम[2] है हम को
सदरह[3] आहंगे ज़मीं बोसे क़दम[4] है हम को
दिल को मैं, और मुझे दिल, मह्वे वफ़ा[5] रखता है
किस क़दर ज़ौक़े गिरफ़्तारि-ए-हम[6] है हम को
ज़ो'फ़[7] से, नक़्शे पै-ए-मोर,[8] है तौक़े गर्दन[9]
तेरे कूचे[10] से, कहाँ ताक़ते रम[11] है हम को
जानकर कीजे तग़ाफ़ुल,[12] कि कुछ उम्मीद भी हो
यह निगाहे ग़लत अन्दाज़[13] तो सम[14] है हम को
रश्के हमतरहि-ओ-दर्दे असरे बाँगे हज़ीं[15]
नालः-ए-मुर्ग़े सहर[16], तेग़े दुदम[17] है हम को

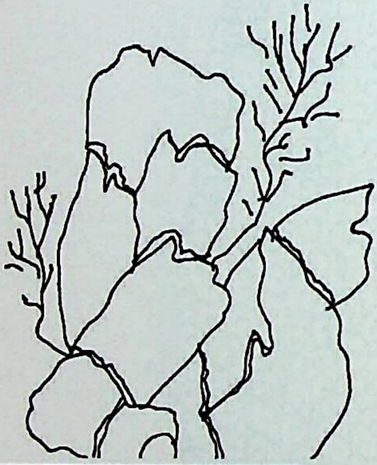

---

1. मूर्च्छा; 2. पुनः पुनः; 3. शतकृत्वः; 4. चरणचुम्बनार्थं भुवि नमनस्याकाङ्क्षा; 5. निर्वाहलीनः; 6. सहवासायाकाङ्क्षा; 7. दौर्बल्यम्; 8. पिपीलिकानां चरणाङ्काः; 9. गलस्य निगडः; 10. रथ्या; 11. पलायनस्य सामर्थ्यम्; 12. उपेक्षा; 13. अज्ञानपूर्वा दृष्टिः; 14. विषम्; 15. समानशैलीकत्वजन्या ईर्ष्या दुःखभरितस्य स्वरस्य प्रभावत उत्पन्ना पीडा च; 16. प्राभातिकस्य शकुनस्यार्तनादः; 17. द्विर्धारः खड्गः;

124

मूर्च्छां यदनुभवामः पौनःपुन्येन तत्र सम्प्राप्ताः।
चुम्बनमङ्घ्र्योर्भुवि नः प्रणिपातानां शतैः काङ्क्ष्यम्।। 1 ।।
हृदहञ्चेत्यन्योन्यं निर्वाहे द्वे अपीह योजयतः।
सहवासायाकाङ्क्षा कीदृगिवास्त्यावयोरुभयोः।। 2 ।।
दौर्बल्याच्चरणाङ्काः पिपीलिकानां गलस्य मे निगडः।
हन्त पलायनशक्तिस्त्वद्रथ्यातः कुतोऽस्मासु।। 3 ।।
अवगतिपूर्वोपेक्षा क्रियतां स्याद् येन काचिदाशाऽपि।
दृगनवगतिपूर्वेयं पक्षे त्वस्माकमस्ति विषम्।। 4 ।।
ईर्ष्याऽस्माकमिवैषां पीडा करुणो विलाप इत्यपि च।
द्विर्धारस्तरवारिः प्रभातशकुनार्तनादो हि।। 5 ।।

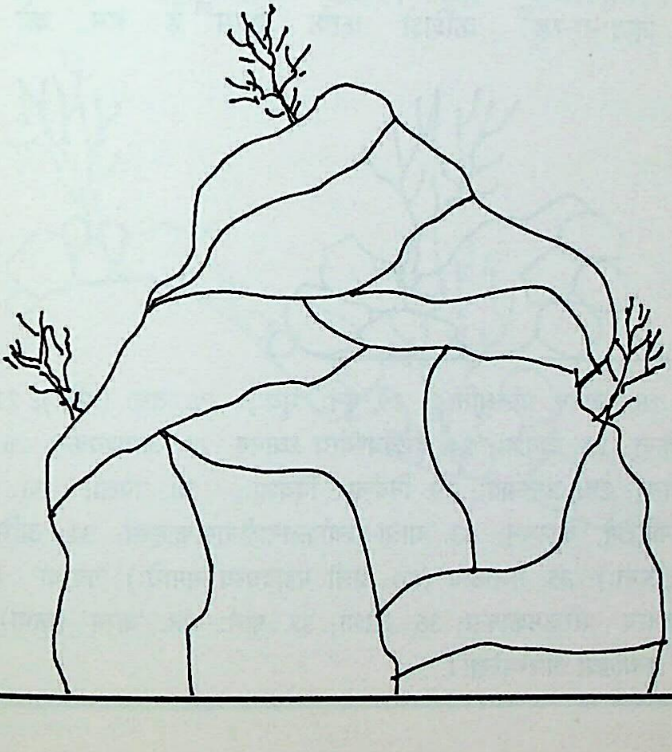

सर उड़ाने के जो वा'दे[18] को मुकर्रर[19] चाहा
हँस के बोले कि, तेरे सर की क़सम है हम को
दिल के ख़ूँ[20] करने की क्या वजूह,[21] वलेकिन[22] नाचार[23]
पासे बेरौनक़ि-ए-दीदः[24] अहम[25] है हम को
तुम वह नाजुक,[26] कि ख़मोशी[27] को फ़ुग़ाँ[28] कहते हो
हम वह 'आजिज़,[29] कि तग़ाफ़ुल[30] भी सितम[31] है हम को

क़त'अः

लखनऊ आने का बा'इस[32] नहीं खुलता, या'नी
हवसे सैर-ओ-तमाशा,[33] सो वह कम है हम को
मक़त'-ए-सिलसिलः-ए-शौक़[34] नहीं है यह शह्र
'अज़्मे सैरे नजफ़-ओ-तौफ़े हरम[35] है हम को
लिये जाती है कहीं एक तवक़्क़ो'अ[36], ग़ालिब
जादः-ए-रह[37] कशिशे काफ़े करम[38] है हम को

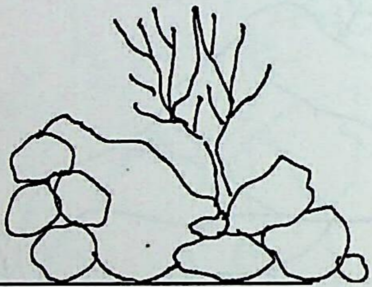

---

18. वचनम्, प्रतिश्रुतिः; 19. पुनः, भूयः; 20. वधः (हतिः); 21. कारणम्; 22. किन्तु; 23. विवशः; 24. दृष्टेर्वैवर्ण्यस्य ध्यानम्; 25. आवश्यकम्; 26. सुकुमारः; 27. मौनम्; 28. आर्तनादः; 29. निर्बलाः, विवशाः; 30. उपेक्षा; 31. अत्याचारः; 32. निमित्तम्, कारणम्; 33. यात्रा-दृश्याकलनादीनामाकाङ्क्षा; 34. अभिरुचिक्रमस्य सीमा (अन्तः); 35. नजफ़स्य (ह० अली महोदयस्य समाधेः) 'का'बा' (इत्याख्यस्य तीर्थस्थलस्य परिक्रमकामना; 36. आशा; 37. मार्गः; 38. 'करम' (कृपा) इत्यक्षरस्य 'काफ' इत्याख्या आरम्भरेखा।

उत्कर्तनाय शिरसः प्रतिश्रुतिः काङ्क्षिता मया भूयः।
सस्मितमवदद् वयमिह शपामहे हन्त तव शिरसे ॥ 6 ॥
हृदयहतेः किं कारणमस्ति परं किञ्चिदत्र वैवश्यम्।
दृष्टेर्वैवर्ण्यस्य त्वावश्यकमस्ति नो ध्यानम् ॥ 7 ॥
एतावान् सुकुमारस्त्वं मनुषे मौनमार्तनाद इति।
एतावन्तो विवशाः स्मोऽत्याचारोऽस्त्युपेक्षाऽपि ॥ 8 ॥

खण्डः

लक्ष्मणपुरागमनमिह किङ्कारणमित्यहं न बत वेद।
यात्रा-दृश्याकलनादिष्वधिका न प्रवृत्तिर्मे ॥ 9 ॥
अभिलषितानां सीमा नगरमिदं नास्ति किञ्चिदस्माकम्।
'नज़फ़ा'वलोक-का'बा-परिक्रमेच्छा किलास्माकम् ॥ 10 ॥
'ग़ालिब' मामेकाऽऽशा नेतुं क्वचन प्रवर्तमानेव।
'करमस्य' काफ़-रेखा केवलमस्मत्कृते पन्थाः ॥ 11 ॥

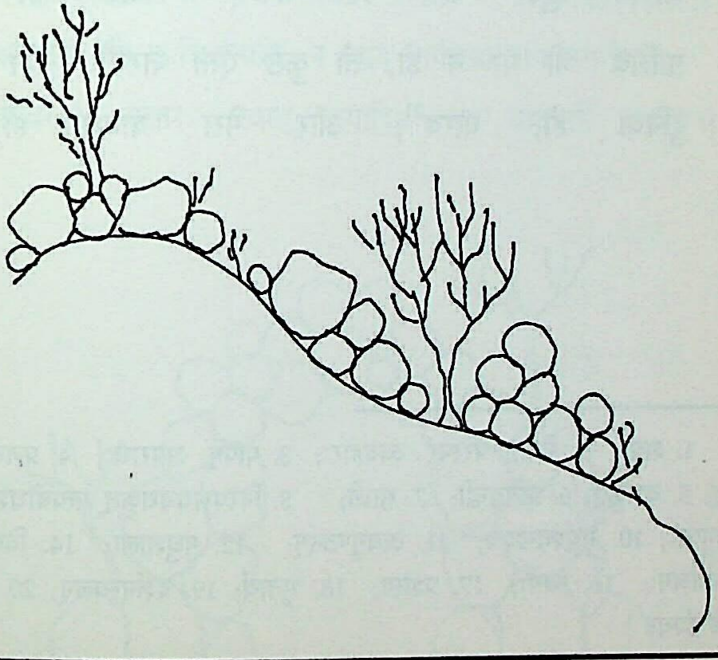

125

तुम जानो, तुम को ग़ैर[1] से जो रस्म-ओ-राह[2] हो
मुझको भी पूछते रहो, तो क्या गुनाह[3] हो
बचते नहीं मुआख़जः-ए-रोज़े हश्र[4] से
क़ातिल[5] अगर रक़ीब[6] है, तो तुम गवाह[7] हो
क्या वह भी बेगुनह कुश-ओ-हक़ ना शनास[8] हैं
माना कि तुम बशर[9] नहीं, ख़ुर्शीद-ओ-माह[10] हो
उभरा हुआ निक़ाब[11] में है उनके, एक तार
मरता हूँ मैं, कि यह न किसी की निगाह हो
जब मैकदः[12] छुटा, तो फिर अब क्या जगह की क़ैद[13]
मस्जिद हो, मद्रिसः[14] हो, कोई ख़ानक़ाह[15] हो
सुनते हैं जो बिहिश्त[16] की ता'रीफ़,[17] सब दुरुस्त[18]
लेकिन ख़ुदा करे, वह तेरी जल्वःगाह[19] हो
ग़ालिब भी गर न हो, तो कुछ ऐसा ज़रर[20] नहीं
दुनिया हो, यारब[21], और मेरा बादशाह हो

---

1. शत्रुः; 2. मैत्री, परस्परं व्यवहारः; 3. पापम्, अपराधः; 4. प्रलयदिनस्य ग्रहात्; 5. वधकृत्; 6. प्रतिद्वन्द्वी; 7. साक्षी; 8. निरपराधवधकृत् सत्यबोधशून्यश्च; 9. मनुष्यः; 10. सूर्यश्चन्द्रश्च; 11. अवगुण्ठनम्; 12. मधुशाला; 14. विद्यालयः; 15. आश्रमः; 16. स्वर्गः; 17. प्रशंसा; 18. भूतार्थ; 19. दर्शनस्थलम्; 20. हानिः; 21. हे ईश्वर !

125

तव रे यो व्यवहारः सह प्रतिद्वन्द्विनेह तमवेहि।
पृच्छन् भवेश्च मामपि कः स्यादपराध एव ततः ।। 1 ।।
प्रलयदिनग्रहतस्त्वं रक्षितुमर्हो न हन्त भवितासि।
भवितासि त्वं साक्षी यदि वधकृत् स्यात् प्रतिद्वन्द्वी ।। 2 ।।
वधकावनागसां वा तावपि किं सत्यबोधशून्यौ वा।
कामं नासि मनुष्यः सूर्यश्चन्द्रश्च स त्वमसि ।। 3 ।।
तस्यावगुण्ठने स्वस्थानादेको विनिर्गतस्तन्तुः।
अहमीर्ष्यया म्रिये यद् दृष्टिः कस्यापि नायं स्यात् ।। 4 ।।
मधुशालैव विमुक्ता ततोऽधुना स्थानबन्धनं किमिव।
विद्यालयोऽमरालय इहाश्रमः कश्चिदथवाऽस्तु ।। 5 ।।
स्वर्गस्य या प्रशस्तिः श्रुतिमायातेह साऽस्तु भूतार्था।
परमीश्वरेच्छया स स्यात् तव रे दर्शनस्थानम् ।। 6 ।।
क्षतिरेवं नहि काचिद् यदि न स्याद् 'ग़ालिबो'ऽपि जगतीह।
ईश्वर ! संसारः स्यात् स्यादिह मम चक्रवर्ती च ।। 7 ।।

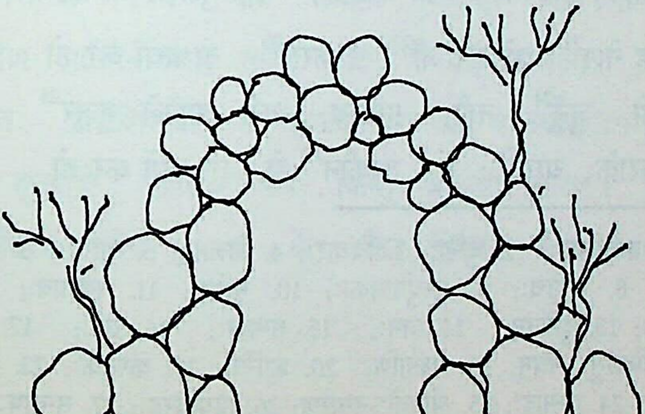

126

गई वह बात, कि हो गुफ़्तगू[1] तो क्योंकर हो
कहे से कुछ न हुआ, फिर कहो, तो क्योंकर हो
हमारे जेह्न[2] में, इस फ़िक्र[3] का है नाम विसाल[4]
कि गर न हो, तो कहाँ जायें, हो, तो क्यों कर हो
अदब[5] है और यही कशमकश,[6] तो क्या कीजे
हया[7] है और यही गोमगो,[8] तो क्योंकर हो
तुम्हीं कहो, कि गुज़ारा सनम परस्तों[9] का
बुतों[10] की हो अगर ऐसी ही ख़ू,[11] तो क्यों कर हो
उलझते हो तुम, अगर देखते हो आईनः
जो तुमसे शह्र में हों एक दो, तो क्यों कर हो
जिसे नसीब हो,[12] रोज़े सियाह[13] मेरा सा
वह शख़्स[14] दिन न कहे रात को, तो क्यों कर हो
हमें फिर उनसे उमीद, और उन्हें हमारी क़द्र[15]
हमारी बात ही पूछें न वो, तो क्यों कर हो
ग़लत न था, हमें ख़त पर, गुमाँ[16] तसल्ली[17] का
न माने दीदः-ए-दीदार जू,[18] तो क्यों कर हो
बताओ उस मिश़ः[19] को देखकर, हो मुझको क़रार[20]
यह नेश[21] हो रगे जाँ[22] में फ़रो,[23] तो क्यों कर हो
मुझे जुनूँ[24] नहीं, ग़ालिब, वले बक़ौले हुज़ूर[25]
फ़िराक़े यार[26] में तस्कीन[27] हो, तो क्यों कर हो

---

1. वार्तालापः; 2. बुद्धिः; 3. विचारः; 4. मिलनम्; 5. आदरः; 6. कर्षाकर्षौ; 7. लज्जा; 8. सङ्कोचः; 9. मूर्त्युपासकाः; 10. मूर्तयः; 11. स्वभावः; 12. प्राप्तं स्यादित्यर्थः; 13. दुर्दिनम्; 14. जनः; 15. सम्मानः; 16. भ्रमः; 17. सान्त्वना; 18. दर्शनपिपासु नेत्रम्; 19. पक्ष्माणि; 20. शान्तिः; 21. कण्टकः; 22. प्राणशिरा; 23. शान्तः; 24. उन्मादः; 25. श्रीमतोऽनुसारेण; 26. प्रियविरहः; 27. सन्तोषः ।

126

सा न स्थितिरद्यत्वे यत् स्यात् सम्भाषणं कथन्तत् स्यात्।
कथने किमपि न सिद्धं कथयेयं तत् कथन्तावत्।।1।।
अस्य विचारस्यास्मन्मतानुसारेण नाम मिलनमिति।
यन्न स्याद् यदि कुत्र व्रजेम चेत् स्यात् कथन्तत् स्यात्।।2।।
शिष्टत्वमस्त्युभयतः कर्षाकर्षौ किमेव कर्तव्यम्।
लज्जाऽस्त्यथ सङ्कोचः स एव चेत् स्यात् कथन्तावत्।।3।।
कथय त्वमेव यदि चेन्मूर्तीनामीदृशः स्वभावः स्यात्।
इह मूर्त्युपासकानां निर्वाहः स्यात् कथन्तत् स्यात्।।4।।
कलहं कुरुषे पश्यसि हन्त तदा कञ्चन त्वमादर्शम्।
त्वत्सदृशाश्चेद् द्वित्रा नगरे स्युस्तत् किमेव स्यात्।।5।।
मत्सदृशं यस्य स्यात् सम्प्राप्तं दुर्दिनं जगत्यस्मिन्।
स जनो न वदेद् रात्रिं दिनमिति चेत्तत् कथन्न वदेत्।।6।।
पुनरस्माकं तस्मादाशाऽस्मान् प्रति च तस्य सम्मानः।
वार्तामिवास्माकं स न पृच्छेत् चेत् कथन्तत् स्यात्।।7।।
आलक्ष्य पत्रमासीन्नहि मिथ्या सान्त्वनानुमानं नः।
दर्शनरसिके नयने नहि मन्येतां विधेयं किम्।।8।।
निर्दिश शान्तिर्मे स्यात् तानि सुपक्ष्माणि कच्चिदालक्ष्य।
शान्तः प्राणशिरायां स कण्टकस्तत् कथं सा स्यात्।।9।।
न ह्युन्मादो 'ग़ालिब' मम किन्तु श्रीमतोऽनुसारेण।
प्रियविरहे सन्तोषः स्यादथ चेत् केन विधिना स्यात्।।10।।

127

किसी को दे के दिल कोई नवा संजे फ़ुग़ाँ[1] क्यों हो
न हो जब दिल ही सीने में, तो फिर मुँह में ज़बाँ[2] क्यों हो
वह अपनी ख़ू[3] न छोड़ेंगे, हम अपनी वज़्'अ[4] क्यों छोड़ें
सुबुक सर[5] बन के क्या पूछें, कि हम से सरगिराँ[6] क्यों हो
किया ग़म ख़्वार[7] ने रुस्वा,[8] लगे आग इस महब्बत को
न लावे ताब[9] जो ग़म की, वह मेरा राज़दाँ[10] क्यों हो
वफ़ा[11] कैसी, कहाँ का 'अिश्क़, जब सर फोड़ना ठहरा
तो फिर, अय संग दिल,[12] तेरा ही संगे आस्ताँ[13] क्यों हो
क़फ़स[14] में, मुझसे रूदादे चमन[15] कहते, न डर, हमदम[16]
गिरी है जिस प कल बिजली, वह मेरा आशियाँ[17] क्यों हो
यह कह सकते हो, हम दिल में नहीं हैं, पर यह बतलाओ
कि जब दिल में तुम्हीं तुम हो, तो आँखों से निहाँ[18] क्यों हो

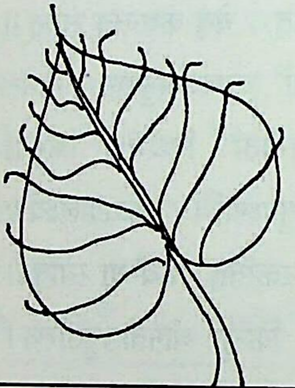

---

1. आर्तनादकृत् 2. वाणी; 3. प्रकृतिः, स्वभावः; 4. रीतिः; 5. लघुतां गताः; 6. रुष्टः; 7. समदुःखः; 8. लाञ्छितः; 9. सोढुं शक्तः; 10. रहस्यज्ञः; 11. प्रेम्णो निर्वाहः; 12. प्रस्तरहृत्; 13. गृहवेदिकाप्रस्तरः; 14. पञ्जरम्; 15. उपवनस्य वृत्तान्तः; 16. वयस्यः; 17. नीडम्; 18. अन्तर्हितः;

127

हृत् कस्मैचिद् दत्वाऽऽर्तस्वरकृत् कोऽप्यहो कथं वा स्यात्।
वक्षसि हृदेव न स्यात् कथं मुखे स्यात् तदा वाणी ।। 1 ।।
स्वां प्रकृतिं न त्यक्ष्यति स ततो रीतिं कथं त्यजेम स्वाम्।
कथमसि रुष्टोऽंस्मास्विति किं लघुतां प्राप्य पृच्छेम ।। 2 ।।
प्रेमेदमग्निसात् स्यात् समदुःखेनास्मि लाञ्छितः सुहृदा ।
स रहस्यवित् कथं मे सोढुं शक्तो न यो दुःखम् ।। 3 ।।
कीदृङ् निर्वाह इतः क्वत्यं प्रेमेह चेच्छिरः स्फोट्यम्।
हे प्रस्तरहृत् ! पुनरिह तवैव गृहवेदिकाऽस्तु कथम् ।। 4 ।।
कथयन् पञ्जरके मामुपवनवृत्तं वयस्य ! मा बिभिहि।
पतिता ह्यो यत्र तडित् कथन्नु तन्नीडकं मे स्यात् ।। 5 ।।
अपि, न स्मो हृदि वयमिति वक्तुं शक्नोषि तावदभिधेहि।
हृदये त्वमेव केवलमथ चेदन्तर्हितोऽसि कथम् ।। 6 ।।
[एकस्त्वमेव हृदि चेत् कथमप्रकटोऽसि लोचनयोः]

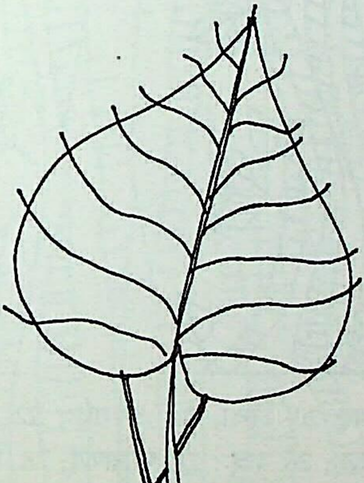

ग़लत है जज़्बे दिल[19] का शिकवः,[20] देखो जुर्म[21] किसका है
न खेंचो गर तुम अपने को, कशाकश[22] दरमियाँ[23] क्यों हो
यह फ़ितनः,[24] आदमी की ख़ानः वीरानी[25] को क्या कम है
हुए तुम दोस्त जिसके, दुश्मन उसका आस्माँ क्यों हो
यही है आज़माना, तो सताना किसको कहते हैं
'अदू[26] के हो लिये जब तुम, तो मेरा इम्तिहाँ[27] क्यों हो
कहा तुमने कि, क्यों हो ग़ैर[28] के मिलने में रुसवाई[29]
बजा[30] कहते हो, सच कहते हो, फिर कहियो कि हाँ क्यों हो
निकाला चाहता है काम क्या ता'नों[31] से तू, ग़ालिब
तेरे बेमेह्र[32] कहने से, वह तुझ पर मेह्रबाँ[33] क्यों हो

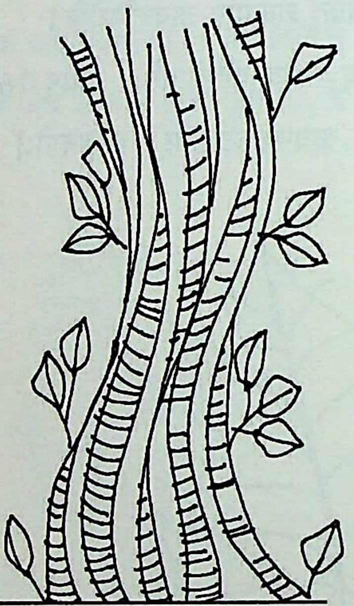

---

19. हृदयस्याकर्षणम्; 20. निन्दा; 21. अपराधः; 22. कर्षाकर्षौः; 23. मध्ये; 24. उपद्रवः; 25. गृहनाशः; 26. शत्रुः; 27. परीक्षणम्; 28. परः, शत्रुः; 29. अयशः; 30. उचितम्; 31. उत्प्रासाः; 32. अकृपः; 33. सकृपः, कृपालुः।

हृदयाकर्षणनिन्दाऽनुचिता, पश्येह कस्य दोषोऽयम्।
नाकर्षेः स्वं मध्ये कर्षाकर्षौ कथं स्याताम्।।7।।
जनगृहनाशस्य कृते किन्न्यूनस्तावदेष उत्पातः।
सुहृदभवो यस्य त्वं कथमसुहृत् तस्य गगनं स्यात्।।8।।
इदमेव चेत् परीक्षणमथ पीडनमुच्यते नु किन्नाम।
पक्षे रिपोर्यदा त्वं परीक्षणं मे कथं तत् स्यात्।।9।।
अयशः परेण मिलने स्यात् कथमिति हन्त यत्त्वयाऽभिहितम्।
उचितं सत्यञ्चात्थ स्यात् कथमिति तत् पुनः कथय।।10।।
उत्प्रासैरुद्देश्यं पूरयितुं 'ग़ालिब' त्वमिच्छसि किम्।
अकृप इति त्वत्कथनात् त्वयि सकृपः स्यात् कथं स इह।।11।।

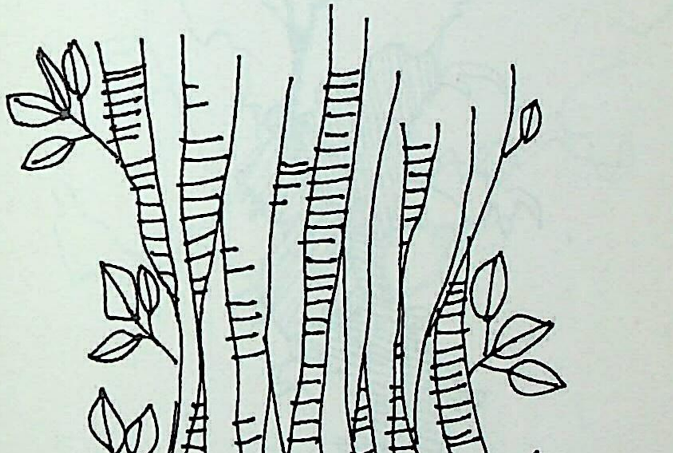

128

रहिये अब ऐसी जगह चलकर, जहाँ कोई न हो
हमसुख़न[1] कोई न हो और हमज़बाँ[2] कोई न हो
बेदर-ओ-दीवार सा इक घर बनाया चाहिये
कोई हमसाय:[3] न हो और पास्बाँ[4] कोई न हो
पड़िये गर बीमार, तो कोई न हो तीमारदार[5]
और अगर मर जाइये, तो नौह:ख़्वाँ[6] कोई न हो

---

1. वार्तालापकर:; 2. समभाष:; 3. प्रतिवेशी; 4. प्रहरी, यामिक:; 5. परिचारक:; 6. रोदनकृत्।

128

अंधुनोषितव्यमीदृशि गत्वा स्थाने यतो न कश्चित् स्यात्।
वार्तालापकरः स्यान्न कोऽपि न स्याच्च समभाषः ॥ 1 ॥
भित्तिद्वारविरहितं निर्मातव्यं यथेह गृहमेकम्।
कश्चित् प्रतिवेशी वा कश्चिद् वा यामिको न स्यात् ॥ 2 ॥
यदि रुग्णः स्या न स्यात् कश्चित् परिचारकस्त्वदीय इतः।
यदि च क्वचिन्म्रियेथा न रोदिता कश्चिदेव स्यात् ॥ 3 ॥

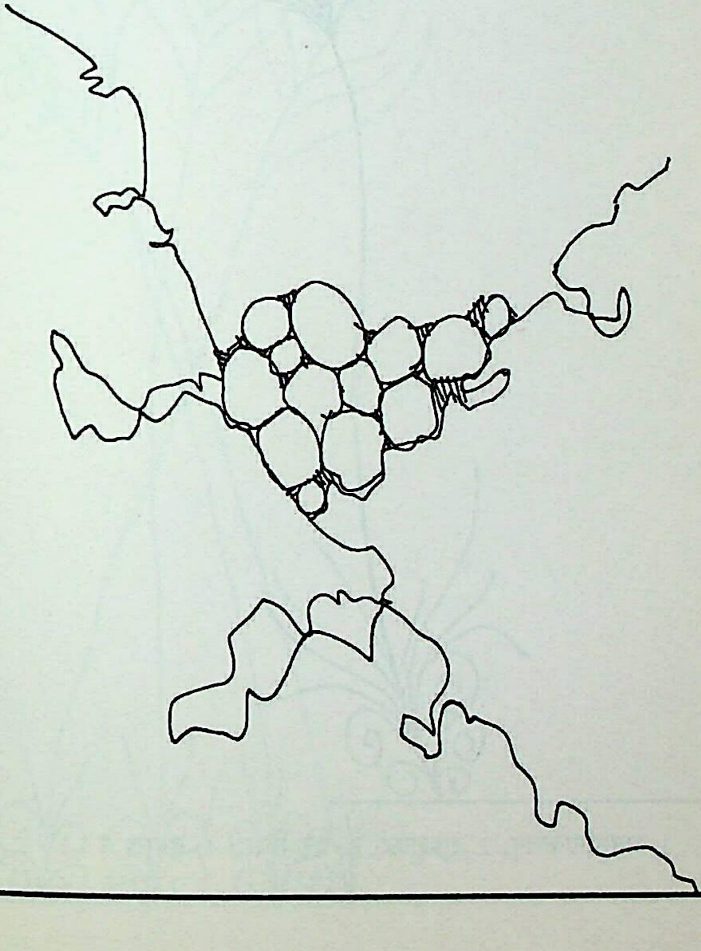

129

अज़ मेह्‌र ता ब ज़र्रः[1] दिल-ओ-दिल है आइनः
तूती[2] को शश जिहत[3] से मुक़ाबिल[4] है आइनः

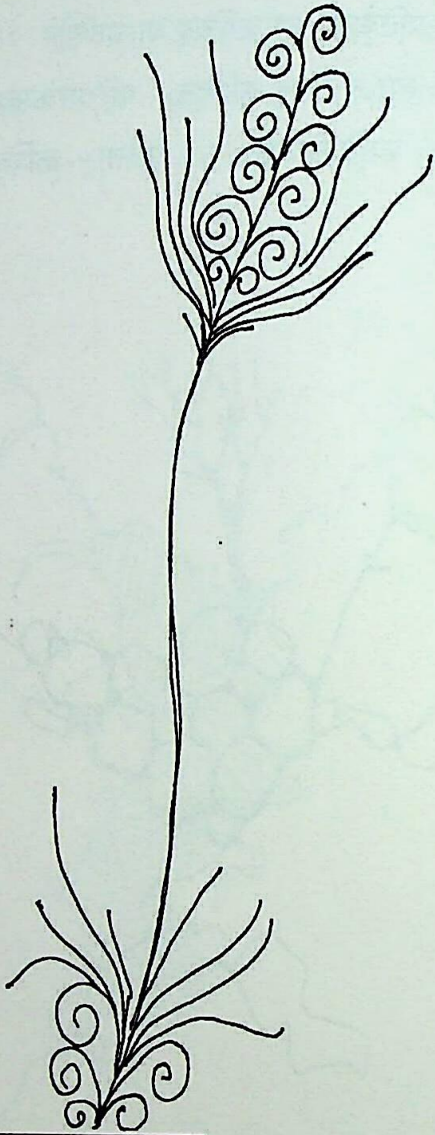

---

1. आसूर्यमाकणम्; 2. क्षुद्रशुकः; 3. षड् दिशः; 4. सम्मुखः।

129

आसूर्यमाकणं खलु हृदः समक्षं हृदस्ति दर्पणवत्।
क्षुद्रशुकस्य समक्षं षट्सु यथा दर्पणो दिक्षु॥1॥

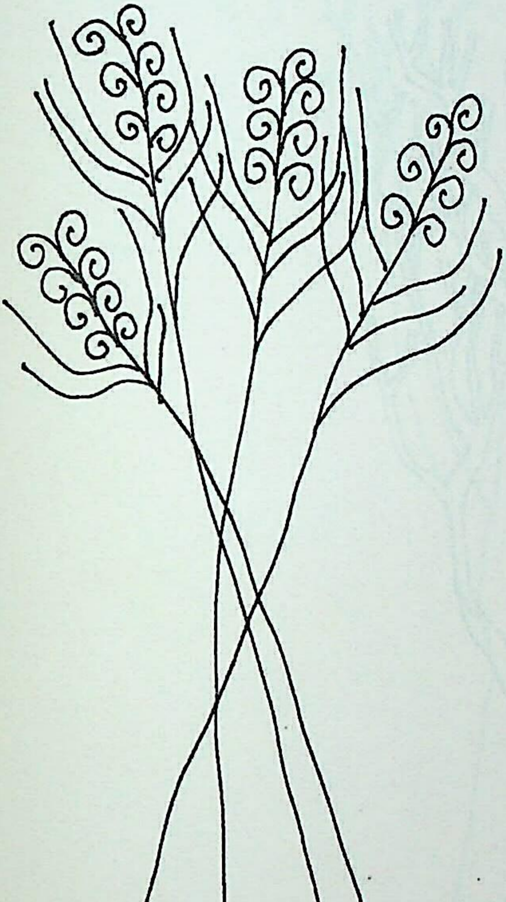

130

है सब्ज़ः ज़ार[1] हर दर-ओ-दीवारे ग़मकदः[2]
जिसकी बहार[3] यह हो, फिर उसकी ख़ज़ाँ[4] न पूछ
नाचार[5] बेकसी[6] की भी हसरत[7] उठाइये
दुश्वारि-ए-रह-ओ-सितमे हमरहाँ[8], न पूछ

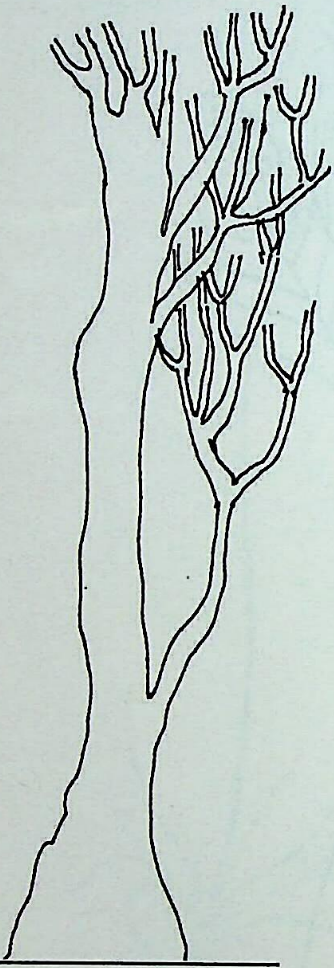

---

1. हरिद्वर्णम्; 2. शोकगृहस्य भित्तिर्द्वारञ्च; 3. वसन्तः; 4. हेमन्तः; 5. विवशः; 6. वैवश्यम्; 7. अपूर्णः अभिलाषः; 8. पथः काठिन्यम् सहचराणा-मत्याचारश्च।

130

शोकगृहद्वार्भित्ती द्वयमपि भातीव मे हरिद्वर्णम्।
ईदृग् यस्य वसन्तो हेमन्तं तस्य मा पृच्छ ॥ 1 ॥
न पथः काठिन्यं नाप्यत्याचारांश्च पृच्छ सार्थजुषाम्।
विवशेन स्वीकार्या वैवश्यस्य स्पृहाऽपीह ॥ 2 ॥

131

सद जल्वः[1] रूबरू[2] है, जो मिश़गाँ[3] उठाइये
ताक़त[4] कहाँ, कि दीद[5] का एहसाँ[6] उठाइये
है संग[7] पर, बराते म'आशे जुनूने 'अिश्क़[8]
या'नी हनोज़[9] मिन्नते तिफ़्लाँ[10] उठाइये
दीवार, बारे मिन्नते मज़दूर[11] से, है ख़म[12]
अय ख़ानमाँ ख़राब,[13] न एहसाँ उठाइये
या मेरे ज़ख़्मे रश्क[14] को रुस्वा[15] न कीजिये
या पर्दः-ए-तबस्सुमे पिन्हाँ[16] उठाइये

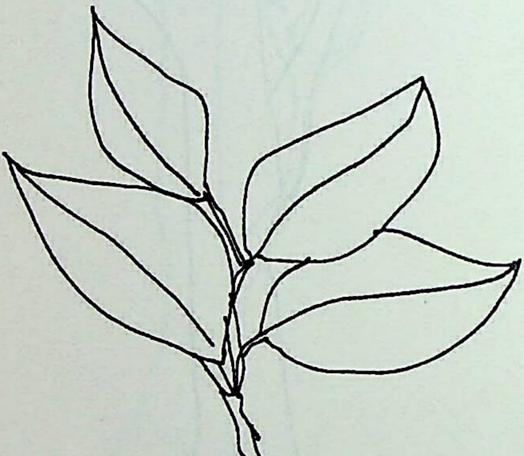

---

1. भासां शतम्; 2. सम्मुखम्; 3. पक्ष्म; 4. शक्तिः; 5. दर्शनम्; 6. कार्तज्ञ्यम्; 7. दृषत्; 8. प्रेमोन्मादभृतेः धनादेशपत्रम्; 9. अधुनाऽपि; 10. बालाः प्रार्थयितव्या इत्यर्थः 11. श्रमिकोपकारभारः; 12. आनता; 13. गृहहीनः; 14. ईर्ष्याजनितो व्रणः; 15. अयशोभाजनम्; 16. छन्नस्मितप्रसङ्गावरणानि।

131

पक्ष्मोन्मील्येत ततो भवति शतं सम्मुखीनमिह भासाम्।
सामर्थ्यं तु कुतो यत् कार्तज्ञ्यं दर्शनस्यास्तु ॥ 1 ॥
प्रेमोन्मादभृतेः खलु दृषद् धनादेशपत्रमस्तीह।
अर्थात् प्रार्थयितव्या बाला अस्माभिरधुनाऽपि ॥ 2 ॥
श्रमिकोपकारभाराद् भित्तिर्जातियमानता नूनम्।
गृह्हीन ! नोपकारः शिरसा धार्यस्त्वया भारः ॥ 3 ॥
मा कुर्वयशोभाजनमीर्ष्याजनितं व्रणं मदीयं वा।
छन्नस्मितप्रसङ्गाननावृतान् संविधेह्यथवा ॥ 4 ॥
[विनिवारयाथवेमान् स्मितप्रसङ्गानिह च्छन्नान्]

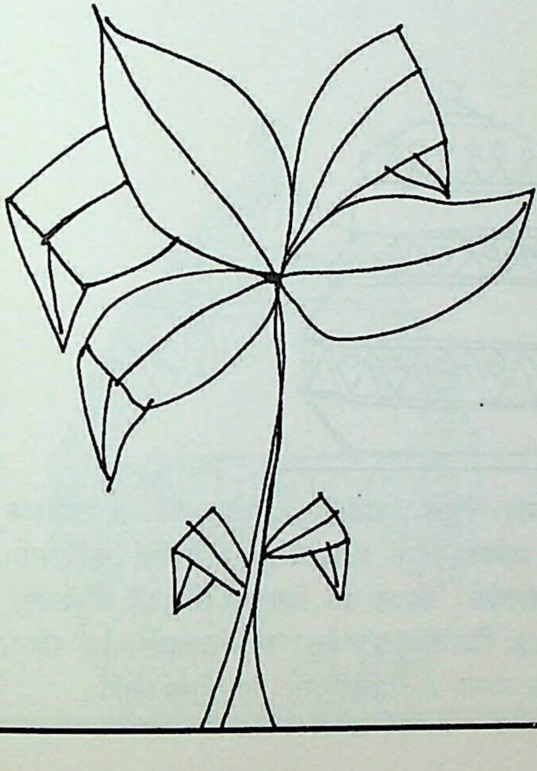

132

मस्जिद के ज़ेरे सायः,[1] ख़राबात[2] चाहिये
भौं पास आँख क़िबलः-ए-हाजात[3] चाहिये
'आशिक़[4] हुए हैं आप भी, इक और शख़्स[5] पर
आख़िर सितम की कुछ तो मुकाफ़ात[6] चाहिये
दे दाद,[7] अय फ़लक,[8] दिले हसरत परस्त[9] की
हाँ कुछ न कुछ तलाफ़ि-ए-माफ़ात[10] चाहिये
सीखे हैं महरुख़ों[11] के लिये हम मुसव्विरी[12]
तक़रीब[13] कुछ तो बह्रे मुलाक़ात[14] चाहिये
मै[15] से ग़रज़[16] नशात[17] है किस रूसियाह[18] को
इक गूनः[19] बेख़ुदी[20] मुझे दिन रात चाहिये

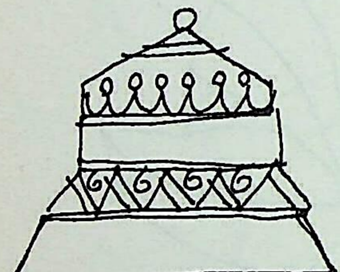

---

1. छायायाम्, तले इत्यर्थः; 2. मदिरालयः; 3. उपदेशक इति तात्पर्यम्; 4. प्रणयी; 5. व्यक्तिः; 6. प्रतिशोधः; 7. प्रशस्तिं कुर्वित्यर्थः; 8. गगनम्; 9. अभिलषितानामर्चकं हृदयम्; 10. विगतानां (विपदां) प्रतिफलम्; 11. चन्द्रसदृशमुखच्छवयः; 12. चित्रकला; 13. हेतुः; 14. मिलनार्थम्; 15. मदिरा; 16. अभीष्टम्; 17. आनन्दः; 18. पाप्मा; 19. यत्किञ्चित्; 20. आत्मविस्मृतिः;

132

मदिरालयः समुचितश्छायायां 'मस्जिदस्य' कस्यचन ।
पक्ष्मसमीपेऽपेक्षितमुपदेशक ! यद्दृशोर्युगलम् ।। 1 ।।
व्यक्तावेकस्यामित आसक्तो निर्भरं भवानपि भोः ।
अन्तत एष समुचितः प्रतिशोधो निर्दयत्वस्य ।। 2 ।।
गगन ! प्रशंस साम्प्रतमभिलाषाणां समर्चकं हृदयम् ।
प्रतिफलमिह यत्किञ्चिद् विपदां लभ्येत विगतानाम् ।। 3 ।।
विधुवदनानां लोभाच्चित्रकलाऽस्माभिरेवमभ्यस्ता ।
तासां सङ्गत्यर्थं केनचिदिह हेतुना भाव्यम् ।। 4 ।।
कः खलु पाप्माऽऽनन्दो येनापेक्ष्येत हन्त मदिरायाः ।
एकेषदात्मविस्मृतिरिष्टा रात्रिन्दिवं तु मम ।। 5 ।।

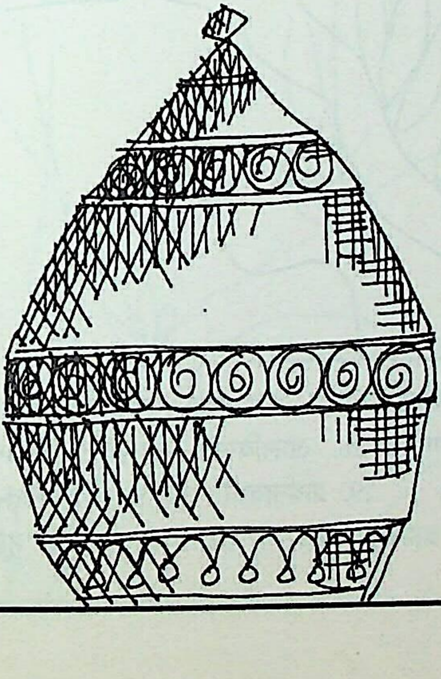

है रंगे लालः-ओ-गुल-ओ-नसरीं,[21] जुदा जुदा[22]
हर रंग में बहार[23] का इस्बात[24] चाहिये
सर पा-ए-ख़ुम[25] प चाहिये हंगामे बेख़ुदी[26]
रू[27] सू-ए-क़िबलः[28] वक़्ते मुनाजात[29] चाहिये
या’नी ब हस्बे गर्दिशे पैमानः-ए-सिफ़ात[30]
आरिफ़[31] हमेशः मस्ते मै-ए-ज़ात[32] चाहिये
नश्व-ओ-नुमा[33] है अस्ल[34] से, ग़ालिब फ़ुरू’अ[35] को
ख़ामोशी[36] ही से निकले है, जो बात चाहिये

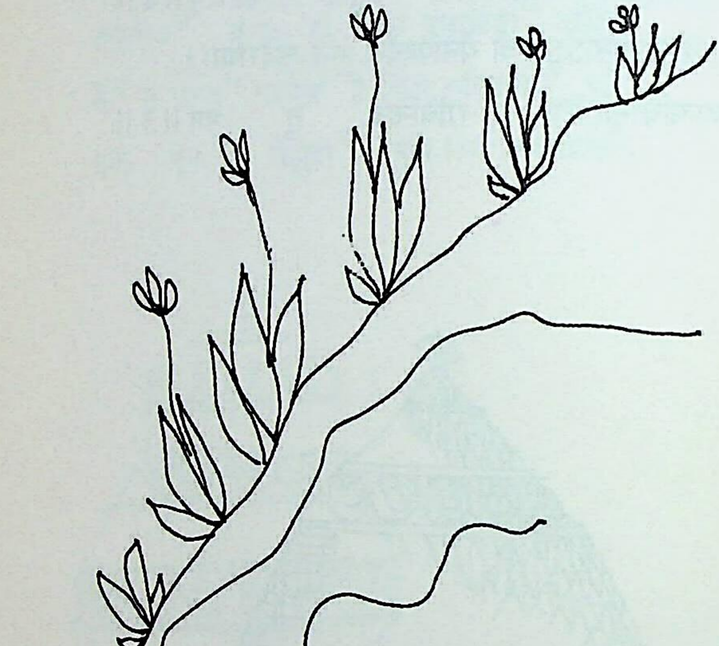

---

21. पाटलादिपुष्पाणां वर्णः; 22. पृथक् पृथक्; 23. वसन्तः; 24. पुष्टिः; 25. मधुघटस्य चरणः; 26. आत्मविस्मृतेः क्षणे; 27. मुखम्; 28. ‘का’बां’ (तीर्थस्थलं) अभिलक्ष्य; 29. प्रार्थनावसरे; 30. गुणमदिरान्वित-चषकभ्रम्यनुरूपम्; 31. ब्रह्मज्ञानी; 32. ब्रह्ममधुना मत्तः; 33. विकासः; 34. मूलम्; 35. शाखाः; 36. मौनम्।

पुष्पेषु पाटलादिषु वर्णः प्रत्येकमेव भिन्नोऽस्ति।
प्रत्येकं खलु वर्णे पुष्टिरपेक्ष्या वसन्तस्य ।।6।।
क्षण आत्मविस्मृतेः खलु शिरसा चरणे घटस्य भवितव्यम्।
ध्यानक्षणे मुखेन च 'का'बा'भिमुखेन भवितव्यम् ।।7।।
अर्थात् गुणमदिरान्वितचषकभ्रमिसाम्यसङ्गतेनेह।
ब्रह्ममधुनि मत्तेन ब्रह्मज्ञानस्पृशा भाव्यम् ।।8।।
मूलाद् यथा विकासो 'ग़ालिब' भवतीह वृक्षशाखानाम्।
उदयति तथा विवक्षितमिह मौनादेव वक्तव्यम् ।।9।।

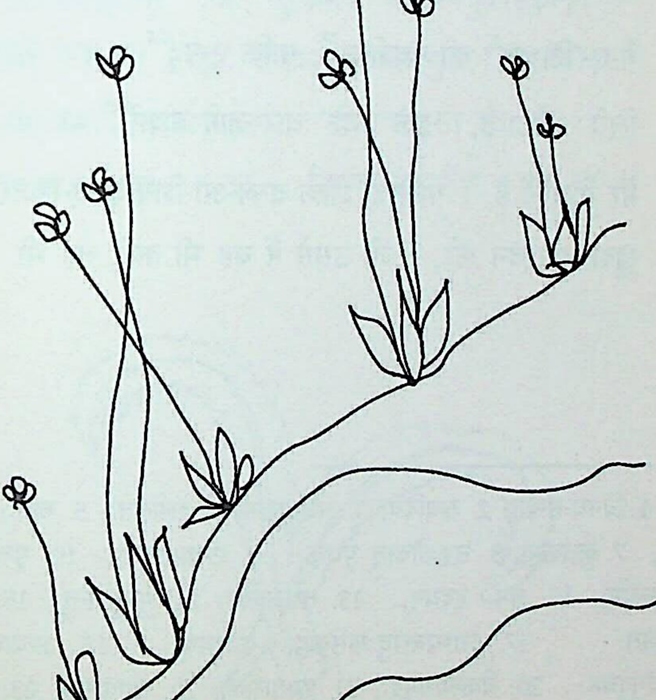

133

बिसाते ’अिज्ज़[1] में था एक दिल, यक क़तरः ख़ूँ वह भी
सो रहता है, बअन्दाज़े चकीदन[2] सर निगूँ,[3] वह भी
रहे उस शोख़[4] से आज़ुर्दः[5] हम चन्दे,[6] तकल्लुफ़[7] से
तकल्लुफ़ बरतरफ़,[8] था एक अन्दाज़े जुनूँ[9] वह भी
ख़याले मर्ग[10], कब तस्कीं[11] दिले आज़ुर्दः[12] को बख़्शे
मेरे दामे तमन्ना[13] में है इक सैदे ज़ुबूँ,[14] वह भी
न करता काश नालः,[15] मुझको क्या मा’लूम था, हमदम[16]
कि होगा बा’अिसे अफ़ज़ाइशे दर्दे दुरूँ[17] वह भी
न इतना बुर्रिशे तेग़े जफ़ा[18] पर नाज़ फ़रमाओ[19]
मेरे दरिया-ए-बेताबी[20] में है इक मौजे ख़ूँ[21] वह भी
मै-ए-’अिश्रत[22] की ख़्वाहिश[23], साक़ि-ए-गर्दूं[24] से क्या कीजे
लिये बैठा है, इक दो चार जामे वाश़गूँ[25] वह भी
मेरे दिल में है, ग़ालिब, शौक़े वस्ल-ओ-शिकवः-ए-हिजराँ[26]
ख़ुदा वह दिन करे, जो उससे मैं यह भी कहूँ, वह भी

---

1. विनय-सम्पत्; 2. स्रवदिव; 3. अधोमुखम्; 4. दुर्ललितः; 5. रुष्टाः; 6. कञ्चित् कालम्; 7. कृतकम्; 8. सङ्कोचात् पृथक् ; 9. उन्मादप्रकारः; 10. मृत्योः कल्पना; 11. सान्त्वम्; 12. तप्तं हृदयम्; 13. तर्षजालम्; 14. मुमूर्षुर्जन्तुः; 15. आर्तनादः; 16. सुहृत्; 17. आभ्यन्तरदुःखसंवृद्धेः कारणम्; 18. अत्याचारासिधारा; 19. गर्वमुद्वह; 20. वैकल्यसमुद्रः; 21. रक्तलहरी; 22. सौख्यमधु; 23. आकाङ्क्षा; 24. आकाशमधुदाता; 25. अधोमुखाः; 26. मिलनाभिलाषः विरहोपालम्भश्च।

133

एकं विनय-द्रविणे हृदिहासीत् तदपि रक्तपृषदेकम्।
तिष्ठति तच्च स्रवदिव सततं, तदधोमुखं तदपि ॥ 1 ॥
कृतकं मानमकृष्महि दुर्ललिते कमपि कालमिह तस्मिन्।
सङ्कोचात् पृथगेकः सोऽप्युन्मादप्रकारोऽभूत् ॥ 2 ॥
दद्यात् तप्ताय हृदे कुतो नु सान्त्वं प्रकल्पना मृत्योः।
एकः सोऽपि मुमूर्षुर्जन्तुर्मम तर्षजालगतः ॥ 3 ॥
कुर्यां नार्तस्वरमहमिह विदितं मित्र ! किं ममेदमभूत्।
यद् भविता बत कारणमाभ्यन्तरदुःखसंवृद्धेः ॥ 4 ॥
नात्याचारमयीमन्वसिधारां गर्वमुद्वहेयन्तम्।
मद्वैकल्यतटिन्या लहरी रक्तस्य साऽप्येका ॥ 5 ॥
आकाशान्मधुदातुः किं कुर्यामेष सौख्यमधुकाङ्क्षाम्।
द्वित्रान् स्थितो हि चषकानादायाधोमुखान् सोऽपि ॥ 6 ॥
मिलनाभिलाष-विरहोपालम्भौ 'ग़ालिब' स्त एव मयि।
विनिवेदयेयमुभयं तद् दिनमायाद्यदीश ततः ॥ 7 ॥

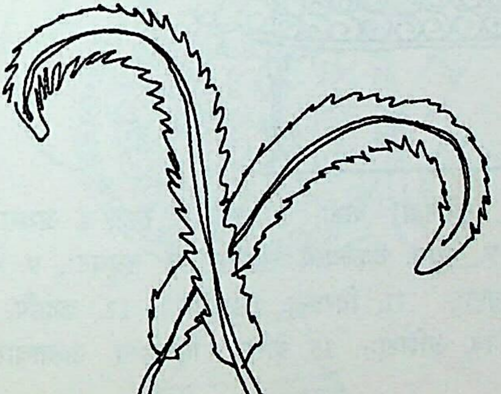

134

है बज़्मे बुताँ[1] में सुख़न[2] आज़ुर्दः[3] लबों[4] से
तँग आये हैं हम, ऐसे ख़ुशामद तलबों[5] से
है दौरे क़दह,[6] वज्हे परीशानि-ए-सह्बा[7]
यक बार लगा दो ख़ुमे मै[8] मेरे लबों से
रिन्दाने दरे मैकदः,[9] गुस्ताख़[10] हैं, ज़ाहिद[11]
ज़िन्हार[12] न होना तरफ़,[13] इन बेअदबों[14] से
बेदादे वफ़ा[15] देख, कि जाती रही आख़िर
हरचन्द[16] मेरी जान को था रब्त[17] लबों से

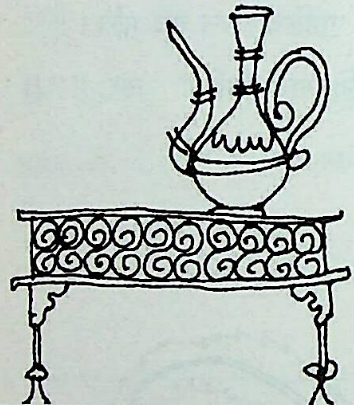

---

1. मूर्तीनां (मूर्तिमतां) गोष्ठी; 2. वाणी; 3. रुष्टा; 4. अधराः; 5. चाटुप्रियाः; 6. मदिराचक्रम्; 7. मधुनः वैकल्यस्य निमित्तम्; 8. मधुघटः; 9. मधुशालाद्वारगताः मद्यपाः; 10. धृष्टाः; 11. विरक्ताः (संयमिनः); 12. कदापि; 13. कलहो न कर्तव्य इत्यर्थः; 14. अशिष्टाः; 15. प्रेम्णि निर्वाहस्य अत्याचारः; 16. यद्यपि; 17. सम्बन्धः।

134

चाटुप्रियैरमीभिर्बाढमहं व्याकुलीकृताऽस्मीति ।
मूर्तिमतामिह गोष्ठ्या वागधरेष्वस्ति रुष्टेव ।। 1 ।।
भूचक्रं मदिराया वैकल्यस्यास्ति कारणं तावत् ।
सकृदस्मदोष्ठनिकटे मधुकुम्भो नीयतामेषः ।। 2 ।।
मधुशालाद्वार्वर्तिन एते खलु मद्यपा; समे धृष्टाः ।
नारब्धव्योऽमीभिः कदाप्यशिष्टैः समं कलहः ।। 3 ।।
निर्वाहस्याकलयात्याचारानन्ततोऽसवो याताः ।
सम्बन्धस्तस्यासीत् समं मदधरेण यदपीह ।। 4 ।।

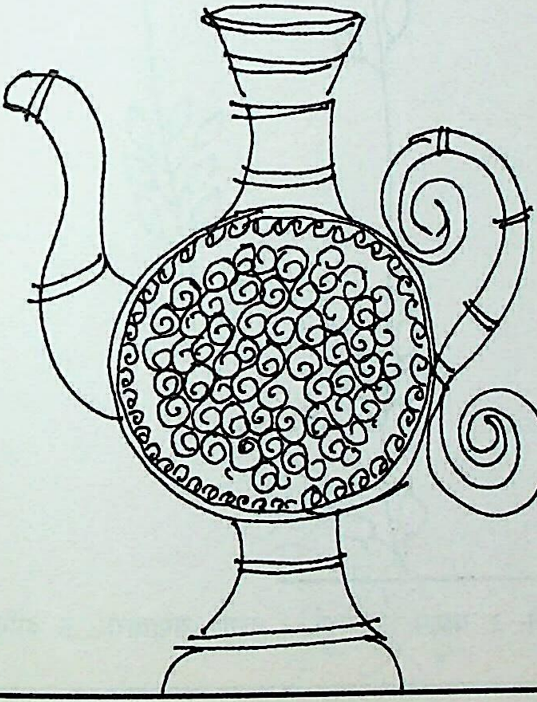

135

ता, हम को शिकायत की भी बाक़ी न रहे जा[1]
सुन लेते हैं, गो[2] ज़िक्र[3] हमारा नहीं करते
ग़ालिब, तेरा अहवाल[4] सुना देंगे हम उनको
वह सुनके बुला लें, यह इजारा नहीं करते[5]

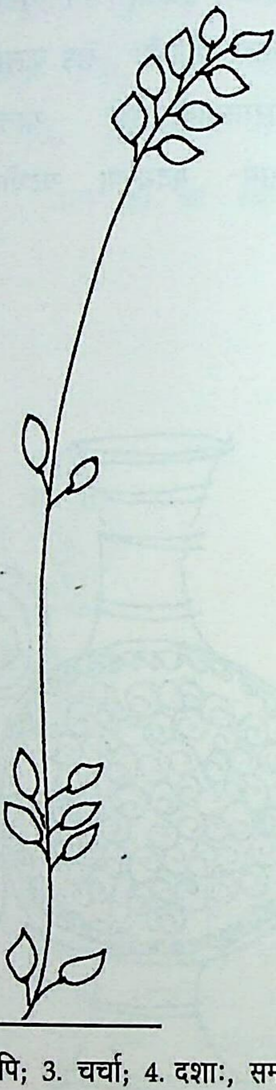

---

[1] स्थानम्; [2] यद्यपि; [3] चर्चा; [4] दशाः, समाचाराः; [5] दायित्वं न निर्वहाम इत्यर्थः।

135

येनोपालम्भस्य स्थानं शिष्येत किमपि नास्मभ्यम् ।
स शृणोति, हन्त यद्यपि न करोत्यस्माकमिह चर्चाम् ।। 1 ।।
'ग़ालिब' दशास्त्वदीयास्तं वयमेते निवेदयिष्यामः ।
न स्थितमिदमस्मासु त्वां स यदामन्त्रयेत्, श्रुत्वा ।। 2 ।।

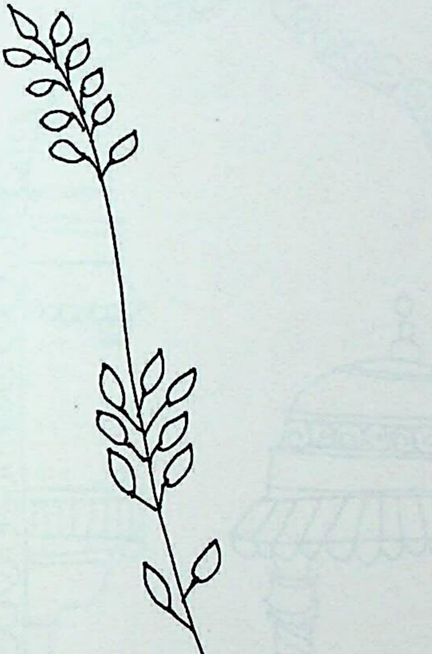

136

घर में था क्या, कि तेरा ग़म उसे ग़ारत[1] करता
वह जो रखते थे हम इक हसरते ता'मीर[2], सो है

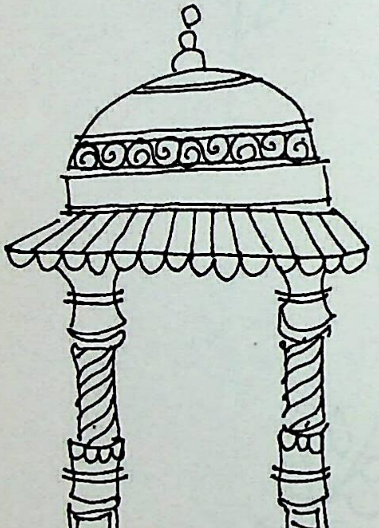

---

[1] विनाशः; [2] निर्माणस्याभिलाषः।

136

निर्माणस्याकाङ्क्षामेकामतिरिच्य किं गृहेऽतिष्ठत्।
यत् त्वद्वियोगदुःखं शक्तमितः स्याद् विनाशयितुम्।। 1।।

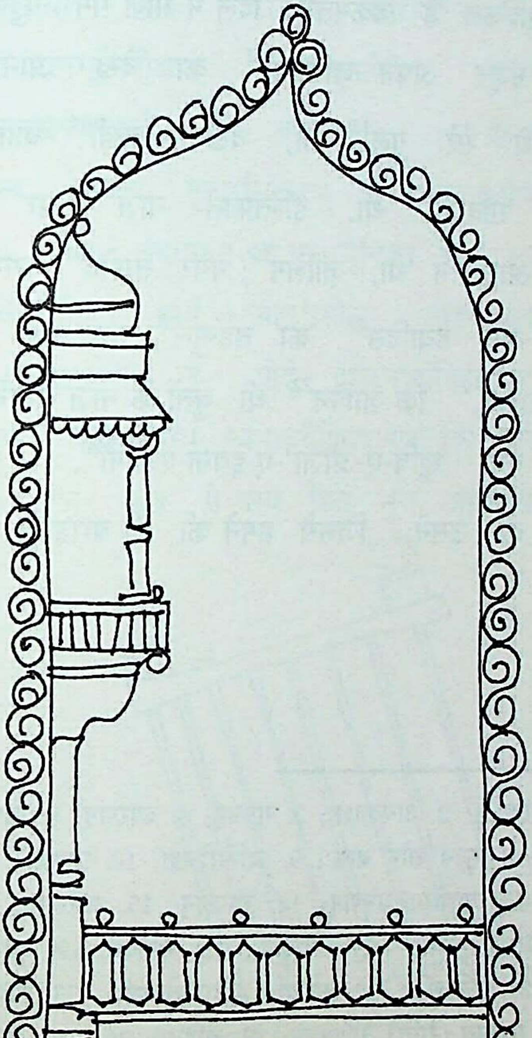

137

ग़मे दुनिया[1] से, गर पाई भी फ़ुर्सत[2], सर उठाने की
फ़लक[3] का देखना, तक़रीब[4] तेरे याद आने की
खुलेगा किस तरह मज़मूँ[5] मेरे मकतूब[6] का, यारब
क़सम खाई है उस काफ़िर[7] ने, काग़ज़ के जलाने की
लिपटना परनियाँ[8] में शो'लः-ए-आतश[9] का आसाँ है
वले मुश्किल है हिकमत[10], दिल में सोज़े ग़म[11] छुपाने की
उन्हें मंज़ूर अपने ज़ख़्मियों[12] का देख आना था
उठे थे सैरे गुल[13] को, देखना शोख़ी[14] बहाने की
हमारी सादगी[15] थी, इल्तिफ़ाते नाज़[16] पर मरना
तेरा आना न था, ज़ालिम[17], मगर तम्हीद[18] जाने की
लकद कोबे हवादिस[19] का तहम्मुल[20] कर नहीं सकती
मेरी ताक़त,[21] कि ज़ामिन[22] थी बुतों के नाज़ उठाने की[23]
कहूँ क्या ख़ूबि-ए-औज़ा'-ए-इबना-ए-ज़माँ[23], ग़ालिब
बदी[25] की उसने, जिससे हमने की थी बारहा[26] नेकी[27]

---

1. भवदु:खानि; 2. अवकाश:; 3. गगनम्; 4. कारणम्; 5. विषय:; 6. पत्रम्; 7. अनास्थावान्; 8. सूक्ष्मं क्षौमं वास:; 9. अग्निशिखा; 10. उपाय:; 11. दु:खताप:; 12. व्रणवन्त:; 13. पुष्पोद्यानभ्रमणम्; 14. चापलम्; 15. सारल्यम्; 16. सौन्दर्यस्य (सुन्दरस्य, प्रियस्य) कृपा; 17. निष्कृप:; 18. भूमिका; 19. दुर्घटनानामाघाता:; 20. सहनम्; 21. शक्ति:; 22. समर्था, उद्‌युक्तेत्यर्थ:; 23. हावं सोढुमित्यर्थ:; 24. जगज्जनस्य स्वभाव (रीति) वैशिष्ट्यम्; 25. अहितम्; 26. भूय:; 27. हितम्।

137

भवदुःखेभ्यः प्राप्तो यद्यवकाशोऽपि मूर्ध्न उन्नतये।
गगनावलोकनं त्वत्स्मृतेरहो कारणं जातम्॥1॥
ईश्वर! मत्पत्रस्य स्फुटतां विषयः कथन्नु लभ्येत।
कर्गद-दाहाय कृतप्रतिज्ञ इह स ह्यनास्थावान्॥2॥
अग्निशिखायाः सरलं संवरणं क्षौमवाससीह, परम्।
संवरणोपायो हृदि कठिनो विरहाग्नितापस्य॥3॥
तस्याभिप्रेतमभून्निरीक्षणं व्रणवतामिह स्वेषाम्।
पुष्पोद्यानभ्रमणव्याजे तच्चापलं प्रेक्ष्यम्॥4॥
आसीन्नः सारल्यं मृत्युरधिश्रित्य सुन्दरस्य कृपाम्।
निष्कृप! न तवागमनं परं गमनभूमिका खलु तत्॥5॥
मच्छक्तिर्मूर्तिमतां हावं याऽऽसीन्नु सोढुमुद्युक्ता।
सा शक्ताऽस्ति न सोढुं दुर्घटनानामिहाघातान्॥6॥
'ग़ालिब' जगज्जनस्य स्वभाववैशिष्ट्यमेष किं वच्मि।
अहितं तेन कृतं मे यस्य हितं भूय आचरितम्॥7॥

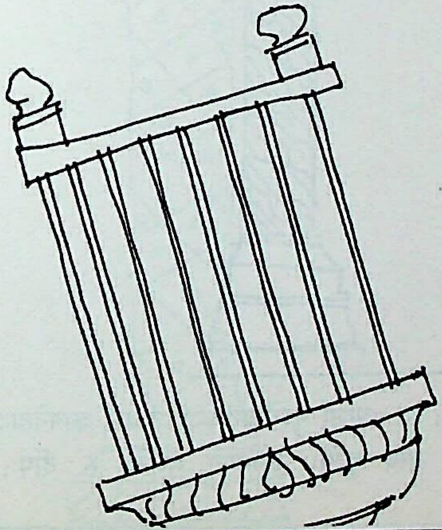

138

हासिल[1] से हाथ धो बैठ[2], अय आरज़ू ख़िरामी[3]
दिल जोशे गिरियः[4] में है डूबी हुई असामी[5]
उस शम्'अ[6] की तरह से, जिसको कोई बुझा दे
मैं भी जले हुओं में, हूँ दाग़े नातमामी[7]

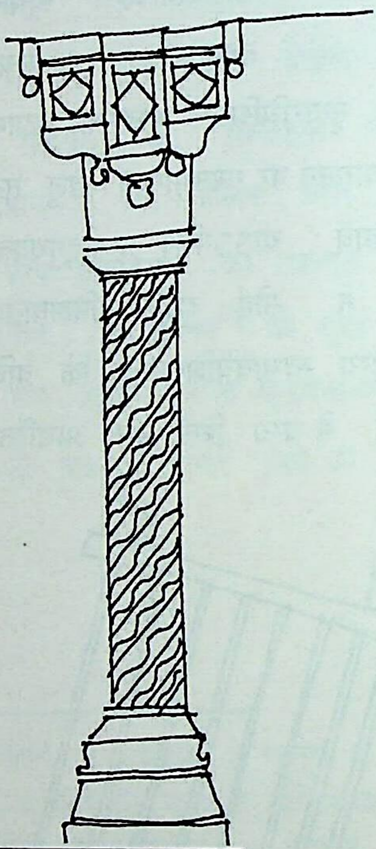

---

1. लाभः; 2. आशां मुञ्चेत्यर्थः; 3. इत्वरी कामनेत्यर्थः; 4. अतिशयं रोदनम्; 5. स कृषकः, यस्य कृषिः जलमग्ना भवति; 6. दीपः; 7. अर्धदग्धत्वादुत्पन्नः कलङ्कः।

138

इत्वरि काङ्क्षे ! स्वीयां लाभाशां हन्त सर्वथा मुञ्च।
रोदनपरायणं मे हृदयं कृषकोऽस्ति नष्टकृषिः ॥1॥
निर्वापयेत् कदाचित् प्रदीपमिव हन्त यं जनः कश्चित्।
दग्धेष्वपूर्णदग्धः कलङ्क एषोऽहमप्यस्मि ॥2॥

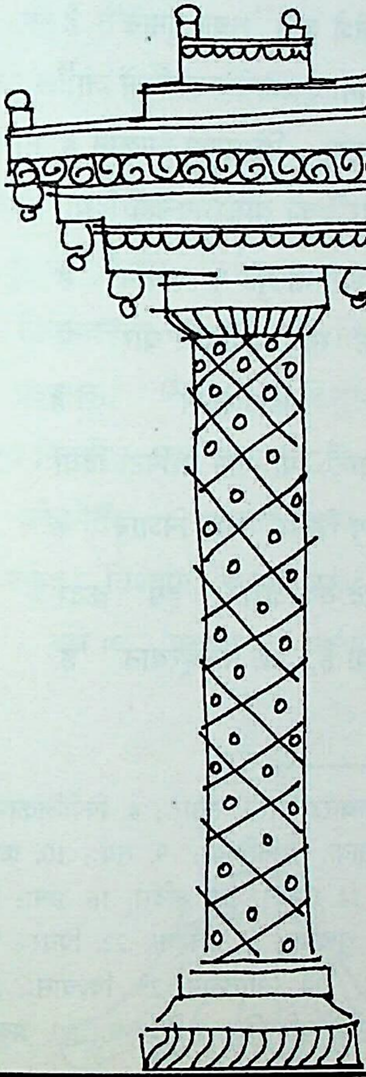

139

क्या तंग[1] हम सितमज़दगाँ[2] का जहान[3] है
जिसमें कि एक बैज़ः-ए-मोर[4] आसमान है
है कायनात[5] को हरकत[6] तेरे ज़ौक़[7] से
परतौ[8] से आफ़ताब[9] के, ज़र्रे[10] में जान[11] है
हालआँकि है यह सेलि-ए-ख़ारा[12] से लालः रंग[13]
ग़ाफ़िल[14] को मेरे शीशे प मै[15] का गुमान[16] है
की उसने गर्म सीनः-ए-अहले-हवस[17] में जा[18]
आवे न क्यों पसन्द, कि ठण्डा मकान है
क्या ख़ूब तुमने ग़ैर[19] को बोसः[20] नहीं दिया
बस चुप रहो, हमारे भी मुँह में ज़बान[21] है
बैठा है जो कि सायः-ए-दीवारे यार[22] में
फ़रमाँरवा-ए-किश्वरे हिन्दोस्तान[23] है
हस्ती[24] का ए'तिबार[25] भी ग़म ने मिटा दिया
किससे कहूँ कि दाग़ जिगर[26] का निशान[27] है
है बारे[28] ए'तिमादे वफ़ादारी[29] इस क़दर
ग़ालिब, हम इसमें खुश हैं, कि नामेह्रबान[30] है

---

1. सङ्कुचितः; 2. अत्याचारहताः; 3. संसारः; 4. पिपीलिकाण्डम्; 5. विश्वम्; 6. गतिः; 7. अभिरुचिः; 8. छाया, प्रतिविम्बः; 9. सूर्यः; 10. कणः; 11. प्राणाः; 12. प्रस्तरप्रहारः; 13. रक्ताभः; 14. उन्मत्तः; 15. मदिरा; 16. भ्रमः; 17. गृध्नोः वक्षः; 18. स्थानम्; 19. शत्रुः; 20. चुम्बनम्; 21. जिह्वा; 22. प्रियस्य भवनभित्तेश्छाया; 23. हिन्दुस्थानदेशस्य प्रशासकः; 24. अस्तित्वम्; 25. विश्वासः; 26. यकृत्कलङ्कः; 27. चिह्नम्; 28. सकृत्; 29. प्रणयनिर्वाहमधिकृत्य विश्वासः; 30. अकृपालुः।

139

अत्याचारहतानां संसारः किन्न एष सङ्कुचितः।
एकं पिपीलिकाण्डं यस्मिन्नाकाशमाभाति॥1॥
प्राणानां सञ्चारो यथा कणे भाति भास्वतः किरणैः।
प्रेम्णा तव सृष्टिरियं गतिशीलत्वं तथा लभते॥2॥
यद्यपि दृषत्प्रहाराद् रक्तकुसुमवर्ण एष आभाति।
हृत्काचं मम तदपि प्रमत्त इह वेत्ति मदिरेति॥3॥
वक्षसि तेन स्थानं गृध्नोः परिपन्थिनः कृतं स्वीयम्।
तद् रोचेत कथन्नो तस्मै यच्छीतलं सद्म॥4॥
दत्तं त्वया न चुम्बनमरातये यत्तदत्र किं सुष्ठु।
मौनं गृहाण, वदने जिह्वा ह्यस्माकमप्यस्ति॥5॥
भित्तेः प्रियभवनस्य च्छायायां यः स्थितो निलीयेह।
सैष प्रशासकः खलु हिन्दुस्थानाख्यदेशस्य॥6॥
अस्तित्वस्य निवारित इह विश्वासोऽपि हन्त शोकेन।
कम्प्रति वदेयमेतद् यकृत्कलङ्कस्य चिह्नमिति॥7॥
अस्ति सकृद् विश्वासो निर्वाहे तस्य तावदेतावान्।
'ग़ालिब' वयं प्रसन्ना यदसावकृपालुरस्मासु॥8॥

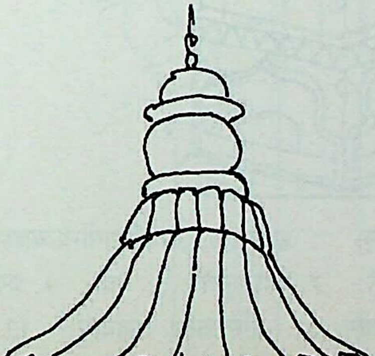

140

दर्द से मेरे, है तुझको बेक़रारी[1] हाय हाय
क्या हुई ज़ालिम[2] तेरी ग़फ़्लत शि'आरी[3] हाय हाय
तेरे दिल में गर, न था आशोबे ग़म[4] का हौसलः[5]
तूने फिर क्यों की थी मेरी ग़मगुसारी[6] हाय हाय
क्यों मेरी ग़मख़्वारगी[7] का तुझको आया था ख़याल
दुश्मनी अपनी थी मेरी दोस्तदारी[8] हाय हाय
'अुम्र भर का तूने पैमाने वफ़ा[9] बाँधा तो क्या
'अुम्र को भी तो नहीं है पायदारी[10] हाय हाय
ज़ह्र[11] लगती है मुझे आब-ओ-हवा-ए-ज़िन्दगी[12]
या'नी तुझसे थी उसे नासाज़दारी[13] हाय हाय
गुलफ़िशानीहा-ए-नाज़े जल्वः[14] को क्या हो गया
ख़ाक पर होती है तेरी लालः कारी[15] हाय हाय

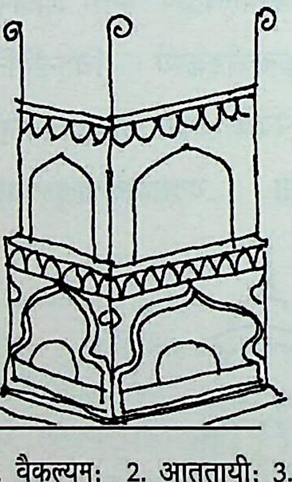

---

1. व्यथा, वैकल्यम्; 2. आततायी; 3. औदासीन्यव्यवहारः; 4, 5. दुःखसहनस्य सामर्थ्यम्; 6. समानुभूतिः; 7. सहानुभूतिः; 8. मैत्री; 9. प्रणयनिर्वाहस्य प्रतिश्रुतिः; 10. स्थायित्वम्; 11. विषम्; 12. अस्तित्वस्य जलवायुः; 13. प्रातिकूल्यम्, विरोधः; 14. सौन्दर्यगर्वपुष्पवृष्टयः; 15. सुमनसामुत्पत्तिः।

140

हा हन्त व्यथया त्वं सम्प्रत्यसि मामकीनया व्यथितः।
व्यवहार आततायिन्, औदासीन्यस्य कुत्र तव ॥ 1 ॥
तव हृदये सामर्थ्यं यन्नासीत् किमपि दुःखसहनस्य।
मम दुःखे कथमासीः सम्मिलितस्तन्न हा हन्त ॥ 2 ॥
मां प्रति सहानुभूतेः कथं विचारोऽभवत् तवोत्पन्नः।
समजायत मम मैत्री हा हन्त त्वत्कृते वैरम् ॥ 3 ॥
किन्तेनायुर्यावत् प्रतिश्रुतो यत्त्वयेह निर्वाहः।
हा हन्त स्थायित्वं जगतीह तु नायुषोऽप्यस्ति ॥ 4 ॥
विषमिव जलवाय्वादि प्रतीयते किञ्च जीवनस्य मम।
अर्थात्, त्वाम्प्रत्यासीत् तस्य विरोधश्च हा हन्त ॥ 5 ॥
सौन्दर्यगर्वसुमनोवृष्टीनां सम्प्रतीह किं जातम्।
यत्तव मृत्सु सुमनसां हा हन्तासां विकासश्रीः ॥ 6 ॥

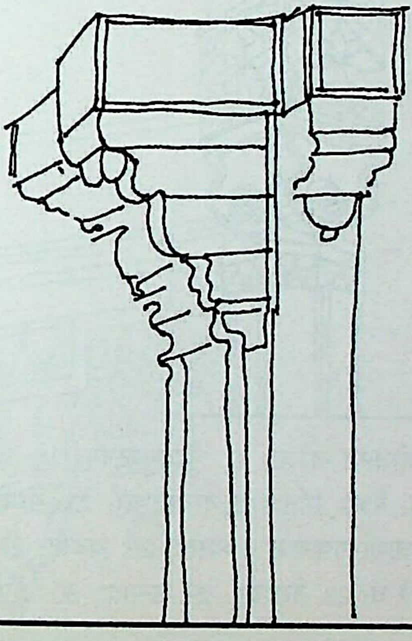

शर्मे रुस्वाई[16] से, जा छुपना निक़ाबे ख़ाक[17] में
ख़त्म है उल्फ़त[18] की तुझ पर पर्दः दारी[19] हाय हाय
ख़ाक में नामूसे पैमाने महब्बत[20] मिल गई
उठ गई दुनिया से राह-ओ-रस्मे यारी[21] हाय हाय
हाथ ही तेग़ आज़मा[22] का काम से जाता रहा
दिल प इक लगने न पाया ज़ख़्मे कारी[23] हाय हाय
किस तरह काटे कोई, शबहा-ए-तारे बर्शकाल[24]
है नज़र ख़ूकर्दः-ए-अख़्तरशुमारी[25] हाय हाय
गोश[26] महजूरे पयाम-ओ-चश्म महरूमे जमाल[27]
एक दिल, तिस पर यह नाउम्मीदवारी[28] हाय हाय
'अिश्क़ ने पकड़ा न था, ग़ालिब, अभी वह्शत[29] का रंग
रह गया, था दिल में जो कुछ ज़ौक़ेख़्वारी[30] हाय हाय

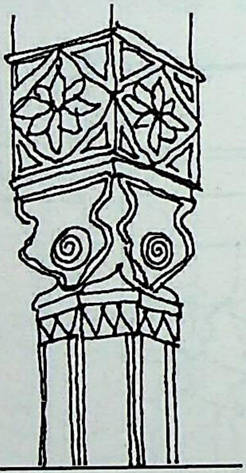

---

16. अयशोजन्या लज्जा; 17. मृदवगुण्ठनम्; 18. प्रेम; 19. गोपनम्; 20. प्रेमवचनस्यादरः; 21. मैत्र्या रीतिः; 22.तरवारिभृत्; 23. गम्भीरो व्रणः; 24. वर्षाकालस्य रात्रयः; 25. नक्षत्राणां गणनाया अभ्यस्ता; 26. श्रवसी; 27. सन्देशविप्रलब्धे (श्रवसी), सौन्दर्यवञ्चिते नेत्रे च; 28. नैराश्यम्; 29. उन्मादः; 30. अपमानस्याभिरुचिः।

अयशस्त्रपया मृत्स्नावगुण्ठनेनात्मगोपनं तावत् ।
प्रेमावरणस्य त्वयि हा हन्तैषा पराकाष्ठा ।। 7 ।।
मृत्सादभवत्प्रेमप्रतिश्रुतेः कोऽपि हन्त सम्मानः ।
मैत्र्या रीतिर्जगतो नष्टा हा हन्त जातेव ।। 8 ।।
हस्तस्तरवारिभृतस्तस्य व्यर्थत्वमाप्त एवेतः ।
व्रण एकः प्राणहरो हा हन्त न हृद्यजायत मे ।। 9 ।।
विधिना कश्चित् केन व्यतिगमयेत् प्रावृषस्तमिस्रा नु ।
दृष्टिस्तारकगणनाभ्यस्ता यस्यास्ति हा हन्त ।। 10 ।।
सन्देशविप्रलब्धे श्रवसी सौन्दर्यवञ्चिते नेत्रे ।
एकं हृदयं तदुपरि हा हन्तैतन्नु नैराश्यम् ।। 11 ।।
'ग़ालिब' न प्रणयो मेऽद्ययावदुन्मादभूमिमस्पृक्षत् ।
अपमानस्याभिरुचिर्लीना हृद्येव हा हन्त ।। 12 ।।

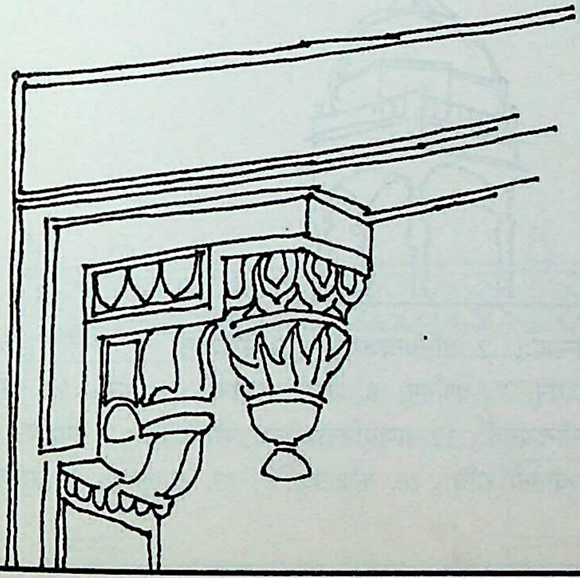

141

सर गश्तगी[1] में, 'आलमे हस्ती[2] से यास[3] है
तस्कीं[4] को दे नवेद,[5] कि मरने की आस है
लेता नहीं मेरे दिले आवारः[6] की ख़बर
अब तक वह जानता है, कि मेरे ही पास है
कीजे बयाँ सुरूरे तबे ग़म[8] कहाँ तलक
हर मू[9] मेरे बदन प ज़बाने सिपास[10] है
है वह गुरूरे हुस्न[11] से बेगानः-ए-वफ़ा[12]
हरचन्द[13] उसके पास दिले हक़ शनास[14] है
पी, जिस क़दर मिले, शबे मह्ताब[15] में शराब
इस बलग़मी मिज़ाज[16] को गर्मी ही रास[17] है
हर इक मकान[18] को है मकीं[19] से शरफ़,[20] असद
मजनूँ जो मर गया है, तो जंगल उदास है

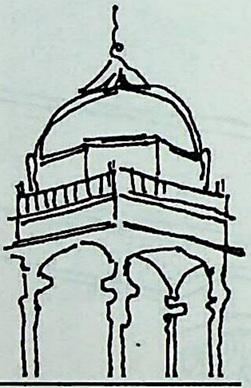

---

[1] प्रेमोन्मादः; [2] अस्तित्वजगत्; [3] नैराश्यम्; [4] सन्तोषः; [5] सुसमाचारः; [6] इत्वरं हृदयम्; [7] वर्णनम्; [8] शोकोत्तापानन्दः; [9] रोम; [10] धन्यवादकलिता जिह्वा; [11] सौन्दर्यगर्वः; [12] प्रणयनिर्वाहरीत्याऽपरिचितः; [13] यद्यपि; [14] सत्यमर्मज्ञं हृदयम्; [15] ज्यौत्स्नी रात्रिः; [16] कफ-प्रकृतिः; [17] अनुकूलः; [18] गृहम्ः; [19] गृही; [20] प्रतिष्ठा।

141

प्रेमोन्मादेऽस्तित्वाज्जगदाख्यादस्ति हन्त नैराश्यम्।
सन्तोषाय सुवार्ता सूच्या मृत्योरिहाशेति ।।1।।
हृद इत्वरस्य न स मे कुशलं प्रष्टुं समुत्सुकीभवति।
जानाति सोऽद्ययावत् तदस्ति पार्श्वे ममैवेति ।।2।।
शोकोत्तापानन्दो वर्णयितव्यो मया कियद् यावत्।
तस्य प्रशस्तिजिह्वा प्रत्येकं रोम मद्वपुषि ।।3।।
निर्वाहव्यवहारं जानाति न स स्वरूपगर्वेण।
यद्यपि हृदयं तिष्ठति तत्पार्श्वे सत्यमर्मज्ञम् ।।4।।
ज्यौत्स्न्यां निशि पिब मदिरां विधिना येनेह सोपलभ्येत।
अनुकूल एष तापः कफमूलप्रकृतिकस्य तव ।।5।।
गृहिणा'ऽसद' प्रतिष्ठा प्रत्येकं भवति नाम गृहकस्य।
'मजनू'र्मृत इति कृत्वाऽरण्यं विमनायमानमिव ।।6।।

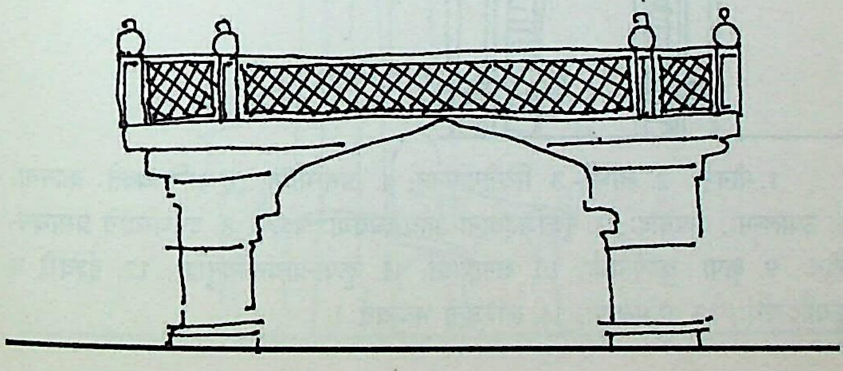

142

गर ख़ामुशी[1] से फ़ायदः[2], इख़्फ़ा-ए-हाल[3] है
ख़ुश हूँ, कि मेरी बात समझनी मुहाल[4] है
किसको सुनाऊँ हस्रते इज़हार[5] का गिला[6]
दिल फ़र्दे जम'-ओ-ख़र्चे ज़बाँहा-ए-लाल[7] है
किस पर्दे में है आइनः परदाज़[8], अय ख़ुदा
रहमत[9], कि 'उज़्रख़्वाह[10] लबे बेसवाल[11] है
है है, ख़ुदा न ख़्वास्तः[12] वह और दुश्मनी
अय शौक़,[13] मुनफ़'इल,[14] यह तुझे क्या ख़याल है

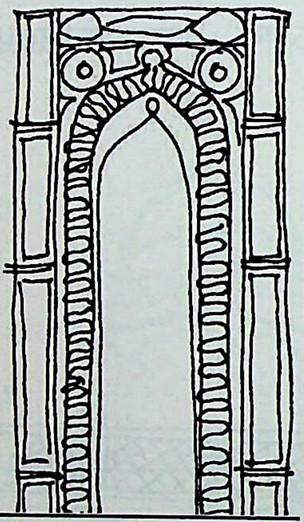

---

1. मौनम्; 2. लाभः; 3. स्थितेर्गोपनम्; 4. असम्भवम्; 5. अभिव्यक्तेः कामना; 6. उपालम्भः, अपवादः; 7. मूकजिह्वानां आय-व्यययोः पञ्जी; 8. दर्पणस्याग्रे प्रसाधन-लीनः; 9. कृपां कुर्वित्यर्थः; 10. क्षमाप्रार्थी; 11. कृपा-प्रार्थनाविमुखः; 12. ईश्वरो न कुर्यादित्यर्थः; 13. अभिलाषः; 14. लज्जितो भवेत्यर्थः।

142

मौनाश्रयणाद् यदि चेद् हृदयस्थितिगोपनं क्वचिल्लाभः ।
मुदितोऽस्मि यन्मदीया भणितय इह सर्वथाऽज्ञेयाः ।। 1 ।।
कम्प्रति निवेदयेयं स्वाभिव्यक्तिस्पृहापवादमहम् ।
आय-व्यययोः पञ्जी हृदयं मम मूकजिह्वानाम् ।। 2 ।।
दर्पणमादाय कृपावरणे कस्मिन् रतः स्वशृङ्गारे ।
ईश्वर ! गृहीतमौनो यदधर एष क्षमाप्रार्थी ।। 3 ।।
इदमीश्वरो न कुर्यात् क्व स तस्मिंश्च क्व हन्त शत्रुत्वम् ।
अभिलाष ! लज्जितो भव चिन्तितमेतत् त्वया किमहो ।। 4 ।।

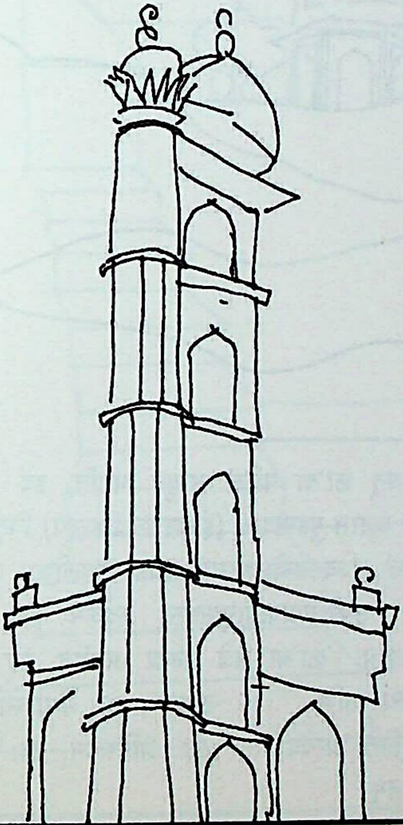

मिश्कीं[15] लिबासे का'बः, 'अली[16] के क़दम से जान
नाफ़े ज़मीन[17] है, न कि नाफ़े ग़ज़ाल[18] है
वहशत[19] प मेरी 'अर्सः-ए-आफ़ाक़[20] तंग था
दरिया[21] ज़मीन को 'अरक़े इन्फ़ि'आल[22] है
हस्ती[23] के मत फ़रेब[24] में आजाइयो, असद
'आलम[25] तमाम हल्क़ः-ए-दामे ख़याल[26] है

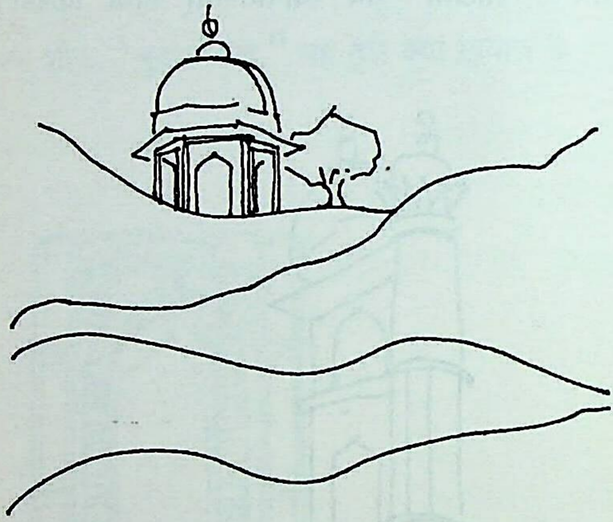

---

[15] कृष्णवसनम्, यत् का'बां परित आवृतं भवति, इदं 'गिलाफ़े 'का'बा' इत्युच्यते; [16] हज़रत-अली हज़रत-मुहम्मदस्य (ईश्वरसन्देशहरस्य) पितृव्य-पुत्र आसीत्। एके मुस्लिमसम्प्रदायानुगतास्तं 'ईश्वरसन्देशहरस्य' प्रथमः 'खलीफ़ा' इति मन्वते, अन्ये 'चतुर्थः खलीफा' इति। सूफ़ी-सम्प्रदायानुगतास्तु स्वक्रमं ह० अली-महाशयात् प्रस्तुवन्ति। ह० अली-महाशयः 'का'बा'-क्षेत्रे उत्पन्न आसीत्; [17] का'बा पृथिव्या नाभिरित्युच्यते; [18] मृगस्य नाभिः; [19] उन्मादः; [20] संसारस्य विस्तार इत्यर्थः; [21] समुद्रः; [22] त्रपाजनितः प्रस्वेदः; [23] अस्तित्वम्; [24] भ्रमः, इन्द्रजालम्; [25] संसारः; [26] कल्पनाजालम्।

'का'बा'-सुकृष्णवासोऽ'ली'- कारुण्यप्रतापमवगच्छ।
'का'बा' भुवो हि नाभिर्न कृष्णसारस्य नाभिरयम्॥5॥
विश्वस्य नु विस्तारः सङ्कीर्णोऽभूदहो ममोन्मादे।
भूमेः कृते समुद्रः प्रस्वेदोऽभूत् त्रपाजनितः॥6॥
अस्तित्वमिन्द्रजालं मा त्व'मसद' भूः प्रभावितोऽनेन।
सम्पूर्णः संसारः सम्प्रततं कल्पनाजालम्॥7॥

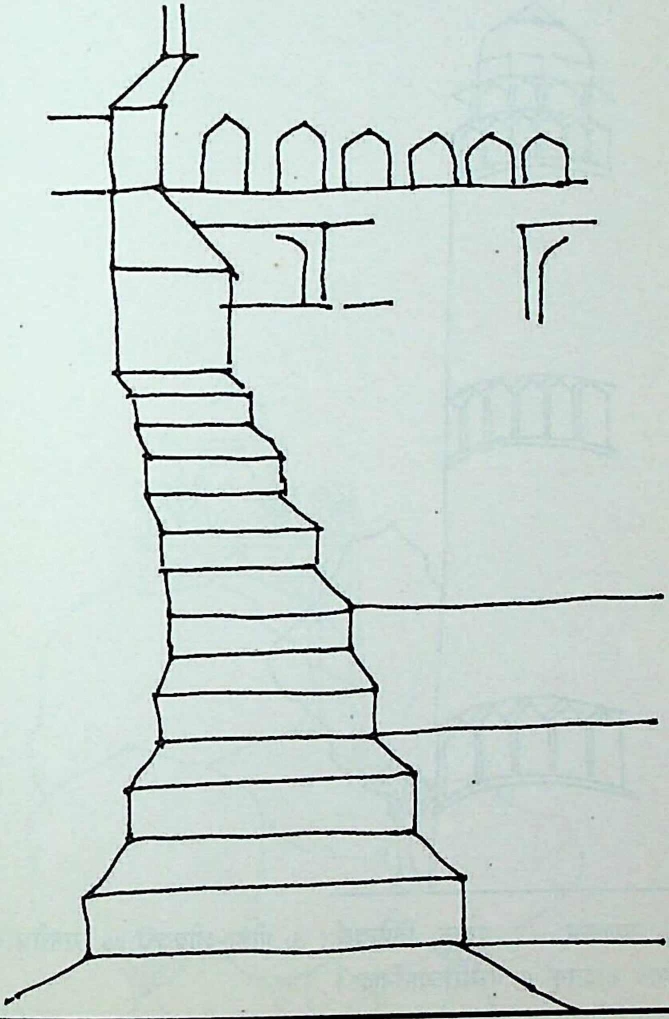

143

तुम अपने शिकवे[1] की बातें, न खोद खोद के पूछो
हज़र करो[2] मेरे दिल से, कि इसमें आग दबी है
दिला, यह दर्द-ओ-अलम[3] भी तो मुग़तनम[4] है, कि आख़िर
न गिरियः-ए-सहरी[5] है, न आहे नीमशबी[6] है

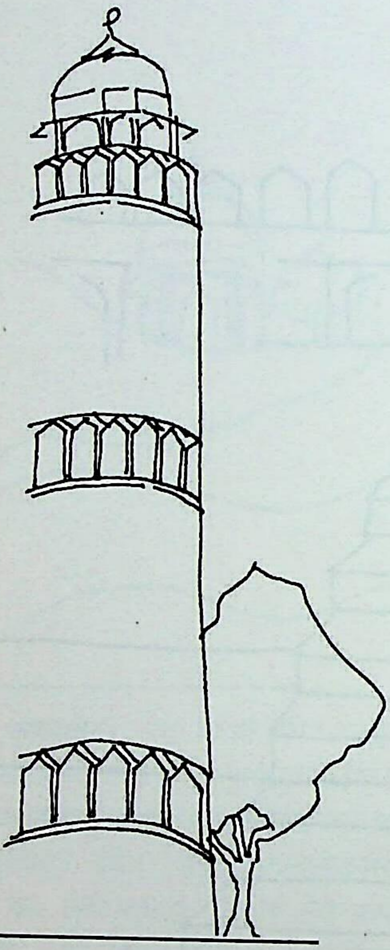

---

1. उपालम्भः; 2. पृथक् तिष्ठेत्यर्थः; 3. पीडा शोकश्च; 4. सन्तोषस्य विषयः; 5. प्रभातस्य रुदितम्; 6. मध्यरात्र्यार्तनादः।

143

स्वोपालम्भमयीं त्वं वार्तां मा पृच्छ हन्त हठपूर्वम्।
मम हृदयात् तिष्ठ पृथग् विनिविष्टः पावको ह्यस्मिन्॥1॥
पीडाशोकाभ्यामयि हृत्! सन्तोषं त्वमावह, ह्यन्ते।
न स्यात् प्रभातरुदितं न मध्यरात्र्यार्तनादश्च॥2॥

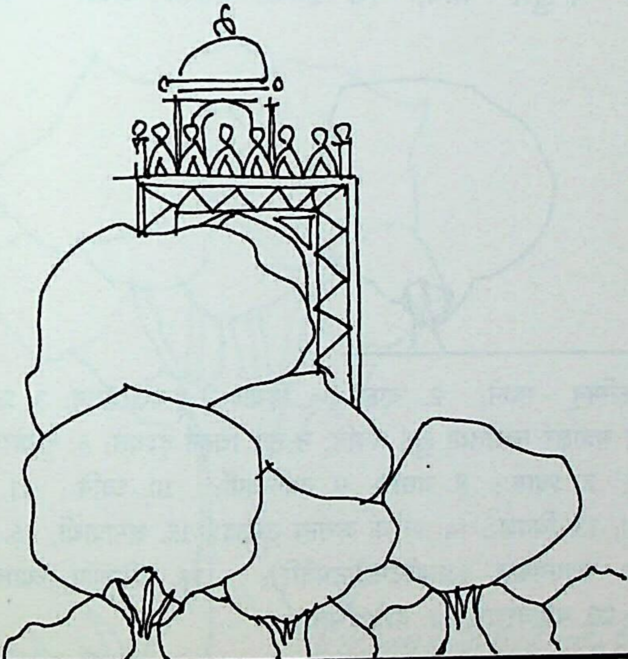

144

एक जा[1] हर्फ़े वफ़ा[2] लिक्खा था, सो भी मिट गया
ज़ाहिरा[3] काग़ज़ तेरे ख़त का ग़लत बरदार[4] था

जी जले ज़ौक़े फ़ना[5] की नातमामी[6] पर न क्यों
हम नहीं जलते, नफ़स[7] हरचन्द[8] आतशबार[9] है

आग से, पानी में बुझते वक़्त, उठती है सदा[10]
हर कोई दरमाँदगी[11] में नाले[12] से नाचार[13] है

है वही बदमस्ति-ए-हर ज़र्र:[14] का ख़ुद 'उज़्रख़्वाह[15]
जिसके जल्वे[16] से ज़मीं ता आ आसमाँ[17] सरशार[18] है

मुझसे मत कह, तू हमें कहता था अपनी ज़िन्दगी
ज़िन्दगी से भी मेरा जी इन दिनों बेज़ार[19] है

आँख की तस्वीर सरनामे[20] प खेंची है, कि ता
तुझ प खुल जावे, कि इसको हसरते दीदार[21] है

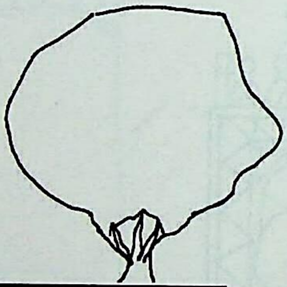

---

1. एकस्मिन् स्थाने; 2. 'वफ़ा' (= 'निर्वाहः') इत्यक्षरद्वयम्; 3. प्रकटतया; 4. तत् कर्गदं यत्राक्षरं सरलतया लुप्तं भवति, न तत्र चिह्नं दृश्यते; 5. मृत्योरभिलाषः; 6. अपूर्णत्वम्; 7. श्वासः; 8. यद्यपि; 9. अग्निवर्षी; 10. ध्वनिः; 11. क्लेशः; 12. आर्तनादः; 13. विवशः; 14. प्रत्येकं कणस्य उन्मादः; 15. क्षमाप्रार्थी; 16. कान्तिः; 17. आ भूमेः आगगनात् (आकीटमाकैटभवैरि); 18. परिपूर्णम्, व्याप्तमित्यर्थः; 19. विरक्तम्; 20. पत्रावरणम्; 21. दर्शनाभिलाषः।

144

एकत आसील्लिखितं 'निर्वाह' इति प्रलुप्तमथ तदपि।
अक्षरविलोपशीलं स्पष्टं तव पत्रकर्गदकम्।।1।।
मृत्योरभिलाषस्यापूर्णत्वे नः कथन्न हृत् प्रदहेत्।
न वयमिह प्रदहामो यदपि श्वासोऽग्निवर्षी नः।।2।।
प्रशमनसमये सलिले वह्नेरुत्पद्यते ध्वनिः कश्चित्।
प्रत्येकमार्तनादे विवशः क्लेशे सतीह जनः।।3।।
उन्मादे प्रत्येकं कणस्य स खलु स्वयं क्षमाप्रार्थी।
आ भूमेरागगनाद् यत्कान्त्या व्याप्तमिह सर्वम्।।4।।
मा मा वद त्वमिह यत् "त्वं निजकं जीवनं वदन्नासीः।"
जीवनतोऽपि विरक्तं दिवसेष्वेतेषु हृदयं मे।।5।।
पत्रावरणस्योपरि चित्रं नेत्रस्य तावदालिखितम्।
अवगच्छेर्येन त्वं दिदृक्षुरास्ते यदेष इति।।6।।

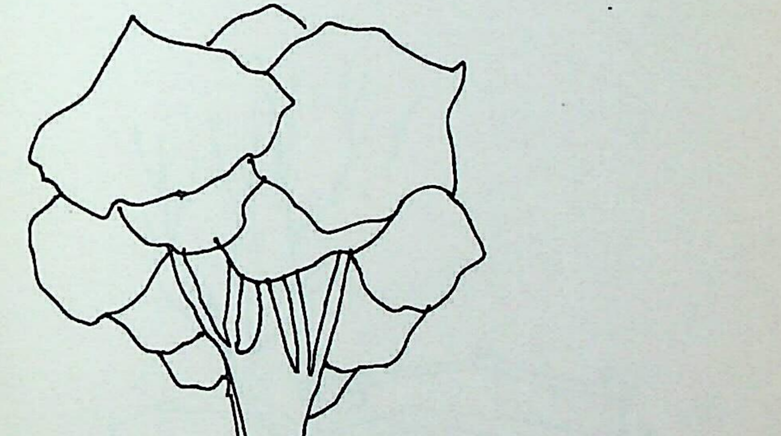

145

पीनस[1] में गुज़रते हैं जो कूचे[2] से वह मेरे
कंधा भी कहारों[3] को बदलने नहीं देते

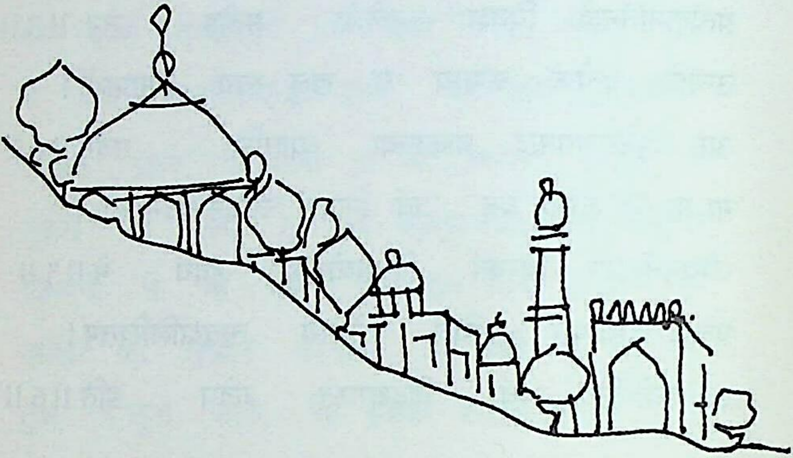

---

[1] शिविका; [2] रथ्या; [3] शिविकावाहाः।

145

शिबिकामधिरूढः सन् स यदा मम रथ्ययाऽन्यतो याति।
शिबिकावाहान् स्कन्धं परिवर्तयितुं न सम्मनुते ॥ 1 ॥

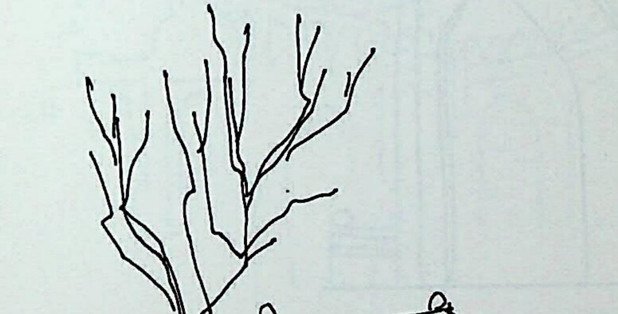

146

मेरी हस्ती[1] फ़ज़ा-ए-हैरत आबादे तमन्ना[2] है
जिसे कहते हैं नालः[3] वह इसी 'आलम[4] का 'अन्क़ा[5] है
ख़ज़ाँ[6] क्या, फ़स्ले गुल[7] कहते हैं किसको, कोई मौसम[8] हो
वही हम हैं, क़फ़स[9] है, और मातम[10] बाल-ओ-पर[11] का है
वफ़ा-ए-दिलबराँ[12] है इत्तिफ़ाक़ी[13], वर्नः, अय हम्दम[14]
असर[15] फ़रियादे दिल्हा-ए-हज़ीं[16] का, किसने देखा है
न लाई शोख़ि-ए-अन्देशः[17] ताबे रंजे नौमीदी[18]
कफ़े अफ़सोस[19] मलना अह्दे तजदीदे तमन्ना[20] है

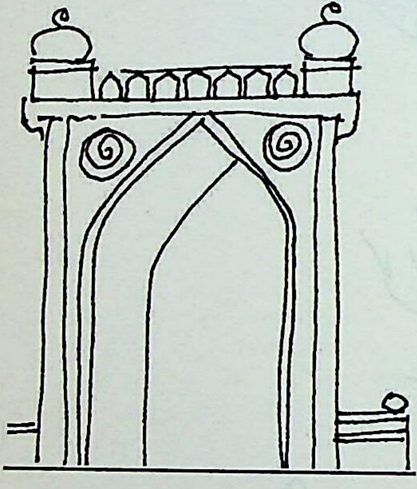

---

1. अस्तित्वम्; 2. आकाङ्क्षाश्चर्यमयक्षेत्रम्; 3. आर्तनादः; 4. विश्वम्; 5. अनस्तित्वस्य प्रतीकरूप एकः काल्पनिकः खगः; 6. हेमन्तः; 7. वसन्तः; 8. ऋतुः; 9. पञ्जरम्; 10. शोकः; 11. बालानां पक्षत्योश्च; 12. हृदयहराणां निर्वाहः; 13. आकस्मिकः, अघटितघटना; 14. सुहृत्; 15. प्रभावः; 16. क्लेशग्रस्तहृदयानामाह्वानम्; 17. विचाराणां भङ्गिमा; 18. नैराश्यदुःखस्य सहनम्; 19. सखेदं करमर्दनम्; 20. कामनायाः पुनरुज्जीवनस्य प्रतिज्ञा।

146

आकाङ्क्षाश्चर्यमयक्षेत्रमिदं मामकीनमस्तित्वम्।
‘अन्क़ा’-खगः स जगतोऽस्यैव य इत आर्तनाद इति ॥ 1 ॥
को हेमन्तः को वा वसन्त इत्युच्यतामृतुः कोऽपि।
वयमिह त एव पञ्जरमथ च कृते पक्षयोः शोकः ॥ 2 ॥
हृदयहृतां निर्वाहोऽस्त्यघटितघटनेह हे सुहृन्नो चेत्।
क्लिष्टहृदाह्वानस्य प्रभाव इह केन वा दृष्टः ॥ 3 ॥
न विचारभङ्गिमा मे दुःखं नैराश्यजं समसहिष्ट।
तर्षपुनर्भववचनं सखेदकरमर्दनं नाम ॥ 4 ॥

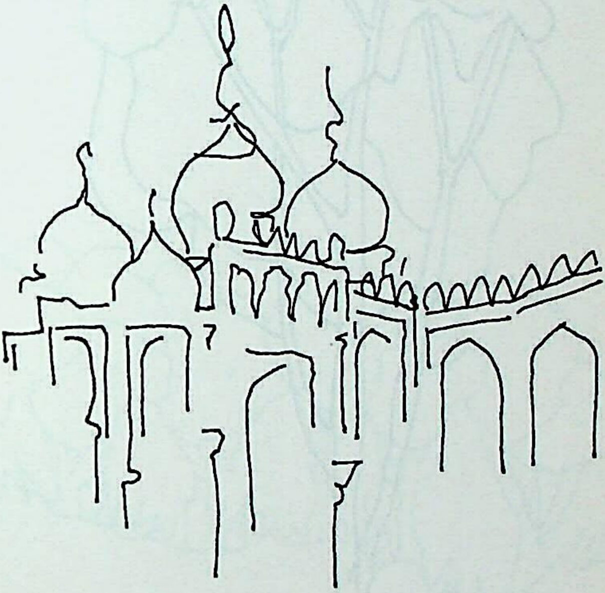

147

रह्म कर[1] ज़ालिम[2], कि क्या बूदे चराग़े कुश्तः[3] है
नब्जे बीमारे वफ़ा,[4] दूदे चराग़े कुश्तः[5] है
दिल्लगी[6] की आरज़ू[7], बेचैन[8] रखती है हमें
वर्नः याँ बेरौनक़ी[9], सूदे चराग़े कुश्तः[10] है

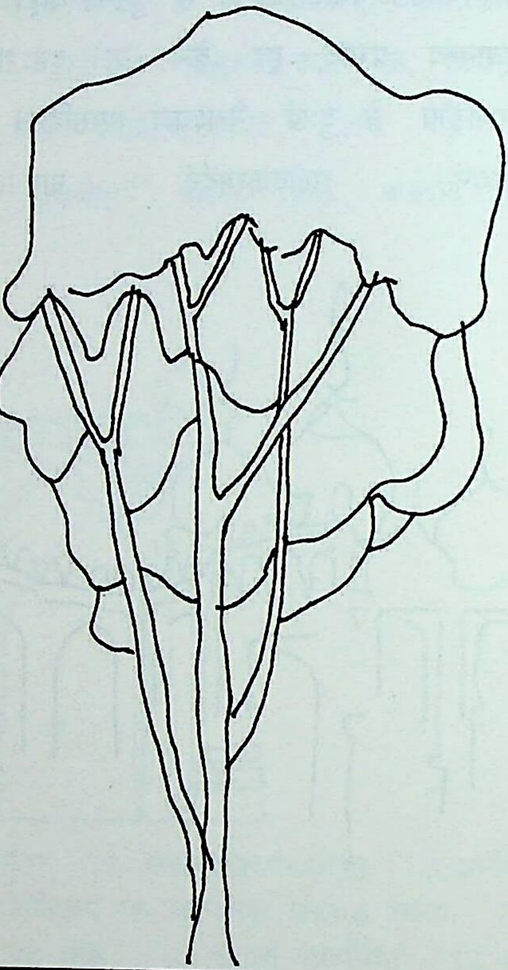

---

1. दयस्व; 2. निर्दयः; 3. निर्वाणस्य दीपस्यास्तित्वम्; 4. प्रेम-रुग्णस्य नाडी; 5. निर्वाणदीपधूमः; 6. हृदयासक्तिः; 7. अभिलाषः; 8. विकलः; 9. प्रकाशदारिद्र्यम्; 10. निर्वाणदीपस्य लाभः।

147

निर्वाणस्यास्तित्वं निर्दय ! दीपस्य किं दयस्वेह ।
निर्वाणदीपधूमो नाडी त्वत्प्रेमरुग्णस्य ॥ 1 ॥
हृदयासक्त्यभिलाषोऽस्माकं वैकल्यहेतुरेकोऽस्ति ।
निर्वाणदीपलाभोऽन्यथाऽत्र यद् द्योतदारिद्र्यम् ॥ 2 ॥

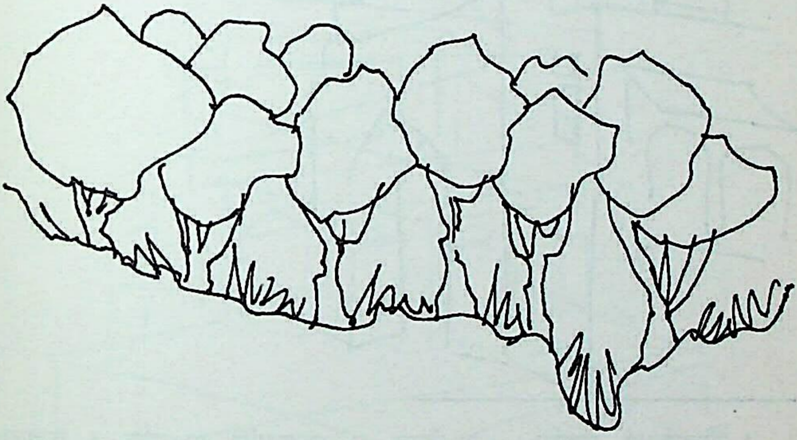

148

चश्मे ख़ूबाँ[1] ख़ामुशी[2] में भी नवा पर्दाज़[3] है
सुर्मः[4], तू कहवे, कि दूदे शो'लः-ए-आवाज़[5] है

पैकरे 'अुश्शाक़[6], साज़े ताले'-ए-नासाज़[7] है
नालः[8] गोया गर्दिशे सय्यारः[9] की आवाज़ है

दस्तगाहे दीदः-ए-ख़ूँख़्वारे मजनूँ[10] देखना
यक बयाबाँ[11] जल्वः-ए-गुल[12] फ़र्शे पा अन्दाज़[13] है

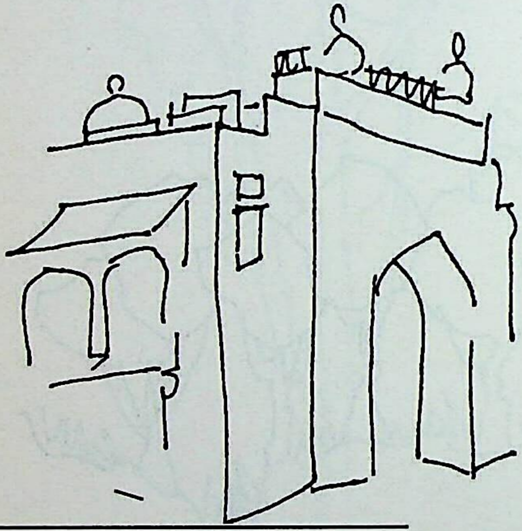

---

1. सौन्दर्यजुषां नेत्राणि; 2. मौनम्; 3. गानपराणि, मुखराणि; 4. कज्जलम्; 5. वाग्ज्योतिर्धूमः; 6. प्रणयिनां शरीराणि; 7. दौर्भाग्यग्रस्तं वाद्यम्; 8. आर्तनादः; 9. नक्षत्रचक्रस्य भ्रमणम्; 10. 'मजनो'रस्रवर्षिणोर्नेत्रयोः प्रभावः; 11. अरण्यम्; 12. पुष्पाणां शोभा; 13. पदधूलिशोधनार्थः पट्टः।

148

मुखराण्यक्षीणि भृशं कान्तिमतां भान्ति हन्त मौनेऽपि।
वाग्ज्योतिर्धूम इति स्फुटतां स्वं कज्जलं नयति ।। 1 ।।
इह दौर्भाग्यग्रस्तं प्रणयवतां किमपि मूर्तयो वाद्यम्।
आर्तस्वरश्च तेषां भ्रमणं नक्षत्रचक्रस्य ।। 2 ।।
'मजनो'रेनं पश्य प्रतापमस्त्रप्रवर्षिणोरक्ष्णोः।
सुममयमेकमरण्यं पट्टः पदधूलिशोधार्थः ।। 3 ।।

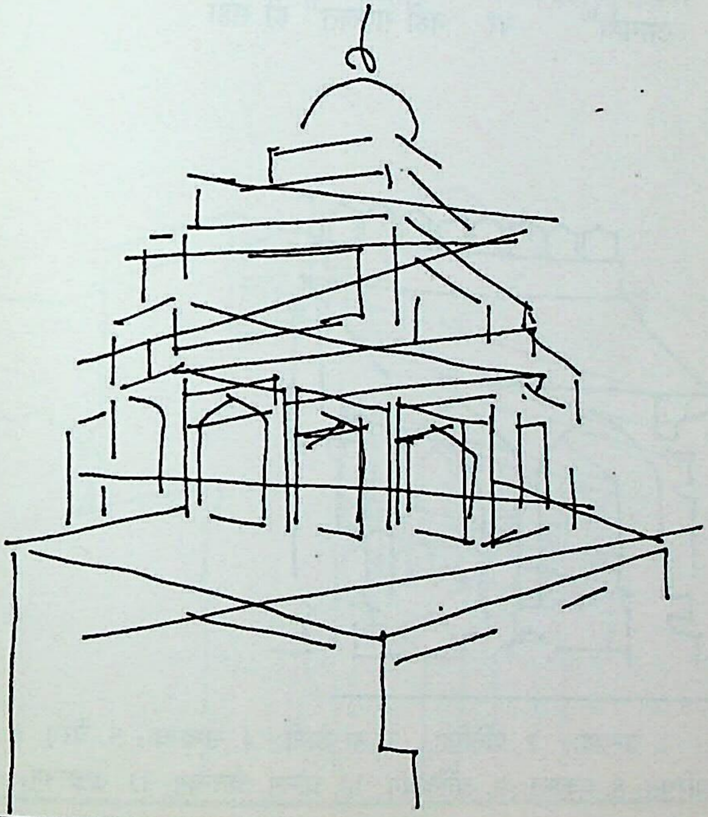

149

'अिश्क़ मुझको नहीं, वहशत[1] ही सही
मेरी वहशत, तेरी शोहरत[2] ही सही
क़त'अ कीजे न[3] त'अल्लुक़[4] हम से
कुछ नहीं है, तो 'अदावत[5] ही सही
मेरे होने में है क्या रुस्वाई[6]
अय, वह मज्लिस[7] नहीं, ख़ल्वत[8] ही सही
हम भी दुश्मन तो नहीं हैं अपने
ग़ैर से तुझ को महब्बत ही सही
अपनी हस्ती[9] ही से हो, जो कुछ हो
आगही[10] गर नहीं ग़फ़लत[11] ही सही

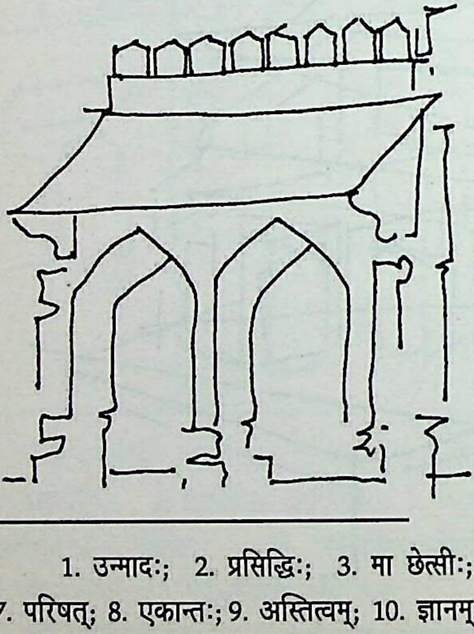

---

1. उन्मादः; 2. प्रसिद्धिः; 3. मा छेत्सीः; 4. सम्बन्धः; 5. वैरम्; 6. अपवादः; 7. परिषत्; 8. एकान्तः; 9. अस्तित्वम्; 10. ज्ञानम्, चैतन्यम्; 11. अज्ञानम्;

149

कामं मयि न प्रणयः, स हन्त नामास्तु कश्चिदुन्मादः।
उन्मादो मम सुतरां प्रसीद, जगति, प्रसिद्धिस्ते ॥ 1 ॥
सम्बन्धं मा छेत्सीः प्रवर्धमानं नु तावदस्माभिः।
अथ चेन्न स्यात् किञ्चित् प्रवर्तयन् स्याः स्ववैरमपि ॥ 2 ॥
इह कस्तवापवादः सम्मिलिते स्यान्मयि त्वया सार्धम्।
अयि नास्तु काऽपि परिषत् स कश्चिदेकान्त एवास्तु ॥ 3 ॥
आत्मन एव न वयमप्यरातयो हन्त तावदेते स्मः।
प्रणयोऽस्ति तावकीनः कश्चिद् यदरातिमुपलक्ष्य ॥ 4 ॥
ज्ञानादेव स्वस्यास्तित्वस्य स्यादितो नु यत्किञ्चित्।
ज्ञानं जायेत न चेदज्ञानं तावदेवास्तु ॥ 5 ॥

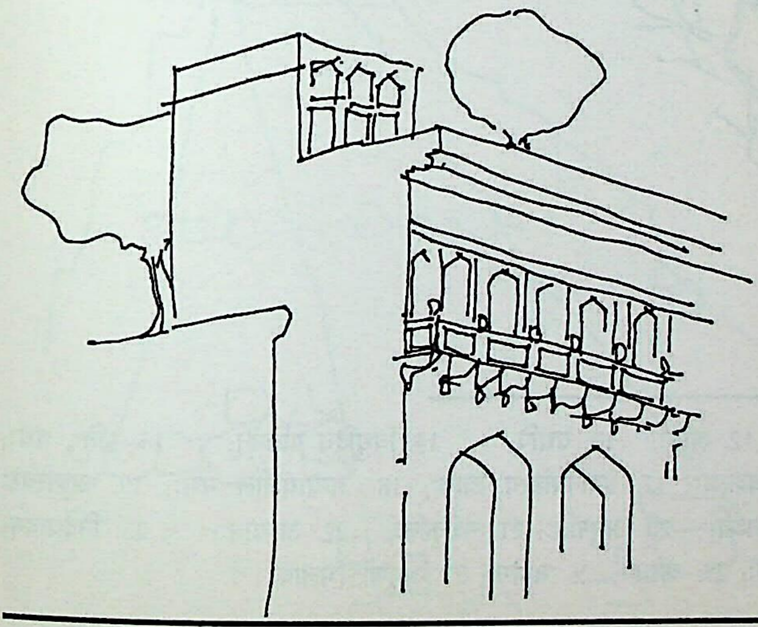

’उम्र[12] हरचन्द[13] कि है बर्क़ ख़िराम[14]
दिल के ख़ूँ[15] करने की फ़ुर्सत[16] ही सही
हम कोई तर्के वफ़ा[17] करते हैं
न सही, ’अिश्क़, मुसीबत ही सही
कुछ तो दे, अय फ़लक़े ना-इंसाफ़[18]
आह-ओ-फ़र्याद[19] की रुख़सत[20] ही सही
हम भी तस्लीम[21] की ख़ू[22] डालेंगे
बेनियाज़ी[23] तेरी ’आदत ही सही
यार[24] से छेड़[25] चली जाये, असद
गर नहीं वस्ल[26], तो हसरत[27] ही सही

---

12. आयुः; 13. यद्यपि; 14. विद्युदिव गतिमत्; 15. हतिः, वधः; 16. अवकाशः; 17. प्रेमनिर्वाहस्य त्यागः; 18. अन्यायशीलं नभः; 19. आर्तस्वरः आह्वानञ्च; 20. अनुमतिः; 21. स्वीकृतिः; 22. अभ्यासः; 23. निर्दयत्वम्; 24. प्रियः; 25. कलहः; 26. संयोगः; 27. अपूर्णोऽभिलाषः।

आयुर्यद्यपि विद्युद्वेगादिव धावदेतदाभाति।
तावानवकाशः खलु तथापि हृदयस्य हतयेऽलम्॥6॥
प्रेम्णो निर्वाहस्य त्यागं तावद् वयन्नु किं कुर्मः।
प्रणयो न कश्चिदास्तां विपदेवास्तां प्रकाममिह॥7॥
अन्यायशील गगन ! त्वमर्पयैतर्हि हन्त यत्किञ्चित्।
अनुमतिमाह्वानस्याथवाऽऽर्तनादस्य काममिह॥8॥
स्वीकृतिमेवाभ्यस्तां वयमप्येते भृशं विधास्यामः।
तव निर्दयत्वमस्तु स्वभाव एवेह चेत् कामम्॥9॥
'असद' प्रियेण सार्धं प्रणयद्वन्द्वन्नु सम्प्रवर्तेत।
कामं संयोगो वा काममपूर्णोऽस्तु कामो वा॥10॥

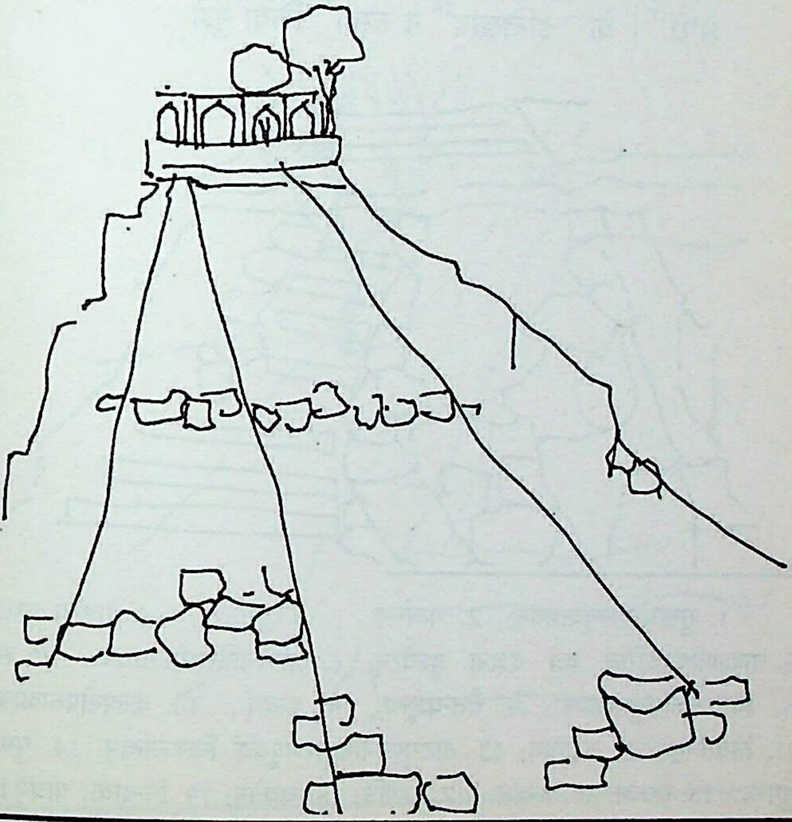

150

है आर्मीदगी[1] में निकोहिश[2] बजा[3] मुझे
सुब्हे वतन[4] है ख़न्दः-ए-दन्दाँनुमा[5] मुझे
ढूंडे है उस मुग़न्नि-ए-आतश नफ़स[6] को जी
जिसकी सदा[7] हो जल्वः-ए-बर्क़े फ़ना[8] मुझे
मस्तानः[9] तय करूँ हूँ रहे वादि-ए-ख़याल[10]
ता बाज़गश्त[11] से न रहे मुद्द'आ[12] मुझे
करता है बसकि बाग़ में तू बेहिजाबियाँ[13]
आने लगी है नकहते गुल[14] से हया[15] मुझे
खुलता किसी प क्यों, मेरे दिल का मु'आमलः[16]
शे'रों[17] के इन्तिख़ाब[18] ने रुस्वा[19] किया मुझे

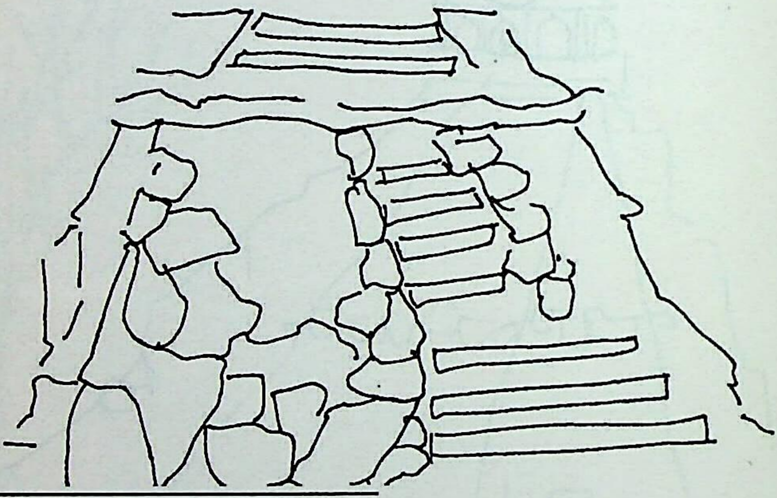

---

1. सुखभोगसम्पृक्तत्वम्; 2. भर्त्सनम्; 3. उचितम्; 4. राष्ट्रस्य प्रभातम्; 5. तादृशमीषद्धसितं यत्र दशना दृश्येरन्; 6. अग्निवर्षिस्वरो गायनः; 7. स्वरः; 8. विनाशकविद्युत्समप्रभः; 9. चैतन्यशून्यः, मत्त इत्यर्थः; 10. कल्पनोपत्यकामार्गः; 11. निवर्तनम्; 12. उद्देश्यम्; 13. अवगुण्ठननिवारणपूर्वकं निलर्ज्जत्वम्; 14. पुष्पाणां सुगन्धः; 15. लज्जा; 16. स्थितिः; 17. पद्यानि; 18. चयनम्; 19. निन्दायाः पात्रम्।

150

भर्त्सनमस्त्यत्युचितं सुखभोगाप्लाविताय मह्यमिह।
संदृष्टदशनमीषद्धसितं रात्रप्रभातं मे ॥ 1 ॥
तं प्रज्वलनसमर्थस्वरं गवेषयति गायनं चेतः।
यस्य स्वरो विनाशकविद्युत्सदृशप्रभो मह्यम् ॥ 2 ॥
कल्पनयोपत्यकया मत्तः प्रचलामि कोऽपि सृत्याऽहम्।
न निवर्तनमिति मामकमुद्देश्यं स्यादितः किञ्चित् ॥ 3 ॥
उद्याने यत् स्वैरं विहरस्यवगुण्ठनं निवार्य त्वम्।
सुमनोगन्धस्य पुरोऽनुभवन्नेषोऽस्म्यहं लज्जाम् ॥ 4 ॥
मम हृदयस्य स्थितिमिह कश्चित्कथमेव हन्त जानीयात्।
पद्यानां बत चयनं निन्दायाः पात्रमकरोन्माम् ॥ 5 ॥

151

ज़िन्दगी अपनी जब इस शक्ल से गुज़री, ग़ालिब
हम भी क्या याद करेंगे, कि ख़ुदा रखते थे

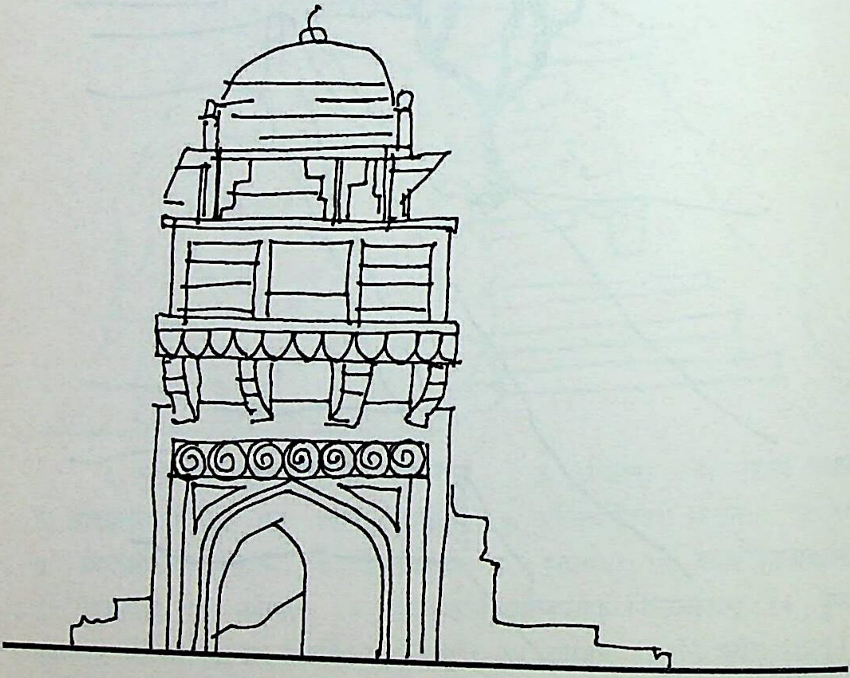

151

रीत्याऽनया जगत्यां 'ग़ालिब' यातं यदा स्वमस्तित्वम्।
वयमपि किं स्मर्ता स्म प्रभुरत्रास्माकमप्यासीत्॥ 1॥

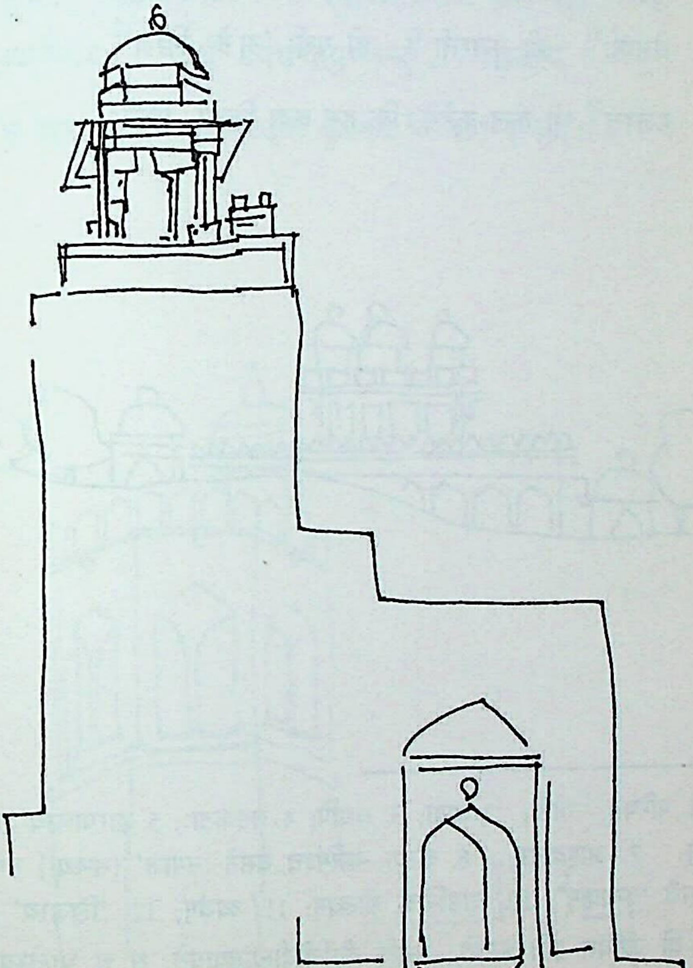

152

उस बज़्म[1] में, मुझे नहीं बनती हया[2] किये
बैठा रहा, अगर्चेः[3] इशारे[4] हुआ किये
दिल ही तो है, सियासते दर्बाँ[5] से डर गया
मैं, और जाऊँ दर[6] से तेरे, बिन सदा[7] किये
रखता फिरूँ हूँ, खिर्क़ः-ओ-सज्जादः[8] रह्ने मै[9]
मुद्दत हुई है, दा'वते आब-ओ-हवा[10] किये
बेसर्फ़ः[11] ही गुज़रती है, हो गर्चेः 'अुम्रे ख़िज़्र[12]
हज़रत[13] भी कल कहेंगे, कि हम क्या किया किये

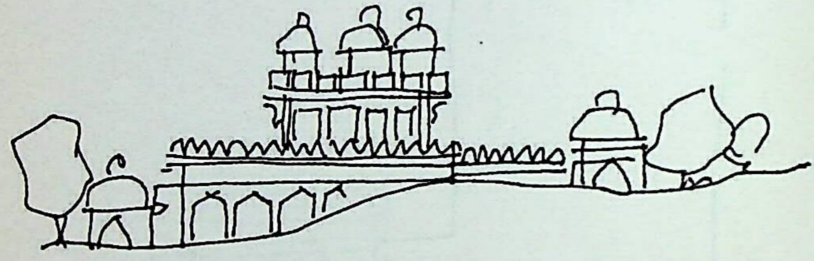

---

1. परिषत्, गोष्ठी; 2. लज्जा; 3. यद्यपि; 4. सङ्केताः; 5. द्वारपालस्य शासनम्; 6. द्वारम्; 7. आह्वानम्; 8. कन्था, यस्मिंश्च वसने 'नमाज' (सन्ध्या) सम्पाद्यते; 9. मदिरायै 'बन्धकम्'; 10. वासन्तिकं सौख्यम्; 11. व्यर्थम्; 12. 'ख़िज़्रस्य' आयुः, 'ख़िज़्र', यो जीवित इति मन्यते, अर्थाद् दीर्घजीवीत्याख्यायते, स च भ्रान्तेभ्यः मार्गं दर्शयति; 13. महाशयः; ।

152

तस्यां परिषदि शक्यं न मया भवितुं तथा सलज्जेन।
स्थित आसमेष यदपि प्रावर्तन्तैव सङ्केताः ।। 1 ।।
हृदयं त्वेतदजायत यद् भीतं द्वाःस्थशासनादेवम्।
द्वारात्तवान्यथाऽहं गच्छेयं रे विनाऽऽह्वानम् ।। 2 ।।
कन्थां सन्ध्यावसनं बन्धकतामानयं सु-मदिरायै।
सुबहोः कालाल्लब्धं न मया वासन्तिकं सौख्यम् ।। 3 ।।
व्यत्येतीह व्यर्थं यद्यप्यायुर्भवेन्नु 'ख़िज़्रस्य'।
स महाशयोऽपि कथयेच्छ्वः कृतमथ किं कृतन्नु मया ।। 4 ।।

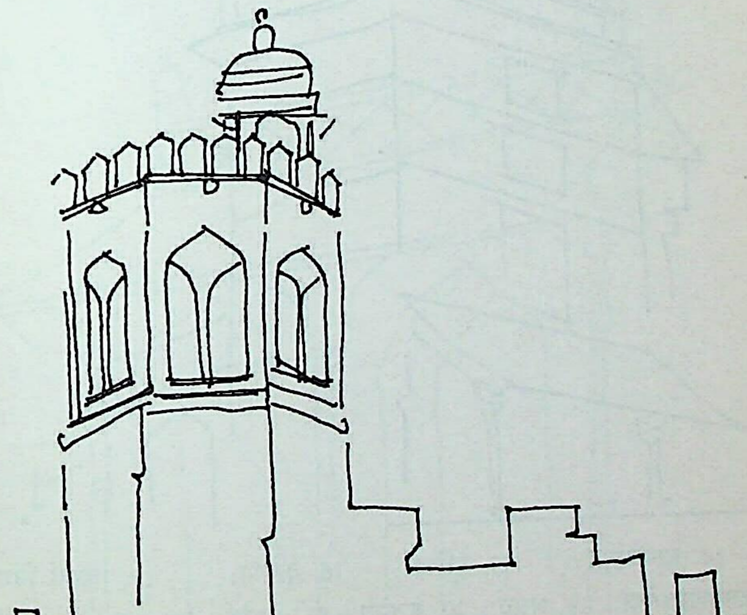

मक़दूर[14] हो तो ख़ाक[15] से पूछूँ कि, अय लईम[16]
तू ने वह गंजहा-ए-गिराँमायः[17] क्या किये
किस रोज़ तुहमतें[18] न तराशा किये 'अदू[19]
किस दिन हमारे सर प न आरे[20] चला किये
सोहबत[21] में ग़ैर[22] की, न पड़ी हो कहीं यह ख़ू[23]
देने लगा है बोसः[24] बिग़ैर इल्तिजा[25] किये
ज़िद[26] की है और बात, मगर ख़ू बुरी नहीं
भूले से उसने सैकड़ों वा'दे वफ़ा[27] किये
ग़ालिब, तुम्हीं कहो, कि मिलेगा जवाब क्या
माना कि तुम कहा किये और वह सुना किये

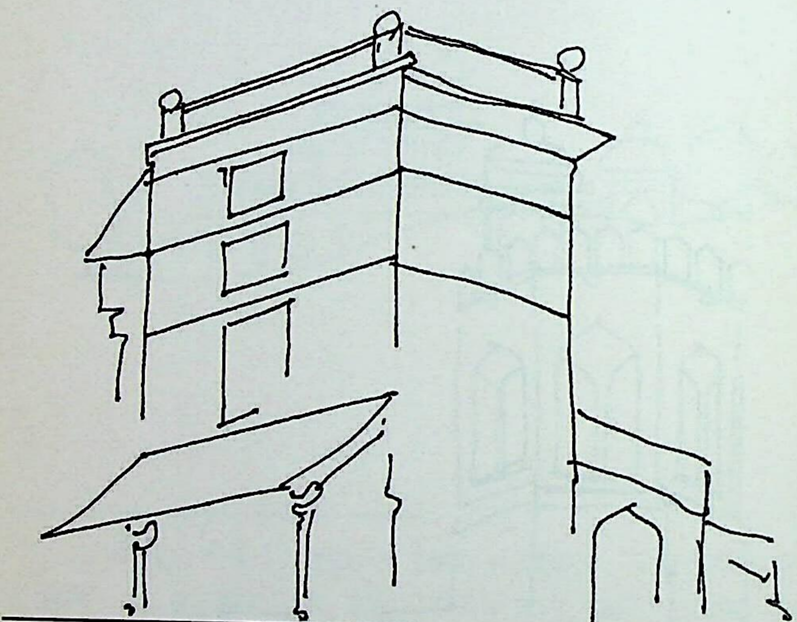

---

14. सामर्थ्यम्; 15. मृत्तिका; 16. कृपणा; 17. महार्हा निधयः; 18. दोषाणामारोपाः; 19. शत्रवः; 20. क्रकचाः; 21. सम्पर्कः; 22. शत्रुः; 23. प्रकृतिः, स्वभावः; 24. चुम्बनम्; 25. अभ्यर्थना; 26. हठः; 27. वचनानां निर्वाहः।

सामर्थ्यञ्चेन्मृत्स्नां पृच्छेयं यन्नु हन्त रे कृपणे।
तेषां त्वया नु किं कृतमितो निधीनां महार्हाणाम्॥5॥
आरोपिता, न दोषाः शत्रुभिरस्मासु वासरे कस्मिन्।
क्रकचाः शिरःसु चलिताः कस्मिन् दिवसे च नास्माकम्॥6॥
सम्पर्कतो रिपोः स्यात् क्वचिन्न जनितः स्वभाव इह तस्य।
याच्ञां विनैव चुम्बनमुपहर्तुं प्रस्तुतो भवति॥7॥
भिन्ना हठस्य वार्ता प्रकृतिस्तु न हन्त काऽपि वचनीया।
विस्मृत्या तेन कृतो वचनशतस्यापि निर्वाहः॥8॥
कथय त्वमेव 'ग़ालिब' किमुत्तरं तत्र नाम लभ्येत।
कामं त्वयोक्तमेवं श्रुतञ्च तेनेह बाढमहो॥9॥

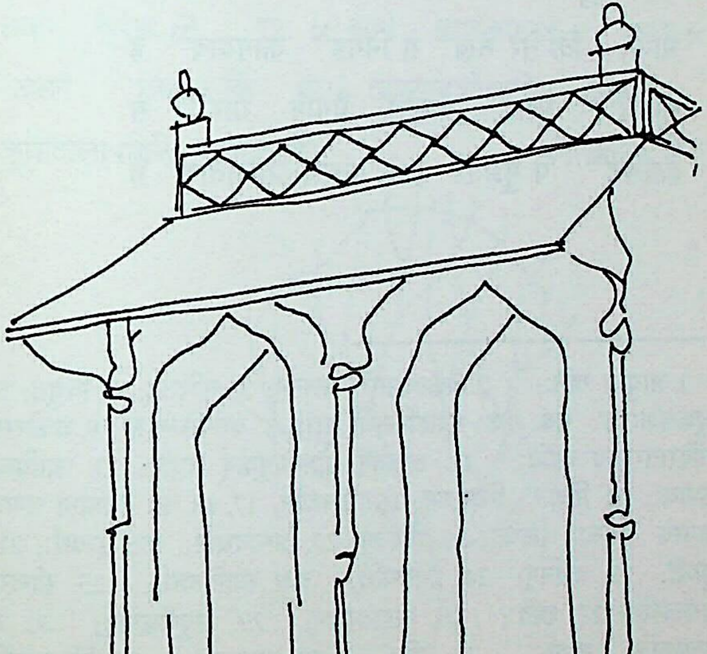

153

रफ़्तारे ’अुम्र[1], क़त’-ए-रहे इज़्तिराब[2] है
इस साल के हिसाब[3] को, बर्क़[4] आफ़्ताब[5] है
मीना-ए-मै[6] है सर्व[7], नशाते बहार[8] से
बाले तदर्व[9] जल्वः-ए-मौजे शराब[10] है
ज़ख़्मी[11] हुआ है पाश्नः[12] पा-ए-सबात[13] का
ने भागने की गौं[14], न इक़ामत[15] की ताब[16] है
जादादे बादः[17] नोशि-ए-रिन्दाँ[18] है शश जिहत[19]
ग़ाफ़िल[20] गुमाँ[21] करे है, कि गेती[22] ख़राब है
नज़्ज़ारः[23] क्या हरीफ़[24] हो, उस बर्क़े हुस्न[25] का
जोशे बहार[26], जल्वे[27] को जिसके निक़ाब[28] है
मैं नामुराद[29] दिल की तसल्ली[30] को क्या करूँ
माना, कि तेरे रुख़[31] से निगह[32] कामयाब[33] है
गुज़रा[34] असद, मसर्रते पैग़ामे यार[35] से
क़ासिद[36] प मुझको रश्के सवाल-ओ-जवाब[37] है

1.आयुषो गतिः; 2. वैकल्यमार्गे चलनम्; 3. गणितम्; 4. विद्युत्; 5. सूर्यः; 6. मधुकलशः; 7. ‘सर्व’ एकः सदाहरिन्मयो वृक्षः; 8. वसन्तोल्लासः; 9. चकोरस्य पक्षः; 10. मदिरातरङ्गस्य च्छविः; 11. आहतम्; 12. एडूकम् (एड़ी); 13. स्थायित्वचरणः; 14. उपायः; 15. स्थितिः; स्थिरत्वम्; 16. सामर्थ्यम्; 17, 18. सा मद्यपानां सम्पत्, यया मद्यपानस्य प्रबन्धः क्रियेत; 19. विश्वम्; 20. असावधानः, बाल इत्यर्थः; 21. शङ्का; 22. पृथ्वी; 23. दर्शनम्; 24. प्रतिस्पर्धि, कथं स्यादित्यर्थः; 25. सौन्दर्यविद्युत्; 26. वसन्तश्रीः; 27. छविः; 28. मुखावरणम्; 29. अपूर्णकामम्; 30. सान्त्वम्; 31. मुखाकृतिः, रूपम्; 32. दृष्टिः; 33. सफला; 34. किं कार्यमित्यर्थः; 35. प्रियसन्देशोद्भवं सौख्यम्; 36. पत्रवाहकः; 37. आलापजन्या ईर्ष्या।

153

चलितं वैकल्याध्वनि वस्तुत इत आयुषोऽस्ति गतिरेषा।
गणिते वर्षस्यास्य स्थाने सूर्यस्य तडिदस्ति॥1॥
अस्ति वसन्तोल्लासात् 'सर्व'तरुः कोऽपि नाम मधुकलशः।
पक्षश्चकोरकस्य च्छविश्च मदिरातरङ्गस्य॥2॥
आहतमेडूकमितः स्थायित्वाङ्घ्रेर्निजस्य तावदिदम्।
न पलायनस्य युक्तिर्न च स्थितेरस्ति सामर्थ्यम्॥3॥
मद्यपजनमद्यार्था सम्पूर्णं विश्वमेव सम्पदिदम्।
बालानामाकलनं यदियं पृथ्वीं निकृष्टेति॥4॥
सामर्थ्यमस्तु कस्मिंस्तामिह सौन्दर्यविद्युतं द्रष्टुम्।
आवरणमस्ति यस्याः कान्तेरेषा वसन्तश्रीः॥5॥
सान्त्वार्थं किं क्रियतामपूर्णकामस्य मामकस्य हृदः।
तव रूपेण नु दृष्टेः कामं साफल्यमस्तु मम॥6॥
'असद' मया किं कार्यं प्रियसन्देशोद्भवेन सौख्येन।
कुर्यादालापमिति स्वलेखवाहे ममाक्षान्तिः॥7॥

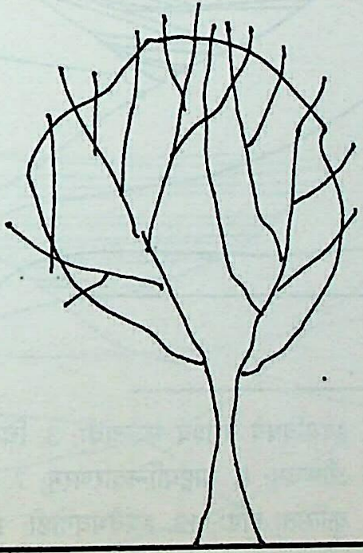

154

देखना क़िस्मत, कि आप अपने प रश्क[1] आजाये है
मैं उसे देखूँ, भला कब मुझसे देखा जाये है
हाथ धो दिल से[2], यही गर्मी गर अन्देशे[3] में है
आबगीनः[4], तुन्दि-ए-सहबा[5] से पिघला जाये है
ग़ैर को यारब, वह क्योंकर मन'-ए-गुस्ताख़ी[6] करे
गर हया[7] भी उसको आती है, तो शर्मा जाये है
शौक़[8] को यह लत[9], कि हर दम नालः[10] खेंचे जाइये
दिल की वह हालत, कि दम लेने से घबरा जाये है
दूर चश्मे बद[11], तेरी चश्मे तरब[12] से, वाह, वाह
नग़्मः[13] हो जाता है, वाँ गर नालः[14] मेरा जाये है

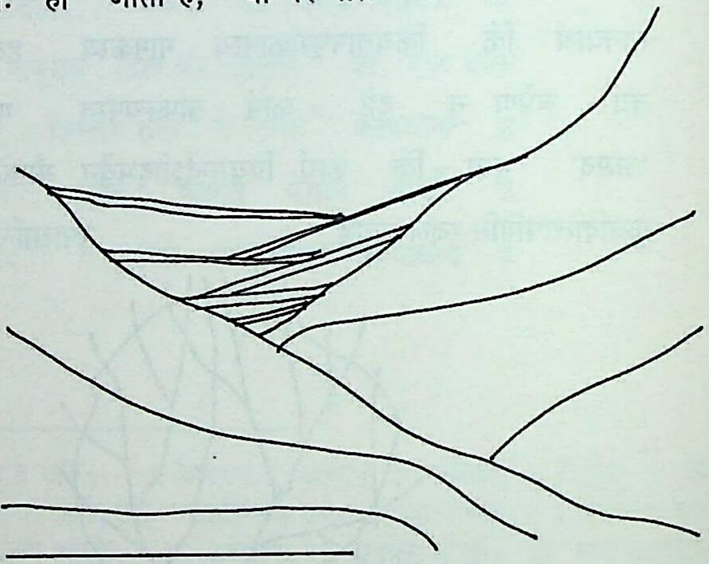

---

1. ईर्ष्या; 2. हृदयविषये नैराश्यं भजेत्यर्थः; 3. चिन्ता; 4. काचपात्रम्, हृदयमिति यावत्; 5. मदिराया औष्ण्यम्; 6. धाष्ट्र्यान्निवारणरम्; 7. लज्जा; 8. प्रणयः; 9. प्रकृतिः; 10. आर्तनादः; 11. कुत्सिता दृष्टिः; 12. हर्षवैभवगोष्ठी; 13. सङ्गीतकम्; 14. आर्तस्वरः;

154

भाग्यं निभालनीयं भवामि पात्रं स्वयं निजेर्ष्यायाः।
तमहं विलोकयानि क्व मया शक्यो विलोकयितुम्॥1॥
इदमेव तावदौष्ण्यं यदि चिन्तायां त्यज स्वहृद आशाम्।
द्रवदौष्ण्यान्मदिराया लक्ष्यत इह काचपात्रमिदम्॥2॥
विनिवारयेदनुचितं कथं रिपुं व्यवहरन्तमीश्वर ! सः।
लज्जामपि सोऽनुभवेद् यदि चेदथ लज्जितो भवति॥3॥
प्रणयस्येयं प्रकृतिः प्रवर्तनीयः सदाऽऽर्तनाद इति।
स्थितिरिह हृदयस्येयं विश्रान्त्याऽप्येति वैकल्यम्॥4॥
तव सुखवैभवगौष्ठ्यां पतेत् कदाचिन्न कुत्सिता दृष्टिः।
आर्तस्वरस्ततो मे गतं नु सङ्गीतकं भवति॥5॥

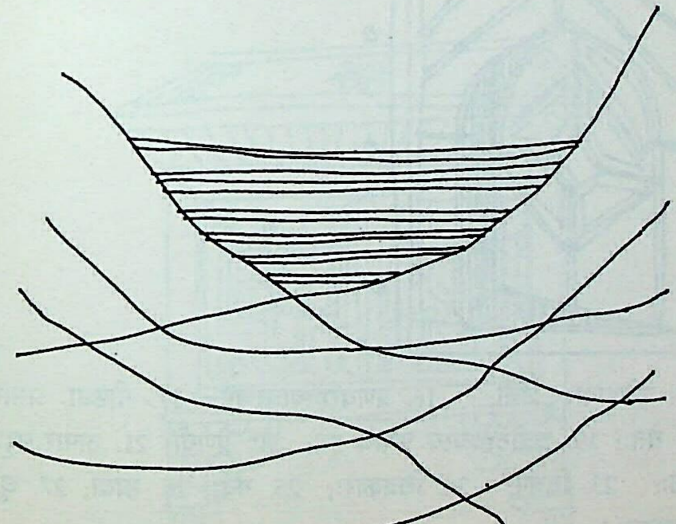

गरचे: है तर्ज़े तग़ाफ़ुल[15], पर्द:दारे राज़े ’अिश्क़,[16]
पर हम ऐसे खोये जाते हैं, कि वह पा जाये है
उसकी बज़्म आराइयाँ[17] सुनकर, दिले रंजूर[18], याँ
मिस्ले नक़्शे मुद्द’आ-ए-ग़ैर[19] बैठा जाये है
होके ‘आशिक़[20], वह परीरुख़,[21] और नाज़ुक[22] बन गया
रंग खुलता जाये है, जितना कि उड़ता जाये है
नक़्श[23] को उसके, मुसव्विर[24] पर भी क्या क्या नाज़[25] है
खेंचता है जिस क़दर, उतना ही खिंचता जाये है
साय:[26] मेरा, मुझसे मिस्ले दूद[27] भागे है, असद
पास मुझ आतश बजाँ[28] के, किससे ठहरा जाये है

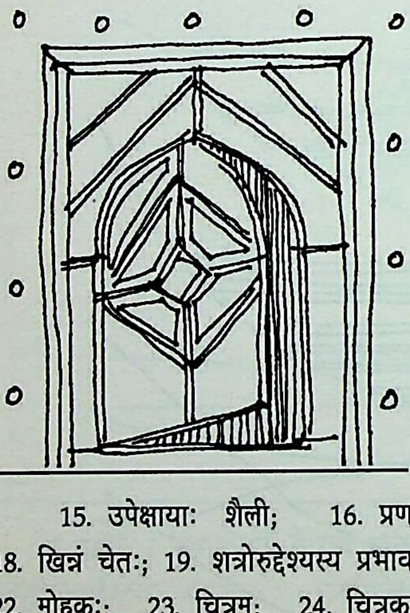

---

[15] उपेक्षायाः शैली; [16] प्रणयरहस्यावरणम्; [17] गोष्ठ्याः प्रसाधनानि; [18] खिन्नं चेतः; [19] शत्रोरुद्देश्यस्य प्रभाव इव; [20] प्रणयी; [21] अप्सरःसदृशरूपः; [22] मोहकः; [23] चित्रम्; [24] चित्रकारः; [25] गर्वः; [26] छाया; [27] धूम इव; [28] प्रदहद्धृदयः।

प्रणयरहस्यावरणं यद्यपि शैलीह काऽप्युपेक्षायाः।
अस्मासु सत्सु संज्ञा-शून्येषु स तावदवगच्छेत्॥6॥
आकर्ण्य तस्य गोष्ठ्याः प्रसाधनान्यस्मदन्तरं खिन्नम्।
शत्रोः स्वाभिप्रेतप्रभाव इव ही स्थिरीभवति॥7॥
अभजत् कामपि भिन्नां प्रणयी सन् सुन्दरः स मोहकताम्।
रूपं यावत् क्षरति स्फुटदिव किञ्चित् तदाभाति॥8॥
तच्चित्रस्य कियानिह गर्वस्तच्चित्रकारविषयेऽपि।
आकर्षति तद् यावत् भवति तदाकृष्टमिह तावत्॥9॥
'असद' मदीया छाया मत्तो दूरे प्रयाति धूम इव।
क इव स्थातुं शक्तः प्रदहद्धृदयस्य मम पार्श्वे॥10॥

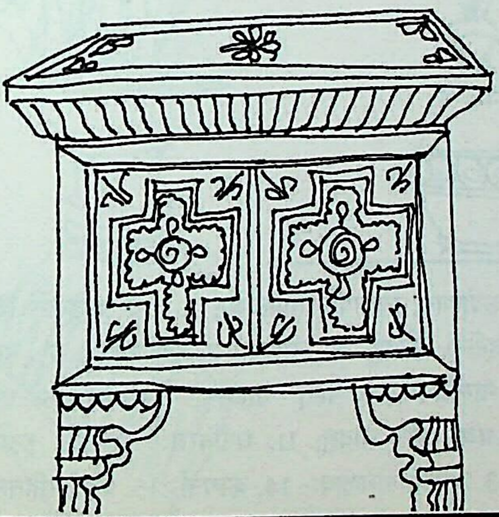

155

गर्मे फ़रियाद[1] रखा, शक्ले निहाली[2] ने मुझे
तब अमाँ[3] हिज्र[4] में दी, बर्दे लियाली[5] ने मुझे
निस्यः-ओ-नक़्दे दो ’आलम[6] की हक़ीक़त मा’लूम[7]
ले लिया मुझसे, मेरी हिम्मते ’आली[8] ने मुझे
कस्रत आराइ-ए-वहदत[9] है परस्तारि-ए-वह्म[10]
कर दिया काफ़िर[11], इन असनामे ख़याली[12] ने मुझे
हवसे गुल[13] का तसव्वुर[14] में भी खटका न रहा
’अजब आराम दिया, बेपर-ओ-बाली[15] ने मुझे

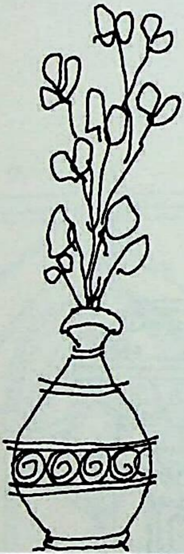

---

1. विलापे कवोष्णम्, विलापनिरतमित्यर्थः; 2. प्रावरणाङ्कितं चित्रम्; 3. सुरक्षा; 4. विरहः; 5. रजनीनां शैत्यम्; 6. लोकद्वयस्य ऋण-राशिः; 7. याथार्थ्यं विदितम्, तत्त्वतस्तदुभयमपि नास्तीत्यर्थः; 8. महत् साहसम्, महोत्साहः; 9. एकत्वस्यानेकत्वम्; 10. भ्रमस्य पूजा, प्रश्रय इति यावत्; 11. धर्मविरतः, नास्तिकः इत्यर्थः; 12. काल्पनिक्यः प्रतिमाः; 13. सुमनसामभिलाषः; 14. कल्पना; 15. पक्षतिरहितत्वम् ।

155

चित्रं प्रावरणाङ्कितमकृत कवोष्णं विलापनिरतं माम्।
तत एष रक्षितोऽहं विरहे शैत्येन रजनीनाम्॥1॥
लोकद्वय-ऋणराश्योर्याथार्थ्यं सर्वथैव विदितं मे।
क्रीतोऽहमेष तावन्महता मत्साहसेनास्मि॥2॥
एकं बह्विति वादः प्रश्रय एष भ्रमस्य कस्यापि।
काल्पनिकीभिर्विहितः प्रतिमाभिर्धर्मविरतोऽहम्॥3॥
सुमनोविषया लिप्सा न विचारद्वारमप्युपैतीह।
आश्चर्यमदित पक्षतिहीनत्वं मे नु विश्रान्तिम्॥4॥

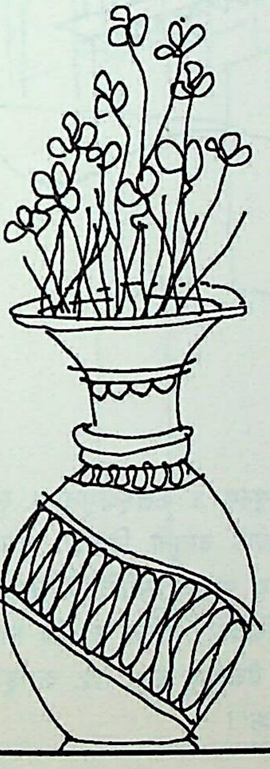

156

कारगाहे हस्ती[1] में, लाल:[2] दाग़ सामाँ[3] है
बर्क़े ख़िरमने राहत[4], ख़ूने गर्मे देह्क़ा[5] है
गुँच: ता शिगुफ़्तनहा[6], बर्गे 'आफ़ियत मा'लूम[7]
बावुजूदे दिलजम'अी[8], ख़्वाबे गुल[9] परीशाँ[10] है
हम से रँजे बेताबी[11] किस तरह उठाया जाय
दाग़[12] पुश्ते दस्ते 'अिज्ज़[13], शो'ल:[14] ख़स ब दन्दाँ[15] है

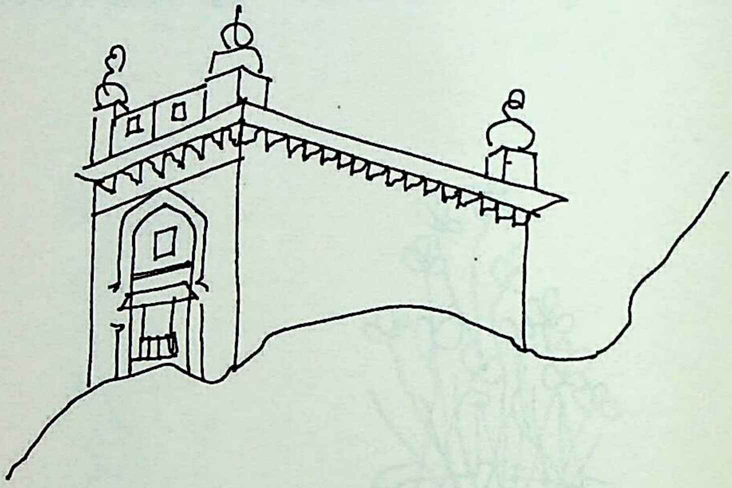

---

[1] अस्तित्व-कार्यालयः; [2] रक्ताभं प्रसूनम्; [3] कलङ्कभृत्; [4] सुखखलिधान्यस्य कृते तडित्; [5] कृषकस्योष्णं रक्तम्; प्रत्येकं वस्तुनो विनाशः स्वयं तदन्तर्निहितो भवतीति कवेराशयः पद्येऽस्मिन्, अग्रेऽपि च पद्यद्वयेऽस्तीति व्याख्यातारः; [6] कलिकाया विकासं यावत्; [7] कल्याणसम्भारो विदितः, नास्ति स इति भावः; [8] सन्तोषे सत्यपि; [9] पुष्प-स्वप्नः; [10] विकीर्णः; [11] वैकल्यदुःखम्; [12] कलङ्कः; [13] विनयपाणिपृष्ठम्; [14] ज्वालः; [15] दशनेषु धृततृणकः।

156

अस्तित्वकार्यशाले कलङ्कभृद् रक्तवर्णकं कुसुमम्।
सुखखलिधान्यतडित् खलु कृषकस्योष्णञ्च रक्तमिह ।। 1 ।।
कलिकायाः सुविकासं यावद् विदितोऽस्ति भद्रसम्भारः।
सन्तोषे खलु सत्यपि कुसुमस्वप्नो विकीर्ण इह ।। 2 ।।
दुःखं वैकल्यभवं विधिना केनेह सह्यमस्माभिः।
विनयशयपृष्ठमङ्को ज्वालो दशनेषु धृततृणकः ।। 3 ।।

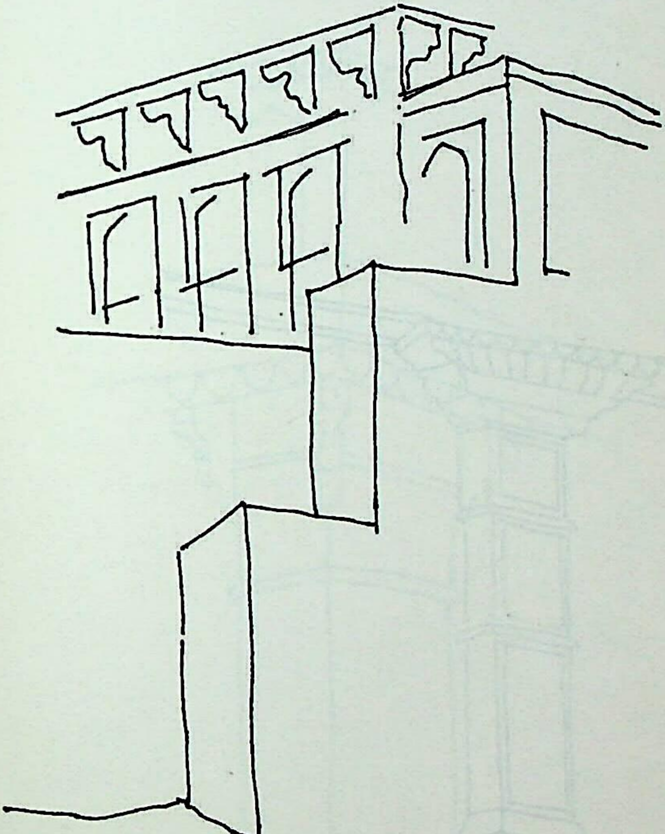

157

उग रहा है दर-ओ-दीवार[1] से सब्जः[2] ग़ालिब
हम बयाबाँ[3] में हैं और घर में बहार[4] आई है

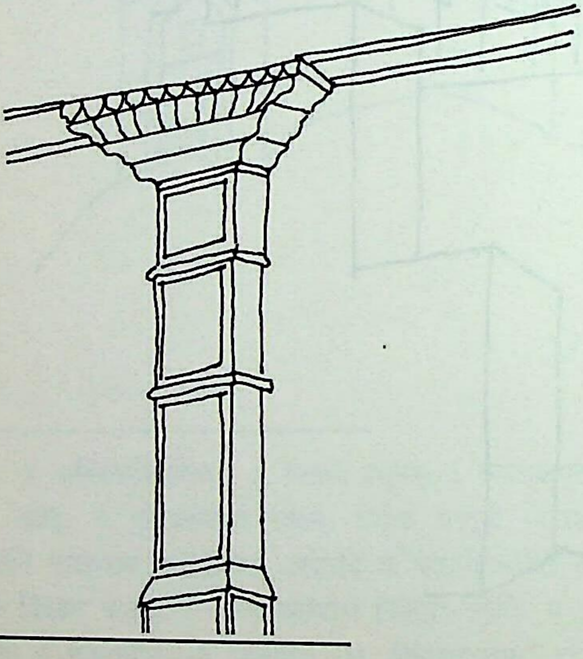

---

1. द्वार्भित्ती; 2. हरित्तृणम्; 3. मरुभूः; 4. वसन्तः।

157

द्वार्भित्तिभ्यां 'ग़ालिब' हरित्तृणं भात्युदीयमानमहो।
वयमेते स्मो मरुभुवि गृहं वसन्तश्च सम्प्राप्तः ॥ 1 ॥

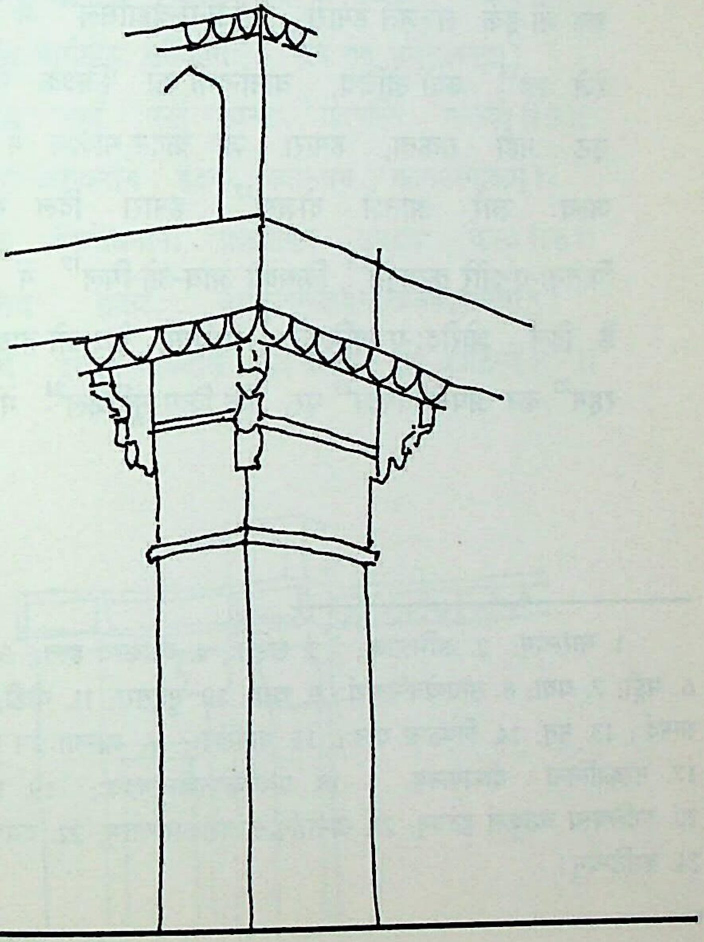

158

सादगी[1] पर उसकी, मर जाने की हसरत[2], दिल में है
बस नहीं चलता, कि फिर ख़ंजर[3] कफ़े क़ातिल[4] में है
देखना तक़रीर[5] की लज़्ज़त[6], कि जो उसने कहा
मैंने यह जाना, कि गोया[7] यह भी मेरे दिल में है
गरचेः है किस किस बुराई से, वले बा ईं हमः[8]
ज़िक्र[9] मेरा, मुझसे बेहतर[10] है, कि उस महफ़िल[11] में है
बस, हुजूमे नाउमीदी[12], ख़ाक[13] में मिल जायगी
यह जो इक लज़्ज़त हमारी स'अि-ए-बेहासिल[14] में है
रंजे रह[15] क्यों खेंचिये, वामान्दगी को 'अिश्क है[16]
उठ नहीं सकता, हमारा जो क़दम मंज़िल में है
जल्वः ज़ारे आतशे दोज़ख़[17], हमारा दिल सही
फ़ितनः-ए-शोरे क़यामत[18], किसकी आब-ओ-गिल[19] में है
है दिले शोरीदः-ए-ग़ालिब[20], तिलिस्मे पेच-ओ-ताब[21]
रहम[22] कर अपनी तमन्ना[23] पर, कि किस मुश्किल[24] में है

---

1. सारल्यम्; 2. अभिलाषः; 3. खड्गः; 4. वधकस्य हस्तः; 5. आभाषणम्; 6. भङ्गी; 7. यथा; 8. सत्यप्येवमित्यर्थः; 9. चर्चा; 10. सुष्ठुतरा; 11. गोष्ठी; 12. नैराश्यसम्मर्दः; 13. मृत्; 14. निष्फलो यत्नः; 15. मार्गखेदः; 16. श्रान्त्या प्रेम वर्तत इत्यर्थः; 17. नरकाग्निना दीप्यमानम्; 18. प्रलयकोलाहलोपद्रवः; 19. प्रकृतिरित्यर्थः; 20. ग़ालिबस्य व्याकुलं हृदयम्; 21. अन्तर्द्वन्द्वेन्द्रजालकारागारम्; 22. दया; 23. तृषा; 24. काठिन्यम्।

158

सारल्ये तस्य वयं मर्तुं विभूमोऽभिलाषमात्महृदि ।
नास्त्यधिकारोऽस्माकं वधकर्तुर्यत् करे खड्गः ।। 1 ।।
आभाषणस्य भङ्गी कीदृक् तस्येह, तेन यदभिहितम् ।
अवगतमिदं मया यद् तथैतदपि मामकेऽस्ति हृदि ।। 2 ।।
यद्यपि कया कया वा दुर्भावनयाऽस्ति, सत्यपीत्थमहो ।
मच्चर्चा खलु मत्तः सुष्ठुतरा, याऽस्ति तद्गोष्ठ्याम् ।। 3 ।।
नैराश्यानां विरम त्वं सम्मर्देन, भाविनी मृत्सात् ।
प्रीतिर्यैकाऽस्माकं वर्तत इह निष्फले यत्ने ।। 4 ।।
कथमेव मार्गखेदः स्वीकार्यः, प्रेम यद् भवेच्छान्त्या ।
पदमपि नार्हं गन्तुं यन्नः पदमस्ति गन्तव्ये ।। 5 ।।
नरकाग्निदीप्यमानं हृदयं स्यान्नाम काममस्माकम् ।
प्रकृतौ निलीयमानः प्रलयाख्य उपद्रवः कस्य ।। 6 ।।
'ग़ालिब' हृदयं व्याकुलमन्तर्द्वन्द्वेन्द्रजालकागारम् ।
स्वतृषे दयस्व यदसि त्वं कस्मिन् नाम काठिन्ये ।। 7 ।।

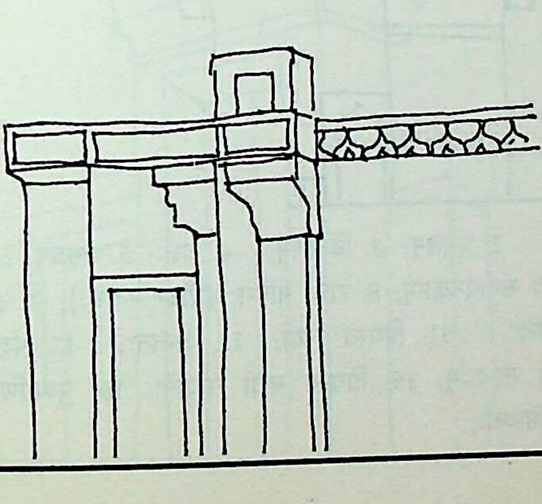

159

दिल से तेरी निगाह जिगर तक उतर गई
दोनों को इक अदा[1] में रज़ामन्द[2] कर गई
शक़[3] हो गया है सीनः[4], ख़ुशा[5] लज़्ज़ते फ़राग़[6]
तकलीफ़े पर्दः दारि-ए-ज़ख़्मे जिगर[7] गई
वह बादः-ए-शबानः[8] की सरमस्तियाँ[9] कहाँ
उठिये बस अब, कि लज़्ज़ते ख़्वाबे सहर[10] गई
उड़ती फिरे है ख़ाक मेरी, कू-ए-यार[11] में
बारे[12] अब अय हवा, हवसे बाल-ओ-पर[13] गई
देखो तो, दिल फ़रेबि-ए-अन्दाज़े नक़्शे पा[14]
मौजे ख़िरामे यार[15] भी, क्या गुल कतर गई[16]

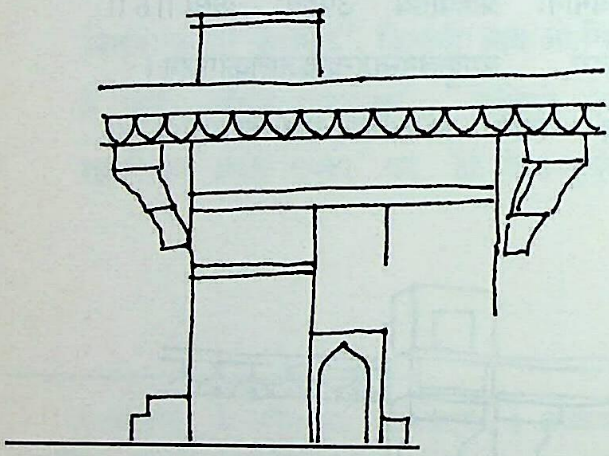

---

1. हावः; 2. प्रसन्नम्; 3. विदीर्णम्; 4. वक्षः; 5. प्रसन्नम्; 6. मुक्तेरानन्दः; 7. यकृतो व्रणस्य संगोपनकष्टम्; 8. रात्रेः मदिराः (यौवनमित्यर्थः); 9. उन्मदातिशयाः; 10. प्रभातनिद्रानन्दः; 11. प्रियस्य रथ्या; 12. अन्ततः; 13. पक्षत्योरभिलाषः; 14. पदचिह्नानां सौन्दर्यम्; 15. प्रियस्य मन्दा गत्युर्मिः; 16. पुष्पाणि विकीर्णाणि, कियदाश्चर्यं कृतमित्यर्थः;

159

आ हृदयादा यकृतस्तव दृष्टिर्नाम तावदवतीर्णा।
हावेनैकेनोभयमपि प्रसन्नं सुविहितवती।। 1।।
वक्षो विदीर्णतां गतमहो विमुक्तेः प्रभूत आनन्दः।
यकृतो व्रणसङ्गोपनकष्टं नियतं विनष्टमभूत्।। 2।।
रात्रेर्मधुनो हन्त क्व सन्ति ते तावदुन्मदातिशयाः।
अधुनोत्तिष्ठ हि यातः प्रभातनिद्रासुखावसरः।। 3।।
उड्डयमाना धूलिः प्रियरथ्यायामियं मम भ्रमति।
धन्योऽसि पवन ! यदयं पक्षत्योस्तर्ष उपशान्तः।। 4।।
पदचिह्नानामेषां सौन्दर्यं तावदेतदाकलय।
कियदकरोदाश्चर्यं प्रियस्य मन्देह गत्युर्मिः।। 5।।

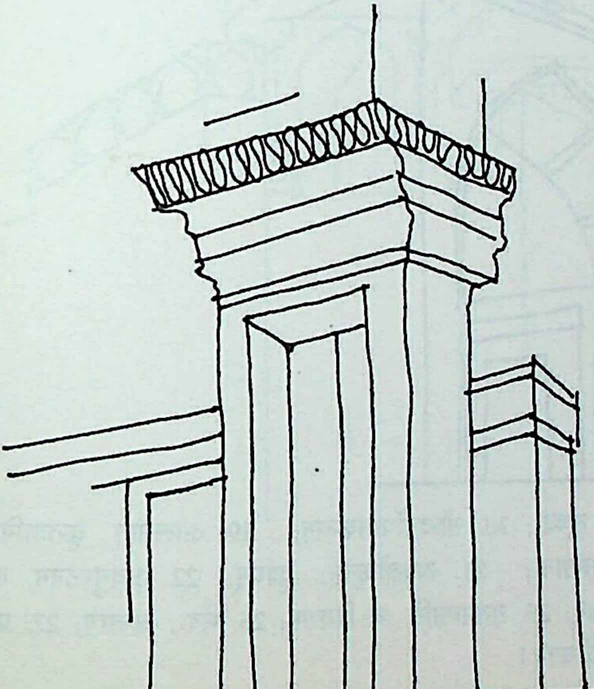

हर बुल्हवस[17] ने हुस्नपरस्ती[18] शि’आर की[19]
अब आबरू-ए-शेवः-ए-अह्ले नज़र[20] गई

नज़्ज़ारे[21] ने भी, काम किया वाँ निक़ाब[21] का
मस्ती[22] से हर निगह[23] तेरे रुख़[24] पर बिखर गई

फ़रदा-ओ-दी[25] का तफ़रिक़ः[26] यक बार मिट गया
कल तुम गये, कि हम प क़यामत[27] गुज़र गई

मारा ज़माने ने, असदुल्लाह ख़ाँ, तुम्हें
वह वलवले[28] कहाँ, वह जवानी[29] किधर गई

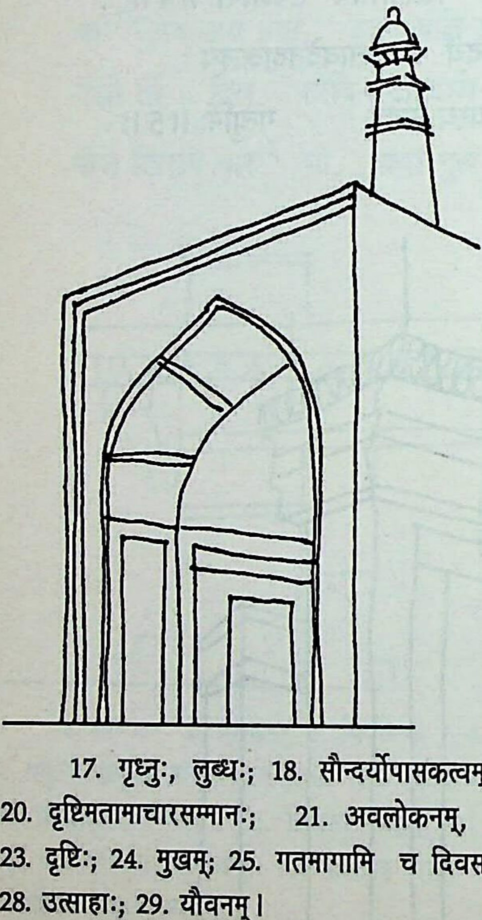

---

17. गृध्नुः, लुब्धः; 18. सौन्दर्योपासकत्वम्; 19. आत्मसात् कृतवानित्यर्थः; 20. दृष्टिमतामाचारसम्मानः; 21. अवलोकनम्, दृश्यम्; 22. अवगुण्ठनम्, मत्तता; 23. दृष्टिः; 24. मुखम्; 25. गतमागामि च दिवसम्; 26. भेदः, अन्तरम्; 27. प्रलयः; 28. उत्साहाः; 29. यौवनम्।

प्रत्येकमेव गृध्नुः सौन्दर्योपासकत्वमधिकृतवान्।
अधुना गतः समाप्तिं दृष्टिमदाचारसम्मानः॥6॥
अवगुण्ठनस्य कार्यं - कृतन्नु तत्रावलोकनेनापि।
मत्ततया प्रत्येकं दृष्टिर्मुखतस्तवाकीर्णा॥7॥
भेदो गतः समाप्तिं विगतस्यागामिनश्च दिवसस्य।
ह्यो यावत्त्वन्नु गतोऽस्मासु प्रलयोऽपतत् तावत्॥8॥
'असदुल्लाहं ख़ानं' त्वामाहतवान्नु कोऽपि कालोऽयम्।
उत्साहास्ते क्व गताः क्व गतं तद् यौवनञ्च तव॥9॥

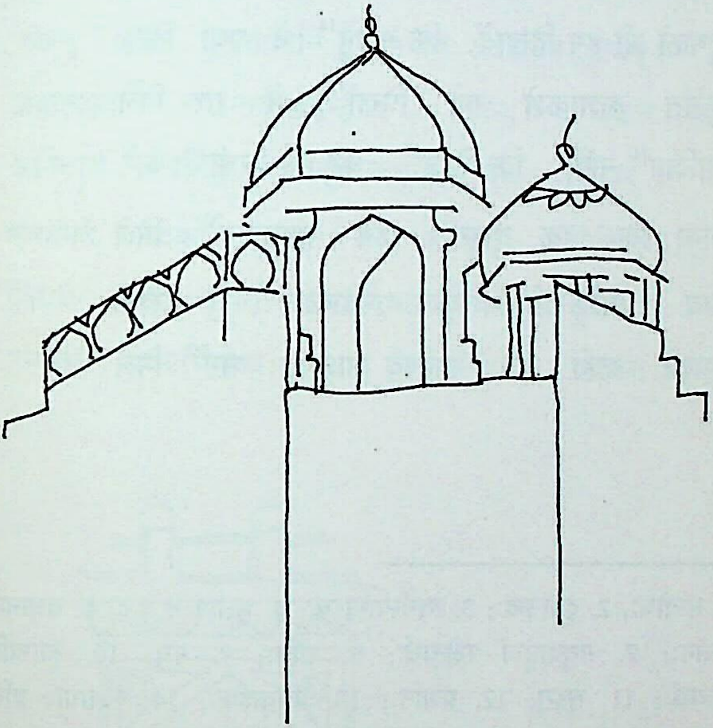

160

तस्कीं[1] को हम न रोयें, जो ज़ौक़े नज़र[2] मिले
हूराने ख़ुल्द[3] में तेरी सूरत मगर मिले
अपनी गली में, मुझको न कर दफ़्न[4], बा'दे क़त्ल[5]
मेरे पते से ख़ल्क[6], को क्यों तेरा घर मिले
साक़ीगरी की शर्म करो[7] आज, वर्नः हम
हर शब[8] पिया ही करते हैं मै[9], जिस क़दर मिले
तुझसे तो कुछ कलाम नहीं[10], लेकिन अय नदीम[11]
मेरा सलाम[12] कहियो, अगर नामःबर[13] मिले
तुमको भी हम दिखायें, कि मजनूँ[14] ने क्या किया
फ़ुर्सत कशाकशे ग़मे पिन्हाँ[15] से गर मिले
लाज़िम[16] नहीं, कि ख़िज़्र[17] की हम पैरवी[18] करें
माना कि इक बुज़ुर्ग[19] हमें हमसफ़र[20] मिले
अय साकिनाने कूचः-ए-दिलदार[21], देखना
तुमको कहीं जो ग़ालिबे आशुफ़्तः सर[22] मिले

---

1. सन्तोषः; 2. दृगानन्दः; 3. स्वर्गस्याप्सरसः; 4. भूलीनं न कुरु; 5. वधानन्तरम्; 6. जगज्जनः; 7. मधुदातृत्वं रक्षेत्यर्थः; 8. रात्रिः; 9. मधु; 10. त्वाम्प्रति न वक्तव्यमित्यर्थः; 11. सुहृत्; 12. प्रणतिः; 13. पत्रवाहकः; 14. लैलायाः प्रसिद्धः प्रणयी; 15. अन्तर्दुःखद्वन्द्वानां कर्षाकर्षौ; 16. अनिवार्यम्; 17. ईश्वरस्य एकः सन्देशहरः, यो भ्रान्तान् जनान् मार्गं निर्दिशति; 18. अनुगमनम्; 19. वृद्धः (वयसा);20. सहचरः; 21. प्रियस्य रथ्याया निवासिनः; 22. उन्मत्तः, उद्भान्तशिराः ग़ालिबः।

160

रुद्याम न तोषार्थं लब्धः स्याच्चेदितो दृगानन्दः।
स्वर्गाप्सरःसु किन्तु त्वत्सदृशी काऽपि लभ्येत।।1।।
न वधानन्तरमिह मां निजरथ्यायां कुरुष्व भूलीनम्।
मम सङ्केतेन कथं लभेत तव रे जनः सदनम्।।2।।
निजकं मधुदातृत्वं रक्ष त्वं किञ्चिदन्यथेह वयम्।
प्रतिरात्रि मधु पिबामो विधिना येनापि लभ्येत।।3।।
मित्र ! त्वाम्प्रति किञ्चिद् वक्तव्यं नास्ति मामकं किन्तु।
प्रणतिर्निवेदनीया मिलेत् स यदि नाम पत्रवहः।।4।।
'मजनूः' किं कृतवानिति तुभ्यमपीतः प्रदर्शयेम वयम्।
अवकाशो यद्यन्तर्दुःखद्वन्द्वेभ्य आप्तः स्यात्।।5।।
अनिवार्यं नेदमितो यदनुसरेमाधुना वयं 'ख़िज़्रम्'।
मन्यामहे यदेको वृद्धो नः सहचरो मिलितः।।6।।
द्रक्ष्यथ यूयं कृपया प्रियरथ्याया निवासिनः सुजनाः।
उन्मत्तो युष्माभिर्लब्धः स्याद् 'ग़ालिबः' क्वचन।।7।।

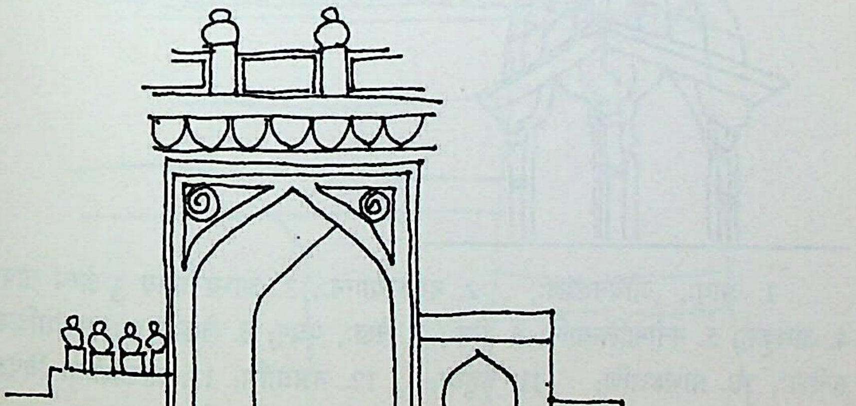

161

कोई दिन, गर ज़िन्दगानी[1] और है
अपने जी में हमने ठानी और है
आतशे दोज़ख़[2] में, यह गर्मी, कहाँ
सोज़े ग़महा-ए-निहानी[3] और है
बारहा[4] देखी हैं उनकी रंजिशें[5]
पर कुछ अबके सरगिरानी[6] और है
दे के ख़त[7], मुँह देखता है नामःबर[8]
कुछ तो पैग़ामे ज़बानी[9] और है
काते’-ए-आ’मार[10], हैं अक्सर[11] नुजूम[12]
वह बला-ए-आस्मानी[13] और है
हो चुकीं, ग़ालिब, बलाएँ[14], सब तमाम[15]
एक मर्गे नागहानी[16] और है

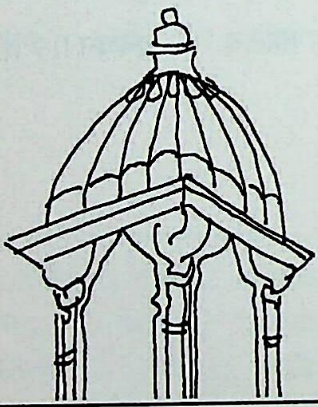

---

1. आयुः, जीवनकालः; 2. नरकस्याग्निः; 3. आभ्यन्तरस्य दुःखस्य तापः; 4. असकृत्; 5. मनोमालिन्यानि; 6. रोषः; 7. लेखः, पत्रम्; 8. लेखहारकः; 9. वाचिकः सन्देशः; 10. प्राणहराणि; 11. बहुधा; 12. नक्षत्राणि; 13. आकाशीया विपत्; 14. विपदः; 15. समाप्ताः; 16. आकस्मिको मृत्युः।

161

आयुर्यद्यवशिष्टं दिवसान्यन्यानि नाम कानिचन।
निर्णीतं निजहृदयेऽस्माभिर्यत्किञ्चिदन्यदिव ॥ 1 ॥
नरकस्याग्नौ वर्तत एष कुतो नाम हन्त सन्तापः।
अन्यः स कश्चिदेव व्यथितस्यान्तर्निगूढस्य ॥ 2 ॥
अनुभूतान्यसकृदितो मालिन्यान्येव हन्त तन्मनसः।
साम्प्रतिकस्तु तदीयो मन्ये रोषोऽस्ति कोऽप्यन्यः ॥ 3 ॥
लेखं समर्प्य पश्यति तद् वक्त्रं लेखहारकस्तावत्।
यत्किञ्चित्तु तदन्यद् वाचिकमप्यस्ति सन्देश्यम् ॥ 4 ॥
हरति प्राणान् बहुधा नक्षत्राणां परिभ्रमच्चक्रम्।
आकाशीया सा खलु विपदन्यैवेति जानीमः ॥ 5 ॥
जगतो विपदः सर्वा 'ग़ालिब' मन्ये समाप्तिमुपनीताः।
मृत्युर्नामाकस्मिक इत्येकाऽन्याऽवशिष्टाऽपि ॥ 6 ॥

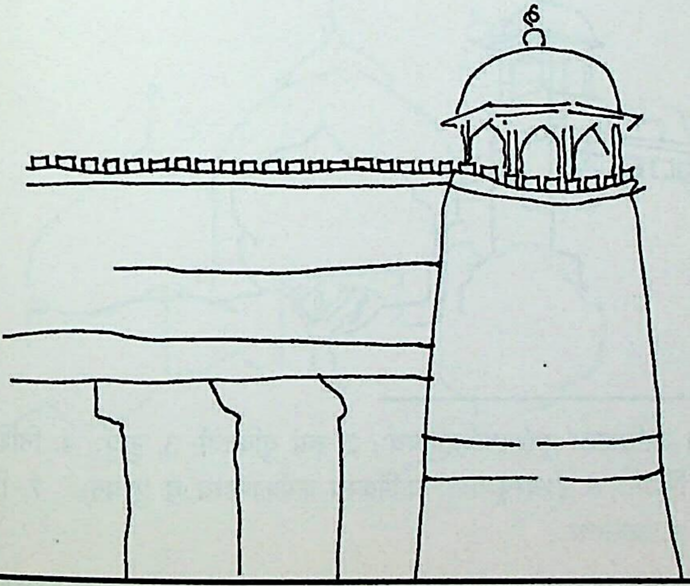

162

कोई उम्मीद बर नहीं आती[1]
कोई सूरत[2] नज़र नहीं आती
मौत[3] का एक दिन मु'अइयन[4] है
नीन्द क्यों रात भर नहीं आती
आगे आती थी हाले दिल[5] प हँसी
अब किसी बात पर नहीं आती
जानता हूँ सवाबे ता'अत-ओ-ज़ोह्द[6]
पर तबी'अत[7] इधर नहीं आती
है कुछ ऐसी ही बात, जो चुप हूँ
वर्न:[8] क्या बात कर नहीं आती
क्यों न चीख़ूँ, कि याद करते हैं
मेरी आवाज़[9] गर नहीं आती

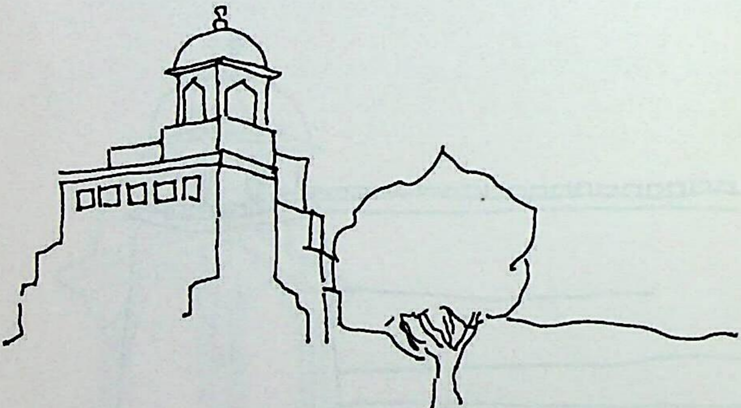

---

[1] न काचिदाशा पूर्णत्वमायातीत्यर्थः; [2] रूपं युक्तिर्वा; [3] मृत्युः; [4] निश्चितम्; [5] हृदयस्य स्थितिः; [6] ईश्वरपूजायाः धार्मिकस्य कर्मकाण्डस्य च पुण्यम्; [7] चित्तम्; [8] अन्यथाः [9] आर्तस्वरः;

162

अनुभूयतेऽनुयान्ती न काचिदाशेह नाम पूर्णत्वम्।
न च हन्त किमपि रूपं जगतीतो दृष्टिपथमेति ।। 1 ।।
एकं दिवसं निश्चितमिह मृत्योरागमस्य यत्तर्हि।
न कथं नयनाभिमुखीभवति निशां यावदपि निद्रा ।। 2 ।।
उपजायते स्म हासः पूर्वं हृदयस्थितिं समालक्ष्य।
कस्यामपि वार्तायामुपजायत एव नेदानीम् ।। 3 ।।
पूजाजन्यं पुण्यं जाने पुण्यञ्च कर्मकाण्डभवम्।
मच्चित्तमेव न परं प्रवर्तते तावदेतस्मिन् ।। 4 ।।
अस्त्येव किमपि कारणमिह तिष्ठाम्येष मौनमवलम्ब्य।
कां वार्तामिव कर्तुं न शक्नुयामन्यथा जगति ।। 5 ।।
चीत्कारं कथमेवं न विदध्यां यत्स्मरत्यसौ नूनम्।
यदि नोपैति मदीयः श्रुतिपथमार्तस्वरः कश्चित् ।। 6 ।।

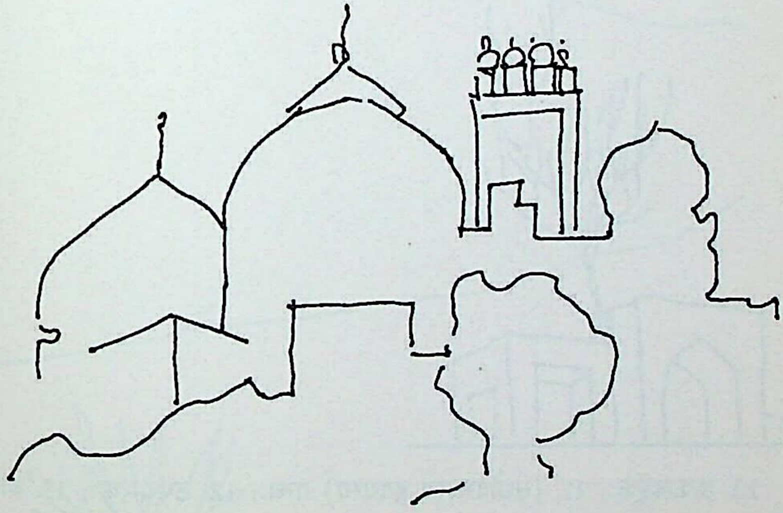

दाग़े दिल[10] गर नज़र नहीं आता
बू[11] भी अय चारःगर[12] नहीं आती
हम वहाँ हैं जहाँ से हम को भी
कुछ हमारी ख़बर[13] नहीं आती
मरते हैं आरज़ू[14] में मरने की
मौत आती है, पर नहीं आती
का'बे[15] किस मुँह से जाओगे[16] ग़ालिब
शर्म[17] तुम को मगर नहीं आती

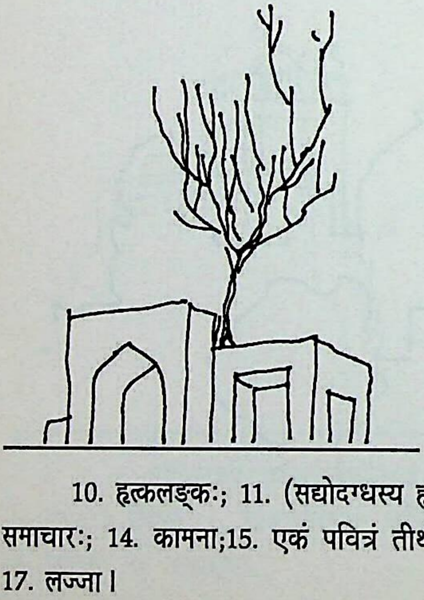

---

[10] हृत्कलङ्कः; [11] (सद्योदग्धस्य हृदयस्य) गन्धः; [12] उपचारकः; [13] वार्ता, समाचारः; [14] कामना; [15] एकं पवित्रं तीर्थस्थलम्; [16] केन प्रकारेण गमिष्यसीत्यर्थः; [17] लज्जा।

यदि दृष्टेरध्वानं तव नोपैतीह हृत्कलङ्को मे।
अप्युपचारक ! सुतरां गन्धोऽपि न तावदुपयाति ॥ 7 ॥
तस्मिन् स्थाने नूनं वर्तामह एव हन्त वयमेते।
स्थानाद् यस्मात् काचिद् वार्ता नास्माकमायाति ॥ 8 ॥
मरणस्य कामनायां म्रियामहे साम्प्रतन्नु वयमेते।
आयाति हन्त मृत्युर्नायानालक्ष्यते किन्तु ॥ 9 ॥
'का'बा'-यात्रां' 'ग़ालिब' कर्तासि त्वन्नु केन रूपेण।
तव चित्ते हन्त परं भावो नोदेति लज्जाख्यः ॥ 10 ॥

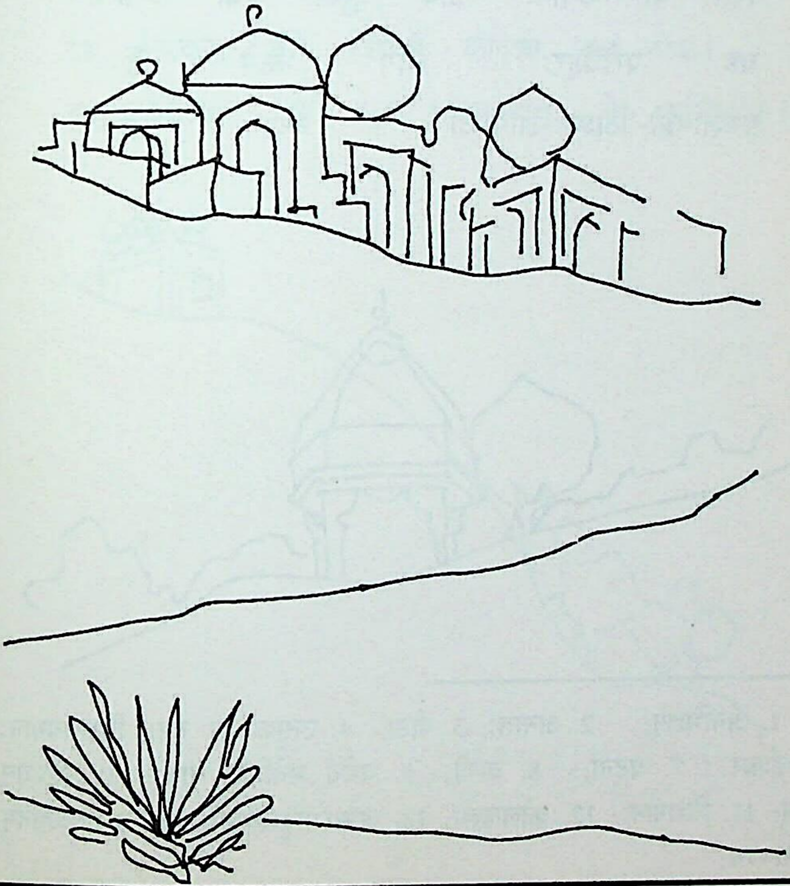

163

दिले नादाँ,[1] तुझे हुआ क्या है
आख़िर[2] इस दर्द[3] की दवा क्या है
हम हैं मुश्ताक़[4] और वह बेज़ार[5]
या इलाही,[6] यह माजरा[7] क्या है
मैं भी मुँह में ज़बान[8] रखता हूँ
काश,[9] पूछो, कि मुद्द'आ[10] क्या है

क़त'अः

जबकि तुझ बिन कोई नहीं कोई मौजूद[11]
फिर यह हँगामः[12] अय ख़ुदा क्या है
यह परीचेह्रः[13] लोग कैसे हैं
ग़मज़ः-ओ-'अिश्वः-ओ-अदा[14] क्या है

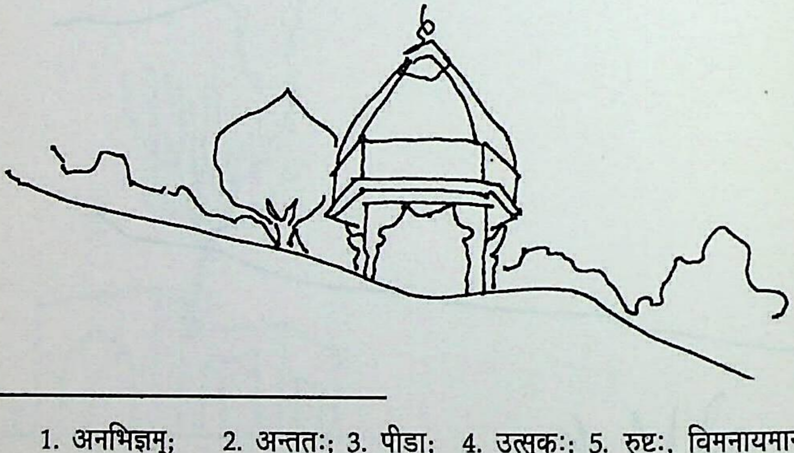

---

1. अनभिज्ञम्; 2. अन्ततः; 3. पीडा; 4. उत्सुकः; 5. रुष्टः, विमनायमानः; 6. हे ईश्वर ! 7. घटना; 8. वाणी; 9. यद्येवं भवेदिति भावः; 10. उद्देश्यम्, ईप्सितम्; 11. विद्यमानः; 12. कोलाहलः; 13. अप्सरःसदृशरूपाः; 14. अक्षिसञ्ज्ञानम्, हावो भावश्च;

163

अनभिज्ञ हृदय ! जातं हन्त किमेतत्तवेह तावदहो।
अन्तत एतस्याः स्यादुपचारः को नु पीडायाः॥1॥
वयमुत्सुकाः स्म एते स्थितः स विमनायमान एतर्हि।
ईश्वर ! कीदृशमेतद् घटनावैचित्र्यमाभाति॥2॥
अहमपि निजमुखमध्ये वाचं सन्धारयामि, जानीहि।
अयि पृच्छेरपि तावत् 'तावकमस्तीप्सितं किमि'ति॥3॥

खण्डः

न त्वां विना यदाऽस्मिन्नस्तित्वं वस्तुतोऽस्ति कस्यचन।
तत ईश्वर ! तावदितः कोऽयं कोलाहलो नाम॥4॥
इह रूपवन्त एते विद्यन्ते कीदृशो जना लोके।
चक्षुःसङ्केताः के हावा भावाश्च के सन्ति॥5॥

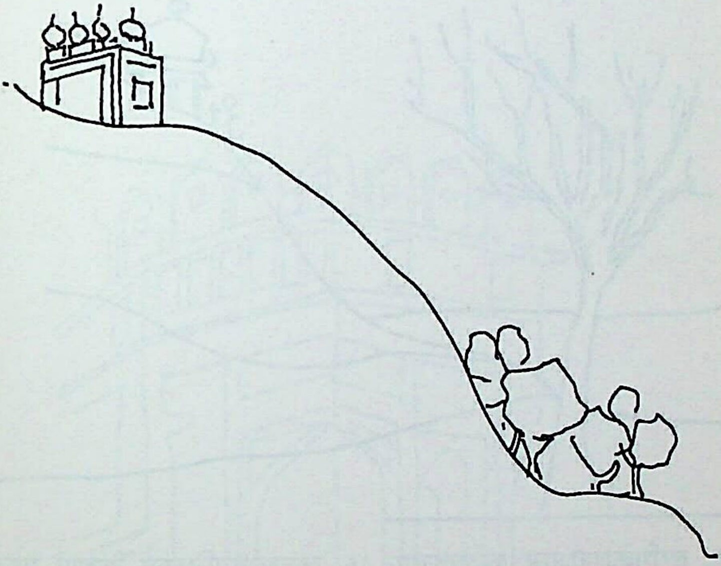

शिकने ज़ुल्फ़े 'अँबरी[15] क्यों है
निगहे चश्मे सुर्मः[16] सा क्या है
सब्ज़ः-ओ-गुल[17] कहाँ से आये हैं
अब्र[18] क्या चीज़ है, हवा क्या है
हमको उनसे, वफ़ा[19] की है उम्मीद
जो नहीं जानते, वफ़ा क्या है
हाँ भला कर, तेरा भला होगा
और दर्वेश[20] की सदा क्या है
जान तुम पर निसार[21] करता हूँ
मैं नहीं जानता, दु'आ[22] क्या है
मैंने माना कि कुछ नहीं ग़ालिब
मुफ़्त हाथ आये, तो बुरा क्या है

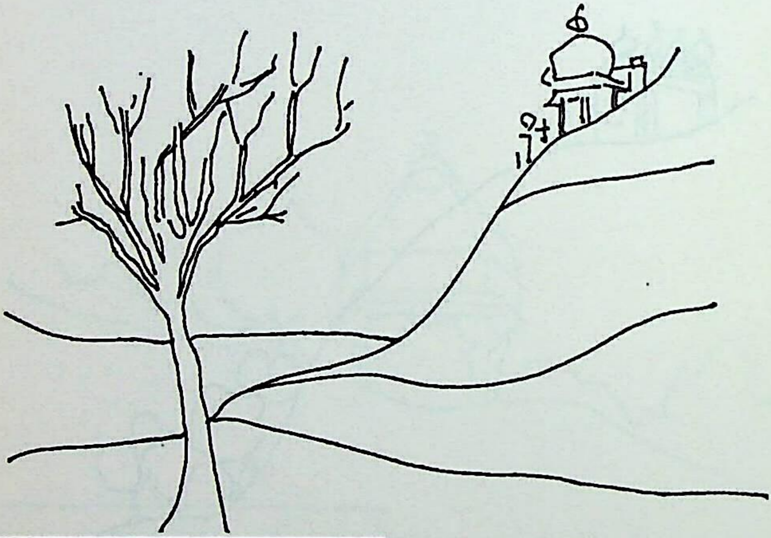

---

[15] सुरभिकेशपाशस्य कुञ्चितत्वम्; [16] कज्जलसंवलितानां नेत्राणां सङ्गतकम्; [17] हरिन्मयं दृश्यं प्रसूनानि च; [18] मेघः; [19] प्रेम्णो निर्वाहः; [20] भिक्षुः; [21] समर्पणम्; [22] आशीः।

कृष्णानां केशानां कथमिव तावन्नु कुञ्चितत्वमिह।
कज्जलकलितानामथ नयनानां किञ्च सङ्गतकम्॥6॥
कुत आगतञ्च दृश्यं हरिन्मयं वा कुतः प्रसूनानि।
किं वस्तु वारिवाहो गन्धवहो नाम कश्चेह॥7॥
प्रेम्णो निर्वाहमितस्तस्मादाशास्महे नु वयमेते।
यो हन्त न जानीते प्रेम्णो निर्वाह इह क इति॥8॥
आं कुशलं कुरु साम्प्रतमथ कुशलं तावकञ्च भवितापि।
भिक्षोर्निवेदनीयं किमेतदतिरिक्तमस्तीह॥9॥
बलिमुपहरामि तुभ्यं प्राणानामेष हन्त निजकानाम्।
एष न जाने सुतरामाशीर्वचनं किमस्तीति॥10॥
किञ्चिदपीहास्तित्वं न 'ग़ालिबस्ये'ति हन्त मन्येऽहम्।
का हानिर्यदि न विना मूल्यं लभ्येत तावदसौ॥11॥

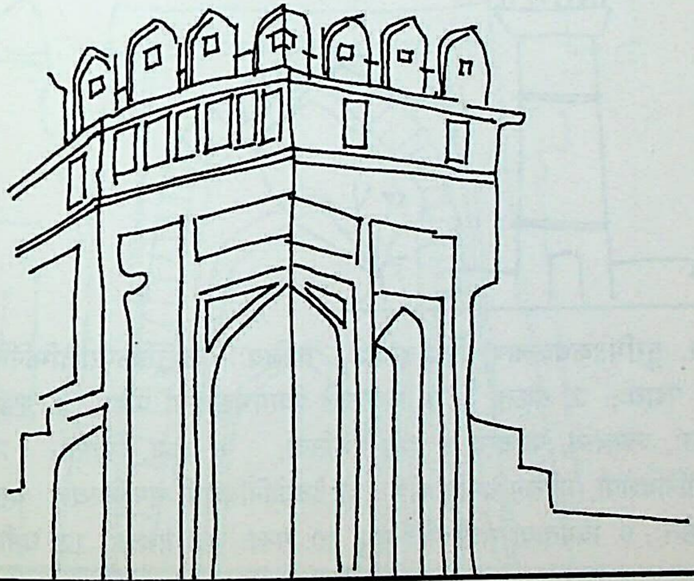

164

कहते तो हो तुम सब, कि बुते ग़ालियः मू[1] आये
इक मर्तबः[2] घबरा के कहो कोई कि, वो आये
हूँ कशमकशे नज़्'अ[3] में, हाँ जज़्बे महब्बत[4]
कुछ कह न सकूँ, पर वह मेरे पूछने को आये
है सा'अिक़ः-ओ-शो'लः-ओ-सीमाब[5] का 'आलम[6]
आना ही समझ में मेरी आता नहीं, गो[7] आये
ज़ाहिर है, कि घबरा के न भागेंगे नकीरैन[8]
हाँ, मुँह से मगर बादः-ए-दोशीनः[9] की बू[10] आये
जल्लाद[11] से डरते हैं, न वा'अिज़[12] से झगड़ते
हम समझे हुए हैं उसे, जिस भेस में जो आये

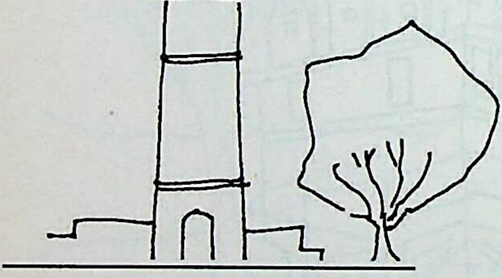

1. सुरभितकचकलापः प्रिय इत्यर्थः, 'ग़ालियः'- कस्तूरीकर्पूरादिभिर्निर्मित एकः सुगन्धिः पदार्थः; 2. सकृत्; 3. मृत्युकाले श्वासभङ्गजन्या पीडा; 4. प्रणयभावना; 5. विद्युतः, ज्वालस्य, पारदस्य च दशा स्थितिर्वा; 6. दशा, स्थितिः; 7. यद्यपि; 8. देवयोनिविशेषौ, मुस्लिम-धर्मानुसारेण द्वौ देवयोनिविशेषौ समाधिस्थलं यत्किञ्चित् प्रष्टुमागच्छतः; 9. विगतायां रात्रौ पीतं मधु; 10. गन्धः; 11. वधकः; 12. धर्मोपदेशकः;

164

सुरभितकचः स आयादिति यूयं कथयथैव सर्वेऽपि।
कश्चिद् वदेत् ससम्भ्रममेत्य सकृत् 'प्राप्तं एष' इति ॥ 1 ॥
श्वासाकर्षाकर्षग्रस्तोऽहं प्रणयभावनां किञ्चित्।
वक्तुं न शक्नुयां परमागच्छेन्मां क्वचित् प्रष्टुम् ॥ 2 ॥
तडितोऽग्नेर्ज्वालस्य स्थितिरथवा पारदस्य काऽप्यस्ति।
आगमनमेव विदितं न मे भवत्यागतो यदपि ॥ 3 ॥
न पलायिष्येते तौ स्पष्टं विकलौ क्वचिद् दिवो दूतौ।
आं यदि गन्धो गतनिशि मधुनः पीतस्य निर्गच्छेत् ॥ 4 ॥
वधकाद् बिभिमो न वयं कलहं कुर्मो न धार्मिकेण समम्।
तद्विषये जानीमो येनायाद् यश्च वेषेण ॥ 5 ॥

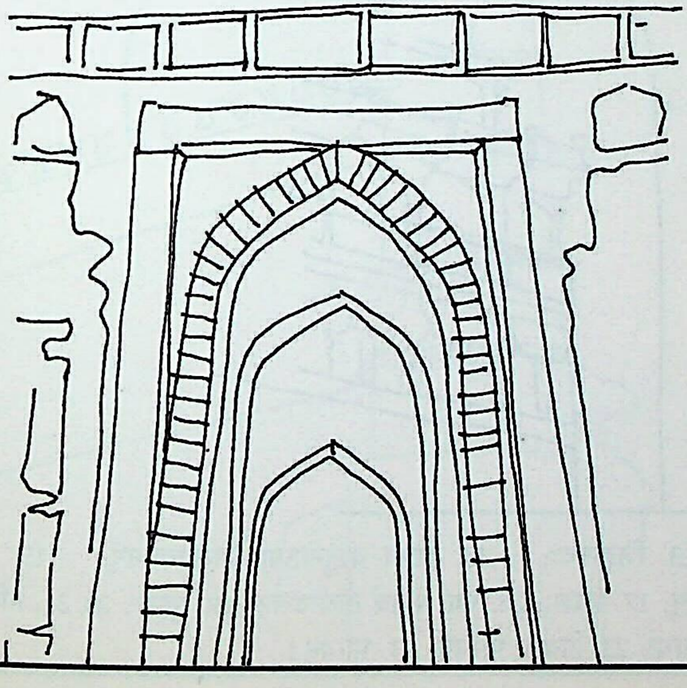

हाँ अहले तलब[13], कौन सुने ता'नः-ए-नायाफ़्त[14]
देखा, कि वह मिलता नहीं, अपने ही को खो आये
अपना नहीं वह शेवः[15], कि आराम से बैठें
उस दर[16] प नहीं बार[17], तो का'बे[18] ही को हो आये
की हमनफ़सों[19] ने असरे गिरियः[20] में तक़रीर[21]
अच्छे रहे आप उससे, मगर मुझको डुबो आये
उस अंजुमने नाज़[22] की क्या बात है, ग़ालिब
हम भी गये वाँ, और तेरी तक़दीर[23] को रो आये

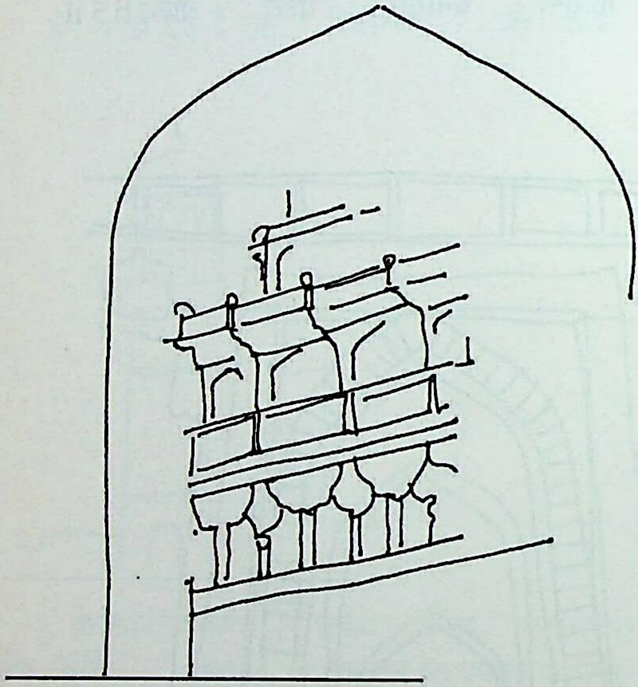

---

[13] जिज्ञासवः; [14] इष्टस्य वस्तुनोऽप्राप्तावाक्षेपवचनम्; [15] व्यवहारः; [16] द्वारम्; [17] प्रवेशः; [18] एकं पवित्रं तीर्थस्थलम्; [19] सुहृदः; [20, 21] रुदितप्रभावविषया चर्चा; [22] प्रियस्य परिषत्; [23] भाग्यम्।

आमयि जिज्ञासव इह शृणुयात् कोऽप्राप्तिजन्यमाक्षेपम्।
दृष्टं यत् स न लभ्यत इति विस्मृत एवमात्मैव ।।6।।
न निजः स व्यवहारो विश्रान्ताः क्वापि हन्त तिष्ठेम।
तद्द्वारि न प्रवेशे, 'का'बां' गत्वाऽऽगताः स्म इह ।।7।।
रुदितप्रभावविषया विदिता चर्चा तु मामकैर्मित्रैः।
स्वयमभिमतान्यभूवन्. न्यमज्जयन्मां परं हन्त ।।8।।
प्रियपरिषत्प्रस्तावे 'ग़ालिब' किन्तावदत्र वक्तव्यम्।
वयमपि तत्र प्राप्ता अरुदिम तव. चात्र भाग्यमनु ।।9।।

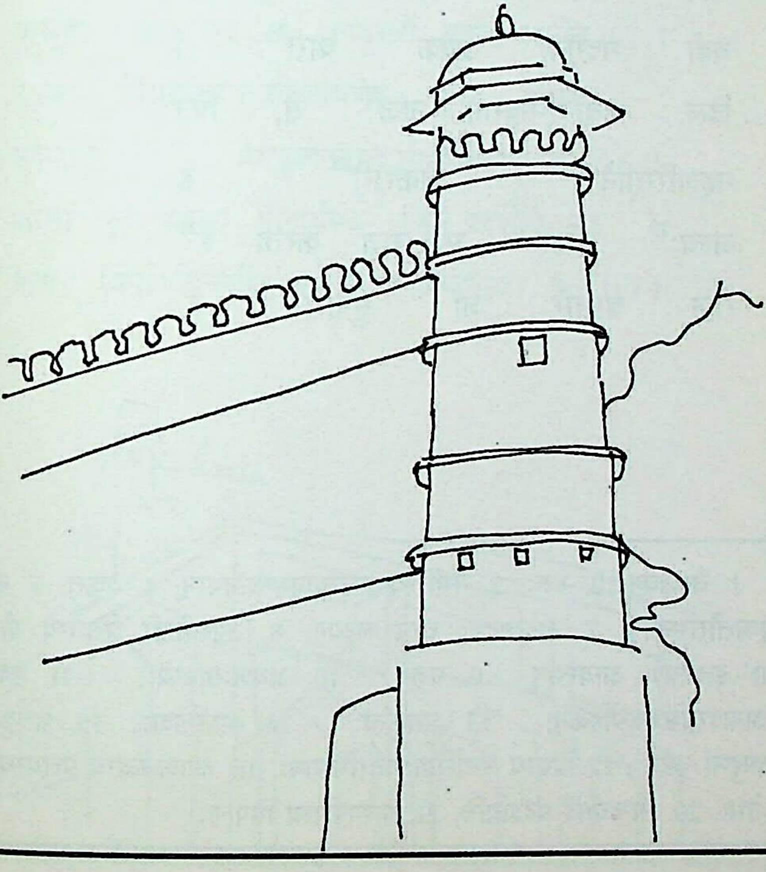

165

फिर कुछ इक दिल को बेक़रारी[1] है
सीनः[2] जोया-ए-ज़ख़्मकारी[3] है
फिर जिगर[4] खोदने लगा, नाखुन[5]
आमदे फ़स्ले लालः कारी[6] है
क़िबलः-ए-मक़्सदे निगाहे नियाज़[7]
फिर वही पर्दः-ए-'अमारी[8] है
चश्म[9] दल्लाले जिन्से रुसवाई[10]
दिल[11] ख़दीदारे ज़ौक़े ख़्वारी[12] है
वही सदरंग[13] नालः फ़रसाई[14]
वही सदगूनः[15] अश्क बारी[16] है
दिल हवा-ए-ख़िरामे नाज़[17] से, फिर
महशरिस्ताने बेक़रारी[18] है
जल्वः[19] फिर अर्ज़े नाज़ करता है[20]
रोज़ बाज़ारे जाँ सुपारी[21] है

---

1. वैकल्यम्; 2. वक्षः; 3. गभीरस्य व्रणस्यानुसन्धानपरम्; 4. यकृत्; 5. नखः; 6. पुष्पर्त्तोरागमनम्; 7. श्रद्धादृष्टेः चरमं लक्ष्यम्; 8. उष्ट्रस्योपरि स्थितस्य पीठस्य ('हौदा' इत्यस्य) आवरणम्; 9. चक्षुः; 10. अयशःसामग्यः; 11. हृदयम्; 12. अनादराभिरुचेर्ग्राहकम्; 13. शतकृत्वः; 14. आर्तनादाः; 15. शतकृत्वः; 16. अश्रुणां वृष्टयः; 17. प्रियस्य मन्थराया गतेरभिलाषः; 18. व्याकुलत्वस्य प्रलयस्थलम्; 19. शोभा; 20. सौन्दर्यमदं प्रदर्शयति; 21. प्राणार्पणस्य विपणिः;

165

अनुभवदिव वैकल्यं पुनरेकं किमपि मामकं हृदयम्।
अनुसन्दधानमस्ति व्रणं गभीरं नु यद्वक्षः ॥ 1 ॥
यकृदिव पुनरुत्खनितुं प्रावर्तत मामको नखस्तावत्।
आगमनस्यावसरः पुष्पर्तोरेष आभाति ॥ 2 ॥
श्रद्धादृष्टेस्तावच्चरमं लक्ष्यं मतन्नु यदिहास्ति।
पुनरभिलक्ष्यत एतत् तत्रास्तरणाख्यमावरणम् ॥ 3 ॥
अयशःसामग्रीणां मच्चक्षुर्मध्यवर्ति सञ्जातम्।
ग्राहकमस्ति मदीयं हृदयमिहानादराभिरुचेः ॥ 4 ॥
शतकृत्व आर्तनादाः प्रवर्तमानास्त एव सन्तीह।
अश्रूणां ता एव च शतकृत्वो वृष्टयः सन्ति ॥ 5 ॥
हृदयं प्रियमन्थरगत्यमिलाषेणेह भूय एतर्हि।
सञ्जातं व्याकुलताप्रलयस्थलमेतदस्माकम् ॥ 6 ॥
शोभा पुनः प्रवृत्ता सौन्दर्यमदं निजं प्रदर्शयितुम्।
अद्य विपणिदिनमस्ति प्राणानामर्पणस्य कृते ॥ 7 ॥

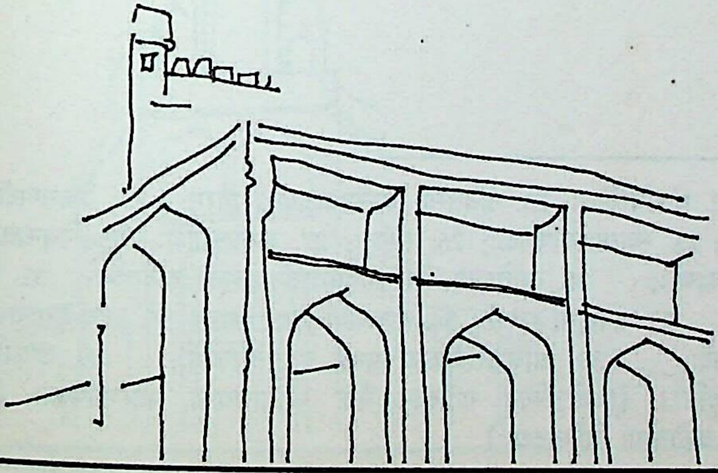

फिर उसी बेवफ़ा[22] प मरते हैं
फिर वही ज़िन्दगी हमारी है

क़त'अः

फिर खुला है दरे 'अदालते नाज़[23]
गर्म[24] बाज़ारे फ़ौजदारी[25] है
हो रहा है जहान[26] में अंधेर
ज़ुल्फ़[27] की फिर सरिश्तःदारी[28] है
फिर दिया पारः-ए-जिगर[29] ने सवाल[30]
एक फ़रियाद-ओ-आह-ओ-ज़ारी[31] है
फिर हुए हैं गवाहे 'अिश्क़[32] तलब[33]
अश्कबारी[34] का हुक्म[35] जारी है
दिल-ओ-मिशगाँ[36] का जो मुक़द्दमः[37] था
आज फिर उसकी रूबकारी[38] है
बेख़ुदी बेसबब[39] नहीं, ग़ालिब
कुछ तो है, जिसकी पर्दःदारी[40] है

---

[22] मोहविरहितः; [23] गर्वितस्य रूपन्यायालयस्य द्वारम्; [24] जनसम्मर्दक्लिष्ट इत्यर्थः; [25] न्यायालयापणकः; [26] संसारः; [27] कुन्तलराशिः; [28] निबन्धकत्वम्; [29] यकृत्खण्डः; [30] आवेदनम्; [31] साहाय्यार्थमाह्वानं रुदितञ्च; [32] प्रेम्णः साक्षिणः; [33] समाहूता इत्यर्थः; [34] बाष्पवर्षाः; [35] आज्ञा; [36] हृदयं दृगञ्चलञ्च; [37] विवादः; [38] अधिकरणिकस्य समक्षं प्रस्तुतिरित्यर्थः; [39] अकारणम्; [40] आवृतिः। (खण्डेऽस्मिन् ग़ालिवेन नैके न्यायालयस्य पारिभाषिकाः शब्दाः साफल्येन कवितायां विनिबद्धाः)

मोहविरहिते भूयस्तस्मिन्नेव म्रियामहे नूनम्।
जीवनमस्माकमिह प्रवर्तमानं तथैव पुनः ॥ 8 ॥

खण्डः

गर्वितरूपन्यायालयस्य भूयोऽस्त्यनावृतं द्वारम्।
जनसम्मर्दक्लिष्टो दण्डन्यायालयापणकः ॥ 9 ॥
चतसृषु दिक्षु समन्तात् प्रवर्धमानोऽन्धकार एतर्हि।
पुनरिह कुन्तलराशेर्निबन्धकत्वं फलीभूतम् ॥ 10 ॥
अधिकारार्थं यकृतः खण्डेनावेदनं कृतं भूयः।
साहाय्याह्वानेन प्रारब्धञ्चाथ रुदितेन ॥ 11 ॥
प्रेम्णः साक्षिण एते न्यायालयतः पुनः समाहूताः।
आज्ञा च सम्प्रवृत्ता सद्य इयं बाष्पवर्षाणाम् ॥ 12 ॥
हृदय-दृगञ्चलमध्ये विवाद आसीत् पुरा प्रवृत्तो यः।
अधिकरणिकस्य पुरतः प्रस्तुतिरस्त्यद्य तस्य पुनः ॥ 13 ॥
विस्मृतिरात्मन एषा 'ग़ालिब' नाकारणं मता नूनम्।
अस्ति नु यत्किञ्चिदिदं यत्रावृतिरस्ति काचिदिह ॥ 14 ॥

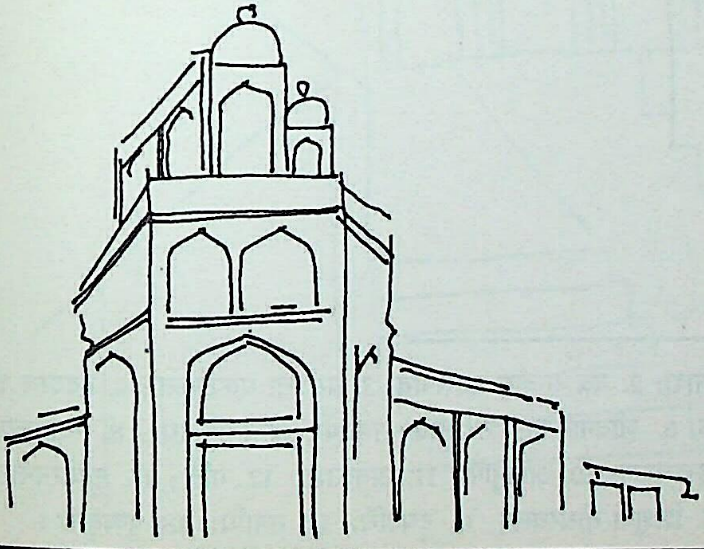

166

जुनूँ[1] तोह्मत कशे तस्कीं[2] न हो, गर शाद्मानी की[3]
नमकपाशे ख़राशे दिल[4] है, लज़्ज़त[5] ज़िन्दगानी[6] की
कशाकश हा-ए-हस्ती[7] से करे क्या स'अि-ए-आज़ादी[8]
हुई ज़ंजीर,[9] मौजे आब[10] को फ़ुर्सत[11] रवानी[12] की
पस अज़ मुर्दन[13] भी, दीवानः[14] ज़ियारत गाहे तिफ़्लाँ[15] है
शरारे सँग[16] ने तुर्बत[17] प मेरी, गुलफ़िशानी[18] की

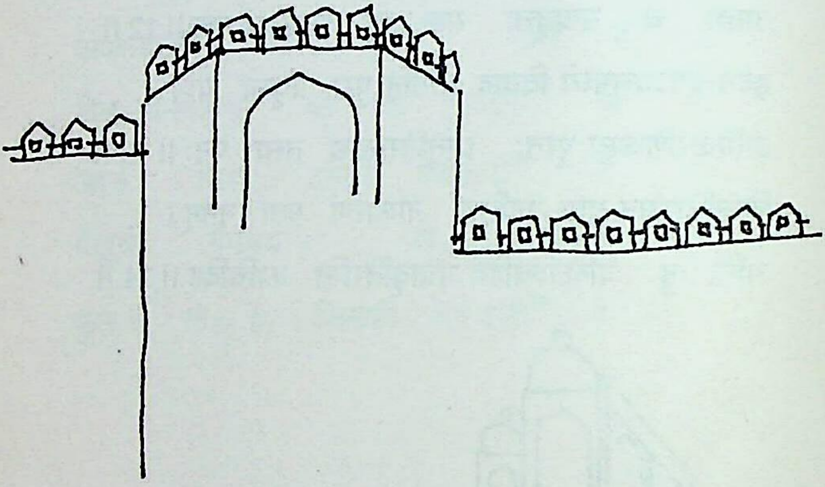

---

[1] उन्मादः; [2] यत्र सन्तोष आरोप्येत; [3] प्रसन्नता प्रकटीकृता; [4] हृदयस्य क्षते लवणप्रदः; [5, 6] जीवनानन्दः; [7] जीवन-सङ्घर्षः, बन्धनमित्यर्थः; [8] स्वातन्त्र्याय यत्नः; [9] शृङ्खलकम्; [10] अपामूर्मिः; [11] अवकाशः; [12] गतिः; [13] मृत्योरनन्तरम्; [14] मत्तः; [15] शिशूनां तीर्थस्थलम्; [16] दृषदर्चिः; [17] समाधिः; [18] पुष्पवृष्टिः।

166

अभवं यदि प्रसन्नो नोन्मादे काऽपि तृप्तिरारोप्या।
हृदयक्षते स लवणप्रदो य इह जीवनानन्दः ।।1।।
यत्नः स्वतन्त्रतायै जीवनसङ्घर्षतो नु किं कुर्यात्।
गत्यवकाशो जातः शृङ्खलकं वारिभङ्गस्य ।।2।।
मृत्योः पश्चान्मत्तः शिशुगणतीर्थस्थलत्वमुपलब्धः।
दृषदर्चिषा समाधौ मम विहिता पुष्पवृष्टिरिह ।।3।।

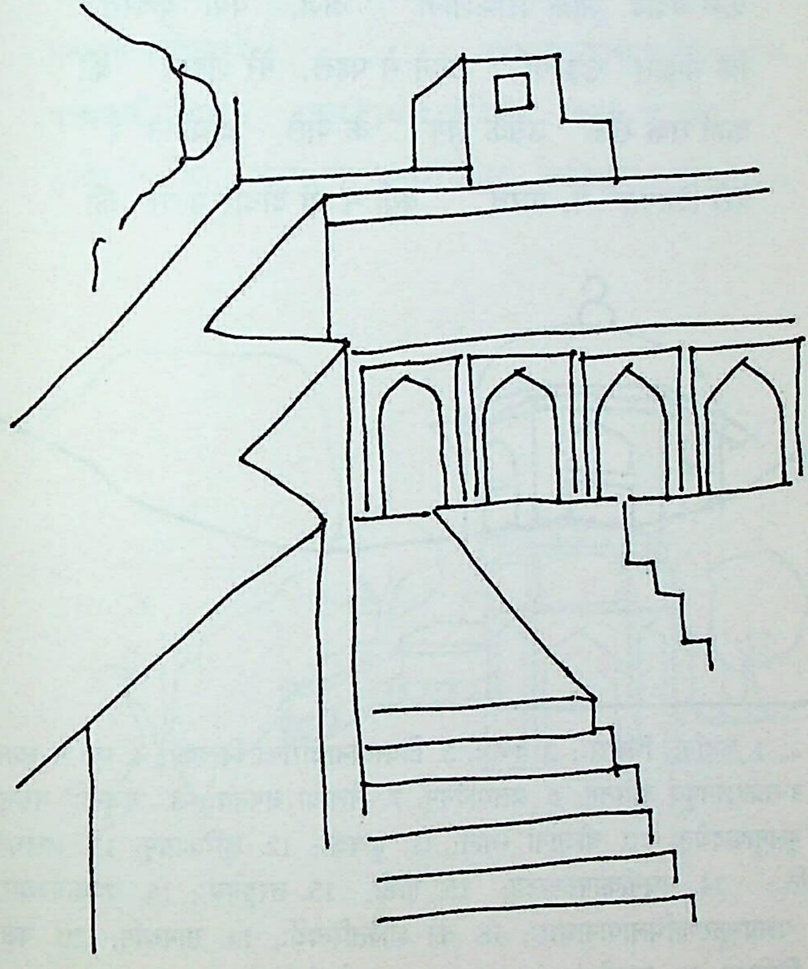

167

निकोहिश[1] है सज़ा[2], फ़रियादि-ए-बेदादे दिलबर[3] की
मबादा[4] ख़न्दः-ए-दन्दाँ नुमा[5] हो सुब्ह महशर[6] की
रगे लैला[7] को ख़ाके दश्ते मजनूँ[8], रेशगी बख़्शे[9]
अगर बो दे बजाये दानः[10] देह्क़ाँ[11], नोक नश्तर[12] की
परे परवानः[13], शायद बादबाने कश्ति-ए-मै[14] था
हुई मज्लिस[15] की गर्मी से रवानी[15] दौरे साग़र[16] की
करूँ बेदादे ज़ौक़े परफ़िशानी[17] 'अर्ज़, क्या क़ुदरत[18]
कि ताक़त[19] उड़ गई, उड़ने से पहले, मेरे शहपर[20] की
कहाँ तक रोऊँ उसके ख़ेमे[21] के पीछे, क़यामत है[22]
मेरी क़िस्मत[23] में, यारब[24], क्या न थी दीवार पत्थर की

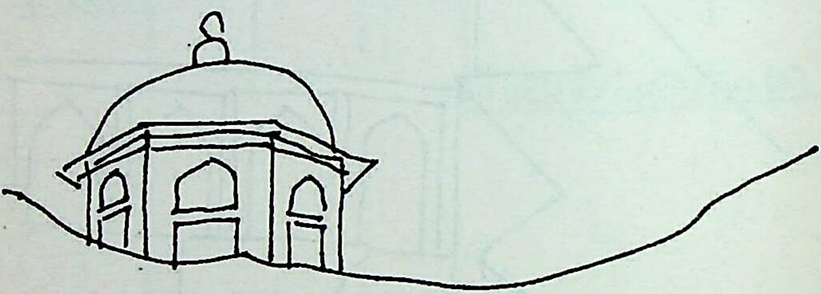

---

1. भर्त्सना, धिक्कारः; 2. दण्डः; 3. प्रियस्यानाचाराणां निन्दकः; 4. एवं न स्यात्; 5. दन्तप्रदर्शनपूर्वं हसितम्; 6. प्रलयदिनम्; 7. लैलाया धमनयः; 8. 'मजनोः' मरुभूः; 9. मूलमुत्पादयेत्; 10. बीजानां स्थाने; 11. कृषकः; 12. क्षुरिकाग्रम्; 13. शलभस्य पक्षतिः; 14. मधुनौकामरुत्पटम्; 15. गोष्ठी; 15. तरङ्गमयः; 16. चषकसञ्चारः; 17. पक्षप्रस्फुरणाभिलाषानाचारः; 18. का शक्तिरित्यर्थः; 19. सामर्थ्यम्; 20. पक्षः; 21. शिबिरम्; 22. प्रलयोऽयम्; 23. भाग्यम्; 24. हे ईश्वर !

167

प्रियदुर्व्यवहृतिनिन्दाकारिणि दण्डो नु कोऽपि धिक्कारः ।
न स्याद् यत् प्रलयदिनं दन्तान् सन्दर्शयद् विहसेत् ।। 1 ।।
कृषको 'मजनू'मरुभुवि बीजस्थाने वपेद् यदि क्वचन ।
क्षुरिकाग्रं तर्हि ततोऽङ्कुरिता 'लैला'धमनयः स्युः ।। 2 ।।
आसीन्मदिरातरणेर्मरुत्पटं शलभपक्षतिर्नाम ।
सञ्चारश्चषकाणां गोष्ठ्या औष्ण्यात्तरङ्गमयः ।। 3 ।।
पक्षप्रस्फुरणेच्छानाचारं वर्णयानि, का शक्तिः ।
मत्पक्षतिशक्तिरहो उड्डयनात्पूर्णमुड्डीना ।। 4 ।।
पश्चात्तच्छिबिरस्य, प्रलयोऽयं रोदिमीह हन्त कियत् ।
ईश्वर ! किं मद्भाग्ये प्रस्तरभित्तिर्न लिखिताऽऽसीत् ।। 5 ।।

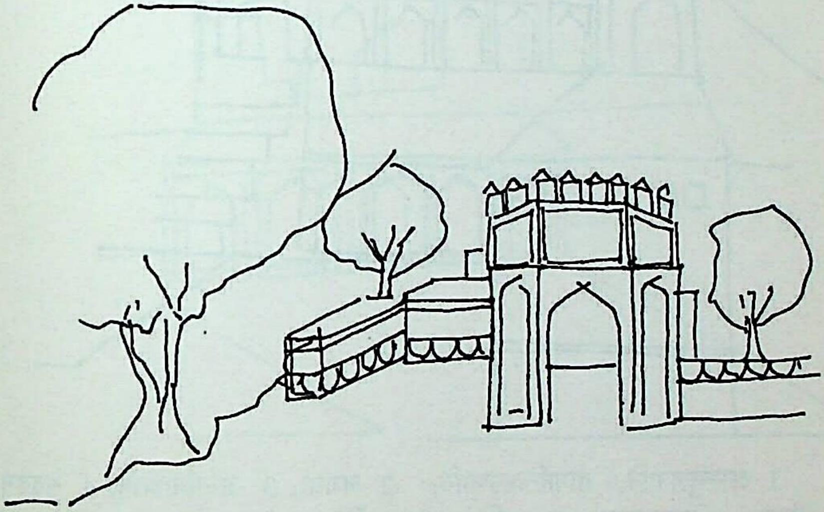

168

बे-ए'तिदालियों[1] से, सुबुक[2] सब में हम हुए
जितने ज़ियादः हो गये, उतने ही कम हुए

पिन्हाँ[3] था दामे सख़्त[4], क़रीब आशियाऩ[5] के
उड़ने न पाये थे, कि गिरफ़्तार[6] हम हुए

हस्ती[7] हमारी, अपनी फ़ना[8] पर दलील[9] है
याँ तक मिटे, कि आप हम अपनी क़सम[10] हुए

सख़्ती[11] कशाने 'अिश्क़[12] की, पूछे है क्या ख़बर
वह लोग रफ्तः रफ्तः[13] सरापा[14] अलम[15] हुए

तेरी वफ़ा[16] से क्या हो तलाफ़ी[17], कि दह्‌र[18] में
तेरे सिवा भी, हम प बहुत से सितम[19] हुए

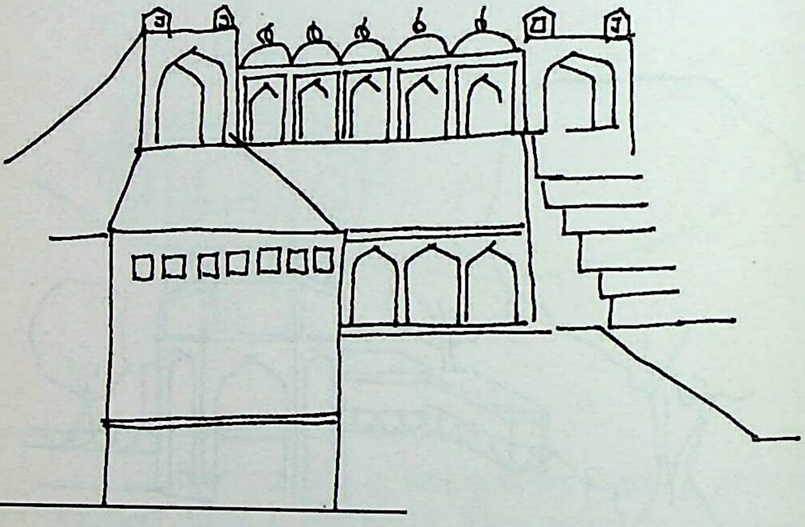

1. असन्तुलनानि, सीमातिक्रमणानि; 2. लघवः; 3. अन्तर्निहितम्; 4. सुदृढम्; 5. नीडम्; 6. पाशबद्धः; 7. अस्तित्वम्; 8. विलयः; 9. प्रमाणम्; 10. शपथाय नावशिष्टम्, अनस्तित्वं प्राप्तमित्यर्थः; 11, 12. प्रेम्णः काठिन्यस्य सोढा; 13. यथाक्रमम्; 14, 15. आमूल-चूलम्, मूर्तिमद् दुःखमित्यर्थः; 16. प्रेमनिर्वाहः; 17. क्षतिपूर्तिः; 18. संसारः; 19. अत्याचारः।

168

सीमातिक्रमणैरिह सर्वेषु प्रापिता वयं लघुताम्।
अधिका यावज्जातास्तावत् समभूम च न्यूनाः ।। 1 ।।
सुदृढं जालकमासीन्निहितं नीडस्य हन्त सन्निकटे।
उड्डयनात् प्रागेव प्रतिबद्धा वयमभूम ततः ।। 2 ।।
विलयस्यास्ति स्वस्य प्रमाणमस्माकमेतदस्तित्वम्।
विलयं तावत् प्रापितमिदमवशिष्टं न शपथाय ।। 3 ।।
ये नु सहन्ते प्रेम्णः काठिन्यं पृच्छसीह किन्तेषाम्।
आमूलचूलमभवन् यथाक्रमं मूर्तिमद् दुःखम् ।। 4 ।।
प्रेम्णस्तव निर्वाहात् क्षतिपूर्तिः का भवेद् यदिह जगति।
अस्मास्वत्याचारास्त्वामतिरिच्यापि समभूवन् ।। 5 ।।

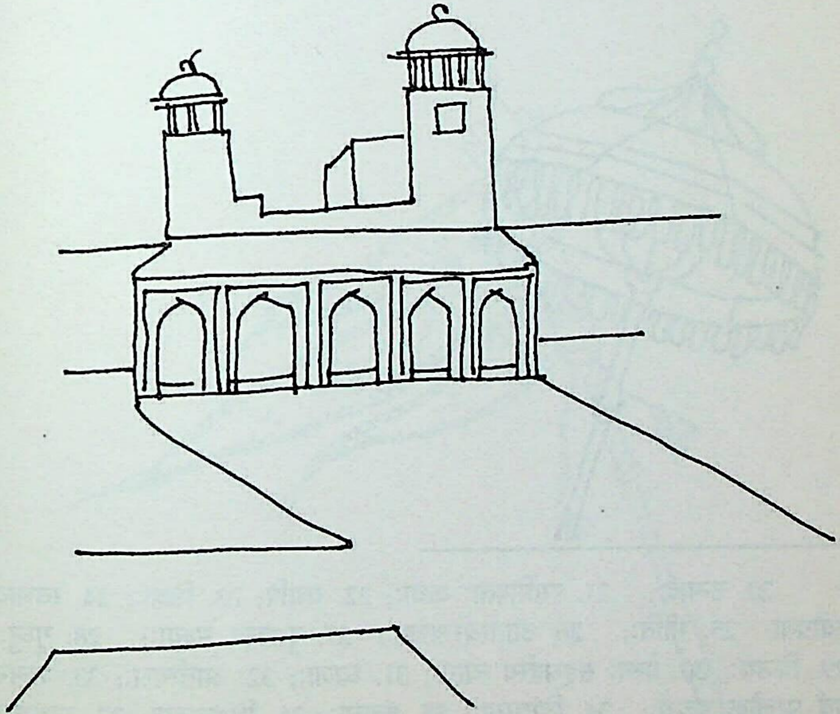

लिखते रहे, जुनूँ[20] की हिकायाते खूँ चकाँ[21]
हरचन्द[22] इसमें हाथ हमारे क़लम[23] हुए
अल्लाह री तेरी तुन्दि-ए-ख़ू,[24] जिसके बीम[25] से
अज्ज़ा-ए-नालः[26] दिल में मेरे रिज़्क़ हम[27] हुए
अहले हवस[28] की फ़त्ह[29] है, तर्के नबर्दे ’अिश्क़[30]
जो पाँव उठ गये, वही उनके ’अलम[31] हुए
नाले[32] ’अदम[33] में चन्द हमारे सिपुर्द[34] थे
जो वाँ न खिंच सके, सो वह याँ आ के दम[35] हुए
छोड़ी, असद न हमने गदाई[36] में दिल्लगी
साइल[37] हुए तो ’आशिक़े अहले करम[38] हुए

---

20. उन्मादः; 21. रससिक्ताः कथाः; 22. यद्यपि; 23. छिन्नाः; 24. स्वभावस्योग्रता; 25. भीतिः; 26. आर्तस्वरखण्डाः; 27. दुःखस्य भक्ष्याः; 28. गृध्नुः; 29. विजयः; 30. प्रेम्णः सङ्घर्षस्य त्यागः; 31. ध्वजाः; 32. आर्तस्वराः; 33. जन्मनः पूर्वं परलोक इत्यर्थः; 34. विन्यस्ताः; 35. श्वासाः; 36. भिक्षुकत्वम्; 37. याचकाः; 38. कृपालुषु प्रेमपरायणाः।

स्वस्योन्मादस्य कथाः स्वरक्तसिक्ता लिखन्त आस्म वयम्।
यद्यप्यस्मिन्नभवन्नस्माकं पाणयश्छिन्नाः ।। 6 ।।
प्रकृतिस्तवेयमुग्रा हा भगवन् भीतितोऽथ यस्या हि।
हृद्यार्तस्वरखण्डा जग्मुर्दुःखस्य भक्ष्यत्वम् ।। 7 ।।
प्रेम्णः सङ्घर्षस्य त्यागो गृध्नोर्जयो नु सञ्जातः।
तेषां ध्वजा अभूवंश्चरणा येऽभ्युत्थिता नूनम् ।। 8 ।।
आर्तस्वराः कतिपये परलोकेऽस्मासु हन्त विन्यस्ताः।
ये निर्गता न तत्र श्वासास्त इहागता अभवन् ।। 9 ।।
'असद' प्रेम त्यक्तं नास्माभिर्हन्त भिक्षुकत्वेऽपि।
अभवाम याचकाश्चेत् प्रेमपराः स्मः कृपावत्सु ।। 10 ।।

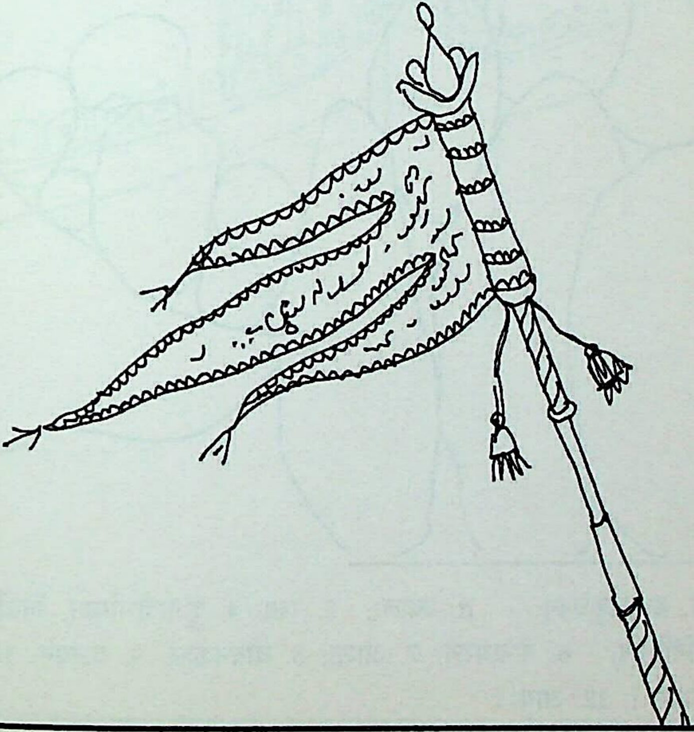

169

जो न नक़्दे दाग़े दिल[1] की, करे शोलः[2] पासूबानी[3]
तो फ़सुर्दगी[4] निहाँ[5] है, ब कमीने बेज़बानी[6]
मुझे उससे क्या तवक़्क़ो'अ[7], ब ज़मानः-ए-जवानी[8]
कभी कोदकी[9] में जिसने, न सुनी मेरी कहानी
यों ही दुख किसी को देना नहीं ख़ूब, वर्नः कहता
कि मेरे 'अदू[10] को, यारब[11], मिले मेरी ज़िन्दगानी[12]

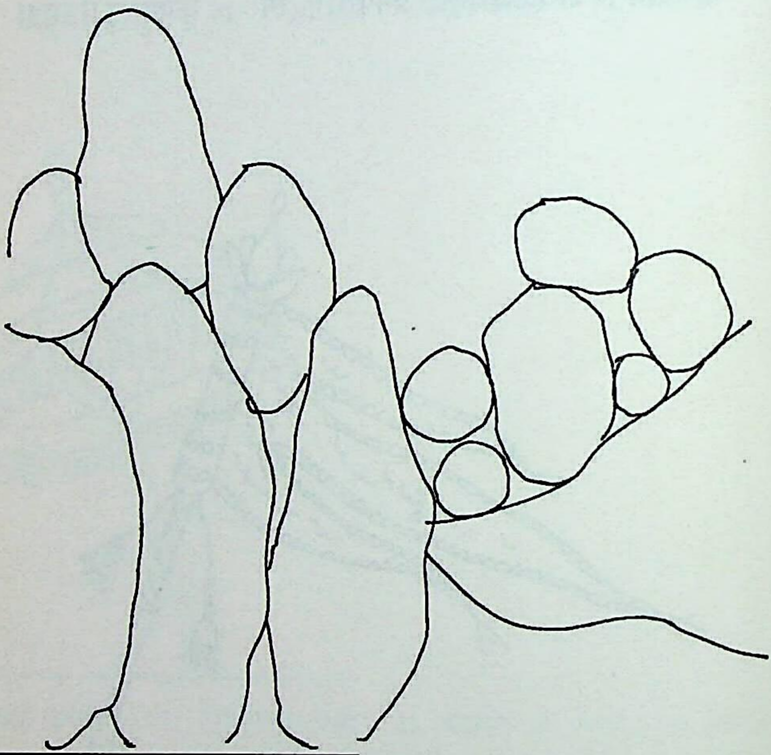

---

1. हृत्कलङ्कधनम्; 2. ज्वालः; 3. रक्षाः 4. दुःखदौर्भाग्यम्, निर्वापितत्वम्; 5. अन्तर्निहितम्; 6. मौनावरणे; 7. आशा; 8. यौवनकाले; 9. बाल्यम्; 10. शत्रुः; 11. हे ईश्वर !; 12. आयुः।

169

हृदयकलङ्कं धनमिह न ज्वालः कोऽपि नाम यदि रक्षेत्।
मौनावरणे निहितं नैराश्यं हन्त तदपहरेत्॥1॥
आशान्वितो भवेयं यौवनकाले किमेव तेनाहम्।
बाल्ये स्वीये येन श्रुता कदाचित् कथा न मम॥2॥
कस्मैचिदकारणमिह न ह्युचितं दुःखदानमथ नहि चेत्।
कथयेयमीश्वर! त्वं देहि ममायुर्नु मम रिपवे॥3॥

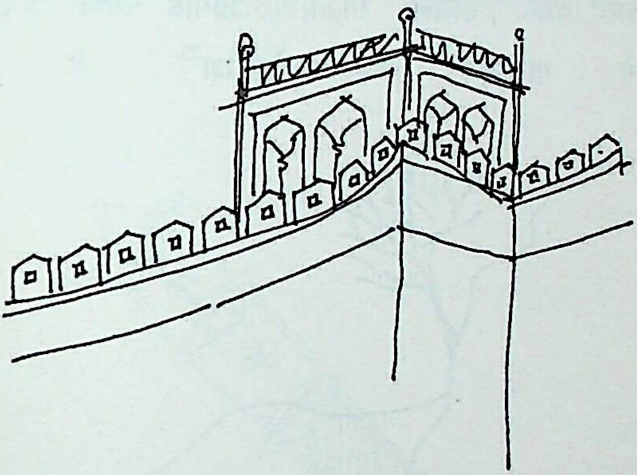

170

ज़ुल्मत कदे[1] में मेरे, शबे ग़म का जोश[2] है
इक शम्'अ[3] है दलीले सहर[4], सो ख़मोश[5] है

ने मुश़दः-ए-विसाल,[6] न नज़्ज़ारः-ए-जमाल[7]
मुद्दत हुई, कि आश्ति-ए-चश्म-ओ-गोश[8] है

मैंने किया है, हुस्ने ख़ुद आरा[9] को, बेहिजाब[10]
अय शौक़,[11] याँ इजाज़त-ए-तस्लीमे होश[12] है

गौहर[13] को 'अिक़्दे गर्दने ख़ूबाँ[14] में देखना
क्या औज[15] पर सितारः-ए-गौहर फ़रोश[16] है

दीदार[17] बादः[18], हौसलः[19] साक़ी,[20] निगाह मस्त[21]
बज़्मे ख़याल[22], मैकदः-ए-बेख़रोश[23] है

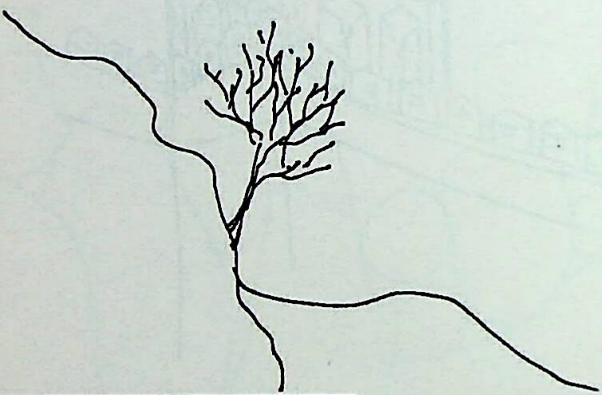

---

1. तिमिरगृहम्; 2. शोकनिशायाः प्रकर्षः, केवलं तिमिरमित्यर्थः; 3. दीपः; 4. उषसः प्रमाणम्; 5. गृहीतमौनः, निर्वाण इत्यर्थः; 6. प्रियमिलनस्य शुभः सन्देशः; 7. रूपस्य दर्शनम्; 8. अक्ष्णोः कर्णयोश्च मध्ये मैत्री; 9. स्वैर्हावैः सज्जं रूपम्; 10. निरावरणम्; 11. अभिलाष !; 12. चेतनायाः समर्पणानुमतिः; 13. मुक्ता; 14. प्रियजनगलमाला; 15. उत्कर्षः; 16. मुक्ताविक्रेतुर्भाग्यनक्षत्रम्; 17. दर्शनम्; 18. मदिरा; 19. साहसम्, उत्साहः; 20. मधुदात्री; 21. मत्ता दृष्टि; 22. कल्पनागोष्ठी; 23. शान्तः (कोलाहलरहितः) मदिरालयः;

170

तिमिरगृहे मम कश्चिच्छोकनिशो लक्ष्यते प्रकर्ष इव।
दीपः प्रमाणमुषसोऽस्त्येकः स गृहीतमौनश्च॥1॥
न प्रियमिलनसुवार्ता न हि तत्सौन्दर्यदर्शनञ्चापि।
जातः कालो नु कियान् कर्णाक्ष्णोर्मध्यतो मैत्र्याः॥2॥
रूपं स्वहावसज्जं कृतं मया सर्वथा निरावरणम्।
अभिलाष ! चेतनायाः समर्पणानुमतिरत्रास्ति॥3॥
मुक्तां सुन्दरजनगलमालाकलितां मुहूर्तमाकलय।
कियदुन्नतमिह मुक्ताविक्रेतुर्भाग्यनक्षत्रम्॥4॥
मधु यत्र प्रियदर्शनमुत्साहो मधुर ईक्षणं मत्तम्।
नीरव-मदिरागारं काचिदियं कल्पनागोष्ठी॥5॥

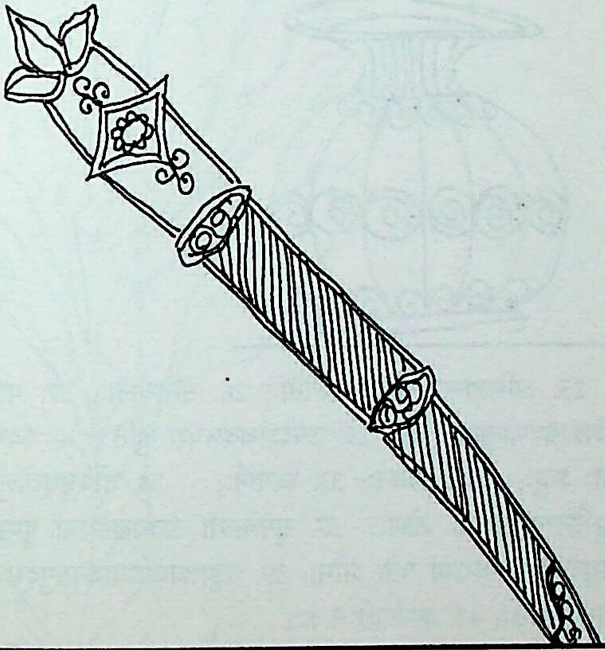

क़त’अः

अय ताज़ः वारिदाने बिसाते हवा-ए-दिल[25]
ज़िन्हार,[26] अगर तुम्हें हवसे नाय-ओ-नोश[27] है
देखो मुझे, जो दीदः-ए ’अिब्रत निगाह[28] हो
मेरी सुनो, जो गोशे नसीहत नियोश[29] है
साक़ी, ब जलवः[30] दुश्मने ईमान-ओ-आगही[31]
मुतरिब,[32] ब नग्मः,[33] रहज़ने तम्कीन-ओ-होश[34] है
या शब[35] को देखते थे, कि हर गोशः-ए-बिसात[36]
दामाने बाग़बान-ओ-कफ़े गुलफ़रोश[37] है
लुत्फ़े ख़िरामे साक़ि[38]-ओ-ज़ौक़े सदा-ए-चँग[39]
यह जन्नते निगाह,[40] वह फ़िर्दौसे गोश[41] है

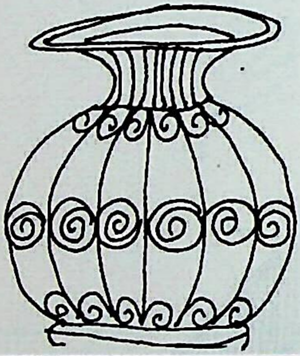

---

25. अभिलाषपरिषदि नवागताः; 26. सावधानाः; 27. पातुमिच्छा, पान-तर्षः; 28. शिक्षाग्रहणोत्सुका दृष्टिः; 29. उपदेशश्रवणपरा श्रुतिः; 30. स्वच्छव्या; 31. आस्था-बुद्ध्योः शत्रुः; 32. गायनः; 33. स्वगानैः; 34. तोषबुध्र्योर्लुण्टाकः; 35. रात्रिः; 36. कुट्टिमस्य प्रत्येकं कोणः; 37. सुमलाव्या अञ्चलमथवा पुष्पविक्रेतुः पाणितलम्; 38. मधुदात्र्या मन्थराया गतेः शोभा; 39. चङ्गाख्यवाद्यवादनसमुद्भवं सुखम्; 40. दृष्टेः पुरोगतः वैकुण्ठः; 41. कर्णगतो नाकः;

खण्डः

अयि कामनाधरित्र्या नवागता हन्त सावधानाः स्त।
गानं पानं प्रति वा कश्चिद् युष्मासु चेत् तर्षः ॥ 6 ॥
पश्यत मां यदि दृष्टिः शिक्षा ग्रहणोत्सुकाऽस्ति युष्माकम्।
श्रुतिरुपदेशस्य च वः श्रवणपरा हन्त मे शृणुत ॥ 7 ॥
मधुदात्री स्वच्छव्याऽऽस्थाया बुद्धेश्च हन्त शत्रुरिह।
गायन इतः स्वगानैर्लुण्टाकस्तोषबुद्ध्योश्च ॥ 8 ॥
अथवाऽपश्याम निशि प्रत्येकं कुट्टिमस्य कोण इह।
सुमलाव्यञ्चलमथवा पाणितलं पुष्पविक्रेतुः ॥ 9 ॥
पाययितृमन्दगतिजा शोभा चङ्गाख्यवाद्यजञ्च सुखम्।
वैकुण्ठ एव दृष्टेः पुरः स नाकश्च कर्णगतः ॥ 10 ॥

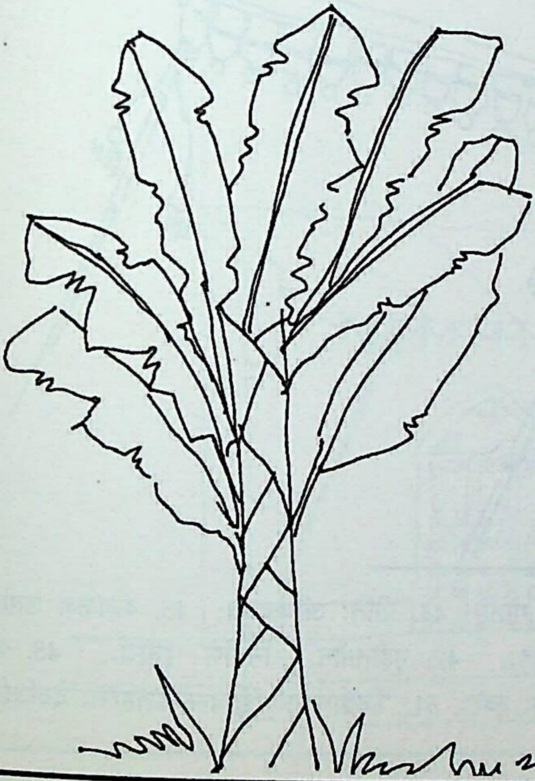

या सुब्ह दम[42] जो देखिये आकर, तो बज़्म[43] में
ने वह सुरूर-ओ-सोज़[44], न जोश-ओ-ख़रोश[45] है
दाग़े फ़िराक़े सोह्बते शब[46] की जली हुई
इक शम्’अ रह गई है, सो वह भी ख़मोश[47] है
आते हैं ग़ैब[48] से, यह मज़ामी[49] खयाल में
ग़ालिब, सरीरे ख़ामः[50] नवा-ए-सरोश[51] है

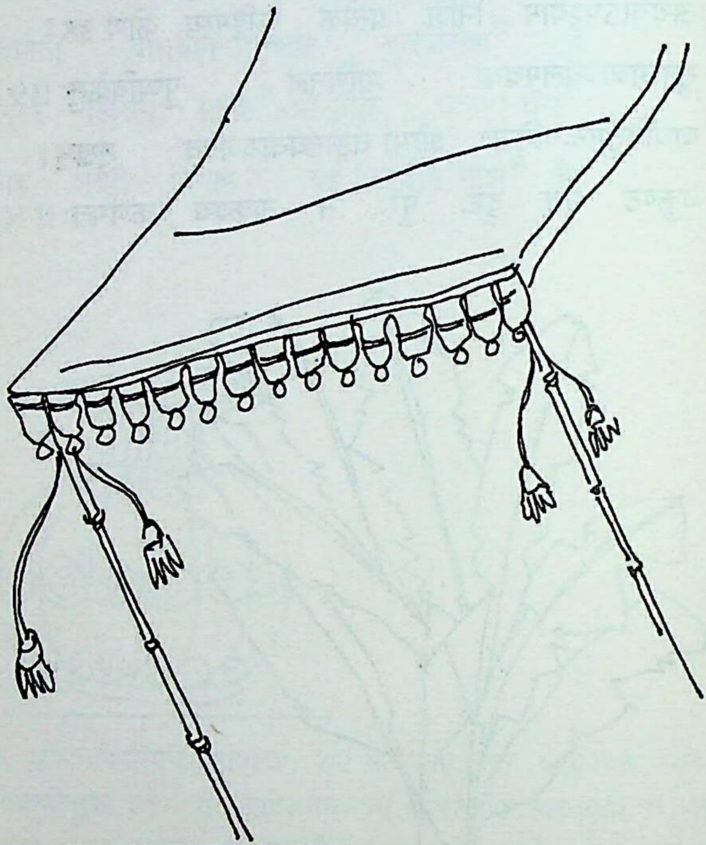

---

42. प्रातः; 43. गोष्ठी; 44. प्रीतिः औष्ण्यञ्च; 45. कलकल उत्साहश्च; 46. रात्रिगोष्ठ्या विरहकलङ्कः; 47. गृहीतमौनः, निर्वाण इत्यर्थः; 48. परोक्षः; 49. विषयाः; 50. लेखन्याः स्वरः; 51. ‘जिब्रीलस्य’ (ईश्वरसन्देशहरस्य देवविशेषस्य) स्वरः।

अथवा क्वचित् प्रभाते गोष्ठीमुपगत्य दृश्यते यदि चेत्।
सा न मुदथ न तदौष्ण्यं न च तावथ कलकलोत्साहौ ॥ 11 ॥
रात्रेर्गोष्ठ्याः कश्चन विरहकलङ्कः कुतश्चन ज्वलितः।
आसीत् प्रदीप एको गृहीतमौनोऽधुना सोऽस्ति ॥ 12 ॥
'ग़ालिब' परोक्षतोऽमी ध्यानेऽवतरन्ति मामके विषयाः।
स्वर इह मल्लेखन्या 'ज़िब्रीलस्य' स्वरो नाम ॥ 13 ॥

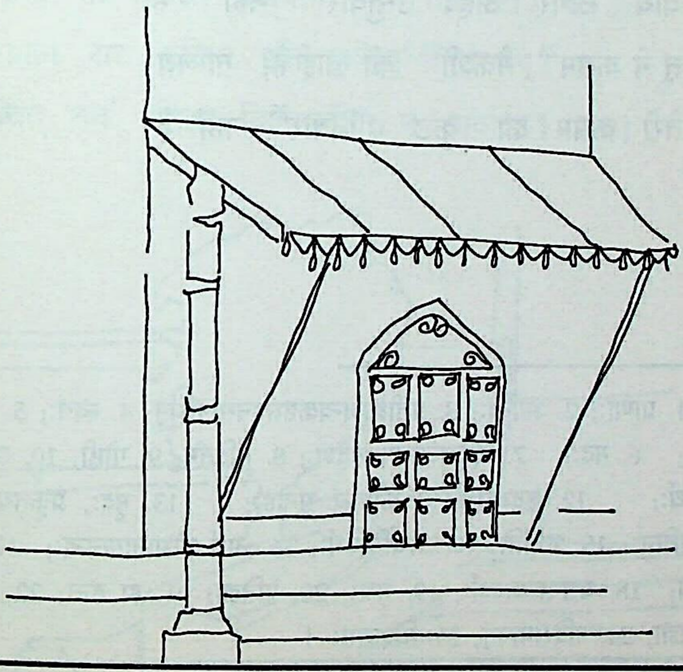

171

आ, कि मेरी जान[1] को क़रार[2] नहीं है
ताक़ते बेदादे इन्तिज़ार[3] नहीं है
देते हैं जन्नत[4], हयाते दह्र[5] के बदले
नश्शः[6] ब अन्दाज़ः-ए-ख़ुमार[7] नहीं है
गिरियः[8] निकाले है तेरी बज़्म[9] से, मुझको
हाय, कि रोने प इख़्तियार[10] नहीं है
हम से, 'अबस[11] है, गुमाने रंजिशे ख़ातिर[12]
ख़ाक[13] में 'उश्शाक़[14] की ग़ुबार[15] नहीं है
दिल से उठा लुत्फ़े जल्वः हा-ए-म'आनी[16]
ग़ैरे गुल[17], आईनः-ए-बहार[18] नहीं है
क़त्ल[19] का मेरे किया है 'अह्द[20] तो बारे
वाय[21], अगर 'अह्द उस्तुवार[22] नहीं है
तू ने क़सम[23] मैकशी[24] की खाई है, ग़ालिब
तेरी क़सम का कुछ ए'तिबार[25] नहीं है

---

1. प्राणाः; 2. शान्तिः; 3. प्रतीक्षाजन्यकष्टसहनसामर्थ्यम्; 4. स्वर्गः; 5. जागतिकं जीवनम्; 6. मदः; 7. मदिराजन्यमदसदृशः; 8. रुदितम्; 9. गोष्ठी; 10. अधिकारः; 11. व्यर्थः; 12. हृदयस्थितस्य कोपस्य सन्देहः; 13. मृदः, प्रकृतय इत्यर्थः; 14. प्रणयिनः; 15. रजांसि, रजस्तत्त्वमित्यर्थः; 16. अर्थ-शोभानामानन्दः; 17. प्रसूनादतिरिच्य; 18. वसन्तस्यादर्शः; 19. वधः; 20. प्रतिज्ञा; 21. हा हन्त; 22. द्रढीयसी; 23. प्रतिज्ञा; 24. मदिरापानम्; 25. विश्वासः ।

171

आयाहि, मामकेषु प्राणेषु न काचिदस्ति यच्छान्तिः।
कष्टं न मे प्रतीक्षाजन्यं सोढुञ्च सामर्थ्यम्।।1।।
जगतोऽस्य जीवनस्य स्थाने स्वर्गः प्रदीयते, किन्तु।
मदिराजन्यः कश्चिन्मदो न तत्रेति कलयामः।।2।।
विवशीकरोति रुदितं त्वद्गोष्ठ्या हन्त मां विनिर्गतुम्।
रुदितेऽथ मामकीनो हा हन्त न कश्चिदधिकारः।।3।।
कुपिता इत्यस्मासु व्यर्थः कश्चिन्नु हन्त सन्देहः।
मृत्सु प्रणयवतां यद् भवति न किञ्चिद् रजस्तत्त्वम्।।4।।
अनुभवनीयः स्वहृदाऽऽनन्दो वागर्थजन्यशोभानाम्।
वासन्तिक आदर्शः प्रसूनमतिरिच्य नास्तीह।।5।।
गत्वाऽन्ततो मदीयस्तेन वधस्तावता प्रतिज्ञातः।
हा हन्त सा प्रतिज्ञा द्रढीयसी नेह तस्यास्ति।।6।।
मदिरापानं नाहं करिष्य इति 'ग़ालिब' प्रतिज्ञातम्।
किञ्चित् तव प्रतिज्ञा विश्वसनीया न तावदिह।।7।।

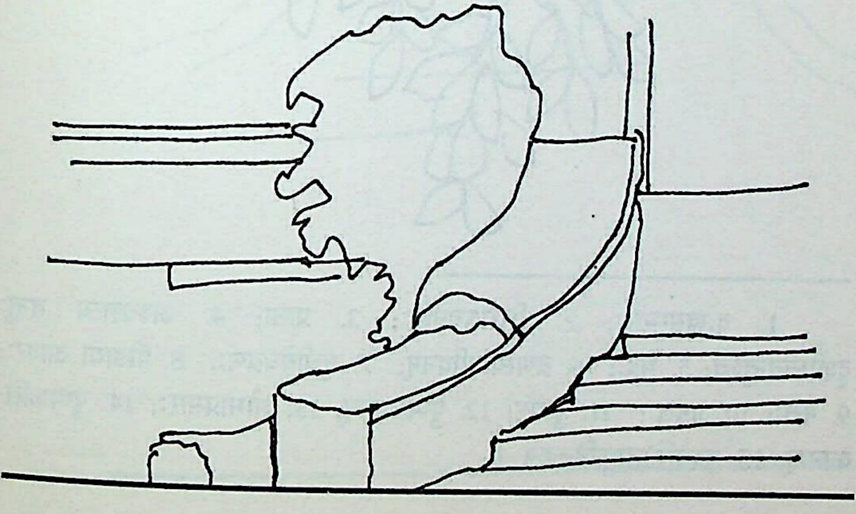

172

हुजूमे ग़म[1] से, याँ तक सरनिगूनी[2] मुझको हासिल[3] है
कि तारे दामन-ओ-तारे नज़र[4] में फ़र्क़[5] मुश्किल है
रफ़ू-ए-ज़ख़्म[6] से मतलब है लज़्ज़त ज़ख़्मे सोज़न[7] की
समझियो मत, कि पासे दर्द[8] से, दीवानः[9] ग़ाफ़िल[10] है
वह गुल[11] जिस गुलसिताँ[12] में जल्वः फ़रमाई[13] करे, ग़ालिब
चिटकना ग़ुँचः-ए-गुल[14] का, सदा-ए-ख़न्दः-ए-दिल[15] है

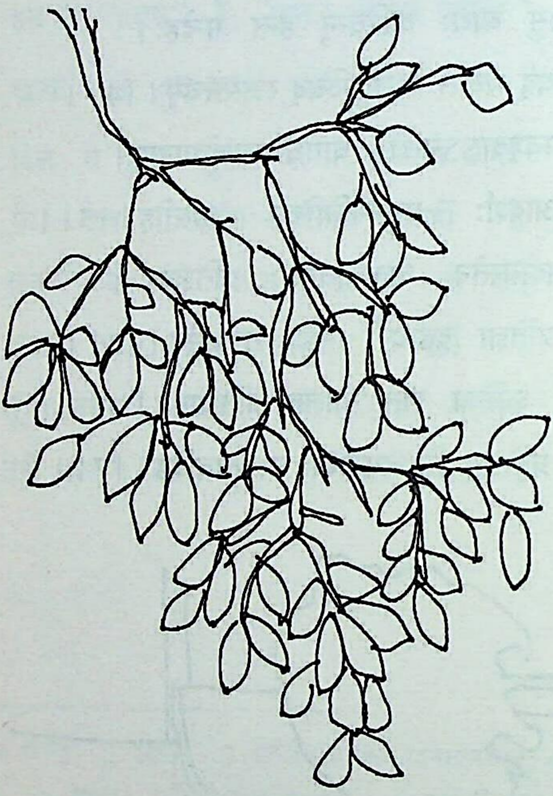

---

1. दुःखसम्भारः; 2. शिरोऽवनतिः; 3. प्राप्ता; 4. अञ्चलस्य तन्तुः दृशीस्ततन्तुश्च; 5. भेदः; 6. व्रणस्य सीवनम्; 7. सूचीवेघव्रणः; 8. पीडाया आदरः; 9. मत्तः; 10. प्रमत्तः; 11. पुष्पम्; 12. पुष्पोद्यानम्; 13. शोभाप्रसारः; 14. पुष्पकलिकानाम्; 15. हृदयस्मितस्फुटितकम् ।

172

दुःखानां सम्भारादेतावन्मामकं शिरोऽवनतम्।
अञ्चल-लोचनतन्त्वोर्यत् कठिनं भेदसन्धानम्।।1।।
व्रणसीवनेन सूचीवेधव्रणसौख्यमेकमुद्देश्यम्।
मत्तः पीडादरतः प्रमत्त इति नेह मन्तव्यः।।2।।
यस्मिन् पुष्पोद्याने तत् पुष्पं स्वां प्रसारयेच्छोभाम्।
'ग़ालिब' तत्र कलीनां स्फुटितं हृदयस्मितस्फुटितम्।।3।।

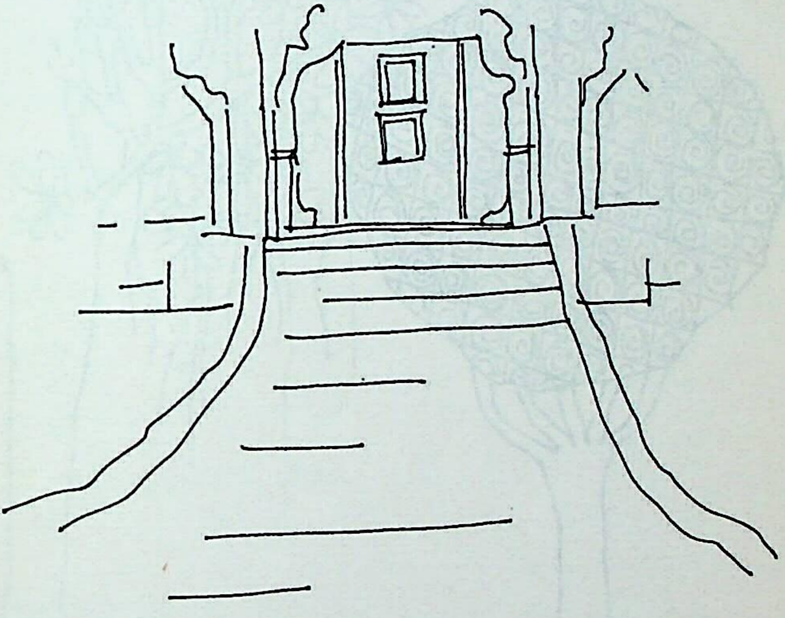

173

पा ब दामन[1] हो रहा हूँ, बस कि मैं सहरानवर्द[2]
ख़ारे पा[3] हैं, जौहरे आईनः-ए-ज़ानू[4] मुझे
देखना हालत[5] मेरे दिल की, हमआग़ोशी[6] के वक़्त
है निगाहे आश्ना[7], तेरा सरे हर मू[8], मुझे
हूँ सरापा[9] साज़े आहँगे शिकायत[10], कुछ न पूछ
है यही बेहतर[11], कि लोगों में न छेड़े तू मुझे

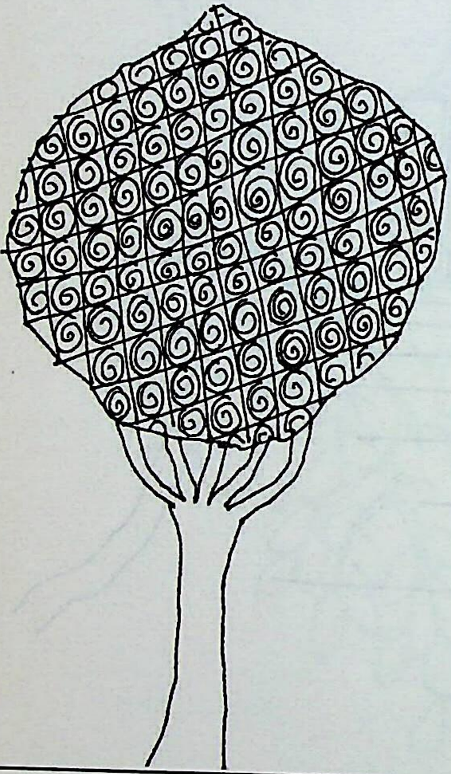

---

[1] बद्धचरण:, इतस्ततश्चलनाद् विरत इत्यर्थ:; [2] अरण्यविहारव्यसनी; [3] पदकण्टका:; [4] जङ्घामुकुरगतं तारल्यम्; [5] दशा; [6] आलिङ्गनम्; [7] प्रणयकलिता दृक्; [8] प्रत्येकं चिकुराग्र:; [9] आमूलचूलम्, सामग्र्यत इत्यर्थ:; [10] आक्षेपरागकलितं वाद्यम्; [11] वरम्।

173

सोऽहमरण्यविहारव्यसनी सुतरां स बद्धचरणोऽस्मि।
पदकण्टका मदर्थं जङ्घामुकुरस्थतारल्यम्।।1।।
आलिङ्गनस्य काले द्रक्ष्यसि हृदयस्थितिं मदीयां त्वम्।
चिकुराग्रः प्रत्येकं तव मत्प्रणयान्विता दृगिति।।2।।
आक्षेपरागकलितं वाद्यं सामग्र्यतोऽस्मि, मा पृच्छ।
स्यादेतदेव वरमिह जनमध्ये न स्पृशेर्यन्माम्।।3।।

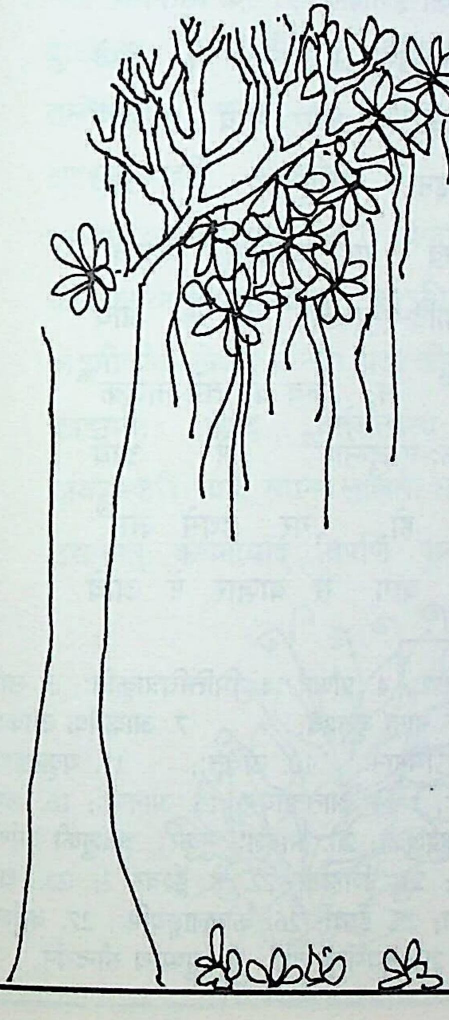

174

जिस बज़्म[1] में, तू नाज़[2] से, गुफ़्तार[3] में आवे
जाँ[4], कालबुदे सूरते दीवार[4] में आवे

साये[5] की तरह साथ फिरें सर्व-ओ-सनोबर[6]
तू इस क़दे दिलकश[7] से, जो गुलज़ार[8] में आवे

तब नाज़े गिराँ मायगि-ए-अश्क[9] बजा[10] है
जब लख़्ते जिगर[11] दीद:-ए-ख़ूँबार[12] में आवे

दे मुझको शिकायत की इजाज़त[13], कि सितमगर[14]
कुछ तुझको मज़ा[15] भी मेरे आज़ार[16] में आवे

उस चश्मे फ़ुसूँगर[17] का, अगर पाये इशारा[18]
तूती[19] की तरह आइन:[20] गुफ़्तार में आवे

काँटों की ज़बाँ[21] सूख गई प्यास से, यारब[22]
इक आब्ल: पा[23] वादि-ए-पुरख़ार[24] में आवे

मर जाऊँ न क्यों रश्क[25] से, जब वह तने नाज़ुक[26]
आग़ोशे ख़मे हल्क़:-ए-ज़ुन्नार[27] में आवे

गारतगरे नामूस[28] न हो, गर हवसे ज़र[29]
क्यों शाहिदे गुल[30], बाग से बाज़ार में आवे

---

1. गोष्ठी; 2. हावः; 3. वार्तालापः; 4. प्राणाः; 4. भित्तिचित्राकृतिः; 5. छाया; 6. सर्व'नामा मोरपंखी त्याख्यः, 'सरल' नामा वृक्षश्च; 7. आकर्षक आकारः; 8. उद्यानम्; 9. अश्रूणां स्वमहार्हत्वेऽभिमानः; 10. उचितः; 11. यकृत्खण्डः; 12. अश्रुवर्षिणी दृक्; 13. अनुमतिः; 14. आततायिन्; 15. आनन्दः; 16. कष्टम्; 17. मायिनी दृक्; 18. सङ्केतः; 19. क्षुद्रशुकी; 20. आदर्शः, मुकुरः, क्षुद्रशुकी दर्पणाग्रे निधाय शब्दोच्चारणे शिक्षिता क्रियते; 21. जिह्वा; 22. हे ईश्वर !; 23. चरणे स्फुटिभृत्; 24. कण्टकभरिता उपत्यका; 25. ईर्ष्या; 26. कोमलाङ्गयष्टिः; 27. वर्तुलस्य यज्ञोपवीतस्य क्रोडः; 28. अयशस्करः; 29. सुवर्णस्य तर्षः; 30. पुष्पस्य सौन्दर्यम्;

174

सम्भाषणोन्मुखः स्या यस्यां हावेन हन्त गोष्ठ्यां त्वम्।
ननु सञ्चरेयुरसवस्तस्यां चित्रेषु भित्तीनाम्।।1।।
छायेवानुसरेयुः 'सर्व'-सरलशाखिनोऽनुलग्नास्त्वाम्।
उद्यानं त्वमुपेया यदीदृशो मोहनाकारः।।2।।
बहुमूल्यत्वेऽश्रूणामुचितो गर्वस्तदाऽवकल्प्येत।
दृशि लोहितवर्षिण्यां यदा समुदियाद् यकृत्खण्डः।।3।।
अनुमन्यस्वेदानीमिहाततायिन्नु मामुपालब्धुम्।
दुःखेऽपि मामकीने त्वमनुभवेस्तावदानन्दम्।।4।।
तस्येक्षणस्य मायिन इह सङ्केतं लभेत चेदेषः।
क्षुद्रशुकीवादर्शे भवेन्नु सम्भाषणप्रवणः।।5।।
रसनासु कण्टकानामजनीश ! पिपासयेह शुष्कत्वम्।
कण्टकमयीमुपेयादुपत्यकां कोऽपि पत्स्फुटिभृत्।।6।।
कथमीर्ष्यया म्रियेय न तदा यदा कोमलाङ्गयष्टिः सः।
क्रोडगतः स्याद् वर्तुलतरस्य यज्ञोपवीतस्य।।7।।
अयशस्करी यदि स्यान्न लालसा सर्वथा सुवर्णस्य।
उद्यानात् कथमायाद् विपणिं पुष्पस्य सौन्दर्यम्।।8।।

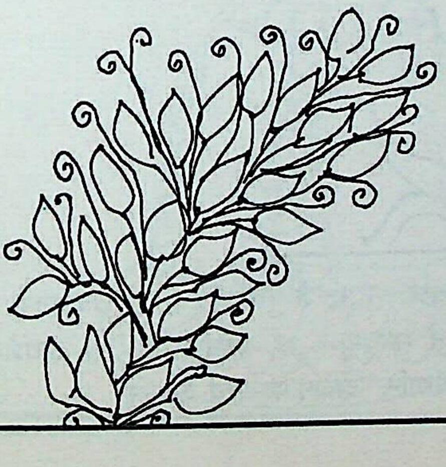

तब चाके गरीबाँ[31] का मज़ा है, दिले नादाँ[32]
जब इक नफ़स[33] उलझा हुआ, हर तार में आवे
आतशकदः[34] है सीनः[35] मेरा, राज़े निहाँ[36] से
अय वाय, अगर मा’रिज़े इज़हार[37] में आवे
गंजीनः-ए-मा’नी[38] का तिलिस्म[39] उसको समझिये
जो लफ़्ज़[40] कि ग़ालिब मेरे अश’आर[41] में आवे

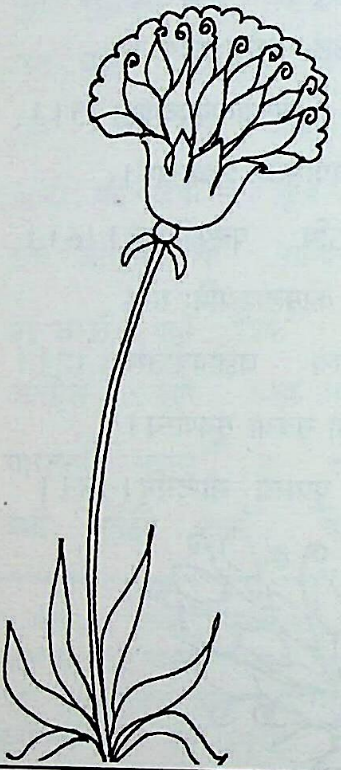

---

31. गलवसनस्य च्छेदः ; 32. हे मुग्धहृदय !; 33. श्वसितम्; 34. अग्निशाला; 35 वक्षः; 36. अन्तर्निहितं रहस्यम्; 37. वर्णनपरिधिः; 38. अर्थशेवधिः; 39. इन्द्रजालम्; 40. शब्दः; 41. पद्यानि, ‘दीवान’पदवाच्यं काव्यम्।

अयि हृदय मुग्ध ! मन्ये गलवसनच्छेदजं तदा सौख्यम्।
आयादेकं श्वसितं प्रत्येकं तन्तुना लग्नम्।।9।।
अन्तर्निहितरहस्यं वक्षो मम काचिदग्निशाला’ऽस्ति।
हा हन्त यदि तदेतद् वर्णनपरिधिं समागच्छेत्।।10।।
अर्थाकरस्य ‘ग़ालिब’ तमिन्द्रजालं किमप्यवेहि ननु।
काव्ये शब्द उपेयाद् यो मम ‘दीवान’पदवाच्ये।।11।।

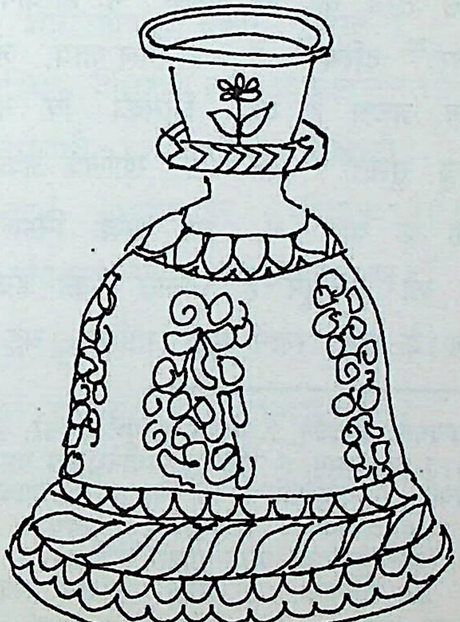

175

हुस्ने मह[1] गरचे:[2] ब हंगामे कमाल[3], अच्छा है
उससे मेरा महे ख़ुर्शीद जमाल[4] अच्छा है

बोस:[5] देते नहीं, और दिल प है हर लह्ज:[5] निगाह[6]
जी में कहते हैं, कि मुफ़्त आये तो माल अच्छा है

और बाज़ार से ले आये, अगर टूट गया
साग़रे जम[7] से मेरा जामे सिफ़ाल[8] अच्छा है

बेतलब[9] दें तो मज़ा उसमें सिवा मिलता है
वह गदा[10], जिसमें न हो ख़ू-ए-सवाल[11], अच्छा है

उनके देखे से, जो आ जाती है मुँह पर रौनक़[12]
वह समझते हैं कि बीमार[13] का हाल अच्छा है

देखिये, पाते हैं 'उश्शाक़[14], बुतों[15] से क्या फ़ैज़[16]
इक ब्रह्मन ने कहा है, कि यह साल अच्छा है

हम सुख़न[17] तेशे[18] ने फ़र्हाद को, शीरीं से किया
जिस तरह का कि किसी में हो कमाल[19], अच्छा है

क़तर:[20] दरिया[21] में जो मिल जाय, जो दरिया हो जाय
काम अच्छा है वह, जिसका कि मआल[22] अच्छा है

ख़िज़्र सुलताँ[23] को रखे, ख़ालिक़े अकबर[24] सरसब्ज़[24]
शाह के बाग़ में, यह ताज़: निहाल[25] अच्छा है

हम को मा'लूम है, जन्नत[26] की हक़ीक़त[27], लेकिन
दिल के ख़ुश रखने को, ग़ालिब, यह ख़याल अच्छा है

---

1. चन्द्रमस: सौन्दर्यम्; 2. यद्यपि; 3. पूर्णत्वावसरे; 4. सूर्याभश्चन्द्र:, प्रिय इत्यर्थ:; 5. चुम्बनम्; 5. प्रतिक्षणम्; 6. दृष्टि: 7. प्राचीनेरानस्य सम्राट् जमशेद:, तस्य मधुपात्रम्; 8. मृन्मयश्चषक:; 9. याच्त्रांविना; 10. भिक्षुक:; 11. याच्ञारूपा प्रकृति:; 12. कान्ति:; 13. रुग्ण:; 14. प्रणयिन:; 15. मूर्तिभ्य:, इत्यर्थ:; 16. लाभ:; 17. समभाष:; 18. कुद्दाल:, (शीरीं-फर्हादयो: कथा पूर्वमपि निर्दिष्टा); 19. वैशिष्ट्यम्; 20. जलकण:; 21. समुद्र:; 22. परिणाम:; 23. ख़िज़्र सुलतान इत्याख्यो बहादुरशाहस्य पुत्र:; 24. ईश्वर:; 24. सविकास:; 25. नवाङ्कुर:; 26. स्वर्ग:; 27. यथार्थ्यम।

175

राकेन्दोः सौन्दर्यं यद्यपि प्रतिभाति सुष्ठु पूर्णतया।
तदपि ततोऽपि ममेन्दुः सूर्याभो भाति सुष्ठुतरः।।1।।
दत्ते न चुम्बनं मे प्रतिक्षणं दृष्टिरस्ति मद्धृदि च।
हृद्यभिधत्ते मूल्यं विनैव लभ्येत, सुष्ठु स्यात्।।2।।
विपणेरानीयेत स्याद् यदि भग्नं क्वचित् ततोऽन्यदपि।
'जम'मधुचषकादिह मम मृन्मधुपात्रं तु सुष्ठुतरम्।।3।।
याच्ञां विनैव दद्यादानन्दो लभ्यते ततोऽतिशयम्।
याच्ञाप्रकृतिविरहितो यो भिक्षुः स प्रशस्यतरः।।4।।
तस्यावलोकनेन स्फुटमुल्लसतीव यन्मुखे कान्तिः।
वेत्ति स रुग्णस्यास्ति स्वास्थ्यं सन्तोषजनकमिति।।5।।
इह पश्याम लभन्ते कं लाभं प्रणयिनः प्रियेभ्य इति।
वर्षमिदं शोभनमित्येकेन ब्राह्मणेनोक्तम्।।6।।
'फ़र्हादं' सहभाषं 'शीरीं'-प्रियया चकार कुद्दालः।
यत्किञ्चिदपि कुतश्चिद् वैशिष्ट्यं तत् प्रशस्यतरम्।।7।।
पृषदेकं मिलितं सज्जलधौ जलधित्वमाशु सँल्लभते।
सुष्ठु भवति तत्कार्यं सुष्ठुर्यस्यास्ति परिणामः।।8।।
कुर्याज्जगन्नियन्ता सविकासं नाम 'ख़िज़्र-सुलतानम्।
नृपतेरुद्यानस्याभिनवोऽङ्कुर एष सुष्ठुतरः।।9।।
स्वर्लोकस्य सुविदितं याथार्थ्यं हन्त तावदस्माकम्।
एष विचारः सुष्ठु'ग़ालिब' हृदयस्य तोषाय।।10।।

176

न हुई गर मेरे मरने से तसल्ली[1], न सही
इम्तिहाँ[2] और भी बाक़ी हो, तो यह भी न सही
ख़ार ख़ारे अलमे हस्रते दीदार[3] तो है
शौक़[4], गुलचीने गुलिस्ताने तसल्ली[5] न सही
मै परस्ताँ[6], ख़ुमे मै[7] मुँह से लगाये ही बने
एक दिन गर न हुआ बज़्म[8] में साक़ी[9], न सही
नफ़से क़ैस[10], कि है चश्म-ओ-चराग़े-सह्रा[11]
गर नहीं शम’-ए-सियहख़ानः-ए-लैला[12], न सही
एक हँगामे[13] प मौक़ूफ़[14] है घर की रौनक़[15]
नौहः-ए-ग़म[16] ही सही नग़्मः-ए-शादी[17] न सही
न सताइश[18] की तमन्ना[19], न सिले[20] की परवा[21]
गर नहीं है मेरे अश’आर[22] में मा’नी[23] न सही
’अिश्रते सोह्बते ख़ूबाँ[24] ही ग़नीमत समझो[25]
न हुई, ग़ालिब, अगर ’उम्रे तबी’अी,[26] न सही

1.सन्तोषः; 2. परीक्षा; 3. कण्टककलितं दर्शनाभिलाषजं कष्टम्; 4. अभिलाषः; 5. तोषोद्यानसुमनसां चेता; 6. मधुपानोपासकाः; 7. मधुघटः; 8. गोष्ठी; 9. मधुदात्री; 10. ‘मजनोः’श्वासः; 11. मरुभूमेर्दृक् प्रदीपश्च; 12. ‘लैलाया’स्तमोगृहस्य प्रदीपः; 13. कोलाहलः; 14. अधिश्रितः; 15. शोभा; 16. शोकविलपितम्; 17. सौख्यसङ्गीतम्; 18. प्रशस्तिः; 19. कामना; 20. पुरस्कारः; 21. चिन्ता; 22. पद्यानि; 23. अर्थः; 24. प्रियजनसङ्गमसौख्यम्; 25. बहुमन्यस्वेत्यर्थः; 26. पूर्णमायुः ।

176

कामं यदि सन्तोषो मम मृत्योर्नास्ति, न स्यात् सः।
सुष्ठु न चैतदपीतो यद्यवशिष्टा परीक्षाऽन्या।।1।।
कण्टकमिलितं दर्शनतर्षजदुःखन्तु वर्तते तावत्।
तोषोद्यानसुमनसां चेताऽस्तु न काममभिलाषः।।2।।
संयोजयत स्वमुखैर्मधुपानोपासका घटं मधुनः।
दिनमेकं मधुदात्री मधुगोष्ठ्यां काममिह नास्तु।।3।।
'मजनोः' श्वासस्तावन्मरुभूमेर्लोचनं प्रदीपश्च।
कामं स नास्तु 'लैला'-तमोगृहस्य प्रदीप इति।।4।।
कोलाहलमेकमधिश्रिताऽस्ति गृहकस्य तावदिह शोभा।
अस्तु स शोकविलपितं कामं स न सौख्यसङ्गीतम्।।5।।
नहि कामना प्रशस्तेर्न पुरस्कारस्य काऽपि चिन्ता च।
कामं स नास्तु यदि मे छन्दःसु न कश्चिदर्थोऽस्ति।।6।।
प्रियजनसङ्गमसौख्यं 'ग़ालिब' बहु तावदत्र मन्यस्व।
यदि नाभूत् पुरुषायुषमिह कामं हन्त तन्नास्तु।।7।।

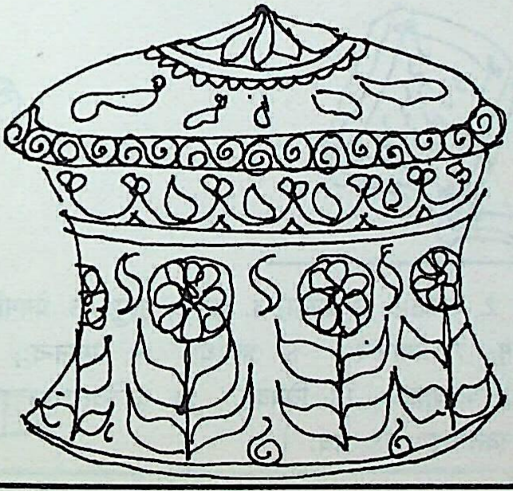

177

'अजब नशात[1] से, जल्लाद[2] के, चले हैं हम, आगे
कि अपने साये[3] से सर, पाँव से है दो क़दम आगे
क़ज़ा[4] ने था मुझे चाहा, ख़राबे बादः-ए-उल्फ़त[5]
फ़क़त ख़राब लिखा, बस न चल सका क़लम आगे
ग़मे ज़मानः[6] ने झाड़ी, नशाते' 'अिश्क़[7] की मस्ती
वगरनः[8] हम भी उठाते थे लज़्ज़ते अलम[9], आगे
खुदा के वास्ते, दाद[10] इस जुनूने शौक़[11] को देना
कि उसके दर प पहुँचते हैं नामःबर[12] से हम, आगे
यह 'उम्र भर जो परीशानियाँ[13] उठाई हैं, हमने
तुम्हारे आइयो, अय तुर्रःहा-ए-ख़म बख़म[14], आगे
दिल-ओ-जिगर[15] में परअफ़शाँ[16], जो एक मौजः-ए-ख़ूँ[17] है
हम अपने ज़ा'म[18] में समझे हुए थे इसको, दम आगे
क़सम जनाज़े प आने की मेरे खाते हैं, ग़ालिब
हमेशः खाते थे जो, मेरी जान की क़सम, आगे

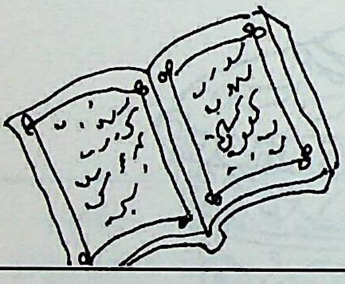

---

[1] हर्षः; [2] वधकः; [3] छाया; [4] कालः, मृत्युः; [5] प्रेममदिरां पीत्वा नष्टः; [6] सांसरिकं दुःखम्; [7] प्रेमानन्दः; [8] अन्यथा; [9] प्रेमानन्दः; [10] प्रशंसाः; [11] प्रेमोन्मादः; [12] पत्रवाहकः; [13] विपदः; [14] कुञ्चितशाः; [15] हृदयं यकृच्च; [16] विकलः; [17] रक्ततरङ्गः; [18] गर्वः ।

177

सौख्येन केनचिदमी चलिता वयमग्रतः स्ववधकस्य।
स्वच्छायातोऽस्ति चलत् पदद्वयं नः शिरोऽग्र इह। ।1। ।
नष्टः प्रेममदिरया भवितेत्यासील्लिलेखिषन् स विधिः।
मयि, नष्ट इति विलिख्य तु चचाल तल्लेखनी नाग्रे। ।2। ।
प्रेमानन्दमदो नः क्षपितः सांसारिकैरहो दुःखैः।
अनुभूतः खलु पूर्वं दुःखानन्दोऽन्यथाऽस्माभिः। ।3। ।
कृत ईश्वरस्य शंस प्रणयोन्मादं त्वमत्र नः पूर्वम्।
तद्द्वारं यद् यामः पत्रवहो याति तत्पश्चात्। ।4। ।
आ जीवनाद् यदेते विपदोऽन्वभवाम सन्ततं ज़गति।
अयि कुञ्चितकेशा वः परिणामः प्राप्नुयादग्रे। ।5। ।
योऽयं रक्ततरङ्गो यकृति च हृदये च वर्तते विकलः।
निजगर्वात्, 'श्वास' इति ज्ञातोऽस्माभिः स पूर्वमिह। ।6। ।
'ग़ालिब' शवयात्रायां सम्मिलितुं मे करोति शपथं सः।
मत्प्राणेभ्यः शपथं यः पूर्वं हन्त कुरुते स्म। ।7। ।

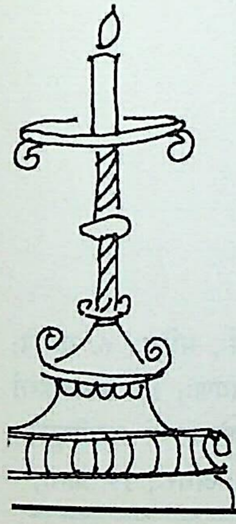

178

शिकवे[1] के नाम से बेमेह्र[2] ख़फ़ा[3] होता है
यह भी मत कह, कि जो कहिये, तो गिला[4] होता है
पुर[5] हूँ मैं शिकवे से यों, राग से जैसे बाजा
इक ज़रा छेड़िये, फिर देखिये, क्या होता है
गो[6] समझता नहीं, पर हुस्ने तलाफ़ी[7] देखो
शिकवः-ए-जौर[8] से, सरगर्मे जफ़ा[9] होता है
'अिश्क़ की राह में, है चर्खे मकौकब[10] की वह चाल
सुस्त रौ[11] जैसे कोई आबलः पा[12] होता है
क्यों न ठहरें, हदफ़े नाव के बेदाद[13] कि हम
आप उठा लाते हैं, गर तीर ख़ता[14] होता है
ख़ूब था, पहले से होते जो हम अपने बदख़्वाह[15]
कि भला चाहते हैं और बुरा होता है
नालः[16] जाता था, परे 'अर्श[17] से मेरा, और अब
लब[18] तक आता है जो ऐसा ही रसा[19] होता है

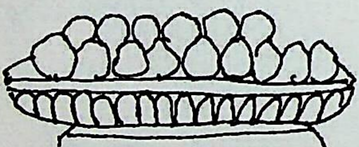

---

1. निन्दा; 2. कठोरः; 3. कुपितः; 4. निन्दा; 5. पूर्णः, भरितः; 6. यद्यपि; 7. सुविधिना क्षतिपूर्तिः; 8. अत्याचारस्य निन्दा; 9. अत्याचारपरायणः; 10. नक्षत्रभरितं गगनम्; 11. मन्दगतिः; 12. पिटकभरितचरणः; 13. अत्याचारशराणां लक्ष्यीभूताः; 14. लक्ष्यभ्रष्टः; 15. अशुभदर्शी; 16. आर्तनादः; 17. गगनम्; 18. अधरः; 19. प्राप्तः;

178

इदमपि मा वद यदितो निन्दा भवतीह हन्त कथनेन।
कुप्यति यतः कठोरः स भृशं नाम्नाऽपि निन्दायाः।।1।।
रागेण वाद्यमिव यत् सम्भरितो निन्दयेह वर्तेऽहम्।
घातं कुरु लघुमेकं पश्य पुनः किन्नु भवतीह।।2।।
यद्यपि स नावगच्छति पश्य परं सुविधिना क्षतेः पूर्तिम्।
अत्याचारारोपादत्याचारोन्मुखो भवति।।3।।
प्रेम्णो मार्गे नभसः सा गतिरुडुभिर्नितान्तखचितस्य।
कोऽपि यथा पिटकव्रणकलितपदो भवति शिथिलगतिः।।4।।
अत्याचारशराणां लक्ष्यीभूताः कथं न हि स्याम।
स्वयमानयाम एते लक्ष्यभ्रष्टे शरे भवति।।5।।
पूर्वत एवास्माभिः सुष्ठु भवेदशुभदर्शिभिर्भात्यम्।
शुभमिच्छामो यदमी जायत एतावदशुभमिह।।6।।
गगनात् परतः पूर्वं ममार्तनादो नु हन्त याति स्म।
परमधुनोपैत्यधरं यावद् यो दूरगो भवति।।7।।

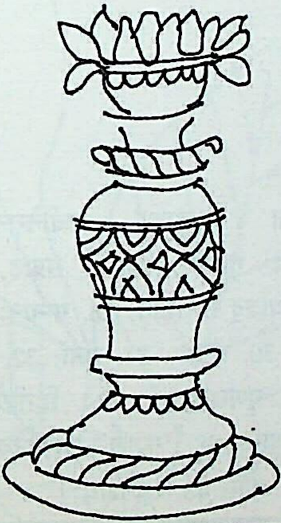

क्रंत’अः

खामः[20] मेरा, कि वह है बारबदे बज़्मे सुख़न[21]
शाह[22] की मद्ह[23] में, यों नग़्मःसरा[24] होता है
अय शहनशाहे कवाकिब सिपह-ओ-मेह्र ’अलम[25]
तेरे इक्राम[26] का हक़, किससे अदा होता है[27]
सात इक्लीम[28] का हासिल[29] जो फ़राहम[30] कीजे
तो वह लश्कर[31] का तेरे ना’ल बहा[32] होता है
हर महीने में, जो यह बद्र[33] से होता है हिलाल[34]
आस्ताँ[35] पर तेरे मह नासियः[36] सा होता है
मैं जो गुस्ताख़[37] हूँ आईने ग़ज़ल ख्वानी[38] में
यह भी तेरा ही करम[39] ज़ौक़ फ़िज़ा[40] होता है
रखियो, ग़ालिब, मुझे इस तल्ख़नवाई[41] में मु’आफ़[42]
आज कुछ दर्द मेरे दिल में सिवा[43] होता है

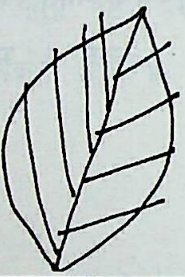

---

20. लेखनी; 21. कविगोष्ठया ‘बारबुरदः’; प्राचीनेरानदेशस्य प्रसिद्धो गायनः; 22. सम्राट्; 23. प्रशस्तिः; 24. गायनः; 25. हे सम्राट्, यस्य सैन्यानि नक्षत्राणीवासंख्यानि, यस्य च ध्वजः सूर्यं यावद् उत्तिष्ठति; 26. सम्मानः; 27. कर्तव्यस्य पूर्णतावाप्तिः; 28. महाद्वीपः; 29. आयः; 30. संग्रहः; 31. सेना; 32. अश्वानां खुरेषु योज्यस्यायसस्य व्यस्य कृते व्ययः; 33. पूर्णचन्द्रः; 34. द्वितीयाया नवश्चन्द्रः; 35. द्वार्देहली 36. शिरोघर्षणकरः; 37. धृष्टः; 38. ‘ग़ज़ल’निर्माणनियमः; 39. कृपा; 40. व्रणस्य प्रेरकः; 41. कटुभाषित्वम्; 42. क्षमा; 43. अतिशयः।

खण्डः

‘बारवदः’ कविगोष्ठ्यामस्ति मदीया सुलेखनी तावत्।
या ‘सम्राजः, पुरतो गायति विरुदावलीरेवम्।।8।।
नक्षत्रोपमसैन्यस्तपनपताकश्च चक्रवर्तिंस्त्वम्।
प्रत्युपकारः शक्यस्तवोपकारस्य केनेह।।9।।
द्वीपानां सप्तानां सङ्गृह्येत क्वचिन्नु चेदायः।
व्यय इह कदाचन स्यात् स तवोपनिवेशसैन्यस्य।।10।।
प्रत्येकमेव मासि प्रयाति पूर्णो विधुर्द्वितीयायाम्।
यः क्षीणत्वं स तव द्वारि शिरो घर्षतीव खलु।।11।।
वर्ते यदहं धृष्टो ‘ग़ज़ल’ - विनिर्माणसंविधानेषु।
इयमत्रापि तवैव प्रेरकतां सा बिभर्ति कृपा।।12।।
क्षन्तव्योऽहं, ‘ग़ालिब’ कटवे भणिताय तावदेतस्मै।
अनुभूयत इह हृदि मे यदद्य कश्चिद् व्यथातिशयः।।13।।

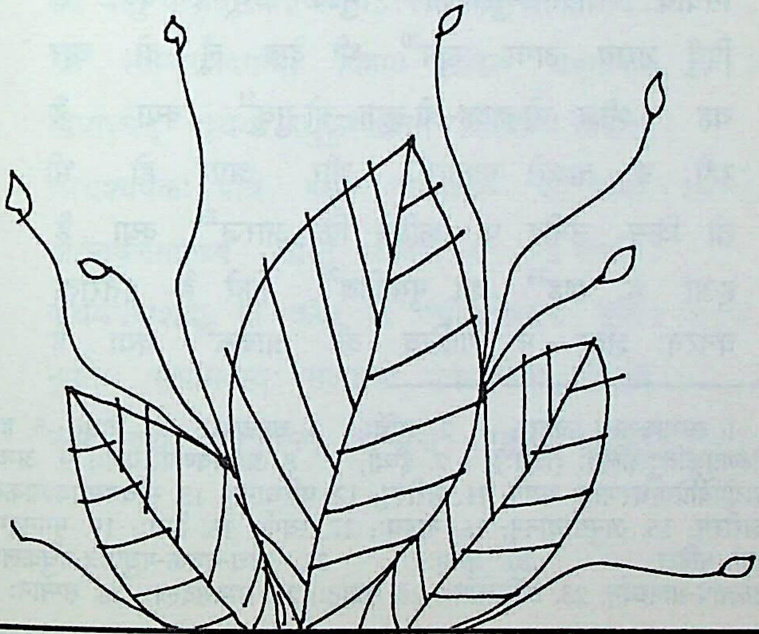

179

हर एक बात प कहते हो तुम, कि तू क्या है
तुम्हीं कहो कि यह अन्दाज़े गुफ़्तगू[1] क्या है
न शो'ले[2] में यह करिश्मः[3] न बर्क़[4] में यह अदा[5]
कोई बताओ, कि वह शोख़े तुन्द ख़ू[6] क्या है
यह रश्क[7] है कि वह होता है हमसुख़न[8] तुमसे
वगरनः[9] खौफ़े बद आमोज़ि-ए-'अदू[10] क्या है
चिपक रहा है बदन[11] पर, लहू से, पैराहन[12]
हमारी जैब को अब हाजते रफ़ू[13] क्या है
जला है जिस्म[14] जहाँ, दिल भी जल गया होगा
कुरेदते तो हो जो अब राख, जुस्तजू[15] क्या है
रगों[16] में दौड़ते फिरने के, हम नहीं क़ाइल
जब आँख ही से न टपका, तो फिर लहू क्या है
वह चीज़, जिसके लिये हमको हो, बिहिश्त[17] 'अज़ीज़[18]
सिवाये बादः-ए-गुलफ़ामे मुश्क बू[19] क्या है
पियूँ शराब, अगर खुम[20] भी देख लूँ दो चार
यह शीशः-ओ-क़दह-ओ-कूज़ः-ओ-सुबू[21] क्या है
रही न ताक़ते गुफ़्तार[22], और अगर हो भी
तो किस उमीद प कहिये कि आरज़ू[23] क्या है
हुआ है शह[24] का मुसाहिब[25], फिरे है इतराता
वगरनः शह्र में ग़ालिब की आबरू[26] क्या है

---

1. सम्भाषणस्य प्रकारः; 2. अर्चिः; 3. चमत्कारः; 4. विद्युत्; 5. हावः; 6. तीक्ष्णप्रकृतिर्दुर्ललितः (प्रियः); 7. ईर्ष्या; 8. आभाषणपरायणः; 9. अन्यथा; 10. शत्रोर्विप्रियाचरणाद्: भयम्; 11. शरीरम्; 12. परिधानम्; 13. सीवनस्यावश्यकत्वम्; 14. शरीरम्; 15. अनुसन्धानम्; 16. नाड्यः; 17. स्वर्गः; 18. प्रियः; 19. मृगमदगन्धा प्रसूनानां मदिरा; 20. कुम्भः; 21. काच-चषक-मधुपात्र-मधुकलशाः; 22. आलाप-सामर्थ्यम्; 23. अभिलाषः; 24. सम्राट्ः; 25. सभासदस्यः; 26. सम्मानः ।

179

प्रत्येकं सम्भाषण आत्थ त्वं कस्त्वमेष इति हन्त।
सम्भाषणस्य को वा प्रकार एष त्वमेव वद।।1।।
इयमर्चिषि न चमत्कृतिरथ च तडिति हाव ईदृशो नैव।
निर्दिशतु कोऽपि तीक्ष्णप्रकृतिः कोऽयं नु दुर्ललितः।।2।।
आभाषते त्वया सममिति मनसीर्ष्येह जायमानेव।
अहितोऽन्यथा स विप्रियमाचरतीत्यस्ति का भीतिः।।3।।
रुधिरेण वपुषि वदनं गच्छत् संसक्ततामिदं भाति।
गलवसनस्यास्माकं सीवनमधुना किमनिवार्यम्।।4।।
यत्र शरीरं दग्धं भाव्यं दग्धेन तत्र हन्त हृदा।
कर्षसि भस्म किमधुना तवानुसन्धानमस्ति किमु।।5।।
मन्यामहे न किञ्चिद् यत्खलु नाडीषु धावदाभाति।
नयनात् स्रुतं न यत् स्यात् पुनस्तदस्तीह किं रुधिरम्।।6।।
तद् वस्तु यत्कृते स्यात् स्वर्गोऽस्माकं नितान्तमिह हृद्यः।
किं स्यान्मृगमदगन्धां विहाय मदिरां प्रसूनानाम्।।7।।
द्वित्रांश्चेत् पश्येयं मधुकुम्भांस्तत् पिबेयमिह मदिराम्।
काचश्चषकः पात्रं मधुनः कुम्भश्च कोऽयमिह।।8।।
आभाषणसामर्थ्यं नास्ति स्यादपि च हन्त चेत्तर्हि।
कथयेयमाशया वा कया क एषोऽभिलाष इति।।9।।
नृपतेः सभासदस्यः सञ्जातो गर्वमण्डितो भ्रमति।
नगरेऽन्यथेह कोऽस्मिन् सम्मानो 'ग़ालिवस्या'स्ति।।10।।

180

मैं उन्हें छेड़ूँ, और , कुछ न कहें
चल निकलते, जो मैं[1] पिये होते
क़ेह्र[2] हो, या बला[3] हो, जो कुछ हो
काश के[4], तुम मेरे लिये होते
मेरी क़िस्मत में ग़म गर इतना था
दिल भी या रब, कई दिये होते
आ ही जाता वह राह पर, ग़ालिब
कोई दिन और भी जिये होते

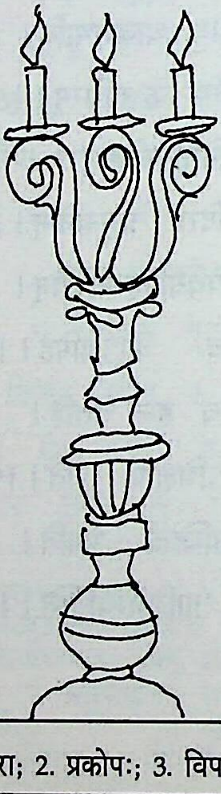

1.मदिरा; 2. प्रकोप:; 3. विपत्; 4. स्याच्वेत्।

180

तं परिहसन् भवेयं स च किञ्चिन्नैव हन्त भाषेत ।।
अथ सोऽपास्यन्मदिरां प्रलापपर एवमभविष्यत्।।1।।
त्वमिह प्रकोप एकोऽथवाऽसि किमपीह दुःखदौर्भाग्यम्।
यद् वा तद् वाऽसि त्वं ! स्याश्चेद् यद्यस्मदर्थस्त्वम्।।2।।
शोको यद्येतावान् मम भाग्ये कश्चिदेवमयमासीत्।
ईश्वर ! कतिचिदवश्यं हृदयान्यासन्नु देयानि।।3।।
मन्यामहे नु 'ग़ालिब' मार्गमुपेयादवश्यमुचितं सः।
यदि चेत् कतिचिद् दिवसान्यन्यान्यपि जीविताः स्याम।।4।।

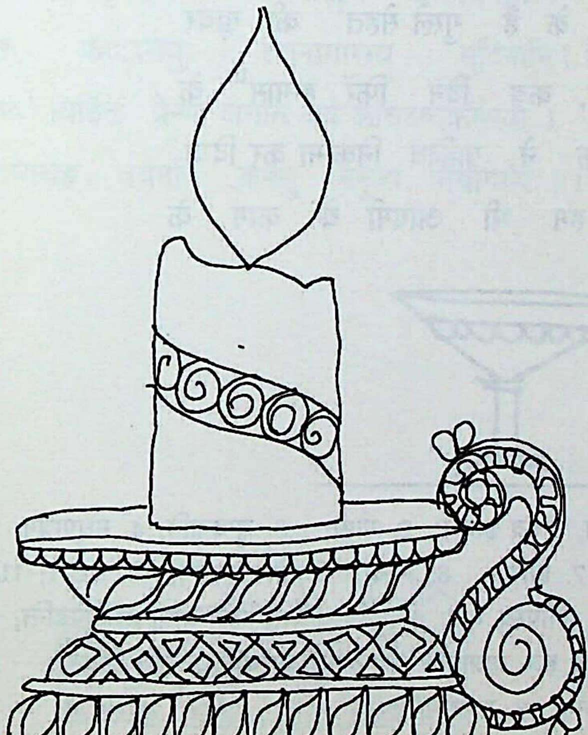

181

ग़ैर[1] लें महफ़िल[2] में, बोसे[3] जाम[4] के
हम रहें यों तश्नः लब[5], पैग़ाम[6] के
ख़स्तगी[7] का तुमसे क्या शिकवः[8] कि यह
हथ्कँडे हैं चर्ख़े नीली फ़ाम[9] के
ख़त लिखेंगे, गरचेः[10] मतलब कुछ न हो
हम तो 'आशिक़[11] हैं, तुम्हारे नाम के
रात पी ज़मज़म[12] प मै और सुब्ह दम[13]
धोये धब्बे जामः-ए-एह्राम[14] के
दिल को आँखों ने फँसाया, क्या मगर
यह भी हल्क़े[15] हैं तुम्हारे दाम[16] के
शाह के है गुस्ले सेहत[17] की ख़बर
देखिये, कब दिन फिरें हम्माम[18] के
'अिश्क़ ने, ग़ालिब निकम्मा कर दिया
वर्नः हम भी आदमी थे काम के

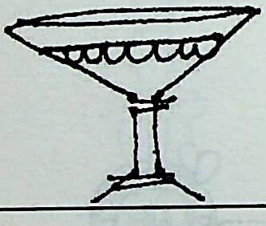

---

1. अन्ये, रियव इत्यर्थः; 2. गोष्ठी; 3. चुम्बनानि; 4. मधुपात्रम्; 5. तृषिताः; 6. सन्देशः; 7. हानिः; 8. निन्दा; 9. नीलं गगनम्; 10. यद्यपि; 11. प्रणयिनः; 12. 'का'बा' समीपस्थ एकः कूपः, यस्य जलं 'हज'यात्रापराः पिबन्ति; 13. प्रभाते; 14. तद्वस्त्रं यद् हज यात्रापराः परिक्रमार्थं धारयन्ति; 15. आवर्ताः; 16. जालम्; 17. स्वास्थ्यस्नानम्; 18. स्नानागारम् ।

181

गोष्ठ्यां मधुनश्चषकानन्ये निर्बाधमेव चुम्बन्तु।
सन्देशार्थं तृषिता हन्त वयं नाम तिष्ठेम।।1।।
किमुपालम्भं कुर्यां स्वस्या हानेः कृतेऽहमेषा हि।
दुश्चेष्टा खलु तावन्नभसः प्रतिभाति नीलस्य।।2।।
पत्रं लेखिष्यामो यदपि स्यान्नात्र किञ्चिदुद्देश्यम्।
प्रणयवशीभूताः स्मस्तवाभिधानस्य यत्तु वयम्।।3।।
रात्रौ 'ज़मज़म'कूपे पीताऽस्माभिः सुरा प्रभाते च।
प्रक्षालिताः कलङ्का 'मक्का'यात्रार्थवसनगताः।।4।।
चक्षुर्भ्यां स्वीयाभ्यां हृदयं बद्धं परन्तु किन्तावत्।
आवर्ता अप्येते तवेह विततस्य जालस्य।।5।।
सुसमाचारो नृपतेः स्वास्थ्यस्नानस्य कर्णपथमाप्तः।
पश्यत कदोदयेयुः स्नानागारस्य सुदिनानि।।6।।
'ग़ालिब' विहिताः प्रेम्णा जगति वयं केचिदप्यकर्मण्याः।
आस्मान्यथेह वयमपि कर्मसु मनुजा नियोगार्हाः।।7।।

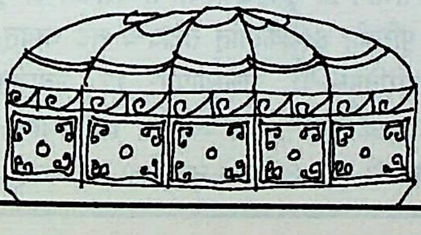

182

फिर इस अन्दाज़[1] से बहार[2] आई
कि हुए मेह्र-ओ-मह[3] तमाशाई[4]
देखो, अय साकिनाने ख़ित्तः-ए-ख़ाक[5]
इसको कहते हैं 'आलम आराई[6]
कि ज़मीं[7] हो गई है सर ता सर[8]
रूकशे सत्हे चर्ख़े मीनाई[9]
सब्ज़े[10] को जब कहीं जगह न मिली
बन गया रू-ए-आब[11] पर काई[12]
सब्ज़ः-ओ-गुल[13] को देखने के लिये
चश्मे नर्गिस[14] को दी है बीनाई[15]
है हवा में शराब की तासीर[16]
बादः नोशी[17] है बाद पैमाई[18]
क्यों न दुनिया को हो ख़ुशी, ग़ालिब
शाहे दींदार[19] ने शिफ़ा[20] पाई

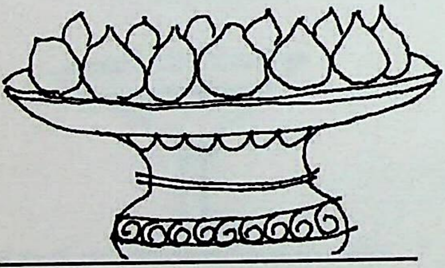

---

1. भङ्गी; 2. वसन्तश्रीः; 3. सूर्यश्चन्द्रश्च; 4. दर्शकौ; 5. पृथिव्या निवासिनः; 6. विश्वस्य शृङ्गारः; 7. पृथिवी; 8. एकस्मात् तटादन्यं तटं यावत्; 9. नीलेन नभसा प्रतिस्पर्धापरायणा; 10. हरितिमा; 11. जलस्योपरि; 12. शैवालम्; 13. हरितिमानं पुष्पञ्च; 14. नर्गिसाख्यप्रसूनस्य नयनम्; 15. ज्योतिः; 16. प्रभावः; 17. मदिरापात्रम्; 18. वायोःमापनम्, व्यर्थमित्यर्थः; 19. धर्मप्राणो नृपः; 20. स्वास्थ्यम्।

182

भङ्ग्येदृशेह भूयः सम्प्राप्ता काप्य सौ वसन्तश्रीः।
तद्दर्शकावभूतां द्वावपि, सूर्यश्च चन्द्रश्च।।1।।
पश्यत सर्वे यूयं निवासिनोऽस्या भुवः समग्रायाः।
कथयन्ति तावदेतत् ‘संसारस्यास्य शृङ्गारः’ ।।2।।
यत् सागरपर्यन्तं विततेयं सागराम्बरा तावत्।
नीलेनास्ति व्योम्ना कुर्वाणेव प्रतिस्पर्धाम्।।3।।
हरितिम्ना न प्राप्तं क्वचन स्थानं यदेह वसुधायाम्।
शैवालत्वमवाप्तं तेन तदा द्रागपामुपरि।।4।।
आलोकयितुं पुष्पं किञ्च हरितिमानमत्र संसारे।
नयनज्योतिर्दत्तं ‘नर्गिस’नाम्ने प्रसूनाय।।5।।
अनुभूयते प्रभावो मदिराया वाति कश्चिदिव वायौ।
सम्प्रति मदिरापानं व्यर्थः कश्चित् सभारम्भः।।6।।
संसार एष तावन्न कथङ्कारं प्रसादमधिगच्छेत्।
उपलब्धं नैरुज्यं धर्मप्राणेन सम्राजा।।7।।

183

तग़ाफ़ुल दोस्त[1] हूँ, मेरा दिमाग़े 'अिज्ज़' 'आली है[2]
अगर पहलूतिही कीजे[3], तो जा[4] मेरी भी ख़ाली[5] है

रहा आबाद[6] 'आलम[7], अह्ले हिम्मत[8] के न होने से
भरे हैं जिस क़दर जाम-ओ-सुबू[9], मैख़ान:[10] खाली है

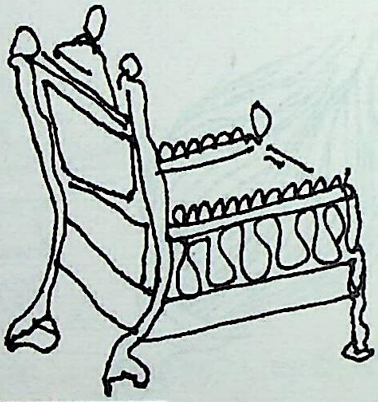

---

1. उपेक्षासुहृत्, उपेक्षाप्रवृत्तिरित्यर्थः; 2. मम विनयमतिरुन्नता; 3. यद्युपेक्षसे मामित्यर्थः; 4. स्थानम्; 5. रिक्तम्; 6. सम्मर्दमयः; 7. संसारः; 8. उत्साहसम्पन्नाः; 9. चषको घटश्च; 10. मधुशाला।

183

एष उपेक्षासहगतचित्तोऽहं किञ्च तुङ्गविनयमतिः।
यदि मामुपेक्षसे चेदस्ति मम स्थानमपि रिक्तम्।।1।।
पुरुषार्थशालिमनसामभावतो जगदिदं ससम्मर्दम्।
घट-चषकपूर्णता खलु मधुशालायाश्च रिक्तत्वम्।।2।।

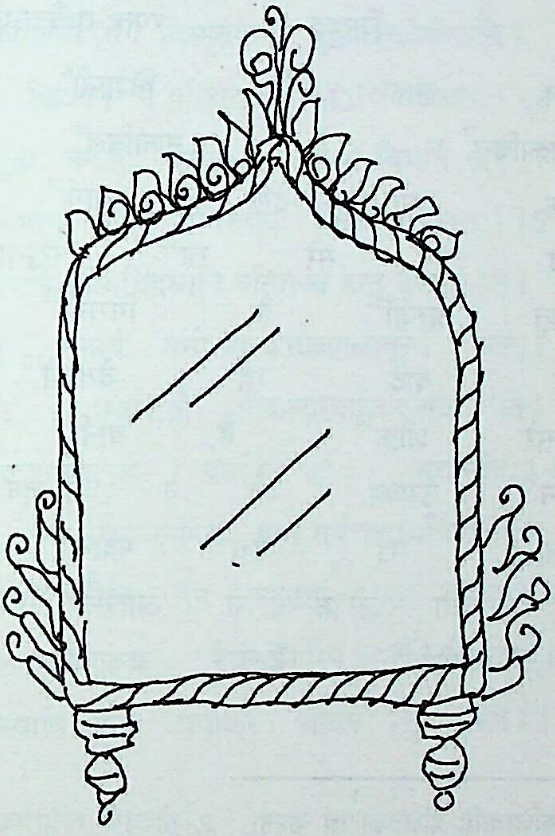

184

कब वह सुनता है कहानी मेरी
और फिर वह भी ज़बानी मेरी
ख़लिशे ग़मज़ः-ए-ख़ूँरेज़[1] न पूछ
देख ख़ूँनाबः फ़िशानी[2] मेरी
क्या बयाँ[3] करके मेरा, रोयेंगे यार
मगर आशुफ़्तः बयानी[4] मेरी
हूँ ज़िख़ुद रफ़्तः-ए-बैदा-ए-ख़याल[5]
भूल जाना है, निशानी[6] मेरी
मुतक़ाबिल[7] है, मुक़ाबिल[8] मेरा
रुक गया, देख रवानी[9] मेरी
क़द्रे सँगे सरे रह[10] रखता हूँ
सख़्त अरज़ाँ[11] है, गिरानी[12] मेरी
गर्द बादे रहे बेताबी[13] हूँ
सरसरे शौक़[14] है, बानी[15] मेरी
दहन[16] उसका, जो न मा'लूम हुआ
खुल गई हेच मदानी[17] मेरी
कर दिया ज़ो'फ़[18] ने 'आजिज़[19], ग़ालिब
नँगे पीरी[20] है, जवानी[21] मेरी

---

1. रुधिरवाहि प्रेक्षितकोत्पन्नं कष्टम्; 2. सोद्वेगो रुधिरप्रवाहः; 3. वर्णनम्; 4. मिथ्यावादित्वम्; 5. कल्पनारण्यस्य विस्मृतमार्गः; 6. परिचयः; 7. विमुखः; 8. सम्मुखः; 9. गतिमत्त्वम्; 10. मार्गगतप्रस्तरसदृशः; 11. अल्पमूल्यम्; 12. गुरुत्वम्; 13. वैकल्यमार्गचक्रवातः; 14. अभिलाषवात्या; 15. प्रवर्तकः; 16. आननम्; 17. अनभिज्ञत्वम्; 18. दौर्बल्यम्; 19. विवशः; 20. वार्धक्यस्य कृते त्रपाकरम्; 21. यौवनम् ।

184

मद्वृत्तान्तं श्रोतुं कदा स यत्किञ्चिदुत्सुकीभवति।
अथ पुनरिदं कदाचित् प्रत्यक्षं मामकैर्वचनैः।।1।।
मा पृच्छ रुधिरवाहि प्रेक्षितकोत्पन्नकष्टमिह किमपि।
पश्य नु सोद्वेगं मम रुधिरस्येनं प्रवाहमिह।।2।।
किमिव निवेद्य मदीयं रोदिष्यन्तीह मामकाः सुहृदः।
अतिरिच्य मामकीनं मिथ्यावादित्वमतिमात्रम्।।3।।
इह कल्पनावनेऽहं विस्मृतमार्गो नु कश्चिदेषोऽस्मि।
विस्मरणं किञ्चन मे परिचय इव कोऽपि सञ्जातः।।4।।
विमुखीभूतः सम्प्रति साम्मुख्यं हन्त यो बिभर्ति स्म।
मम गतिमत्त्वं वीक्ष्य प्रतिरुद्धः किञ्च सञ्जातः।।5।।
साम्यं बिभर्मि कस्यचिदध्वनि पतितस्य हन्त दृषदोऽहम्।
मम नु गुरुत्वं मन्ये प्रथय त्यलमल्पमूल्यं माम्।।6।।
कोऽप्येष चक्रवातो वैकल्यस्याध्वनस्तथा वर्ते।
अभिलाषवात्ययाऽहं प्रवर्तितोऽलं भवाम्येषः।।7।।
आसीत् तस्य यदाननमितो मया सर्वथाऽप्यविज्ञातम्।
अनभिज्ञता मदीया तेन स्फुटतां गता सम्यक्।।8।।
विवशीकृतोऽहमधुना नैर्बल्येनास्मि कश्चिदेतावान्।
वार्धक्यस्यापि कृते त्रपाकरं यौवनं नु मम।।9।।

185

नक़्शे नाज़े बुते तन्नाज़[1], ब आग़ोशे रक़ीब[2]
पा-ए-ताऊस[3] पै-ए-ख़ामः-ए-'मानी'[4] माँगे

तू वह बदख़ू[5], कि तहय्युर[6] को तमाशा[7] जाने
ग़म वह अफ़सानः[8], कि आशुफ़्तः बयानी[9] माँगे

वह तपे 'अिश्क़े तमन्ना[10] है, कि फिर सूरते शम्'अ[11]
शो'लः ता नब्ज़े जिगर[12] रेशः दवानी[13] माँगे

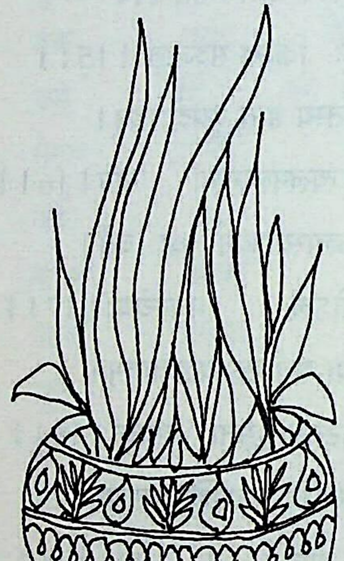

---

1. सौन्दर्यगर्विताया: चित्रम्; 2. शत्रोः क्रोडे; 3. मयूरस्य चरणः; 4. 'मानी' त्याख्यस्य ईरानदेशे प्रसिद्धस्य चित्रकारस्य तूलिकायै; 5. दुष्प्रकृतिः; 6. विस्मयः; 7. दृश्यम्; 8. कथा; 9. मिथ्यावादित्वम्; 10. कामनाप्रेमतापः; 11. दीप इव; 12. यकृन्नाडी; 13. वर्तिः; मोमबत्तीत्याख्ये दीप एकं सूत्रं भवति; कविरीदृशमेव सूत्रं प्रणयिनो ज्वलनार्थं कामयते।

185

रूपाभिमानचित्रं शत्रोरङ्के स्वरूपगर्वायाः।
'मानी'-सुतूलिकायै शिखिनश्चरणं समीहेत।।1।।
दुष्प्रकृतिः स त्वं यो विस्मयमौनं सुदृश्यमिति वेत्ति।
शोकः कथा हि सा या वाग्विस्तरमेकमीहेत।।2।।
प्रेम्णस्तापं कामय इतोऽधुना कोऽपि दीप इव, यो हि।
यकृच्छिरापर्यन्तं ज्वालमयीं वर्तिमीहेत।।3।।

186

गुलशन[1] को तेरी सोह्‌बत[2], अज़ बसकि ख़ुश आई है[3]
हर गुंचे[4] का गुल[5] होना, आग़ोश कुशाई[6] है
वाँ कुँग्गुरे इस्तिग़ना[7], हरदम है बलन्दी[8] पर
याँ नाले[9] को और उल्टा, दा'वा-ए--रसाई[10] है
अज़ बसकि सिखाता है ग़म, ज़ब्त[11] के अन्दाज़े[12]
जो दाग़ नज़र आया, इक चश्म नुमाई[13] है

---

1. उद्यानम्; 2. सङ्गतिः; 3. अधिकं रोचत इत्यर्थः; 4. कलिका; 5. पुष्पम् 6. बाहुप्रसारः; 7. विरतिकलशी; 8. औन्नत्यम्; 9. आर्तनादः; 10. प्राप्त्यधिकारः; 11. सहिष्णुत्वम्; 12. प्रकाराः; 13. भ्रूतर्जितम्।

186

इत उपवनाय सङ्गतिरतिमात्रं रोचते त्वदीया हि।
प्रत्येकं कलिकायाः पुष्पत्वं बाहुविस्तारः।।1।।
तत्र विरक्तिकलशिका वर्तत इव हन्त नित्यमौन्नत्ये।
विपरीतमार्तनादोऽत्राध्यर्थयते ततः प्राप्तिम्।।2।।
शोकः सहिष्णुताया नैकान् भेदान् क्रमेण शिक्षयति।
दृष्टो नु यः कलङ्कः सोऽस्ति भ्रूतर्जितं त्वेकम्।।3।।

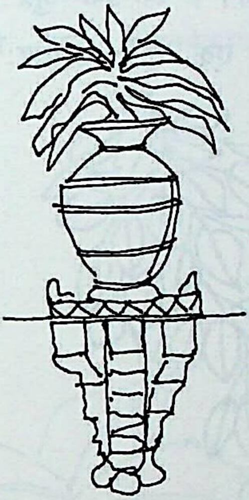

187

जिस ज़ख़्म[1] की हो सकती हो तद्‌बीर[2], रफ़ू[3] की
लिख दीजियो, या रब, उसे क़िस्मत में 'अदू[4] की
अच्छा है सर अँगुश्ते हिनाई[5] का तसव्वुर[6]
दिल में नज़र आती तो है, इक बूँद लहू की
क्यों डरते हो 'उश्शाक़[7] की बे हौसलगी[8] से
याँ तो कोई सुनता नहीं फ़रियाद[9] किसू की
दश्ने[10] ने कभी मुँह न लगाया हो जिगर को
ख़ंजर[11] ने कभी बात न पूछी हो गुलू[12] की
सद हैफ़[13] वह नाकाम[14], कि इक 'उम्र से, ग़ालिव
हस्रत[15] में रहे एक बुते 'अरबदः जू[16] की

---

1. व्रणः; 2. उपायः; 3. सीवनम्; 4. शत्रुः; 5. मेंहदी'त्याख्यया 'मदयन्तिकया' कलितोऽङ्गुल्यग्रः; 6. कल्पना; 7. प्रणयिनः; 8. उत्साहराहित्यम्, अधैर्यम्; 9. आह्वानम्; 10. छुरिका; 11. असिः; 12. गलः; 13. शतं धिक्; 14. असफलः; 15. तृट्; 16. कलहप्रियो मूर्तिमान्।

187

यस्य व्रणस्य सीवनमुपाय इह सम्भवेत् कुतोऽप्येकः।
ईश्वर ! स लेखनीयो भाग्ये तावद् विपक्षस्य।।1।।
'मदयन्तिका'-सुकलिताङ्गुल्यग्रस्येह कल्पना सुष्ठुः।
हृदये तु तावदेकं रक्तपृषद् दृष्टिपथमेति।।2।।
प्रणयवतां त्वमधैर्याद् बिभेषि सर्वात्मना कथङ्कारम्।
अत्र तु न कोऽपि कस्यचिदाह्वानं नयति कर्णपथम्।।3।।
न च्छुरिकया कदाचिद् यकृता सम्भाषणं भवेद् विहितम्।
असिना न कदाचिद् वा कुशलप्रश्नो गलस्य कृतः।।4।।
आजीवनमथ 'ग़ालिब' शतं धिगुपलब्धवानसाफल्यम्।
कलहप्रियस्य तृषि यत् स्थितमेकस्येह मूर्तिमतः।।5।।

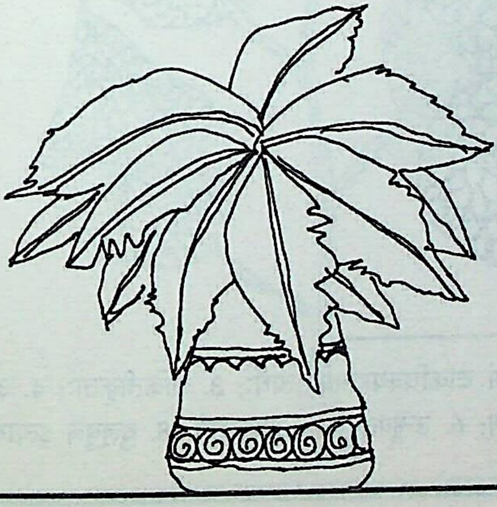

188

सीमाब[1] पुश्त गर्मि-ए-आईनः दे है[2], हम
हैराँ[3] किये हुए हैं दिले बेक़रार[4] के
आग़ोशे गुल[5] कुशूदः[6] बराये विदा'अ[7] है
य 'अन्दलीब[8], चल, कि चले दिन बहार[9] के

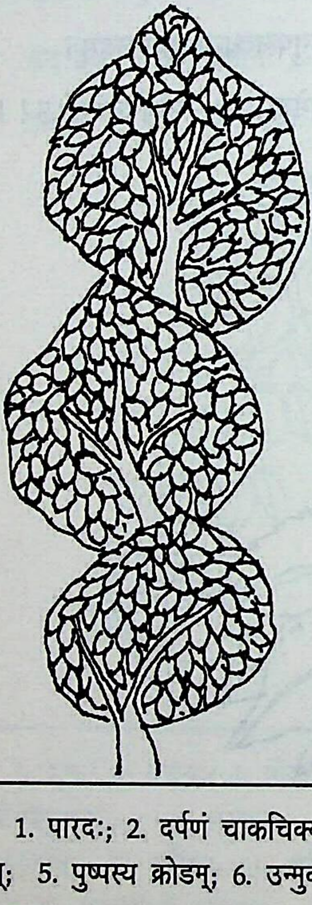

---

1. पारदः; 2. दर्पणं चाकचिक्यमानयतीत्यर्थः; 3. चकितीकृताः; 4. अतिविकलं हृदयम्; 5. पुष्पस्य क्रोडम्; 6. उन्मुक्तम्; 7. आपृच्छायै; 8. बुलबुल इत्याख्यः पक्षी; 9. वसन्तः ।

188

अन्तर्लग्नः पारद आदर्शं चाकचिक्यमानयति।
चकितीकृता वयं स्मस्तथाऽतिविकलेन हृदयेन।।1।।
आपृच्छायै कुसुमक्रोडमिदानीं नु तावदुन्मुक्तम्।
चल बुल्बुल ! त्वमेभिर्वसन्तदिवसैर्यतश्चलितम्।।2।।

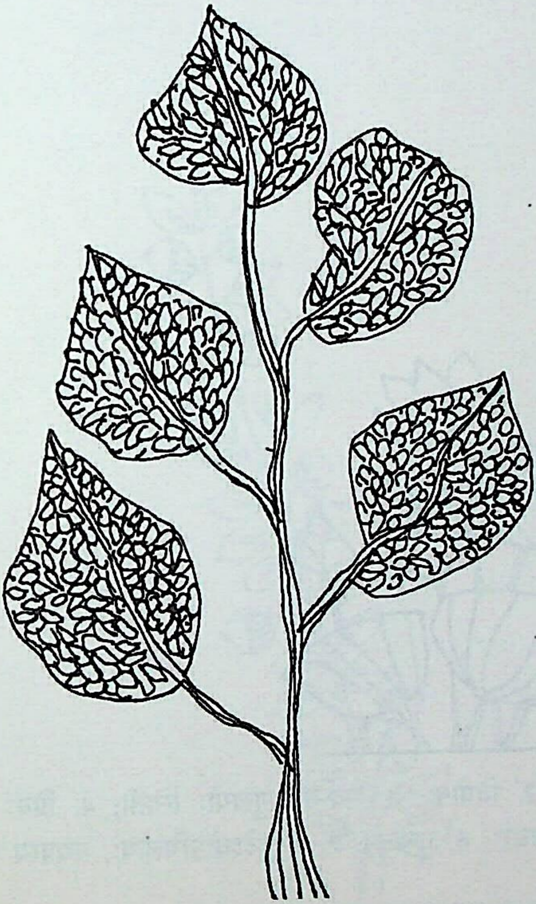

189

है वस्ल[1] हिज्र[2], ’आलमे तम्कीन-ओ-ज़ब्त[3] में
मा’शूक़े शोख़-ओ-’आशिक़े दीवानः[4] चाहिये
उस लब[5] से मिल ही जायेगा बोसः[6] कभी तो, हाँ
शौक़े फ़ुज़ूल-ओ-जुरअते रिन्दानः[7] चाहिये

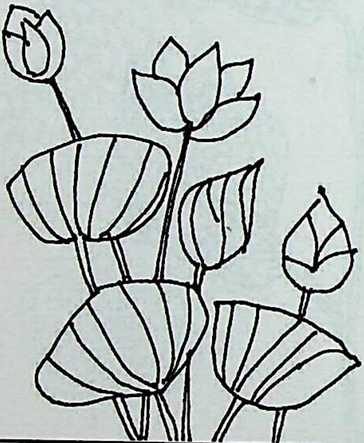

---

1. मिलनम्; 2. वियोगः; 3. गर्व-सहिष्णुत्वयोः स्थिती; 4. प्रियः दुर्ललितः, प्रणयी मत्तश्च; 5. अधरः; 6. चुम्बनम्; 7. अनुद्देश्योऽभिलाषः, मद्यपस्य च साहसम् (साधना)।

189

मिलनं भवति वियोगो गर्वसहिष्णुत्वयोरहो स्थित्योः।
प्रिय इह दुर्ललितः स्यात् प्रणयी स्यात् कोऽपि मत्तश्च।।1।।
तस्मात् कदाचिदधरात् लब्धं भवितैव चुम्बनं किन्तु।
भाव्यमधिकया स्पृहया साधनया मद्यपस्येव।।2।।

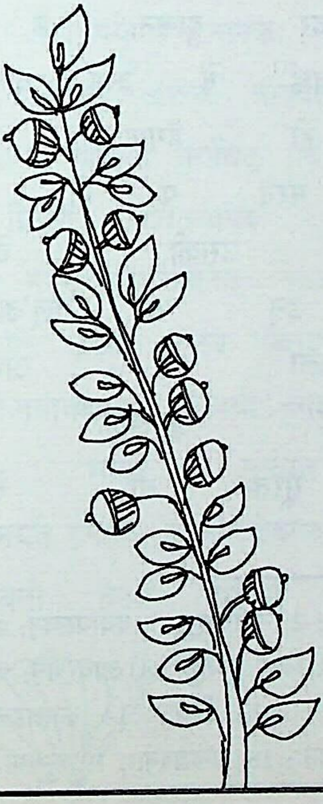

190

चाहिये अच्छों को जितना चाहिये
यह अगर चाहें, तो फिर क्या चाहिये
सोह्बते रिन्दाँ[1] से वाजिब[2] है हज़र[3]
जा-ए-मै[4] अपने को खेंचा चाहिये
चाहने को तेरे क्या समझा था दिल
बारे[5], अब इससे भी समझा चाहिये
चाक मत कर जैब[6] बे अय्यामे गुल[7]
कुछ उधर का भी इशारा[8] चाहिये
दोस्ती का पर्दः[8] है बेगानगी[9]
मुँह छुपाना हमसे छोड़ा चाहिये
दुश्मनी ने मेरी खोया ग़ैर[10] को
किस क़दर दुश्मन, है, देखा चाहिये
अपनी रुस्वाई[11] में क्या चलती है स’अि[12]
यार[13] ही हँगामः आरा[14] चाहिये
मुन्हसिर[15] मरने प हो, जिसकी उमीद
नाउमीदी[16] उसकी, देखा चाहिये
ग़ाफ़िल[17], इन मह तल्’अतों[18] के वास्ते
चाहने वाला भी अच्छा चाहिये
चाहते हैं खूबरूओं[19] को असद
आपकी सूरत तो देखा चाहिये

---

1. मद्यपानां सङ्गतिः; 2. समुचितम्; 3. दवीयस्त्वम्; 4. मधुनः स्थाने; 5. सकृत्; 6. गलवासो मा छिन्छि; 7. विना पुष्पर्तुम्; 8. आवरणम्; 9. परकीयत्वम्; 10. शत्रुः; 11. अयशः; 12. प्रयत्नः; 13. प्रियः; 14. कोलाहलप्रियः; 15. अधिश्रितः; 16. नैराश्यम्; 17. असावधानः; 18. चन्द्रवदनाः; 19. सुरूपाः ।

190

रूपवतामिह विषये यावच्छक्यं स्पृहावता भाव्यम्।
स्पृहयेरंश्च यदीमे स्पृहणीयं तत् किमन्यत् स्यात्।।1।।
अतिशयमधुपानपरैः परिहार्या सङ्गतिर्जनैः सार्धम्।
परिवर्जनीय आत्मा मदिराभिमुखं प्रवृत्तश्च।।2।।
हृदयेन तावकीनं किमवगतं प्रेम मामकीनेन।
सकृदस्मादपि तावत् प्रश्नं कृत्वाऽवगन्तव्यम्।।3।।
वासन्तिकीं विनाऽऽभां गलवासः स्वीयमेष मा छिन्धि।
भवितव्यं तस्मादपि सङ्केतेनेह केनापि।।4।।
भावः परकीय इति प्रावरणं किमपि मन्यते मैत्र्याः।
विनिवारणीयमस्मादस्मद् भवता मुखावरणम्।।5।।
शत्रुत्वेन विलीनो मद्विषयेणेह मामकः शत्रुः।
अस्ति स शत्रुः कीदृग् द्रष्टव्यं तावदेतर्हि।।6।।
न भवत्ययशः स्वीयं स्वीयेनेह क्वचित् प्रयत्नेन।
कोलाहलप्रियेण प्रियेण भवितव्यमेव ततः।।7।।
यस्याशा जगतीतो मरणं समधिश्रितैव सञ्जाता।
[अन्यत् किं द्रष्टव्यं] द्रष्टव्यं तस्य नैराश्यम्।।8।।
आसां चन्द्रमुखीनामसावधान [त्वयाऽवगन्तव्यम्।
सुतरामभिलाषवता भाव्यं सुन्दरतरेणापि।।9।।
'असद' भवान् कामयते सम्प्रति सुमनोमनोहराकारान्।
दृग्गोचरमिह भवतो द्रष्टव्यं रूपमपि तावत्।।10।।

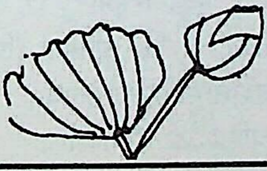

191

हर क़दम दूरि-ए-मंज़िल[1] है नुमायाँ[2] मुझसे
मेरी रफ़्तार[3] से भागे है, बयाबाँ[4] मुझसे
दर्से 'अुन्वाने तमाशा[5], ब तग़ाफ़ुल[6] खुशतर[7]
है निगह[8] रिश्तः-ए-शीराज़ः-ए-मिशगाँ[9] मुझसे
वहशते आतशे दिल[10] से, शबे तन्हाई[11] में
सूरते दूद[12], रहा सायः[13] गुरेज़ाँ[14] मुझसे
ग़मे 'अुश्शाक़[15] न हो, सादगी आमोज़े बुताँ[16]
किस क़दर खानः-ए-आईनः[17] है वीराँ[18] मुझसे
असरे आबलः[19] से, जादः-ए-सहरा-ए-जुनूँ[20]
सूरते रिश्तः-ए-गौहर[21] है चराग़ाँ[22] मुझसे

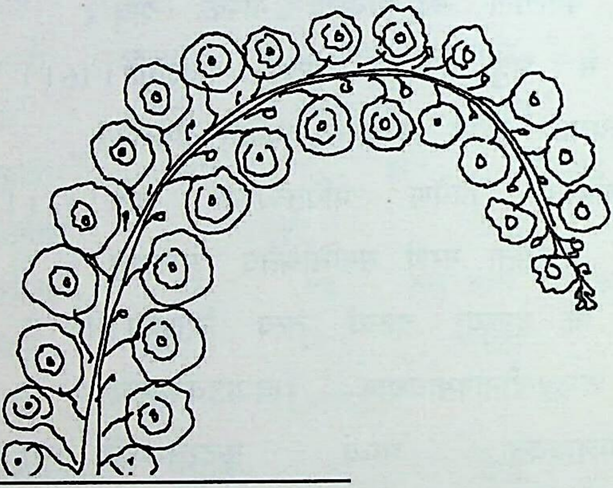

---

1. गन्तव्यस्य दवीयस्त्वम्; 2. प्रकटम्; 3. गतिः; 4. मरुभूमिः, अरण्यम्; 5. दृश्यशीर्षकस्य पाठः; 6. सोपेक्षम्; 7. उपयुक्तम्; 8. दृष्टिः; 9. व्याकीर्णपक्ष्मजीवन सूत्रम्; 10. हृदयाग्निवैकल्यम्; 11. एकान्तरजनी 12. धूम इव; 13. छाया; 14. पलायितः; 15. प्रणयवतां शोक; 16. मूर्तिमतां (प्रियाणां) सारल्यशिक्षकः; 17. दर्पणः; 18. निर्जनः, स्वरूपदर्शिभिरुपेक्षित इत्यर्थः; 19. पिटकानां प्रभावः; 20. उन्मादारण्यमार्गः; 21. मुक्तास्त्रसूत्रमिव; 22. दीपावली ;

191

गन्तव्यं प्रत्येकं पदमेव ज्ञायते दवीय इति।
मम गत्या मरुभूमिर्धावति मत्तः सुदूर इह।।1।।
सुतरामपेक्षणीयं सोपेक्षं दृश्यशीर्षकाकलनम्।
व्याकीर्णपक्ष्मसीवनसुवर्णसूत्रं हि मे दृष्टिः।।2।।
हृदयाग्नेर्वैकल्यादेकाकिन्यां वियोगयामिन्याम्।
धूम इव च्छाया मे पलाय्य दूरं गताऽऽभाति।।3।।
प्रणयवतामिह शोको मूर्तिमतः शिक्षयेन्न सारल्यम्।
शून्यो हन्त कियानिव हृदयाख्यो मामको मुकुरः।।4।।
उन्मादमरुकदध्वा मम पिटकानां प्रभावतो मन्ये।
मुक्तास्रक्सूत्रमिव प्रदीपमालान्वितो भाति।।5।।

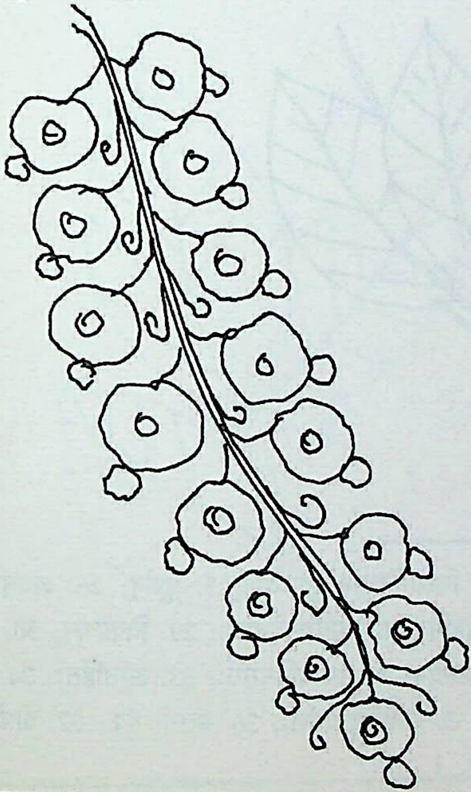

बेख़ुदी[23] बिस्तरे तम्हीदे फ़राग़त[24] हूजो
पुर[25] है साये की तरह, मेरा शबिस्ताँ[26] मुझसे
शौक़े दीदार[27] में, गर तू मुझे गर्दन मारे
हो निगह, मिस्ले गुले शम्'अ[28], परीशाँ[29] मुझसे
बेकसी हा-ए-शबे हिज्र[30] की वहशत[31], हय, हय
सायः ख़ुर्शीदे क़यामत[32] में है पिन्हाँ[33] मुझसे
गर्दिशे साग़रे सद् जल्वः-ए-रंगीं[34], तुझसे
आइनः दारि-ए-यक दीदः-ए-हैराँ[35] मुझसे
निगहे गर्म[36] से इक आग टपकती है, असद
है चराग़ाँ[37], ख़स-ओ-ख़ाशाके गुलिस्ताँ[38] मुझसे

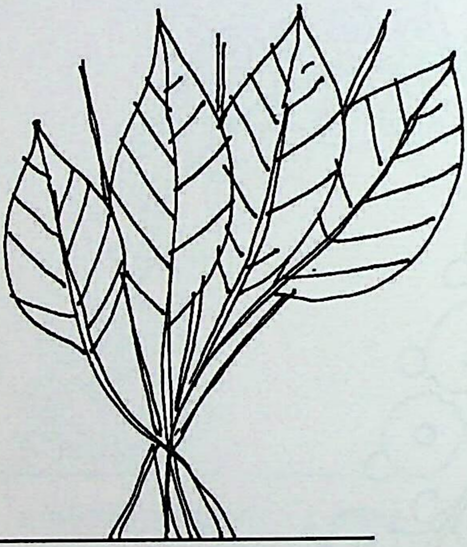

---

23. आत्मविस्मृतिः; 24. विश्रान्तिभूमिकाशय्या; 25. पूर्णम्; 26. शयनागारम्; 27. दर्शनाभिलाषः; 28. दीपकुसुममिव; दीपवर्त्यग्रइवेत्यर्थः; 29. विकीर्णम्; 30. विरहरजन्या असहायत्वानि; 31. वैकल्यम्; 32. प्रलयदिनसूर्यः; 33. अन्तर्हितः; 34. नानावर्णच्छविशतमधुपात्रगतभ्रमयः; 35. चकितदृग्दर्पणः; 36. प्रतप्ता दृक्; 37. दीपोत्सवः; 38. उद्यानगतः कच्चररूपस्तृणचयः ।

इयमात्मविस्मृतिः स्याद् विश्रामानन्दहेतुपर्यङ्कः।
छायासमेन तमसा भरितो मम रात्रिवासो हि।।6।।

सन्दर्शनाभिलाषे छेद्याश्चेन्मामकीनमिह गलकम्।
दीपकवर्त्यग्र इवास्मद्दृग् व्याकीर्णतां गच्छेत्।।7।।

हा हान्त, विरहरात्रेरसहायत्वस्य तन्नु वैकल्यम्।
प्रलयदिनादित्ये खल्वन्तर्निहिता मम च्छाया।।8।।

त्वत्तः, सद्वर्णच्छविपूरितमधुपात्रशतमिलद्भ्रमयः।
मत्तः, खलु मुकुरत्वात् सविस्मया तावदेका दृक्।।9।।

ज्वालो'ऽसद', एकोऽग्नेर्विगलति दृष्टेर्मम प्रतप्तायाः।
प्रज्वलदुपवनकच्चरतृणचयदीपोत्सवो मत्तः।।10।।

192

नुक्तःचीं[1] है, ग़मे दिल[2] उसको सुनाये न बने
क्या बने बात, जहाँ बात बनाये न बने
मैं बुलाता तो हूँ, उसको, मगर अय जज़्बः-ए-दिल[3]
उस प बन जाये कुछ ऐसी, कि बिन आये न बने
खेल समझा है, कहीं छोड़ न दे, भूल न जाय
काश, यों भी हो, कि बिन मेरे सताये न बने
ग़ैर[4] फिरता है, लिये यों तेरे ख़त[5] को, कि अगर
कोई पूछे, कि यह क्या है, तो छुपाये न बने
इस नज़ाकत[6] का बुरा हो, वह भले हैं, तो क्या
हाथ आवें, तो उन्हें हाथ लगाये न बने
कह सके कौन, कि यह जल्वःगरी[7] किसकी है
पर्दः[8] छोड़ा है वह उसने, कि उठाये न बने
मौत[9] की राह न देखूँ, कि बिन आये न रहे
तुम को चाहूँ, कि न आओ, तो बुलाये न बने
बोझ वह सर से गिरा है, कि उठाये न उठे
काम वह आन पड़ा है, कि बनाये न बने
'अिश्क़[10] पर ज़ोर नहीं, है यह वह आतश[11], ग़ालिब
कि लगाये न लगे और बुझाये न बने

---

1. दोषदृक्, आलोचकः; 2. हृदयस्य शोकः; 3. हृदय-संवेगः; 4. शत्रुः; 5. पत्रम्, लेखः; 6. सौकुमार्यम्; 7. छविप्रकटनस्येन्द्रेजालम्, चमत्कारः; 8. आवरणम्; 9. मृत्युः; 10. प्रेम; 11. अग्निः ।

192

दोषदृशस्तस्य, हृदः शोकः शक्यो न हि श्रुतिं नेतुम्।
वाग्विच्छित्तिर्न यतः प्रभवति तत इष्टपूर्तिः का।।1।।
आमन्त्रयामि यद्यपि तमहं परमत्र हृदय-संवेग।
स्यात् तस्मिन् किमपीदृशमागन्तुं सोऽतिविवशः स्यात्।।2।।
विक्रीडितमिति वेद त्यजेत् क्वचिन्नाथ विस्मरेन्न च सः।
एवमपि स्याद् यदसौ पीडयितुं मां भवेद् विवशः।।3।।
त्वत्पत्रं मम वैरी भ्रमति करे हन्त धारयन्नेवम्।
आवरितुं न प्रभवेत् पृष्टः केनापि, किमिदमिति।।4।।
एतेन किं सहित इति न हितं स्यादस्य सौकुमार्यस्य।
हस्तगतः स्यादथ चेच्छक्यः स्प्रष्टुं न हस्तेन।।5।।
कः प्रभवेदभिधातुं यदहं कस्यास्त्यहो चमत्कारः।
तदिदं किमपि रहस्यं न स्फुटतां शक्यमिह नेतुम्।।6।।
मृत्युं नहि प्रतीक्षे निकटे यो हन्त नूनमागन्ता।
समपेक्षे त्वां नाया नामन्त्रयितुञ्च शक्यमिह।।7।।
भारः शिरसः पतितो नोत्थापयितुं तु शक्य एतर्हि।
आपतितं तत् कार्यं यन्न च शक्यं समाधातुम्।।8।।
प्रेम्णि न हठः प्रयोज्यो 'ग़ालिब' तदिदन्नु कोऽपि वह्निरिति।
शक्यो न ज्वालयितुं निर्वापयितुं न च ज्वलितः।।9।।

193

चाक[1] की ख़्वाहिश[2], अगर वहशत[3] ब'अुरियानी करे[4]
सुब्ह की मानिन्द[5], ज़ख़्मे दिल[6] गरीबानी करे[7]

जल्वे[8] को तेरे वह 'आलम[9] है, कि गर कीजे ख़याल
दीदः-ए-दिल[10] को ज़ियारत गाहे हैरानी[11] करे

है शिकस्तन[12] से भी दिल नौमीद[13], यारब[14], कब तलक
आबगीनः[15] कोह[16] पर 'अर्ज़े गिराँ जानी करे[17]

मैकदः[18] गर चश्मे मस्ते नाज़[19] से पावे शिकस्त[20]
मू-ए-शीशः[21] दीदः-ए-साग़र की मिश़गानी करे[22]

ख़त्ते 'आरिज़[23] से लिखा है ज़ुल्फ़[24] को उल्फ़त[25] ने 'अह्द[26]
यक क़लम[27] मंज़ूर[28] है, जो कुछ परीशानी करे[29]

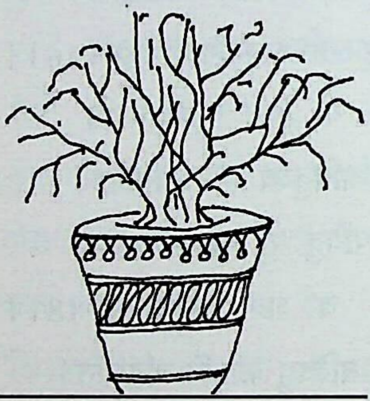

---

1. विदीर्णत्वम्; 2. स्पृहा; 3. वैकल्यम्; 4. नग्नत्वे; 5. प्रभातमिव; 6. हृदयव्रणः; 7. गलवसनत्वं प्राप्नुयादित्यर्थः; 8. रूपम्; 9. स्थितिः, वैभवमित्यर्थः; 10. मनश्चक्षुः; 11. विस्मयतीर्थस्नानम्; 12. भ्रंशः; 13. निराशः; 14. हे ईश्वर !; 15. काचः, दर्पणः; 16. पर्वतः, प्रस्तरः; 17. प्राणकाठिन्यस्य निवेदनम्; 18. मदिरालयः; 19. प्रियस्य मत्त चक्षुः; 20. पराजयः; 21. काचरेखा; 22. चषकस्य चक्षुषां पक्ष्मत्वम् गच्छेयुः; 23. मुखलोम; 24. अलकाः; 25. प्रेम; 26. प्रतिज्ञापत्रम्; 27. सर्वात्मना; 28. स्वीकृतम्; 29. आपत्तिः प्राप्ता भवेत् इत्यर्थः ।

193

नग्नत्वे वैकल्यं विदीर्णतायै यदि स्पृहां कुर्यात्।
गलवसनत्वं तावत् प्रभातमिव हृद्व्रणो गच्छेत्।।1।।
रूपस्य तादृशं ते वैभवमिह चेत् क्रियेत तद्ध्यानम्।
विस्मयतीर्थस्थलतां गच्छेत् सुतरां मनश्चक्षुः।।2।।
ईश ! भ्रंशादपि हृन्निराशमस्तीह रे कियद् यावत्।
विनिवेदयेच्छिखरिणं काचः स्वप्राणकाठिन्यम्।।3।।
मदिरालयो यदि स्यात् पराजितोऽक्ष्णा प्रियस्य मत्तेन।
चषकदृशां पक्ष्मत्वं रेखाः काचस्य गच्छेयुः।।4।।
अलकान् प्रति प्रतिज्ञापत्रं प्रेमालिखन्नु मुखलोम्ना।
अङ्गीकृताऽऽपदाप्ता सर्वा सर्वात्मना युष्मत्।।5।।

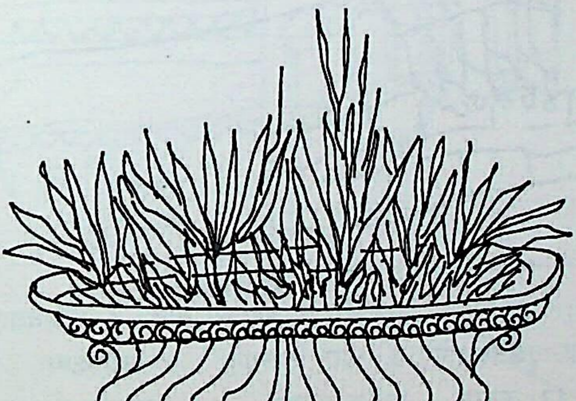

194

वह आ के ख़्वाब[1] में, तस्कीने इज़्तिकाब[2] तो दे
वले मुझे तपिशे दिल[3] मजाले ख़्वाब[4] तो दे
करे है क़त्ल[5], लगावट[6] में तेरा रो देना
तेरी तरह कोई तेग़े निगह[7] को आब[8] तो दे
दिखा के जुँबिशे लब[9] ही तमाम[10] कर हम को
न दे जो बोसः[11], तो मुँह से कहीं जवाब[12] तो दे
पिला दे ओक[13] से, साक़ी[14], जो हमसे नफ़रत[15] है
पियालः[16] गर नहीं देता, न दे, शराब[17] तो दे
असद, ख़ुशी से मेरे हाथ पाँव फूल गये
कहा जो उसने, ज़रा मेरे पाँव दाब तो दे

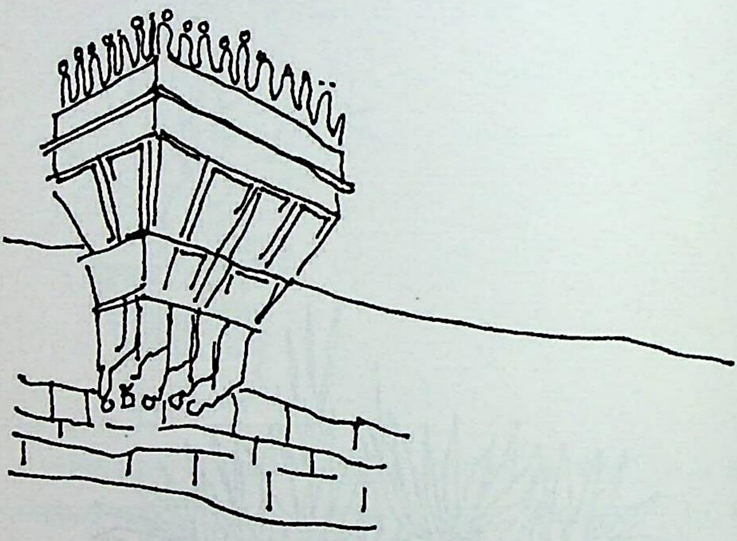

---

1. स्वप्नः; 2. पीडायां सान्त्वना; 3. हृदयस्य तापः; 4. निद्रावसरः; 5. वधः; 6. मिलनम्; 7. दृक्तरवारिः; 8. धारा, तैक्ष्ण्यम्; 9. अधरकम्पः; 10. समाप्तः; 11. चुम्बनम्; 12. उत्तरम्; 13. करपुटकम्; 14. मधुदात्री, ईश्वरः; 15. घृणा; 16. चषकः; 17. मधु।

194

स उपेत्य स्वप्ने मे वैकल्ये सान्त्वनां क्वचिद् दद्यात्।
निद्रावसरं दद्यात् किन्त्वयमाभ्यन्तरस्तापः।।1।।
मिलनावसरे रुदितं तव रे वधमातनोति हन्त भृशम्।
त्वमिव नु कश्चिद् दद्यादीक्षणतरवारये धाराम्।।2।।
नष्टं विधेहि रे मां प्रदर्श्य कम्पं निजाधरस्यैव।
दद्या न चुम्बनञ्चेत् स्वमुखात् क्वचिदुत्तरं दद्याः।।3।।
यद्यस्मासु घृणा ते पाणिपुटात् पाययस्व, मधुदात्रि।
अर्पयसि न चषकञ्चेन्नार्पय, मधुमात्रमर्पय रे।।4।।
'असद' प्रसादतो मे सम्भरितं पाणिपादमिह जातम्।
कथितं यत्तेन तु मां संवाहय तावदङ्घ्री मे।।5।।

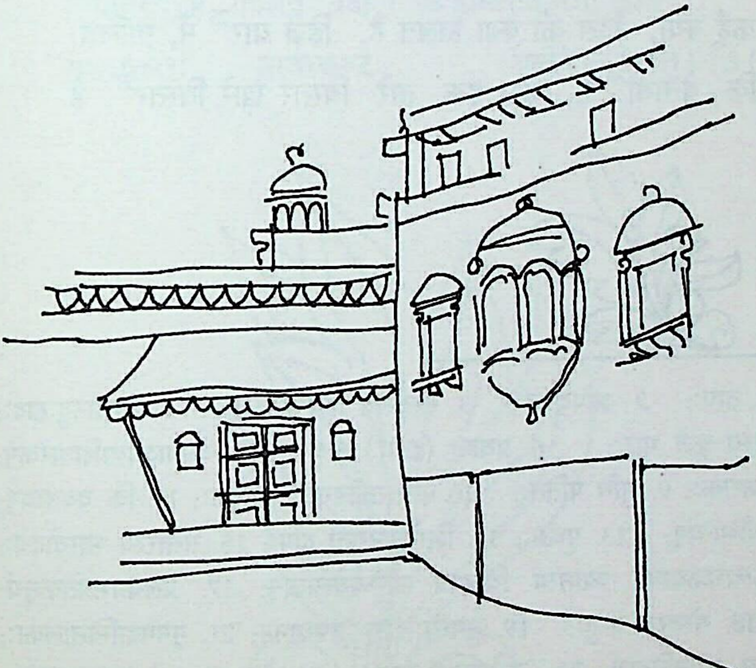

195

तपिश[1] से मेरी, वक़्फ़े कशमकश[2], हर तारे बिस्तर[3] है
मेरा सर रँजे बालीं[4] है, मेरा तन बारे बिस्तर[5] है
सरश्के सर बसहरा दादः[6], नूरुल ’अैने दामन[7] है
दिले बेदस्त-ओ-पा[8] उफ़्तादः[9] बर्ख़ुदरि बिस्तर[10] है
ख़ुशा[11] इक़्बाले रँजूरी[12], ’अयादत[13] को तुम आये हो
फ़रोग़े शम्’-ए-बालीं[14], ताले’-ए-बेदारे बिस्तर[15] है
ब तूफ़ाँ गाहे जोशे इज़्तिराबे शामे तन्हाई[16]
शु’आ’-ए-आफ़्ताबे सुब्हे महशर[17] तारे बिस्तर[18] है
अभी आती है बू[19], बालिश[20] से, उसकी ज़ुल्फ़े मिश्कीं[21] की
हमारी दीद[22] को, ख़्वाबे ज़ुलैख़ा[23], ’आरे बिस्तर[24] है
कहूँ क्या, दिल की क्या हालत है, हिज्रे यार[25] में, ग़ालिब
कि बेताबी[26] से, हर इक तारे बिस्तर ख़ारे बिस्तर[27] है

---

1. तापः; 2. आपद्गतः; 3. संस्तरस्य प्रत्येकं तन्तुः; 4. उपधानदुःखदः; 5. संस्तरस्य कृते भारः; 6. प्रवहत् (इत्वरं) अश्रु; 7. वसनाञ्चलाक्षितारकम्; 8. हृदयवाराकः; 9. भुवि पतितः; 10. संस्तरक्रोडगतः शिशुकः; 11. किं वक्तव्यम्; 12. रोगसौभाग्यम्; 13. पृच्छाः; 14. शिरोधानगतो दीपः; 15. संस्तरस्य भाग्योदयः; 16. वैकल्यचक्रवातेन व्याप्तस्य विरहस्य सान्ध्यवेलायाम्; 17. प्रलयप्रभातिकसूर्यकिरणः; 18. संस्तरय तन्तुः; 19. सुगन्धः; 20. उपधानम्; 21. मृगमदान्वितालकाः; 22. दर्शनम्, नयनमित्यर्थः; 23. ‘जुलेखाया’ स्वप्नः; 24. संस्तरस्य कृते लज्ज जनकः; 25. प्रियविरहः; 26. वैकल्यम्; 27. संस्तरस्य कण्टकः ।

195

सङ्घर्षति मत्तापात् प्रत्येकं संस्तरस्य सूत्रमिह।
मच्छिर उपधानाधिः संस्तरभारश्च मद्गात्रम्।।1।।
इत्वरमश्रु मदीयं वसनाञ्चलचक्षुषः किल ज्योतिः।
पतितश्च मे वराकः संस्तरलग्नः शिशुर्हृदयम्।।2।।
किं वाच्यं रुग्भाग्यं पृच्छायां तावदागतस्त्वमसि।
संस्तरभाग्योदय इव मम नु शिरोधानदीप इह।।3।।
वैकल्यचक्रवातव्याप्तैकाकित्वसान्ध्यवेलायाम् ।
संस्तरतन्तुर्मन्ये प्रलयदिनादित्यभानुरिति।।4।।
तन्मृगमदालकानामुपधानादेति गन्ध एतर्हि।
अस्ति 'ज़ुलेख़ा'-स्वप्नः संस्तरलज्जाकरो नोऽक्ष्णोः।।5।।
प्रियविरहेऽहं 'ग़ालिब' वदानि किं हृत्स्थितिर्निजा केति।
संस्तरतन्तुः संस्तरकण्टः प्रत्येकमुद्वेगात्।।6।।

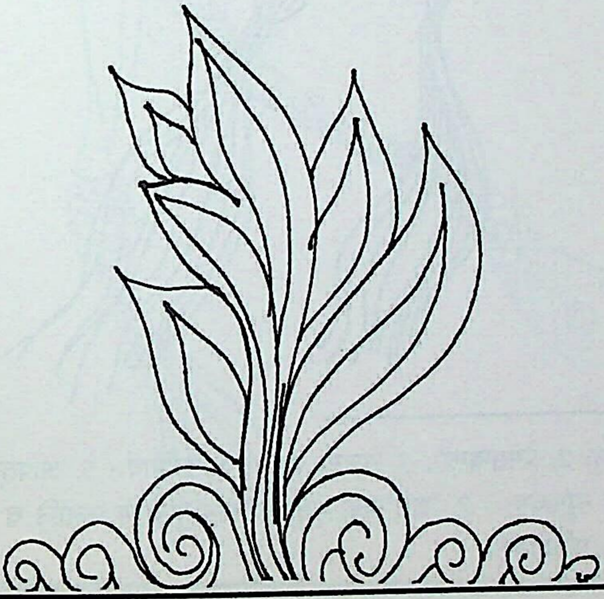

196

ख़तर[1] है, रिश्तः-ए-उल्फ़त[2] रगे गर्दन[3] न हो जावे
गुरूरे दोस्ती[4] आफ़त[5] है, तू दुश्मन न हो जावे
समझ इस फ़स्ल[6] में कोताहि-ए-नश्व-ओ-नुमा[7], ग़ालिब
अगर गुल, सर्व[7] के क़ामत[8] प, पैराहन[9] न हो जावे

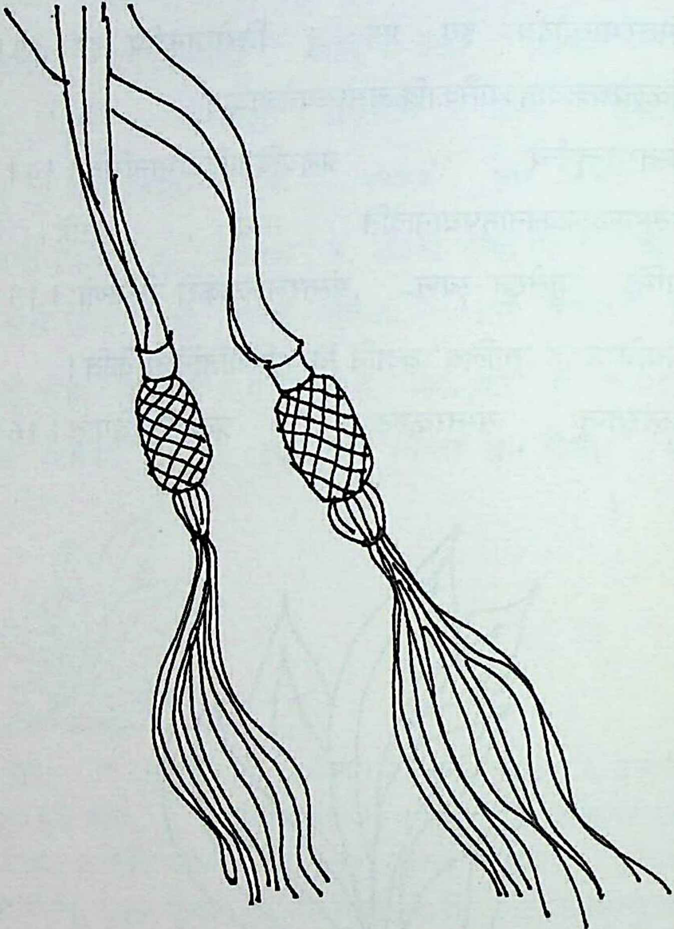

---

1. भयम्; 2. प्रेमसम्बन्धः; 3. गलस्य बन्धः; 4. मैत्रीगर्वः; 5. आपत्; 6. ऋतुः; 7. प्रफुल्लतायां न्यूनत्वम्; 7. 'सरो'नामा वृक्षः, यस्मिन् पुष्पाणि फलानि च नोत्पद्यन्ते; 8. आकारः; 9. परिधानम्।

196

न स्याद् गलस्य बन्धः प्रेम्णः सम्बन्ध एष भयमेतत्।
मैत्रीगर्वो विपदिह भवेर्न यत् त्वं रिपुः क्वचन।।1।।
'ग़ालिब' दोषमवेहि प्रफुल्लतायां तदा मधोरेव।
'सर्वस्या'कारे न प्रसूनमावरणतां यायात्।।2।।

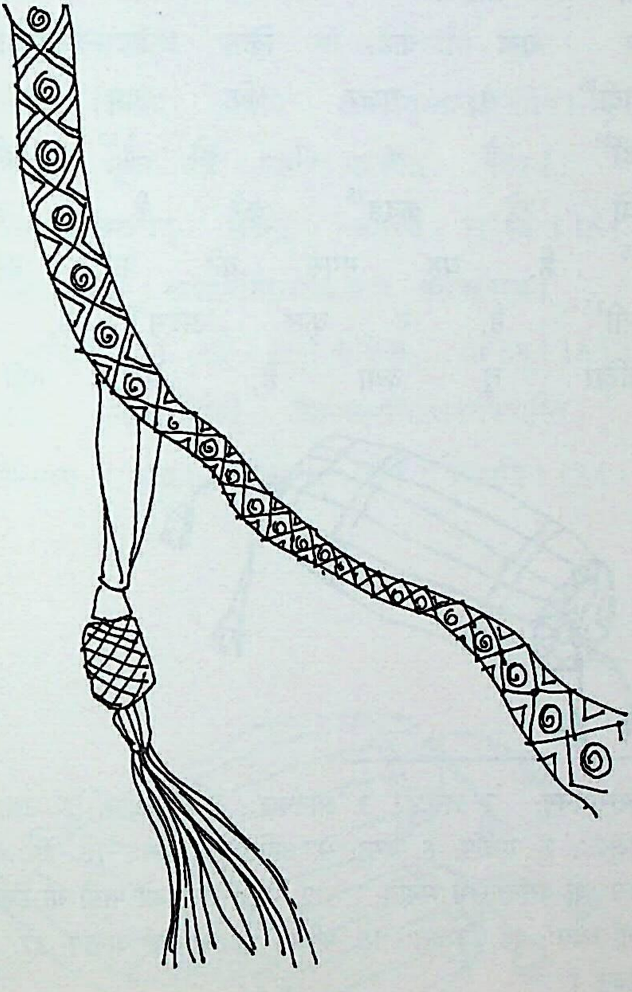

197

फ़रियाद[1] की कोई लै[2] नहीं है
नाल:[3] पाबन्दे नै[4] नहीं है
क्यों बोते हैं बाग़बान[5] तूँबे
गर बाग़ गदा-ए-मै[6] नहीं है
हर चन्द[7] हर एक शै[8] में तू है
पर तुझसी तो कोई शै नहीं है
हाँ, खाइयो मत फ़रेबे हस्ती[9]
हर चन्द कहें, कि है, नहीं है
शादी[10] से गुज़र, कि ग़म न होवे
उर्दी[11] जो न हो, तो दै[12] नहीं है
क्यों रद्दे क़दह[13] करे है, ज़ाहिद[14]
मै[15] है, यह मगस की क़ै[16] नहीं है
हस्ती[17] है, न कुछ ’अदम[18] है, ग़ालिब
आख़िर तू क्या है, अय, नहीं है

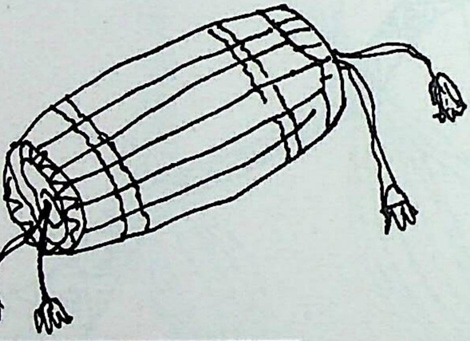

---

1. अभ्यर्थनम्; 2. लयः; 3. आर्तनादः; 4. वंश्यधीनः; 5. उद्यानपालकाः; 6. मदिराभिक्षुकः; 7. यद्यपि; 8. वस्तु; 9. अस्तित्वस्य भ्रमः; 10. हर्षः; 11. एकः पारसीको मासः यो वसन्तारम्भे भवति; 12. एकः पारसीको मासो यो हेमन्ते भवति; 13. चषकाणां ध्वंसः; 14. विरक्तः; 15. मदिरा; 16. माक्षिकं वान्तम्; 17. अस्तित्वम्; 18. अनस्तित्वम् ।

197

अभ्यर्थनस्य कश्चिल्लयो न [निर्धारितोऽस्ति जगतीह]।
भवति न वंश्यायत्तः कदाचिदार्तस्वरो नाम।।1।।
उपवनपालाः कथमिव वपन्ति तुम्बीलता निजोपवने।
अस्त्युपवनं न मदिराभिक्षार्थि क्वचन यदि तावत्।।2।।
प्रत्येकमेव वस्तुनि यदपि त्वं नाम विद्यमानोऽसि।
न परं किमपि जग़त्यां वस्तु विभाति क्वचित् त्वमिव।।3।।
अस्तित्वच्छलनायास्त्वं पात्रं नो कदाचिदपि भूयाः।
नास्तीह किमपि यद्यपि कथयेयुस्तावदस्तीति।।4।।
सुखनिरपेक्षो भूया यन्न स्याः पात्रमत्र शोकस्य।
न वसन्तारम्भश्चेद् हेमन्तः स्याच्च नारब्धः।।5।।
कथमसि धार्मिक ! खण्डननिरतस्त्वं हन्त मद्यपात्रस्य।
मद्यं तावदिदं रे नेदं खलु माक्षिकं वान्तम्।।6।।
‘ग़ालिब’ नास्त्यस्तित्वं किमप्यनस्तित्वमेवमप्यस्ति।
तदनस्तिरूप ! तावत् त्वमन्ततो हन्त रे किमसि।।7।।

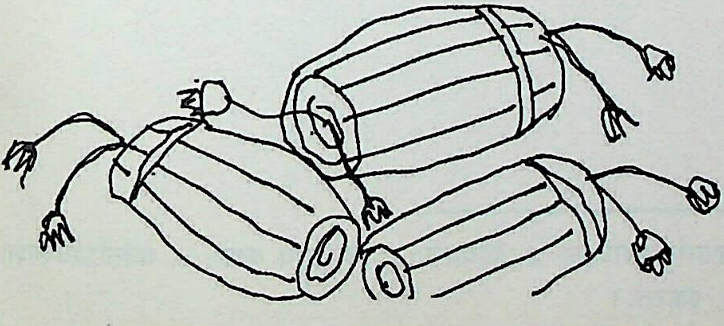

198

न पूछ नुस्ख़ः-ए-मरहम[2], जराहते दिल[2] का
कि उसमें रेज़ः-ए-अल्मास[3] ज़ुज़्वे आ’ज़म[4] है
बहुत दिनों में तग़ाफ़ुल[5] ने तेरे पैदा की
वह इक निगह, कि बज़ाहिर[6] निगाह से कम है

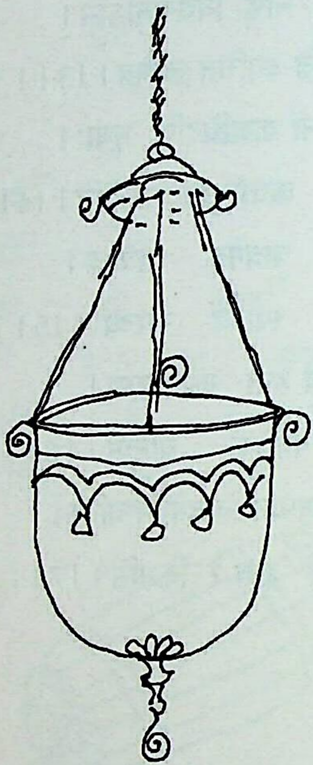

---

1. लेपार्थमुपचारपत्रम्; 2. हृदयव्रणः; 3. हीरकस्य कणः; 4. सर्वतोऽधिकाशः; 5. उपेक्षा; 6. प्रकटतः।

198

हृदयव्रणलेपकृते पृच्छ न वस्तूनि सन्नियोज्यानि।
हीरककणोऽधिकांशस्तत्र भवत्येष उपयोज्यः।।1।।
त्वदुपेक्षयेह जनिता दिनेषु यातेषु हन्त नैकेषु।
सैका दृष्टिर्दृष्टेर्व्यक्तायाः सा खलु न्यूना।।2।।

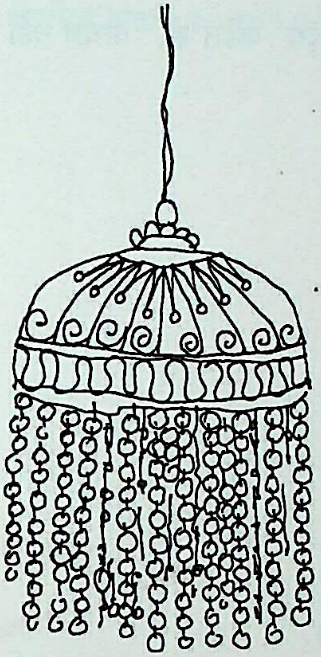

199

हम रश्क[1] को अपने भी गवारा[2] नहीं करते
मरते हैं, वले[3] उनकी तमन्ना[4] नहीं करते
दर पर्द:[5] उन्हें ग़ैर[6] से, है रब्ते निहानी[7]
ज़ाहिर[8] का यह पर्दा[9] है, कि पर्दा नहीं करते
यह बा'अिसे नौमीदि-ए-अर्बाबे हवस[10] है
ग़ालिब को बुरा कहते हो, अच्छा नहीं करते

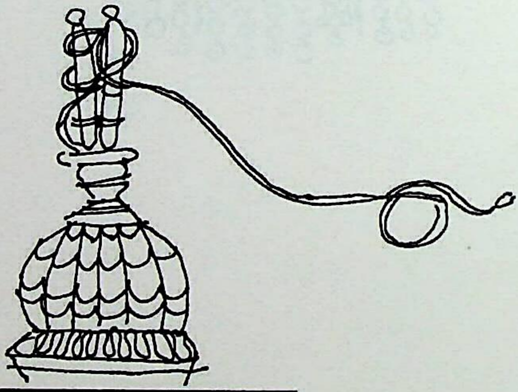

---

1. ईर्ष्या; 2. सहनम्; 3. किन्तु; 4. अभिलाषः; 5. अन्तरन्तः; 6. वैरी; 7. गुप्तः सम्बन्धः; 8. प्रकटम्; 9. आवरणम्; 10. प्रेमविरहितामां लोलुपानां नैराश्यस्य हेतुः।

199

ईर्ष्यां स्वयमपि न वयं सोढुं शक्ता न [हन्त जगतीह]।
एते म्रियामहे परमभिलषितुं शक्नुमो नहि तम्।।1।।
सम्बन्धः किल गुप्तो यदन्तरन्तस्तु वैरिणा तस्य।
क्रियतेऽनावरणमिति प्रकटे यत्किञ्चिदावरणम्।।2।।
गृध्नूनां कृत एतन्नैराश्यस्यैव हन्त हेतुः स्यात्।
यदशोभन इति 'ग़ालिब'मात्थ न तच्छोभनं कुरुषे।।3।।

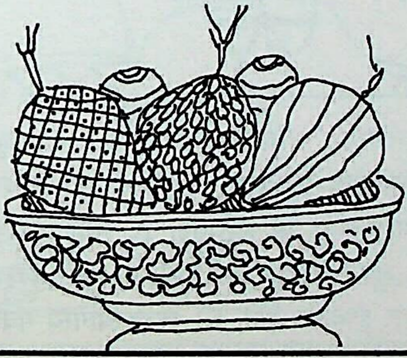

200

करे है बादः[1] तेरे लब[2] से कस्बे रंगे फ़रोग़[3]
ख़ते पियालः[4] सरासर[5] निगाहे गुलचीं[6] है

कभी तो इस दिले शोरीदः[7] की भी दाद[8] मिले
कि एक 'उम्र से हस्रत परस्ते बालीं[9] है

बजा[10] है, गर न सुने, नालः हा-ए-बुलबुले ज़ार[11]
कि गोशे गुल[12], नमे शबनम[13] से, पँबः आगीं[14] है

असद है नज़्'अ[15] में, चल बेवफ़ा[16], बराय ख़ुदा[17]
मक़ामे तर्के हिजाब-ओ-विदा'-ए-तम्कीं[18] है

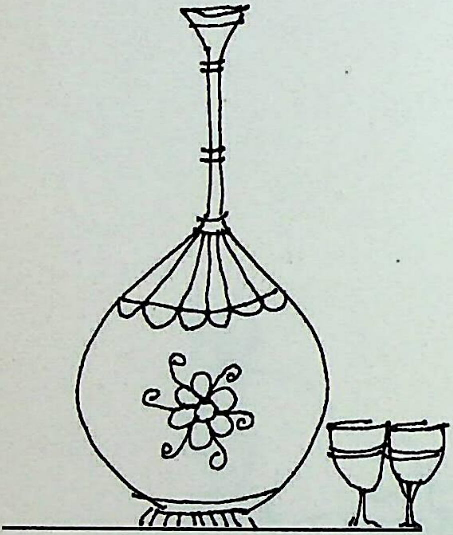

---

[1] मदिरा; [2] अधरः; [3] वर्णच्छटावाप्तिः; [4] मधुपात्रगतं मापचिह्नम् [5] सर्वथा; [6] प्रसूनानां चेता (मालाकारः); [7] मत्तं हृदयम्; [8] प्रशस्तिः; [9] उपधानाभिलाषि, निद्राभिलाषि; [10] उचितम्; [11] पीडितस्य बुल्बुलकस्यार्तनादाः; [12] पुष्पस्य कर्णः; [13] तुषारार्द्रतया; [14] तूलपूर्णः; [15] मृत्युकाले श्वसितच्छेदस्य स्थितिः; [16] अकृतज्ञः; [17] ईश्वरस्य कृते; [18] लज्जात्यागस्य गर्वनिवृत्तेश्च समयः ।

200

अधिगच्छति वर्णस्य च्छटाविशेषं तवाधरान्मदिरा।
मधुपात्रमाप चिह्नं प्रसूनचेतुर्दृगत्यर्थम्।।1।।
मत्तं कदाचिदत्र प्रशस्तिलाभं करोतु हृदपीदम्।
चिररात्राय यदस्ति प्रकामलिप्सूपधानमिह।।2।।
उचितं यदीह पीडित'बुलबुलका'र्तस्वरान् न शृणुयाच्चेत्।
सुमनःकर्णो यदयं तुषारतूलेन सम्भरितः।।3।।
'असदो'ऽस्ति म्रियमाणोऽकृतज्ञ ! कृत ईश्वरस्य चल तावत्।
लज्जाया गर्वस्य च यदिह त्यागस्य समयोऽयम्।।4।।

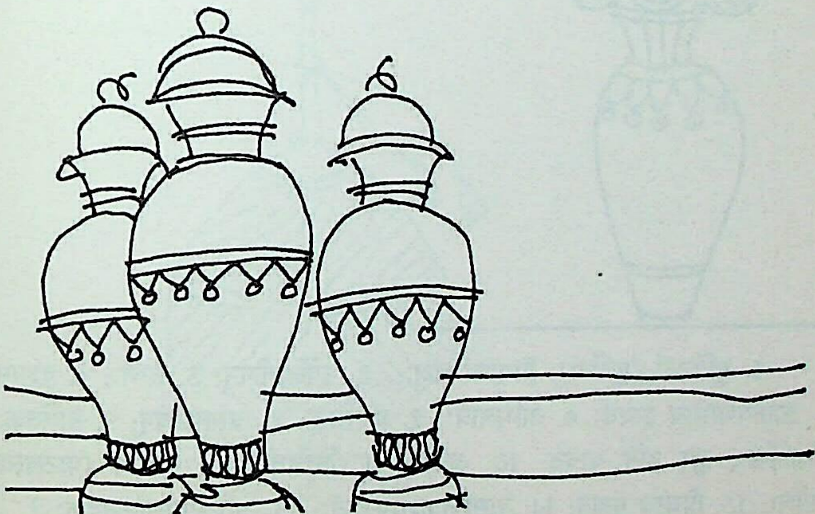

201

क्यों न हो चश्मे बुताँ[1] मह्वे तग़ाफ़ुल[2], क्यों न हो
या'नी इस बीमार[3] को नज़्ज़ारे[4] से परहेज़[5] है

मरते मरते, देखने की आरज़ू[6] रह जायगी
वाय[7] नाकामी[8], कि उस काफ़िर[9] का ख़ंजर[10] तेज़[11] है

'आरिज़े गुल[12] देख, रू-ए-यार[13] याद आया, असद
जोशिशे फ़स्ले बहारी[14] इश्तियाक़ अँगेज़[15] है

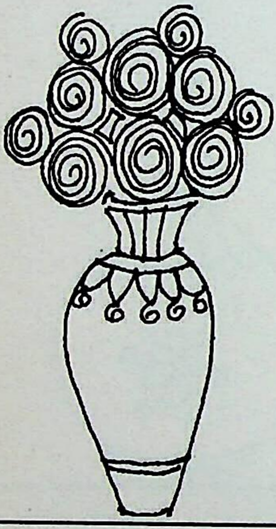

---

1. मूर्तिमतां (मूर्तीनां), प्रियाणां चक्षुः; 2. उपेक्षालीनम्; 3. रुग्णः; 4. दृश्यम्; 5. आकर्षणाभाव इत्यर्थः; 6. अभिलाषः; 7. हा धिक्; 8. असाफल्यम्; 9. नास्तिकः, अधार्मिकः, क्रूर इति यावत्; 10. असिः; 11. निशितः; 12. पुष्पस्य (पाटलस्य) कपोलः; 13. प्रियस्य मुखम्; 14. वासन्तिकश्चक्रवातः; 15. अभिलाषस्योत्पादकः ।

201

लीनमुपेक्षायां स्यान्मूर्तिमतां लोचनं न हन्त कथम्।
दृश्यं प्रति नाकर्षणमस्य क्वचिदस्ति रुग्णस्य।।1।।
अवलोकनाभिलाषो म्रियमाणस्येह मेऽवशिष्येत।
हा धिगसाफल्य! यतस्तस्य क्रूरस्य निशितोऽसिः।।2।।
पाटलकपोलमेक्ष्य प्रियमुख'मसद' स्मृतिं गतं झटिति।
मधुमासचक्रवातो यदस्ति जनकोऽभिलाषस्य।।3।।

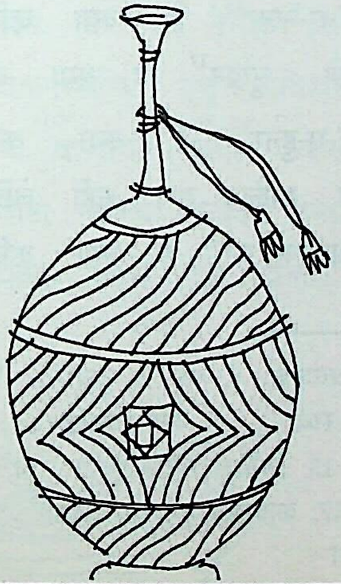

202

दिया है दिल अगर उसको, बशर[1] है, क्या कहिये
हुआ रक़ीब[2], तो हो, नामःबर[3] है, क्या कहिये
यह ज़िद[4], कि आज न आवे और आये बिन न रहे
क़ज़ा[5] से शिकवः[6] हमें किस क़दर है, क्या कहिये
रहे है यों गह-ओ-बेगह[7] कि कू-ए-दोस्त[8] को अब
अगर न कहिये कि दुश्मन का घर है, क्या कहिये
ज़िहे करिश्मः[9] कि यों दे रखा है हम को फ़रेब[10]
कि बिन कहे ही उन्हें सब ख़बर है, क्या कहिये
समझ के करते हैं, बाज़ार में वह, पुरसिशे हाल[11]
कि यह कहे, कि सरे रहगुज़र[12] है, क्या कहिये
तुम्हें नहीं है सरे रिश्तः-ए-वफ़ा[13] का ख़याल
हमारे हाथ में कुछ है, मगर है क्या, कहिये
उन्हें सवाल प जा'मे जुनूँ[14] है, क्यों लड़िये
हमें जवाब से क़त'-ए-नज़र[15] है, क्या कहिये
हसद[16], सज़ा-ए-कमाले सुख़न[17] है, क्या कीजे
सितम[18], बहा-ए-मता'-ए-हुनर[19] है, क्या कहिये
कहा है किसने, कि ग़ालिब बुरा नहीं, लेकिन
सिवाये इसके, कि आशुफ़्तःसर[20] है, क्या कहिये

---

1. मनुष्यः; 2. शत्रुः; 3. पत्रवाहकः; 4. हठः; 5. मृत्युः; 6. निन्दा, अपवादः; 7. समयेऽसमये वा; 8. प्रियस्य रथ्या; 9. अहो चमत्कारः; 10. वञ्चना; 11. कुशलप्रश्नः; 12. मध्येमार्गम्; 13. प्रेमनिर्वाहसम्बन्धसूत्राग्रः; 14. उन्मादस्य भ्रमः; 15. नैराश्यम्; 16. ईर्ष्या; 17. काव्यकलापूर्णत्वस्य दण्डः; 18. अन्यायः; 19. कलासम्पदः मूल्यम्; 20. मत्तः ।

202

यदि हृत् तस्मै दत्तं, किं वाच्यं तस्य, मानवः सोऽस्ति।
स हि पत्रवाहकः खलु कामं रिपुरस्तु किं वाच्यम्।।1।।
हठ एष यत्स नायादद्य परं निश्चितं स आयाच्च।
मृत्युं प्रत्यस्माकं किं वाच्यं कीदृगपवादः।।2।।
समयेऽसमये वा स प्रेक्ष्यत एवं प्रियस्य रथ्यायाम्।
यद्यधुना सा शत्रोर्गृहमिति नोच्येत, किं वाच्यम्।।3।।
कोऽपि चमत्कारोऽयं प्रवञ्चितास्तेन हन्त वयमेवम्।
कथनं विनैव सर्वं विदितं तस्येति किं वाच्यम्।।4।।
कुशलप्रश्नं विपणौ स विधत्ते नूनमेष जानाति।
कथयेदेष च 'मध्येमार्गमितः किन्नु वाच्यमि'ति।।5।।
किञ्चिदपीह ध्यायसि न त्वं निर्वाहबन्धसूत्राग्रम्।
अस्ति करे मम किञ्चित् परं किमस्तीति किं वाच्यम्।।6।।
उन्मत्त इति स मनुते प्रश्ने विहितेऽलमत्र कलहेन।
उत्तरमालक्ष्य च नो नैराश्यं तत्र किं वाच्यम्।।7।।
किं क्रियतामस्माभिः सुष्ठु कवित्वस्य दण्ड ईर्ष्येह।
किं वाच्यं चान्यायो यदिह कलासम्पदो मूल्यम्।।8।।
'नास्तेऽशिष्टो ग़ालिब' इत्युक्तं हन्त केन परमेवम्।
अतिरिच्यैतद् वाच्यं किं यन्मत्तः किलायमिति।।9।।

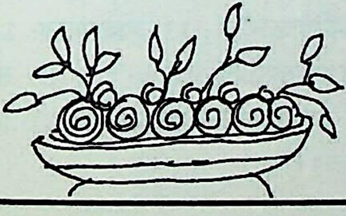

203

देख कर दर पर्दः[1] गर्मे दामन अफ़्शानी[2] मुझे
कर गई वाबस्तः-ए-तन[3] मेरी 'उरियानी[4] मुझे
बन गया तेग़े निगाहे यार[5] का सँगे फ़साँ[6]
मरहबा[7] मैं, क्या मुबारक[8] है गिराँ जानी[9] मुझे
क्यों न हो बेइल्तिफ़ाती[10], उस की ख़ातिर जम्'अ है[11]
जानता है मह्वे पुरसिश हा-ए-पिन्हानी[12] मुझे
मेरे ग़म ख़ाने[13] की क़िस्मत[14] जब रक़म होने लगी[15]
लिख दिया मिंजुमलः-ए-अस्बाबे वीरानी[16], मुझे
बदगुमाँ[17] होता है वह काफ़िर[18], न होता, काश के
इस क़दर ज़ौक़े नवा-ए-मुर्ग़े बुस्तानी[19] मुझे
वाय, वाँ भी शोरे मह्शर[20] ने न दम लेने दिया
ले गया था गोर[21] में, ज़ौक़े तन आसानी[22] मुझे

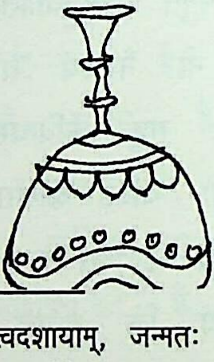

---

1. आवरणगतः, अनस्तित्वदशायाम्, जन्मतः पूर्वमित्यर्थः; 2. वसनाञ्चल-निर्व्यपेक्षः, स्वातन्त्र्यस्थितावित्यर्थः; 3. देहेनाबद्धः; 4. नग्नत्वम्; 5. प्रियदृक्तरवारिः; 6. शाणप्रस्तरः; 7. धन्यः; 8. शुभम्; 9. प्राणानां कठोरत्वम्; 10. अनाकृष्टिः; 11. स सन्तुष्टोऽस्तीत्यर्थः; 12. काल्पनिकपरिपृच्छालीनः; 13. शोकागारम्; 14. भाग्यम्; 15. लेखितुं प्रारब्धम्, इत्यर्थः; 16. नैर्जन्यसामग्रीषु एकः; 17. संशयशीलः; 18. अनास्थावादी, प्रिय इतियावत्; 19. उद्यानखगगीतगानव्यसनम्; 20. प्रलयदिनस्य कलकलः; 21. समाधिः; 22. आलस्यप्रियत्वम्।

203

आवरणान्तर्गतमथ वसनाञ्चलनिर्व्यपेक्षमवलोक्य।
अकरोन्मन्नग्नत्वं मामाबद्धं शरीरेण।।1।।
प्रियलोचनतरवारेर्जातोऽहं कोऽपि शाणपाषाणः।
धन्योऽहं धन्योऽहं शुभमस्मत्प्राणकाठोर्यम्।।2।।
न कथमनाकृष्टिः स्यात् स वर्तते सर्वथेह सन्तुष्टः।
परिपृच्छासु तथाऽन्तर्लीनं मां यत् स जानाति।।3।।
भाग्यं यदा व्यलिख्यत शोकागारस्य मामकीनस्य।
नैर्जन्यमूलवस्तुस्वहमप्येकस्तदा लिखितः।।4।।
सोऽनास्थावादी मयि संशयशीलोऽस्ति, हन्त नापि स्यात्।
न स्यामेवमुपवनश्रितखगगीतश्रुतिव्यसनः।।5।।
प्रलयस्य कलकलो मे ततोऽपि शान्तिं न हन्त किञ्चिददात्।
आलस्यप्रियता मां यन्नु समाधिस्थलीमनयत्।।6।।

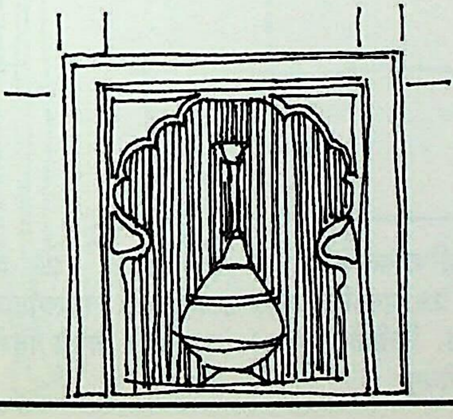

वा'दः[23] आने का वफ़ा कीजे[24], यह क्या अन्दाज़[25] है
तुमने क्यों सौंपी है, मेरे घर की दरबानी[26] मुझे
हाँ नशाते आमदे फ़स्ले बहारी[27] वाह, वाह
फिर हुआ है ताज़ः[28] सौदा-ए-ग़ज़ल ख़्वानी[29] मुझे
दी मेरे भाई को हक़ ने, अज़ सरे नौ[30] ज़िन्दगी
मीरज़ा यूसुफ़, है ग़ालिब, यूसुफ़े सानी[31] मुझे

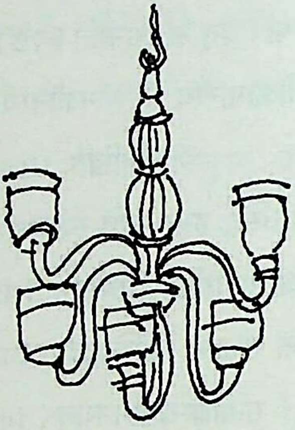

---

23. वचनम्; 24. परिपाल्यतामित्यर्थः; 25. रीतिः; 26. द्वारपालत्वम् 27. मधुमासागमनजन्यो हर्षः; 28. पुनरुदितो जात इत्यर्थः; 29. ग़ज़लगीतीनां गानस्य उन्मादः; 30. नवरूपतया; 31. द्वितीयो 'यूसुफ़ः' (यूसुफ़स्य) विषये विशेषावगमार्थं सप्तत्रिंशत्तमस्य षष्ठं पद्यमाकलनीयम्)

आगमनस्य वचः स्वं परिपालय, कैव तावकी रीतिः।
मद्गेहद्वाःस्थत्वं मह्यमदास्त्वं कथं तावत्।।7।।
मधुमासागमजातो हर्षातिशयोऽतिशोभनं नूनम्।
उन्मादः पुनरुदितो मम गाने 'ग़ज़ल'-गीतीनाम्।।8।।
भूयो जीवनमर्पितमस्मद्भ्रात्रे यदीश्वरेणेह।
'यूसुफ़' एषोऽन्यो मे 'ग़ालिब' भुवि 'मीरज़ा'-पूर्वः।।9।।

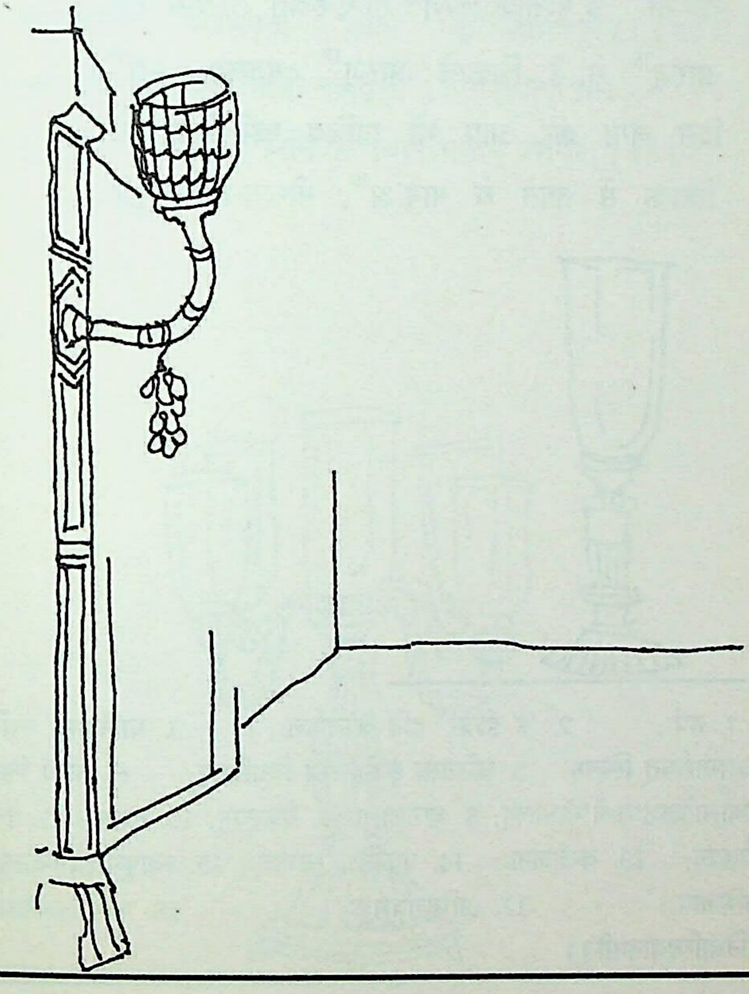

204

याद है शादी[1] में भी हँगामः-ए-यारब[2], मुझे
सुबूहः-ए-ज़ाहिद[3] हुआ है, ख़न्दः ज़ेरे लब[4] मुझे

है कुशादे ख़ातिरे वाबस्तः दर[5] रह्ने सुख़न[6]
था तिलिस्मे कुफ़्ले अबजद[7], ख़ानः-ए-मक्तब[8] मुझे

यारब, इस आशुफ़्तगी[9] की दाद[10] किस से चाहिये
रश्क[11], आसाइश[12] प है ज़िन्दानियों[13] की, अब मुझे

तब'अ[14] है मुश्ताक़े लज़्ज़त हा-ए-हस्रत[15], क्या करूं
आरज़ू[16] से, है शिकस्ते आरज़ू[17] मतलब मुझे[18]

दिल लगा कर आप भी ग़ालिब मुझी से हो गये
'अिश्क़ से आते थे माने'अ[19], मीरज़ा साहब मुझे

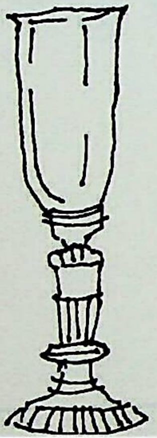

---

1. हर्षः; 2. 'हे ईश्वर' इति कोलाहलः; 3. धार्मिकस्य स्त्रगिव; 4. अधरान्तरीषत् स्मितम्; 5. घटितस्य मनोद्वारस्य विघटितम्; 6. काव्यं श्रितम्; 7. वर्णमालामेलक'ताले'न्द्रजालम्; 8. पाठशाला; 9. वैकल्यम्; 10. प्रशंसा; 11. ईर्ष्या; 12. सौख्यम्; 13. बन्दीजनाः; 14. प्रकृतिः, स्वभावः; 15. स्वापूर्णेच्छानन्दोत्सुका; 16. अभिलाषः; 17. अभिलाषभङ्गः; 18. मदपेक्षितमित्यर्थः; 19. विनिवारितवानासीत्।

204

हे ईश्वरेति कोलाहल आयाति स्मृतिं प्रसादेऽपि।
मालेव धार्मिकस्याधरान्तरीषत् स्मितं मेऽभूत्।।1।।
काव्यं दुःखद्वारोद्घटनाश्रितमत्र पाठशाला मे।
आसीन्नु वर्णमालामेलकतालेन्द्रजालमिव।।2।।
वैकल्यस्यास्येश्वर ! शंसामिह नाम हन्त कः कुर्यात्।
वन्दीजनसौख्यानां कृत ईर्ष्यामनुभवाभ्यधुना।।3।।
प्रकृतिः स्वापूर्णेच्छासौख्योत्का वर्तते नु, किं कुर्याम्।
अभिलाषो मदभिमतो जातो ह्यभिलाषभङ्गस्य।।4।।
स्वयमपि 'ग़ालिब' जातो मत्सदृशो हृदयमर्पयित्वाऽसि।
मां मीरज़ामहाशय ! विनिवारितवान् भवान् प्रणयात्।।5।।

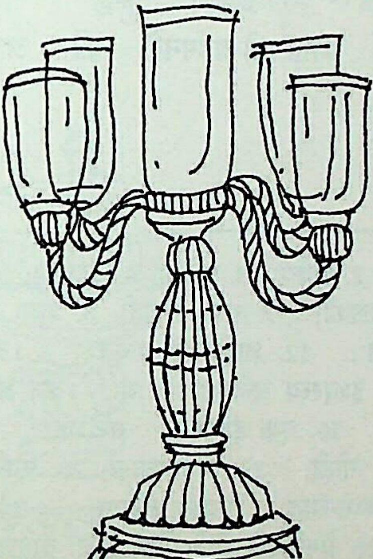

205

हुज़ूरे शाह[1] में, अह्ले सुख़न[2] की आज़माइश[3] है
चमन[4] में, ख़ुश नवायाने चमन[5] की आज़माइश है
क़द-ओ-गेसू[6] में, क़ैस-ओ-कोहकन[7] की आज़माइश है
जहाँ हम हैं वहाँ दार-ओ-रसन[8] की आज़माइश है
करेंगे कोहकन[9] के हौसले का इम्तिहाँ आख़िर
हनोज़[10] उस ख़स्तः[11] के नीरू-ए-तन[12] की आज़माइश है
नसीमे मिस्र[13] को क्या पीरे कन'आँ[14] की हवाख़्वाही[15]
उसे यूसुफ़[16] की बू-ए-पैरहन[17] की आज़माइश है
वह आया बज़्म[18] में देखो न कहियो फिर कि ग़ाफ़िल[19] थे
शिकेब-ओ-सब्रे अह्ले अंजुमन[20] की आज़माइश है
रहे दिल ही में तीर, अच्छा, जिगर के पार हो, बेह्तर
गरज़[21] शिस्ते बुते नावक फ़िगन[22] की आज़माइश है
नहीं कुछ सुबह्‌ः-ओ-ज़ुन्नार[23] के फन्दे[24] में गीराई[25]
वफ़ादारी[26] में शैख़-ओ-बर्हमन[27] की आज़माइश है

---

1. नृपतेः समक्षम्; 2. कवयः; 3. परीक्षा; 4. उद्यानम्; 5. उद्यानस्य शोभनस्वरा गायनाः; 6. आकारालकौ; 7. मज़नू-फ़र्हादौ; 8. शूला रशना च; 9. फर्हादः; 10. अधुना; 11. श्रान्तः; 12. शारीरिकी शक्तिः; 13. 'मिस्र'देशस्य पवनः; 14. या'कूबः, एकः ईश्वरस्य सन्देशहरः यः. कन'आँ-वृद्ध इत्युच्यतेस्त्र; 15. शुभाकाङ्क्षा; 16. एक ईश्वरस्य सन्देशहरः, या'कूबस्य पुत्रः; 17. परिधानगन्धः; 18. गोष्ठी; 19. असावधानः; 20. गोष्ठीवातां धैर्यं सन्तोषश्च; 21. अभिप्रायः; 22. शरसन्धातुः प्रियस्य लक्ष्यम्; 23. माला यज्ञोपवीतञ्च; 24. बन्धनम्; 25. बन्धः; 26. प्रेमनिर्वाहे धैर्यम्; 27. शैखः ब्राह्णश्च;

205

अस्ति परीक्षा नृपतेः समक्षमिह काऽपि काव्यकर्तृणाम्।
उद्यान-सुस्वराणामुद्यानेऽस्मिन् परीक्षाऽस्ति।।1।।
आकारालकयोरिह ‘मजनू’-फ़र्हादयोः’ परीक्षाऽस्ति।
अस्ति परीक्षा शूला-रशनाभ्यां स्मो वयं यत्र।।2।।
‘फ़र्हाद’-साहसस्यान्ततः परीक्षामिमे नु कर्तारः।
श्रान्तस्य तस्य सम्प्रति वपुषः शक्तेः परीक्षाऽस्ति।।3।।
विदधीत ‘मिस्र’-पवनः ‘कनआं’-वृद्धस्य किं शुभाकाङ्क्षाम्।
स परीक्षितुकामः खलु ‘यूसुफ़’-वासःसुगन्धमहो।।4।।
स उपेतः खलु गोष्ठीं नास्मावहिताः पुनर्न वाच्यमिति।
गोष्ठीवतां परीक्षा सम्प्रति धैर्यस्य तुष्टेश्च।।5।।
सुष्ठु शरः स्याद् हृदये सुष्ठुतरं चेद् व्रजेद् यकृत्पारम्।
लक्ष्यस्यास्ति परीक्षा शरसन्धातुः प्रियस्य ततः।।6।।
मालोपवीतयोरिह न बन्धने कश्चिदस्ति बन्धोऽत्र।
शेख़-ब्राह्मणयोः खलु निर्वाह-धृतौ परीक्षाऽस्ति।।7।।

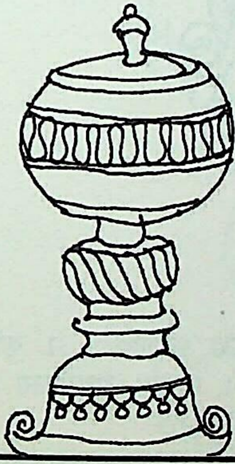

पड़ा रह अय दिले वाबस्तः[28] बेताबी[29] से क्या हासिल[30]
मगर फिर ताबे ज़ुल्फ़े पुरशिकन[31] की आज़माइश है
रग-ओ-पै[32] में जब उतरे ज़हरे ग़म[33] तब देखिये क्या हो
अभी तो तल्ख़ि-ए-काम-ओ-दहन[34] की आज़माइश है
वह आवेंगे मेरे घर, वा'दः[35] कैसा, देखना, ग़ालिब
नये फ़ितनों[36] में अब चर्ख़े कुहन[37] की आज़माइश है

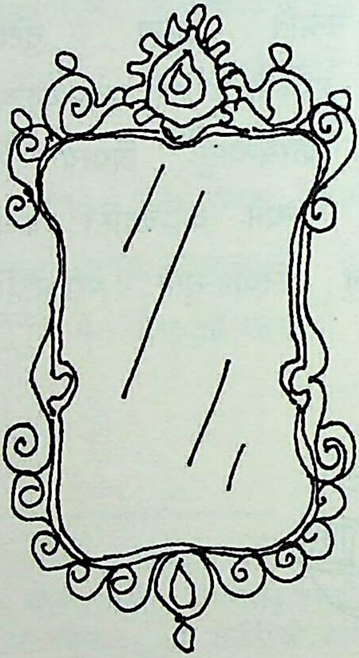

---

28. आबद्धं हृदयम्; 29. वैकल्यम्; 30. उपलब्धिः; 31. कुञ्चिता अलका; 32. समग्रं शरीरमित्यर्थः; 33. शोकविषम्; 34. तालुनः अधरोष्ठस्य च; 35. वचनम्, प्रतिश्रुतिः; 36. उपद्रवाः, कष्टानि; 37. पुराणं नभः।

आबद्ध हृदय ! तव रे वैकल्येनालमेवमिह तिष्ठ।
शक्तेः पुनः परीक्षाऽस्त्यलकानां कुञ्चितानां हि।।8।।
पश्येस्तदा यदेतच्छोकविषं विग्रहे प्रसक्तं स्यात्।
अधरोष्ठस्य च तालुन इतः परीक्षाऽस्ति कटुतायाः।।9।।
'ग़ालिब' गृहमागन्ता मम स द्रष्टासि कीदृशं वचनम्।
नभसः प्रतनस्य नवेऽधुनेह कष्टे परीक्षाऽस्ति।।10।।

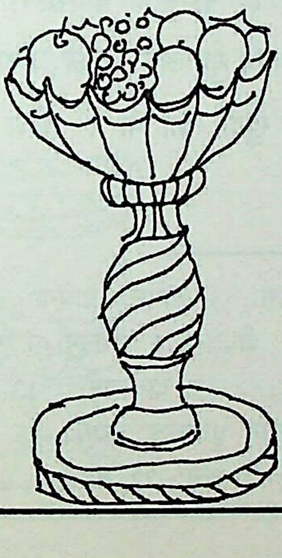

206

कभी नेकी भी उसके जी में गर[1] आ जाये है मुझसे
जफ़ाएँ[2] करके अपनी याद शर्मा जाये है मुझसे
ख़ुदाया, जज़्बः-ए-दिल[3] की मगर तासीर[4] उल्टी है
कि जितना खेंचता हूँ और खिचता जाये है मुझसे
वह बदख़ू[5], और मेरी दास्ताने’अिश्क़[6] तूलानी[7]
’अिबारत[8] मुख़्तसर[9], क़ासिद[10] भी घबरा जाये है मुझसे
उधर वह बदगुमानी[11] है, इधर यह नातवानी[12] है
न पूछा जाये है उससे, न बोला जाये है मुझसे
सँभलने दे मुझे, अय नाउमीदी[13], क्या क़यामत[14] है
कि दामाने ख़याले यार[15], छूटा जाये है मुझसे
तकल्लुफ़ बरतरफ़[16], नज़्ज़ारगी[17] में भी सही, लेकिन
वह देखा जाये, कब यह ज़ुल्म[18] देखा जाये है मुझसे
हुए हैं पाँव ही पहले, नबर्दे’अिश्क़[19] में ज़ख़्मी[20]
न भागा जाये है मुझसे, न ठहरा जाये है मुझसे
क़यामत है, कि होवे मुद्द’अी[21] का हमसफ़र[22], ग़ालिब
वह काफ़िर[23], जो ख़ुदा को भी न सौंपा जाये है मुझसे

---

1. यदि; 2. अत्याचाराः; 3. मानसः आवेगाः; 4. प्रभावः; 5. दुष्प्रकृतिः, दुशीलः; 6. प्रणय-कथा; 7. दीर्घतरा; 8. वर्णनम्; 9. संक्षिप्तम्; 10. सन्देशवाहकः; 11. आशङ्का, मिथ्यासन्देहः; 12. दौर्बल्यम्; 13. नैराश्यम्; 14. प्रलयः; 15. प्रियस्मृतिदाम; 16. शिष्टाचारः पृथगस्तु, इत्यर्थः; 17. अवलोकनम्; 18. अनीतिः; 19. प्रेमसङ्घर्षः; 20. व्रणितौः; 21. शत्रुः; 22. सहयात्रः; 23. अनास्थावादी।

206

तस्य कदाचिद् बुद्धौ मद्धितविषयाऽपि भावना भवति।
स्मृत्वाऽत्याचारान् स्वान् मद्विषयांस्तावता त्रपते।।1।।
हृदयावेगस्येश्वर मम प्रभावोऽस्ति किन्तु विपरीतः।
आकर्षामि यथाऽहं तथा दवीयान् स मद् भवति।।2।।
दुःशीलः स प्रेम्णः कथा मदीया च हन्त दीर्घतरा।
संक्षिप्तं वर्ण्यं यत् सन्देशहरो मया विकलः।।3।।
आशङ्का सा तत्र प्रबलं खलु तावदत्र दौर्बल्यम्।
प्रष्टुं शक्तो नासौ वक्तुं शक्तो न हन्ताहम्।।4।।
नैराश्य ! देह्यवसरं यदहं सन्धारयेयमात्मानम्।
प्रियकल्पनाख्यदाम भ्रश्यदिवाभाति मत्करतः।।5।।
शिष्टाचारोऽस्तु पृथग् द्रष्टाऽहमपीह तावदस्मि परम्।
स नु दृश्येत कदेतोऽनीतिर्द्रष्टुं मया शक्या।।6।।
प्रेम्णः संङ्घर्षे स्तो व्रणितौ पूर्वन्नु हन्त मच्चरणौ।
न पलायितुमथ शक्यं मया न च स्थातुमपि शक्यम्।।7।।
प्रलयो 'ग़ालिब' यत्स्यात् सहयात्रो मामकस्य तावदरेः।
सोऽनास्थावादी योऽर्पयितुं शक्योऽपि न प्रभवे।।8।।

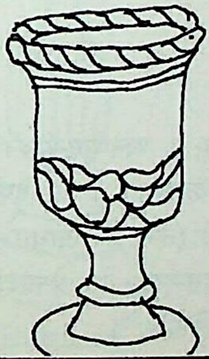

207

ज़िबस कि मश्क़े तमाशा[1], जुनूँ 'अलामत[2] है
कुशाद-ओ-बस्ते-मिश़ः[3], सेलि-ए-नदामत[4] है

न जानूँ, क्यों कि मिटे दाग़े ता'ने बद 'अह्दी[5]
तुझे कि आइनः[6] भी वरतः-ए-मलामत[7] है

ब पेच-ओ-तावे हवस[8], सिल्के 'आफ़ियत[9] मत तोड़
निगाहे 'अिज्ज़[10] सरे रिश्तः-ए-सलामत[11] है

वफ़ा मुक़ाबिल[12]-ओ-दा'वा-ए-'अिश्क़[13] बे बुनियाद[14]
जुनूने साख़्तः-ओ-फ़स्ले गुल[15] क़यामत है[16]

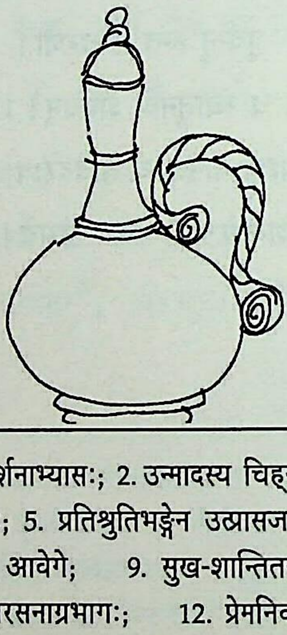

---

1. दर्शनाभ्यासः; 2. उन्मादस्य चिह्नम्; 3. पक्ष्मणामुन्मीलननिमीलने; 4. अनुशय-करतलप्रहारः; 5. प्रतिश्रुतिभङ्गेन उत्प्रासजः कलङ्कः; 6. दर्पणः; 7. धिक्कारावर्तः; 8. लिप्साया आवेगे; 9. सुख-शान्तितन्तुः (तन्तुः = आधारः); 10. विनम्रा दृष्टिः; 11. कुशलतारसनाग्रभागः; 12. प्रेमनिर्वाहसम्मुखः; 13. प्रेमप्रदर्शनम्; 14. निराधारः; 15. कृत्रिम उन्मादः मधुमासश्च; 16. खेदकरमित्यर्थः ।

207

लक्षणमुन्मादस्यावलोकनाभ्यास एष दृश्यस्य।
अनुशयतलप्रहारः पक्ष्मोन्मीलननिमीलनके।।1।।
वचसो भङ्गकलङ्कः कथं निवार्येत नैष जानेऽहम्।
धिक्कारावर्तमयोऽस्ति दर्पणो ह्येष तावत् ते।।2।।
सुखशान्तितन्तुमेष त्वं लिप्सा वेगतोऽत्र मा छिन्धि।
अस्ति कुशलतारसनाग्रभाग एषा विनम्रा दृक्।।3।।
सम्मुख इह निर्वाहः प्रेम्ण्यधिकारस्ततो निराधारः।
कृत्रिम उन्माद इतो मधुमासः प्रस्तुतस्तावत्।।4।।

208

लागर[1] इतना हूँ, कि गर[2] तू बज़्म[3] में जा[4] दे मुझे
मेरा ज़िम्मः[5], देखकर गर कोई बतला दे मुझे
क्या त’अज्जुब[6] है, कि उसको देख कर आ जाये रह्म[7]
वाँ तलक कोई किसी हीले[8] से पहुँचा दे मुझे
मुँह न दिखलावे, न दिखला, पर ब अन्दाज़े’अिताब[9]
खोलकर परदः[10], ज़रा आँखें ही दिखला दे मुझे
याँ तलक मेरी गिरफ़्तारी[11] से वह ख़ुश है, कि मैं
ज़ुल्फ़[12] गर बन जाऊँ, तो शाने[13] में उलझा दे मुझे

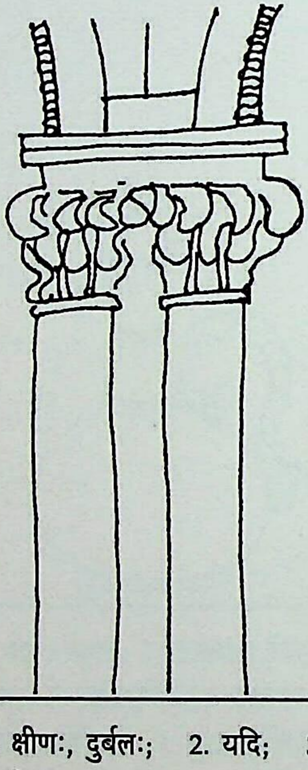

---

1. क्षीणः, दुर्बलः; 2. यदि; 3. गोष्ठी; 4. स्थानम्; 5. दायित्वम्, सङ्कल्पः; 6. आश्चर्यम्; 7. दया; 8. व्याजः; 9. कोपभङ्ग्या; 10. आवरणम्; 11. बन्धनम्; 12. अलकः; 13. कङ्कतिका।

208

एतावान् क्षीणोऽहं गोष्ठ्यां स्थानं यदीह मे दद्याः।
सङ्कल्पो मे, दृष्ट्वा यदि कश्चिन्निर्दिशेदपि माम्।।1।।
मामवलोक्य दयार्द्रो मयि स स्यादत्र रे किमाश्चर्यम्।
व्याजेन केनचिन्मां कश्चन तावन्नयेत्तत्र।।2।।
दर्शयसि नाननञ्चेन्न दर्शय क्वचन कोपभङ्ग्या तु।
आवरणं विनिवार्य स्वं दर्शय केवलं नयने।।3।।
एतावान् स इदानीं मुदितो मद्बन्धनेन सञ्जातः।
कङ्कतिकया विशीर्णं कुर्यादलको भवेयञ्चेत्।।4।।

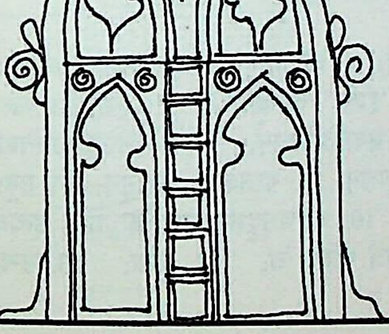

209

बाज़ीचः-ए-अत्फ़ाल[1] है दुनिया, मेरे आगे
होता है शब-ओ-रोज़[2] तमाशा[3], मेरे आगे
इक खेल है औरँगे सुलैमाँ[4], मेरे नज़दीक[5]
इक बात है ए'जाज़े मसीहा[6], मेरे आगे
जुज़ नाम[7], नहीं सूरते 'आलम[8] मुझे मंज़ूर[9]
जुज़ वहम[10], नहीं हस्ति-ए-अशिया[11] मेरे आगे
होता है निहाँ[12] गर्द[13] में सहरा[14], मेरे होते
घिसता है जबीं[15] ख़ाक[16] प दरिया[17], मेरे आगे
मत पूछ, कि क्या हाल है मेरा, तेरे पीछे
तू देख, कि क्या रँग है तेरा, मेरे आगे
सच कहते हो, ख़ुदबीन-ओ-ख़ुद आरा[18] हूँ, न क्यों हूँ
बैठा है बुते आइनः सीमा[19] मेरे आगे
फिर देखिये, अन्दाज़े गुल अफ़्शानि-ए-गुफ़्तार[20]
रख दे कोई, पैमानः-ओ-सहबा[21] मेरे आगे
नफ़रत[22] का गुमाँ[23] गुज़रे है, मैं रश्क[24] से गुज़रा
क्यों कर कहूँ, लो नाम न उनका मेरे आगे

---

1. बालानां क्रीडितम्; 2. अहर्निशम्; 3. कौतुकम्; 4. 'सुलैमान' इत्याख्यस्य सम्राजः राजसिंहासनम्; 5. निकटे; 6. 'ईशोः' चमत्कारः; 7. नामातिरिक्तम्; 8. संसारस्वरूपम्; 9. स्वीकृतम्; 10. भ्रमातिरिक्तम्; 11. वस्तूनामस्तित्वम्; 12. अन्तर्निहितम्; 13. रजः; 14. मरुस्थलम्; 15. मस्तकम्; 16. मृत्; 17. समुद्रः; 18. अभिमानी, आत्मालङ्कृतश्च; 19. दर्पणसदृशमुखकान्तिः प्रिय इत्यर्थः; 20. पुष्पवृष्टिसमा वाग्विच्छित्ति; 21. मधुपात्रं मदिरा च; 22. घृणा; 23. सन्देह; 24. ईर्ष्या;

209

संसारो बालानां क्रीडितकं किञ्चिदस्ति मत्पुरतः।
कौतुकमहर्निशञ्च प्रवर्तमानं नु मत्पुरतः।।1।।
अस्ति सुलेमानस्य नु सिंहासनमस्मदन्तिके क्रीडा।
'ईशो'श्च चमत्कारो वार्तामात्रं नु मत्पुरतः।।2।।
नामातिरिक्तमेतज्जगतो रूपं न हन्त मेऽभिमतम्।
वस्तूनामस्तित्वं भ्रमातिरिक्तं न मत्पुरतः।।3।।
भवति विलीना धूलौ मयि सति वितते‌ह सर्वथा मरुभूः।
मृदि मत्पुरतो घर्षति पारावारः शिरः स्वीयम्।।4।।
स्थितिरस्ति मामकीना त्वामनु केतीह हन्त मा पृच्छ।
त्वं पश्य तावकः को मत्पुरतो भवति वर्ण इति।।5।।
अभिमान्यात्मालङ्कृत एषोऽहमितीह भाषसे, सत्यम्।
मत्पुरतः स्फुरतीयं दर्पणसदृशाकृतिर्मूर्तिः।।6।।
वाग्विच्छित्तिं पुष्पप्रवर्षिणीं मामकीं पुनः कलय।
निदधीत कोऽपि पात्रं मधुनो मधु चेह मत्पुरतः।।7।।
ईर्ष्यावांश्चेत् स्यामहमिह भ्रमो जायते घृणामूलः।
कथयेयं कथमस्मत्पुरो न तन्नाम गृह्णीयाः।।8।।

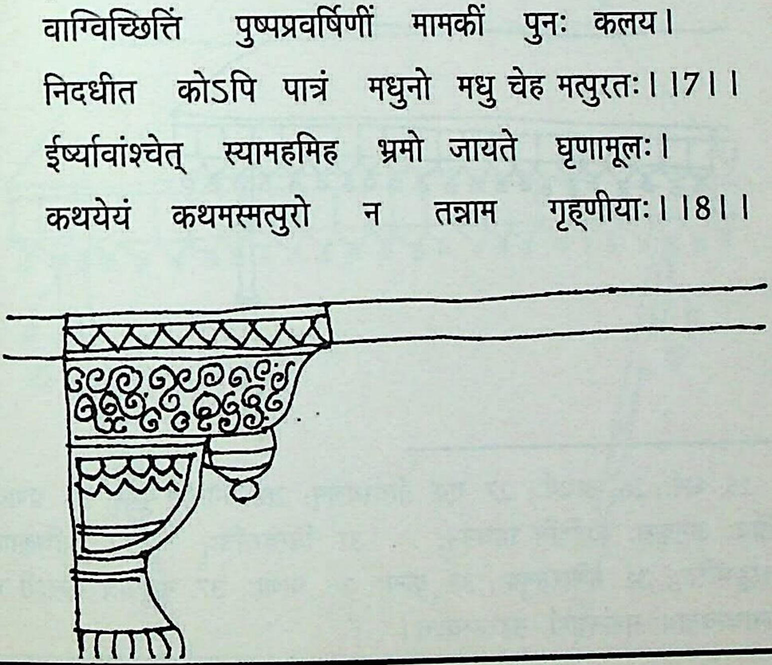

ईमाँ[25] मुझे रोके है, तो खेंचे है मुझे कुफ़्र[26]
का'बः[27] मेरे पीछे है, कलीसा[28] मेरे आगे
'आशिक़[29] हूँ, प मा'शूक़ फ़रेबी[30] है मेरा काम
मजनूँ को बुरा कहती है लैला, मेरे आगे
ख़ुश होते हैं पर वस्ल में यों मर नहीं जाते
आई शबे हिज्राँ[31] की तमन्ना[32], मेरे आगे
है मौजज़न[33] इक कुल्ज़ुमे ख़ूँ[34], काश यही हो
आता है, अभी देखिये, क्या क्या, मेरे आगे
गो हाथ में जुम्बिश[35] नहीं, आँखों में तो दम[36] है
रहने दो अभी साग़र-ओ-मीना[37] मेरे आगे
हम पेशः-ओ-हम मश्रब-ओ-हम राज़[38] है मेरा
ग़ालिब को बुरा क्यों कहो, अच्छा, मेरे आगे

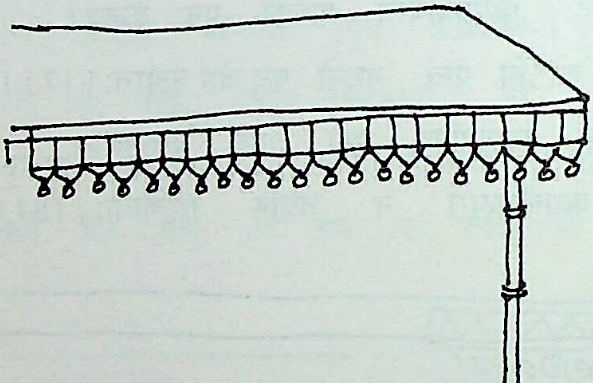

---

[25] धर्मः; [26] अधर्मः; [27] एकं तीर्थस्थलम्; [28] 'गिरजा'गृहम्; [29] प्रणयी; [30] प्रियः अनुकूलः स्यादिति साधनम्; [31] विरहरात्रिः; [32] अभिलाषः; [33] तरङ्गभरितः; [34] रुधिरसमुद्रः; [35] कम्पः; [36] प्राणाः; [37] मधुपात्रं कलशी च; [38] समाध्यवसायः समानधर्मा, सहरहस्यश्च।

मामवरुणद्धि धर्मो मामाकर्षत्यधर्म एष खलु।
'का'बा' ममास्ति पश्चाद् 'गिरजा'गृहमस्ति मत्पुरतः।।9।।
प्रणयी कश्चिद् वर्ते प्रसादनं स्वप्रियस्य मत्कर्म।
मत्पुरतो ह्यभिधत्ते 'लैला' 'मजनू'मशिष्ट इति।।10।।
मुदिता भवन्ति किन्तु म्रियन्त एवं जना न संयोगे।
अभिलाषो मत्पुरतः समुपेतो विरहयामिन्याः।।11।।
अस्ति तरङ्गित एको रुधिरसमुद्रः स एव कामं स्यात्।
अधुना दृश्यं पश्यत मत्पुरतः किं किमायाति।।12।।
यद्यपि करे न कम्पो लोचनयोः सन्ति हन्त किन्त्वसवः।
मत्पुरतस्तत् तिष्ठेन्मधुनः पात्रञ्च कलशी च।।13।।
अस्ति स समानकर्मा समानधर्मा समानचेता मे।
मत्पुरतो 'ग़ालिब'मथ कथमभिदध्या अशिष्ट इति।।14।।

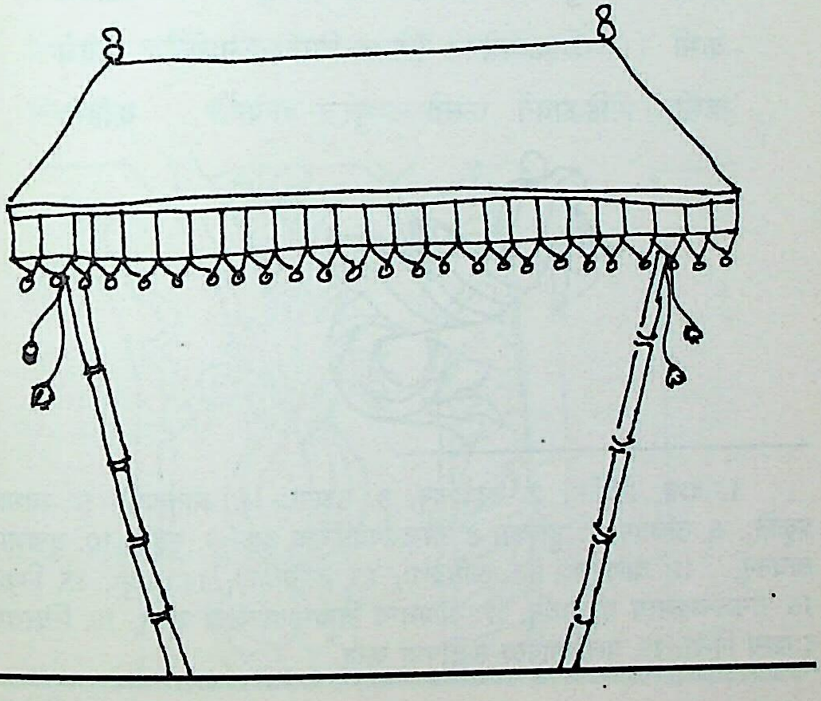

210

कहूँ जो हाल[1], तो कहते हो, मुद्द’आ[2] कहिये
तुम्हीं कहो, कि जो तुम यों कहो, तो क्या कहिये
न कहियो ता’न[3] से फिर तुम, कि, हम सितमगर[4] हैं
मुझे तो ख़ू[5] है, कि जो कुछ कहो, बजा[6] कहिये
वह नेश्तर[7] सही, पर दिल में जब उतर जावे
निगाहे नाज़[8] को फिर क्यों न आश्ना[9] कहिये
नहीं ज़रि’अः-ए-राहत[10], जराहते पैकाँ[11]
वह ज़ख़्मे तेग़[12] है, जिसको कि दिलकुशा[13] कहिये
जो मुद्द’ई[14] बने, उसके न मुद्द’ई बनिये
जो नासज़ा[15] कहे, उसको न नासज़ा कहिये
कहीं हक़ीक़ते जाँकाहि-ए-मरज़[16] लिखिये
कहीं मुसीबते नासाज़ि-ए-दवा[17] कहिये
कभी शिकायते रँजे गिराँ नशीं[18] कीजे
कभी हिकायते सब्रे गुरेज़ पा[19] कहिये

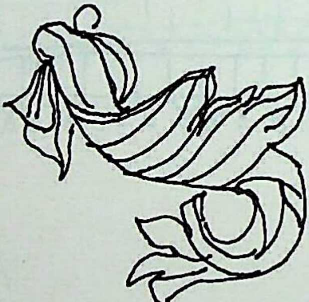

---

1. दशा, स्थितिः; 2. उद्देश्यम्; 3. उत्रासः; 4. आततायी; 5. स्वभावः, प्रकृतिः; 6. उचितम्; 7. छुरिका; 8. सौन्दर्यगर्वान्विता दृक्; 9. सुहृत्; 10. सुखशान्तेः साधनम्; 11. बाणव्रणः; 12. असिव्रणः; 13. हर्षवर्धकः; 14. शत्रुः; 15. निकृष्टः; 16. रोगजन्यकष्टस्य याथार्थ्यम्; 17. औषधस्य निष्प्रभावत्वजन्यं कष्टम्; 18. स्थिरतरस्य दुःखस्य निन्दा; 19. पलायमानस्य सन्तोषस्य कथा;

210

कथयानि स्वदशाञ्चेद् वदसि त्वं 'प्रकटय स्वमन्तव्यम्'।
कथय त्वमेव, कथयेरेवञ्चेत् किन्नु वक्तव्यम्।।1।।
सोत्रासं न वदेः पुनरितः क्वचिद् यदहमाततायीति।
अभ्यस्तं मम तावद् यद् वक्ष्यसि तद् वदाम्युचितम्।।2।।
आस्तां कामं छुरिका परं हृदि स्यान्नु तावदवतीर्णा।
सौन्दर्यगर्वभरिता सुहृदित्युच्येत न कथं दृक्।।3।।
सुखशान्तेर्नहि साधनमितः क्वचिन्मे व्रणः शरोत्पन्नः।
सोऽसिव्रणोऽस्ति यः खलु हृदयहृदिति नाम वक्तव्यः।।4।।
यः स्याच्छत्रुस्तव रे तस्य न रे शत्रुणा त्वया भाव्यम्।
त्वां यो वदेन्निकृष्टं त्वया स न निकृष्ट इति वाच्यः।।5।।
व्याधिजकष्टानां क्वचिदिह निजकानां लिखामि याथार्थ्यम्।
क्वचिदौषधस्य दुःखं प्रभावरहितस्य कथयामि।।6।।
स्थिरतां गतस्य निन्दां दुःखस्याहं कदाचिदिह विदधे।
सन्तोषस्य कथामिह पलायमानस्य कथयामि।।7।।

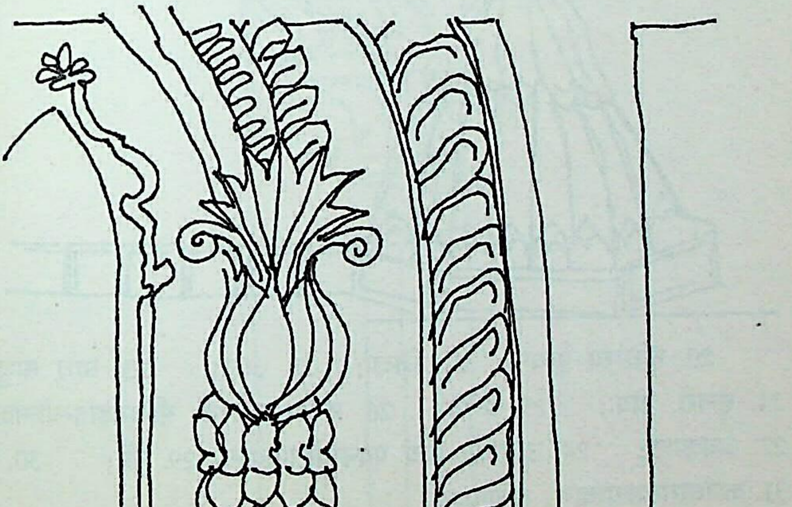

रहे न जान, तो क़ातिल को ख़ूँ बहा[20] दीजे
कहे ज़बान[21], तो खंजर[22] को मर्हबा[23] कहिये
नहीं निगार[24] को उल्फ़त[25], न हो, निगार तो है
रवानि-ए-रविश-ओ-मस्ति-ए-अदा[26] कहिये
नहीं बहार को फ़ुर्सत[27] न हो, बहार तो है
तरावते चमन-ओ-ख़ूबि-ए-हवा[28] कहिये
सफ़ीनः[29] जबकि कनारे[30] प आ लगा, ग़ालिब
ख़ुदा से क्या सितम-ओ-जौरे नाख़ुदा[31] कहिये

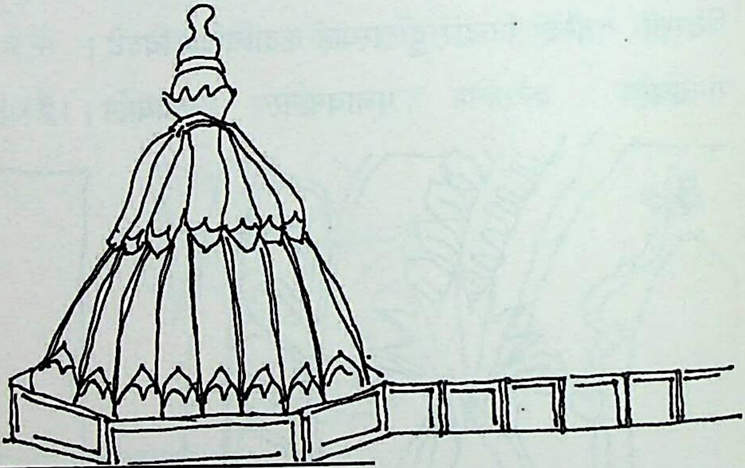

---

20. रुधिरस्य मूल्यम्; 21. जिव्हा; 22. असिः; 23. साधु साधु इति; 24. सुन्दरी, प्रियः; 25. प्रणयः; 26. मन्थाराया गतेः सौन्दर्यहावस्योन्मदत्वञ्च; 27. अवकाशः; 28. उद्यानस्य शैत्यं पवनस्योत्तमत्वञ्च; 29. नौः; 30. तटम्; 31. कर्णधारास्यात्याचारः, अन्यायश्च।

प्राणास्तिष्ठन्तु न चेद् वधकायास्त्रस्य दीयतां मूल्यम्।
रसना छिद्येत तदा छुरिका वाच्येह धन्येति।।8।।
प्रणयः प्रियेऽस्ति नहि चेत् कामं नास्तु प्रियस्तु पुरतोऽस्ति।
वर्णय गतिसौन्दर्यं हावोन्मदताञ्च तस्य त्वम्।।9।।
अवकाशो न मधोरिह न काममास्तामितो वसन्तोऽस्तु।
उपवनशैत्यं वर्णय वायोरभिधेहि चोत्तमताम्।।10।।
'ग़ालिब' नौका याता जलधेर्मध्यात् तटप्रदेशं यत्।
अत्याचारान्यायौ किं वाच्यौ कर्णधारस्य।।11।।

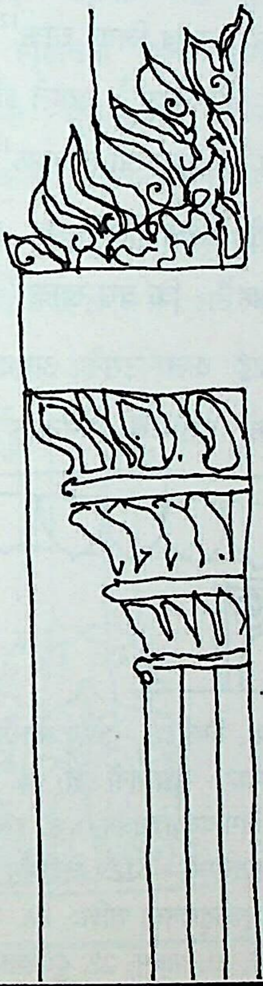

211

रोने से और 'अिश्क़[1] में बेबाक[2] हो गये
धोये गये हम ऐसे, कि बस पाक[3] हो गये
सर्फ़े बहा-ए-मै[4] हुए आलाते मैकशी[5]
थे यह ही दो हिसाब, सो यों पाक हो गये[6]
रुस्वा-ए-दहृ[7] गो हुए आवारगी[8] से तुम
बारे तबी'अतों के तो चालाक हो गये
कहता है कौन नालः-ए-बुलबुल[9] को, बेअसर[10]
पर्दे में गुल[11] के लाख जिगर चाक[12] हो गये
पूछे है क्या वुजूद-ओ-'अदम[13] अह्ले शौक़[14] का
आप अपनी आग के ख़स-ओ-ख़ाशाक[15] हो गये
करने गये थे उससे, तग़ाफ़ुल[16] का हम गिला[17]
की एक ही निगाह[18], कि बस ख़ाक[19] हो गये
इस रँग[20] से उठाई कल उसने असद की ना'श[21]
दुश्मन भी जिसको देख के ग़मनाक[22] हो गये

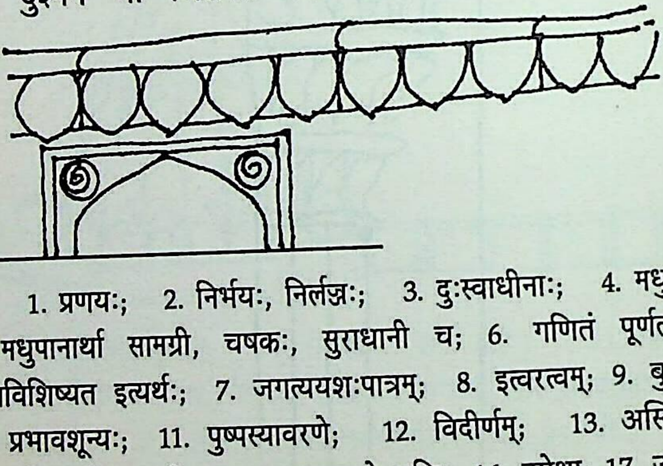

---

1. प्रणयः; 2. निर्भयः, निर्लज्ञः; 3. दुःस्वाधीनाः; 4. मधुमूल्यत्वेन व्ययः; 5. मधुपानार्था सामग्री, चषकः, सुराधानी च; 6. गणितं पूर्णतां ग तम्, न देयमविशिष्यत इत्यर्थः; 7. जगत्ययशःपात्रम्; 8. इत्वरत्वम्; 9. बुलबुलस्यार्तनादः; 10. प्रभावशून्यः; 11. पुष्पस्यावरणे; 12. विदीर्णम्; 13. अस्तित्वमनस्तित्वञ्च; 14. अभिलाषी, प्रणयी; 15. शुष्कतृणमयो राशिः; 16. उपेक्षा; 17. उपालम्भः, निन्दा; 18. दृष्टिः; 19. भस्म; 20. भङ्गी; 21. शवम्; 22. दुःखिता ।

211

रुदितैः समधिकमेते प्रेम्णि वयं निर्भयत्वमापन्नाः।
दुःस्वाधीना जाता एतावद् धाविता यदिह।।1।।
मधुमूल्यत्वेन मया व्ययितौ चषकस्तथा सुराधानी।
द्वयमासीद् गणनीयं ततो विमुक्तोऽहमधुनाऽस्मि।।2।।
अयशःपात्रं जातो जगति त्वं यन्निजेत्वरत्वेन।
किन्त्वन्ततस्त्वदीयं चातुर्यं तावदिह सिद्धम्।।3।।
आर्तस्वरः क आह प्रभावहीनोऽस्ति 'बुल्बुलस्ये'ति।
पुष्पस्यावरणे यद् यकृतां लक्षं विदीर्णमिदम्।।4।।
अस्तित्वानस्तित्वे स्पृहावतां हन्त पृच्छसीह किमु।
स्वेनैव ते स्ववह्नौ तृणादिवद् भस्मसादभवन्।।5।।
तदुपेक्षोपालम्भं कर्तुं गतवन्त एत आस्म वयम्।
एकैव पातिता दृग् भस्मीभूतास्ततोऽभूम।।6।।
'असदस्य' येन विधिना तेनोन्नीतं शवं गते दिवसे।
आलक्ष्य तं विपक्षा अपि नितरां दुःखमन्वभवन्।।7।।

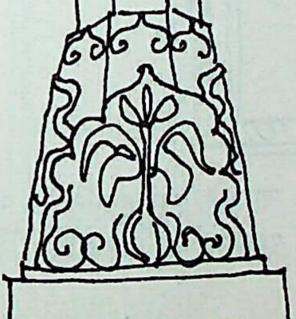

212

नश्शःहा शादाबे रँग[1]-ओ-साज़हा मस्ते तरब[2]
शीशः-ए-मै[3] सर्वे सब्ज़े जूइबारे नग्मः[4] है
हमनशीं[5] मत कह, कि, बरहम[6] कर न बज़्मे 'ऐशे दोस्त[7]
वाँ[8] तो तेरे नाले को भी ए'तिबारे नग़्मः[9] है

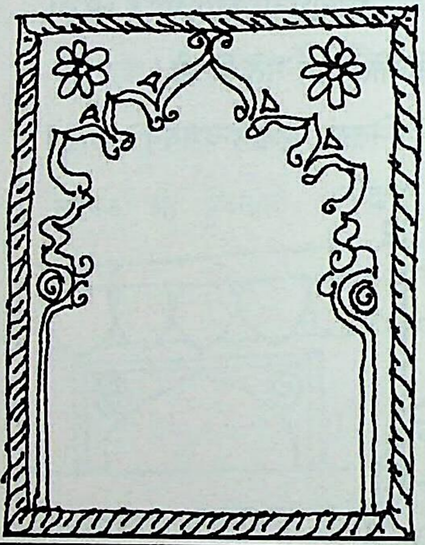

---

1. मदाः, शोभना वर्णाः; 2. वाद्यानि, हर्षोन्मत्तानि; 3. मधुकाचाः. 4. 'सर्व' वृक्ष-सदृशः, साङ्गीतिको निर्झरः; 5. सहचरः; 6. व्याकीर्णम्; 7. मित्रैश्वर्यपरिषत्; 8. तत्र; 9. सङ्गीतभ्रमः।

212

चषकाः शोभनवर्णा वाद्यानि च सोन्मदानि हर्षेण।
'सर्व'समा मधुकाचाः साङ्गीतो निर्झरो नाम।।1।।
सुहृदैश्वर्यपरिषदं नाशय मेतीह मित्र ! नाख्याहि।
जनयति सङ्गीतभ्रममहो त्वदार्तस्वरोऽपि ततः।।2।।

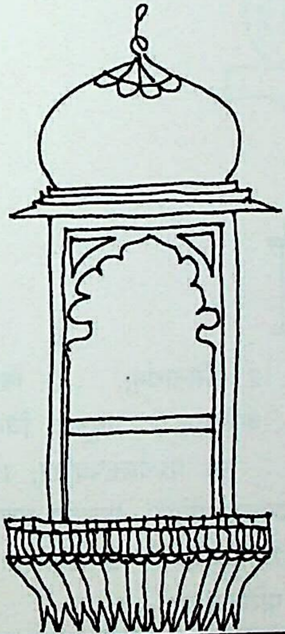

213

अर्ज़े नाज़े शोख़ि-ए-दँदाँ[1], बराय ख़न्द:[2] है
दा'व:-ए-जम'अियते अह्बाब[3], जा-ए-ख़न्द:[4] है
है 'अदम[5] में, गुंच:[6] मह्वे'अिब्रते अंजामे गुल[7]
यक जहाँ ज़ानू तअम्मुल[8] दर कफ़ा-ए-ख़न्द:[9] है
कुल्फ़ते अफ़सुर्दगी[10] को 'अैशे बेताबी[11] हराम[12]
वर्न:[13] दँदाँ दर दिल अफ़शुर्दन[14] बिना-ए-ख़न्द:[15] है
सोज़िशे बातिन[16] के हैं अह्बाब[17] मुंकिर,[18] वर्न: याँ[19]
दिल मुहीते गिरिय:[20]-ओ-लब[21] आश्ना-ए-ख़न्द:[22] है

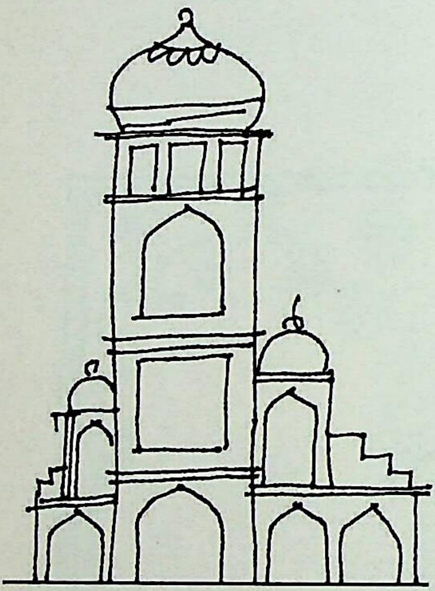

1. दन्तानां सौन्दर्यस्य प्रकाशनम्; 2. हसितार्थम्; 3. मित्राणां सहवासः; 4. हसितस्य स्थानम्; 5. अनस्तित्वम्; 6. कलिका; 7. प्रसूनस्य विनाशेन शिक्षाग्रहे लीना; 8. पश्चात्तापः; 9. हसितान्तर्लीनः; 10. पश्चात्तापकष्टम्; 11. हर्षवैकल्यम्; 12. निषिद्धम्; 13. अन्यथा; 14. हृदि दन्तानां प्रवेशः, प्राणानां पणत्वनयनमित्यर्थः; 15. हसितस्याधारः; 16. अन्तर्दाहः; 17. सुहृदः; 18. अस्वीकर्तारः; 19. अन्यथा; 20. अश्रुसागरः; 21. अधरः; 22. हसितेन परिचितः।

213

दन्तानां सौन्दर्यप्रकाशनं भवति नाम हसितार्थम्।
मित्राणां सहवासो हासस्थानञ्च भवतीह।।1।।
कलिकाऽनस्तित्वे सुम-नाशाच्छिक्षाग्रहेऽस्ति लीनेव।
पश्चात्तापातिशयो हसितान्तर्लीन आभाति।।2।।
अनुशयदुःखावसरे वर्जितमेवास्ति हर्षवैकल्यम्।
न हि चेद्धसिताधारो हृदि दन्तानां प्रवेशः स्यात्।।3।।
अपरिचिताः खलु सुहृदोऽन्तर्दाहिनान्यथा त्वत्र।
हृदयं बाष्पसमुद्रोऽधरश्च हासेन सुपरिचितः।।4।।

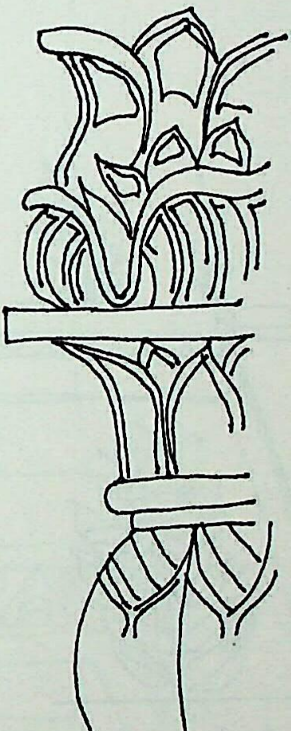

214

हुस्ने बेपरवा[1] ख़रीदारे मता'ए जल्वः[2] है
आइनः ज़ानू-ए-फ़िक्रे इख़्तिरा'-ए-जल्वः[3] है
ता कुजा[4], अय आगही[5], रँगे तमाशा बाख़्तन[6]
चश्मे वा गर्दीदः[7] आग़ोशे विदा'-ए-जल्वः[8] है

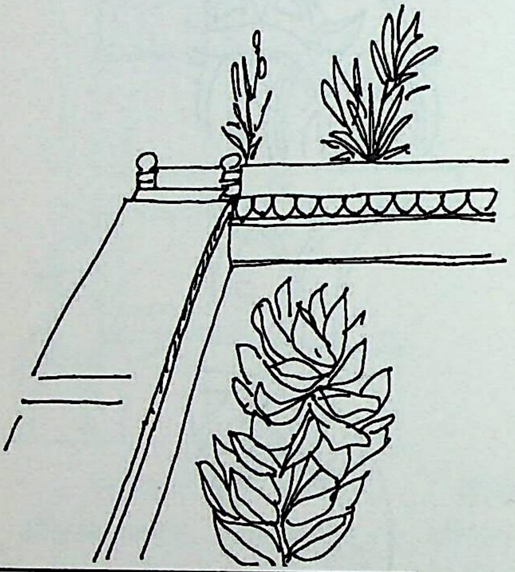

---

1. निःस्पृहं सौन्दर्यम्; 2. छविसम्पदः क्रेतृ, स्वप्रकाशनव्यसनि इत्यर्थः; 3. नित्यं नवच्छविचिन्तनसम्प्रवृत्तं; 4. कियन्तं कालं यावत्; 5. चेतना; 6. दृश्यस्य वर्णैः समं क्रीडनम्; 7. उन्मीलिते नयने; 8. जगतः कान्तीः प्रस्थाने प्रवर्तयत् क्रोडम्।

214

निःस्पृहमिह सौन्दर्यं छविसम्पत्क्रेतृ वर्तते तावत्।
आदर्शो नित्यनवच्छविचिन्तनसम्प्रवृत्तश्च।।1।।
क्रीडितकं कियदयि ते वर्णैर्दृश्यस्य चेतने ! तावत्।
उन्मीलिते हि नयने क्रोडं कान्ते‘र्विदाय’करम्।।2।।

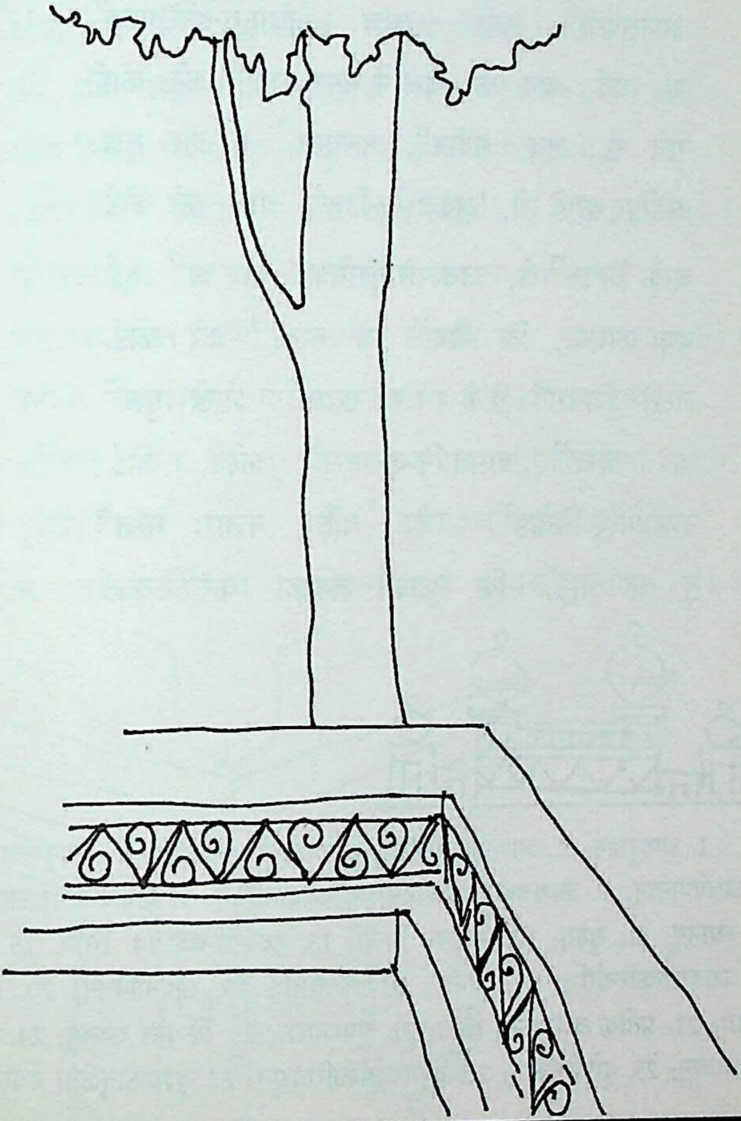

215

जब तक दहाने ज़ख़्म[1] न पैदा करे कोई
मुश्किल, कि तुझसे राहे सुख़न[2] वा[3] करे कोई
'आलम[4] ग़ुबारे बह्शते मजनूँ[5] है सरबसर[6]
कब तक ख़याले तुर्रः-ए-लैला[7] करे कोई
अफ़सुर्दगी[8] नहीं तरब इंशा-ए-इल्तिफ़ात[9]
हाँ, दर्द बन के दिल में मगर जा[10] करे कोई
रोने से, अय नदीम[11], मलामत[12] न कर मुझे
आख़िर कभी तो, 'अुक़्दः-ए-दिल[13] वा[14] करे कोई
चाके जिगर[15] से, जब रहे पुरसिश[16] न वा[17] हुई
क्या फ़ायदः, कि जैब[18] को रुस्वा[19] करे कोई
लख़्ते जिगर[20] से है रगे हर ख़्वार[21], शाखे गुल[22]
ता चन्द[23] बाग़बानि-ए-सहरा[24] करे कोई
नाकामि-ए-निगाह[25] है बर्क़े नज़ारः सोज़[26]
तू वह नहीं, कि तुझको तमाशा करे[27] कोई

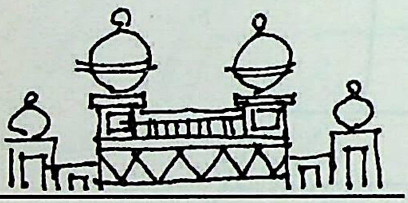

---

1. व्रणमुखम्; 2. आभाषणसरणिः; 3. प्रवर्तिता; 4. जगत्; 5. मजनून्मादधूलिः; 6. आद्योपान्तम्; 7. लैलालकराशिध्यानम्; 8. औदासीन्यम्; 9. कृपाजन्यसुखलाभार्हम्; 10. स्थानम्; 11. सुहृत्; 12. भर्त्सना, निन्दा; 13. हृदयग्रन्थिः; 14. भिन्ना; 15. भेदः; 16. आदरसत्कारमार्गः; 17. व्यक्तः; 18. गलवासः; 19. अपमानितम्; 20. यकृतः खण्डाः; 21. प्रत्येकं कण्टकस्य शिरा; 22. पुष्पशाखा; 23. कियन्तं कालम्; 24. वनस्य वनपालत्वम्; 25. दृष्टेर्वैफल्यम्; 26. दृश्यध्वंसकारिविद्युत्; 27. दृश्यकौतुकतां नयेत्।

215

उत्पादयेन्न कश्चिद् व्रणस्य वक्त्रं जनः क्वचिद् यावत्।
उद्घाटनमाभाषणसरणेस्तावत् त्वया कठिनम्।।1।।
जगदाद्योपान्तमहो 'मजनू'न्मादस्य धूलिरस्त्येतत्।
कुर्यात् कियन्नु कश्चिल्लैला'लकवीथिकाध्यानम्।।2।।
औदासीन्यं न कृपाजन्यं सुखमाप्तुमेतदर्हं स्यात्।
आं हृदि तस्य स्थानं कोऽपि लभेत व्यथारूपः।।3।।
अयि मित्र ! रोदनादिह मा कुरु मां हन्त भर्त्सनापात्रम्।
हृदयग्रन्थिं भिद्यात् कदाचिदलमन्ततः कश्चित्।।4।।
परिपृच्छाध्वा न यदा यकृतो भेदेन हा गतो व्यक्तिम्।
कोऽप्यवमन्येत तदा कस्मै लाभाय गलवासः।।5।।
प्रत्येकं कण्टशिरा यकृतः खण्डैः प्रसूनशाखा हि।
कश्चिद् वहेत् कियद् वा वनस्य वनपालकत्वमिह।।6।।
दृष्टेर्वैफल्यमिदं दृश्यप्रध्वंसकारिविद्युदिति।
स त्वं नहि यं कश्चिन्नयेदितो दृश्यकौतुकताम्।।7।।

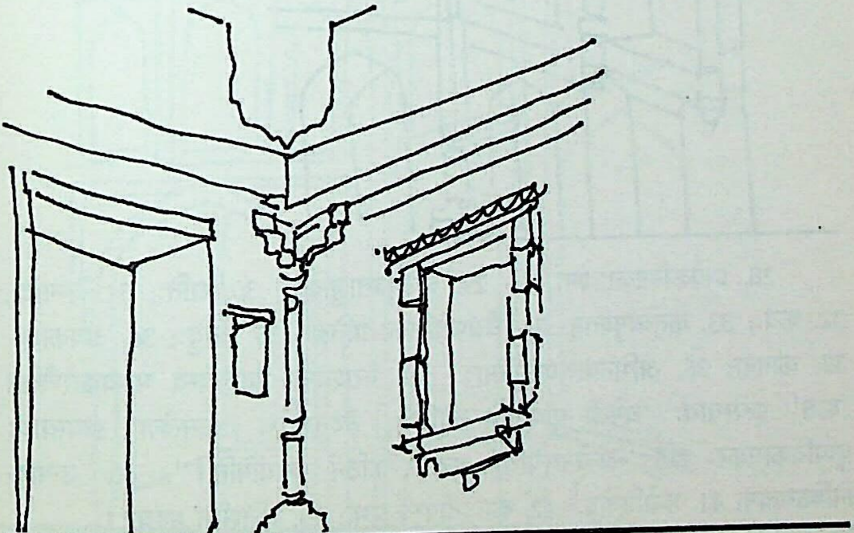

हर संग-ओ-ख़िश्त[28] है सदफ़े गौहरे शिकस्त[29]
नुक़साँ[30] नहीं, जुनूँ[31] से जो सौदा[32] करे कोई
सरबर[33] हुई न वा'दः-ए-सब्र आज़मा[34] से 'उम्र[35]
फ़ुर्सत[36] कहाँ, कि तेरी तमन्ना[37] करे कोई
है वह्शते तबी'अते ईजाद[38] यास खेज़[39]
यह दर्द वह नहीं, कि न पैदा करे कोई
बेकारि-ए-जुनूँ[40] को है सर पीटने का शग़्ल[41]
जब हाथ टूट जाये, तो फिर क्या करे कोई
हुस्ने फ़रोग़े शम्'-ए-सुखन[42] दूर है, असद
पहले दिले गुदाख़्ता[43] पैदा करे कोई

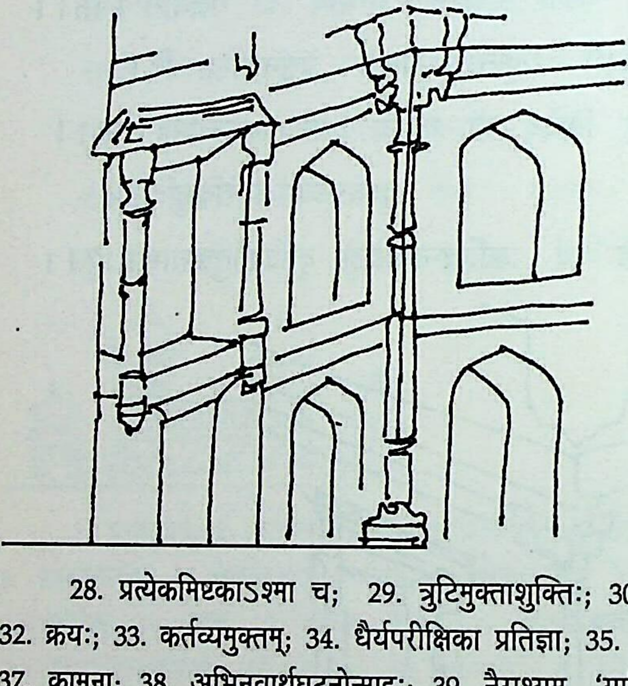

28. प्रत्येकमिष्टकाऽश्मा च; 29. त्रुटिमुक्ताशुक्तिः; 30. क्षतिः; 31. उन्मादः; 32. क्रयः; 33. कर्तव्यमुक्तम्; 34. धैर्यपरीक्षिका प्रतिज्ञा; 35. आयुः; 36. अवकाशः; 37. कामना; 38. अभिनवार्थघटनोन्मादः; 39. नैराश्यम्, 'ग़ालिबस्य भाष्यकारेणैकेन 'यास' इत्यस्यार्थः 'चमेली'-पुष्पमिति निर्दिष्टः, तदनुसारेण 'यासखेज़' इत्यस्यार्थः पुष्पविकासकर इति, अन्येनास्यार्थः कृतः 'कठिनं कार्यमिति।''; 40. उन्माद-निष्क्रियत्वम्; 41. मनोविनोदः; 42. काव्यदीपस्य प्रभा; 43. द्रुतिशीलं हृदयम्।

प्रत्येकमिष्टकाऽश्मा त्रुटिमुक्ता शुक्तिरित्यवैम्येषः।
क्रीणात्युन्मादञ्चेत् कश्चिदितो न क्षतिः काचित्।।8।।
धैर्यपरीक्षिकयाऽऽयुः प्रतिज्ञया नेह मुक्तकर्तव्यम्।
कुर्यात् तवाभिलाषं कश्चिदिह क्वावकाशोऽस्ति।।9।।
अयमभिनवार्थघटनोन्मादो जनयेदितो नु नैराश्यम्।
नेदं व्यथितं तद् यन्न कश्चिदुत्पादयेज्जगति।।10।।
उन्मादनिष्क्रियत्वं त्वपेक्षते ताडनक्रियां शिरसः।
भग्नौ यदा भवेतां हस्तौ कश्चिन्नु किं कुर्यात्।।11।।
'असद' दवीयानस्ति प्रकाश इह जगति काव्यदीपस्य।
प्रथमं तावज्जनयेद् द्रुतिशीलं कोऽपि हृदयमिह।।12।।

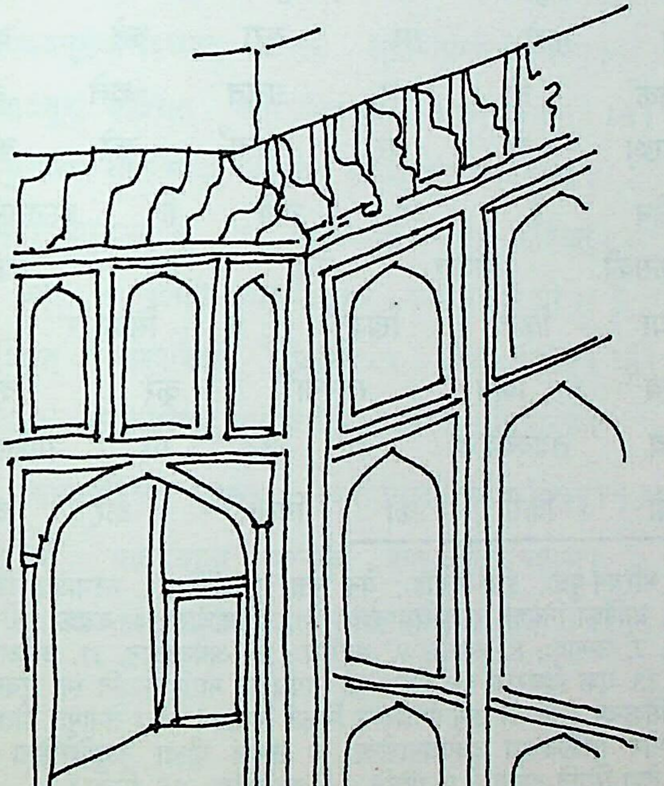

216

इब्ने मरियम[1] हुआ करे कोई
मेरे दुख की दवा करे कोई

शर'-ओ-आईन[2] पर मदार[3] सही
ऐसे क़ातिल[4] का क्या करे कोई

चाल, जैसे कड़ी कमान का तीर
दिल में ऐसे के जा[5] करे कोई

बात पर वाँ ज़बान[6] कटती है
वह कहें, और सुना करे कोई

बक रहा हूँ जुनूँ[7] में क्या क्या कुछ
कुछ न समझे, ख़ुदा करे कोई

न सुनो गर बुरा कहे कोई
न कहो, गर बुरा करे कोई

रोक लो गर ग़लत चले कोई
बख़्श़ दो[8] गर ख़ता[9] करे कोई

कौन है, जो नहीं है हाजतमन्द[10]
किसकी हाजत रवा करे कोई[11]

क्या किया ख़िज़्र[12] ने सिकन्दर[13] से
अब किसे रहनुमा[14] करे कोई

जब तवक़्क़ो'अ ही उठ गई, ग़ालिब
क्यों किसी का गिला[15] करे कोई

---

1. मरियम-पुत्रः, ईसा मसीहः, येन मृताः पुनर्जीविताः, रुग्णाश्च रोगमुक्ताः कृताः; 2. धार्मिका नियमाः राज्यविधानञ्च; 3. आधारः; 4. वधकः; 5. स्थानम्; 6. जिह्वा; 7. उन्मादः; 8. क्षमस्व; 9. अपराधः; 10. अपेक्षावान्; 11. अपेक्षां पूर्णतां नयेत्; 12, 13. एक ईश्वरस्य सन्देशहरः, यो मार्गभ्रष्टान् मार्गमुपनयति स्मः एवमनुश्रूयते स एकदा सिकन्दरं (सम्राजं) अमृतनिर्झरस्य निकटं निनाय। स्वयं तेनामृतं पीतम्, अथ ते मनुष्यास्तेन सिकन्दरस्य दृक्पथमानीताः ये तज्जलं पीत्वा मृत्युविरहिता जाताः, सिकन्दरेण तेषां स्थितिं दृष्ट्वा न पीतमिति; 14. मार्गदर्शकः; 15. निन्दा।

216

कामं मरियमपुत्रोऽद्यापि जनः कश्चिदस्तु जगतीह।
दुःखस्य मामकस्य प्रविदध्यात् कश्चिदुपचारम्।।1।।
स्मृतिशास्त्रस्य च नियमः शासनतन्त्रस्य सत्यमाधारः।
परमीदृशस्य कुर्यात् कश्चित् किं हन्त वधकस्य।।2।।
गतिरस्ति यस्य धनुषः शरो यथा कस्यचित्कठोरस्य।
कोऽपीदृशस्य हृदये स्थानं लोकस्य गृह्णीयात्।।3।।
किञ्चिद् वार्तारम्भक्षण एव च्छिद्यते यतो जिह्वा।
यत् कथयेत्स यथेच्छं तत् कश्चिच्छ्रुतिपथञ्च नयेत्।।4।।
किं किं यद् यद् वक्तुं प्रवर्तमानोऽहमेष उन्मादे।
ईश्वर एवं कुर्यादवगच्छेत् तन्न कश्चिदिह।।5।।
कश्चिदसुष्ठ्वभिदध्यात् तन्न श्रुतिमार्गमानयेर्वचनम्।
कुर्यादसुष्ठु कश्चित् ततोऽभिदध्या न तत् क्वचन।।6।।
अनुचितया यदि गत्या कश्चिद् गच्छेद् द्रुतं तमवरुन्धि।
क्षमयाऽनुगृहाण नु तं यद्यपराद्धो भवेत् कश्चित्।।7।।
स जनो न दृश्यते योऽपेक्षावान् हन्त नेह संसारे।
कश्चित् कस्यापेक्षां प्रपूरयन्नत्र वा तिष्ठेत्।।8।।
'ख़िज़्रः' सिकन्दरेण व्यवहृतवान् हन्त केन विधिनेह।
कः साम्प्रतमिह कुर्यात् स्वमार्गसन्दर्शकं कञ्चित्।।9।।
'ग़ालिब' यावदवाप्ता भग्नत्वं हन्त काचिदप्याशा।
निन्देत् कञ्चन कश्चित् तावत् किं कस्य वा हेतोः।।10।।

217

बहुत सही ग़मे गेती[1], शराब कम क्या है
गुलामे साक़ि-ए-कौसर[2] हूँ, मुझको ग़म क्या है
तुम्हारी तर्ज़-ओ-रविश[3], जानते हैं हम, क्या है
रक़ीब[4] पर है अगर लुत्फ़[5], तो सितम[6] क्या है
सुख़न[7] में ख़ामः-ए-ग़ालिब[8] की आतश अफ़शानी[9]
यक़ीं[10] है हम को भी, लेकिन अब उसमें दम[11] क्या है

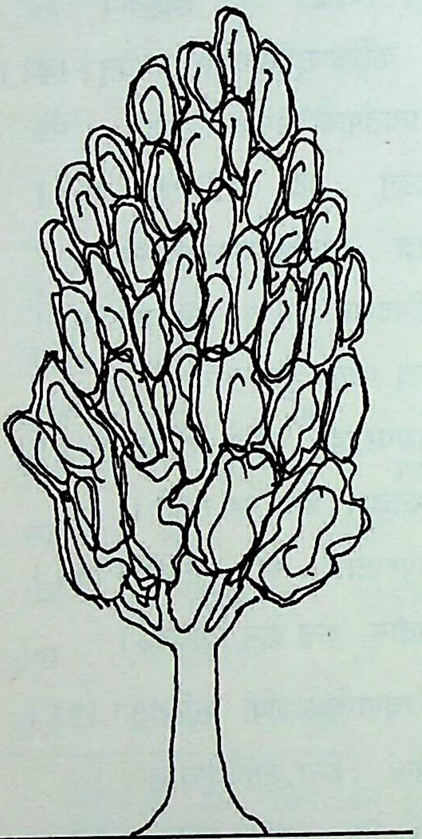

---

1. जगतो दुःखानि; 2. कौसराख्यः स्वर्गस्य मधुनो निर्झरः तस्य (ईश्वरस्य) दासः; 3. आचरणम्; 4. शत्रुः; 5. अनुग्रहः; 6. अत्याचारः 7. काव्यम्; 8. 'ग़ालिबस्य' लेखनी; 9. अग्निवर्षित्वम्; 10. विश्वासः; 11. बलम्।

217

जगतः सोढानि मया दुःखानीतस्ततो न मधु नूनम्।
दासः स्वर्मधुनिर्झरपाययितुश्चास्मि, का चिन्ता।।1।।
तव रीतिव्यवहारो विदितोऽस्माकं नु हन्त कः स इति।
शत्रावनुग्रहस्तेऽत्याचारस्तर्हि को वाच्यः।।2।।
'ग़ालिब'-लेखन्याः खलु कवितायां किञ्चिदग्निवर्षित्वम्।
विश्वासोऽप्यस्माकं परं किमधुना ततोऽस्ति बलम्।।3।।

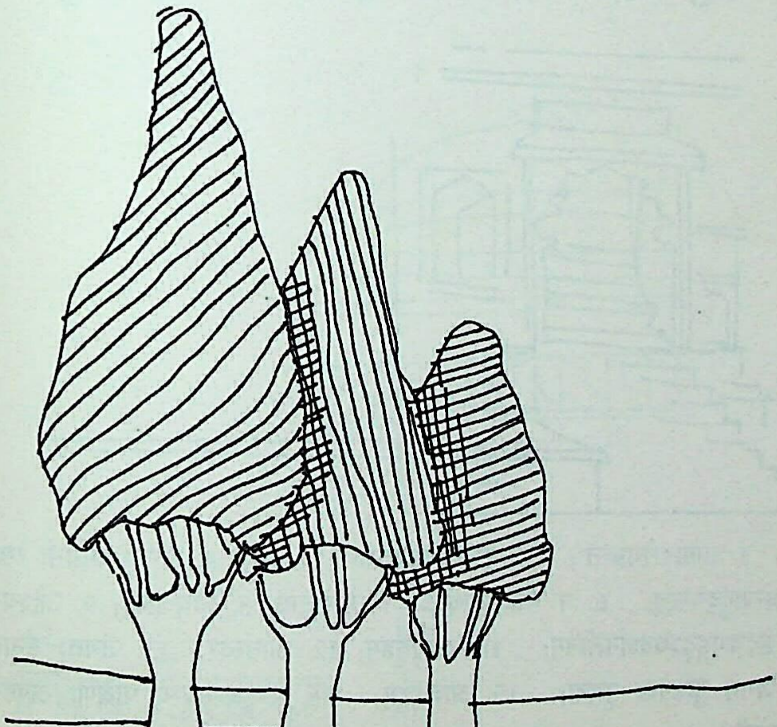

218

बाग़, पाकर ख़फ़क़ानी[1], यह डराता है मुझे
साय:-ए-शाख़े गुल[2], अफ़्अी[3] नज़र आता है मुझे
जौहरे तेग़[4] बसर चश्म:-ए-दीगर[5] मा'लूम[6]
हूँ मैं वह सब्ज़:[7], कि ज़हराब[8] उगाता है मुझे
मुद्द'आ[9] महवे तमाशा-ए-शिकस्ते दिल[10] है
आइन: ख़ाने[11] में कोई लिये जाता है मुझे
नाल:[12] सरमाय:-ए-यक 'आलम[13]-ओ-'आलम कफ़े ख़ाक[14]
आस्माँ[15] बैज़:-ए-क़ुम्री[16] नज़र आता है मुझे
ज़िन्दगी में तो वह महफ़िल[17] से उठा देते थे
देखूँ, अब मर गये पर, कौन उठाता है मुझे

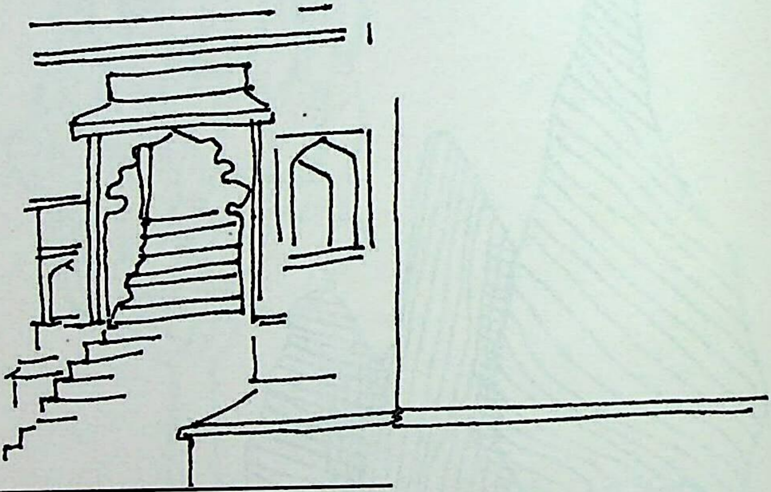

---

1. उन्मादरोगग्रस्त:; 2. सुमनोविटपच्छाया; 3. सर्प:; 4. हरिता आयसी रेखा; 5. अन्यादुद्गमात्; 6. न भवतीत्यर्थ:; 7. हरितिमा; 8. विषजलम्; 9. उद्देश्यम्; 10. हृदयभङ्गदृश्यदर्शनलीनम्; 11. काचगृहम्; 12. आर्तस्वर:; 13. जगत: सम्पत्; 14. जगत् मुष्टिमेया मृत्स्ना; 15. आकाशम्; 16. पण्डुकाख्यस्य पक्षिण: अण्डम्; 17. गोष्ठी।

218

उन्मादग्रस्तमिदं मामुद्यानं समीक्ष्य भाययति।
सुमनोविटपच्छाया प्रतीयते मे नु सर्प इति।।1।।
खड्गहरितरेखायां स्रोतस इतरस्य नो जलं भवति।
स हरितिमाऽहं यं मामङ्कुरयत्येव गरलाम्भः।।2।।
हृद्भङ्गदृश्यदर्शनसँल्लीनो मामकोऽस्त्यभिप्रायः।
काचगृहाभ्यन्तरहो मामथ कश्चिन्नयन्नस्ति।।3।।
आर्तस्वरसम्पदिदं जगज्जगन्मुष्टिमेयमृत्स्नाऽस्ति।
दृश्यत आकाशमिदं पण्डुकविहगाण्डवन्नु मया।।4।।
मयि जीवति सति गोष्ठ्या उत्थापयति स्म हन्त मां स तथा।
अधुना मृतोऽस्मि को मां पश्यन्नुत्थापयत्यत्र।।5।।

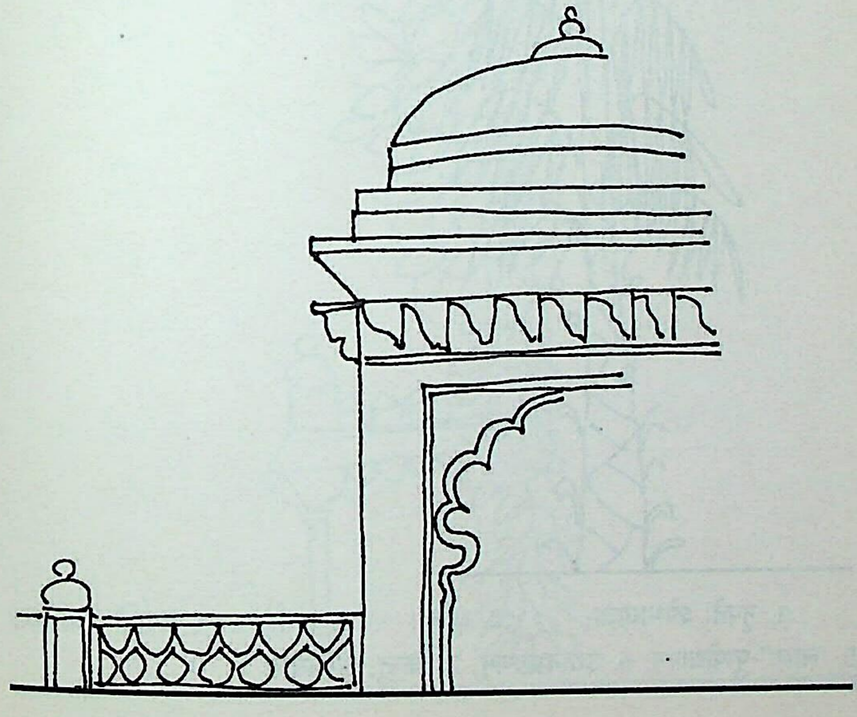

219

रौंदी हुई है, कौकबः-ए-शह्रियार[1] की
इतराये क्यों न ख़ाक[2], सरे रहगुज़ार[3] की

जब उसके देखने के लिये आयें बादशाह
लोगों में क्यों नुमूद[4] न हो लालः ज़ार[5] की

भूके नहीं हैं सैरे गुलिस्ताँ[6] के हम, वले[7]
क्यों कर न खाइये, कि हवा है बहार[8] की

---

1. नृपतेः शोभायात्रा; 2. धूलिः; 3. मार्गः; 4. ख्यातिः, प्रतिष्ठा; 5. 'लालः'-पुष्पोद्यानम्; 6. उद्यानभ्रमणम्; 7. किन्तु; 8. वसन्तः।

219

नृपतेः शोभायात्रा-जनसम्मर्देन मर्दिता ह्येषा।
कथमात्मना न धूलिः पथः सगर्वोपजायेत।।1।।
अवलोकयितुं सम्राट् पाटलपुष्पान्वितन्नु समुपेयात्।
न जनेषु ख्यातिः स्यात् तस्योद्यानस्य हन्त कथम्।।2।।
उद्यानभ्रमणस्य न नितरामाकाङ्क्षिणो वयं स्म इह।
उपभुज्यतां न कस्माद् यदेष वासन्तिकः पवनः।।3।।

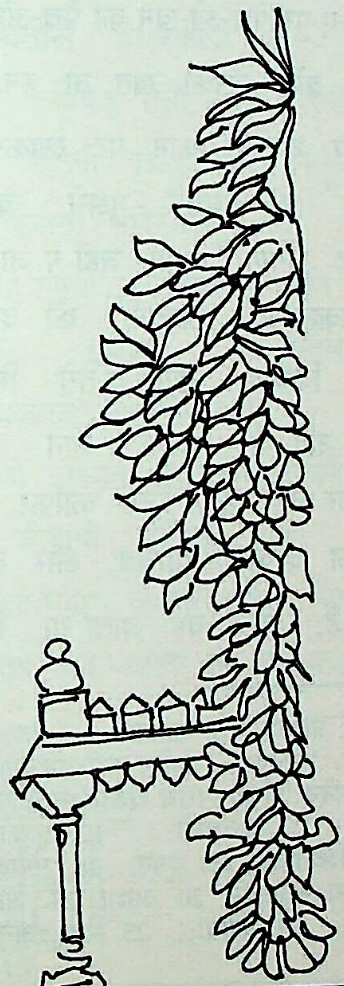

220

हज़ारों ख़्वाहिशें[1] ऐसी, कि हर ख़्वाहिश प दम[2] निकले
बहुत निकले मेरे अरमान[3], लेकिन फिर भी कम निकले
डरे क्यों मेरा क़ातिल[4], क्या रहेगा उसकी गर्दन पर
वह ख़ूँ, जो चश्मे तर[5] से 'उम्र भर यों दम बदम[6] निकले
निकलना ख़ुल्द[7] से आदम[8] का सुनते आये थे, लेकिन
बहुत बेआबरू[9] होकर तेरे कूचे[10] से हम निकले
भरम खुल जाये, ज़ालिम[11], तेरे क़ामत[12] की दराज़ी[13] का
अगर इस तुर्रः-ए-पुर पेच-ओ-ख़म का पेच-ओ-ख़म[14] निकले
मगर लिखवाये कोई उसको ख़त, तो हम से लिखवाये
हुई सुबह, और घर से कान पर रखकर क़लम निकले
हुई इस दौर[15] में मंसूब[16] मुझसे बादः आशामी[17]
फिर आया वह ज़मानः[18], जो जहाँ में जामे जम[19] निकले
हुई जिनसे तवक़्क़ो'अ[20], खस्तगी[21] की दाद[22] पाने की
वह हमसे भी ज़ियादः ख़स्तः-ए-तेग़े सितम[23] निकले
महब्बत[24] में नहीं है फ़र्क़[25], जीने और मरने का
उसी को देखकर जीते हैं, जिस काफ़िर प दम निकले
कहाँ मैख़ाने[26] का दरवाज़ः, ग़ालिब, और कहाँ वा'अिज़[27]
पर इतना जानते हैं, कल वह जाता था, कि हम निकले

---

1. अभिलाषाः; 2. प्राणाः; 3. कामनाः; 4. वधकः; 5. आर्द्रे चक्षुषी; 6. प्रतिक्षणम्; 7. स्वर्गः; 8. 'आदमः', "हंजील-कुर्रानयोरनुसारेण, ईश्वरेण 'आदमः' उत्पादितः, किन्तु स 'शैतानेन 'प्रेरितोऽपराधं चकार' ततः स स्वर्गाद् बहिष्कृतः।"; 9. अनादृतः; 10. रथ्या; 11. आततायी; 12. आकारः; 13. प्रांशुत्वम्; 14. कुञ्चितानामलकानां कुञ्चितत्वम्; 15. युगम्; 16. सम्बद्धम्; 17. मदिरापानम्; 18. कालः; 19. जमशेदस्य मधुपात्रम्; 20. आशा; 21. आहतत्वम्; 22. प्रशस्तिः; 23. अत्याचारासिनाऽऽहताः; 24. प्रणयः; 25. भेदः, अन्तरम्; 26. मधुशाला; 27. धर्मोपदेष्टा।

220

प्रत्येकं तृष्यसवो निर्गच्छेयुस्तृषां सहस्रमिदम्।
न्यूनास्तथापि, यद्यपि बहवः पूर्णा मदभिलाषाः।।1।।
मम वधको बिभियात् कथमिह तिष्ठेत् तस्य किन्नु गलदेशे।
रक्तं प्रतिक्षणं यद् विनिःसरेदार्द्रचक्षुर्भ्याम्।।2।।
श्रुतवन्तो वयमास्म स्वर्गाद् भृश'मादमस्य' निर्गमनम्।
त्वद्द्वाराद् वयमेतेऽतिमात्रमपमानिता निसृताः।।3।।
लम्बस्याकारस्य भ्रमोऽततायिंस्तव स्फुटत्वमियात्।
मुच्येत कुञ्चितानां यद्यलकानां तु ते बन्धः।।4।।
यदि लेखयेत कश्चित् तस्मै पत्रं ततो वदेदस्मान्।
कर्णे निधाय कठिनीं गृहाद् वयं निर्गताः प्रातः।।5।।
युग एतस्मिञ्जातं मदिरापानं मया नु सम्बद्धम्।
पुनराप्तः स हि समयो 'जम'चषका जगति विख्याताः।।6।।
समभूद् येभ्य इहाशा प्रशस्तिलाभार्थमाहतत्वस्य।
अस्मत्तोऽप्यधिकास्तेऽत्याचारस्याहता मिलिताः।।7।।
प्रेम्णि न भेदो लक्ष्यत इह कश्चिज्जीवने च मरणे च।
तं दृष्ट्वा जीवामो यस्मिन् प्राणा विनिर्यायुः।।8।।
क्व नु मधुशालाद्वारं क्वासौ धर्मस्य मान्य उपदेष्टा।
एतावद् विद्मो यद् याति स्म च यच्च निरयाम।।9।।

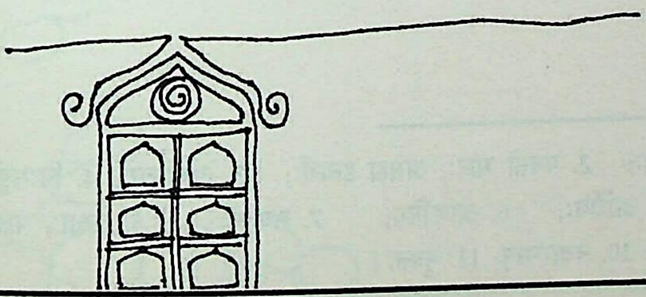

221

कोह[1] के हों बारे ख़ातिर[2], गर सदा[3] हो जाइये
बेतकल्लुफ़[4], अय शरारे जस्तः[5], क्या हो जाइये
बैजः आसा[6] तंग[7] बाल-ओ-पर[8] प है कुँजे क़फ़स[9].
अज़ सरे नौ[10] ज़िन्दगी हो, गर रिहा[11] हो जाइये

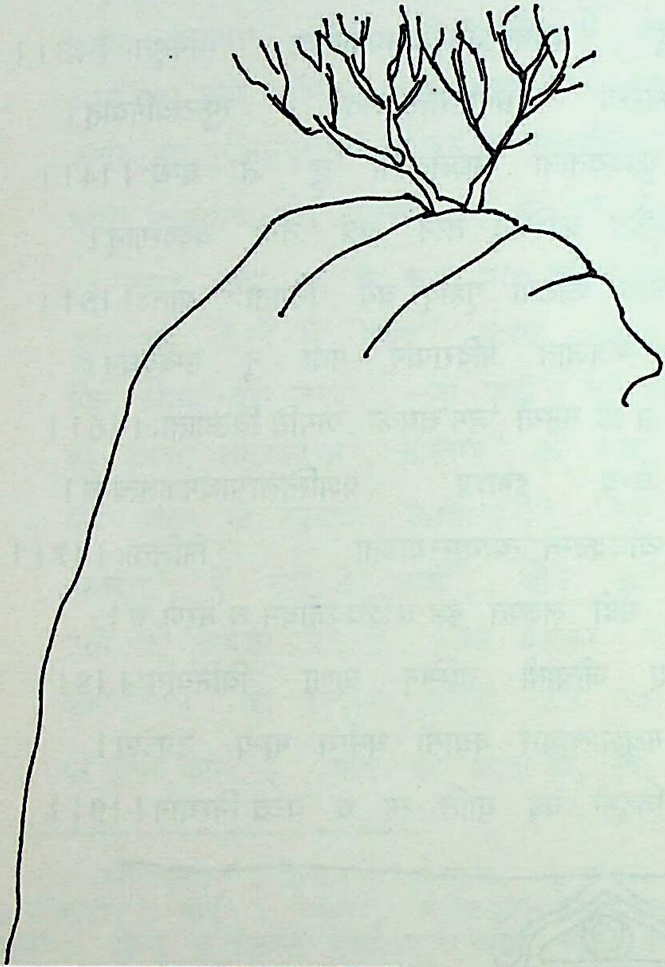

---

1. पर्वतः; 2. मनसो भारः, असह्य इत्यर्थः; 3. आर्तस्वरः; 4. निःसङ्कोचम्; 5. प्रस्तरनिर्गता अर्चिषः; 6. अण्डमिव; 7. संकीर्णः; 8. केशाः, पक्षाश्च; 9. पञ्जरकोणः; 10. नवारम्भम्; 11. मुक्तः ।

221

स्युरसह्या अद्रेर्यदि भूयेतार्तस्वरेण जगतीह।
अर्चिष उड्डयमानाः ! निःसङ्कोचन्नु किं भाव्यम्।।1।।
सङ्कीर्णोऽण्डवदस्ति स पञ्जरकोणः कृते नु पक्षस्य।
मुक्तेन भूयते चेत् स्यादस्तित्वं नवारम्भम्।।2।।

222

मस्ती[1] ब ज़ौक़े ग़फ़लते साक़ी[2] हलाक[3] है
मौजे शराब[4] यक मिश़ः-ए-ख़्वाबनाक[5] है

जुज़ ज़ख़्मे तेग़े नाज़[6], नहीं दिल में आरज़ू[7]
जैबे ख़याल[8] भी तेरे हाथों से चाक[9] है

जोशे जुनूँ[10] से कुछ नज़र आता नहीं, असद
सहरा[11], हमारी आँख में यक मुश्ते ख़ाक[12] है

---

1. मत्तत्वम्; 2. पाययितुरुपेक्षया; 3. हतम्; 4. मदिरातरङ्गः; 5. निद्राशिथिलं पक्ष्म; 6. रूपाभिमानगर्वव्रणमतिरिच्य; 7. अभिलाषः; 8. कल्पनागलवासः; 9. विदीर्णम्; 10. उन्मादावेगः; 11. मरुभूः; 12. मुष्टिमेयं मृन्मात्रम्।

222

मत्तत्वस्येदानीं पाययितुरुपेक्षया वधो जातः।
मधुनो हन्त तरङ्गो निद्राशिथिलं यथा पक्ष्म।।1।।
रूपाभिमानखड्गव्रणमतिरिच्यास्ति काऽपि नाकाङ्क्षा।
गलदाम कल्पनायास्त्वद्धस्ताभ्यां विदीर्णमपि।।2।।
उन्मादस्यावेगा‘दसद’ किमपि दृक्पथं न समुपैति।
मम दृशि मरुभूरेषा मृन्मात्रं मुष्टिमेयमिति।।3।।

223

लबे 'ईसा[1] की जुंबिश[2] करती है गहवारः जुंबानी[3]
क़यामत[4] कुश्तः-ए-ला'ले बुताँ[5] का ख़्वाबे सँगीं[6] है

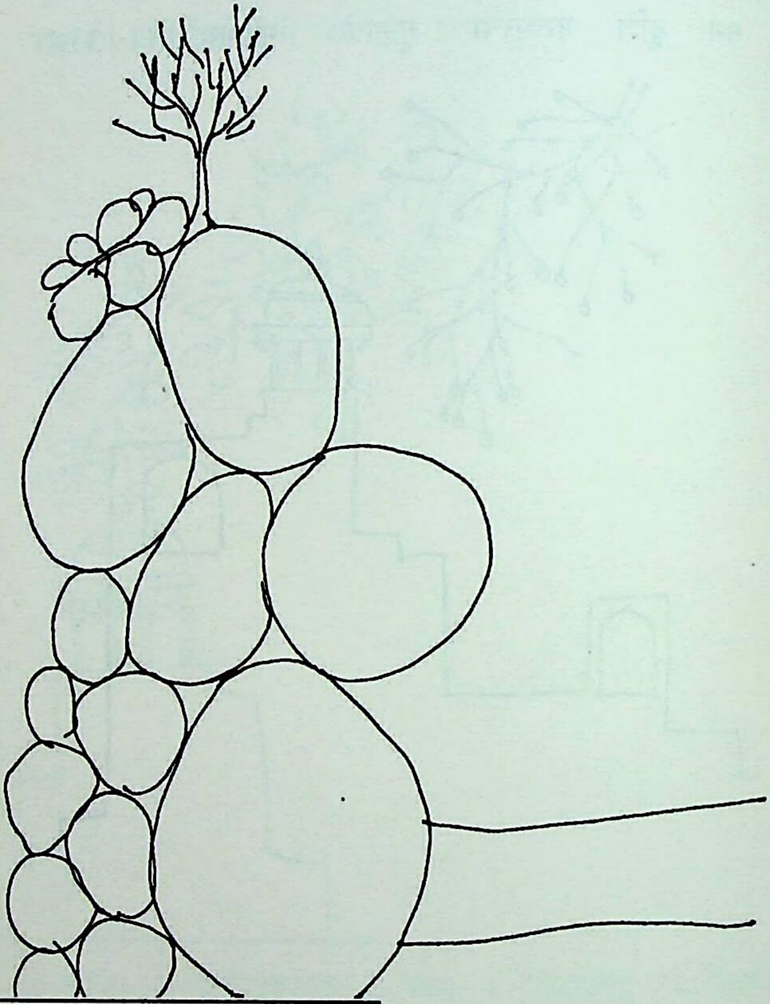

---

1. ईसामसीहस्य अधरः; 2. कम्पः; 3. पर्यङ्किकाचालनम्; 4. प्रलयः, गम्भीरा निद्रेत्यर्थः; 5. प्रियशोणाधरहतः; 6. प्रस्तरवद्गुरुर्निद्रा।

223

‘ईसा’ऽधरस्य कम्पः कुरुते पर्यङ्कचालनं किमपि।
शोणाधरनिहतस्य प्रस्तरनिद्राऽतिगहनाऽस्ति।।1।।

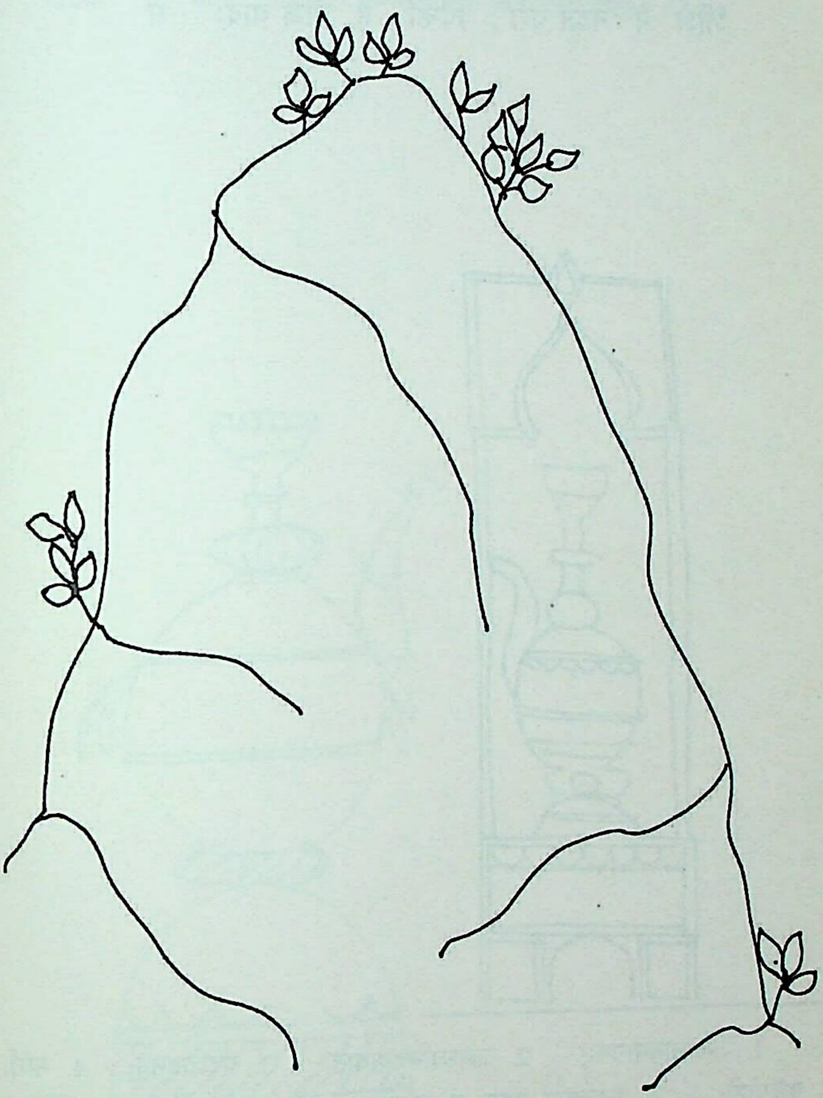

224

आमदे सैलाब[1] तूफ़ाने सदा-ए-आब[2] है
नक़्शे पा[3] जो कान में रखता है उँगली जाद:[4] से
बज़्मे मै[5], वह्शतकद:[6] है, किसकी चश्मे मस्त[7] का
शीशे में नब्ज़े परी[8], पिन्हाँ[9] है मौजे बाद:[10] से

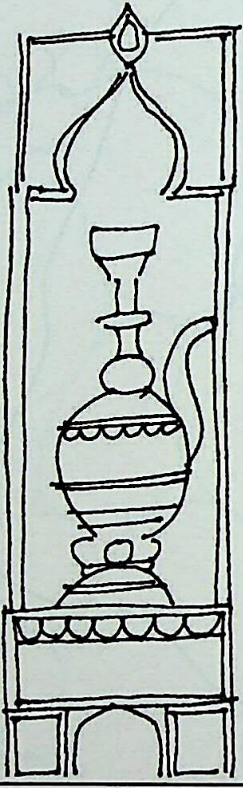

---

1. जलप्लावनागम:; 2. जलध्वनिचक्रवात:; 3. पदचिह्नम्; 4. मार्ग:; 5. मधुगोष्ठी; 6. उन्मत्तानां गृहम्; 7. मत्तनयन:; 8. अप्सरोनाडी; 9. अन्तर्निहिता; 10. मधुलहरी।

224

प्लावनसमागमः खलु सलिलध्वनिचक्रवात आयातः।
पथचिह्नं पथ एतत् कर्णोऽङ्गुलिमत्र निदधाति। ।1। ।
मधुगोष्ठ्युन्मादगृहं कस्य नु मत्तस्य चक्षुषोऽस्तीह।
काचे मधुलहरेणान्तर्निहिताऽस्त्यप्सरोनाडी। ।2। ।

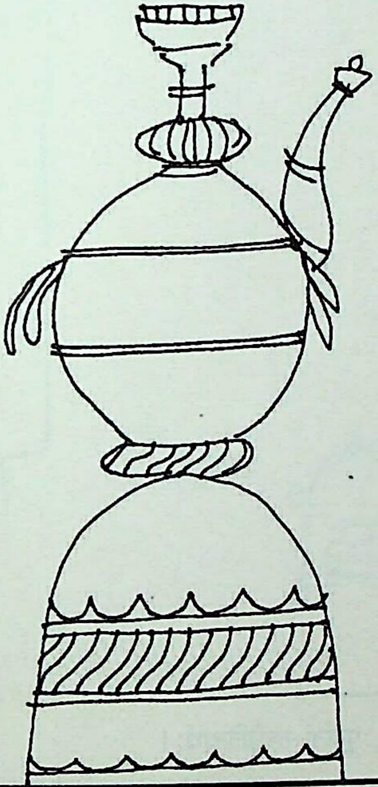

225

हूँ मैं भी तमाशाइ-ए-नैरँगे तमन्ना[1]
मतलब नहीं कुछ इससे, कि मतलब ही बर आवे[2]

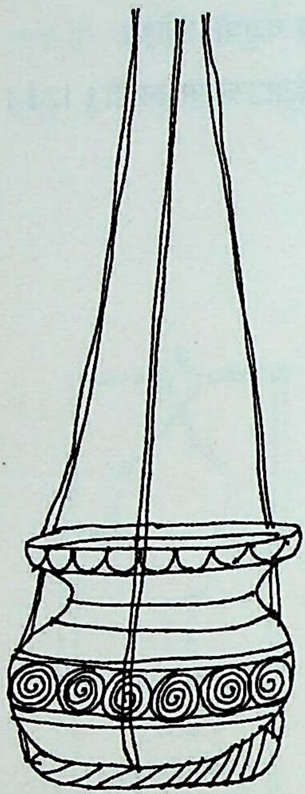

---

[1] कामनेन्द्रजालदृश्यदर्शकः; [2] पूर्णतां गच्छेदित्यर्थः।

225

काङ्क्षेन्द्रजालदर्शक एषोऽहं कश्चिदस्मि जगतीह।
नोद्देश्यमस्त्यनेन यदुद्देश्यं पूर्णतां गच्छेत्।।1।।

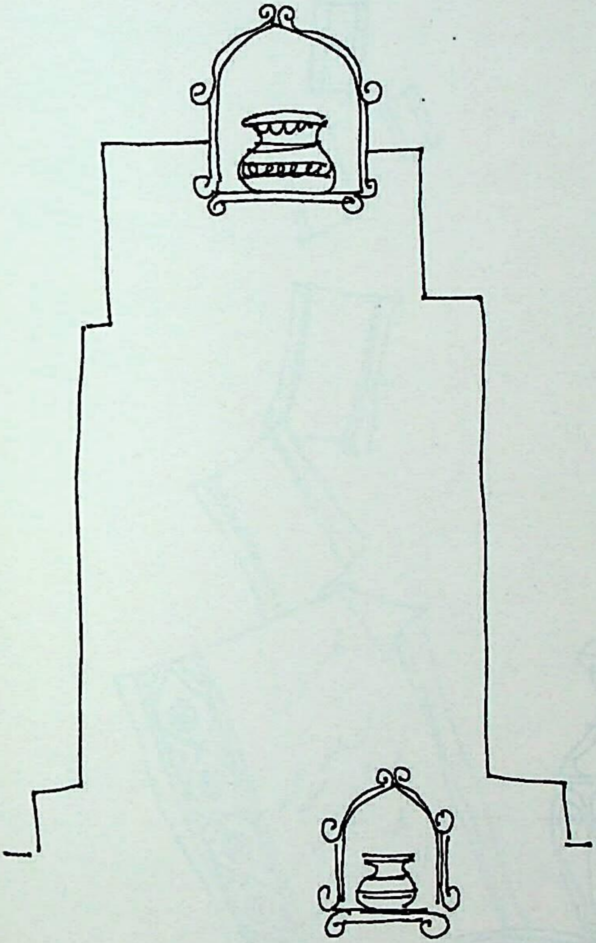

226

सियाही जैसे गिर जावे दमे तह्‌रीर[1] काग़ज़ पर
मेरी क़िस्मत में यों तस्वीर है शबहा-ए-हिज्राँ[2] की

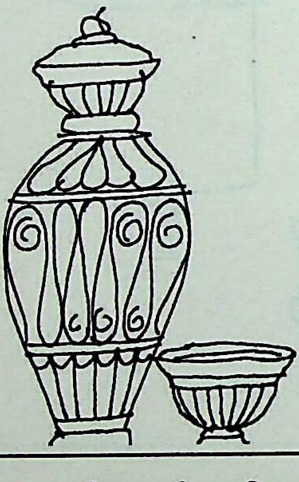

---

1. लेखनावसरे; 2. विरहरात्रयः।

226

लेखनकाले मन्ये यथा मषी कार्गदे द्रुतं निपतेत्।
विरहनिशायाश्चित्रं तत्सदृशं किमपि मद्भाग्ये।।1।।

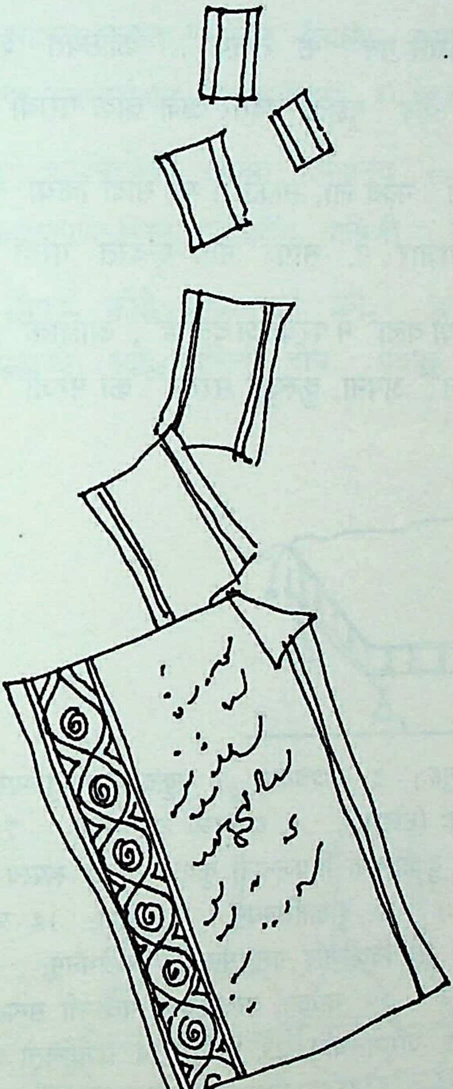

227

हुजूमे नालः[1], हैरत[2], 'आजिज़े 'अर्ज़े यक अफ़ग़ाँ[3] है
ख़मोशी[4], रेशः-ए-सद् नैसिताँ[5] से ख़स ब दन्दाँ[6] है

तकल्लुफ़ बर तरफ़[7], है जाँसिताँ तर[8], लुत्फ़े बदख़ूयाँ[9]
निगाहें बेहिजाबे नाज़[10], तेग़े तेज़े 'उरियाँ[11] है

हुई यह कस्रते ग़म[12] से तलफ़[13], कैफ़ियते शादी[14]
कि सुब्हे 'ईद[15] मुझको बदतर अज़ चाके गरीबाँ[16] है

दिल-ओ-दीं[17] नक़्द ला, साक़ी से गर सौदा किया चाहे[18]
कि इस बाज़ार में, साग़र मता'-ए-दस्त गरदाँ[19] है

ग़म[20] आग़ोशे बला[21] में परवरिश देता है[22], 'आशिक़[23] को
चराग़े रौशन[24] अपना, क़ुल्ज़ुमे सरसर[25] का मरजाँ[26] है

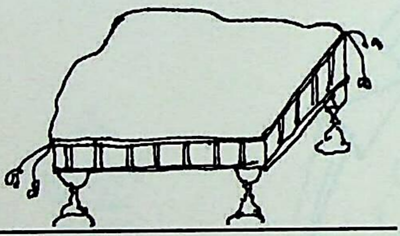

---

1. आर्तनादसमूहः; 2. आश्चर्यम्; 3. सकृद् विलपितुमप्यसमर्थम्; 4. मौनम्; 5. शरस्य शतं तन्तवः (नाड्यः); 6. दन्तमध्ये धृततृणम्; 7. सङ्कोचात् पृथक्; 8. प्राणहरतरः; 9. दुःशीलानां प्रियजनानां कृपा; 10. रूपस्य निरावरणा दृष्टिः; 11. तीक्ष्णनग्नतरवारिः; 12. दुःखाधिक्यम्; 13. नष्टा; 14. प्रसादमयी स्थितिः; 15. 'ईदस्य' प्रभातम्; 16. विकीर्णाद् गलवसनादपि अशोभनम्; 17. मनः धर्मश्च; 18. क्रयं कर्तुमिच्छेः; 19. चषकः, हस्ताद्धस्तं गच्छन्ती सम्पत्; 20. शोकः; 21. विपदः क्रोडम्; 22. परिपालयति; 23. प्रणयी; 24. प्रज्वलितो दीपः; 25. वात्या-समुद्रः; 26. प्रवालः।

227

आर्तस्वरसम्मर्दो विलपितुमेषोऽसमर्थ आश्चर्यम्।
मौनं दन्तान्तर्धृतशरतृणशतमेतदाभाति ॥1॥

सङ्कोचात् पृथगेषा प्राणहराऽसत्प्रियस्य कापि कृपा।
रूपप्रगल्भदृष्टिर्निशातनिर्वस्त्रतरवारिः ॥2॥

दुःखाधिक्यान्नष्टा जाता काचित् स्थितिः प्रसादमयी।
सुविदीर्णाद् गलवसनात् प्रभात'मीदस्य' मेऽनिष्टम् ॥3॥

पाययितुः क्रयमिच्छेर्मन आनय धर्ममानय द्रव्यम्।
चषको यदापणेऽस्मिन् प्रतिपाणि प्रापिणी सम्पत् ॥4॥

शोको विपदः क्रोडे प्रणयासक्तं जनं प्रपुष्णाति।
झञ्झावाताब्धेः स्वो ज्वलितो दीपः प्रवाल इह ॥5॥

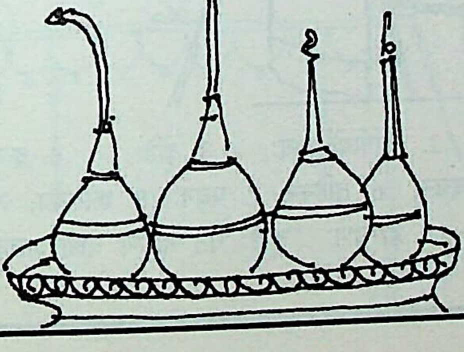

228

ख़मोशियों[1] में तमाशा अदा[2] निकलती है
निगाह[3] दिल से तेरे, सुर्मः[4] सा निकलती है

फ़िशारे तँगि-ए-ख़ल्वत[5] से बनती है शबनम[6]
सबा[7] जो ग़ुंचे[8] के पर्दे में जा निकलती है

न पूछ सीनः-ए-'आशिक़[9] से आबे तेग़े निगाह[10]
कि ज़ख़्मे रौज़ने दर[11] से हवा निकलती है

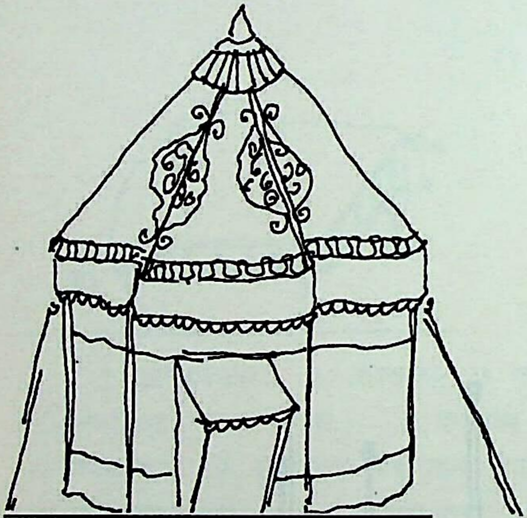

---

[1] मौनानि; [2] दर्शनीयो हावः; [3] दृष्टिः; [4] कज्जलमयी गुटिका; [5] एकान्तसङ्कीर्णत्वबलम्; [6] तुहिनम्; [7] पवनः; [8] कलिका; [9] प्रणयिनो वक्षः; [10] दृष्टितरवारिधारा; [11] द्वारव्रणः, "दृष्टिः येन मार्गेण वक्षोदेशववतरति स 'द्वार'-मित्युच्यते" ।

228

मौनेषु दर्शनीयो हावः सुतरामहो स्फुटीभवति।
दृष्टिस्तव हृदयादिह कज्जलगुटिकेव निर्याति ॥1॥

यः कलिकाया वक्षसि लभते पवनः क्षणं निजं स्थानम्।
एकान्तसङ्कुलत्वाभारात् स उपैति तुहिनत्वम् ॥2॥

प्रणयिन उरो न पृच्छ प्रेक्षिततरवारिसङ्गतां धाराम्।
द्वारगवाक्षव्रणतो यत् पवनो नाम निर्याति ॥3॥

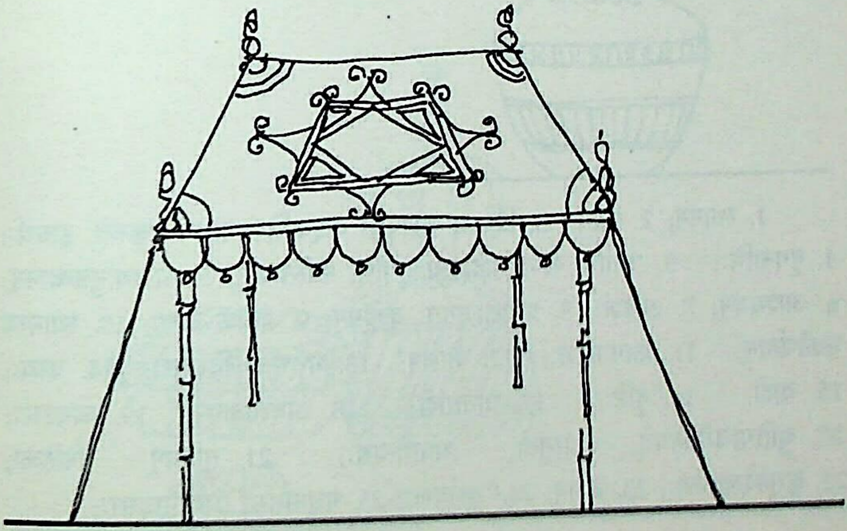

229

जिस जा[1] नसीम[2] शानः कशे ज़ुल्फ़े यार[3] है
नाफ़ः[4] दिमाग़े आहू-ए-दश्ते ततार[5] है

किसका सुराग़े जल्वः[5] है हैरत[6] को, अय ख़ुदा
आईनः[7] फ़र्शे शश जिहते इन्तिज़ार[8] है

है ज़र्रः ज़र्रः[9] तँगि-ए-जा[10] से ग़ुबारे शौक़[11]
गर दाम[12] यह है, वुस'अते सह्रा[13] शिकार[14] है

दिल मुद्द'अि[15]-ओ-दीदः[16] बना मुद्द'आ 'अलैह[17]
नज़्ज़ारे[18] का मुक़द्दमः[19] फिर रू ब कार[20] है

छिड़के है शबनम[21] आईनः-ए-बर्गे गुल[22] पर आब[23]
अय 'अन्दलीब[24], वक़्ते विदा'-ए-बहार[25] है

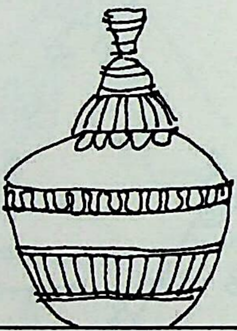

---

1. स्थानम्; 2. पवनः; 3. प्रियस्य केशपाशे कङ्कतिकाचालनं प्रकुरुते, इत्यर्थः; 4. मृगनाभिः; 5. 'ततार' नाम्नः प्रदेशस्य मृगाणां मास्तिष्कम्; 5. सौन्दर्यानुसन्धानम्; 6. आश्चर्यम्; 7. आदर्शः; 8. प्रतीक्षाजगतः कुट्टिमम्; 9. प्रत्येकं कणः; 10. स्थानस्य संकीर्णत्वम्; 11. कामनारजः; 12. जालम्; 13. मरुभुवो विस्तारः; 14. वध्यः; 15. वादी; 16. दृष्टिः; 17. प्रतिवादी; 18. अवलोकनम्; 19. व्यवहारः; 20. श्रुतिगोचरीक्रियते, प्रस्तुतो भवतीत्यर्थः; 21. तुहिनम्, मिहिका; 22. कुसुमदलदर्पणः; 23. जलम्; 24. 'बुल्बुलः; 25. मधुमासस्य प्रस्थानावसरः;

229

यत्र प्रियस्य चिकुरे कङ्कतिकाचालनं मरुत् कुरुते।
मृगमस्तिष्कं तत्र नु 'ततार'मृगनाभितां धत्ते ॥1॥

विस्मय ईश्वर ! कस्य प्रकामशोभां स्वतोऽनुसन्धत्ते।
आदर्शति प्रतीक्षा षट्काष्ठाकुट्टिमं तावत् ॥2॥

स्थानाभावात् प्राप्तं प्रत्येकं लालसा-रजःकणताम्।
जालं यदीदमयमिह मरुविस्तारस्ततो वध्यः ॥3॥

प्रतिवादिनी नु दृष्टिर्हृदयं वादीति मध्य उभयोश्च।
अवलोकनजन्योऽयं व्यवहारः प्रस्तुतो भूयः ॥4॥

कुसुमदलादर्श इयं मिहिका जलसेकमात्मनाऽऽचरति।
बुल्बुल ! मधुमासस्य प्रस्थानावसर आयातः ॥5॥

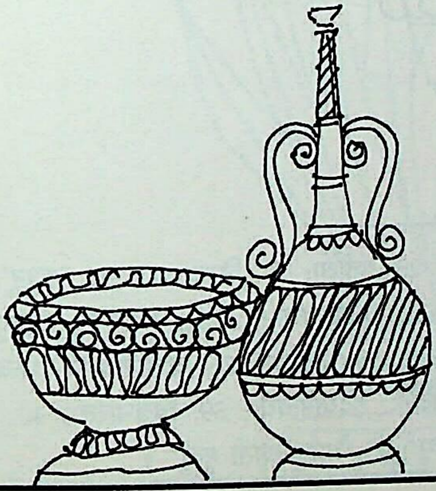

पच आ पड़ी है वा'दः-ए-दिलदार[26] की मुझे
वह आये या न आये प याँ[27] इन्तिज़ार[28] है

बेपर्दः[29] सू-ए-वादि-ए-मजनूँ[30] गुज़र न कर
हर ज़र्रे[31] के निक़ाब[32] में दिल बेक़रार[33] है

अय 'अन्दलीब यक कफ़े ख़स[34] बहरे आशियाँ[35]
तूफ़ाने आमद आमदे फ़स्ले बहार[36] है

दिल मत गँवा, ख़बर न सही, सैर ही सही
अय बेदिमाग़[37], आइनः[38] तिम्सालदार[39] है

ग़फ़्लत[40] कफ़ीले 'उम्र[41]-ओ-असद ज़ामिने नशात[42]
अय मर्गे नागहाँ[43], तुझे क्या इन्तिज़ार है

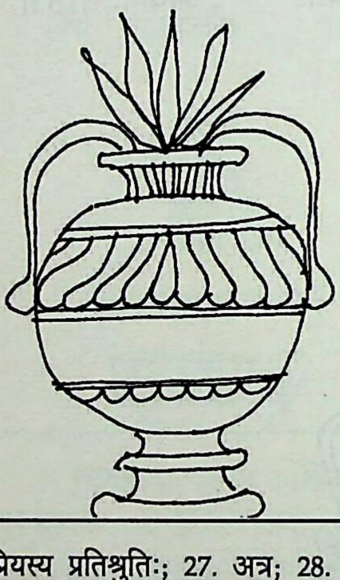

---

26. प्रियस्य प्रतिश्रुतिः; 27. अत्र; 28. प्रतीक्षा; 29. निरावरणः; 30. 'मजनू': यस्यां मरुभुवि निवसति तामुद्दिश्य; 31. प्रत्येकं कणः; 32. आवरणम्, अवगुण्ठनम्; 33. विकलम्; 34. मुष्टिमेयं तृणजालम्; 35. नीडार्थम्; 36. वासन्तिकस्य चक्रवातस्यागमः; 37. निर्बुद्धिः; 38. आदर्शः, हृदयमित्यर्थः; 39. चित्रैर्भरितः; 40. उपेक्षा; 41. आयुःपोषकृत्; 42. हर्षस्य प्रतिभूः; 43. अप्रत्याशितो मृत्युः ।

प्रियवचनस्येदानीं स्थातव्यं पक्षतो मया नूनम्।
नागच्छेद्वाऽऽगच्छेत् सोऽत्र तु तस्य प्रतीक्षाऽस्ति ॥6॥

'मजनो'मरुदेशं प्रति न निरावरणः कुरुष्व रे यात्राम्।
हृदयं ततो नु विकलं प्रत्येकं यत् कणावरणे ॥7॥

अयि बुलबुल ! नीडार्थं मुष्टिमितं सङ्गृहाण तृणजालम्।
सुवसन्तचक्रवातो लघु समुदयमाप्नुयादेषः ॥8॥
हारय हन्त न हृदयं माऽस्तु ज्ञानं भवेत् परिभ्रमणम्।
आदर्शो निर्बुद्धे ! चित्रैर्भरितस्तवैष खलु ॥9॥

यदुपेक्षायुःपोषकृ'दसदो' हर्षस्य कश्चन प्रतिभूः।
अप्रत्याशित मृत्यो ! प्रतीक्षमाणोऽसि किमिव त्वम् ॥10॥

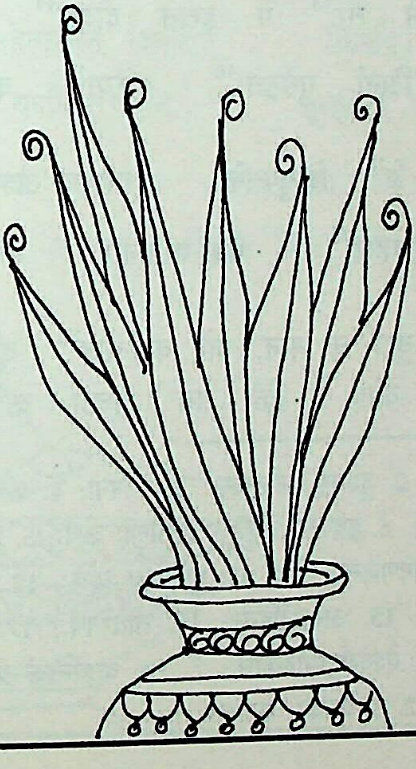

230

आईनः[1] क्यों न दूँ, कि तमाशा[2] कहें जिसे
ऐसा कहाँ से लाऊँ, कि तुझ सा कहें जिसे

हस्रत[3] ने ला रखा, तेरी बज़्मे ख़याल[4] में
गुलदस्तः-ए-निगाह[5], सुवैदा[6] कहें जिसे

फूँका है किसने गोशे महब्बत[7] में, अय ख़ुदा
अफ़्सूने इन्तिज़ार[8], तमन्ना[9] कहें जिसे

सर पर हुजूमे दर्दे ग़रीबी[10] से, डालिये
वह एक मुश्ते ख़ाक[11], कि सह्रा[12] कहें जिसे

है चश्मे तर[13] में हस्रते दीदार[14] से निहाँ[15]
शौक़े 'अिनाँ गुसेख़्तः[16], दरिया[17] कहें जिसे

दरकार है[18] शिगुफ़्तने, गुलहा-ए-'अैश[19] को
सुब्हे बहार[20], पँबः-ए-मीना[21] कहें जिसे

ग़ालिब, बुरा न मान, जो वा'अिज़[22] बुरा कहे
ऐसा भी कोई है कि सब अच्छा कहें जिसे

---

1. मुकुरः; 2. दृश्यम्, कौतुकम्; 3. कामना; 4. कल्पनागोष्ठी, हृदयमित्यर्थः; 5. सुमनःकरण्डकम्; 6. हृदयस्य कलङ्कः; 7. प्रेम्णः कर्णः; 8. प्रतीक्षामन्त्रः; 9. कामना; 10. इतस्ततः परिभ्रमणजन्या पीडा; 11. मुष्टिमिता धूलिः; 12. मरुभूः; 13.आर्द्रं चक्षुः; 14. दर्शनाभिलाषः; 15. अन्तर्निहितम्; 16. तीव्रस्तर्षः; 17. समुद्रः 18. अपेक्षितमस्तीत्यर्थः; 19. ऐश्वर्यपुष्पविकासः; 20. वासन्तिकं प्रभातम्; 21. सुराधान्या मुखे निहितं तूलम् 22. उपदेशकः, धार्मिकः ।

230

मुकुरं कथं न दद्यां कथयेयुर्दर्शनीयमिति तावत्।
त्वमिवेति यं वदेयुः कुत ईदृशमानयेयमहम् ॥1॥

त्वद्गतया कामनया हृदयं सकलङ्कमेतदाभाति।
सुमनःकरण्डकत्वं प्राप्तवती दृष्टिरपि नूनम् ॥2॥

केन प्रतीक्षामन्त्रः प्रेम्णः कर्णे प्रवेशमानीतः।
ईश्वर! लोके लोकाः प्रायो यं कामनेत्याहुः ॥3॥

मुष्टिमितां त्वं धूलिं परिभ्रमणजन्यपीडया तावत्।
विनिधेहि मूर्ध्नि निजके मरुभूरिति यां वदेयुरितः ॥4॥

दर्शनलालसया यो निहितः खलु बाष्पपूरिते नेत्रे।
एकस्तीव्रस्तर्षः सागर इति केऽपि तं प्राहुः ॥5॥

ऐश्वर्यकुसुमविकसनहेतोरस्ति त्वपेक्षितं किमपि।
मधुमाससुप्रभातं यदधिसुराधानि तूलमिति ॥6॥

'ग़ालिब' वदेदशिष्टं यद्युपदेष्टा न विद्धि तदशिष्टम्।
अपि कश्चिदीदृगिह यं ब्रुयुः सर्वेऽपि शिष्ट इति ॥7॥

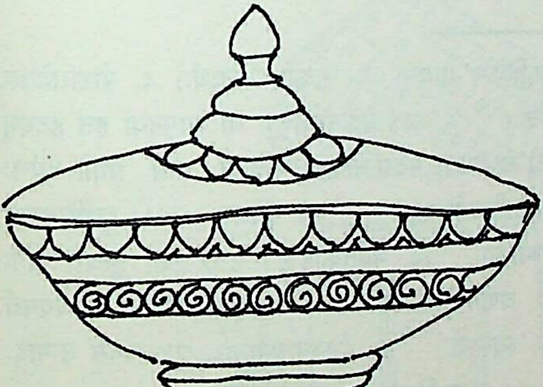

231

शबनम[1] ब गुले ला'लः[2] न ख़ाली ज़ि अदा है[3]
दाग़े दिले बेदर्द[4] नज़रगाहे हया[5] है

दिल ख़ूँ शुदः-ए-कश्मकशे हस्रते दीदार[6]
आईनः बदस्ते बुते बदमस्ते हिना है[7]

शो'ले से न होती, हवसे शो'लः[8] ने जो की
जी किस क़दर अफ़सुर्दगि-ए-दिल[9] प जला है

तिम्साल[10] में तेरी, है वह शोख़ी[11], कि बसद ज़ौक़[12]
आईनः ब अन्दाज़े गुल[13], आग़ोश कुशा[14] है

क़ुम्री[15] कफ़े ख़ाकिस्तर[16]-ओ-बुलबुल क़फ़से रँग[17]
अय नालः[18], निशाने जिगरे सोख़्तः[19] क्या है

ख़ू[20] ने तेरी अफ़सुर्दः[21] किया, वह्शते दिल[22] को
मा'शूक़ि-ओ-बेहौसलगी[23], तुरफ़ः बला[24] है

---

1. तुषारकणः; 2. 'आहिफेन'-पुष्पम्; 3. नाकारणमित्यर्थः; 4. पीडारहितस्य हृदयस्य कलङ्कः; 5. त्रपाजनकः; 6. अवलोकनस्यापूर्ण या कामनया हतं हृदयम्; 7. दुर्ललितस्य प्रियस्य 'मेंहदी'त्याख्यया मदयन्तिकया रञ्जिते हस्ते प्राप्तो दर्पणः; 8. अर्चिर्लालसा; 9. मनस औदासीन्यम्; 10. चित्रम्; 11. दुर्ललितत्वम्; 12. स्पृहातिशयात् ; 13. पुष्पमिव; 14. मुक्तक्रोडः; 15. एका सुस्वरा खगी; 16. मुष्टिमेया मृत्तिका; 17. वर्णमयपञ्जरः; 18. आर्तस्वरातिरिक्त इत्ययमर्थः कवेरभिप्रेत इति कथ्यते; 19. स्वभावः; 21. विमनायमानः; 22. मनस उन्मादः; 23. प्रियत्वेऽपि उत्साहशून्यत्वम्; 24. नवा विपत्;

231

नाकारणमहिफेनप्रसूनगत एष रे तुषारकणः।
हृदयकलङ्कः पीडारहितः कोऽपि त्रपाहेतुः ।।1।।

दर्शनकाङ्क्षाकर्षाकर्षहतं नाम किमपि हृदयं तत्।
दुर्ललितप्रियपाणौ मुकुरो मदयन्तिका-रचिते ।।2।।

अर्चिर्लालसया यद् विहितं शक्यं तदर्चिषा नासीत्।
हृदयौदासीन्येन ज्वलितं हृदयेन कियदेव ।।3।।

प्रतिविम्बे तव तावद् दुर्ललितत्वं तदस्ति यन्मुकुरः।
सँल्लक्ष्यते कुसुमवन्मुक्तक्रोडः स्पृहातिशयात् ।।4।।

'कुम्री' मुष्टिमिता मृद् 'बुल्बुल' इह वर्णपञ्जरो नूनम्।
आर्तस्वरातिरिक्तो यकृतो दग्धस्य कोऽस्त्यङ्कः ।।5।।

विमनायमानमकरोन्मनउन्मादं तव स्वभाव इह।
द्वयमपि नवा विपदिव प्रियत्वमुत्साहराहित्यम् ।।6।।

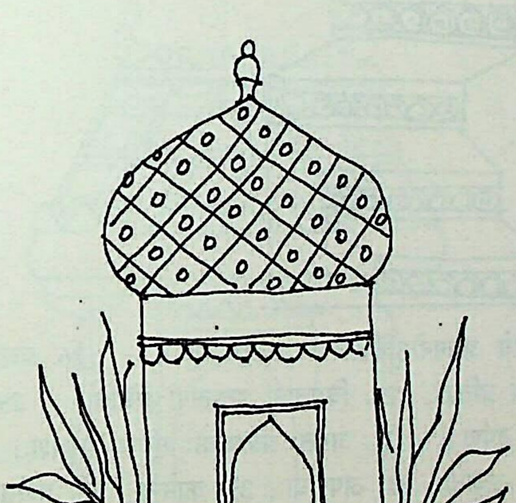

मज़बूरि-ओ-दा’वा-ए-गिरफ़्तारि-ए- उल्फ़त[25]
दस्ते तहे सँग आमदः[26] पैमाने वफ़ा[27] है

मा’लूम हुआ हाले शहीदाने गुज़श्तः[28]
तेग़े सितम[29] आईनः-ए-तस्वीर नुमा[30] है

अय परतवे ख़ुर्शीदे जहाँ ताब[31], इधर भी
साये की तरह[32] हम प ’अजब वक़्त पड़ा है

नाकरदः[33] गुनाहों[34] की भी हस्रत[35] की मिले दाद[36]
यारब, अगर इन करदः[37] गुनाहों की सज़ा[38] है

बेगानगि-ए-ख़ल्क़[39] से बेदिल[40] न हो, ग़ालिब
कोई नहीं तेरा, तो मेरी जान, ख़ुदा है

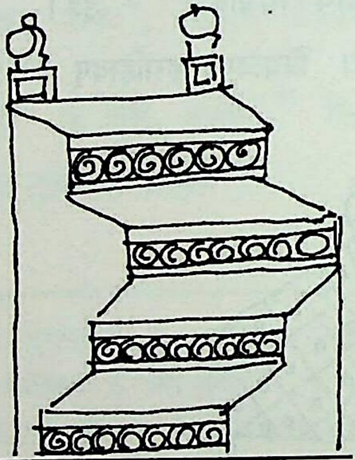

---

25. वैवश्यं प्रणये आत्मनोऽधिकारस्य प्रख्यापनम्; 26. प्रस्तरतलगतो हस्तः; 27. प्रेमनिर्वाहस्य प्रतिज्ञा; 28. विगतानां हुतात्मनां स्थितिः; 29. अत्याचारासिः; 30. चित्रैर्भरितो दर्पणः; 31. जगतः प्रकाशकः सूर्यस्य प्रकाशः; 32. छायेव; 33. अविहिताः, अकृताः; 34. अपराधाः; 35. कामना; 36. प्रशंसा; 37. कृताः; 38. दण्डः; 39. सांसारिकाणां विरोधः; 40. निराशः ।

वैवश्यं प्रणये च प्रख्यापनमात्मनोऽधिकारस्य।
पाणिः शिला-तलस्थो निर्वाहस्य प्रतिज्ञेह ॥7॥

इतिहासः खलु विदितो हुतात्मनां विगतकालजनितानाम्।
अत्याचारासिरितश्चित्रभरितदर्पणो नूनम् ॥8॥

अयि संसारविकासकतपनकिरण ! हन्त किञ्चिदत्रापि।
छायेव ह्यनुलग्नो दुर्वृत्तः कोऽपि समयो नः ॥9॥

ईश्वर ! शस्तिः स्यादलमपराधानां तृषोऽप्यविहितानाम्।
अपराधानामस्ति नु यदि विहितानामितो दण्डः ॥10॥

'ग़ालिब' संसारवतां विरोधतो हन्त मा निराशो भूः।
तव न स्याद् यदि कश्चिन्मत्प्रिय ! तर्हीश्वरस्त्वस्ति ॥11॥

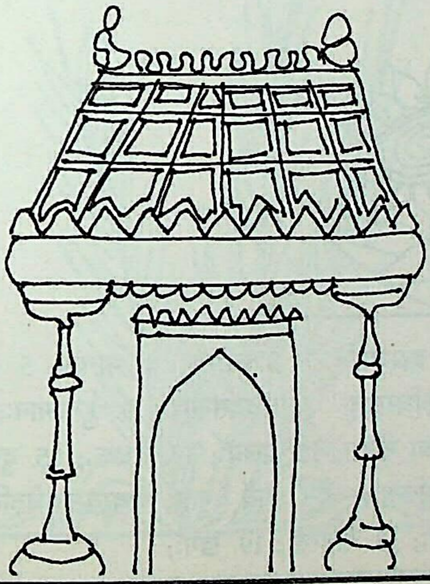

232

मंज़ूर थी यह शक्ल[1], तजल्ली[2] को नूर[3] की
क़िस्मत[4] खुली तेरे क़द-ओ-रुख़[5] के जुहूर[6] की

इक ख़ूँ चकाँ[7] कफ़न[8] में करोड़ों बनावं हैं
पड़ती है आँख, तेरे शहीदों[9] प, हूर[10] की

वा'अिज़[11] न तुम पियो, न किसी को पिला सको
क्या बात है तुम्हारी शराबे तुहूर[12] की

लड़ता है मुझसे हश्र[13] में क़ातिल[14], कि क्यों उठा
गोया, अभी सुनी नहीं आवाज़ सूर[15] की

आमद[16] बहार[17] की है, जो बुलबुल है नग़मः सँज[18]
उड़ती सी इक ख़बर है, ज़बानी तुयूर[19] की

---

1. रूपम्; 2. ब्रह्मज्योतिः; 3. आभा; 4. भाग्यम्; 5. आकार आननञ्च; 6. आविर्भावः; 7. रुधिरस्रुत्; 8. शववसनम्; 9. हुतात्मानः; 10. अप्सरसः; 11. धार्मिकः; 12. पवित्रा मदिरा; 13. प्रलयः; 14. वधकः; 15. दुन्दुभिः, प्रलयदिवसे न्यायार्थं दुन्दुभिध्वानं भविता, येन सर्वे मृताः स्वस्वसमाधेरुत्थिता भविष्यन्ति; 16. आगमः; 17. वसन्तः; 18. गानरतः; 19. खगः;

232

स्वीकृतमासीद् ब्रह्मज्योतिष आभास्वरूपमेतन्नु।
त्वद्वदनाकाराभ्यामाविर्भावस्य सौभाग्यम् ।।1।।

रक्ताक्ते शववसने शृङ्गाराः कोटिशो न्विहैकस्मिन्।
निपतत्येषाऽप्सरसां दृक् साकाङ्क्षा हुतात्मसु ते ।।2।।

न त्वं पिबेर्न कञ्चित् पाययितुं चापि धार्मिक! प्रभवेः।
किं वाच्यं तव मधुनो दिव्यलमुपलप्स्यमानस्य ।।3।।

कथमुत्थित इति वधकः प्रलये कलहं मया समाचरति।
आकर्णितो न मन्ये स्वरः स्वयं दुन्दुभेस्तेन ।।4।।

आगन्ता नु वसन्तो बुलबुल एषोऽस्ति येन गानरतः।
सुसमाचार इवेदृक् खगवर्गस्याननेभ्य इह ।।5।।

गो वाँ नहीं, प वाँ के निकाले हुए तो हैं
का'बे[20] से इन बुतों[21] को भी निस्बत[22] है दूर की

क्या फ़र्ज़[23] है, कि सबको मिले एक सा जवाब
आओ न, हम भी सैर करें कोहे तूर[24] की

गर्मी सही कलाम[25] में, लेकिन न इस क़दर
की जिससे बात, उसने शिकायत ज़ुरूर की

ग़ालिब, गर इस सफ़र में मुझे साथ ले चलें
हज[26] का सवाब[27] नज़्र करूंगा[28] हुज़ूर[29] की

---

20. तीर्थस्थलम्; 21. मूर्तयः; 22. सम्बन्धः; 23. आवश्यकम्; 24. एक पर्वतः, यस्मिन् 'मूसा'ख्य ईश्वर-सन्देशहर ईश्वरस्य ज्योतिर्द्रष्टुकामो गतः, तत्र तेन श्रुतं यत् ''त्वया ज्योतिरिदं द्रष्टुं न शक्यमि''ति; 25. कथनम्; 26. 'हज' तीर्थ यात्रा; 27. पुण्यम्; 28. समर्पयेयम्; 29. महानुभावः।

यदपि न तिष्ठन्त्येता बहिष्कृतास्तास्ततस्तु सन्त्येव।
‘का’बा’तो मूर्तीनामप्यासां दूरसम्बन्धः ।।6।।

आवश्यकं किमिह यत् सर्वो लभतामिवोत्तरं त्वेकम्।
वयमप्यागच्छत रे ‘तूरा’द्रिं’ पर्यटाम इमे ।।7।।

आस्तामौष्ण्यं कथने, न परं भाव्यं तथाधिकौष्ण्येन।
येनालपितं किञ्चित् तेनावश्यं समाक्षिप्तम् ।।8।।

यात्रायां खल्वस्यां ‘ग़ालिब’ यदि मां समं नयेदधुना।
‘हज’कृत्यजं च पुण्यं समर्पयेयं महार्हाय ।।9।।

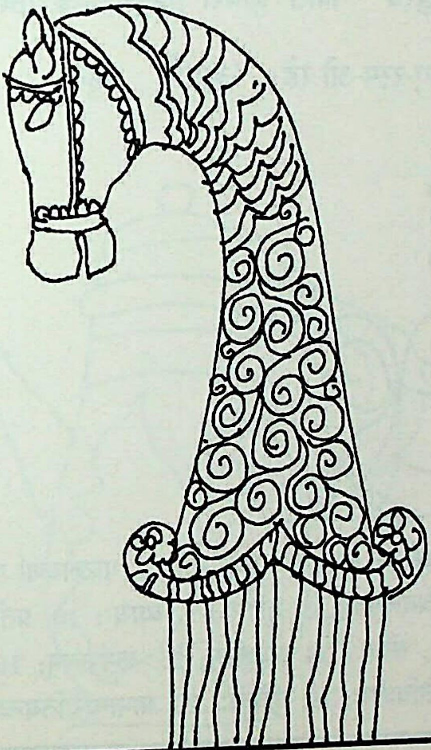

233

ग़म खाने में बोदा[1], दिले नाकाम[2] बहुत है
यह रँज[3], कि कम है मै- ए-गुल्फ़ाम[4], बहुत है

कहते हुए साक़ी से हया[5] आती है, वर्नः[6]
है यों, कि मुझे दुर्दे तहे जाम[7] बहुत है

ने तीर कमाँ[8] में है, न सय्याद[9] कमीं[10] में
गोशे[11] में क़फ़स[12] के मुझे आराम बहुत है

क्या ज़ोहद[13] को मानूँ, कि न हो गरचेः रियाई[14]
पादाशे 'अमल[15] की तम'-ए-ख़ाम[16] बहुत है

हैं अहले ख़िरद[17] किस रविशे ख़ास[18] प नाज़ाँ[19]
पा बस्तगि-ए-रस्म-ओ-रहे 'आम[20] बहुत है

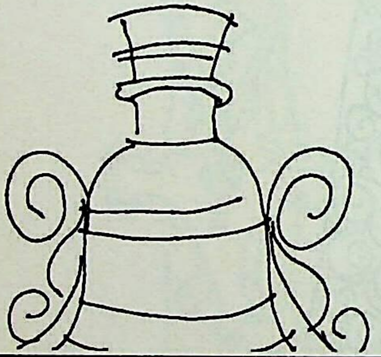

---

1. मूर्खम्; 2. असफलं हृदयम्; 3. क्षोभः; 4. पाटलवर्णा मदिरा; 5. लज्जा; 6. अन्यथा; 7. मधुपात्रतलगतम्; 8. तूणीरः; 9. व्याधः; 10. प्रतीक्षा; 11. कोणः; 12. पञ्जरम्; 13. त्यागः, संयमः; 14. प्रदर्शनम्; 15. कर्मफलम्; 16. लोभः, लिप्सा; 17. बुद्धिमन्तः; 18. पद्धतिविशेषः; 19. गर्विताः; 20. सामान्यरीतिबन्धनम्;

233

एकान्तदुर्बलं मे पीडासहने मनोऽसफलमेतत्।
क्षोभातिशयदस्मँ पाटलमदिराऽधिका नेति ॥1॥

मधुदात्रीं कथयन्नहमपत्रपामनुभवामि न परञ्चेत्।
अस्त्येवं यत्तृस्यै ममालमवशिष्टमपि मद्यम् ॥2॥

तूणीरे न हि बाणः प्रतीक्षमाणो न च क्वचिद् व्याधः।
अस्मिन् पञ्जरकोणे भयरहितोऽहं सुखेन शये ॥3॥
किं मन्येय त्यागं यद्यपि न स्यात् प्रदर्शनं तस्मिन्।
कर्मफलस्य विधाने लिप्सा सीमानमतिशेते ॥4॥
पद्धतिविशेषमिह कं धीमन्तो गर्विताः समाश्रित्य।
सामान्येष्वाचारव्यवहारेष्वेव ते बद्धाः ॥5॥

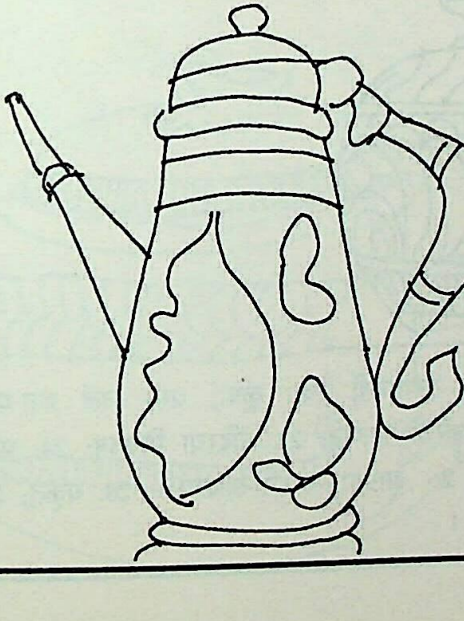

ज़मज़म[21] ही प छोड़ो, मुझे क्या तौफ़े हरम[22] से
आलूदः ब मै[23] जामः-ए-एह्राम[24], बहुत है

है क़ेह्र[25] गर अब भी न बने बात, कि उनको
इंकार नहीं और मुझे इब्राम[26] बहुत है

खूँ[27] हो के जिगर[28] आँख से टपका नहीं, अय मर्ग[29]
रहने दे मुझे याँ, कि अभी काम बहुत है

होगा कोई ऐसा भी, कि ग़ालिब को न जाने
शा'अिर[30] तो वह अच्छा है, प बदनाम[31] बहुत है

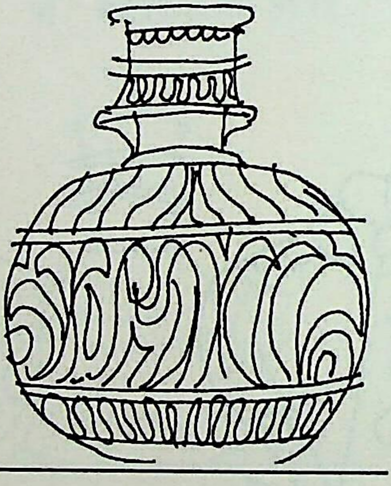

---

[21] 'का'बा'ख्यतीर्थस्थलस्य समीपवर्ती एकः कूपः, यस्य जलं हज-यात्राप्रवृत्ताः पिबन्ति; [22] का'बा-स्थलं परितो भ्रमणम्; [23] मदिरया सिक्तम्; [24] परिक्रमकाले धार्यं वसनम्; [25] विपत्; [26] आग्रहः; [27] रुधिरम्; [28] यकृत्; [29] मृत्युः; [30] कविः; [31] अयशःपात्रम्।

'ज़मज़म' एव त्यज मां का'बा'तः परिक्रमेण किं कार्यम्।
हन्त परिक्रमवसनं मदिरासिक्तन्नु पर्याप्तम् ॥6॥

महती विपत्तिरेषाऽधुनाऽपि न भवेदितः समाधानम्।
सोऽस्वीकृतिं न कुरुते यदा ग्रहग्रस्त एवाहम् ॥7॥

अयि मृत्यो ! नेत्राभ्यां रक्तीभूय द्रुतं न हन्त यकृत्।
अत्र निवासावसरं देह्यधुना मे सुबहु कार्यम् ॥8॥

ईदृक् कोऽपि स्यादिह यो जानीयान्न 'ग़ालिबं' सुतराम्।
सुकविः स निर्विवादं परमयशःपात्रमपि स भृशम् ॥9॥

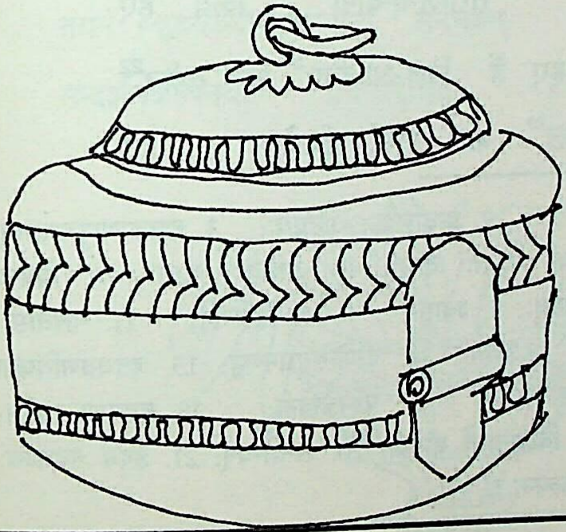

234

मुद्दत[1] हुई है यार को मेह्माँ[2] किये हुए
जोशे क़दह[3] से, बज़्म चराग़ाँ[4] किये हुए

करता हूँ जम'अ फिर, जिगरे लख़्त लख़्त[5] को
अरसः[6] हुआ है दा'वते मिश्ग़ाँ[7] किये हुए

फिर वज़'-ए-एहतियात[8] से रुकने लगा है दम[9]
बरसों हुए हैं चाक[10] गरीबाँ[11] किये हुए

फिर गर्मे नालःहा-ए-शरर बार[12] है नफ़स[13]
मुद्दत हुई है सैरे चराग़ाँ[14] किये हुए

फिर पुरसिशे जराहते दिल[15] को चला है 'अिश्क़
सामाने सद हज़ार नमकदाँ[16] किये हुए
फिर भर रहा है ख़ामः-ए-मिश्ग़ाँ[17] बख़ूने दिल[18]
साज़े चमन तराज़ि-ए-दामाँ[19] किये हुए
बाहम दिगर[20] हुए हैं दिल-ओ-दीदः[21] फिर रक़ीब[22]
नज़्ज़ारः-ओ-ख़याल[23] का सामाँ किये हुए

---

1. अधिकः कालः; 2. प्राधुणिकः, अतिथिः; 3. चषकाणामुच्छलनम्; 4. दीपोत्सवः; 5. प्रत्येकं यकृतः कणः; 6. अधिकः कालः; 7. प्रियस्य पक्ष्मणोऽतिथित्वम्; 8. रीतिहेतुः; 9. श्वासः; 10. विदीर्णम्; 11. गलवासः; 12. अग्निवर्ष्यार्तनादलीनः; 13.श्वासः; 14. दीपोत्सवभ्रमणम्; 15. हृदयव्रणविषया परिपृच्छा; 16. लवपात्राणां लक्षम्; 17. पक्ष्मलेखनी; 18. हृदयस्य रक्तेन; 19. दामाञ्चले पुष्पोद्यानस्य विकासार्था सामग्री; 20. अन्योन्यम्; 21. हृदयं नयनञ्च; 22. शत्रुः; 23. अवलोकनं कल्पना च;

234

कालो यातः सुतरां प्राधुणिकत्वं गते प्रिये तावत्।
चषकाणामुच्छलनाद् गोष्ठ्यां दीपोत्सवे च कृते ।।1।।
पुनरेकतो नु विदधे यकृतः प्रत्येकमेष हन्त कणान्।
कालो यातो ह्यधिकः पक्ष्मातिथितां गतस्य मम ।।2।।
पुनराचारध्यानात् प्राणेष्ववरोध एष उत्पन्नः।
गलवाससि सुविदीर्णे गतानि वर्षाणि सुबहूनि ।।3।।
आर्तस्वरेऽग्निवर्षिणि लीनः पुनरेष मामकः श्वासः।
कालो यातः सुमहान् विहिते दीपोत्सवभ्रमणे ।।4।।
प्रातिष्ठत पुनरेष प्रणयो हृदयव्रणस्थितिं प्रष्टुम्।
लक्षं निधाय हस्ते त्वरमाणो लवणपात्राणाम् ।।5।।
इह पक्ष्मलेखनीयं प्रपूर्यमाणा पुनर्नु हृद्रुधिरात्।
अञ्चलभागे पुष्पच्छविमुत्पादयितुकामेव ।।6।।
नयनं हृदयञ्चोभयमन्योन्यं समभवत् प्रतिद्वन्द्वि।
सन्दर्शनकल्पनयोः प्रबन्धमुचितं समाधाय ।।7।।

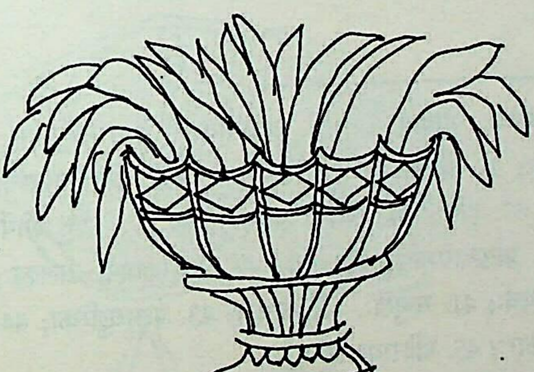

दिल फिर तवाफ़े कू-ए-मलामत[24] को जाये है
पिन्दार[25] का सनमकदः[26] वीराँ[27] किये हुए

फिर शौक़[28] कर रहा है ख़रीदार[29] की तलब[30]
'अर्ज़े मता'-ए-'अक़्ल-ओ-दिल-ओ-जाँ[31] किये हुए

दौड़े है फिर हर एक गुल-ओ-लालः[32] पर ख़याल
सद गुलसिताँ निगाह[33] का सामाँ किये हुए

फिर चाहता हूँ नामः-ए-दिलदार[34] खोलना
जाँ नज़्रे दिल फ़रेबि-ए-'उन्वाँ[35] किये हुए

माँगे है फिर, किसी को लबे बाम[36] पर, हवस[37]
ज़ुल्फ़े सियाह[38] रुख़[39] प परीशाँ किये हुए[40]

चाहे है फिर किसी को मुक़ाबिल[41] में आरज़ू[42]
सुरमे से तेज़ दश्नः-ए-मिश़गाँ[43] किये हुए

इक नौबहारे नाज़[44] को ताके है फिर, निगाह
चेह्रः फ़रोग़े मै[45] से गुलिस्ताँ किये हुए

---

24. धिक्काररथ्यायाः परिक्रमः; 25. अहम्भावः; 26. मूर्तिगृहम्; 27. निर्जनम्; 28. अभिलाषः; 29. क्रेता; 30. अपेक्षा; 31. बुद्धिःमनःप्राणसम्पदां समर्पणम्; 32. सुमनसः; 33. दृष्टिः; 34. प्रियस्य पत्रम्, (लेखः); 35. शीर्षकसौन्दर्यस्य कृते उपायनम्; 36. प्रासादाग्रभागः; 37. तर्षः; 38. श्यामश्यामा अलकाः; 39. कपोलः; 40. विकिरन्नित्यर्थः; 41. सम्मुखः, 42. कामना; 43. पक्ष्मच्छुरिका; 44. सौन्दर्याभिमान-सौख्यमग्न आकारः; 45. मदिराया आभा;

रथ्यां धिक्कारस्य भ्रमितुं हृदयं पुनः प्रवृत्तमिव।
नैर्जन्यमधिगमय्याहम्भावस्येह मूर्तिगृहम् ।।8।।

पुनरभिलाषोऽपेक्षामभिव्यनक्तीह कस्यचित् क्रेतुः।
बुद्धिमनःप्राणधनं समर्पयितुकाम उच्चलितः ।।9।।

प्रत्येकं खलु कुसुमं प्रधावति ध्यानमात्मनः सततम्।
उद्यानशतसुवर्णान्वितां दृशं साधनीकृत्य ।।10।।

उद्घाटयितुमनाः पुनरेषोऽहं प्रियतमस्य पत्रमिह।
शीर्षकसौन्दर्याय प्राणानुपहर्तुकामः सन् ।।11।।

आरूढं प्रासादं कामयते कमपि तर्ष एष पुनः।
श्यामश्यामानलकान् कपोलयोर्झटिति विकिरन्तम् ।।12।।

कामः कामयमानः कमपि पुनः क्वचन सम्मुखीकर्तुम्।
कज्जलतः कृतवन्तं पक्ष्मच्छुरिकां निशाततराम् ।।13।।

पुनरभिमानान्वितनववसन्तमेकं प्रतीक्षमाणा दृक्।
मदिरामयं सुरूपं प्रसूनभरितं प्रकुर्वाणम् ।।14।।

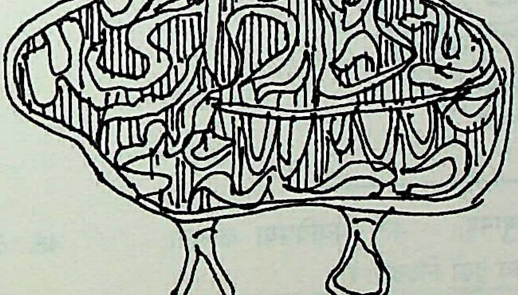

फिर, जी में है कि दर प किसी के पड़े रहें
सर ज़ेरे बारे मिन्नते दर्बाँ[46] किये हुए
जी ढूँढ़ता है फिर वही फ़ुर्सत, कि रात दिन
बैठे रहें तसव्वुरे जानाँ[47] किये हुए
ग़ालिब, हमें न छेड़ कि फिर जोशे अश्क[48] से
बैठे हैं हम तहय्यः-ए-तूफ़ाँ[49] किये हुए

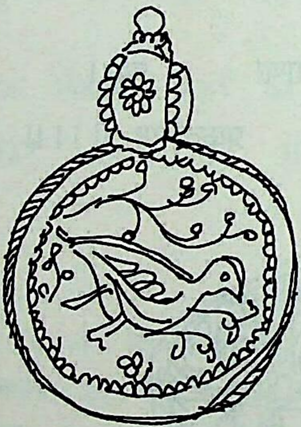

---

[46] राजसभागारभारमुग्नम्; [47] प्रियविषया कल्पना; [48] अश्रूच्छलनम्;
[49] वात्याचक्रप्रवर्तनस्य दृढो निश्चयः।

पुनरस्ति मनसि सततं तिष्ठेयं कस्यचिद् गृहद्वारि।
सन्धारयन् शिरः स्वं राजसभागारभरभुग्नम् ॥ 15 ॥

पुनरवकाशं हृदयं तमेव मे हन्त मृगयमाणमिव।
प्रियकल्पनानिमग्नस्तिष्ठेयं क्वचिदहोरात्रम् ॥ 16 ॥

'ग़ालिब' नास्मान् विकलीकुरु भूयो यन्नु बाष्पवेगेन।
निश्चित्य नु तिष्ठामो वात्याचक्रं प्रवर्तयितुम् ॥ 17 ॥

235

नवेदे अम्न[1] है बेदादे दोस्त[2], जाँ के लिये
रही न तर्ज़े सितम[3] कोई आस्माँ के लिये

बला से गर मिश़ः-ए-यार[4] तश्नः-ए-ख़ूँ[5] है
रखूँ कुछ अपनी भी मिश़गाने ख़ूँ फ़िशाँ[6] के लिये

वह ज़िन्दः हम हैं, कि हैं रूशनासे ख़ल्क़[7], अय ख़िज़्र[8]
न तुम, कि चोर बने 'उम्रे जाविदाँ[9] के लिये

रहा बला[10] में भी मैं मुब्तिला-ए-आफ़ते रश्क[11]
बला-ए-जाँ[12] है अदा[13] तेरी इक जहाँ के लिये

फ़लक[14] न दूर रख उससे मुझे, कि मैं ही नहीं
दराज़ दस्ति-ए-क़ातिल[15] के इम्तिहाँ[16] के लिये

मिसाल[17] यह मेरी कोशिश की है, कि मुर्ग़े असीर[18]
करे क़फ़स[19] में फ़राहम[20] ख़स[21] आशियाँ[22] के लिये

गदा[23] समझ के वह चुप था, मेरी जो शामत[24] आये
उठा, और उठके क़दम, मैंने पास्बाँ[25] के लिये

---

1. शान्ति-सुसमाचारः; 2. मित्रस्यान्यायः; 3. अत्याचारस्य रीतिः; 4. प्रियपक्ष्माणि; 5. रक्तपिपासूनि; 6. रक्तस्नुति-कर्त्रीणि; 7. जगद्विदितः; 8. अदृश्य एकश्चिरजीवी ईश्वरसन्देशहरः; 9. शाश्वतं जीवनम्; 10. आपत्तिः; 11. ईर्ष्यापद्ग्रस्तः; 12. प्राणहरः; 13. हावः; 14. नभः; 15. वधकस्यान्याय इत्यर्थः; 16. परीक्षा; 17. उदाहरणम्; 18. पञ्जरवद्धः खगः; 19. पञ्जरम्; 20. एकीकरणम्; 21. तृणकम्; 22. नीडम्; 23. भिक्षुकः; 24. दुःस्थितिः; 25. द्वारपालः, प्रहरी;

235

अन्यायः प्रियविहितः सुसमाचारः कृते ममासूनाम्।
नभसः कृतेऽवंशिष्टा नात्याचारस्य रीतिर्हि ॥1॥

रक्तपिपासूनि तथा कामं सन्त्वत्र मित्रपक्ष्माणि।
रक्तं स्तुतिकर्तॄणां स्वपक्ष्मणामपि कृते रक्ष्यम् ॥2॥

हे 'ख़िज्र' ! जीविता वयमिह तिष्ठामोऽर्थतो जगद्विदिताः।
त्वं न य उपलब्धुमहो अमरत्वं स्तेयतां प्राप्तः ॥3॥

सन्नापद्यप्यासं स्वेर्ष्यापद्ग्रस्त एव हन्ताहम्।
प्राणहरस्तव हावः कृत एकस्यास्ति जगतोऽस्य ॥4॥

गगन ! स्थापय दूरे नहि मां तस्माद् यदेष मैवाहम्।
वधकस्य लम्बकरयोः परीक्षणार्थं नु जगतीह ॥5॥

एतदुदाहरणं खलु मद्यत्नस्यास्ति यन्नु बद्धखगः।
सङ्गृह्णीयात् तृणकं पञ्जरके किमपि नीडार्थम् ॥6॥

मां भिक्षुक इति मत्वा सोऽवागासीत् विपन्मम प्राप्ता।
उत्थित उत्थाय पदे द्वाःस्थस्य प्रणतिमहमकृषि ॥7॥

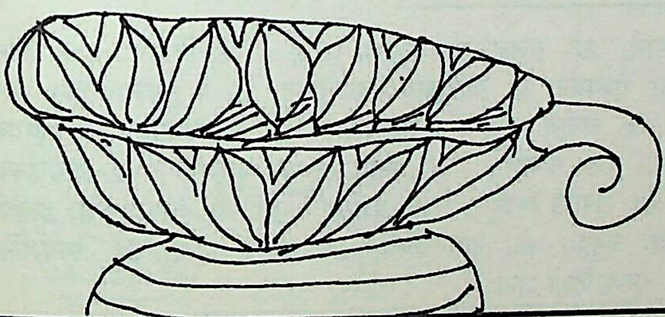

बक़द्रे शौक़[26] नहीं, ज़र्फ़े तँगना-ए-ग़ज़ल[27]
कुछ और चाहिये वुस'अत[28], मेरे बयाँ[29] के लिये

दिया है ख़ल्क़[30] को भी, ता उसे नज़र न लगे
बना है 'ऐश[31] तजम्मुल हुसैन ख़ाँ[32] के लिये

ज़बाँ प बारे ख़ुदाया[33], यह किसका नाम आया
कि मेरे नुत्क़[34] ने बोसे[35] मेरी ज़बाँ के लिये

नसीरे दौलत-ओ-दीं[36], और मु'ईने मिल्लत-ओ-मुल्क[37]
बना है चर्ख़े बरीं[38] जिसके आस्ताँ[39] के लिये

ज़मानः[40] 'अहद[41] में उसके है मह्वे आराइश[42]
बनेंगे और सितारे अब आस्माँ के लिये

बरक़[43] तमाम हुआ[44] और मद्ह[45] बाक़ी है
सफ़ीनः[46] चाहिये इस बह्रे बेकराँ[47] के लिये

अदा-ए-ख़ास[48] से ग़ालिब हुआ है नुक्तःसरा[49]
सलाये आम[50] है याराने नुक्तःदाँ[51] के लिये

---

26. इच्छा-परिमाणे; 27. 'ग़ज़ल' रूपा सङ्कीर्णा रथ्या; 28. विस्तरः; 29. वर्णनम्; 30. संसारः; 31. ऐश्वर्यम्; 32. ग़ालिबस्य एकः सुहृत्; 33. हे ईश्वर; 34. वाणी; 35. चुम्बनानि; 36. धर्मस्य राज्यस्य च सहायकः; 37. देशस्य राष्ट्रस्य च सहायकः; 38. उन्नतं नभः; 39. सन्धारः; 40. संसारः; 41. युगम्; 42. प्रसाधनपरः; 43. पृष्ठम्; 44. समाप्तिं गतम्; 45. प्रशंसा; 46. नौः (काव्यग्रन्थः इत्यर्थः); 47. तटविरहितः समुद्रः; 48. नवा शैली; 49. काव्यनिर्माता; 50. सार्वजनिकमामन्त्रणम्; 51. गुणग्राहिणो जनाः।

सङ्कीर्णक्षेत्रं खलु 'ग़ज़लं' परिमाणतो मदिच्छायाः।
मम वर्णनार्थमधिकः कश्चिदितो विस्तरोऽपेक्ष्यः ॥8॥

जगतः कृतेऽपि दत्तं सुखमथ निपतेन्न कोऽपि दृग्दोषः।
तत् खलु तजम्मुलामिध हुसेन ख़ानाय सुविरचितम् ॥9॥

कस्याभिधानमीश्वर ! मज्जिह्वां प्राप्तमेतदधुनेह।
यन्मद्गिराऽनया खलु मम रसना चुम्बिता सहसा ॥10॥

स नु धर्मराज्ययोरथ सहाय इह देशराष्ट्रयोश्चापि।
उन्नतमेतद् गगनं यद् द्वारस्यास्ति सन्धारः ॥11॥

अस्ति नु शृङ्गारपरः संसारस्तस्य शासने मन्ये।
निर्मास्यन्तेऽन्यान्यपि नक्षत्राणीह गगनस्य ॥12॥

पृष्ठं समाप्तमस्ति प्रशस्तिरस्यावशिष्यते किञ्च।
नौरिह काचिदपेक्ष्या कृतेऽतटस्यास्य वारिनिधेः ॥13॥

नवया शैल्या जातो 'ग़ालिब' इह सूक्ष्मवाक्प्रयोक्तेति।
गुणगृह्याणामेतत् सामान्यामन्त्रणं ह्यस्ति ॥14॥

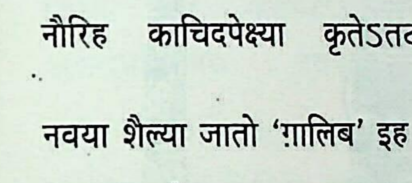

ज़मीमः

1

क़त'अः

गये वह दिन, कि नादानिस्तः ग़ैरों की वफ़ादारी
किया करते थे तुम तक़रीर, हम ख़ामोश रहते थे

बस, अब बिगड़े प क्या शर्मिन्दगी, जाने दो मिल जाओ
क़सम लो हमसे, गर यह भी कहें, क्यों हम न कहते थे

1

परिशिष्टम्

(खण्डः)

दिवसा हन्त गतास्तेऽज्ञाने येष्वहित-प्रेमनिर्वाहे।
अकरोर्भाषणमथ वयमाश्रितमौना अतिष्ठाम।।1।।

हानौं कैव नु लज्जाऽथास्तामन्यल्लघु त्वमेहि मिल।
वयमवदाम न किमिति त्वामिह च शपामहे वक्तुम्।।2।।

2

क़त'अः

कलकत्ते का जो ज़िक्र किया तू ने हमनशीं
इक तीर मेरे सीने में मारा, कि हाय हाय

वह सब्ज़ः ज़ारहा-ए-मुतर्रः, कि है गज़ब
वह नाज़नी बुताने ख़ुदआरा, कि हाय हाय

सब्र आज़मा वह उनकी निगाहें, कि हफ़ नज़र
ताक़त रुबा वह उनका इशारा, कि हाय हाय

वह मेवः हा-ए-ताज़ः-ओ-शीरीं कि वाह वाह
वह बादःहा-ए-नाब-ओ-गवारा, कि हाय हाय

2

(खण्डः)

कलिकाताविषये सुहृदकरोश्चर्चां यदत्र सुतरां त्वम्।
प्राहर एकं बाणं वक्षसि हा हन्त, हा हन्त।।1।।

क्षेत्रं तद् दूर्वाभिर्हरितमयं विस्तृतं तदाश्चर्यम्।
गर्वान्विताः स्वरूपालङ्कारास्ताश्च हा हन्त।।2।।

धैर्यपरीक्षणशीला दृशो दृगामन्त्रणप्रवीणानाम्।
तासामथ सङ्केताः शक्तिक्षयकारका हन्त।।3।।

तान्याहृतानि सद्यः फलानि मधुराणि तत्र किं वाच्यम्।
सुस्वादवो नवीनास्ता मदिरा हन्त, हा हन्त।।4।।

3

अपना अह्वाले दिले ज़ार कहूँ या न कहूँ
है हया माने'-ए-इज़्हार कहूँ या न कहूँ

नहीं करने का मैं तक़रीर, अदब से बाहर
मैं भी हूँ वाक़िफ़े अस्रार, कहूँ या न कहूँ

शिकवः समझो इसे, या कोई शिकायत समझो
अपनी हस्ती से हूँ बेज़ार, कहूँ या न कहूँ

अपने दिल ही से मैं अह्वाले गिरफ़्तारि-ए-दिल
जब न पाऊँ कोई ग़मख़्वार, कहूँ या न कहूँ

दिल के हाथों से, कि है दुश्मने जानी अपना
हूँ इक आफ़त में गिरफ़्तार, कहूँ या न कहूँ

मैं तो दीवानः हूँ, और एक जहाँ है ग़म्माज़
गोश है दर पसे दीवार, कहूँ या न कहूँ

आप से वह मेरा अहवाल न पूछे, तो असद
हस्बे हाल अपने फिर अश'आर कहूँ या न कहूँ

3

मनसो व्यथितस्य दशां कथयेयं हन्त वा न कथयेयम्।
प्रकटनविमुखाऽस्ति ह्रीः कथयेयं वा न कथयेयम्।।1।।

उल्लङ्घ्य व्यवहारं शिष्टानां नैष आलपेयमहम्।
मर्मज्ञोऽस्म्यहमपि तत् कथयेयं वा न कथयेयम्।।2।।

निन्दां जानीह्यथवा जानीह्यथवा कमप्युपालम्भम्।
स्वास्तित्वेनाप्रीतः कथयेयं वा न कथयेयम्।।3।।

स्वस्य हृदो व्यथितस्य स्थितिं स्वमेवैष हन्त हृदयमहम्।
अप्राप्ते समदुःखे कथयेयं वा न कथयेयम्।।4।।

हृदयस्यास्य नु हेतोः प्राणानां शत्रुरेतदिति कृत्वा।
एकापदि बद्‌धोऽहं कथयेयं वा न कथयेयम्।।5।।

उन्मत्त एष वर्ते कर्णेजपतां गतश्च संसारः।
भित्तेः पश्चात् कर्णः कथयेयं वा न कथयेयम्।।6।।

पृच्छे'दसद' भवन्तं स मदीयां चेत् स्थितिं न किञ्चिदपि।
स्वस्थित्यनुसाराद् वा कथयेयं वा न कथयेयम्।।7।।

4

मुमकिन नहीं, कि भूलके भी आर्मीदः हूँ
मैं दश्ते ग़म में आहू-ए-सय्याद दीदः हूँ

हूँ दर्दमन्द, जब्र हो या इख़्तियार हो
गह नालः-ए-कशीदः गह अश्के चकीदः हूँ

जाँ लब प आई, तो भी न शीरीं हुआ दहन
अज़ बसकि, तलूख़ि-ए-ग़मे हिज़राँ चशीदः हूँ

ने सुब्हः से 'अलाक़ः, न साग़र से राब्तः
मै मा'रिज़े मिसाल में, दस्ते बुरीदः हूँ

हूँ ख़ाकसार, पर न किसी से है मुझको लाग
ने दानः-ए-फ़ुतादः हूँ, ने दाम चीदः हूँ

जो चाहिये, नहीं वह मेरी क़द्र-ओ-मंज़िलत
मैं यूसुफ़े बक़ीमते अव्वल खरीदः हूँ

हरगिज़ किसी के दिल में नहीं है मेरी जगह
हूँ मैं कलामे नग़्ज़, वले नाशुनीदः हूँ

अह्ले वर'अ के हल्क़े में हरचन्द हूँ ज़लील
पर 'आसियों के फ़िर्क़े में, मैं बरँगुज़ीदः हूँ

पानी से सग गज़ीदः डरे जिस तरह, असद
डरता हूँ आइने से, कि मर्दुम गजीदः हूँ

4

एतन्नहि सम्भाव्यं यदहं विश्रामलीन इह वर्ते।
दुःखक्षेत्रे दृष्टो व्याधेनाहं मृगः कश्चित्।।1।।

दूनोऽहमसामर्थ्ये सति वा सति वेह हन्त सामर्थ्ये।
कृष्टः क्वचिदार्तस्वर इतः क्वचिद् वा स्रुतो बाष्पः।।2।।

प्राणा अधरं प्राप्तास्तथापि मधुरं मुखं न किञ्चिदभूत्।
अहमास्वादितविरहक्षणदुःखाधिककटूग्ररसः ।।3।।

स्मरणेन न सम्बन्धो मधुचषकेणापि नास्ति सम्बन्धः।
यदुदाहरणजगत्यहमस्मि च्छिन्नो नु हस्त इह।।4।।

अस्मि विनम्रो न परं केनचिदास्ते ममेह सम्बन्धः/सङ्घर्षः।
पतितो नान्नकणोऽहं न च जालान्तःसमापतितः।।5।।

यदपेक्ष्यं न तदास्ते ममादरो हन्त मे न सम्मानः।
‘यूसुफ़’ एष प्रथमक्रम एव क्रीत इह वर्ते।।6।।

न कदापि कस्यचिद्धृदि मम किमपि स्थानमित्यहं जाने।
नैव श्रुतमिह केनचिदहमीदृशमुत्तमं काव्यम्।।7।।

संयमिनां समवाये प्रत्याख्यातो नु हन्त यावदहम्।
अस्मि सदात्मा कश्चन वर्गे पापात्मनामेषः।।8।।

बिभियाद् यथेह कश्चित् सलिलाद् दष्टः शुनाऽतिमलिनेन।
‘असद’ बिभेभ्यादर्शाद् यदेष दष्टोऽस्मि मनुजेन।।9।।

5

मज्लिसे शम्’अ ’िअज़ाराँ में जो आ जाता हूँ
शम्’अ साँ मै तहे दामाने सबा जाता हूँ

होवे है जादः-ए-रह, रिश्तः-ए-गौहर हर गाम
जिस गुज़रगाह में, मैं आबलःपा जाता हूँ

सरगिराँ मुझसे सुबुक रौ के न रहने से रहो
कि बयक जुंबिशे लब मिस्ले सदा जाता हूँ

5

गोष्ठीं यदा प्रियाणामुपैमि दीपस्फुरत्कपोलानाम्।
पवनाच्चलतो नीचैर्यामि ततोऽहं प्रदीप इव।।1।।

उत्पन्नपादपिटको ब्रजाम्यहं हन्त येन मार्गेण।
मौक्तिकयष्टिविलसितो मार्गः स पदे पदे भवति।।2।।

मत्सदृशे लघुगामिनि तिष्ठति मा भूरिह क्वचिद् रुष्टः।
सार्धमधरकम्पेन द्रुतं ततः शब्द इव यामि।।3।।

6

मैं हूँ मुश्ताक़े जफ़ा, मुझ प' जफ़ा और सही
तुम हो बेदाद से ख़ुश, इससे सिवा और सही

ग़ैर की मर्ग का ग़म किस लिये, अय ग़ैरते माह
हैं हवस पेशः बहुत, वह न हुआ, और सही

तुम हो बुत, फिर तुम्हे पिन्दारे ख़ुदाई क्यों है
तुम ख़ुदावन्द ही कहलाओ, ख़ुदा और सही

हुस्न में हूर से बढ़कर नहीं होने के कभी
आपका शेवः-ओ-अन्दाज़-ओ-अदा और सही

तेरे कूचे का है माइल दिले मुज़्तर मेरा
का'बा इक और सही, क़िब्लः नुमा और सही

कोई दुनिया में मगर बाग़ नहीं है, वा'अिज़
ख़ुल्द भी बाग़ है, ख़ैर आब-ओ-हवा और सही

क्यों न फ़िरदौस में दोजख़ को मिला लें, यारब
सैर के वास्ते थोड़ी सी फ़ज़ा और सही

मुझको वह दो, कि जिसे खाके न पानी माँगूँ
ज़हर कुछ और सही, आबे बक़ा और सही

मुझसे, ग़ालिब, यह 'अलाई ने ग़ज़ल लिखवाई
एक बेदाद गरे रँज फ़िज़ा और सही

6

अत्याचारस्येषोऽभिलाषवानस्मि सोऽस्तु मय्यधिकम्।
अन्यायेनासि समुत् स स्यादस्मात् किमप्यधिकम्।।1।।

मृत्यावन्यस्य स्यात् कथमिव शोको विलज्ञितेन्दुमुख !
गृध्नव इव खलु बहवो न स्यात् कामं स इतरः स्यात्।।2।।

मूर्तिस्त्वमसि कथं स्यात् तव गर्वः कश्चिदीश्वरत्वस्य।
स्वामीत्युक्तस्त्वं स्यात् स ईश्वरः कश्चिदन्यः स्यात्।।3।।

सौन्दर्ये नोत्कृष्टस्त्वमप्सरोभ्यः कदाचिदपि नु स्याः।
व्यवहारा हावाश्च प्रकाममन्ये भवेयुरिह।।4।।

तव रथ्यामिह गन्तुं प्रवृत्तमेतन्ममास्ति विकलं हृत्।
स्यात् का'बाऽन्यः कश्चित् का'बा-पथ-दर्शकोऽन्यः स्यात्।।5।।

धार्मिक ! जगतीह परं नोद्यानं हन्त किञ्चिदप्यास्ते।
स्वर्गोऽप्युद्यानं स्यात् सत्यपि भिन्ने नु 'जलवायौ'।।6।।

ईश्वर ! कथं न नाके मिश्रयितव्यः कदापि नरकोऽयम्।
ईषदिव भ्रमणार्थं 'वातावरणं' भवेदधिकम्।।7।।

तन्मे देहि यदम्भो यद् भुक्त्वा किमपि नैव याचेऽहम्।
किञ्चिद् विषमन्यत् स्यादमृतं वा किञ्चिदन्यत् स्यात्।।8।।

लिखिताऽस्माभि'रलाई'-प्रेरणया हन्तं ग़ज़लगीतिरियम्।
एको न्यायी 'ग़ालिब' दुःखानां वर्धकोऽन्यः स्यात्।।9।।

7

है ग़नीमत, कि ब उम्मीद गुज़र जायगी 'अुम्र
न मिले दाद, मगर रोज़े जज़ा है तो सही

दोस्त गर कोई नहीं है, जो करे चारःगरी
न सही, एक तमन्ना-ए-दवा है तो सही

ग़ैर से देखिये क्या ख़ूब निभाई उसने
न सही हमसे, पर उस बुत में वफ़ा है तो सही

कभी आ जायेगी, क्यों करते हो जल्दी, ग़ालिब
शोह्र:-ए-तेज़ि-ए-शमशीरे क़ज़ा है तो सही

7

आशायां व्यत्येतायुर्विषयोऽयं नु कोऽपि तोषस्य।
न मिलेदिह प्रशस्तिः फलदिवसः कर्मणां त्वस्ति।।1।।

अस्ति न कश्चित् सुहृदिह यदि यः कुर्यात् कदाचिदुपचारम्।
न स्यादेका त्वास्ते परमौषधकामना मनसि।।2।।

पश्यतु रिपुणा सार्धं व्यवहृतमिह तेन कीदृशं सुष्ठु।
स्यान्नास्माभिस्तस्यां निर्वाहस्त्वस्ति प्रतिमायाम्।।3।।

'ग़ालिब', कदाचिदेष्यति कथमिव कुरुषे भवांस्त्वरां तावत्।
ख्यातिस्त्वस्ति समधिका निशितत्वे मृत्युखड्गस्य।।4।।

8

अब्र रोता है, कि बज़्मे तरब आमादः करो
बर्क़ हँसती है, कि फ़ुर्सत कोई दम है हमको

8

मुद्गोष्ठी सन्नद्धा क्रियतामिति हन्त वारिदो वदति।
विद्युद्, हसति यदास्तेऽवकाश इह मे मुहूर्तमपि।।

9

चन्द तस्वीरे बुताँ, चन्द हसीनों के ख़ुतूत
बा'द मरने के मेरे घर से यह सामाँ निकला

9

चित्राणि सुन्दरीणां कानिचिदथ कानिचिच्च पत्राणि।
मन्मरणानन्तरमिदमुपलब्धं वस्तु मद्गेहात्।।

10

दो रँगियाँ यह ज़माने की जीते जी है सब
कि मुर्दों को न बदलते हुए कफ़न देखा

10

व्यवहारश्छद्ममयः कालस्यैषोऽस्ति जीवनावधिकः।
वसनं परिवर्तयतो न शवान् क्वापीह पश्यामि।।

11

दमे वापसीं बर सरे राह है
'अज़ीज़ो, अब अल्लाह् ही अल्लाह् है

11

अन्त्यं श्वसितं साम्प्रतमस्तित्वस्य स्वमार्ग एवास्ति।
तदिदानीमथ सुहृदः ! केवलमीशो न कोऽप्यपरः।।

12

है कहाँ, तमन्ना का दूसरा कदम, यारब
हमने दश्ते इम्काँ को, एक नक़्शे पा पाया

12

ईश्वर ! बत द्वितीयः पदमास्ते हन्त कामनायाः क्व।
अवगतमस्माभिर्जगदेकं पदचिह्नमित्येव।।

13

अगर आसूदगी है मुद्द'आ-ए-रंजे बेताबी
निसारे गर्दिशे पैमानः-ए-मै रोज़गार अपना

13

दुःखानामुद्देश्यं वैकल्यस्येह चेन्नु सन्तोषः।
अस्तित्वं निजमर्पितमिह मधुपात्रभ्रमावभवत्।।

14

असद, यह 'अज्ज़-ओ-बेसामानि-ए-फ़िर'औन तौअम है
जिसे तू बन्दगी कहता है, दा'वा है ख़ुदाई का

14

यमज'मसद', नम्रत्वं फ़िरऔनस्येह किमपि दारिद्रम्।
यं वन्दनेति कथयसि स ईश्वरत्वस्य गर्व इति।।

15

हमने वहशतकदः-ए-बज़्मे जहाँ में ज्यों शम्'अ
शो'लः-ए-'अश्क़ को अपना सर-ओ-सामाँ समझा

15

अवगच्छाम समे वयमधिजगदुन्मादगोष्ठि दीप इव।
प्रेमज्वालः कश्चित् स्वीयं यत्किञ्चिदुपकरणम्।।

16

बसूरत तकल्लुफ़, बमा'नी तअस्सुफ़
असद, मैं तबस्सुम हूँ पशमुर्दगाँ का

16

आकारे कृत्रिमता पश्चात्तापस्तथा च यथार्थ्ये।
'असद' स्मितं नु वर्ते मलिंनानामाननानाञ्च।।

17

ख़ुद परस्ती से रहे बाहम दिगर, ना आश्ना
बेकसी मेरी शरीक, आईनः तेरा आश्ना

रब्ते यक शीराजः-ए-वहशत है अज्ज़ा-ए-बहार
सब्जः बेगानः, सबा आवारः, गुल ना आशना

17

अपरिचितावन्योन्यं गर्वेणावामितो जगत्यां स्वः।
असहायतासुहृन्मे तव दर्पण एष सुपरिचितः।।

मध्वंशा उन्मादच्छिन्नांशैक्यस्य बन्धसूत्रमिह।
दूर्वा परकीयेत्वर इहानिलः पुष्पमपरिचितम्।।

18

फिर वह सू-ए-चमन आता है, ख़ुदा ख़ैर करे
रँग उड़ता है गुलिस्ताँ के हवादारों का

18

पुनरुद्यानमुपैति स सत्वरमीशः शुभं नु विदधातु।
उद्यानस्य शुभैषिण इहासते वर्णहीनमुखाः।।

19

अज़ आँजा कि हस्रत कशे यार हैं, हम
रक़ीबे तमन्ना-ए-दीदार हैं हम

तमाशा-ए-गुलशन, तमन्ना-ए-चीदन
बहार आफ़रीना, गुनहगार हैं हम

न ज़ौक़े गरीबाँ, न परवा-ए-दामाँ
निगह आश्ना-ए-गुल-ओ-ख़ार हैं हम

‘असद’ शिकवः कुफ़्र-ओ-दु’आ ना सिपासी
हुजूमे तमन्ना से लाचार हैं हम

19

तस्मात् स्थानात् सुहृदा मिलनस्यैतेऽभिलाषुका नु वयम्।
अथ प्रतिद्वन्द्विन इह सन्दर्शनकामनाया स्मः।।

उद्यानस्य नु दर्शन तथा सुमावचयकाम [शृणु तावत्]।
अथ हे वसन्तसर्जक वयं स्म एतेऽलमपराद्धाः।।

गलवसनस्य न कामो नहि चिन्ता हन्त कापि दाम्नश्च।
दृग्ज्ञातारो वयमिह पुष्पाणां कण्टकानाञ्च।।

अकृतज्ञत्वमनास्थोपालम्भः प्रार्थनं तथा ‘ह्यसद’।
अभिलाषाणां निवहे वयमायत्ताः स्म एतर्हि।।

20

फिर हल्क़ :-ए-काकुल में पड़ीं दीद की राहें
ज्यों दूद फ़राहम हुईं रौज़न में निगाहें

दैर-ओ-हरम, आईनः-ए-तकरारे-तमन्ना
वामान्दगि-ए-शौक़ तराशे है पनाहें

20

दर्शनमार्गः कृष्टो भूयः खलु कुञ्चितेषु केशेषु।
धूम इवैता रन्ध्रे दृष्टय इह संञ्चिता अभवन्।।

मस्जिद इह मन्दिरमिह तर्षद्वन्द्वप्रमाणमुभयमपि।
आस्ते रुचेरिदानीं शरणान्वेषणपरा श्रान्तिः।।

21

हूँ गर्मि-ए-नशाते तसव्वुर से नग़्मः सँज
मैं 'अन्दलीबे गुल्शने ना आफ़रीदः हूँ

21

अहमस्मि कल्पनाभवहर्षभरेणैव गानसँल्लग्नः।
अज्ञातस्य तथास्म्यहमज्ञातस्येह बुलूबुलकः।।

22

अय नवासाज़े तमाशा, सर ब कफ़ जलता हूँ मैं
इक तरफ़ जलता है दिल, और इक तरफ़ जलता हूँ मैं

है तमाशा गाहे सोज़े ताज़ः, हर यक 'अज्वे तन
ज्यों चराग़ाने दिवाली सफ़ ब सफ़ जलता हूँ मैं

22

अयि दर्शनप्रसाधक ! पाणिधृताग्निर्ज्वलन्नहं वर्ते।
ज्वलति हृदेकत्र नु मेऽन्यत्र नु चैष ज्वलन् वर्ते।।

प्रत्येकं तनुभागः क्रीडास्थलमस्ति नव्यतापस्य।
पंक्तिश आसे ज्वलितो दीपावल्याः प्रदीप इव।।

23

असद, बज़्मे तमाशा में, तग़ाफुल पर्दः दारी है
अगर ढाँपे, तो आँखें ढाँप, हम तस्वीरे 'उरियाँ हैं

23

'असद' क्रीडास्थल्यामावरणं काचिदस्त्युपेक्षेह।
आवृणु दृशमावृणुषे चित्रं स्मो वयमनावरणम्।।

24

फ़ुताद्गी में क़दम उस्तुवार रखते हैं
बरँगे जादः सरे कू-ए-यार रखते हैं

जुनूने फ़ुर्क़ते याराने रफ़्तः है, ग़ालिब
बसाने दश्त दिले पुर गुबार रखते हैं

24

न्यस्यामः पतने पदमतिमात्रं किमपि सुदृढतावलितम्।
मार्ग इव स्मो नु वयं प्रियरथ्याभिमुखमुच्चलिताः।।

'ग़ालिब', सुहृदामास्ते विरहोन्मादो नु विप्रयुक्तानाम्।
क्षेत्रमिवैते विभृमः सम्भरितं धूलिभिर्हृदयम्।।

25

है तिलिस्मे दैर में, सद हश्रे पादाशे 'अमल
आगही ग़ाफ़िल, कि यक इम्रोज़-बे फ़र्दा नहीं

25

देवालयेन्द्रजालं कर्मफलप्रलयकालशतमास्ते।
आगामिना विनाऽज्ञ ! न दिनेन रे वर्तमानमिदम्।।

26

मुझे मा'लूम है, जो तूने मेरे हक़ में सोचा है
कहीं हो जाये जल्द, अय गर्दिशे गर्दूने दूँ वह भी

26

मम हितविषये यदिह त्वया विमृष्टं तदस्ति मे विदितम्।
अयि दुष्प्रकृतनभोभ्रम ! कुरु क्वचित् तदपि शीघ्रमिह।।

27

है यास में असद को साक़ी से भी फ़राग़त
दरिया से ख़ुश्क गुज़रे मस्तों की तश्नः कामी

27

'असदस्या'स्त्यवकाशः पाययितुर्वाऽप्यही निराशायाम्।
मत्तानां हि पिपासा पिपासिता वारिधेर्याता।।

28

गर मुसीबत थी तो गुर्बत में उठा लेते, असद
मेरी देहली ही में होनी थी यह ख़्वारी, हाय हाय

28

यदि विपदासीत्सैषा प्रवासतो वा कुतश्चिदनुभाव्या।
हा धिग् दिल्ल्यामेव नु भाव्यं वाऽऽसीन्ममायशसा।।

29

बे चश्मे दिल न कर हवसे सैरे लालः ज़ार
या'नी यह हर वरक़, वरक़े इन्तिख़ाब है

29

मनईक्षणं विना नहि पुष्पभ्रमणस्पृहां विधेहि सखे।
पृष्ठं प्रत्येकमिदं तात्पर्यं प्रमुखपृष्ठमिति।।

30

ता चन्द पस्त फ़ितरति-ए-तब'-ए-आरज़ू
यारब, मिले बलन्दि-ए-दस्ते दु'आ मुझे

यक बार इम्तिहाने हवस भी ज़रूर है
अय जोशे 'अश्क़ बा'दः-ए-मर्द आज़्मा मुझे

30

ईश्वर ! निम्नत्वं मे कियदेतद्, हन्त तर्षभावस्य।
लभ्येत प्रार्थनायामुन्नतहस्तोन्नतिर्नु मया।।

तर्षस्य वारमेकं परीक्षणं नाम किञ्चिदनिवार्यम्।
प्रेमोत्साह ! नु मेऽर्पय वीर परीक्षाक्षमां मदिराम्।।

31

असद, उठना क़यामत क़ामतों का, वक़्ते आराइश
लिबासे नज़्म में, बालीदने मज़मूने 'आली है

31

काले प्रसाधनस्योत्थानं प्रलयानुरूपरूपाणाम्।
काव्यांशुके'ऽसदा'स्ते विकास उच्चस्य विषयस्य।।

32

हम मश्क़े फ़िक्रे वस्ल-ओ-ग़मे हिज्र से, असद
लाइक़ नहीं रहे हैं, ग़मे रोज़गार के

32

'असद', विरहपीडाया अभ्यासाच्चेह मिलनचिन्तायाः।
न स्मो वयमिह योग्याः सम्प्रति संसारदुःखस्य।।

33

असद, बन्दे क़बा-ए-यार है फ़िरदौस ला गुंचः
अगर वा हो, तो दिखला दूँ, कि यक 'आलम गुलिस्ताँ है

33

प्रियवाससो नु बन्धोऽ'सद' ! कलिका नाम काऽपि दिव आस्ते।
अथ दर्शयेयमिह चेत् स्फुटेज्जगत्त्वेकमुद्यानम्।।

34

आतश अफ़रोज़ि-ए-यक शो'लः-ए-ईमाँ तुझसे
चश्मक आराइ-ए-सद शह्रे चराग़ाँ मुझसे

34

'त्वत्तो धर्मस्याग्नेः प्रज्वलितत्वं तथा स्फुटं तावत्।
मत्तो दीपालङ्कृतनगरशतज्वालसङ्केताः।।

35

असद, बहारे तमाशा-ए-गुलिस्ताने हयात
विसाले लालः 'अज़ाराने सर्व क़ामत है

35

'असदा'स्तित्वोद्यानावलोकनस्यास्ति कोऽपि मधुमासः।
यत् किल सर्वोन्नतसुमसदृशमुखप्रियजनैर्मिलनम्।।

36

रश्क है आसाइशे अर्बाब ग़फ़्लत पर, असद
पेच-ओ-ताबे दिल, नसीबे ख़ातिरे आगाह है

36

'असदो'पेक्षावादिन इह सुखशयना इति त्वमीर्ष्यावान्।
चिन्तनवादिजनानां भाग्ये खलु विकलहृदयत्वम्।।

37

तोड़ बैठे, जबकि हम जाम-ओ-सुबू, फिर हमको क्या
आस्माँ से बादः-ए-गुल्फ़ाम, गो बरसा करे

37

अस्माकं किन्तु यदाऽस्माभिः सञ्चूर्णितौ चषककुम्भौ।
वर्षेद् गगनाद् यदि वा पाटलवर्णा क्वचिन्मदिरा।।

38

ता चन्द, नाज़े मस्जिद-ओ-बुतख़ानः खेंचिये
ज्यों शम्'अ दिल ब ख़ल्वते ज़ानानः खेंचिये

'अज़्ज-ओ-नियाज़ से तो न आया वह राह पर
दामन को उसके आज हरीफ़ानः खेंचिये

है ज़ौक़े गिरियः, 'अज़्मे सफ़र कीजिये, असद
रख़्ते जुनूने सैल ब वीरानः खेंचिये

38

मस्जिद-देवालययोर्धार्यो हावः कियन्तमिह कालम्।
दीपमिव प्रियशयनागारं प्रति हृदयमाकर्षेत्।।1।।

प्राप्तो हन्त न मार्गं नम्रतया श्रद्धयाऽथवा स खलु।
अद्य रिपोरिव तस्योत्तरीयमाकर्षणीयमितः।।2।।

इह बाष्पवेग आस्ते'ऽसद' यात्राया विधेहि सङ्कल्पम्।
निर्जनमनु कल्लोलोन्मादाच्छादनमिहाकर्ष।।3।।

39

ख़ुद नामः बन के जाइये, उस आश्ना के पास
क्या फ़ायदः कि मिन्नते बेगानः खेंचिये

39

स्वयमिह पत्रं भूत्वा गच्छ परिचितस्य तस्य रे पार्श्वम्।
कार्तज्ञ्यं, को लाभः परस्य यदि धार्यते शिरसि।।

40

जामे हर ज़र्रः, है सशरि तमन्ना मुझसे
किसका दिल हूँ, कि दो 'आलम से लगाया है मुझे

40

कणचषकः प्रत्येकं कामनया पूर्णतां गतो नु मया।
कस्य हृदेष नु वर्ते निवेशितं लोकयोरुभयोः।।

परिशिष्टम् - 2

मिर्ज़ा ग़ालिब

स्व० डॉ० सर मुहम्मद इक़बाल
('बांगे दरा'तः)

फ़िक्रे इंसाँ पर तेरी हस्ती से यह रोशन हुआ
है परे मुर्ग़े तख़य्युल की रसाई ता कुजा

था सरापा रूह तू, बज़्मे सुख़न पैकर तेरा
ज़ेबे महफ़िल भी रहा महफ़िल से पिन्हाँ भी रहा

दीद तेरी आँख को उस हुस्न की मंज़ूर है
बन के सोज़े ज़िन्दगी हर शै में जो मस्तूर है

महफ़िले हस्ती तेरी बिर बित से है सरमायः दार
जिस तरह नद्दी के नग़्मों से सकूते कोहसार

तेरे फ़िरदौसे तख़य्युल से है क़ुदरत की बहार
तेरी किश्ते फ़िक्र से उगते हैं इआलम सब्ज़ः सार

ज़िन्दगी मुज़मिर है तेरी शोख़ि-ए-तहरीर में
ताबे गोयाई से जुम्बिश है लबे तस्वीर में

नुत्क़ को सौ नाज़ हैं तेरे लबे ऐज़ाज पर
मह्वे हैरत है सुरैया रफ़'अते परवानः पर

शाहिदे मज़मूँ तसद्दुक है तेरे अन्दाज़ पर
ख़न्दः ज़न है गुंचः-ए-दिल्ली गुले शीराज़ पर

आह ! तू उजड़ी हुई दिल्ली में आरामीदः है
गुलशने 'दीमर' में तेरा हमनवा ख़्वाबीदः है

लुत्फ़े गोयाई में तेरी हमसरी कोई नहीं
हो तख़य्युल का न जब तक फ़िक्र कामिल हमनशीं

हाय ! अब क्या हो गयी हिन्दोस्ताँ की सरज़मीं
आह ! अय नज्ज़ारः आमोज़े निगाहे नुक्तः चीं

गेसु-ए-उर्दू अभी मिन्नत पज़ीरे शानः है
शम्'अ यह सौदाई-ए-दिल सोज़ि-ए-परवानः है

अय जहाँ आबाद ! अय गहवारः-ए-इल्म-ओ-हुनर
हैं सरापा नालः-ए-ख़ामोश तेरे बाम-ओ-दर

ज़र्रे ज़र्रे में तेरे ख़्वाबीदः हैं शम्सा-ओ-क़मर
यूँ तो पोशीदः हैं तेरी ख़ाक में लाखों गुहर

दफ़्न तुझमें कोई फ़ख़्रे रोज़गार ऐसा भी है
तुझमें पिन्हाँ कोई मोती आबदार ऐसा भी है

मिर्ज़ा गालिबः

मानवचिन्तनविषये स्फुटतामेतद् गतं त्वदस्तित्वम्।
यत्कल्पनाविहङ्गी कियदुड्डयितुं समर्थेति।।1।।

आमूलचूलमात्माऽऽसीः कविगोष्ठीतनुस्त्वदीयेयम्।
शोभाऽप्यासीद् गोष्ठ्या गोष्ठ्या अन्तर्हिताऽप्यासीत्।।2।।

त्वद्दर्शनमिह तस्यै सौन्दर्यदृशे नु रोचते सुतराम्।
जीवनतापीभूय प्रत्येकं वस्तुनि स्फुरति।।3।।

अस्तित्वसम्पदेषा सम्पन्ना वीणया त्वया मन्ये।
स्रोतस्वत्या गीतैरुपत्यकाया यथा शून्यम्।।4।।

तव कल्पनाद्युलोकादेतत्सर्वं वसन्तमयमास्ते।
जायन्ते त्वच्चिन्तनकृषेर्हरिन्तीह विश्वानि।।5।।

तव लेखनचाञ्चल्ये जीवनमन्तर्निविष्टमिदमास्ते।
वाक्सामर्थ्येन च ते कम्पश्चित्राधरे लसति।।6।।

तव नु चमत्कृत्यधरे बिभर्ति वाग्मित्वमत्र गर्वशतम्।
अस्ति पतङ्गौन्नत्ये साश्चर्या कृत्तिका तावत्।।7।।

तव रे वाग्विच्छित्तौ प्रियजनविषयः समर्पितो नूनम्।
दिल्लीव परिहसन्ती व्याकीर्णं कुसुममालक्ष्य।।8।।

ध्वंसावशेषमय्यां विश्राम्यसि तत्र हन्त दिल्ल्यां त्वम्।
सहगायनस्त्वदीयः सुप्त इह नु 'दीमरोद्याने'।।9।।

वाग्मित्वानन्दे तव काम्यं नास्तीह जगति किञ्चिदपि।
यावन्न कल्पनायां पूर्णा चिन्ताऽस्तु निकटस्था।।10।।

हा धिक्! सम्प्रति भारतवसुन्धरायाः किमेव सञ्जातम्।
आलोचकदृष्टीनां शिक्षाया हन्त हे दृश्य!।।11।।

'उर्दू'चिकुरकलापः कङ्कतिकायाः कृतज्ञतां धत्ते।
दीपः पतङ्गहृदयज्वलनोन्मत्तोऽयमद्यापि ।।12।।

विश्वस्यास्य नु रञ्जक ! विद्याकलयोश्च कोऽपि हिन्दोल।
मूकार्तनादभरितं द्वारं प्रासादपृष्ठञ्च ।।13।।

सूर्याचन्द्रौ मन्ये प्रत्येकं तावके कणे सुप्तौ।
निहितं मृदि नु तवास्ते मुक्तानां लक्षमेवं नु।।14।।

ईदृशमपि गर्वयुगं त्वयि सुविलीनं नु किञ्चिदास्त इव।
तेजोमयमीदृशमपि निहितं त्वयि मौत्तिकं किञ्चित्।।15।।

परिशिष्टम् - 3

महाकविं ग़ालिबं प्रति

आमूलचूलमेकस्त्वमीश्वरीयः कृपाचमत्कारः।
पाटलवर्णाया वा मदिरायाः पूर्णपात्रमसि।।1।।

नवचेतनेव काऽपि त्वय्यवतरिता प्रसादसुविलासा।
प्रत्येकं लिपिबद्धः शब्दो रत्नत्वमाप यतः।।2।।

जातिर्धर्मश्च समं त्वयि वसतः प्राप्य वामनीभावम्।
अलमुच्छलदिव लसति त्वच्चषके मानवत्व-मधु।।3।।

आजीवनं त्वभवसः परिवृत इव कण्टकैः सुदुर्वार्यैः।
किमपि प्रसूतमिव तद् विकसितमभवत् त्वदस्तित्वम्।।4।।

एकीकृतमिव मानवजातेर्व्यथितं घनं समग्रायाः।
व्यथितायाः सुभणितिषु प्रतीयते तावकीनासु।।5।।

कविकुलगुरुं त्वदुपमा त्वदर्थगुरुता किरातकारमिह।
त्वत्पदलालित्यञ्च श्रीहर्षं नः स्मृतिं नयति।।6।।

कविकालिदासकवितामाधुर्यास्वादजाततृप्तिरपि ।
मम धीस्त्वत्कविताया लावण्यायोत्सुकीभवति ।।7।।

मृत्युं प्रतीक्षमाणस्त्वमतिष्ठो हन्त मृत्युपर्यन्तम् ।
नैराश्यं सुविचित्रं मृत्यावाशान्वितस्य तव ।।8।।

गङ्गा-यमुनामय्या आदर्शः संस्कृतेर्नु कश्चिदसि ।
त्वय्यस्ति सुप्रतिष्ठा भिन्नाशाशालिनामास्था ।।9।।

दुःखं सत्यमिति त्वं गौतम इव लक्ष्यसे वदन् क्वचन ।
निर्वाणदीप इव च क्वचिदाभाति त्वदस्तित्वम् ।।10।।

क्वचन महाभाष्यमिव प्रतीक्षमाणाऽभिलक्ष्यते तव वाक् ।
प्रकटयतीव पुरस्तात् क्वचिदुशतीव स्वमेकान्ते ।।11।।

मधुशालासु जगत्यां 'ख़य्यामा'देश्चिरं प्रसुप्तासु ।
जागर्ति तावदेका मधुशाला तावकीनेह ।।12।।

यापितमिह त्वया स्वं तमसाच्छन्ने क्वचिन्नु गृहकोणे ।
उल्लसति तावकी वाक् सहृदयगोष्ठीषु विश्वस्मिन् ।।13।।

रसिकभ्रमराकीर्णं कवितोद्यानं नु तावकीनमितः ।
वर्णोत्कृष्टसुमनसामामोदोल्लसितमुल्लसति ।।14।।

उर्दू-भाषाबद्‌धे त्वत्काव्ये मृदुनि पारसीके वा ।
कश्चिद् द्राक्षापाकोऽनुभूयमानो नु भिन्न इव ।।15।।

नाद्यावध्यधिगन्तुं सुधियोऽपि प्राभवन् कथङ्कारम् ।
त्वल्लेखन्या स्पृष्टा नवेव कविता परिस्फुरति ।।16।।

त्वद्‌वाणी वीणाया झङ्कारः कश्चिदेकतो भाति ।
अन्यत 'उर्दू'-भाषालोचनयोः कज्जलं त्वमसि ।।17।।

मधुचषकस्पृष्टाधरमधराग्रस्फुरदपूर्ववाग्जालम् ।
'ग़ालिब'नामाभिन्नं वस्तु किमप्यस्तु मोदाय ।।18।।

तव हृत्करण्डिकाया विविक्तवर्णा विविक्तगन्धमयी।
सत्कविताकुसुमावलिरनारतं भात्यनाघ्राता ।।19।।

स्वे सुरभिणि मधुपात्रे त्वया स्वमिव सर्वथा विनिक्षिप्तम्।
सम्पूर्णं जगदथवाऽऽकलितं प्रतिबिम्बितं तत्र।।20।।

आमृत्योरिह मृत्युः प्रतीक्षितः कश्चन स्वबन्धुरिव।
कम्पे सत्यपि पाणेरन्ते स्पृष्टस्त्वया चषकः।।21।।

मधुसंवलितश्चषकः कश्चन तव सन्ततं गतः पाणिम्।
सुस्नातं तव यस्मिन् मन्ये शब्दार्थसाहित्यम्।।22।।

केचन तव साहित्ये त एव शब्दाः समे त एवार्थाः।
त्वल्लेखन्या स्पृष्टा नवा इवाभान्ति सर्वत्र।।23।।

आसीदग्निपरीता तव काले सर्वथैव तव दिल्ली।
साऽऽलिङ्गिता विपन्ना त्वया विदग्धेन दग्धाऽपि।।24।।

कामं विरहितमास्तां भारतमिह 'कोहनूर'हीरेण।
सन्ततमेव महार्घं त्वद्वाङ्मयकौस्तुभं स्फुरति।।25।।

कविषु त्वमेक एव स्वस्मिन्नभिलक्ष्यसे हसन् सततम्।
हसता सचेतसां बत चेतांस्यार्द्रीक्रियन्त इतः।।26।।

(जगन्नाथ पाठकस्य)

दीवाने ग़ालिब